

# کشف الباری

عَمَّا فِي

# صَحِيحِ الْبَخَّارِيِّ

تصنيف

حضرت مولانا سلیمان اللہ خاں

عالم دینی، مدرسہ اسلامیہ، کراچی

مترجم

مولانا شاہ فیصل قاضی استاد الفرائض

و صاحبیہ اسلامیہ، کراچی

پہلی بار شائع  
۱۹۷۷ء

# کشف الباری

عمافی

صحیح البخاری

ملازم ہند کے علوم کا پیمانہ  
دینی و ملی کتابوں کا اعلیٰ مرکز لائبریری انٹرنیشنل

حنفی کتب خانہ محمد معاذ خان

درس نکالی کیلئے ایک مفید ترین  
لائبریری

تالیف: صدر وفاق المدارس مولانا سلیم اللہ خان شیخ الحدیث

جامعہ فاروقیہ کراچی

## کتاب الصلاة (۲)

خصوصیات

جلد ۲۳

- ◀ دا حدیثو تخریج
- ◀ د تعلیقات بخاری تخریج
- ◀ د اسماء الرجال مختصر تعارف
- ◀ د گرانو لغاتو لغوی صرفی اونحوی حل
- ◀ ماقبل باب سرہ د ربط پورہ تحقیق
- ◀ د شرحی دهری خبری لاندی پہ حاشیہ کنہی حوالہ
- ◀ د ترجمہ الباب مقصد بیانولو کنہی پورہ تحقیق
- ◀ د مختلفو مذاہبو تحقیقی بیان اوییا د مذهب حنفی ترجیح
- ◀ د بخاری دا حدیثو اطراف خودل

خورونکی: فیصل کتب خانہ محلہ جنکی پینشور

موبائل: ۰۳۲۱۹۰۹۱۸۳۵..... ۰۳۱۵۹۵۹۵۷۱۷

**د کتاب ټول حقوق د ناشر سره محفوظ دي**

**د کتاب نوم:** - کشف الباری عما فی صحیح البخاری

**شارح:** - صدروفاق المدارس مولانا سلیم الله خان

شیخ الحدیث جامعہ فاروقیہ کراچی

**د ملاویدو پتی: د فیصل کتب خانہ پینور خفه علاوہ**

← رحیمی کتب خانہ خوست -- ۰۷۹۹۱۶۱۳۱۳

← اسلامی کتب خانہ خوست --

← دیوبند کتب خانہ خوست -- ۰۷۹۹۸۸۶۶۸۰

← روغانیول کتب خانہ جلال آباد

← دعوت کتب خانہ جلال آباد -- ۰۷۷۶۰۹۷۹۶۵

← رشیدیہ جدید کتب خانہ کابل

← انتشارات نعمانیہ کابل

← انتشارات علامه تفتازانی کابل ۰۷۷۷۴۹۰۵۰۰ --

← قدرت کتب خانہ کابل --

← واحدی کتب خانہ خوست

← صداقت کتب خانہ کابل -- ۰۷۰۰۳۰۵۴۰۷

← مکتبه القرآن والسنة کابل

← مکتبه صدیقیه غزنی

← مکتبه فریدیہ خوست

← مسلم کتب خانہ جلال آباد -- ۰۷۷۶۰۰۶۴۱۶

← غزنوی کتب خانہ غزنی -- ۰۷۴۸۵۷۵۱۹۹

**خورونکی: ← فیصل کتب خانہ محلہ جنگی پینور**

موبائل: -- ۰۳۲۱۹۰۹۱۸۳۵ ..... ۰۳۱۵۹۵۹۵۷۱۷

## اجمالي فهرست

| شميره | مضمون  | صفحه |
|-------|--|------|
| ١٩-   | بَابُ إِذَا أَصَابَ ثَوْبُ الْمُصَلِّي امْرَأَتَهُ إِذَا سَجَدَ.....   | ٢٧   |
| ٢٠-   | بَابُ: الصَّلَاةِ عَلَى الْحَصِيرِ.....  | ٢٩   |
| ٢١-   | بَابُ: الصَّلَاةِ عَلَى الْخُمْرَةِ.....   | ٤٧   |
| ٢٢-   | بَابُ: الصَّلَاةِ عَلَى الْغِرَاشِ.....  | ٤٨   |
| ٢٣-   | بَابُ: السُّجُودِ عَلَى الثَّوْبِ فِي شِدَّةِ الْحَرِّ.....  | ٥٩   |
| ٢٤-   | بَابُ: الصَّلَاةِ فِي الْبِعَالِ.....  | ٢٢   |
| ٢٥-   | بَابُ: الصَّلَاةِ فِي الْخِفَافِ.....  | ٧١   |
| ٢٦-   | بَابُ: إِذَا لَمْ تَتِمَّ السُّجُودُ.....  | ٧٩   |
| ٢٧-   | بَابُ: يَدِي صَبْعِيهِ وَمَجَافِي فِي السُّجُودِ.....  | ٩٠   |
| ١٠-   | ابواب القبلة.....  | ٩٨   |
| ١-    | بَابُ: فَضْلِ اسْتِقْبَالِ الْقِبْلَةِ.....  | ٩٨   |
| ٢-    | بَابُ قِبْلَةِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ وَأَهْلِ الشَّامِ وَالْمَشْرِقِ.....  | ١٢٧  |
| ٣-    | بَابُ: قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: {وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى} [البقرة: ١٢٥].....                         | ١٣٩  |
| ٤-    | بَابُ: التَّوَجُّهِ نَحْوَ الْقِبْلَةِ حَيْثُ كَانَ.....   | ١٢٨  |
| ٥-    | بَابُ: مَا جَاءَ فِي الْقِبْلَةِ، وَمَنْ لَا يَرَى الْإِعَادَةَ عَلَى مَنْ سَمَّاهَا، فَصَلَّى إِلَى غَيْرِ الْقِبْلَةِ..... | ٢٠٤  |
| ١١-   | أبواب المساجد.....   | ٢٢٢  |
| ١-    | بَابُ حَاكِ الْبُزَاقِ بِالْيَدِ مِنَ الْمَسْجِدِ.....   | ٢٢٢  |
| ٢-    | بَابُ حَاكِ الْمُخَاطِ بِالْحَصَى مِنَ الْمَسْجِدِ.....  | ٢٣٧  |
| ٣-    | بَابُ: لَا يَنْصُقُ عَنْ يَمِينِهِ فِي الصَّلَاةِ.....   | ٢٤١  |
| ٤-    | بَابُ: لِيَبْزُقَ عَنْ يَسَارِهِ، أَوْ تَحْتَ قَدَمِهِ الْيُسْرَى.....   | ٢٤٥  |
| ٥-    | بَابُ: كَفَّارَةُ الْبُزَاقِ فِي الْمَسْجِدِ.....  | ٢٤٨  |
| ٦-    | بَابُ: دَفْنِ الثُّخَامَةِ فِي الْمَسْجِدِ.....  | ٢٥١  |

- ٢٥٥ ..... ٧- بَابُ: إِذَا بَدَرَةَ الْبُرْزَاقُ فَلْيَأْخُذْ بِطَرْفِ تَوْبِهِ
- ٢٥٩ ..... ٨- بَابُ: عِظَةُ الْإِمَامِ النَّاسِ فِي إِتْمَانِ الصَّلَاةِ، وَذِكْرُ الْقِبْلَةِ
- ٢٧٣ ..... ٩- بَابُ: هَلْ يُقَالُ: مَسَّجِدُنِي فُلَانٍ؟
- ٢٨٠ ..... ١٠- بَابُ: الْقِسْمَةُ، وَتَعْلِيْقُ الْقَنُوفِ فِي الْمَسْجِدِ
- ٢٩١ ..... ١١- بَابُ: مَنْ دَعَا لِطَعَامٍ فِي الْمَسْجِدِ وَمَنْ أَجَابَ فِيهِ
- ٢٩٥ ..... ١٢- بَابُ الْقَضَاءِ وَاللِّعَانِ فِي الْمَسْجِدِ بَيْنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
- ٣٠٠ ..... ١٣- بَابُ: إِذَا دَخَلَ بَيْتًا يُصَلِّي حَيْثُ شَاءَ أَوْ حَيْثُ أَمَرَ وَلَا يَجَسُّسُ
- ٣١٣ ..... ١٤- بَابُ: الْمَسَاجِدِ فِي الْبُيُوتِ
- ٣٣٠ ..... ١٥- بَابُ: التَّيْمُنِ فِي دُخُولِ الْمَسْجِدِ وَغَيْرِهِ
- ٣٣٤ ..... ١٦- بَابُ: هَلْ تُنْبَشُ قُبُورُ مُشْرِكِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَيُتَّخَذُ مَكَانَهَا مَسَاجِدَ
- ٣٢٤ ..... ١٧- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ
- ٣٢٢ ..... ١٨- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَوَاضِعِ الرِّبْلِ
- ٣٧٤ ..... ١٩- بَابُ: مَنْ صَلَّى وَقَدَّامَهُ تَنُورٌ أَوْ نَارٌ، أَوْ شَيْءٌ مِمَّا يُعْبَدُ، فَأَرَادَ بِهِ اللَّهَ
- ٣٨١ ..... ٢٠- بَابُ: كَرَاهِيَةِ الصَّلَاةِ فِي الْمَقَابِرِ
- ٣٨٨ ..... ٢١- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَوَاضِعِ الْخُسْفِ وَالْعَدَابِ
- ٣٩٥ ..... ٢٢- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي الْبَيْعَةِ
- ٤٠٧ ..... ٢٣- بَابُ: قَوْلِ النَّبِيِّ a (جُعِلَتْ لِي الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهُورًا)
- ٤٠٩ ..... ٢٤- بَابُ: تَوْبِ الْمَرْأَةِ فِي الْمَسْجِدِ
- ٤١٢ ..... ٢٥- بَابُ: تَوْبِ الرِّجَالِ فِي الْمَسْجِدِ
- ٤٣٨ ..... ٢٦- بَابُ: الصَّلَاةِ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ
- ٤٤٨ ..... ٢٧- بَابُ: إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلْيُرْكَرُكَرْ كَعَتَيْنِ

## تفصيلی فہرست

| شمبره | مضمون  | صفحہ |
|-------|--|------|
|       | ۱۹- بَابُ إِذَا أَصَابَ ثَوْبُ الْمُصَلِّي أَمْرَأَتَهُ إِذَا سَجَدَ |      |
| ۲۷    | د ترجمه الباب مقصد:  | ۲۷   |
| ۲۷    | د حضرت شيخ الحديث صاحب <small>رحمته</small> رائي:                    | ۲۷   |
| ۲۸    | ترجمه حديث:  | ۲۸   |
| ۲۸    | تراجم رجال:  | ۲۸   |
| ۲۸    | شرح حديث:  | ۲۸   |
| ۲۸    | د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مناسبت:                               | ۲۸   |
| ۲۹    | د حديث مبارك نه مستفاد امور او آداب:                                 | ۲۹   |
|       | ۲۰- بَابُ: الصَّلَاةِ عَلَى الْحَصِيرِ                               |      |
| ۲۹    | د ترجمه الباب مقصد:  | ۲۹   |
| ۲۹    | د حضرت عائشه <small>رضي الله عنها</small> د اثر تخریج:               | ۲۹   |
| ۳۰    | د حصير تعريف:  | ۳۰   |
| ۳۰    | تعلیق:   | ۳۰   |
| ۳۰    | د تعلیق ترجمه:   | ۳۰   |
| ۳۰    | د تعلیق تخریج:   | ۳۰   |
| ۳۱    | د تعلیق رجال:  | ۳۱   |
| ۳۱    | د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت:                                    | ۳۱   |
| ۳۱    | د حضرت شيخ الحديث صاحب <small>رحمته</small> رائي:                    | ۳۱   |
| ۳۱    | د علامه ابن المنیر <small>رحمته</small> رائي:                        | ۳۱   |
| ۳۲    | د حافظ ابن حجر <small>رحمته</small> رائي:                            | ۳۲   |
| ۳۲    | د علامه عيني رائي:   | ۳۲   |
| ۳۲    | په کشتی کبسي د مونخ کولو حکم او مسئلي:                               | ۳۲   |
| ۳۲    | د حافظ بن حجر <small>رحمته</small> يو قول او د هغي جواب:             | ۳۲   |
| ۳۳    | دويم تعلیق:  | ۳۳   |
| ۳۳    | د تعلیق ترجمه:   | ۳۳   |
| ۳۳    | د تعلیق تخریج:   | ۳۳   |
| ۳۳    | د تعلیق راوی:  | ۳۳   |
| ۳۴    | تشریح:   | ۳۴   |
| ۲۷    | ترجمه حديث:  | ۲۷   |
| ۳۵    | تراجم رجال:  | ۳۵   |
| ۳۲    | ملیکه:   | ۳۲   |
| ۳۲    | د جدته د ضمير مرجع:  | ۳۲   |

|    |   |
|----|---|
| ۳۷ | شرح حدیث:   |
| ۳۷ | په یوشان واقعاتو کښې د حضور پاک مختلف طرز عمل:  |
| ۳۸ | د «فَلَأَصِلْ لَكُمْ» ترکیبی حیثیت:   |
| ۴۰ | د حافظ صاحب په احنافو باندې رد او د هغې جواب:   |
| ۴۱ | د یتیم معنی او مطلب:  |
| ۴۱ | په حدیث مذکوره کښې د یتیم مصداق څوک دی؟:  |
| ۴۲ | د العجوز مصداق:   |
| ۴۲ | د مذکوره حدیث شریف نه مستنبط شوي امور او احکام:                                       |
| ۴۳ | د صف جوړولو ترتیب:  |
| ۴۳ | د حضرت ابن مسعود <small>رضی الله عنه</small> مذهب:                                    |
| ۴۴ | د ابن الملقن <small>رضی الله عنه</small> د احنافو طرف ته د یوې مسئلې په نسبت کښې سهو: |
| ۴۴ | د مذکوره سهو رد:  |
| ۴۴ | د حضرت ابن مسعود <small>رضی الله عنه</small> د مذهب جواب:                             |
| ۴۵ | د نوافل د جمع شرعی حکم:   |
| ۴۵ | د تداعی مطلب او حکم:  |
| ۴۵ | د علامه انور شاه کشمیری <small>رحمته الله علیه</small> رائي:                          |
| ۴۶ | د بعضي اکابرو په رمضان کښې نوافل په جمع سره ادا کول:                                  |
| ۴۶ | د محاذاة مسئله:   |

### ۲۱ - باب: الصَّلَاةُ عَلَى الْخُمْرَةِ

|    |  |
|----|--|
| ۴۷ | د ترجمه الباب مقصود:                                   |
| ۴۷ | د شیخ الحدیث صاحب <small>رحمته الله علیه</small> رائي: |
| ۴۷ | ترجمه حدیث:  |
| ۴۷ | تراجم رجال:  |
| ۴۸ | شرح حدیث:  |

### ۲۲ - باب: الصَّلَاةُ عَلَى الْفِرَاشِ

|    |  |
|----|--|
| ۴۹ | د ترجمه الباب مقصد:                                |
| ۴۹ | د حضرت گنگوهی <small>رحمته الله علیه</small> رائي: |
| ۴۹ | تعلیق اول:   |
| ۴۹ | د تعلیق ترجمه:                                     |
| ۴۹ | د تعلیق راوی:                                      |
| ۵۰ | د تعلیق تخریج:                                     |
| ۵۰ | دویم تعلیق:  |
| ۵۰ | د تعلیق ترجمه:                                     |
| ۵۰ | د تعلیق تخریج:                                     |
| ۵۰ | تشریح:   |
| ۵۰ | د تعلیق ترجمه الباب سره مناسبت:                    |

|    |   |
|----|---|
| ٥١ | ترجمه:  |
| ٥١ | تراجم رجال:                                       |
| ٥١ | د حديث شرح:                                       |
| ٥٢ | د حديث د ترجمه الباب سره مناسبت:                  |
| ٥٢ | د مذکورہ حديث شريف نه مستنبط فوائد او احكام:      |
| ٥٢ | د مونخ گزار مخي ته كه خوك بننخه وي نو د مونخ حكم: |
| ٥٤ | د مس مرأة د وجي نه د اودس حكم:                    |
| ٥٥ | تراجم رجال:                                       |
| ٥٦ | شرح حديث:   |
| ٥٦ | د روايت د ترجمه الباب سره مناسبت:                 |
| ٥٧ | ترجمه حديث:                                       |
| ٥٧ | تراجم رجال:                                       |
| ٥٩ | شرح حديث:   |
| ٥٩ | د روايت د ترجمه الباب سره مناسبت:                 |

### ٢٣- باب: السُّجُودِ عَلَى الثَّوْبِ فِي شِدَّةِ الْحَرِّ

|    |  |
|----|--|
| ٥٩ | د ترجمه الباب مقصد:                              |
| ٦٠ | تعليق:   |
| ٦٠ | د تعليق ترجمه:                                   |
| ٦٠ | د تعليق تخريج:                                   |
| ٦٠ | د تعليق رجال:                                    |
| ٦١ | د تعليق تشريح:                                   |
| ٦١ | د تعليق د ترجمه الباب سره مناسبت:                |
| ٦٢ | په لستونري باندي د سجدې كولو شرط:                |
| ٦٢ | د پتكي په ول باندي د سجدې كولو حكم:              |
| ٦٣ | ترجمه حديث:                                      |
| ٦٣ | تراجم رجال:                                      |
| ٦٤ | شرح حديث:  |
| ٦٥ | د حديث د ترجمه الباب سره مناسبت:                 |
| ٦٥ | د حديث شريف نه مستفاد امور او آداب:              |
| ٦٥ | په كپرا باندي د سجدې كولو باره كني د ائمو مذاهب: |

### ٢٤- باب: الصَّلَاةِ فِي النَّعَالِ

|    |                                  |
|----|----------------------------------|
| ٦٦ | د مذکورہ باب د ماقبل سره مناسبت: |
| ٦٧ | ترجمه حديث:                      |
| ٦٧ | تراجم رجال:                      |
| ٦٨ | د ترجمه الباب مقصد:              |
| ٦٨ | شرح حديث:                        |



٧١ ..... دَنَعَالَ نَهْ خَه مَرَاد دِي؟  
 ٧١ ..... دَحْدِيثْ دَ تَرْجَمَة الْبَاب سِرَه مَنَاسِبْتِ:

### ٢٥- بَاب: الصَّلَاةُ فِي الْخِيفِ

٧١ ..... دَ تَرْجَمَة الْبَاب مَقْصِدْ:  
 ٧٢ ..... تَرْجَمَه حَدِيثْ:  
 ٧٢ ..... تَرَا جِم رَجَالْ:  
 ٧٤ ..... شَرْح حَدِيثْ:  
 ٧٤ ..... سَائِلْ خُوكْ وُو؟  
 ٧٢ ..... دَ عَلَامَه كَشْمِيرِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَوْلْ:  
 ٧٧ ..... بِه موزو باندي مسح يو اجماعى مسئله ده:  
 ٧٧ ..... دَمذْ كُورَه حَدِيثْ دَ تَرْجَمَة الْبَاب سِرَه مَنَاسِبْتِ:  
 ٧٧ ..... دَ حَدِيثْ شَرِيفْ نَهْ مَسْتَنْبِطْ فَوَائِدْ اَوْ احْكَامْ:  
 ٧٨ ..... تَرْجَمَه حَدِيثْ:  
 ٧٨ ..... تَرَا جِم رَجَالْ:  
 ٧٩ ..... شَرْح حَدِيثْ:  
 ٧٩ ..... دَمذْ كُورَه حَدِيثْ دَ تَرْجَمَة الْبَاب سِرَه مَنَاسِبْتِ:

### ٢٦- بَاب: إِذَا لَمْ تَمَّ السُّجُودَ

٧٩ ..... دَ تَرْجَمَة الْبَاب مَقْصِدْ:  
 ٧٩ ..... دَ حَضْرَتْ شَاهْ وَلِيَّ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨٠ ..... دَ حَافِظْ ابْنِ حَجْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨٠ ..... دَ عَلَامَه عَيْنِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨١ ..... دَ عَلَامَه كَشْمِيرِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨١ ..... دَ حَضْرَتْ شَيْخِ الْحَدِيثِ صَاحِبِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨٢ ..... تَرْجَمَه حَدِيثْ:  
 ٨٢ ..... تَرَا جِم رَجَالْ:  
 ٨٤ ..... شَرْح حَدِيثْ:  
 ٨٢ ..... دَ فَطْرَتْ نَهْ خَه مَرَاد دِي؟  
 ٨٢ ..... بِه مَانْخَه كِنْسِي دَ تَعْدِيلْ اَرْكَانْ حَكْمْ:  
 ٨٢ ..... دَ عَلَامَه اَنُورْ شَاهْ كَشْمِيرِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨٧ ..... دَ عَلَامَه عَثْمَانِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَاثِيْ:  
 ٨٩ ..... دَ تَرْجَمَة الْبَاب سِرَه مَنَاسِبْتِ:  
 ٨٩ ..... دَ حَدِيثْ شَرِيفْ نَهْ مَسْتَفَادْ اُمُورْ:

### ٢٧- بَاب: يَبْدِي ضَبْعِيهِ وَيَجَافِي فِي السُّجُودِ

٩٠ ..... دَ تَرْجَمَة الْبَاب مَقْصِدْ:  
 ٩٠ ..... دَ تَرْجَمَة الْبَاب دَ مَاقْبَلْ سِرَه مَنَاسِبْتِ:

|    |   |
|----|---|
| ٩١ | ترجمه حديث:   |
| ٩١ | تراجم رجال:   |
| ٩٢ | شرح حديث:   |
| ٩٢ | دَ نَبِي كَرِيم ﷺ دَ سَجْدِي شَكْل:                     |
| ٩٥ | دَ سَجْدِي دَ مَذْكَورِهِ هَيْئَتِ خَكْمَتُونِهِ:       |
| ٩٥ | دَ عَلامَه كُشميرِي ﷺ بِه حَافِظ صَاحِبِ ﷺ بَاندِي رَد: |
| ٩٦ | دَ حَديثِ دَ تَرجَمَةِ البَابِ سَره مَناسِبَت:          |
| ٩٦ | دَ حَديثِ شَريفِ نَه مَستَنبِطِ فَوائِدِ اَواحِكام:     |
| ٩٦ | تَعلِيق:  |
| ٩٦ | دَ تَعلِيقِ تَرجَمَه:                                   |
| ٩٦ | دَ تَعلِيقِ تَخرِيج:                                    |
| ٩٧ | دَ تَعلِيقِ رِجال:                                      |
| ٩٧ | دَ تَعلِيقِ مَقصد:                                      |

## ١٠- ابواب القبلة

## ١- باب: فَضْلِ اسْتِقبالِ القِبْلَةِ

|     |   |
|-----|---|
| ٩٨  | دَ مَذْكَورِ بَابِ دَ ما قِبلِ بَابِ سَره مَناسِبَت:                  |
| ٩٨  | دَ دِي جَمَلِي مَتلَوقِ دَ شَيعِ الخَديثِ صَاحِبِ ﷺ رَائي:            |
| ٩٩  | دَ تَعلِيقِ تَخرِيج:  |
| ١٠٠ | دَ تَعلِيقِ رِجال:  |
| ١٠٠ | دَ تَعلِيقِ مَقصد:  |
| ١٠١ | دَ تَعلِيقِ دَ تَرجَمَةِ البَابِ سَره مَناسِبَت:                      |
| ١٠١ | تَرجَمَه حَديث:   |
| ١٠١ | تَراجمِ رِجال:  |
| ١٠٣ | شرحِ حَديث:   |
| ١٠٤ | دَ مَسلَمانيدِ و دَ پارَه ضَروريِ اَمور:                              |
| ١٠٤ | اسْتِقبالِ قِبلَه مَستَقِلاً ذَكرِ كَولو حَكمَت:                      |
| ١٠٥ | دَ اَكَلِ ذَبيحَةٍ دَ شَرتِ اَهمِيَت:                                 |
| ١٠٥ | دَ عَلامَه كَنگوهِي ﷺ رَائي:  |
| ١٠٥ | دَ حَضرَتِ شَيعِ الخَديثِ صَاحِبِ ﷺ رَائي:                            |
| ١٠٥ | دَ عَلامَه طَيبِي ﷺ رَائي:  |
| ١٠٧ | دَ حَديثِ دَ تَرجَمَةِ البَابِ سَره مَناسِبَت:                        |
| ١٠٧ | دَ حَديثِ مَبارَكِ نَه مَستَفادِ اَمورِ اَواحِكام:                    |
| ١٠٨ | دَ اَسلامِ دَ پارَه هَم دَ دَغَه دَ رِيوِ اَمورِ دَ اَنتِخابِ حَكمَت: |
| ١٠٨ | اهلِ قِبلَه سَره مَتلَوقِ يَواحِصِ:                                   |
| ١٠٩ | دَ اَهلِ قِبلَه تَعرِيف:  |
| ١١٠ | دَ ابنِ اَميرِاِ الحَاجِ ﷺ تَشرِيح:                                   |

|     |  |
|-----|--|
| ۱۱۱ | د علامه تفتازانی <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> تشریح:                            |
| ۱۱۱ | د صاحب غایۃ التحقیق علامہ عبدالعزیز البخاری <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> تشریح: |
| ۱۱۲ | د علامہ عبدالعزیز الفرہاوی <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> تشریح:                  |
| ۱۱۳ | د علامہ شمس الدین محمد بن عبدالرحمن السخاوی <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> تشریح: |
| ۱۱۳ | د علامہ انور شاہ کشمیری <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> تشریح:                     |
| ۱۱۳ | د اہل قبلہ د تکفیر مسئلہ:  |
| ۱۱۴ | د یو مغالطی ازالہ:   |
| ۱۱۵ | د ایمان، اسلام او ضروریات دین تشریح:   |
| ۱۱۶ | د دین د ضروریاتو تفصیل:  |
| ۱۱۶ | ② حدوث عالم:   |
| ۱۱۷ | ③ پہ قضاء او قدر باندی ایمان:  |
| ۱۱۸ | د کفر خبری:  |
| ۱۱۹ | تراجم رجال:  |
| ۱۱۹ | شرح حدیث:  |
| ۱۱۹ | د توحید اقرار سرہ د رسالت اقرار د نہ ذکر کولو حکمت:                              |
| ۱۲۰ | یولغوی اشکال او د ہفتی جواب:   |
| ۱۲۲ | تعلیق:   |
| ۱۲۲ | د تعلیق تخریح:   |
| ۱۲۳ | د تعلیق رجال:  |
| ۱۲۴ | د تعلیق مقصد:  |
| ۱۲۴ | دویم تعلیق:  |
| ۱۲۴ | د تعلیق ترجمہ:   |
| ۱۲۵ | د تعلیق رجال:  |
| ۱۲۵ | د تعلیق شرح:   |
| ۱۲۶ | یو اشکال او د ہفتی جواب:   |
| ۱۲۶ | د تعلیق مقصد:  |

## ۲- بَابُ قِبْلَةِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ وَأَهْلِ الشَّامِ وَالْمَشْرِقِ

|     |  |
|-----|--|
| ۱۲۷ | د ترجمہ الباب مقصد:  |
| ۱۲۷ | د حضرت شیخ الحدیث <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> رائی:  |
| ۱۲۸ | د حضرت کشمیری <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> رائی:  |
| ۱۳۰ | د علامہ شبیر احمد عثمانی صاحب <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> رائی:                                  |
| ۱۳۰ | د حضرت کاندھلوی <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> رائی:  |
| ۱۳۰ | د علامہ ابن بطال <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> او علامہ کورانی <small>رحمۃ اللہ علیہ</small> رائی: |
| ۱۳۱ | د کلام خلاصہ:  |
| ۱۳۲ | تعلیق:   |
| ۱۳۲ | د تعلیق ترجمہ:   |

|          |   |
|----------|---|
| ۱۳۲..... | د تعلق تخريج:   |
| ۱۳۳..... | د تعلق مقصد:  |
| ۱۳۳..... | ترجمه حديث:   |
| ۱۳۳..... | تراجم رجال:   |
| ۱۳۴..... | شرح حديث:   |
| ۱۳۵..... | د حضرت ابو ايوب انصاري <small>رضي الله عنه</small> دا مذكوره كلام په شام كښي او شو كه په مصر كښي؟ |
| ۱۳۶..... | د انحراف عن القبلة مطلب:  |
| ۱۳۶..... | انحراف عن القبلة باندي د استغفار وجه:   |
| ۱۳۸..... | د حديث شريف نه مستنبط شوي فوائد:  |
| ۱۳۸..... | تعلق:   |
| ۱۳۸..... | د تعلق تخريج:   |

### ۳- باب: قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: { وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى }

|          |   |
|----------|---|
| ۱۳۹..... | د ترجمه الباب غرض:  |
| ۱۳۹..... | د حضرت شيخ الحديث صاحب <small>رحمته الله</small> رائي:                            |
| ۱۴۰..... | د علامه فخر الدين احمد صاحب <small>رحمته الله</small> رائي:                       |
| ۱۴۰..... | د مقام ابراهيم په مراد كښي يو خو اقوال:   |
| ۱۴۱..... | د علامه عثمانی <small>رحمته الله</small> رائي:                                    |
| ۱۴۱..... | ترجمه حديث:   |
| ۱۴۲..... | تراجم رجال:   |
| ۱۴۲..... | شرح حديث:   |
| ۱۴۴..... | د عمري نه حلاليدو باره كښي د حضرت ابن عباس <small>رضي الله عنهما</small> مذهب:    |
| ۱۴۴..... | د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت:   |
| ۱۴۶..... | د مذكوره حديث شريف نه مستنبط شوي احكام:   |
| ۱۴۶..... | تعلق:   |
| ۱۴۶..... | د تعلق ترجمه:   |
| ۱۴۶..... | د تعلق تخريج:   |
| ۱۴۷..... | د تعلق مقصد:  |
| ۱۴۷..... | ترجمه حديث:   |
| ۱۴۸..... | تراجم رجال:   |
| ۱۵۰..... | شرح حديث:   |
| ۱۵۲..... | نبي اكرم <small>صلوات الله عليه</small> په كعبه كښي دننه خور كعتنه مونخ كړي دي؟   |
| ۱۵۲..... | نبي كريم <small>صلوات الله عليه</small> په كعبه كښي په كوم خاني كښي مونخ ادا كړو؟ |
| ۱۵۷..... | د روايت د ترجمه الباب سره مطابقت:   |
| ۱۵۷..... | د حديث نه مستنبط شوي احكام او فوائد:  |
| ۱۵۸..... | بيت الله شريف كښي دننه د داخليدو آداب او متعلقه مسائل:                            |
| ۱۶۰..... | ترجمه حديث:   |

- ۱۲۰.....  
 ۱۲۱..... تراجم رجال:  
 ۱۲۱..... شرح حدیث:  
 ۱۲۲..... دَ هَذِهِ الْقِبْلَةَ وَنِيلُو مَطْلَبَ أَوْ مَقْصِدَ: .....  
 ۱۲۲..... نَبِيَّ كَرِيمٍ ﷺ بِهَيْبَةِ بَيْتِ اللَّهِ كُنْبِي دَنَنْهُ مَوْنُخٌ أَوْ كَرُو كَهْ نَهْ؟ .....  
 ۱۲۴..... بِهْ مَتَعَارِضِ أَحَادِيثِ كُنْبِي تَطْبِيقَ: .....  
 ۱۲۲..... بِهْ مَتَعَارِضِ أَحَادِيثِ كُنْبِي تَرْجِيحَ: .....  
 ۱۲۷..... بَيْتِ اللَّهِ كُنْبِي دَ مَوْنُخٌ دَ جَوَازِ يَأْ دَ عَدَمِ جَوَازِ حَكْمَ: .....  
 ۱۲۸..... دَ صَاحِبِ هِدَايَةِ ﷺ يَوْهْ سَهْوَ: .....  
 ۱۲۸..... دَ مَذْكَورِهِ حَدِيثِ شَرِيفِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سَرِهِ مَنَاسِبَتَ: .....

۴- بَابُ: التَّوَجُّهُ مَحْوَالِ الْقِبْلَةِ حَيْثُ كَانَ

- ۱۲۸..... دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ مَقْصِدَ: .....  
 ۱۲۹..... تَعْلِيقَ: .....  
 ۱۲۹..... دَ تَعْلِيقِ تَرْجَمِهِ: .....  
 ۱۲۹..... دَ تَعْلِيقِ تَخْرِيجَ: .....  
 ۱۷۰..... دَ تَعْلِيقِ مَقْصِدَ: .....  
 ۱۷۰..... دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سَرِهِ مَنَاسِبَتَ: .....  
 ۱۷۰..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمِهِ: .....  
 ۱۷۰..... تَرَاجِمِ رِجَالَ: .....  
 ۱۷۱..... شَرْحِ حَدِيثَ: .....  
 ۱۷۳..... رَجُلٌ نَهْ خُوكَ مَرَادِ دِي؟: .....  
 ۱۷۳..... دَ رَوَايَتِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سَرِهِ مَنَاسِبَتَ: .....  
 ۱۷۳..... دَ حَدِيثِ شَرِيفِ نَهْ مَسْتَفَادِ شَوِي فَوَائِدِ أَوْ أَحْكَامَ: .....  
 ۱۷۴..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمِهِ: .....  
 ۱۷۴..... تَرَاجِمِ رِجَالَ: .....  
 ۱۷۵..... دَ حَدِيثِ شَرْحَ: .....  
 ۱۷۲..... دَ حَدِيثِ شَرِيفِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سَرِهِ مَنَاسِبَتَ: .....  
 ۱۷۲..... دَ حَدِيثِ شَرِيفِ نَهْ مَسْتَنْبَطِ فَوَائِدِ أَوْ أَحْكَامَ: .....  
 ۱۷۲..... بِهْ سَوْرَلِي بَانْدِي دَ مَوْنُخِ (فَرَضِ وَيْ كَهْ نَفْلِ) كُولُو حَكْمَ: .....  
 ۱۷۷..... بِهْ رِيْلِ كَادِي كُنْبِي دَ سَفَرِ كُولُو بِهْ حَالَتِ كُنْبِي دَ مَوْنُخِ حَكْمَ: .....  
 ۱۷۷..... بِهْ سَوْرَلِي بَانْدِي دَ مَوْنُخِ كُولُو وَخْتِ كُنْبِي قِبَلِي تَهْ دَ مَخِ كُولُو حَكْمَ: .....  
 ۱۷۸..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمِهِ: .....  
 ۱۷۹..... تَرَاجِمِ رِجَالَ: .....  
 ۱۷۹..... شَرْحِ حَدِيثَ: .....  
 ۱۸۱..... دَ خَبَرِ أَتْرُو كُولُو نَهْ پَسِ دَ مَوْنُخِ دَ بَاقِي كِيدُو حَكْمَ: .....  
 ۱۸۲..... بِهْ مَوْنُخِ كُنْبِي دَ خَبَرِ أَتْرُو كُولُو حَكْمَ: .....  
 ۱۸۲..... دَ أَحْنَافُو مَذْهَبَ: .....

- ۱۸۲..... د شوافعو مذهب:
- ۱۸۲..... د مالکیو مذهب:
- ۱۸۳..... د حنابلو مذهب:
- ۱۸۳..... د احنافو رومی دلیل:
- ۱۸۳..... دویم دلیل:
- ۱۸۴..... دریم دلیل:
- ۱۸۴..... خلورم دلیل:
- ۱۸۵..... د ائمه ثلاثو دلیل:
- ۱۸۵..... د ائمه ثلاثو د دلیل رومی جواب:
- ۱۸۵..... دویم جواب:
- ۱۸۲..... دریم جواب:
- ۱۸۲..... خلورم جواب:
- ۱۸۲..... عقلی دلیل:
- ۱۸۷..... د سجده سهو کولو متعلق د حضرت کشمیری رحمته الله علیه رائی:
- ۱۸۷..... د پنخو رکعتو والا مونخ، د ماسپینین مونخ څنگه جوړ شو؟
- ۱۸۹..... نبی کریم صلی الله علیه و آله نور و و که بشر؟
- ۱۹۰..... دنسیان معنی:
- ۱۹۰..... د انبیاء کرامو علیهم السلام نه هیږه ممکن ده که نه؟
- ۱۹۱..... نبی کریم صلی الله علیه و آله ته څو ځل سهو پینښه شوې وه؟
- ۱۹۲..... د امام بخاری رحمته الله علیه په نیز په مونخ کښې دکلام الناس د جواز حکم:
- ۱۹۲..... د شک معنی او مفهوم:
- ۱۹۴..... د شک په وخت کړی د تحری په بنیاد باندې د مونخ پوره کولو حکم:
- ۱۹۷..... په مذکوره روایت باندې یو اشکال او دهغې جواب:
- ۱۹۷..... سجده سهو به د سلام نه مخکښې کولې شی که د سلام نه پس؟
- ۱۹۷..... د احنافو مذهب:
- ۱۹۷..... د سجده سهو د پاره د سلام گرځولو طریقه:
- ۱۹۸..... د شوافعو مذهب:
- ۱۹۹..... د مالکیو مذهب:
- ۲۰۰..... د حنابلو مذهب:
- ۲۰۰..... د احنافو دلائل:
- ۲۰۲..... د احنافو د مذهب د ترجیح وجه:
- ۲۰۲..... په مذکوره مسئله کښې د مذاهبو د اختلاف حیثیت:
- ۲۰۲..... د حضرت گنګوهی رحمته الله علیه یوه سهو او صحیح خبره:
- ۲۰۳..... د حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ۲۰۳..... د مذکوره حدیث نه مستنبط شوی احکام او فوائد:

## ٥- باب: بَابُ مَا جَاءَ فِي الْقِبْلَةِ، وَمَنْ لَا يَرَى الْإِعَادَةَ عَلَى مَنْ سَمَّاهَا، فَصَلَّى إِلَى غَيْرِ الْقِبْلَةِ

- ٢٠٤..... دَ تَرْجَمَةُ الْبَابِ وَضَاحَتُ: .....
- ٢٠٥..... دَ تَرْجَمَةُ الْبَابِ مَقْصِدُ: .....
- ٢٠٥..... دَ قَبْلِي مُشْتَبِهٌ كِيدُو بِهِ صَوْرَتُ كِنْسِي دَ مَوْنُخِ حَكْمِ: .....
- ٢٠٦..... تَعْلِيْقُ: .....
- ٢٠٦..... دَ تَعْلِيْقُ تَرْجَمَهُ: .....
- ٢٠٦..... دَ تَعْلِيْقُ تَخْرِيجُ: .....
- ٢٠٦..... دَ تَعْلِيْقُ تَرْجَمَةُ الْبَابِ سِرَّهُ مَنَاسِبَتُ: .....
- ٢٠٧..... دَ حَدِيثُ تَرْجَمَهُ: .....
- ٢٠٧..... تَرَاجِمُ رِجَالُ: .....
- ٢٠٨..... دَ حَدِيثُ شَرْحُ: .....
- ٢٠٩..... مَوَافِقَاتُ عَمْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: .....
- ٢١٠..... دَ مَوَافِقَاتُ عَمْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تَعْدَادُ: .....
- ٢١٢..... رُبُّ سِرَّهُ دَ مَوَافِقَتُ وَجْهِ: .....
- ٢١٢..... دَ خَطَاءٌ نَهَ مَحْفُوظٌ صَرَفُ انْبِيَاءِهِ كِرَامٌ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ دِي: .....
- ٢١٥..... بِهَ حَضْرَتُ عَمْرٍ فَارُوقُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بَانْدِي يُو اشْكَالُ اودَ هَغِي جَوَابُ: .....
- ٢١٧..... دَ حِجَابُ دَ آيَتُ بِهَ مُصَدِّاقُ كِنْسِي اخْتِلَافُ: .....
- ٢١٧..... حَضْرَتُ عَمْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لَهَ بِهَ كَوْمَهُ خَبْرَهُ غَيْرَتُ رَاغْلُو؟: .....
- ٢١٨..... دَ حَدِيثُ مَبَارَكُ تَرْجَمَةُ الْبَابِ سِرَّهُ مَنَاسِبَتُ: .....
- ٢١٩..... تَعْلِيْقُ: .....
- ٢٢٠..... دَ حَدِيثُ تَرْجَمَهُ: .....
- ٢٢٠..... تَرَاحِمُ رِجَالُ: .....
- ٢٢٠..... دَ حَدِيثُ شَرْحُ: .....
- ٢٢١..... دَ قَبْلِي دَ بَدَلِيدُو حَكْمُ بِهَ كَوْمُ مَوْنُخِ كِنْسِي اوشُو؟: .....
- ٢٢١..... دَا رَا تَلُونَكِي سِرِّي خُوكُ وُو؟: .....
- ٢٢٢..... دَ حَدِيثُ مَبَارَكُ دَ تَرْجَمَةُ الْبَابِ سِرَّهُ مَنَاسِبَتُ: .....
- ٢٢٣..... دَ حَدِيثُ مَبَارَكُ نَهَ مِسْتَنْبَطُ شُوِي فَوَائِدُ اَوْ اِحْكَامُ: .....
- ٢٢٤..... دَ حَدِيثُ تَرْجَمَهُ: .....
- ٢٢٤..... تَرَاجِمُ رِجَالُ: .....
- ٢٢٥..... دَ حَدِيثُ شَرْحُ: .....
- ٢٢٥..... دَ حَدِيثُ شَرِيفُ دَ تَرْجَمَةُ الْبَابِ سِرَّهُ مَنَاسِبَتُ: .....

## ١١- أبواب المساجد

- ٢٢٢..... مَاقِبَلُ سِرَّهُ مَنَاسِبَتُ: .....

## ١- بَابُ حَكِّ البَّرَاقِ بِالْيَدِ مِنَ المَسْجِدِ

- ٢٢٢..... دَ تَرْجَمَةُ الْبَابِ مَقْصِدُ: .....

- ٢٢٦..... د حضرت شيخ الحديث صاحب رحمته رائي:
- ٢٢٧..... د علامه شبير احمد عثمانى رحمته رائي:
- ٢٢٧..... د علامه ابن رجب الحنبلى رحمته رائي:
- ٢٢٨..... ترجمه حديث:
- ٢٢٨..... تراجم رجال:
- ٢٢٨..... شرح حديث:
- ٢٣٢..... د بلغم د پاكوالى يا ناپاكوالى حكم:
- ٢٣٢..... د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ٢٣٢..... د حديث شريف نه مستفاد امور او آداب:
- ٢٣٤..... د حديث ترجمه:
- ٢٣٤..... تراجم رجال:
- ٢٣٥..... د حديث شرح:
- ٢٣٥..... د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ٢٣٦..... د حديث ترجمه:
- ٢٣٦..... تراجم رجال:
- ٢٣٧..... د حديث شرح:
- ٢٣٧..... د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت:

## ٢- بَابُ حَكِّ الْمُخَاطِبِ بِالْحَصَى مِنَ الْمَسْجِدِ

- ٢٣٧..... د مذكوره باب د ماقبل سره مناسبت:
- ٢٣٨..... تعليق نمبر:
- ٢٣٨..... د تعليق تخريج:
- ٢٣٨..... د تعليق ترجمه:
- ٢٣٨..... د تعليق د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ٢٣٩..... د تعليق د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ٢٣٩..... د حديث ترجمه:
- ٢٣٩..... تراجم رجال:
- ٢٤٠..... د حديث شرح:
- ٢٤٠..... د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مناسبت:

## ٣- بَابُ: لَا يَبْصُقُ عَنْ يَمِينِهِ فِي الصَّلَاةِ

- ٢٤١..... د ترجمه الباب مقصد:
- ٢٤١..... د حضرت شيخ الحديث صاحب نور الله مرقدہ رائي:
- ٢٤٢..... د حضرت مولانا محمد ادریس كاندھلوی رحمته رائي:
- ٢٤٢..... د حديث ترجمه:
- ٢٤٢..... تراجم رجال:
- ٢٤٣..... د حديث شرح:
- ٢٤٣..... د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مناسبت:



- ٢٤٤ ..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: .....  
 ٢٤٤ ..... تَرَا جِمَ رِجَالٍ: .....  
 ٢٤٤ ..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ: .....  
 ٢٤٥ ..... دَ حَدِيثِ مَبَارَكٍ دَ تَرْجَمَةَ البَابِ سِرِهِ مَطَابَقَتْ: .....

## ٤- بَابُ: لِيَبْزُقَ عَنْ يَسَارِهِ، أَوْ مَحَّتْ قَدَمِهِ الْيُسْرَى

- ٢٤٥ ..... دَ تَرْجَمَةَ البَابِ مَقْصِدًا: .....  
 ٢٤٥ ..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: .....  
 ٢٤٥ ..... تَرَا جِمَ رِجَالٍ: .....  
 ٢٤٦ ..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ: .....  
 ٢٤٦ ..... دَ مَذْكَورِهِ حَدِيثٍ دَ تَرْجَمَةَ البَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَتْ: .....  
 ٢٤٦ ..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: .....  
 ٢٤٧ ..... تَرَا جِمَ رِجَالٍ: .....  
 ٢٤٧ ..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ: .....  
 ٢٤٧ ..... دَ مَذْكَورِهِ حَدِيثٍ دَ تَرْجَمَةَ البَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَتْ: .....

## ٥- بَابُ: كَفَّارَةُ الْبِزَاقِ فِي الْمَسْجِدِ

- ٢٤٨ ..... دَ تَرْجَمَةَ البَابِ مَقْصِدًا: .....  
 ٢٤٨ ..... بِه جَمَاتِ كِنْبِي دَ تَوَكَّلُوا يَأْنَهُ تَوَكَّلُوا دَ أَحْكَامَاتُو خِلَاصَهُ: .....  
 ٢٤٩ ..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: .....  
 ٢٤٩ ..... تَرَا جِمَ رِجَالٍ: .....  
 ٢٤٩ ..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ: .....  
 ٢٥٠ ..... دَ حَدِيثِ مَبَارَكٍ دَ تَرْجَمَةَ البَابِ سِرِهِ مَطَابَقَتْ: .....

## ٦- بَابُ: دَفْنِ التُّخَامَةِ فِي الْمَسْجِدِ

- ٢٥١ ..... دَ تَرْجَمَةَ البَابِ مَقْصِدًا: .....  
 ٢٥١ ..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: .....  
 ٢٥١ ..... تَرَا جِمَ رِجَالٍ: .....  
 ٢٥٢ ..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ: .....  
 ٢٥٢ ..... بِه جَمَاتِ كِنْبِي دَ تَوَكَّلُوا مَعَانَعَتْ صَرَفَ دَ مَوْنُخٍ دُورَانِ كِنْبِي دِي كِه دَ مَوْنُخِ نِه بَهْرِهِم دِي؟: .....  
 ٢٥٣ ..... كَسِ طَرَفِ تِه تَوَكَّلُوا كِنْبِي وَلِي دَ فَرِينَتِي بِي أَحْتِرَامِي نَشْتِه؟: .....  
 ٢٥٤ ..... تَوَكَّانَرِي بِه جَمَاتِ كِنْبِي دَ دَفْنِ كُولُو صُورَتِ: .....  
 ٢٥٤ ..... دَ تَرْجَمَةَ البَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَتْ: .....

## ٧- بَابُ: إِذَا بَدَرَهُ الْبِزَاقُ فَلْيَأْخُذْ بِطَرَفِ ثَوْبِهِ

- ٢٥٥ ..... دَ تَرْجَمَةَ البَابِ مَقْصِدًا: .....  
 ٢٥٦ ..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: .....  
 ٢٥٦ ..... تَرَا جِمَ رِجَالٍ: .....  
 ٢٥٧ ..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ: .....

د وایت د ترجمه الباب سره مناسبت: ..... ۲۵۷  
 د حدیث مبارک نه مستنبط شوی احکام او مسائل: ..... ۲۵۸

### ۸- بَابُ: عِظَةُ الْإِمَامِ النَّاسِ فِي إِتْمَامِ الصَّلَاةِ، وَذِكْرِ الْقِبْلَةِ

د ترجمه الباب ما قبل سره مناسبت او مقصد: ..... ۲۵۹  
 د حدیث ترجمه: ..... ۲۶۱  
 تراجم رجال: ..... ۲۶۱  
 د حدیث شرح: ..... ۲۶۲  
 د نبی کریم ﷺ د شاته کتلو مطلب: ..... ۲۶۳  
 د منکرینو اشکالات او د هغوی دلائل: ..... ۲۶۲  
 د اشکالاتو جواب: ..... ۲۶۲  
 د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته ذکر کرې شوی تشریح: ..... ۲۶۷  
 دکلام خلاصه: ..... ۲۶۸  
 د نبی کریم ﷺ د پاره د علم غیب په ثوب باندي یو غلط استدلال: ..... ۲۶۹  
 ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ..... ۲۶۹  
 د حدیث شریف نه مستنبط شوی امور او احکام: ..... ۲۷۰  
 د حدیث ترجمه: ..... ۲۷۱  
 تراجم رجال: ..... ۲۷۱  
 د حدیث شرح: ..... ۲۷۱

### ۹- بَابُ: هَلْ يُقَالُ: مَسْجِدُ بَنِي فُلَانٍ؟

د ترجمه الباب د ما قبل ابوابو سره مناسبت: ..... ۲۷۳  
 د ترجمه الباب مقصد: ..... ۲۷۳  
 د حدیث ترجمه: ..... ۲۷۴  
 تراجم رجال: ..... ۲۷۴  
 د حدیث شرح: ..... ۲۷۵  
 د مسابقه نه مراد: ..... ۲۷۵  
 د تضمیر د دوو معنو بیان: ..... ۲۷۲  
 حفیاء نه مراد: ..... ۲۷۲  
 د ثنیة الوداع د تسمیې وجه او مطلب: ..... ۲۷۲  
 د بنی زریق مصداق: ..... ۲۷۷  
 د آسونو زغلولو حکم: ..... ۲۷۸  
 د آسونو زغلولو په شرکاؤ کنبی د نبی کریم ﷺ د انعام تقسیمول: ..... ۲۷۹  
 د حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت: ..... ۲۷۹  
 د حدیث مبارک نه مستنبط شوی فوائد او احکام: ..... ۲۷۹

۱۰- بَابُ: الْقِسْمَةُ، وَتَعْلِيقُ الْقِنُوفِ الْمَسْجِدِ

د ترجمه الباب مقصد او د حضرت رحمته کنکوھی رحمته رانی: ..... ۲۸۰

- ٢٨١..... د حضرت شيخ الحديث صاحب نور الله مرقدہ رائي:
- ٢٨٢..... د حضرت كشميري صاحب رحمۃ اللہ علیہ رائي:
- ٢٨٤..... فائده مهمه:
- ٢٨٤..... تعليق او يو وضاحت:
- ٢٨٤..... د تعليق مقصد او تشريح:
- ٢٨٥..... د حديث ترجمه:
- ٢٨٦..... تراجم رجال:
- ٢٨٦..... د حديث شرح:
- ٢٨٦..... د بحرین نه خنگه او خومره مال راولپنډي شو؟:
- ٢٨٨..... په جمات كښې د مال دهيري كولو وجه:
- ٢٨٨..... د حضرت عباس رضي الله عنه د سوال كولو وجه:
- ٢٨٩..... د فديې وركولو مطلب:
- ٢٨٩..... نبی كريم صلى الله عليه وسلم د حضرت عباس رضي الله عنه امداد ولي او نه كرو؟:
- ٢٩٠..... د حديث شريف ترجمه الباب سره مناسبت:
- ٢٩٠..... د حديث نه مستنبط شوي فوائد او احكام:

### ١١ - بَابُ: مَنْ دَعَا لَطَعًا فِي الْمَسْجِدِ وَمَنْ أَجَابَ فِيهِ

- ٢٩١..... د ترجمه الباب تشريح:
- ٢٩١..... د ترجمه الباب مقصد:
- ٢٩٢..... د حديث ترجمه:
- ٢٩٢..... تراجم رجال:
- ٢٩٣..... د حديث شرح:
- ٢٩٤..... د حديث د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ٢٩٤..... د حديث شريف نه استفاد امور او احكام:

### ١٢ - بَابُ الْقَضَاءِ وَاللِّعَانِ فِي الْمَسْجِدِ بَيْنَ الرَّجَالِ وَالنِّسَاءِ

- ٢٩٥..... د ترجمه الباب تشريح، د قضاء لغوي او اصطلاحي تعريف:
- ٢٩٥..... په جمات كښې د قضاء حكم:
- ٢٩٦..... د لعان لغوي او اصطلاحي تعريف:
- ٢٩٧..... د لعان طريقه:
- ٢٩٨..... د حديث ترجمه:
- ٢٩٨..... تراجم رجال:
- ٢٩٩..... د حديث شرح:
- ٣٠٠..... د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مناسبت:

### ١٣ - بَابُ: إِذَا دَخَلَ بَيْتًا يُصَلِّي حَيْثُ شَاءَ أَوْ حَيْثُ أَمْرٌ وَلَا يَتَجَسَّسُ

- ٣٠٠..... د ترجمه الباب مقصد:
- ٣٠٢..... د چاكورته د تلو ادب:

- ۳۰۲..... د حدیث ترجمہ:
- ۳۰۳..... تراجم رجال:
- ۳۰۴..... د حدیث شرح:
- ۳۰۴..... نبی کریم ﷺ پخپله راغلو؟ یا حضور پاک راغونښتی شوې وو؟
- ۳۰۵..... د نوافلو د جمع حکم:
- ۳۰۵..... د احنافو مسلک:
- ۳۰۸..... د تداعی نه مراد:
- ۳۰۸..... د مالکیو مذهب:
- ۳۰۸..... د حنابلو مذهب:
- ۳۰۹..... د شافعیو مذهب:
- ۳۰۹..... د سلف صالحینو په آثار سره د تبرک حکم:
- ۳۱۲..... د حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ۳۱۲..... د حدیث شریف نه مستفاد امور او احکام:

## ۱۴- بَابُ: الْمَسَاجِدِ فِي الْبُيُوتِ

- ۳۱۲..... د ترجمه الباب وضاحت:
- ۳۱۲..... په کورونو کښې د جماتونو جوړولو مطلب:
- ۳۱۲..... په کورونو کښې د جمع کولو حکم:
- ۳۱۴..... د ترجمه الباب مقصد:
- ۳۱۵..... تعلیق:
- ۳۱۵..... د تعلیق تخریج:
- ۳۱۵..... د تعلیق رجال:
- ۳۱۵..... د تعلیق ترجمه او تشریح:
- ۳۱۵..... د تعلیق مقصد:
- ۳۱۵..... د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ۳۱۷..... د حدیث ترجمه:
- ۳۱۷..... تراجم رجال:
- ۳۱۸..... د حدیث شرح:
- ۳۱۹..... حضرت عتبان بن مالک رضی اللہ عنہ نابینا وو که کم نظر والا؟
- ۳۲۱..... د ان شاء الله ویلو مقصد:
- ۳۲۱..... نبی کریم ﷺ سره څومره صحابه کرامو تشریف راوړو؟
- ۳۲۳..... په دوو مختلفو مقاماتو کښې د نبی له مختلف عمل:
- ۳۲۳..... حضرت عبد الله بن ام مکتوم رضی اللہ عنہ ته خو په کور کښې د مونځ کولو اجازت نه وو ملاؤ شوې بیا ده ته څنگه ملاؤ شو؟
- ۳۲۴..... د خزیره معنی:
- ۳۲۵..... صحیح لفظ الدخیشن نه بلکه الدخیشم دي:

۴۲۸..... د روایت د ترجمه الباب سره مطابقت: .....  
 ۴۲۸..... د حدیث شریف نه مستنبط شوی فوائد او احکام: .....

### ۱۵- بَابُ: التَّيْمُنُ فِي دُخُولِ الْمَسْجِدِ وَغَيْرِهِ

۴۳۰..... د ترجمه الباب تشریح: .....  
 ۴۳۰..... د ترجمه الباب مقصد: .....  
 ۴۳۱..... تعلیق: .....  
 ۴۳۱..... د تعلیق ترجمه: .....  
 ۴۳۱..... د تعلیق تخریج: .....  
 ۴۳۱..... د تعلیق مقصد: .....  
 ۴۳۱..... د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: .....  
 ۴۳۱..... د حدیث ترجمه: .....  
 ۴۳۲..... تراجم رجال: .....  
 ۴۳۲..... د حدیث شرح: .....  
 ۴۳۴..... د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره ربط: .....

### ۱۶- بَابُ: هَلْ تُنْبَشُ قُبُورُ مُشْرِكِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَيَتَّخَذُ مَكَانَهَا مَسَاجِدَ

۴۳۴..... د ترجمه الباب تشریح: .....  
 ۴۳۲..... د لعنت په سبب کښې د علامه نووی رحمته الله علیه تشریح: .....  
 ۴۳۲..... د لعنت په سبب کښې د ملا علی قاری رحمته الله علیه تشریح: .....  
 ۴۳۲..... د لعنت په سبب کښې د حضرت گنگوهی رحمته الله علیه تشریح: .....  
 ۴۳۷..... د لعنت په سبب کښې د کشمیری رحمته الله علیه تشریح: .....  
 ۴۳۷..... د لعنت په سبب کښې د علامه شبیر احمد عثمانی رحمته الله علیه تشریح: .....  
 ۴۳۷..... د لعنت په سبب کښې د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه تشریح: .....  
 ۴۳۷..... د قبر مخامخ د مورخ گولو حکم: .....  
 ۴۳۷..... د احنافو مذهب: .....  
 ۴۳۸..... د مالکیو مذهب: .....  
 ۴۳۸..... د حنابلو مذهب: .....  
 ۴۳۸..... د حنابلو په نیز د قبرستان تعریف: .....  
 ۴۳۸..... د شوافعو مذهب: .....  
 ۴۳۹..... د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه رانی: .....  
 ۴۴۱..... د حضرت عمر رضی الله عنه د اثر تخریج: .....  
 ۴۴۱..... د صالحینو د مزاراتو سره نیز د جماتونو حکم: .....  
 ۴۴۲..... د حدیث ترجمه: .....  
 ۴۴۲..... تراجم رجال: .....  
 ۴۴۳..... د حدیث شرح: .....  
 ۴۴۴..... د بت پرستی شروع څنگه شوی ده؟: .....  
 ۴۴۵..... د شرار لغوی تحقیق: .....

- ۳۴۵..... د شرار الخلق مصداق کوم خلق دنی؟
- ۳۴۶..... د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ۳۴۸..... د حدیث شریف نه مستنبط شوی فوائد او احکام:
- ۳۴۸..... د حدیث ترجمه:
- ۳۴۹..... تراجم رجال:
- ۳۵۰..... د حدیث شرح:
- ۳۵۰..... د نبی کریم ﷺ مدینې ته راتګ کله شوې وو؟
- ۳۵۱..... د جمعی فرضیت مکه کښې شوې وو:
- ۳۵۲..... تورې زورندولو سره د راتلو څه مقصد وو؟
- ۳۵۲..... د حضرت ابوبکر رضی الله عنه د نبی کریم ﷺ د ردیف جوړیدو وجه:
- ۳۵۳..... اوبښه د الله تعالی د طرف نه ماموره:
- ۳۵۳..... د دې واقعي سره متعلق د سیر یو عجیبه روایت:
- ۳۵۴..... د حضرت ابویوب انصاری رضی الله عنه د کور تاریخ:
- ۳۵۸..... په وخت د ضرورت د مشرکانو قبرونو وړاندولو جواز:
- ۳۵۹..... د حضرت عمار بن یاسر رضی الله عنه د شهادت خبر:
- ۳۵۹..... د نبی کریم ﷺ او د صحابوؤ شعرونه وئیل:
- ۳۶۰..... د سماع په مباح کیدو باندې استدلال:
- ۳۶۲..... د انصارو د تمسیه وجه:
- ۳۶۲..... د مهاجرینو د تسمیه وجه:
- ۳۶۳..... د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت:
- ۳۶۳..... د حدیث مبارک نه مستفاد امور او احکام:

## ۱۷- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَرَايِضِ الْغَنَمِ

- ۳۶۴..... د ترجمه الباب مقصد:
- ۳۶۴..... د حدیث ترجمه:
- ۳۶۴..... تراجم رجال:
- ۳۶۵..... د حدیث شرح:
- ۳۶۶..... د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت:

## ۱۸- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَوَاضِعِ الْإِبِلِ

- ۳۶۷..... د ترجمه الباب مقصد:
- ۳۶۸..... د علامه سندھی رضی الله عنه رائي:
- ۳۶۸..... د حضرت گنگوهی رضی الله عنه رائي:
- ۳۶۸..... د علامه کاندهلوی رضی الله عنه رائي:
- ۳۶۸..... د اوسانو باره کښې د مونځ کولو حکم:
- ۳۶۹..... د حنابله د دلیل جواب:
- ۳۷۰..... د غواگانو باره کښې د مونځ ادا کولو حکم:
- ۳۷۰..... د حدیث ترجمه:

- ۳۷۱ ..... تراجم رجال
- ۳۷۲ ..... د حدیث شرح
- ۳۷۳ ..... د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت
- ۳۷۳ ..... د حدیث مبارک نه مستنبط فوائد او احکام
- ۱۹- بَاب: مَنْ صَلَّى وَقَدَّامَهُ تَنُورٌ أَوْ نَارٌ، أَوْ شَيْءٌ مِمَّا يُعْبَدُ، فَأَرَادَ بِهِ اللَّهُ
- ۳۷۴ ..... د ترجمه الباب تشریح
- ۳۷۵ ..... د ترجمه الباب مقصد
- ۳۷۵ ..... تعلیق
- ۳۷۵ ..... د تعلیق ترجمه
- ۳۷۶ ..... د تعلیق تخریج
- ۳۷۶ ..... تعلیق او ترجمه الباب کنسی مطابقت
- ۳۷۶ ..... د تعلیق نه طریق د استدلال
- ۳۷۶ ..... د احنافو مسلک او د امام بخاری رحمته الله د استدلال جواب
- ۳۷۸ ..... د امام بخاری رحمته الله په مسلک باندې یو اعتراض
- ۳۷۸ ..... د حدیث ترجمه
- ۳۷۸ ..... تراجم رجال
- ۳۷۹ ..... د حدیث شرح
- ۳۷۹ ..... د صلاة کسوف او خسوف مصداق
- ۳۸۰ ..... د ترجمه الباب سره مطابقت
- ۳۸۰ ..... د حدیث مبارک نه مستفاد امور
- ۳۸۱ ..... د جماتونو د قبلې والا دیوال کنسی هیتیر یا گیس یا لیمپ وغیره د لگولو حکم
- ۲۰- بَاب: كَرَاهِيَةِ الصَّلَاةِ فِي الْمَقَابِرِ
- ۳۸۱ ..... قبرستان کنسی د مونخ حکم
- ۳۸۲ ..... د ترجمه الباب مقصد
- ۳۸۲ ..... د حدیث ترجمه
- ۳۸۲ ..... تراجم رجال
- ۳۸۲ ..... د حدیث شرح
- ۳۸۳ ..... په کورونو کنسی د نوافل کولو باره کنسی د علامه قرطبی رحمته الله موقف
- ۳۸۳ ..... د قاضی عیاض رحمته الله موقف
- ۳۸۴ ..... د جمهورو موقف
- ۳۸۴ ..... په کورونو کنسی د نوافل کولو فائده
- ۳۸۴ ..... کورونه قبرستان نه جوړولو سره متعلق د حضرت شیخ الحدیث رحمته الله رائی
- ۳۸۵ ..... د علامه خطابی رحمته الله رائی
- ۳۸۵ ..... د علامه تورپشتی رحمته الله رائی
- ۳۸۶ ..... د ملا علی قاری رحمته الله رائی

- ۳۸۶..... د علامه خطابی رحمۃ اللہ علیہ یو اشکال او د هغی جواب: .....  
 ۳۸۷..... د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت: .....  
 ۳۸۷..... د علامه کورانی رحمۃ اللہ علیہ رائي: .....

### ۲۱- بَاب: الصَّلَاةُ فِي مَوَاضِعِ الخُسْفِ وَالْعُدَابِ

- ۳۸۸..... د ترجمه الباب تشریح: .....  
 ۳۸۸..... د خسف نه مراد کومه واقعه ده؟: .....  
 ۳۸۹..... د ترجمه الباب مقصد: .....  
 ۳۸۹..... یو اشکال او د هغی جواب: .....  
 ۳۸۹..... تعلیق: .....  
 ۳۸۹..... د تعلیق تخریح: .....  
 ۳۹۰..... د تعلیق ترجمه: .....  
 ۳۹۰..... د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت: .....  
 ۳۹۰..... بابل بنار: .....  
 ۳۹۰..... د بابل د تسمیه وجه: .....  
 ۳۹۱..... د حدیث ترجمه: .....  
 ۳۹۱..... تراجم رجال: .....  
 ۳۹۲..... د حدیث شرح: .....  
 ۳۹۲..... حجر کوم یو مقام دی؟: .....  
 ۳۹۴..... قوله لا یصیبکم ما أصابهم، باندي یوشبه او د هغی جواب: .....  
 ۳۹۵..... د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت: .....  
 ۳۹۵..... د حدیث شریف نه مستنبط شوی احکام او آداب: .....

### ۲۲- بَاب: الصَّلَاةُ فِي البَيْعَةِ

- ۳۹۵..... د ترجمه الباب تشریح: .....  
 ۳۹۵..... بیعة او کنیسه کنی فرق: .....  
 ۳۹۶..... د ترجمه الباب مقصد: .....  
 ۳۹۶..... د حضرت گنگوهی رحمۃ اللہ علیہ رائي: .....  
 ۳۹۶..... سابقه یو باب سره تعارض او د هغی حل: .....  
 ۳۹۶..... رومی تعلیق: .....  
 ۳۹۶..... د تعلیق ترجمه: .....  
 ۳۹۷..... د تعلیق تخریح: .....  
 ۳۹۷..... د تعلیق تشریح: .....  
 ۳۹۷..... د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: .....  
 ۳۹۸..... دویم تعلیق: .....  
 ۳۹۸..... د تعلیق ترجمه: .....  
 ۳۹۸..... د تعلیق تخریح: .....  
 ۳۹۸..... د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: .....



- ٣٩٩..... د حديث ترجمه :  
 ٣٩٩..... تراجم رجال :  
 ٤٠٠..... د حديث شرح :  
 ٤٠٠..... د حديث شريف د ترجمة الباب سره مطابقت :  
 ٤٠٠..... حديث باب (دويم حديث) :  
 ٤٠٠..... د نسخو فرق :  
 ٤٠١..... د حديث ترجمه :  
 ٤٠١..... تراجم رجال :  
 ٤٠٢..... د حديث شرح :  
 ٤٠٤..... يواشكال او د هغې جواب :  
 ٤٠٥..... آيا بنسخه نبى كيدي شي ؟ :  
 ٤٠٥..... د حديث د شريف ترجمة الباب سره مطابقت :  
 ٤٠٦..... د حديث ترجمه :  
 ٤٠٦..... تراجم رجال :  
 ٤٠٧..... د حديث شرح :

### ٢٣- بَابُ: قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ (جُعِلَتْ لِي الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَظَهْرًا)

- ٤٠٧..... د ترجمة الباب مقصد :  
 ٤٠٧..... د حديث ترجمه :  
 ٤٠٨..... تراجم رجال :  
 ٤٠٨..... د حديث شرح :  
 ٤٠٨..... د حديث مبارك د ترجمة الباب سره مطابقت :

### ٢٤- بَابُ: نَوْمِ الْمَرْأَةِ فِي الْمَسْجِدِ

- ٤٠٩..... د ترجمة الباب مقصد :  
 ٤١٠..... د حديث ترجمه :  
 ٤١٠..... تراجم رجال :  
 ٤١١..... د حديث شرح :  
 ٤١٥..... د حديث شريف د ترجمة الباب سره مطابقت :  
 ٤١٥..... د حديث شريف نه مستفاد فوائد او احكام :

### ٢٥- بَابُ: نَوْمِ الرِّجَالِ فِي الْمَسْجِدِ

- ٤١٢..... د ترجمة الباب مقصد :  
 ٤١٧..... رومي تعليق :  
 ٤١٧..... د تعليق ترجمه :  
 ٤١٧..... د تعليق تخريج :

- ۴۱۷..... د تعلیق رجال: د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: ۴۱۷.....  
 ۴۱۷..... دویم تعلیق: ۴۱۷.....  
 ۴۱۷..... د تعلیق ترجمه: ۴۱۷.....  
 ۴۱۷..... د تعلیق تخریج: ۴۱۸.....  
 ۴۱۸..... د تعلیق رجال: ۴۱۸.....  
 ۴۱۸..... صفه او اصحاب صفه: ۴۲۱.....  
 ۴۲۱..... د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: ۴۲۱.....  
 ۴۲۱..... د حدیث ترجمه: ۴۲۱.....  
 ۴۲۱..... تراجم رجال: ۴۲۲.....  
 ۴۲۲..... د حدیث شریف شرح: ۴۲۲.....  
 ۴۲۲..... د انسانی عمر مختلف ارتقائی ادوار: ۴۲۳.....  
 ۴۲۳..... د العلماء العزب تعارف: ۴۲۴.....  
 ۴۲۴..... د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: ۴۲۴.....  
 ۴۲۴..... د حدیث شریف نه استفاد امور او آداب: ۴۲۴.....  
 ۴۲۴..... په جمات کنبی د اوده کیدو باره کنبی د ائمه کرامو مذهب: ۴۲۴.....  
 ۴۲۴..... د احنافو مسلک: ۴۲۴.....  
 ۴۲۴..... د مالکیو مسلک: ۴۲۵.....  
 ۴۲۵..... د شوافعو او حنابلو مسلک: ۴۲۵.....  
 ۴۲۵..... د تبلیغی جماعت والو په جمات کنبی اوده کیدل: ۴۲۵.....  
 ۴۲۵..... د دینی مدارسو د طالبانو په جمات کنبی اوده کیدل: ۴۲۸.....  
 ۴۲۸..... د حدیث ترجمه: ۴۲۸.....  
 ۴۲۸..... تراجم رجال: ۴۲۹.....  
 ۴۲۹..... د حدیث شرح: ۴۳۰.....  
 ۴۳۰..... د ناخوینې خبره د دوارو طرفونه شوی وه: ۴۳۰.....  
 ۴۳۰..... د حضرت فاطمه رضی اللہ عنہا صفا خبره: ۴۳۰.....  
 ۴۳۰..... لوپنی خو کرنگیری: ۴۳۱.....  
 ۴۳۱..... د قیلوله حکم: ۴۳۲.....  
 ۴۳۲..... د حضرت علی رضی اللہ عنہ کنیت د ابوتراب د تسمیه وجه: ۴۳۳.....  
 ۴۳۳..... د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: ۴۳۳.....  
 ۴۳۳..... د حدیث مبارک نه استفاد امور و آداب: ۴۳۴.....  
 ۴۳۴..... د حدیث ترجمه: ۴۳۴.....  
 ۴۳۴..... تراجم رجال: ۴۳۴.....

- ٤٣٥..... فائده:  
 ٤٣٦..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ:  
 ٤٣٦..... دَ اصحاب صفه تعداد:  
 ٤٣٦..... دَ مدارسو او خانقاھونو اصل:  
 ٤٣٧..... دَ حَدِيثِ مَبَارَكٍ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِهِ مَطَابَقَتِ:

## ٢٦- بَابُ: الصَّلَاةِ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ

- ٤٣٨..... دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ مَقْصِدٍ:  
 ٤٣٨..... تَعْلِيْقٍ:  
 ٤٣٨..... دَ تَعْلِيْقِ تَرْجَمَةٍ:  
 ٤٣٩..... دَ تَعْلِيْقِ تَخْرِيجٍ:  
 ٤٣٩..... دَ تَعْلِيْقِ رَاوِيٍ:  
 ٤٤٤..... دَ تَعْلِيْقِ مَقْصِدٍ:  
 ٤٤٤..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَةٍ:  
 ٤٤٥..... تَرَاجِمِ رِجَالٍ:  
 ٤٤٦..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ:  
 ٤٤٦..... دَ حَدِيثِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَتِ:  
 ٤٤٧..... دَ حَدِيثِ مَبَارَكٍ نَهْ مَسْتَفَادِ امُورٍ اَوْ آدَابِ:

## ٢٧- بَابُ: إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رُكْعَتَيْنِ

- ٤٤٨..... دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ مَقْصِدٍ:  
 ٤٤٨..... رُومِيٍّ مَسْئَلَةٍ: پِهْ مَكْرُوهُ وَخَتُونُ كُنْبِي دَ تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ حَكْمٍ:  
 ٤٤٩..... دُويْمِهْ مَسْئَلَةٍ: تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ صَرَفِ پِهْ دَاخِلِيْدُونْ كِي بَانْدِي دِي، اَوْ كِهْ تِيرِيْدُونْ كِي بَانْدِي هَمْ؟  
 ٤٥٠..... دَرِيْمِهْ مَسْئَلَةٍ: تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ وَاجِبِ دِي كِهْ مَسْتَحَبٌّ؟  
 ٤٥١..... خَلُورْمِهْ مَسْئَلَةٍ: دَنْفَلِ مَوْنِخِ دَ كَمْ نِهْ كَمْ خُورْ كَعَاتِهْ؟  
 ٤٥٢..... پِنْخَمِهْ مَسْئَلَةٍ: دَ تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ وَخْتِ:  
 ٤٥٥..... دَ حَدِيثِ تَرْجَمَةٍ:  
 ٤٥٥..... تَرَاجِمِ رِجَالٍ:  
 ٤٥٦..... دَ حَدِيثِ شَرْحٍ:  
 ٤٥٦..... دَ حَدِيثِ مَبَارَكِهِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَتِ:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## ۱۹- (۱) بَابُ إِذَا أَصَابَ تَوْبُ الْمُصَلِّيِ امْرَأَتُهُ إِذَا سَجَدَ

دا باب دې په دې باره کښې چه کله د مونځ گذار کپرې د سجدي په وخت هغه ښځې سره اولگي. (نود مونځ څه حکم دې؟)

د ترجمه الباب مقصد: علامه عيني رحمته الله عليه فرماني چه دامام بخاري رحمته الله عليه عادت دادې چه په ترجمه الباب کښې دا قسم عبارت هغه وخت راوړي کله چه په يو شرعي حکم کښې د يو امام اختلاف وي ليکن په دې مقام کښې خلاف عادت داسې مسئله بيان شوې ده په کوم کښې چه د چاهم اختلاف نشته دې. (۲)

د حضرت شيخ الحديث صاحب رحمته الله عليه واتي: شيخ الحديث صاحب رحمته الله عليه فرماني چونکه مس مرأة د بعضو په نيز ناقض وضو دې نوممكن ده چه چاته دا وهم وي چه که چرې د مونځ گذار کپرا ښځې سره اولگي د مونځ په حالت کښې، نو دا به د کراهت سبب وي. په دې وجه امام بخاري رحمته الله عليه دا وهم دفع کوي او فرماني چه په دې سره په مونځ کښې هيڅ خلل نه راځي. مگر ما بيان کړې دې چه امام بخاري رحمته الله عليه خوپه مس مرأة سره د اودس کولو قائل دې او نه د ذکر په مس کولو سره، او نه په قهقهې سره. هغه په مسائلو کښې نه د احنافو سره دې اونه د شوافع سره دې.

اود امام بخاري رحمته الله عليه دويم غرض دا هم کيدې شي چه په احنافو باندې رد دې ځکه چه احناف محاذاة مرأة مفسد صلاة گرځوي او دلته په روايت کښې د حذاء لفظ موجود دې ليکن په دې سره په احنافو باندې رد نه شي کيدې ځکه چه احناف مطلقاً محاذات مفسد نه مني بلکه د هغې د پاره څه شرطونه دي مثلاً چه امام د ښځې د امامت نيت کړې وي او ښځه د هغه سره په مونځ کښې شريکه وي. ليکن چونکه امام بخاري رحمته الله عليه استدلال کوي په دې وجه ممکن ده چه د حذاء د لفظ نه ئي استدلال کړې وي. (۳)

حديث باب: [حديث نمبر ۲۷۲ صفحه ۱۶۶]

۲۷۱- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ خَالِدِ بْنِ إِسْحَاقَ قَالَ حَدَّثَنَا سَلِيمَانُ بْنُ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ مَيْمُونَةَ قَالَتْ (۲) كَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُصَلِّي وَأَنَا حِدَاءٌ وَأَنَا حَابِضٌ وَرَمَّأُ صَابِنِي تَوْبَهُ إِذَا سَجَدَ. قَالَتْ وَكَانَ يُصَلِّي عَلَيَّ الْخُمْرَةَ.

(۱) کشف الباری کښې د ډاکټر مصطفي ديب البغا چه کومه نسخه د متن په توگه بنياد جوړ کړې شوې دې د هغه نسخې مطابق د دې باب نمبر ۱۸ دې خوپه نورو نسخو کښې کوم چه فتح الباری، عمدة القاری او ارشاد الساری وغيره کښې دی دهغې مطابق د دې باب نمبر ۱۹ دې.

(۲) عمدة القاری: ۱۶۰/۴.

(۳) الكنز المتواری: ۶۵/۴-۶۴/۴ تقرير بخاری شريف: ۱۳۵/۲، سراج القاری: ۴۰۸/۲.

(۴) من نخریجه فی کشف الباری، کتاب الحيض، باب، رقم الحديث: ۳۳۳.

ترجمه حديث د حضرت ميمونه رضي الله عنها روايت دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم مونځ كولو او زه د حضور پاك په اړخ كښې ملاسته ووم په داسې حال كښې چه زه حائضه ووم او كله كله به چه حضور پاك سجدي ته تلو نو د حضور پاك كپړې به زما بدن سره لگيدلې. حضرت ميمونه رضي الله عنها فرماني چه حضور پاك به په پوزكي باندې مونځ كولو.  
تواجم رجال په مذكوره حديث مبارك كښې پنځه رجال دي:

① مسدد بن مسرهد بن مسرهد بن مرعيل اسدي رضي الله عنه دي د دوي تذكرة كشف

الباري كتاب الصلاة باب: من الايمان ان يحب لأخيه ما يحب لنفسه، كښې تير شوي دي (١)

② خالد بن عبد الله بن عبد الرحمن الطحان الواسطي رضي الله عنه دي. د دوي تذكرة

كشف الباري كتاب الوضوء، باب: من مضمض واستنشق من غرفة واحدة كښې تيره شوي ده (٢)

③ سليمان الشيباني رضي الله عنه دي. دا سليمان بن ابي سليمان ابو اسحاق شيباني كوفي رضي الله عنه دي. د

دوي تفصيلي احوال كشف الباري كتاب الحيض، باب: مباشرة العائض د دويم حديث لاندي

تير شوي دي (٣)

④ عبد الله بن شداد رضي الله عنه دي. د دوي تفصيلي احوال كشف الباري كتاب الحيض باب: مباشرة

العائض د دويم حديث لاندي تير شوي دي (٤)

⑤ ميمونه رضي الله عنها دي. دا ام المؤمنين حضرت ميمونه بنت الحارث رضي الله عنها ده. د دوي تذكرة كشف

الباري كتاب العلم، باب: السرقي العلم كښې تيره شوي ده (٥)

شرح حديث: د مذكوره حديث مبارك مكمل شرح د كتاب الحيض د آخري باب لاندي تيره

شوي ده. صرف د وانا حذاءه تركيبي حالت باره كښې عرض دي چه حذاءه منصوب

او مرفوع دواړه شان لوستل صحيح دي. تنصب به د ظرفيت په وجه وي او مرفوع به د خير

په توگه د ظرفيت په صورت كښې به جمله «أنا مقترضة حذاء النبي صلى الله عليه وسلم» وي (٦)

قوله: على الخيرة: بضم الغاء النعجة وسكون اليم، د كهجورو د پانرونه جوړ شوي پوزكي، جاني

نماز ته وائي. د دې پوره تشریح هم د كتاب الحيض د آخري باب لاندي تيره شوي ده

د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مناسبت. د مذكوره حديث مبارك د ترجمه الباب سره

مناسبت واضح دي چه په ترجمه كښې إذا أصاب ثوب المصلي امرأته إذا سجدت دي او هم

دغه خبره د حديث شريف جملي زبما أصابني توبه إذا سجدت كښې موجود ده.

(١) كشف الباري: ٢/٢.

(٢) كشف الباري. كتاب الوضوء، باب: من مضمض واستنشق من غرفة واحدة.

(٣) كشف الباري كتاب الحيض باب، مباشرة العائض، الحديث الثاني، ص: ٢٥٠.

(٤) كشف الباري كتاب الحيض باب مباشرة العائض، الحديث الثاني، ص: ٢٥٠.

(٥) كشف الباري: ٤٢٠/٤.

(٦) شرح الكرماني: ٤٤/٤، عمدة القاري: ١٦٠/٤.

د حدیث مبارک نه مستفاد امور او ادا: د دې حدیث مبارک نه دیر امور او ادا مستنبط کیږي مثلاً:

① د حائضه بنځې بدن ناپاکه نه وي، ځکه که چرته د حائضه بنځې بدن نجس وي نو نبی کریم ﷺ به مانځه کښې خپلې کپړې د حضرت میمونہ رضی اللہ عنہا سره لگولو ته نه پریځودې او هم دغه حکم د نفاس والا بنځې هم دې.

② حائضه بنځه که مونځ گذار سره نيزدې وي نو په دې سره په مونځ کښې هيڅ خرابی نه پيدا کیږي. ③ حائضې بنځې ته مونځ معاف دې.

④ دکه جوړو د پانرونه جوړ شوي پوزکي باندي مونځ کول صحيح دی. (۱)

## ۲۰- باب: الصَّلَاةُ عَلَى الْحَصِيرِ

دا باب دې په پوزکي باندي د مونځ کولو بارة کښې

د ترجمه الباب مقصد: حضرت شيخ الحدیث صاحب رحمته اللہ علیہ فرماني بعضي شارحینو دلتہ حدیث

«جعلت لی الأرض مسجداً وطهوراً» ذکر کولو سره په غیر ارض باندي د مونځ د جواز ذکر کړې دې.

خو زما په نیز د امام بخاری رحمته اللہ علیہ غرض یوه بله مسئله بیانول دی. هغه دا چه غالباً ابن ابی

شيبه رضی اللہ عنہ د حضرت عائشه صدیقه رضی اللہ عنہا نه نقل کړې دی چه هغوی «صلوة علی الحصیر» ته

مکروه وائی او د هغوی استدلال د دې آیت مبارک «وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا» نه دې

نو چونکه الله تعالی جهنم د کافرانو د پاره حصیر جوړ کړې دې نو دلتہ اشتراک اسمی موندلې

شی. لهذا په حصیر باندي به مونځ مکروه وي. نو اوس امام بخاری رحمته اللہ علیہ د حضرت عائشه

صدیقه رضی اللہ عنہا په قول باندي رد کوی چه د حضور پاک نه خو «صلوة علی الحصیر» ثابت دې. (۲)

حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ هم دې نکتي طرف ته اشاره کړې ده. (۳)

د حضرت عائشه رضی اللہ عنہا د اثر تخریج: د حضرت عائشه رضی اللہ عنہا مذکوره اثر په مسند ابی یعلی

الموصلی کښې موجود دې. پوره اثر او گورثی: «حدثنا أبو بکر حدثنا یزید بن مقدمار عن المقدمار بن

شریح، من أبیه أنه سأل عائشة: أكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصل على الحصير؟ فإن سعت في كتاب

الله «وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا» قالت: «لم يكن يصل عليه» (۴)

په ظاهره داسې معلومیږي چه د امام بخاری رحمته اللہ علیہ په نیز مذکوره اثر ثابت نه دې یا هغوی دا

شاذ گرځولو سره رد کړې دې. ځکه چه د دې معارض د دې نه قوی حدیث موجود وو لکه

حدیث باب. بلکه امام بخاری رحمته اللہ علیہ باب: صلوة اللیل کښې د حضرت ابو سلمه په طریق سره د

(۱) شرح الکرمانی: ۴/۴، عمدة القاری: ۳/۳۷۱، ۴/۱۶۰.

(۲) تفریر بخاری شریف: ۲/۱۳۸-۱۳۷، الكنز المتواری: ۴/۶۵، سراج القاری: ۲/۴۰۹.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۳۶.

(۴) مسند ابی یعلی الموصلی، مسند عائشه، رقم الحدیث: ۴۴۳۱، ۴/۷۵.

حضرت عائشه رضی اللہ عنہا روایت نقل کرے دی ہے کہ کوم کنبی ہے کہ حضور پاک پہ پوزگی باندی دے مونغ کولو تصریح دے (۱)

دغہ شان پہ صحیح مسلم کنبی دے حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ روایت موجود دی ہے ہفہ پخپلہ جناب نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم پہ پوزگی باندی دے مونغ کولو اولیدلو (۲)  
دارنگ پہ المصنف لابن ابی شیبہ کنبی دے حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ مرفوع روایات او دے حضرت ابن عمر، حضرت جابر بن عبد اللہ، حضرت مکحول، حضرت ثابت بن عبید اللہ او دے حضرت زید بن ثابت رضی اللہ عنہ آثار موجود دی. دے کوم نہ ہے کہ حصیر (پوزگی) باندی مونغ ادا کولو صحیح کیدل ثابتیری (۳)

دے حصیر تعریف: دے کہجورو دے پانرو نہ جو پشوی پوزگی یا بوجی تہ حصیر وئیلی شی. دا دے خمرہ نہ لوئی وی او پہ عام توگہ دے انسان دے قدر برابر وی دا پہ کورونو کنبی خورولے شی (۴)

تعلیق: «رَضِيَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَأَبُو سَعِيدٍ: «بِالسَّفِينَةِ قَائِمًا»»

دے تعلیق ترجمہ: حضرت جابر او حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہما پہ کشتی کنبی پہ ولا رہ باندی مونغ او کرو.

دے تعلیق تخریج: دا تعلیق موصولاً ابن ابی شیبہ رضی اللہ عنہ پہ المصنف کنبی ذکر کرے دی، ونی گورنی: «حدثنا أبو بكر قال: حدثنا مروان بن معاوية، عن حميد، قال: سئل أنس عن الصلاة في السفينة، فقال عبد الله بن أبي عتبة مول أنس وهو معنا جالس: سافرت مع أبي سعيد الخدري، وأبي الدرداء، وجابر بن عبد الله، قال حميد: وأناس قد ساهم، فكان إمامنا يصل بنا في السفينة قائماً، ونحن نصل خلفه قياماً، ولو

(۱) حدثنا إبراهيم بن المنذر، قال: حدثنا ابن أبي فديك، قال: حدثنا ابن أبي ذئب، عن المقبري، عن أبي سلمة بن عبد الرحمن، عن عائشة رضي الله عنها، أن النبي صلى الله عليه وسلم كان له حصير، يبسطه بالنهار، ويحتج به بالليل، فتاب إليه ناس، فصلوا وراءه، (صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب: صلاة الليل، رقم الحديث ۷۳۰).

(۲) حدثني عمرو الناقد، وإسحاق بن إبراهيم - واللفظ لعمرو - قال: حدثني عيسى بن يونس، حدثنا الأعمش، عن أبي سفيان، عن جابر، حدثني أبو سعيد الخدري أنه دخل على النبي صلى الله عليه وسلم قال: فرأيتك يصل على حصير يسجد عليه قال: ورأيتك يصل في ثوب واحد متوشحاه. (صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: في الصلاة على الحصير، رقم الحديث: ۵۱۹).

(۳) (۱) حدثنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن أبي سفيان، عن جابر، عن أبي سعيد أن رسول الله صلى الله عليه وسلم صلى على حصير (۲) حدثنا وكيع، قال: حدثنا العمري، عن إسحاق بن عبد الله بن أبي طلحة، عن أنس، أن النبي صلى الله عليه وسلم صلى على حصير (۳) حدثنا وكيع، عن سفيان، عن توبة العنبري، عن نافع، عن ابن عمر، أنه كان يصل على حصير (۴) حدثنا وكيع، قال: حدثنا عمر بن ذر، عن يزيد الفقير قال رأيت جابر بن عبد الله، يصل على حصير من بردي (۵) حدثنا وكيع، عن هشام بن الغاز، عن مكحول قال: رأيتك يصل على الحصير ويسجد عليه (۶) حدثنا حفص، عن حجاج، عن ثابت بن عبد الله قال: رأيتك زید بن ثابت، يصل على حصير يسجد عليه (المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الصلاة، باب: في الصلاة على الحصير، رقم الحديث: ۴۰۴۳، ۴۰۵۶، ۳۹۹/۱-۳۹۸)

(۴) تاج العروس من جواهر القاموس، مادة: ح، ص، ر: ۲۸/۱۱، لسان العرب: ۱۰۳/۳، المعجم الوسيط، ص: ۱۷۹، إعلام الحديث للخطابي: ۳۷۲/۱.

سنن الأربعة وخرجنها (۱)

دَ تَعْلِيقِ رَجَالٍ دِي تَعْلِيقِ كِنْسِي دَوِه رَاوِيَان دِي

① جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ: دَا مَشْهُورِ صَحَابِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ انصاری رضی اللہ عنہ دِي دَ دَوِي تَفْصِيلِي اِحْوَالِ كَشْفِ الْبَارِي، كِتَابِ الْوُضُوءِ، بَاب: مِنْ لَمْ يَرِ الْوُضُوءَ اِلَّا مِنْ الْمَخْرَجِينَ مِنَ الْقَبْلِ وَالْدَّبْرِ. لَانْدِي تِيرِ شَوِي دِي. (۲)

② ابوسعید رضی اللہ عنہ: دَا مَشْهُورِ صَحَابِي رَسُولِ حَضْرَتِ سَعْدِ بْنِ مَالِكِ بْنِ سَنَانِ بْنِ عُبَيْدِ الْانصَارِي الْخَزْرَجِي رضی اللہ عنہ دِي. دَ دَوِي تَفْصِيلِي حَالَاتِ كَشْفِ الْبَارِي، كِتَابِ الْاِيْمَانِ، بَاب: مِنْ الدِّينِ الْفِرَارُ مِنَ الْفِتَنِ لَانْدِي تِيرِ شَوِي دِي. (۳)

دَ تَعْلِيقِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِّهِ مَنَاسِبَت:

دَ حَضْرَتِ شَيْخِ الْحَدِيثِ صَاحِبِ رِوَايَاتِهِ: حَضْرَتِ شَيْخِ الْحَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ فَرَمَاتِي چِه پِه دِي بَانْدِي اَشْكَالِ دِي چِه دَ سَفِينِي ذَكَرْتِي دَ حَصِيرِ پِه بَابِ كِنْسِي خَنِكِه رَاوِرِي دِي؟ كَوْمُو خَلْقُو چِه دَ بَابِ غَرَضِ دَا خَوْدَلِي دِي چِه غَيْرِ اَرْضِ بَانْدِي مَوْنُخِ كَوْلِ دَ «جَعَلْتُمْ لِي الْاَرْضَ» خِلَافِ مَعْلُومِي پِه هَفَوِي بَانْدِي رَدِ دِي. دَ هَفِه خَلْقُو پِه نِيَزَهْوُو خِه اَشْكَالِ نَشْتِه خَكِه چِه سَفِينِه اَوْ حَصِيرِ دَوَارِه غَيْرِ اَرْضِ دِي مَكْرُزِمَا پِه رَاثِي كِنْسِي بِه پِه دِي بَانْدِي اَشْكَالِ رَاخِي اَوْ جَوَابِ دَ هَفِي دَادِي چِه بَعْضِ وَخْتِ تَرْجَمِه كِنْسِي اسْتِدْلَالِ دَ عَادَتِ نِه كِيرِي. نُو چَوْنَكِه پِه عَامِ تَوَكُّه پِه سَفِينِه كِنْسِي دَنَنِه دَ حَصِيرِ خَوْرُولُو عَادَتِ دِي نُو دَدِي عَادَتِ پِه رَنْرَا كِنْسِي لَكِه پِه سَفِينِه كِنْسِي مَوْنُخِ پِه شَانِ دَ صَلَاةِ حَصِيرِ دِي. (۴)

دَ عَلَامِه ابْنِ الْمُنِيرِ رِوَايَاتِهِ: عَلَامِه ابْنِ الْمُنِيرِ مُحَمَّدِ بْنِ لَيْكِي «الصَّلَاةُ عَلَى الْحَصِيرِ» پِه تَرْجَمِه كِنْسِي «الصَّلَاةُ عَلَى السَّفِينَةِ» دَ دَاخِلُولُو وَجِهِ دَادِه چِه پِه پَوَزَكِي اَوْ كَشْتِنِي كِنْسِي مَوْنُخِ اِدَا كَوْلِ پِه غَيْرِ زَمَكِه بَانْدِي مَوْنُخِ اِدَا كَوْلِ دِي. يَعْْنِي دَوَارِه پِه دِي اَمْرِ كِنْسِي شَرِيكِ دِي اَوْ مَصْنَفِ مُحَمَّدِ بْنِ دَاسِي خَكِه اَوْ كَرَلِ چِه دَا وَهْمِ پِيدَا نِه شِي چِه دَمَوْنُخِ كِذَا رَدِّپَارِه پِه مَانُخِه كِنْسِي دَ زَمَكِي سِرِّهِ الصَّاقِ ضَرُورِي دِي. (۵)

هَمْ دَغِه خَبْرِه شَيْخِ بَدْرِ الدِّينِ بِه جَمَاعَةِ پِه مَنَاسِبَاتِ تَرَاجِمِ الْبَغَارِي كِنْسِي. (۶)

(۱) المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الصلاة، من صلى فيها قائما، رقم الحديث: ۶۶۶۶ ۴/۴۳۱.

(۲) كشف الباري، كتاب الوضوء، باب: من لم ير الوضوء إلا من المخرجين من القبل والدير.

(۳) كشف الباري: ۲/۸۲.

(۴) تقرير بغاري: ۲/۱۳۶.

(۵) المتواري على أبواب البخاري، ص: ۸۵.

(۶) مناسبات تراجم البخاري، ص: ۴۶.



او قاضی بدرالدین دامامینی رحمته الله په "مصابیح الجامع" کښې ذکر کړې ده (۱).  
 د حافظ ابن حجر رحمته الله وائي: حافظ ابن حجر رحمته الله ليکلی دی چه د دې نه امام بخاری رحمته الله د امام  
 ابو حنیفه رحمته الله د خلاف طرف ته اشاره کړې ده. د هغوی په نیز بغیرد عذر نه، یعنی په قیام  
 باندې د قدرت لرلو باوجود هم په کشتی کښې په ناسته مونغ کول جائز دی (۲).  
 د علامه عینی وائي: علامه عینی رحمته الله ليکلی چه دې سره قوی مناسبت دادې چه څنگه مصله  
 او جائې نماز په زمکه باندې وی دغه شان کشتی په اوبو باندې وی لهذا په دواړو باندې  
 مونغ کول جائز دی (۳).

په کشتی کښې د مونغ کولو حکم او مسئلې: که چرې کشتی یا سمندری جهاز روان وی نو د  
 امام ابو حنیفه رحمته الله په نیز بغیرد عذر نه په ناسته فرض او واجب مونغ کول جائز دی لیکن د  
 افضل خلاف او مکروه دی او په کشتی کښې په ناسته باندې د مونغ ادا کولو په صورت  
 کښې هم مونغ، د رکوع، سجدې سره ادا کول ضروری دی په ناسته په اشارې سره ادا کول  
 جائز نه دی. او د امام ابویوسف رحمته الله او امام محمد رحمته الله په نیز په کشتی کښې بغیرد عذر نه په  
 ناسته مونغ کول جائز نه دی او د عذر په صورت کښې د هغوی په نیز هم جائز دی په دې  
 اختلافی صورت کښې د صاحبین رحمهما الله مسلک مختار او قوی دې.

او که چرې کشتی په اوبو کښې روانه نه وی بلکه غاړې ته تړلې شوې وی نو په هغې کښې د  
 داسې سړی د پاره په ناسته مونغ کول جائز نه دی چه په قیام باندې قادر وی. ځکه چه په  
 دې صورت کښې دا کشتی د زمکې په مثل ده لهذا څه داسې عذر د کوم په وجه چه په  
 زمکه ناسته مونغ کول جائز وی هم د هغې عذر د وجې نه کشتی کښې په ناسته باندې  
 مونغ کول هم جائز وی او که چرې کشتی په دریاب کښې دننه ولاړه وی یعنی په ژورو اوبو  
 کښې لنګر انداز وی، تړلې شوې وی لیکن د هوا په وجه دیره زیاته خوزیږی نو دغه د روانې  
 کشتی په حکم کښې ده او که لږه خوزیږی نو د ولاړې کشتی په حکم کښې ده. دارنگ په  
 کشتی کښې د مونغ ادا کولو په وخت قبلې ته مخ کول ضروری دی. او که چرې کشتی د  
 قبلې طرف نه واوړی نو مونغ گذار دې هم خپل مخ د قبلې طرف ته او ګرځوی. که سره د  
 قدرته د قبلې طرف ته نه تاویږی نو د هغه مونغ به جائز نه وی (۴).

د حافظ بن حجر رحمته الله یو قول او د هغې جواب: حافظ ابن حجر رحمته الله د مناسبت لاندې دا خبره

(۱) مصابیح الجامع للدامینی: ۱۰۲/۲.

(۲) فتح الباری: ۶۴۳/۱.

(۳) عمدة القاری: ۱۶۲/۴.

(۴) المبسوط للرخسی، کتاب الصلاة، باب: فی الصلوات فی السفینة: ۲/۲ رد المحتار. کتاب الصلوة، مطلب: فی  
 الصلاة فی السفینة: ۵۷۳/۲-۵۷۲، مراقی الفلاح شرح نور الإيضاح، کتاب الصلوة، الصلاة فی السفینة، ص: ۴۰۸.

ذکر کرې ده چه امام بخاری رحمته الله د امام ابوحنیفه رحمته الله خلاف طرف ته اشاره کرې ده. (۱)  
 نو واضحه دې وی چه په دې مسئله کېنې د امام صاحب رحمته الله استدلال د حضرت انس رضی الله عنه د  
 حدیث نه دې. دویمه خبره دا چه حضرت حسن بن زیاد رضی الله عنه په خپل کتاب کېنې د سوید بن  
 غفله په سند سره روایت کرې دې چه ما د حضرت ابوبکر او حضرت عمر فاروق رضی الله عنهما نه په  
 کشتنې کېنې د مونخ کولو باره کېنې سوال او کړو نو دواړو حضراتو او فرمائیل چه د کشتنې  
 د تلو په حالت کېنې په ناسته مونخ کوه او د اودریدو په حالت کېنې په ولاړه مونخ کوه.  
 دریمه خبره دا چه د کشتنې د تلو په حالت کېنې اکثر دوران رأس وی. لهذا د سبب په خانی  
 مسبب او کنز لې شو او هم داسې کیږی هم، خاص کر چه کله په مسبب باندې واقفیت گران  
 وی یا هغه داسې وی چه د سبب په موجودگنې کېنې دهغې نه موجودیدل ډیر نادر وی. څنگه  
 چه امام صاحب رحمته الله مباشرت فاحشه د منی د خروج قائمقام دې لهذا حکم په اکثری حالت  
 باندې ورکړې شو. (۲)

حضرت مجاهد، حضرت ابن سیرین، حضرت ابو قلابه، حضرت طاؤس او د حضرت جناده  
 بن ابی امیه رحمهم الله هم دغه موقف دې. (۳)

دویم تعلیق: وَقَالَ الْحَسَنُ: «كُنَّا نَمَالُ تَشْتِي عَلَى أَصْحَابِكَ تَدُورُ مَعَهَا وَالْأَقَاعِدَا»

د تعلیق ترجمه: او حضرت حسن بصری رضی الله عنه فرمائیلی دی چه په کشتنې کېنې په ولاړه باندې  
 مونخ کولې شی تر کومې پورې چه ستا ملگرو ته گرانه نه وی. (که چرې کشتنې تاؤ شی)  
 نوته کشتنې سره تاویربه (تر هغې پورې چه ستا مخ قبلې طرف ته شی) گنی په ناسته باندې  
 مونخ کوه.

د تعلیق تخریج: دا تعلیق ابن ابی شیبه رضی الله عنه موصولاً ذکر کرې دې، وئی گورئی: «حدثنا حفص  
 عن عاصم عن الشعبي والجنس وابن سيرين أنهم قالوا: صل في السفينة قائماً، وقال الحسن: "لا تشتق على  
 أصحابك"» (۴)

د تعلیق راوی: حسن رضی الله عنه: دا مشهور تابعی ابو سعید بن ابی الحسن یسار البصری رضی الله عنه دې.  
 د دوی تفصیلی احوال کتاب الإیمان پاپ: وإن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا، فأصلحوا بينهما لاندې

(۱) فتح الباری: ۶۳۴/۱

(۲) بدائع الصنائع، کتاب الصلاة، فصل: أماركانها: ۵۱۵/۱

(۳) حدثنا أبو بكر قال: حدثنا عبدالله بن إدريس، عن حصين، عن مجاهد، قال: كنا نغزو مع جنادة بن أبي أمية  
 البحر، فكنا نصل في السفينة قعوداً. حدثنا هشيم، عن يونس، أن ابن سيرين، قال: خرجت مع أنس، إلى بني  
 سيرين في سفينة عظيمة، قال: فأما فصلى بنا فيها جلوساً ركعتين، ثم صلى بنا ركعتين آخرتين. حدثنا ابن عليه،  
 عن خالد، عن أبي قلابه، أنه كان لا يرى بأساً بالصلوة في السفينة جالساً. حدثنا وكيع، عن أبي خزيمة، وطاوس،  
 قال: صل فيها قاعداً. المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، من قال: صل في السفينة جالساً، رقم الحديث:  
 ۶۵۶۳-۶۵۶۰ المصنف لابن عبدالرزاق، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في السفينة، رقم الحديث: ۴۵۵۶-۴۵۵۳.

(۴) المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، من قال: صل في السفينة قائماً، رقم الحديث: ۶۶۲۸

تشریح: قائماً حال دی دَ فعل محذوف متصل به، دغه شان به دا جمله دَ سائل دَ سوال جواب جوړ شی چه سوال کونکی تپوس او کړو چه په کشتی کبې مونخ په ولاړه ادا کړې شی که په ناسته؟ نو جواب ورکړې شو چه ته په کشتی کبې دَ اودریدو په حالت کبې مونخ ادا کوه ترکومې پورې چه ستا دَ پاره داسې کول سخت نه وی. او کله چه دَ کشتی په روانیدو سره ستا دَ پاره په ولاړه باندې مونخ کول گران شی اودَ پریوتلو اندیبنه وی نو په ناسته باندې مونخ کوه. ځکه چه په دې صورت کبې هم په ولاړه مونخ ادا کول دَ مونخ گذار دَ پاره دَ حرج سبب دې او حرج مدفوع دې. (۲)

دَ حضرت حسن بصری رضی الله عنه ددې خبرې نه درې مسئلې معلومې شوې: ① په کشتی کبې که څه عذر نه وی نو په ناسته دې مونخ نه کوی بلکه په ولاړه دې کوی.

② په کشتی کبې هم دَ قبلي طرف ته مخ کول ضروری دی. که چرې دَ مونخ دوران کبې کشتی تاؤ شی نو دَ مونخ گذار دَ پاره هم ضروری دی چه هغه دې هم تاؤ شی هم دغه حکم په ترین کبې دَ مونخ کولو دې.

③ که چرې په کشتی کبې مونخ کول گران وی نو دَ کشتی نه بهر وتلو سره مونخ کول افضل دی شیخ الحدیث صاحب رضی الله عنه فرمائی چه علامه قسطلانی رضی الله عنه ددې جملې مطلب دالیکی چه کشتی کوم خوا ځی دې هم په هغه طرف دې روانه وی. زما په نیز ددې مطلب دادې چه که چرې کشتی دَ قبلي دَ طرف نه په بل طرف باندې تاؤ شی نو مونخ گذار دې خپل مخ دَ قبلي طرف ته تاؤ کړی نه چه دَ کشتی سره تاویرې راتاویرې. زما دَ پلار رضی الله عنه په نیز دې دې هم د کشتی سره راتاویرې. یعنی په کوم ځانی کبې چه دغه کشتی دَ قبلي طرف ته اخوا شی نو هلته دې دغه مونخ گذار قبلي طرف ته راتاویرې. (۲)

حدیث باب: [حدیث نمبر ۲۷۳]

۳۸۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ (۳) أَنَّ جَدَّتَهُ مُلَيْكَةَ دَعَتْ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لِطَعَامٍ صَنَعَتْهُ لَهٗ،

(۱) کشف الباری: ۲/۲۲۰.

(۲) عمدة القاری: ۴/۱۶۲.

(۳) إرشاد الساری: ۵۸۲/۱، الأبواب والتراجم: ۱۹۶/۲، سراج القاری: ۴۰۹/۲.

(۴) رواه البخاری أيضا فی الجماعة، باب: المرأة وحدها تكون صفاً، رقم الحدیث: ۷۲۷ وفي صفة الصلاة، باب: وضوء الصبيان، رقم الحدیث: ۸۶۰، وباب: صلاة النساء خلف الرجال رقم الحدیث: ۸۷۱ وفي التطوع، باب: .....  
.....

فَاكَل مِنْهُ ثُمَّ قَالَ «فُوْمُوْا فَلَاصِلٌ لَكُمْ». قَالَ اَنْسُ فَقُمْتُ اِلَى حَصِيْرِنَا قَدْ اَسْوَدَ مِنْ طَوْلِ مَا لَيْسَ، فَفَضَحْتُهُ بِمَاءٍ، فَقَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ - صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَصَفَّقَتْ وَالْيَتِيْمَ وَرَاءَهُ، وَالْعَجُوْزُ مِنْ وَّرَائِنَا، فَصَلَّى لَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ - صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَكَعَتَيْنِ ثُمَّ اِنْعَرَفَ.

ترجمه هديت: حضرت انس بن مالك رضي الله عنه روایت دي چه دهغه نيا مليکه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته د خوراک دعوت ورکړو کوم چه هغې (خاص) د رسول الله صلى الله عليه وسلم د پاره تيار کړې وو نو حضور پاك د هغه خوراک نه او خورلو بياني او فرمايل: راځئ او دريږنې چه زه (ستاسو په کور کښې د خير او برکت دپاره) تاسو ته مونځ درکړم.

حضرت انس رضي الله عنه وائی چه زه پاسيدم يو پوزکې مي راوړو چه د دير استعمالولو د وجې نه تور شوې وو. بيا ما په هغې باندي اوبه چترکاؤ کړې (يعنی هغه مي اووینخلو) بيا حضور پاك په هغې باندي اودريدو. ما او يو يتيم وړوکی هلك حضور پاك پسي شاته صف جوړ کړو او بوډنې نيا مونځ پسي شاته اودريده. بيا حضور پاك مونځ ته دوه رکعته مونځ راکړو بيا حضور پاك واپس تشریف يوړو.

تواجم رجال: په دې حديث مبارك کښې ټول څلور رجال دي:

① عبدالله بن يوسف رضي الله عنه: دا عبد الله بن يوسف تنيسي دمشقي رضي الله عنه دي. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب بده الوحي په دويم حديث او تفصیلي تعارف کتاب العلم، باب: ليدنم الشاهد الغائب لاندې تير شوې دي (۱)

② مالك رضي الله عنه: دا مشهور امام مالك بن انس بن مالك الاصبحي المدني رضي الله عنه دي. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب بده الوحي په دويم حديث او تفصیلي تعارف کتاب الايمان، باب: من الدين الفرار من الفتن لاندې تير شوې دي (۲)

③ اسحاق بن عبدالله بن ابي طلحه رضي الله عنه: دا اسحاق بن عبدالله بن ابي طلحه انصاري نجاري مدني رضي الله عنه دي. د دوی د نيکه ابو طلحه نوم زيد بن سهيل دي. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب العلم، باب: من عهد حيث ينتهي به المجلس ومن رأى فرجة في الحلقة فجلس فيها لاندې تيره شوی ده (۳)

..... ماجاء تطوع مثنى مثنى، رقم الحديث ۱۱۶۴. ومسلم في صحيحه، في المساجد، باب: جواز الجماعة في النافلة والصلاة على حصير، رقم الحديث: ۶۵۹-۶۶۰ وأبو داؤد في سننه، في الصلاة، باب: إذا كانوا ثلاثة كيف يقومون؟ رقم الحديث: ۶۱۲ وفي الصلاة على الحصير، رقم الحديث: ۶۵۷ والترمذي في جامعه، في الصلاة، باب: ماجاء في الرجل يصلى ومعه الرجال والنساء، رقم الحديث: ۲۳۴. والنسائي في سننه، في المساجد، باب: الصلاة على حصير، رقم الحديث ۷۳۸، وفي الإمامة، باب: إذا كانوا ثلاثة وامرأة، رقم الحديث: ۸۰۲ وفي جامع الاصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: في الصلاة القسم الأول: في الفرائض وأحكامها، الباب الأول: في الصلاة وأحكامها، الفصل السادس: في شرائط الصلاة، الفرع الرابع: في أمكنة الصلاة وما يصلى عليه، النوع الأول، فيما يصلى عليه، رقم الحديث: ۶۵۴-۴۶۵/۵

(۱) كشف الباری: ۲۸۹/۱، ۱۱۳/۴.

(۲) كشف الباری: ۲۹۰/۱۸۰/۲.

(۳) كشف الباری: ۲۱۳/۳.

④ انس بن مالك رضی اللہ عنہ: دامشهور او معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالك بن نصر خزرجی انصاری رضی اللہ عنہ دی. د دوی تذکرہ کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان ان یحب

لأخيه ما یحب لنفسه لاندی تیره شوی ده. (۱)

ملیکه: دا لفظ د ميم په ضمې سره دې لیکن د أصیلی په نیز دا لفظ د ميم په فتحې او لام په کسرې سره دې. په دې دواړو اقوالو کنبې رومبې قول صحیح دې دویم صحیح نه دې. علامه نووی رحمته اللیة په شرح مسلم کنبې د دویم قول د ذکر کولو نه پس فرمائیلی دی «وهذا ضعیف مردود» (۲) او په مشارق الانوار کنبې دی «ولایصح» (۳)

د جدته د ضمیر موجه: په روایت کنبې «جدته ملیکه» الفاظ دی یعنی د حضرت انس رضی اللہ عنہ د نیا نوم ملیکه وو. بیا په دې کنبې اختلاف دې چه د جدته د ضمیر غائب ه مرجع خه خیز دې؟ د ابن عبدالبر، عبدالحق او قاضی عیاض رحمهم الله په نیز د دې ضمیر مرجع اسحاق راوی دې. یعنی د اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه نیا، امام نووی رحمته اللیة دا قول صحیح گرځولې دې. (۴)

علامه قسطلانی رحمته اللیة هم دا قول اختیار کړې دې. (۵) خود ابن سعد ابن منده او د ابن الحصار رحمهم الله په نیز د ه ضمیر مرجع حضرت انس رضی اللہ عنہ دې.

علامه عینی رحمته اللیة نقل کړې دی چه علامه ابن حبان فوائد العراقیین کنبې د اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه روایت نقل کړې دې په کوم کنبې چه هغه د حضرت انس رضی اللہ عنہ نه نقل کوی چه هغوی او فرمائیل زما نیا نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ته د دعوت پیغام اولیرلو دهغې نوم ملیکه وو. حضور پاک تشریف راوړو بیا د مونخ وخت شو نو د مونخ د پاره په یو پوزکی باندي اودریدو. الخ. (۶)

علامه انور شاه کشمیری رحمته اللیة فرمائی چه په دواړو کنبې چه هر یو مرجع او گرځولې شی په دې کنبې هیڅ تضاد نشته دې. ځکه چه د حضرت انس رضی اللہ عنہ د مور نوم ام سلیم وو دهغې د مور نوم ملیکه وو. بله دا چه د ام سلیم د رومبې خاوند نوم مالک بن النضر وو. د چا نه چه حضرت انس رضی اللہ عنہ پیدا شوی وو. دهغه د وفات نه پس ام سلیم د ابو طلحه سره واده او کړو د چا نه چه عبدالله پیدا شو او دهغه نه اسحاق.

دغه شان ام سلیم نیا جوړه شوه د اسحاق او دهغه مور یعنی ملیکه د قرنیکه بنخه جوړه شوه

(۱) کشف الباری: ۴/۲.

(۲) شرح النووی علی صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: جواز الجماعة فی الناقله، رقم الحدیث ۱۴۹۷، ۱۶۴/۴.

(۳) مشارق الأنوار، حرف الکاف، فصل الاختلاف والوهم غیر ماتقدم: ۳۹۹/۱.

(۴) شرح النووی علی صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: جواز الجماعة فی الناقله رقم الحدیث: ۱۴۹۷، ۵/۱۶۴.

(۵) إرشاد الساری: ۳۳/۲.

(۶) عمدة القاری: ۱۶۳/۴.

چونکه په عربي ژبه کښې د جده لفظ نیا او د قرنيکه ښځې دواړو د پاره وئیلی شی په دې وجه دهغوی طرف ته نسبت صحیح شو او د حضرت انس رضی اللہ عنہ طرف ته هم نسبت صحیح شو. (١)

الدكتور احمد الشاكر د سنن ترمذي په حاشیه کښې ددې پوره تحقیق نقل کړې چې په ډیرو فوائدو باندې مشتمل دې او د کتلو سره تعلق لری. (٢)

شرح حدیث: **أَنَّ جَدَّتَهُ مُلَيْكَةَ دَعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِطَعَامٍ صَنَعَتْهُ لَهَا**  
 د حضرت انس رضی اللہ عنہ نیا ملیکه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د خوراک د پاره راوغوښتلو کوم چه د حضور پاک د پاره تیار کړې شوې وو. "لطعام" کښې لام اجلیه دې یعنی "لأجل طعام" (٣)  
 په یوشان واقعاتو کښې د حضور پاک مختلف طرز عمل: بعضې شارحینو لیکلی دی چه دې لفظ طعام سره دې طرف ته اشاره کول مقصود دی چه حضور پاک ته دعوت صرف ددې د

(١) قوله: (إِنَّ جَدَّتَهُ)، قبل: الضمير إلى إسحاق، وقيل: إلى أنس رضي الله عنه، وكلاهما صحيح، فإن أم سليم والدة أنس رضي الله عنه كانت تزوجت بعده أباطلحة رضي الله عنه، فصار عبدالله أخا لأنس رضي الله عنه، وصارت مُلَيْكَةُ جَدَّةً لإسحاق بن عبدالله. (فيض الباري: ٤/٣٢).

(٢) مُلَيْكَةُ بضم الميم، وفتح اللام، وقد أخطأ من ضبطه بفتح الميم وكسر اللام. وقوله: جدته اختلف في الضمير العائد، هل هو عائد على أنس، فتكون مليكة جدته هو؟ أو على إسحاق بن عبدالله بن أبي طلحة، فتكون جدة إسحاق؟ وقد ادعى ابن عبدالبر أن مليكة هي أم أنس بن مالك، وأنها هي أم سليم بنت ملحان زوج أبي طلحة الأنصاري، وأن الضمير في جدته عائد على إسحاق بن عبدالله بن أبي طلحة، واستدل لذلك برواية عبدالرزاق لهذا الحديث عن مالك عن إسحاق عن أنس: أن جدته مليكة، يعني: جدة إسحاق، وذكر الحديث بمعنى مافي الموطأ. وقد كثير من العلماء ابن عبدالبر في ذلك، ورواية عبدالرزاق رواها أحمد في المسند رقم: ١٢٢٠٨، ج: ٣، ص: ١٦٤، وليس فيها قوله: يعني: جدة إسحاق. وما ذهب إليه ابن عبدالبر خطأ، فإن أم سليم بنت ملحان اختلف لإسمها: فقيل الخميصاء، وقيل: الرميصاء، وقيل: رميلة، وقيل: رميثة، وهذه الأسماء بضم الأول فيها كلها، ولم يقل أحد أن اسمها مليكة، وأما مليكة، فهي أمها، وهي جدة أنس لأمه، وهي جدة إسحاق بن عبدالله بن أبي طلحة، لأنها جدة أبيه عبدالله لأمه، كانت انتهت أم سليم تحت مالك بن النضر، فولدت له أنسا في الجاهلية، وأسلمت مع السابقين من الأنصار، فغضب مالك وخرج إلى الشام ومات بها، فتزوجها بعده أبو طلحة زيد بن سهل الأنصاري، فولدت له عبدالله وأبا عمير، وهؤلاء بنو ملحان معروفون، إخوة أشقاء: سليم وزيد وحرام وعباد وأم سليم وأم حرام، أبوه: ملحان، بكسر الميم وإسكان اللام، واسمه: مالك بن خالد بن زيد بن حرام، من بني النجار، وأمهم: مليكة بنت مالك بن عدى بن زيد بن مناة بن عدى، من بني النجار. (انظر الإصابة، ج: ٨، ص: ١٩١-١٩٠، وطبقات ابن سعد، ج: ٣، ص: ٧٢-٧١، ج: ٨، ص: ٣١٠). ويؤيد هذا ما نقله السيبوطي في شرح الموطأ (١: ١٦٩) عن فوائد العراقيين لأبي الشيخ من طريق القاسم بن يحيى المقدسي عن عبدالله بن عمر عن إسحاق بن أبي طلحة عن أنس قال: أرسلني جدتي إلى النبي صلى الله عليه وسلم، واسمها مليكة، فجاءنا فحضرت الصلاة، فهذا صريح في أنها جدة أنس لأمه. وانظر فتح الباري (١/٤١٢-٤١١) حاشية لأحمد الشاكر على سنن الترمذي، كتاب الصلاة، الرجل يصلي ومعه رجل، تحقيق أن مليكة جدة أنس: ٤٥٥/١-٤٥٤ مطبعة مصطفى البابي الحلبي).

(٣) فتح الباري: ١/٦٣٥، عمدة القاري: ٤/١٦٤، التوشح للسيوطي: ١/٣١٣.

پاره ورکړې شوې وو چه حضورپاک خوراک اوکړې په خلاف د حضرت عتبان بن مالک د قصې (١)

چه په هغې کښې حضورپاک ته د برکت د حاصلولو په غرض سره د مونغ ورکولو د پاره دعوت ورکړې شوې وو. چنانچه دهغوی په قصه کښې حضورپاک اول مونغ ورکړو بیانی خوراک اوکړو او په دې قصه کښې ئی اول خوراک اوکړو بیانی مونغ ورکړو یعنی په کوم غرض سره چه دعوت ورکړې شوې وو هغه ئی مخکې کړو.

په دې باندې علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی چه دا ضروری نه دی چه ملیکه دې صرف هم د خوراک د پاره راغوبستې وی بلکه په ظاهره دا خبره ده چه دهغې مقصود هم د برکت د پاره د مونغ ورکولو له راغوبستل وو. البته دا وئیلې کیدی شی چه هغوی کره خوراک تیار وو په دې وجه حضورپاک اول خوراک اوکړو او مونغ ئی ادا کړو. اود حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه په قصه کښې خوراک هغه وخت تیار نه وو په دې وجه اول ئی هلته مونغ اوکړو بیانی خوراک اوکړو. لندا دا چه په دواړو واقعاتو کښې څه منافات نشته دې چه د تطبیق یا جمع کولو نوبت پېښ شی (٢)

قوله: فَأَكَلْ مِنْهُ، ثُمَّ قَالَ: «قَوْمُوا قَلْبًا صَلِّ لَكُمْ»: چنانچه حضورپاک هغه خوراک اوخوړلو بیانی اوفرمائیل تاسو اودریرئې دې د پاره چه زه تاسو ته «د خیر او برکت» د پاره مونغ درکړم. د «فَأَصَلِّ لَكُمْ» ترکیبی حیثیت: د کشمیهنی په روایت کښې دا لفظ د لام نه بغیر دې یعنی «فَأَصَلِّ» اود اصیلی په روایت کښې په شروع ښې لام امر او په آخر کښې د «ي» په حذف

(١) حدثنا سعيد بن عفیر، قال: حدثني الليث، قال: حدثني عقيل، عن ابن شهاب، قال: أخبرني محمود بن الربيع الأنصاري، أن عتبان بن مالك وهو من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ممن شهد بدرا من الأنصار أنه أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: يا رسول الله قد أنكرت بصرى، وأنا أصلى لقومي، فإذا كانت الأمطار سال الوادي الذي بيني وبينهم، لم أستطع أن أتى مسجدهم فأصلى بهم، ووددت يا رسول الله! أنك تأتيني فتصلي في بيتي، فأتخذته مصلى، قال: فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم: سأفعل إن شاء الله، قال عتبان: ففدا رسول الله صلى الله عليه وسلم وأبو بكر حين ارتفع النهار، فاستأذن رسول الله صلى الله عليه وسلم، فأذنت له، فلم يجلس حتى دخل البيت، ثم قال: أين تحب أن أصلى من بيتك؟ قال: فأشرت له إلى ناحية من البيت، فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فكبر، فقمنا فصفنا فصلى ركعتين ثم سلم، قال رحبنا على خزيرة صنعنا هاله، قال: فأب في البيت رجال من أهل الدار ذور عدد، فاجتمعوا، فقال قائل منهم: أين مالك بن الدخيشن أو ابن الدخشن؟ فقال بعضهم: ذلك منافق لا يحب الله ورسوله، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا تقل ذلك، ألا تراه قد قال: لا إله إلا الله، يريد بذلك وجه الله، قال: الله ورسوله أعلم، قال فإنا نرى وجهه ونصيحته إلى المنافقين، قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: فإن الله قد حرم على النار من قال: لا إله إلا الله، يبتغي بذلك وجه الله، قال ابن شهاب: ثم سألت الحصين بن محمد الأنصاري - وهو أحد بني سالم - وهو من سراتهم، عن حديث محمود بن الربيع الأنصاري: فعدده بذلك. (صحيح البخاري، كتاب الصلاة، باب: المساجد في البيوت، الرقم: ٤٢٥).

(٢) عمدة القاري: ١/٤٤٤ فتح الباري: ١/٦٣٤.

سره دې امر چه کله غائب او متکلم دپاره وی نو د هغې شروع د لام نه کيږي او کله چه د مخاطب د پاره وی نو د لام د حذف او ذکر کول دواړه صحيح وی. الغرض په دې صورت کښې به دا صیغه په جواب امر کښې وی او لام به لام امر وی. او د کشمیهنی د روایت والا لفظ به خبر شی د مبتداء محذوف د پاره یعنی "قوموا، فانا اصل"

دریم احتمال دادې چه ابتدائی لام لام کي وی او تي مفتوح وی په دې صورت کښې به د لام نه پس ان مصدریه محذوف وی. په دې صورت کښې د تي نه تخفیفاً فتحه حذف کولو سره "فلاصل" و نیل هم جائز دی.

خلورم احتمال دادې چه دا لام مفتوح وی د تاکید دپاره او دا جمله جواب شی د قسم محذوف یعنی "قوموا: ان تمتم فوالله لأصل لكم" لیکن دا احتمال ضعیف دی. (۱)

د لکم نه مراد هم "لاجلکم" دی. یعنی ستاسو د خاطره (چه تاسو برکت حاصل کړئ یا تاسو مشاهده مونیخ زده کړئ) مونیخ درکوم. (۲)

قوله: قَالَ أُنْسُ: فَقُمْتُ إِلَى حَصِيرِنَا، قَدْ اسْوَدَّ مِنْ طُولِ مَالِيسٍ: حضرت انس رضي الله عنه فرمائی چه ما یو پوزکې راوړو چه د ډیر استعمال د وجې نه تور شوې وو. د اسود نه مراد رنگ بدلیدل دی. (۱)

قوله: "طُولِ مَالِيسٍ" نه مراد اوږدې زمانې پورې ددې استعمال دی. لیکن په دې ځانې کښې ددې نه مراد فائده او چتول دی لکه چه تاج العروس اولسان العرب کښې مصرح دی. (۱)

علامه ابن ملقن رحمته الله لیکي چه دلته یوه خبره دا هم معلومه شوه چه په افتراش باندي د لبس اطلاق کیدې شی او شرعاً او لغتاً به د هر څیز لبس د هغه په اعتبار سره ځان له او جدا وی. لهذا افتراش حصیر ته به عرفاً لباس نه شی و نیلې. په دې سره د امام مالک رحمته الله د مسئلې رد هم اوشو چه د هغوی په نیز که چرې یو سرې د «لا یلبس ثوباً» په الفاظو سره قسم او خوری او بیا هم په هغه ثوب باندي کینی نو د امام مالک رحمته الله په نیز هغه به حانث شی. ځکه چه د

(۱) (قوموا فاصلی) هي عند الكشميهني بغير لام ساكنة الياء، وهي واضحة صحيحة، ورواها غيره: "فأصلی بلام مكسورة، وفتح الياء على أنها لام كي على زيادة الفاء، وقد رويت بفتح اللام وسكون الياء، كقوله تعالى: (إِنْ كَادَ لَيْبُسُنَا) وقال ابن سيد: يرويه كثير من الناس بالياء، ومنهم: من يفتح اللام ويسكن الياء، ويتوهمونه قسماً، وذلك غلط، لأنه لا وجه للقسم، ولو كان لقال: "فأصلين بالنون، وإنما الرواية الصحيحة "فأصل" على معنى الأمر، والأمر إذا كان للمتكلم والغائب كان باللام أبداً، وإذا كان للمخاطب كان باللام بغير اللام. (التنقيح لألفاظ الجامع الصحيح، كتاب الصلاة، رقم الحديث: ۳۸۰، ۱/۱۰۰)، فتح الباری: ۱/۶۳۵ عمدة القاری: ۴/۱۶۵.

(۲) فتح الباری: ۱/۶۳۵.

(۱) بذل المجهود، كتاب الصلاة، باب: إذا كانوا ثلاثة كيف يفومون؟ رقم الحديث: ۶۱۰، ۲/۵۲۹.

(۱) تاج العروس: ۱۶/۴۶۶، لسان العرب: ۶/۲۰۲.



قسمونو دارومدار په عرف باندې وی او په عرف کښې افتراش ته لباس نه وائی اودلته قسم خوړونکی د نه اغوستو قسم خوړلې وو. لهذا قسم خوړونکې به حانث نه وی. (۱)

امام نووی رحمته الله علیه هم دلته هم دغه فرمائی چه «من طول لبس» کښې د قرینې د وجې د لبس نه مراد افتراش دي. (۲)

د حافظ صاحب په احنافو باندې رد اودهغې جواب: دارنگ حافظ ابن حجر رحمته الله علیه د خانی کښې لبس د افتراش په معنی اغستلې دي او د امام ابو حنیفه رحمته الله علیه نوم اخستو نه بغیر ئی په هغه باندې رد کړې دي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم د مطلق رینسم د استعمال نه منع فرمائیلې ده. په دې عمومی نهی کښې رینسم اغوستل او یا خوړولو سره په هغې کیناستل او د رینسمو په تکیه گانو باندې ډډه لگول داخل دی. لهذا د امام ابو حنیفه رحمته الله علیه قول (چه د رینسمو په بستره باندې کیناستلو او ډډه لگولو کښې هیڅ حرج نشته دي) صحیح نه شو ځکه چه په لبس باندې افتراش کیږی. (۳)

علامه عینی رحمته الله علیه د دغه ټولو رد کولو سره فرمائی چه لبس څنگه د اغوستلو په معنی کښې استعمالیږی هم دغه شان د دې استعمال د نفع او چټولو په معنی کښې هم کیږی او هم دغه دلته مراد دی نه چه صرف افتراش. په دې سره چه د حافظ صاحب کوم رد دي دهغې هم جواب اوشو. (۴)

قوله: فَتَضَحَّتْ بِمَاءٍ: بیا ما په دغه پوزکی باندې د اوبو څاڅکی چترکاؤ کړل. د “نعم” مطلب د اوبو چترکی اچول (څاڅکی کول) دی. علامه جوهری رحمته الله علیه لیکلی دی چه د دې اطلاق کله کله په وینځلو باندې هم کیږی لیکن رومیې معنی زیاته مشهوره ده. (۵)

په پوزکی باندې د اوبو چترکاؤلو مقصد د هغه کهجوړو د پانړو نه جوړ شوي پوزکې نرمول وو. یا د هغې دورې لري کول وو. قاضی سلیمان مالکی رحمته الله علیه هم دغه وضاحت کړې دي. (۶)  
د قاضی عیاض مالکی رحمته الله علیه په نیز د اوبو چترکاؤ د دې د پاره وو چه دنجاست شک لري شی. د مالکیه د مذهب مطابق د مشکوک خیز د طهارت د پاره د وینځلو ضرورت نه وی صرف د اوبو څاڅکی کول کافی وی. (۷)

قوله: فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَصَلَّتْ وَالْهَيْمَرُ ذَا عَاءَ، وَالْعَجُوزُ مِنْ وَرَائِنَا: بیا رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم

(۱) التوضیح لشرح الجامع الصحیح لابن الملقن: ۳۷۲/۵، الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، باب الصلاة، باب: تسویبا لصفوف، الحدیث الثالث: ۵۳۰/۲.

(۲) شرح النووی، کتاب الصلاة، باب: جواز الجماعة فی النافله، رقم الحدیث: ۱۴۹۷، ۵/۱۶۶.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۳۵.

(۴) عمدة القاری: ۱/۱۶۴.

(۵) مختار الصحاح للجوهری، ص: ۲۷۷.

(۶) شرح النووی، کتاب الصلاة، باب: جواز الجماعة فی النافله، رقم الحدیث: ۱۴۹۷، ۵/۱۶۶.

(۷) إكمال المعلم، کتاب الصلاة، باب: جواز الجماعة فی النافله، رقم الحدیث: ۱۴۹۷، ۲/۶۳۶.

په دغه پوزکی باندې، اودریدو او ما او یو یتیم (پروکی ماشوم) حضور پاک پسی شاته صف جور کړو او بودئی (زما نیا) زمونږ نه شاته صف کښې اودریده.

نوله: "وَصَفَّتُ أَنَا وَالْيَتِيمَ": د صحیح البخاری په اکثر نسخو کښې دا جمله دغه شان ده لیکن

د مستملی او حمودی په روایت کښې دا جمله "صَفَّتُ وَالْيَتِيمَ" ده، د لفظ انا نه بغیر.

اول ذکر شوې جملې سره د نحو یانونه د بصرینو مذهب ته تقویت ملاویری څنگه چه

دهغوی په نیز قاعده داده چه کله د اسم ظاهر ضمیر عطف مرفوع متصل باندې کول وی نو

اول د دغه ضمیر مرفوع متصل تاکید په ضمیر منفصل سره راوړی بیا پرې عطف کوی، لکه

چه قرآن کریم کښې دی: «اسْكُنْ أَنتَ وَذَوْجُكَ الْجَنَّةَ» (البقرة: ۳۵) اود کوفینو په نیز په داسې

موقعو باندې تاکید راوړل څه ضروری نه دی لیکن په دوی دواړو کښې د بصرینو مذهب

زیات فصیح دې (۱)

د یتیم معنی او مطلب: هغه نابالغ ماشوم د چا پلار چه مر شی هغه ته یتیم وائی. او په

ځناورو کښې د چا چه مور مړه شی هغه یتیم یادیری. ددې جمع ایتام، یتامی، یتکمه، یتکمه او

یتائم راخی (۲)

علامه ابن اثیر رحمته الله لیکي چه د بلوغت نه پس لفظ یتیم استعمال صحیح نه دی او که

چرته استعمال شوې وی نو مجازاً به استعمالیری (۳)

په دې لفظ باندې رفع او نصب دواړه وئیل جائز دی. د رفع په صورت کښې به ددې عطف په

انا ضمیر باندې وی کوم چه د ظرفیت په وجه مرفوع دې. او دویم احتمال دادې چه

"الیتیم مبتداء وی او "وراءه" خبر وی او پوره جمله حال وی. او نصب به په هغه صورت

کښې ممکن وی کله چه "واو" د معنی په معنی کښې واخلی یعنی "وصففت انا مع الیتیم" (۴)

په حدیث مذکوره کښې د یتیم مصداق څوک دې؟ د حدیث مبارک په دې جمله کښې چه د کوم

یتیم ذکر راغلی دې دهغې نه مراد څوک دې؟ ددې په تعیین کښې دیرزیات اختلافی اقوال دی:

ملاعلی قاری رحمته الله لیکي چه دا لفظ اسم علم دې د حضرت انس رضی الله عنه د ورور (۵). لیکن علامه

سهارنپوری رحمته الله لیکي چه دا قول سواد ملاعلی قاری رحمته الله نه د بل چا نه دې ملاؤ شوې (۶)

علامه کرمانی رحمته الله فرمائی چه د هغه نوم "صَمِيمٌ" وو (۷)

(۱) فتح الباری: ۱/۳۶۶ عمدة القاری: ۴/۱۶۵، التنقیح لألفاظ الجامع الصحیح، کتاب الصلاة، رقم الحدیث: ۳۸۱، ۱۰۱/۱.

(۲) معجم الصحاح للجوهري، ص: ۱۱۶۷، لسان العرب: ۱۲/۶۴۵، الإعلام بفوائد عمدة الأحكام: ۲/۵۳۲.

(۳) النهاية فی غریب الحدیث والأثر: ۲/۹۲۵، لسان العرب: ۱۲/۶۴۵.

(۴) شرح الکرمانی: ۴/۴۶، التوضیح لابن ملقن: ۵/۳۷۳، التنقیح لألفاظ الجامع الصحیح، کتاب الصلاة، رقم الحدیث: ۳۸۱، ۱۰۱/۱.

(۵) مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب: الموقف، رقم الحدیث: ۱۱۰۸، ۷۵/۳.

(۶) بذل المجهود، کتاب الصلاة، باب: إذا كانوا ثلاثة کیف یقومون؟ رقم الحدیث: ۶۱۰، ۲۹۹/۲.

(۷) شرح الکرمانی: ۴/۴۶.

علامه عینی رحمۃ اللہ علیہ نور لیکي چه دهغه پلار د نبي کریم ﷺ ازاد کړې شوې غلام وو صحابی وو او د قبيله حمير نه وو، دهغه نوم سعد وو. (۱)

د العجوز مصداق: په مذکوره عبارت کښې د "العجوز" نه مراد د حضرت انس رضي الله عنه نيا ده. د چ ذکر چه په شروع کښې تير شوي دي (۲)  
 قوله: **فَصَلِّ لِنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رُكْعَتَيْنِ**: بيا رسول الله ﷺ مونږ ته دوه رکعته مونږ را کړو.

قوله: "لنا" کښې لام اجليه دي يعنی ز مونږ د خاطره يا ز مونږ د زړه ساتنې د پاره يا ز مونږ د خودني د پاره دوه رکعته مونږ را کړو (۳)

قوله: **ثُمَّ انصَرَفْ**: بيا حضور پاک تشریف یوړو. د دې جملې دوه مطلبونه بيان کړې شوي دي. يو دا چه "انصَرَفْ" د "سَلَّمَ" په معنی کښې دي او دويم دا چه "رجع" په معنی کښې دي يعنی "رجع ال بيته" (۴)

علامه کوراني رحمۃ اللہ علیہ دي دويم قول ته ترجیح ورکړې ده (۵)  
 د مذکوره حديث شريف نه مستنبط شوي امور او احکام: شارحين حديث د دې حديث مبارک نه ډير احکام او آداب اخذ کړي دي. دهغې نه څه دلته لاندې ذکر کولې شي:

- ① د خوراک دعوت اگرکه هغه د وليمي د دعوت نه علاوه وي، قبلول مستحب دی.
- ② دعوت قبلول د رسول الله ﷺ په تواضع باندې دلالت کوي.
- ③ نوافل کښې افضل دادی چه په کور کښې ادا کړې شي.
- ④ د اکرام کونکي د اکرام په بدله کښې څه نا څه احسان کول پکار دی لکه چه حضور پاک دغه کور والو ته نفل مونږ ورکړو.
- ⑤ د کور صفا ستره ساتل مستحب دی.
- ⑥ د ماشومانو مونږ هم صحيح دي.
- ⑦ د ماشومانو د لويو په صف کښې او دريدو سره مونږ کول صحيح دي.
- ⑧ د ښځو په جمع سره مونږ کښې د او دريدلو مقام آخری صف دي.
- ⑨ په کپړو او پوزکي وغيره کښې اصل دادې چه هغه پاک وي خو که دهغې د ناپاکه کيدو يقين اوشي نو بيا هغه پاکول ضروری دی.
- ⑩ لکه څنگه چه مونږ په زمکه باندې کيږي دغه شان په کپړه، پوزکي وغيره باندې هم

(۱) عمدة القاری: ۱۶۵/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۳۶/۱، عمدة القاری: ۴/۱۶۵.

(۳) عمدة القاری: ۱۶۵/۴، إرشاد الساری: ۳۳/۲.

(۴) الإعلام بفوائد الأحکام، کتاب الصلاة، باب: تسوية الصفوف: ۵۳۸/۲.

(۵) الکونثر الجاری: ۶۸/۲.

کبری (۱)

① بعضی حضراتو دا ہم ذکر کری دی چه په دې حدیث کنبی دلالت دې چه هغه خیزونه کوم چه په اور باندي پخ شوې وی د هغې خورلو سره اودس نه ماتیرې خکه حضور پاک په دې واقعہ کنبی اودس نه دې کرې اود مونخ د پاره اودریدلو.

لیکن حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرمائی چه دې کنبی نظر دې خکه چه امام دارقطنی رحمہ اللہ غرائب مالک کنبی "عن الهغوی عن عبد الله بن هون عن مالك" په سند سره روایت ذکر کرې دې په کوم کنبی چه دا الفاظ دی: «صنعت مليكة لرسول الله صلى الله عليه وسلم طعاما، فأكل منه، وأنا معه، ثم

دعالوضو....» یعنی په دې طریق کنبی د اودس کولو ذکر موجود دې (۱)

د صف جوړولو ترتیب: علامه کورانی رحمہ اللہ هم دغه ذکر کرې دی (۲)

په مذکورہ حدیث کنبی چه څنگه د صف جوړولو ذکر راغلې دې احناف هم د دغه طریقې قائل دی چه د ټولو نه مخکینی امام، د هغه نه شاته بالغ سړی اود هغوی نه شاته ماشومان.

اوکه چرې بنځې هم وی نو هغوی د ټولو نه شاته. اوکه چرې سړې هم یو وی او ماشوم هم یو وی نو دواړه دې په یو ځانی یو صف کنبی یعنی د امام نه شاته صف کنبی او بنځه د ټولو نه آخری صف کنبی، هم دغه مذهب د ډیرو زیاتو فقهاؤ کرامو دې (۳)

د حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ مذهب: په صحابه کرامو کنبی د حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ مذهب په دې مسئله کنبی دادې چه که چرې دوه مقتدیان وی نو امام به د دغه دوو په مینځ کنبی اودریږی، د هغوی نه به په جدا صف کنبی نه اودریږی (۴)

(۱) أعلام الحديث للخطابي: ۳۷۳/۱، الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، كتاب الصلاة، باب: تسوية الصفوف: - ۵۶۳  
(۲) الشرح المبسر لصحيح البخاري: ۴۳۴/۱، شرح الكرمانی: ۳۶/۴، عمدة القاری: ۱۶۵/۱-۱۶۴.

(۳) فتح الباری: ۶۳۶/۱.

(۴) الكوثر الجاری: ۸۶/۲

(۵) الدرالمختار مع ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب: الإمامة: ۳۱۶/۲-۳۱۴، بدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل في بيان مقام الإمام والمأموم: ۶۷۴/۱، الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة الباب الخامس في الصلاة، الفصل الخامس في بيان المقام الإمام والمأموم: ۸۸/۱

(۶) حدثنا محمد بن العلاء الهمداني أبو كريب، قال: حدثنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن إبراهيم، عن الأسود، وعلقمة، قال: أتينا عبد الله بن مسعود في داره، فقال: أصلي هؤلاء خلقكم؟ قلنا: لا، قال: فقوموا فصلوا، فلم يأمرنا بأذان ولا إقامة، قال: وذهبنا لنقوم خلفه، فأخذ بأيدينا فجعل أحدنا عن يمينه والآخر عن شماله، قال: فلما ركع وضعنا أيدينا على ركبنا، قال: فضرب أيدينا وطبق بين كفيه، ثم أدخلهما بين فخذه، قال: فلما صلى، قال: إنه ستكون هليكم أمراء يؤخرون الصلاة عن ميقاتها، ويخفقونها إلى شرق الموتى، فإذا رأيتوهم قد فعلوا ذلك، فصلوا الصلاة لميقاتها، واجعلوا صلاتكم معهم سبعة، وإذا كنتم ثلاثة فصلوا جميعا، وإذا كنتم أكثر من ذلك، فليؤمكم أحدكم، وإذا ركع أحدكم فليفرش ذراعيه على فخذه، وليجنا، وليطبق بين كفيه، فلكنأي أنظر إلى اختلاف أصابع رسول الله صلى الله عليه وسلم فأراهم. (صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب: الندب إلى وضع الأيدي على الركب في الركوع.....)

د ابن الملحق رضی اللہ عنہ د احنافو طرف ته د یوې مسئلې په نسبت کښې سهو: علامه ابن الملحق رضی اللہ عنہ التوضیح لشرح الجامع الصحیح: کښې د احنافو مذهب هم دغه نقل کړې دې. (۱)

د مذکورې سهو ره: علامه عینی رضی اللہ عنہ په دې باندې رد کولو سره فرمائیلی دی چه د علامه ابن الملحق رضی اللہ عنہ دا نسبت کول صحیح نه دی. بلکه د احنافو مذهب په دې مسئله کښې هم هغه دې کوم چه په حدیث کښې ذکر شو چه امام کله د دوو مقتدیانو امامت کوی نو پخپله به وړاندې اودریزې او دواړه مقتدیان به شاته صف کښې اودریزې نه چه هم په دغه صف کښې د امام نه بنی او گس طرف ته. البته د امام ابویوسف رضی اللہ عنہ یو روایت دې چه امام به د دغه دواړو په مینځ کښې اودریزې. (۲)

د حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ د مذهب جواب: د حضرت عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ د دې موقف درې جوابونه ورکړې شوي دي:

① هغوی ته به د حضرت انس رضی اللہ عنہ دا مذکورې حدیث نه وی رسیدلې. (۳)

② هغوی به داسې د جملات د تنکیدو یا بل څه عذر د وجې نه کړې وی نه د سنت گنرلو د وجې. (۴)

③ امام بیهقی رضی اللہ عنہ په معرفة السنن والآثار کښې ذکر کړې دی چه حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په مونځ کولو اولیدلو او حضرت ابوذر رضی اللہ عنہ د حضور پاک صلی اللہ علیہ وسلم نسی طرف ته ولاړ وو مونځ ئی کولو. په دې دواړو کښې هر یو خپل مونځ ادا کولو. (یعنی داسې نه وو چه هغه دواړه حضراتو په جمع سره مونځ کولو). نو حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ هغه دواړو حضراتو پسې شاته اودریدو نو حضور پاک هغه ته اشاره او کره چه گس طرف ته اودریزې. نو هغه گمان او کړو چه د اودریدو هم دغه سنت طریقه ده حالانکه حقیقت دادې چه هغه ته د دې خبرې علم نه وو چه هغه دواړه حضرات خان له مونځ کونکی دی یا په جمع مونځ کوی. تردې ځانی پورې چه کوم روایت د حضرت ابوذر رضی اللہ عنہ نه نقل دې په هغې کښې دا خبره ذکرده چه په مونځ کښې هر یو کس خپل مونځ کولو. (۵)

..... رقم الحديث: (۱۲۲۱). والمذكور في نزعة الألباب في قول الترمذي: وفي الباب هذا: أما حديث ابن مسعود،

فرواه مسلم: ۳۷۸/۱، وأبوهوانة في مستخرجه: ۱۸۱/۲-۱۸۰، والنسائي في المجتبى: ۶۶/۲، والكبرى: ۳۷۸/۱۰،

وأحمد: ۱۳.۴۱۸/۱، وغيرهم. (نزعة الألباب وفي قول الترمذي: وفي الباب: كتاب الصلاة: ۵۵۴/۲)

(۱) التوضیح لشرح الجامع الصحیح لابن الملحق: ۳۷۴/۵.

(۲) عمدة القاری: ۱۶۷/۴.

(۳) البناية، كتاب الصلاة، باب: الإمامة: ۳۴۱/۲.

(۴) شرح معانی الآثار، كتاب الصلاة، باب: الرجل یصلی بالرجلین، رقم الحديث: ۱۸۹۳۹، ۳۰۷/۱.

(۵) "فأما ما روي في ذلك من ابن مسعود فقد قال محمد بن سيرين: كان المسجد ضيقا، وقد قيل إنه رأى النبي صلى الله عليه وسلم يصلى، وأبوذر عن يمينه يصلى، كل واحد منهما يصلى لنفسه، فقام ابن مسعود خلفهما، فأوما إليه النبي صلى الله عليه وسلم بشماله فظن عبدالله أن ذلك سنة الموقف، ولم يعلم أنه لا يؤمهما، وعلمه أبوذر حتى قال فيما روي عنه: يصلى كل رجل منا لنفسه." (معرفة السنن والآثار للبيهقي، كتاب الصلاة، باب: موقف الإمام والمأموم، المسألة: ۲۸۳، كيفية الوقوف لصلاة الجماعة وموضع وقوف الإمام والمأموم، ۱۷۶/۴).

و نوافل و جمع شوعى حكم: هم ددي حديث مبارك نه شوافع د نفل په جمع باندي استدلال كړي دي (١)

ليكن د احنافو مذهب مختار دادي چه د نوافل جمع على سبيل التداوى مكروه تحريمى ده كه په رمضان كښي وي او كه په غير رمضان كښي حكم عام دي.  
د احنافو په نيزه ذكر شوي حديث نه چه د نوافلو په جمع سره د كولو جواز معلوميري هغه بغير تداوى كښي داخل دي لهذا دا حديث د احنافو خلاف نه دي.  
د تداوى مطلب او حكم: د تداوى مطلب دادي چه اعلان او اهتمام او كړي شى لهذا كه بغيره تداوى يعنى بغيره اعلان او دعوت وي بيا چه خرج نشته دي.  
فقهاؤ كرامو د تداوى په حد كښي ليكلي دي كه چري يو يا دوه مقتديان وي نو تداوى نه ده او كه چري دري مقتديان وي نو هغه وخت ددي په تداوى كښي د كيدو يا نه كيدو كښي اختلاف دي. او كه چري څلور مقتديان وي نو دا بهر حال د تداوى په صورت كښي داخل دي. (٢)

د علامه انور شاه كشميري رحمته الله عليه راتي: علامه انور شاه كشميري رحمته الله عليه فرمائي: د نفل جمع على سبيل التداوى مكروه ده ليكن په تداوى كښي د دريو يا څلورو تحديد د صاحب مذهب نه نقل نه دي. دا خو په عملي توگه متعين كړي شوي دي. په دي وجه د تداوى نه مراد دا خستل چه د نفلو د جمع دپاره راؤغوښتلې شى نوزيات بهتر دي په نسبت د تحديد والله اعلم بالصواب (٣)

(١) شرح النووي على صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب: جواز الجماعة في النافلة، رقم الحديث: ١٤٩٧، ١٦٤/٥. التوضيح لشرح الجامع الصحيح: ٣٧٣/٥.

(٢) الدر المختار، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل: ٤٩/٢، العلي الكبير، كتاب الصلاة، فصل في النوافل، ص: ٤٨، حاشية الطحطاوي على الدر المختار، كتاب الصلاة، باب: الوتر والنوافل: ٢٤٠/١، الفتاوى التارخانية، كتاب الصلاة، صلاة التراويح، نوع آخر في المنفقات: ٦٧٠/١.

(٣) ولا جماعة عندنا، وكره له التداوى، وهو على اللغة عندي، فإن الله سبحانه لما جعلنا في مكة من تركها وفعالها رأساً، فأين ينبغي أن نتداوى له الناس؟ فالنداء من خصائص المكتوبة، وفسر الحلواني بما فوق الثلاث قلت: وإنما أراد الحلواني ضبطه ليمشى عليه العوام لا تفسيره، فإن اللفظ منكشف في معناه بين في مراده لا يحتاج إلى تفسير، فما ذكره أنسب للفتوى، ثم تهتمت النوافل الداخلة في بنية الصلاة، فوجدتها كذلك، لا جماعة فيها أيضاً، وكل فيها أمير نفسه، وهو الشاكلة في جملة الأذكار الداخلة في صلب الصلاة، فتجد كلها على المقتدى أيضاً، وذلك لأن كلا منهم منفرد فيها يفعلها لنفسه، فالتضمن إنما روعي حيث كان الشيء فرضاً، وليعلم أن النيابة تجرى في الأقوال دون الأفعال، فهي على الكل ثم النيابة في الأقوال، إنما اعتبرت حيث كان القول مما لا يدمنه كالقراءة، أما الأقوال التي لو تركت رأساً لم تكن عليه تبعه فإنها لا تحتاج إلى عبرة النيابة، فإن قلت: إن صلاة الكسوف والاستسقاء والتراويح سنة، فلزم أن لا تكون جماعة قلت: كأن تلك مستثناة من ذلك. (فيض الباري، كتاب الصلاة، باب: صلاة النوافل، رقم الحديث: ١١٨٦، ٥٨٦/٢)، وكذا في فيض الباري، كتاب الصلاة، إذا دخل بيتنا يصلي حيث شاء رقم الحديث: ٥٥٤/٢، ١١٢٣، ٥٥٤/٢، ٢٢٢.

د بعضی اګابرو په رمضان کښې نوافل په جمع سره ادا کول بعضی اګابریڼوبه د خپل تحقیق په بنیاد په رمضان المبارک کښې د تراویح نه علاوه نوافلو کښې هم ټوله شپه قرآن کریم وئیلو او اورولو به نی. مګر دا د احنافو اصل مذهب نه دی. په دغه اګابریڼو حضراتو باندې د هغوی د تبحر او تدین د وجې نه په هغوی باندې اعتراض نه شی کولې او نه به د هغوی په اتباع کښې د اصل مذهب نه اوختې شی (۱)

د محاذاة مسئله: حضرت مولانا محمد انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چې د حدیث الباب نه معلومه شوه چې که هلك چرته یوازې وی نو هغه د سرو په صف کښې او درول پکار دی لیکن که ښځه یوازې وی نو بیا هم د سرو په صف کښې نه شی او درولې هغه روستو کول ضروری دی. یعنی د هلكانو روستوالی د استحباب په درجه کښې او د ښځو د وجوب په درجه کښې دي. په دې سره د امام صاحب رحمته الله علیه د محاذاة د مسئلې استنباط هم واضح شو. لهدا د مولانا عبدالحی صاحب لکهنوی رحمته الله علیه د دې حنفی مسئلې تضعیف کول یا داسې وئیل چې امام صاحب رحمته الله علیه سره د دې مسئلې هیڅ دلیل نشته دي غلط شو. اوزه وایم چې دا مسئله قوی ده ځکه چې مسئله اجتهادی ده او مجتهد ته حق دي چې د دقیق فروق په رنرا کښې هغه تاخیر بیان د سنت په مرتبه کښې او ګرځوی او د ښځو تاخیر په مرتبه د شرطیت او وجوب کښې. مثلاً د احادیثو نه په جدا صف کښې خان له په او دریدو کراهت ثابت دي تردې چې امام احمد رحمته الله علیه خوداسې مونځ باطل ګرځوی. نیکن د دې باوجود حضور پاک په دې واقعه کښې ښځه شاته صف کښې خان له یوازې او دروله او حضور پاک کله هم څوک ښځه د سرو په صف کښې او درولو ته پرنيخوده په خلاف د هلكانو چې د هغوی ځانی هم اګر چې د سرو د صفونو نه شاته دي مګر خان له هلك د سرو په صف کښې د صف د پوره کولو دپاره د او درولو ثبوت موجود دي.

د دې نه هم دغه خبره واضح کیږي چې د شارع رحمته الله علیه په نظر کښې د هلك دپاره د سرو په صف کښې د او دریدلو تحمل په بعضی صورتونو کښې کیږي شی لیکن د ښځو دپاره د دې تحمل په هیڅ صورت کښې هم نه شی کیږي په داسې صورت کښې د امام صاحب رحمته الله علیه د ښځو محاذاة د مونځ دپاره مبطل ګرځول د شریعت غراء، ترجمانی نه ده نو نور څه دی!

حضرت رحمته الله علیه نور او فرمائیل چې مولانا عبدالحی رحمته الله علیه په صاحب هدایه باندې هم اعتراض کړې دي چې هغه حدیث «اخره من من حیث اخره من الله» ته خبر مشهور وئیلې دي. د دې جواب دادي چې د هغوی مراد د اصولیینو اصطلاح ده یعنی دا حدیث متلقى بالقبول دي. بیا حضرت رحمته الله علیه او فرمائیل چې دا امر هم په ذهن کښې ساتل پکار دي چې په لحاظ د نظر د شارع رحمته الله علیه په ډیرو کارونو کښې د ښځو مرتبه د سرو نه کمه ده مثلاً د دوی د جمع مونځ نشته دي او که چرې کوی هم نو امام به د سرو په شان د صف مخې ته نه او دریري. لکه څنگه چې د بریندو جمع کیږي شی. بیا د مونځ د امامت په شان هغوی د نبوت د شرف نه هم محروم دي (۲)

(۱) فتاوی محمودیه، کتاب الصلاة، باب: السنن والنوافل: ۲۴۹/۷.

(۲) انوار الباری: ۱۶۱/۱۲، فیض الباری: ۲/۳۲-۳۳.

## ۲۱ - باب: الصلاة على الخمر

دا باب دې په پوزکي باندي د مونغ (جائز کيدو) په بيان کښي د ترجمه الباب مقصود: علامه عيني رحمته الله عليه فرمائي چه که چرته يوسړي دا اعتراض اوکړي چه په دې باب کښي ذکر شوې حديث هم اوس دوه احاديثه وړاندي خوتير شوې دې بيا ددې دوباره ذکر کولو نه خه مقصود دې؟  
نوددې جواب دادې چه هلته دا روايت د مسده په طريق سره مفصل ذکر وواو دلته د ابوالوليد په طريق سره مختصر ذکر دې نودا دوباره کول صرف دهغه د موافقت دپاره دې (۱)

د شيخ الحديث صاحب رحمته الله عليه رائي: حضرت شيخ الحديث صاحب رحمته الله عليه فرمائي چه دې نه مخکښي باب منعقد فرمايلې وو. باب الصلاة على الخمر، اوس ددې خائي نه خمره باندي د مونغ حکم بنائي. "خمره" د حصه نه وړوکي وي.

زمونږ د شيخ المشايخ حضرت شاه ولي الله محدث دهلوي رحمته الله عليه ارشاد دې: دلته نه مقصود د توهم لرې کولو دی ځکه چه "جعلت لي الأرض طهورا" نه معلوميري چه صرف هم په زمکه باندي به ئي مونغ کولو. ليکن زما خيال دادې چه دا توجيه د راتلونکي باب سره زياته مناسب ده اوزما په نيز ددې باب غرض دادې چه د حضرت عمر بن عبدالعزيز رحمته الله عليه نه نقل دی چه هغوی به په خمره باندي مونغ نه کولو او که چرې ضرورت به راتلو هم نودا به ئي په خاوره کښي ککړوله.

زما والد صاحب فرمائي چه خمره چونکه د حصير نه وړوکي وي نو په دې باندي د مونغ کولو په صورت کښي د بدن بعضي حصه د وړوکي کيدو د وجې نه په زمکه باندي وي نوددې خائي نه دا خودل مقصود دی چه که چرې بعضي حصه په حصير باندي او بعضي حصه په زمکه باندي وي نو په مونغ کښي خه بديت نشته دې (۲)  
حديث باب [حديث نمبر ۳۷۴]

۳۸- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ السُّيَمِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَادٍ عَنْ مَيْمُونَةَ قَالَتْ (۲) كَانَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُصَلِّي عَلَى الْخُمْرَةِ.

ترجمه حديث: حضرت ميمونه رضي الله عنها فرمائي چه نبي اکرم صلی الله علیه و سلم به په پوزکي باندي مونغ ادا کولو.

تراجم رجال: په مذکوره حديث شريف کښي ټول پنځه رجال دي:

① ابوالوليد رحمته الله عليه: دا ابوالوليد هشام بن عبد الملك طيالسي، باهلي بصری رحمته الله عليه دې. ددوی

(۱) عمدة القاری: ۱۶۷/۴.

(۲) تقرير بخاری شريف: ۱۲۶/۲ م ۱۲۷، لامع الدراری: ۱۵۲/۱، الكنز المتواری: ۷۰/۴.

(۳) مرتخريجه فی کشف الباری، کتاب العیض، باب: رقم الحديث: ۳۳۳.



مختصر تذکره کشف الباری، کتاب ایمان، باب: علامة ایمان حب الأنصار کنسی او تفصیلی  
تذکره کتاب العلم، باب: ثم من کذب علی النبی صلی الله علیه وسلم ذ دویم حدیث لاندې تیره شوې  
ده<sup>(۱)</sup>

② شعبه مؤید: دا امیر المؤمنین شعبه بن الحجاج بن الورد عتکی الواسطی بصری رضی الله عنه دې د  
دوی تذکره کشف الباری، کتاب ایمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده، لاندې تیره  
شوې ده<sup>(۲)</sup>

③ سلمان الشیبانی رضی الله عنه: دا مشهور محدث سلیمان بن ابی سلیمان ابو اسحاق شیبانی  
کوفی رضی الله عنه دې ددوی تفصیلی تذکره کشف الباری، کتاب الحيض، باب: مباشرة العائض، دویم  
حدیث لاندې تیره شوې ده<sup>(۳)</sup>

④ عبدالله بن شداد رضی الله عنه: دا مشهور محدث عبدالله بن شداد بن الهاد لیثی رضی الله عنه دې ددوی  
تفصیلی تذکره کشف الباری، کتاب الحيض، باب: مباشرة العائض، دویم حدیث لاندې تیره  
شوې ده<sup>(۴)</sup>

⑤ حضرت مهمونه رضی الله عنها: دا ام المؤمنین حضرت میمونه بنت الحارث رضی الله عنها ده ددوی تفصیلی  
تذکره کشف الباری، کتاب العلم، باب: السبری العلم، لاندې تیره شوې ده<sup>(۵)</sup>

شرح حدیث: ذکره حدیث مبارک تشریح او متعلقه مباحث کتاب الحيض، باب: مباشرة  
العائض<sup>(۶)</sup>، او کتاب الصلاة، باب: إذا أصاب ثوب المصلی امرأته إذا سجد کنسی تیر شوی دی<sup>(۷)</sup>

## ۲۲- باب: الصلاة علی الفراش

دا باب په تورشک باندې د مونخ کولو په جواز کنسی دې

فراش: د فاء زیر سره، دې نه مراد تورشک دې که د کپړې وی او که د وړنی وغیره وی چه د  
کیناستو یا سملاستو دپاره په زمکه باندې خور کړې شی دې ته فراش یعنی تورشک وائی  
ددې جمع فروش او آفرشة راخی<sup>(۸)</sup>

<sup>(۱)</sup> کشف الباری: ۳۸/۲، ۱۵۹/۴.

<sup>(۲)</sup> کشف الباری: ۶۷۷/۱.

<sup>(۳)</sup> کشف الباری، کتاب الحيض، باب: مباشرة العائض، دویم حدیث ص: ۲۵۰.

<sup>(۴)</sup> کشف الباری، کتاب الحيض، باب: مباشرة العائض، دویم حدیث ص: ۲۵۰.

<sup>(۵)</sup> کشف الباری: ۴۲۰/۴.

<sup>(۶)</sup> کشف الباری، کتاب الحيض، باب: مباشرة العائض، ص: ۲۶۰-۲۳۹.

<sup>(۷)</sup> کشف الباری، کتاب الصلاة، باب: إذا أصاب ثوب المصلی امرأته إذا سجد.

<sup>(۸)</sup> لسان العرب، المادة: ف، ر، ش: ۳۳۸۲/۶، تاج العروس، المادة: ف، ر، ش: ۲۹۹/۱۷.

د ترجمه الباب مقصد: حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی دا باب په تورشک باندې د مونخ جائز کیدو په بیان کښې دې چه په دغه تورشک باندې دغه مونخ گذار سره څوک ښځه اوده شوی وی. او که غالباً امام بخاری رحمته الله په دې ترجمه الباب سره د هغه حدیث طرف ته اشاره کوی کوم چه ابو داؤد رحمته الله وغیره د حضرت عائشه رضی الله عنها روایت د اشعث په طریق سره نقل کړې دې چه هغوی او فرمائل: نبی کریم صلی الله علیه و آله به زمونږ پرستن کښې مونخ نه ادا کولو. (۱)

لکه چه د امام بخاری رحمته الله په نیز دا روایت ثابت نه دې یا یو داسې رانې ده چه د قبلیدو قابل نه ده. (۲)

د حضرت گنگوهی رحمته الله راتې: حضرت گنگوهی رحمته الله فرمائی چه دې باب کښې او مخکینو ابوابو کښې د مغایرت کیدو هیڅ شک نشته دې. په دې باب کښې آثار او د صحابه کرامو او افعال راورلو سره ئی دا ثابت کړی دی چه په تورشک باندې مونخ ادا کول جائز دی. برابر دی چه د مونخ گذار ټول اندامونه په دغه تورشک باندې راځی او که نه راځی، یعنی هغه تورشک وړوکی وی. لکه چه راتلونکی باب «السجود علی الثوب» نه ثابتېږی. (۳)

د حضرت مونا رشید احمد گنگوهی رحمته الله په دې عبارت باندې د «لامع الدراری» په حاشیه کښې حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله لیکي: زما په نیز زیاته بهتر توجیه داده چه د دې ترجمه الباب نه مقصود هغه اعتراض ختمول دی کوم چه د نبی صلی الله علیه و آله د قول «جعلت لی الأرض مسجداً وطهوراً» نه پیدا کیږی چه د مونخ جواز صرف د زمکې سره مخصوص نه دې بلکه په تورشک وغیره باندې هم مونخ ادا کول جائز دی. نور ئی او فرمائل چه دا اعتراض دې هم نه کیږی چه دا مقصود خود سابقه دوؤ ابوابو نه حاصل شوی دې. بیا د دې باب نه څه مقصود دې؟ ځکه چه هغه دواړه بابونه په لوئی پوزکی او وړوکی پوزکی باندې د مونخ کولو د جواز په تخصیص باندې دلالت کوی اودا باب تخصیص بعد التعمیم د قبیل نه دې. (۴)

تعلیق اول: «وَسَلَّ أَنْسُ» «مَلَرْنَا إِيَّاهُ»

د تعلیق ترجمه: او حضرت انس رضی الله عنه په خپل تورشک باندې مونخ ادا کړو  
د تعلیق راوی: دا مشهور صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضی الله عنه مشهور او معروف د رسول الله صلی الله علیه و آله صحابی دې. د دوی تذکره کشف الهاری، کتاب الإیمان، باب: من الإیمان أن یحب لأخيه ما یحب لنفسه، لاندې تیره شوی ده. (۵)

(۱) حدثنا عبیدالله بن معاذ، حدثنا أبی، حدثنا الأشعث، عن محمد ابن سیرین، عن عبدالله بن شقیق عن عائشة، قالت: کان رسول الله صلی الله علیه وسلم لا یصلی فی شعرنا، أو لحننا. قال عبیدالله: شکاً أبی. (سنن أبی داؤد، کتاب الصلاة، باب: الصلاة فی شعر النساء، رقم الحدیث: ۳۶۷).

(۲) فتح الباری: ۶۳۷/۱

(۳) لامع الدراری: ۱۵۳/۱-۱۵۲.

(۴) الكنز المتواری: ۷۲/۴-۷۱.

(۵) کشف الباری: ۴/۲.

دتعليق تخريج: مذکورہ اثر موصولاً المصنف لابن ابی شیبہ کنسې ابن مبارک عن حميد عن انس به طريق سره ذکر دي او هم دا طاؤس رضي الله عنه حکایت کرې دي (۱)

دويم تعليق: وَقَالَ أَنَسُ: «كَثَانُصَلَّى مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَسْجُدُ أَحَدًا عَلَى ثَوْبِهِ»  
دتعليق ترجمه: حضرت انس رضي الله عنه فرمائی چه مونز به د نبی کریم صلى الله عليه وسلم سره مونخ کولو نو په مونز کنسې به بعضې کسانو په خپله کپرا باندې سجده کوله.

دتعليق تخريج: مذکورہ تعليق سنداً هم د صحيح البخارى وړاندې باب کنسې راځي (۲)  
تشریح: د مذکورہ تعليق مکمل تشریح خو به هم په وړاندې باب کنسې بيانولې شی ان شاء الله دلته صرف دومره کافی دی چه د "أحدنا" نه مراد "بعضنا" دي.

اود "على ثوبه" په مصداق کنسې دوه احتمالات دی. يو دا چه ممکن ده چه سجده هم په هغه کپرا باندې واقع کيږي کومه چه ئی اغوستې وه. او دويم احتمال دادې چه د اغوستونکې کپرې نه جدا څه کپرا وي، لکه څادر، رومال وغيره. اوداسې به د سجده د ځانې د سخت گرم کيدو د وجې نه کيدل يعنی د هغې د گرمۍ نه د بچ کيدو دپاره (۳)

دتعليق ترجمه الباب سره مناسبت: ددې دواړو تعليقاتو د ترجمه الباب سره مناسبت ښکاره دي چه کله سجده په کپرا باندې کيدله نو دا به هم په فراش باندې شميرلې کيږي ځکه چه فراش په هر هغه څيز باندې صادق راځي کوم چه خور کرې شی (۴)

حديث باب (رومي حديث) [حديث نمبر ۳۷۷/۳۷۵]

۳۸۲- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنَّهَا قَالَتْ (۵) كُنْتُ

(۱) حدثنا أبو بكر قال: نا ابن مبارک، عن حميد، عن أنس: "كان يصلى على فراشه". حدثنا أبو بكر قال: نا حفص، عن ليث، عن طاؤس أنه كان يصلى على الفراش الذي مرض عليه (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، باب: في الصلاة على الفراش، رقم الحديث: ۲۸۲۶، ۲۸۲۷، ۵۱۱/۲).

(۲) صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب: السجود على الثوب فى شدة الحر، رقم الحديث: ۳۸۵.

(۳) عمدة القارى: ۱۶۸/۴، إرشاد السارى: ۴۶/۲.

(۴) عمدة القارى: ۱۶۸/۴.

(۵) أخرجه البخارى فى الصلاة فى الثياب، باب: الصلاة على الفراش، رقم الحديث: ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴. وفى ستره المصلى، باب التطوع خلف المرأة، رقم الحديث: ۵۱۳، وفى ستره المصلى، باب: الصلاة إلى السرير، رقم الحديث: ۵۱۸. وباب: استقبال الرجل وهو يصلى، رقم الحديث: ۵۱۱. وباب: الصلاة خلف النائم، رقم الحديث: ۵۱۲. وباب: من قال: لا يقطع الصلاة شئ، رقم الحديث: ۵۱۴. وباب: هل يفيمز الرجل امرأته عند السجود لكي يسجد، رقم الحديث: ۵۱۹. وفى الوتر، باب إيقاظ النبي صلى الله عليه وسلم أهله بالوتر، رقم الحديث: ۹۹۷. وفى الاستئذان، باب السرير، رقم الحديث: ۶۲۷۶. ورواه مسلم فى صحيحه، فى الصلاة، باب: الاعتراض بين يدي المصلى، رقم الحديث: ۵۱۲. وأبو داود فى سننه، فى الصلاة، باب: من المرأة لا تقطع الصلاة، رقم الحديث: ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳. ۷۱۴. والنسائي فى سننه، فى الطهارة، باب: ترك الوضوء من مس الرجل امرأته من غير شهوة، رقم الحديث: ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸. وفى القبلة، باب: الرخصة فى الصلاة خلف النائم، رقم الحديث: ۷۶۰. وفى جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول فى الصلاة، القسم الأول فى الفرائض، الباب الأول فى الصلاة، الفصل السادس فى شرائط الصلاة، الفرع السابع فى قبلة المصلى، النوع الأول فى المعترض بين يدي المصلى، رقم الحديث: ۳۷۱۹، ۵۰۴/۵.

أَنَا مَبِينٌ يَدَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَرَجُلَايَ فِي قِبْلَتِهِ، فَإِذَا سَجَدَ عَمَزَنِي، فَقَبَضْتُ رِجْلِي، فَإِذَا قَامَ نَسَطْتُهَا. قَالَتْ وَالْبَيُوتُ يَوْمَئِذٍ لَيْسَ فِيهَا مَصَابِيحٌ.

ترجمه: د حضور پاك زوجه مطهره حضرت عائشه رضي الله عنها فرمائی چه (اکثر و ختو نو کنبی به حضور پاك په تورشك باندې تهجد مونځ کولو او هغه وخت به) خه د حضور پاك په مخکښې اوده ووم او زما خپې به د حضور پاك په قبلي کنبې (يعنى د حضور پاك د سجدي کولو په ځانې کنبې به) خورې وې. کوم وخت چه به حضور پاك سجدي ته تلو نو زور به نى پرې کولو نو ما به خپلې خپې راغونډولې. بيا چه به حضور پاك د سجدي نه اودريدو نو ما به خپلې خپې دوباره خورولې. حضرت عائشه رضي الله عنها (دا هم) افرمائيل چه په هغه زمانه کنبې به په کورونو کنبې ديوي نه وې.

تواجم رجال: د مذکوره حديث شريف ټول پنځه رجال دي:

① اسماعيل رضي الله عنه: دا ابو عبد الله اسماعيل ابى اويس عبد الله بن عبد الله بن اويس اصبحى مدنى رضي الله عنه دى. د دوى تفصيلى تذکره کشف البارى، کتاب الايمان، باب: "تفاضل اهل الايمان فى الاعمال"، لاندې تيره شوې ده. (۱)

② مالك رضي الله عنه: دا امام دارالهجره مالك بن انس بن مالك بن ابى عامر الاصبحى المدنى رضي الله عنه دى. د دوى تفصيلى احوال کشف البارى، کتاب الايمان، باب: "من الدين الفهار من الفتن"، لاندې تير شوى دى. (۲)

③ ابى نصر مولى عمر بن عبد الله رضي الله عنه: دا ابو النضر سالم بن ابى اميه دى. د عمر بن عبید الله آزاد کړې شوې غلام رضي الله عنه دى. د دوى احوال کشف البارى، کتاب الوضوء، باب: "المسح على الخفين"، لاندې تير شوى دى. (۳)

④ ابى سلمه بن عبد الرحمن رضي الله عنه: دا د حضرت عبد الرحمن بن عوف رضي الله عنه ځونى دى. د دوى احوال کشف البارى، کتاب الايمان، باب: "صوم رمضان احتسابا من الايمان" لاندې تير شوى دى. (۴)

⑤ عائشه رضي الله عنها: دا ام المؤمنین زوجه رسول، بنت ابى بکر صديق حضرت عائشه رضي الله عنها ده. د دوى احوال کشف البارى، کتاب هدم الوص د دويم حديث لاندې تير شوى دى. (۵)

د حديث شرح: عَنْ عَائِشَةَ زَوْجَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهَا قَالَتْ: «كُنْتُ أَنَا مَبِينٌ يَدَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَجُلَايَ، لِي قِبْلَتِهِ».

(۱) کشف البارى: ۱۱۳/۲.

(۲) کشف البارى: ۸۰/۲.

(۳) کشف البارى کتاب الوضوء، باب: "المسح على الخفين".

(۴) کشف البارى: ۳۲۳/۲.

(۵) کشف البارى: ۲۹۱/۱.

د نبي كريم ﷺ بي بي حضرت عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی کہ زہ بہ د حضور پاک مخی تہ اودہ ووم بہ داسی حال کنبی چہ زما خپی بہ د قبلہ پی خانی کنبی خوری وی۔  
دلته مطلقاً اودہ کیدل وئیل مقصود نہ دی بلکه مقصود دادی چہ کلہ د شپی د تہجد د نوافلو د پاره حضور پاک اودریدو ہغہ وخت پہ تیارہ کنبی بہ زہ د حضور پاک مخی تہ اودہ ووم۔ پہ دی عبارت کنبی «وَرَجُلًا، فِي يَهْلِكُهُ» جملہ حالیہ دہ۔ ددی مطلب «لِي مَكَانٍ سَجُودًا» دی چہ د حضور پاک د سجدی کولو پہ خانی کنبی بہ اودہ کیدلم (١)

فَإِذَا سَجَدًا غَمَزَ: بیا چہ کلہ بہ سجدی تہ تلو نو زور بہ ئی ور کولو۔ د غَمَزَ: مطلب اشارہ کول دی کہ ہغہ پہ سترگہ وی او کہ پہ لاس سرہ وی۔ (٢)  
دی خانی کنبی غمزنا لید۔ مراد دی۔ (٣)

ددی معنی طرف تہ واضح اشارہ د سنن ابی داؤد پہ روایت کنبی ملاویبری چہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا اوفر مائیل چہ کلہ بہ حضور پاک د سجدی کولو ارادہ کولہ نو حضور پاک بہ زما خپہ اووہلہ نو ما بہ ہغہ راغونڈہ کرہ۔ (٤)

فَإِذَا قَامَ بَسَطْتُهَا: بیا چہ بہ کلہ حضور پاک سجدہ او کرہ او اودریدلو بہ نو ما بہ خپلی خپی (دوبارہ) خورولی۔ بَسَطْتُهَا: کنبی ہما ضمیر دتثنیہ دی لیکن د مستملی پہ روایت کنبی دلته ہم د واحد ضمیر دی۔ (٥)

وَالْبَيْوْتُ يَوْمَئِذٍ لَيْسَ فِيهَا مَصَابِيحُ: پہ ہغہ زمانہ کنبی بہ پہ کورونو کنبی دیوی نہ وی۔ پہ دی جملہ کنبی البیوٹ مبتداء دہ اوباقی جملہ ددی خبر دی۔ (٦) یومئذ نہ مراد وقتئذ دی یعنی کوم وخت چہ نبی کریم ﷺ ژوندی وو۔ (٧)

حضرت شیخ الحدیث صاحب مؤلف فرمائی: دلته نہ حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا دفع د دخل مقدر فرمائی چہ پہ ما اعتراض اونہ کر پی شی چہ ما بہ خپی ولی نہ راغونڈولی؟ پہ دی وجہ چہ پہ ہغہ ورخو کنبی دیوہ خو وہ نہ چہ خہ بنکاریدل اودا پتہ نہ لکیدلہ چہ د حضور پاک

(١) فتح الباری: ٦٣٨/١، عمدة القاری: ١٦٩/٤.

(٢) بعضهم فسر الغمز في بعض الأحاديث بالإشارة، كالرمز بالعين أو الحاجب أو باليد. (النهاية في غريب الحديث والائر: ٣٢١/٢، تاج العروس، المادة: غ م ر: ٢٦١/١٥).

(٣) عمدة القاری: ١٦٩/٤.

(٤) حدثنا مسدد، حدثنا يحيى، عن عبيد الله، قال: سمعت القاسم يحدث عن عائشة، قالت: بينما عدلتنونا بالعمار والكلب، لقد رأيت رسول الله صلى وأنا معترضة بين يديه، فإذا أراد أن يسجد غمز رجلي، فضممتها إلى، ثم يسجد. (سنن أبي داؤد، في الصلاة، باب: من قال: المرأة لا تقطع الصلاة، رقم الحديث: ٧١٢).

(٥) عمدة القاری: ١٦٩/٤، إرشاد الساری: ٤٦/٢.

(٦) عمدة القاری: ١٦٩/٤.

(٧) فتح الباری: ٦٣٨/١، الكورثر الجاری: ٧٠/٢.

قیام به خومره اورد وی؟ خلور او پنخه سپاری به حضور پاک تلاوت کولو په دې وجه به نسی خپې دوباره خورولې<sup>(۱)</sup>

د هديت د ترجمه الباب سره مناسبت: دمذکوره حديث د ترجمه الباب سره مناسبت د کنت نام په وجه دې هغه داسې چه اوده کيدل په عام توگه باندي هم په بستره باندي وی او ترجمه الباب هم "الصلاة على الفراش" دې. بله دا چه په آخری حديث کنيې ددې تصريح هم موجود ده چه مونږ به په کومه بستره باندي اوده کيدلو زه هم په هغې باندي اوده ووم<sup>(۲)</sup> دمذکوره هديت شريف نه مستنبط فوائد او احکام: دمذکوره حديث شريف نه ډير فوائد او احکام مستنبط کيږي. په هغې کنيې څه لاندې ذکر کولې شي:

① ددې حديث نه د بنځې طرف ته مخ کول او اودريدلو سره د مونځ کولو جواز معلوميږي. بعضې ائمه حضراتو د شارع عليه السلام نه علاوه بل چاله داسې کول منع کړي دي. په دې وجه چه په دې کنيې دفتني ويره ده اود زره اود نظر د دغه بنځې طرف ته متوجې کيدل دي. البته حضور پاک خوددې نه پاک وو په دې وجه په هغوی باندي څه حرف نه شي راتلې. بل دا چه د شپې وخت وو په هغه دور کنيې ډيوه وغيره هم نه وو.

② ددې حديث نه د اوده کس د مونځ د پاره د پاسولو استحباب هم معلوميږي.

③ دا هم معلوم شو چه په مونځ کنيې په قليل عمل سره څه حرج نه واقع کيږي.

④ داهم معلوم شو چه په تورشک باندي مونځ کول جائز دي.

⑤ د بنځې د مونځ گذار مخې ته کيدل مونځ نه باطلوي<sup>(۳)</sup>.

دمونځ گذار مخې ته که څوک بنځه وی نو د مونځ حکم: د جمهور فقهاء کرام په کومو کنيې چه امام ابو حنيفه، امام مالك، امام شافعي رحمهم الله شامل دي په نيز د يوې بنځې طرف ته مخ کول او مونځ ادا کول يا د بنځې د مونځ گذار مخې ته تيريدل مونځ نه باطلوي البته د امام احمد بن حنبل عليه السلام په نيز دې سره مونځ باطليږي<sup>(۴)</sup>.

علامه عيني رحمته الله فرماني په کوم حديث کنيې چه دی چه د بنځې، خر او د سپي د مونځ گذار په مخکې په تيريدو سره مونځ فاسديږي. د هغې جواب دادې چه د دوی په تيريدو سره مونځ ناقص کيږي ځکه چه زره دغه څيزونو سره مشغوليږي. ددې نه مراد دا نه دې چه ددوي په تيريدو سره مونځ باطليږي. وجه داده چه زره دغه څيزونو سره مشغوليږي. ځکه چه د بنځې طرف ته کتلو سره وسوسه پيدا کيږي او خر مکروه آوازونه اوباسي او سپي په فتنه کنيې اچوي او اضطراب پيدا کوي. چونگه دا څيزونه د مونځ د منقطع کولو ذريعه جوړيږي په دې وجه په دې باندي د مونځ د منقطع کيدو اطلاق او کړې شو.

(۱) سراج القاري: ۴۱۳/۲، تقرير بخاري شريف: ۳۰۶/۲.

(۲) فتح الباري: ۶۳۸/۱ عمدة القاري: ۱۶۸/۴، الکوثر الجاری: ۷۰/۲.

(۳) فتح الباري: ۶۳۸/۱ عمدة القاري: ۱۶۹/۴، الکوثر الجاری: ۷۰/۲.

(۴) المبسوط للرخسي، کتاب الصلاة باب: الحدث فی الصلاة: ۱۹۱/۱.

دویمه خبره دا چه د امام احمد رحمته الله مستدل حدیث منسوخ دې او ناسخ د حضرت ابو سعید خدری رضی الله عنه حدیث دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی چه مونخ هیخ یو خیز نه ماتوی (او د مونخ په حالت کنبې خپلې مخې ته تیریدونکې) تاسو په خپل قوت سره وردیکه کرنی هغه شیطان دې.

او شارع رضی الله عنه مونخ ادا کرو په داسې حال کنبې چه د حضور پاک او د قبلې په مینخ کنبې حضرت عائشه رضی الله عنها وه. بل دا چه په حدیث کنبې دی چه خره د مونخ گزارو مخې ته خریدله او په دې باندې چا هم انکار اونه کرو.

حضرت ابن عباس رضی الله عنهما او عطاء رضی الله عنهما او فرمائیل چه کومه نسخه مونخ منقطع کوی دهغې نه مراد حائضه نسخه ده. او که چرې دا اعتراض او کرې شی چه بعضې احادیثو کنبې راغلی دی چه سپې، خنزیر، یهودی او نصرانی مونخ منقطع کوی نو د دې جواب دادې چه دا حدیث ضعیف دې. (۱)

د مس مرأة د وجهې نه د اودس حکم: د دې حدیث شریف نه یوه دا خبره هم معلومیږي چه بنسخې سره د لاس لگولو د وجهې نه اودس نه ماتیري. په دې باره کنبې د مذاهبو تفصیل دادې چه د احنافو په نیز د بنسخې سره د لاس لگولو د وجهې نه اودس نه ماتیري. مگر چه مباشرت فاحشه اوشی. (۲)

د شوافع په نیز بنسخې سره لاس لگول ناقض وضو دی. لیکن د هغوی په نیز په دې کنبې ډیر مختلف اقوال دی مثلاً:

په یو روایت کنبې د غیر محرم سره په لاس لگولو سره اودس ماتیري. په دویم کنبې محرم سره لاس لگول، په یو روایت کنبې بغیرد حائل نه لاس لگولو سره اودس ماتیري. او په یو بل روایت کنبې حائل سره هم لاس لگولو سره اودس ماتیري. په یو روایت کنبې د خوند سره لاس لگولو د وجهې اودس ماتیري. او په یو بل روایت کنبې بغیرد خوند نه هم ناقض دې. اوبیا ملموس (کوم له چه لاس اورلې شی) باره کنبې هم دوه روایتونه دی د ماتیدو اونه ماتیدو. اکثر و ترجیح ماتیدلو ته ورکړې ده. (۳)

د امام مالک رحمته الله په نیز کله چه په خوند سره لاس اولگولې شی نو د اودس ماتونکې دې. (۴) د امام احمد بن حنبل رحمته الله په دې مسئله کنبې درې روایتونه دی: یو د احنافو مطابق، دویم د شوافع مطابق او دریم د مالکیو مطابق. (۵)

ذکرشوي حدیث مبارک د احنافو دلیل دې چه نبی کریم صلی الله علیه و آله به د سجدي گولو په وخت د

(۱) عمدة القاری: ۱۶۹-۱۷۰/۴.

(۲) الدرالمختار، کتاب الطهارة، أركان الوضوء، ص: ۲۵، التفاضل العالمکیریه، کتاب الطهارة، الباب الأول فی الوضوء، الفصل الخامس فی النواقض: ۱۵/۱، تحفة الملوك، کتاب الطهارة، نواقض الوضوء، ص: ۴۲.

(۳) المجموع شرح المذهب، کتاب الطهارة، باب: الأحداث التي ينقض الوضوء: ۲۶/۲.

(۴) بداية المجتهد، الطهارة، الوضوء، نواقض الوضوء، المسألة الثالثة: ۴۴/۱-۴۳.

(۵) المغنی لابن قدامة، الطهارة، انتقاض الوضوء بلامسة النساء: ۲۱۹/۱.

حضرت عائشه رضی اللہ عنہا خبی سره لاس لگولو هغی به راغونده ولی بیا به حضور پاک سجده کوله. علامه کرمانی رحمته اللہ علیہ فرمائی چه ممکن ده چه د دغه لاس لگولو په وخت حائل موجود وی (۱). ددی په جواب کنسې علامه ابن بطلال رحمته اللہ علیہ وغیره ددی تردید کړې دې چه په خپو کنسې اصل هم دا دې چه هغه بغیرد حائله وی لکه چه لاس بغیرد حائل وی. (۲)

حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ هم پو احتمال بیان کړې دې چه ممکن دی چه دا د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم خصوصیت وی چه بغیرد حائل لاس لگولو سره د حضور پاک اودس نه ماتیرې. (۳) علامه عینی رحمته اللہ علیہ فرمائی چه د خصوصیت دا دعوی بی د دلیل ده. (۴)

حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ۳۷۶]

۳۸۳- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عَقِيلِ بْنِ أَبِي شِمَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ (۵) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- كَانَ يُعَلِّي وَفِي بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ عَلَى فِرَاشٍ أَهْلِيهِ، اعْتَرَا ضَ الْجَنَازَةَ.

ترجمه: حضرت عروه رضی اللہ عنہا فرمائی چه حضرت عائشه رضی اللہ عنہا هغه ته خبر ورکړو چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم به (د هغې په حجره کنسې) د خپلې بی بی په تورشک باندي اودریدو او داسې مونخ کولو چه زه به د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم او د قبلي په مینخ کنسې داسې سملاستلم لکه د جنازې کت. تواجم رجال: د مذکوره حدیث شریف ټول شپږ رجال دی.

① يحيى بن بکیر رحمته اللہ علیہ: دا ابو ذکریا يحيی بن عبد الله بن بکیر القرشي المخزومي رحمته اللہ علیہ دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، باب: کیف کان بده الوسی د دریم حدیث لاندې تیر شوی دی. (۶)

② الليث رحمته اللہ علیہ: دا امام ابو الحارث الليث بن سعد بن عبد الرحمن رحمته اللہ علیہ دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، باب: کیف کان بده الوسی د دریم حدیث لاندې تیر شوی دی. (۷)

③ عقيل رحمته اللہ علیہ: دا عقيل بن خالد بن عقيل رحمته اللہ علیہ دې. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، باب: کیف کان بده الوسی د دریم حدیث لاندې او تفصیلی احوال کتاب العلم باب: فضل العلم لاندې تیر شوی دی. (۸)

(۱) شرح الکرمانی: ۴۷/۴.

(۲) شرح ابن بطلال: ۵۱/۲.

(۳) فتح الباری: ۶۳۸/۱.

(۴) عمدة القاری: ۱۷۰/۴.

(۵) مرتخریجه فی کشف الباری تحت الحدیث السابق، الرقم: ۲۸۲.

(۶) کشف الباری: ۱/۳۲۳.

(۷) کشف الباری: ۱/۳۲۴.

(۸) کشف الباری: ۱/۳۲۵، ۳/۴۵۵.



④ ابن شهاب رضي الله عنه: دا ابوبكر محمد بن مسلم، بن عبيد الله، بن عبد الله بن شهاب الزهري المدني رضي الله عنه دي. د دوى احوال كشف الباري، كتاب بده الوحي، باب: كيف كان بده الوحي د دريم حديث لاندي تير شوى دي (١)

⑤ عروة رضي الله عنه: دا عروه بن زبير بن عوام رضي الله عنه دي. د دوى مختصر احوال كشف الباري، كتاب بده الوحي، د دويم حديث لاندي او تفصيلي احوال كتاب الايمان باب: احب الدين الى الله اذومه لاندي تير شوى دي (٢)

⑥ حضرت عائشه رضي الله عنها: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بنت ابى بكر صديق رضي الله عنه ده. د دوى احوال كشف الباري، كتاب بده الوحي، د دويم حديث لاندي تير شوى دي (٣)

شرح حديث: د مذكوره حديث مبارك تشریح دي نه مخکښې حديث کښې تيره شوې ده. البته اعتراض الجنازة نه يوه مسئله معلوميرې چه د ښځې د جنازې مونځ ادا کولو په وخت به امام د ښځې په مينځ کښې او دريدو سره مونځ کوي. دا د احنافو مختار مذهب دي او راجح مذهب د سنيې مقابل د او دريدو دي (٤)

علامه انور شاه کشميري رضي الله عنه ليکي چه اشاره (النص) کله د عبارت (النص) نه هم وړاندي کيږي ځکه چه د عبارت (النص) نه خو صرف د يو جزئيه صراحت ملا ويږي ليکن د اشاره (النص) نه زياته خبره حاصليرې. مثلاً د حضرت عائشه رضي الله عنها د تشبيه نه دا هم معلومه شوه چه د مخکښې نه په ذهنونو کښې دا خبره موجود ده چه جنازه مخامخ به مينځ کښې وي ځکه چه د مشبه به په توگه هم هغه خيز بيانولي شي چه د مخکښې نه ټولو ته معلوم وي (٥)

اعتراض الجنازة دا لفظ د حرف جر مقدر سره دي يعنى "کامتراض الجنازة" او دا به د مصدر محذوف صفت جوړشي يعنى تقديرى عبارت به داسې جوړشي: "وهي معترضة بينه وبين القبلة امتراضاً کامتراض الجنازة" (٦)

جنازة د جيم په فتحې سره هغه تخت ته وئيلي شي په کوم چه مړې کيځودې شي (٧)  
د روايت د ترجمه الباب سره مناسبت: د مذکوره روايت د ترجمه الباب سره مناسبت ښکاره دي چه په دواړو په کښې فراش يعنى په تورشک باندي د مونځ ادا کولو ذکر دي (٨)

(١) كشف الباري: ١/٣٢٦.

(٢) كشف الباري: ١/٢٩١، ٢/٤٣٦.

(٣) كشف الباري: ١/٢٩١.

(٤) بدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل: في كيفية الصلاة علي الجنازة: ٢/٣٤٠-٣٣٩. الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب العادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس في الصلاة علي الميت: ١/١٦٤، ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب: صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي: ٣/١١٨.

(٥) فيض الباري: ٢/٣٤٢، انوار الباري: ١٢/١٦٣.

(٦) عمدة القاري: ٤/١٧١، مصابيح الجامع للداميني: ١/١٠٦.

(٧) المصباح للجوهري، ص: ١٩٢، النهاية في غريب الحديث والاثر: ١/٢٩٩.

(٨) عمدة القاري: ٤/١٧١.

حدیث باب (دریم حدیث) [حدیث نمبر ۳۷۷]

۳۸۲ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ عَنْ عِرَاكٍ عَنْ عُرْوَةَ (۱) أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ يُصَلِّيَ وَعَائِشَةُ مُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ عَلَى الْفِرَاشِ الَّذِي يَتَأَمَّنُ عَلَيْهِ.

ترجمہ حدیث: د حضرت عروہ رضی اللہ عنہ نے روایت دی ہے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم بہ پہ ہفہ بسترہ باندی مونخ کولو پہ کوم چہ بہ ہغوی (یعنی حضور پاک) او حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا اودہ کیدل پہ داسی حال کنبی چہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا بہ د حضور پاک او د قبلہ پہ مینخ کنبی پرتہ وہ تراجم رجال: دمذکورہ حدیث شریف تول شیپر رجال دی:

① عبدالله بن یوسف رضی اللہ عنہ: دا عبد الله بن يوسف تنيسي دمشقي رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: ہدم الوسی د دزیم حدیث لاندی تیر شوی دی (۱)

② اللیث رضی اللہ عنہ: دا امام ابو الحارث اللیث بن سعد بن عبد الرحمن رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوسی، باب: کیف کان ہدم الوسی دریم حدیث لاندی تیر شوی دی (۲)

③ یزید رضی اللہ عنہ: دا ابور الرجاء یزید بن ابی حبیب رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: اطعام الطعام من الإسلام لاندی تیر شوی دی (۳)

④ عراک رضی اللہ عنہ: دا عراق بن مالک الغفاری الکنانی المدنی رضی اللہ عنہ دي. (۴) د بنی حماس سرہ نسی تعلق دی (۵) دکومواستاذانو او مشائخونہ چہ ہغوی روایت کرے دی پہ ہغوی کنبی عروہ بن زبیر، طلحہ بن عبید اللہ بن کریز الخزاعی، عبد اللہ بن عمر بن خطاب، ابوسلمہ بن عبد الرحمن بن عوف، ابوہریرہ، عبید بن عبد اللہ بن عتبہ، عبد المالك بن ابوبکر بن عبد الرحمن بن حارث بن ہشام، محمد بن مسلم بن شہاب الزہری، نوفل بن معاویہ الدبلی، حفصہ بنت عبد الرحمن بن ابی بکر صدیق، زینب بنت ابی سلمہ او ام المؤمنین حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا و رضی اللہ عنہا وغیرہ شامل دی.

اود دوی نہ روایت کونکو کنبی یزید بی ابی حبیب مصری، عبد اللہ بن عراق بن مالک، خثیم بن عراق بن مالک، عبد العزیز بن عمر بن عبد العزیز، سلیمان بن یسار، عبد اللہ بن ابی سلمہ ماجشون، مکحول شامی، یحیی بن سعید انصاری او خالد بن ابی صلت وغیر رحمہم اللہ شامل دی (۶)

(۱) منخریجہ تحت رقم الحدیث: ۳۸۲.

(۲) کشف الباری: ۱/۲۷۹.

(۳) کشف الباری: ۱/۳۲۴.

(۴) کشف الباری: ۱/۶۹۴.

(۵) الکاشف: ۲/۲۵۵، التاريخ الكبير للبخاری: ۸۸/۷.

(۶) تہذیب الکمال: ۵۴۷/۱۹.

(۷) تہذیب الکمال: ۵۴۶/۱۹، تقریب التہذیب: ۱۷۲/۷.

د حضرت عائشه رضي الله عنها نه ددوی په سماع باندې اعتراض هم کړې شوي دي. حضرت موسی بن هارون رضي الله عنه فرمائی چه مونږ ته د عراق د حضرت عائشه رضي الله عنها نه د سماع هيڅ علم نشته دي. (١) او ابن حبان رضي الله عنه دوی په ثقاتو کښې ذکر کړی دی. (٢) احمد بن عبد الله العجلي رضي الله عنه فرمائی چه دي ثقه وو او د اوچتې درجې د تابعينو نه وو. (٣) ابوزرعه رضي الله عنه او ابو حاتم رضي الله عنه فرمائی: ثقه. (٤) د حضرت عمر بن عبد العزيز رضي الله عنه وائی چه زما پلار (عمر بن عبد العزيز) به د عراق بن مالك رضي الله عنه برابر هيڅوك نه شميرل. (٥) حضرت عمر بن عبد العزيز رضي الله عنه فرمائی چه ما د عراق بن مالك رضي الله عنه نه زيات څوك مونږ كونه دي ليدلي. هغوی به د هر لسو آياتونو نه پس ركوع كوله او بيا به ئی سجده كوله. په يو بل روايت كښې داسې دي چه هغوی به په هر لس آياتونو باندې ركوع كوله. (٦) معن بن عيسى به د ثابت بن قيس نه روايت كولو سره فرمائيل چه دوی صائم الدهر وو. (٧) د منذر بن عبد الله نه روايت دي چه د حضرت عمر بن عبد العزيز رضي الله عنه په ملگرو كښې عراق بن مالك رضي الله عنه په دي معامله كښې د ټولو نه سخت وو چه بنی مروان په اموال فسی او د خلقو په مالونو كښې بې ځايه ظالمانه قبضه كړې وه چه هغه دي د هغه نه واپس واخستې شی. كله چه يزيد بن عبد الملك والی جوړ شو نو هغه عبد الواحد بن عبد الله نصری د مدينې والی جوړ كړو. عبد الواحد بن عبد الله نصری به حضرت عراق رضي الله عنه خپل ځان ته ډير نيزدي ساتلو. هغه به ئی خپل ځان سره په تخت باندې كينولو. هيڅ يو كار به ئی د هغه د مشورې نه بغير نه كولو او فرمائيل به ئی چه عراق رضي الله عنه يو نيك ملگري دي. (٨)

محمد بن سعد او مفضل بن غسان الغلاني قول دي چه دي د يزيد بن عبد الملك د خلافت په زمانه كښې وفات شو. (٩) ابن سعد رضي الله عنه په طبقات كښې دا هم ليكلی دی چه د هغوی وفات په مدينه منوره كښې شوې دي. (١٠) دا هم وئيلې شوی دی چه د حضرت عمر بن عبد العزيز رضي الله عنه د وفات نه پس د يزيد بن عبد الملك خلافت په يو سل يو هجري كښې وو او د څلورو كالو نه لږ شان زيات قائم پاتې وو. (١١)

(١) تقريب التهذيب: ١٧٤/٧، ميزان الاعتدال: ٦٣/٣

(٢) الثقات لابن حبان: ٢٨١/٥.

(٣) تهذيب الكمال: ٥٤٧/١٩، تهذيب التهذيب: ١٧٢/٧.

(٤) الجرح والتعديل: ٥٣/٧.

(٥) تهذيب الكمال: ٥٤٧/١٩، تهذيب التهذيب: ١٧٢/٧.

(٦) تهذيب الكمال: ٥٤٧/١٩، تهذيب التهذيب: ١٧٢/٧.

(٧) الكاشف: ٥٥/٢، الطبقات لابن سعد: ٢٥٣/٥.

(٨) تهذيب الكمال: ٥٤٧/١٩، تهذيب التهذيب: ١٧٢/٧.

(٩) الكاشف: ٢٢٥/٢، الثقات لابن حبان: ٢٨١/٥.

(١٠) الطبقات لابن سعد: ٢٥٣/٥.

(١١) سير اعلام النبلاء: ٦٤/٥، تهذيب الكمال: ٥٤٩/١٩.

⑤ عروه: دا عروه بن زبیر بن عوام رضی اللہ عنہ دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بدء الوسی، د دویم حدیث لاندی او تفصیلی احوال کتاب الإیمان باب: أحب الدین إلى الله أدمه لاندی تیر شوی دی.

⑥ حضرت عائشه رضی اللہ عنہا: دا ام المؤمنین حضرت عائشه بنت ابی بکر صدیق رضی اللہ عنہما ده د دوی احوال کشف الباری، کتاب بدء الوسی، د دویم حدیث لاندی تیر شوی دی.

شرح حدیث: د زبیر بحث ترجمه الباب لاندی امام بخاری رضی اللہ عنہ دری احادیث راوپی دی. د ترجمه الباب د اثبات د پاره هم زومبی حدیث کافی وو خککه چه ظاهره ده چه په کومه بستره باندی حضرت عائشه رضی اللہ عنہا ملاسته وه په هغی باندی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مونخ کولو. لیکن دا امر په اول حدیث کنبی په صراحت سره نقل نه وو. په دې وجه نئی دویم حدیث ذکر کرو چه په هغی کنبی تصریح وه چه د خپل کور والا په بستره باندی حضور پاک مونخ کولو او حضرت عائشه رضی اللہ عنہا مخی ته د جنازی په شان ملاسته وه. دې نه پس په دریم روایت کنبی نور تفصیل راغلو چه دا هغه بستره وه په کومه چه به دې دواړو حضراتو آرام کولو.

الغرض د دې دریاوړو روایاتو نه د امام بخاری رضی اللہ عنہ مقصد پوره شو چه د خورولو کوم یو خیز هم وی بورئی، پوزکې، تورشک وغیره اگرکه هغه د اوده کیدو په کار راخی په هغی باندی مونخ ادا کول صحیح دی.

دا دریم حدیث اگرچه مرسل دی لیکن دا په دې خبره باندی محمول دی چه حضرت عروه رضی اللہ عنہا به دا حدیث هم د حضرت عائشه رضی اللہ عنہا نه اوریدلې وی لکه څنگه چه هم دا امر د ما قبل حدیث مسند نه مترشح کیږی. او د دې حدیث مرسل د راوړلو نه مقصود په دې خبره باندی تنبیه ده چه بستره به د دې دواړو حضراتو د اوده کیدو د پاره استعمالیدله اودا نکته هم ده چه مذکوره حدیث مرسل او مسنداً دواړه طریقو نقل دې.

د روایت د ترجمه الباب سره مناسبت: د روایت د ترجمه الباب سره په مناسبت پوره شان سره واضح دې.

## ۲۳- باب: السُّجُودِ عَلَى الثُّوبِ فِي شِدَّةِ الْحَرِّ

دا باب دې د مونخ گزار د تیزی گرمی دوجې نه په کپرا باندی د سجدې کولو (د جواز) باره کنبی د ترجمه الباب مقصد: حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ او علامه عینی رضی اللہ عنہ فرمائی چه د دې باب نه مقصود د مونخ گزار د گرمی د سختی نه د بچ کیدو په خاطر د خپلې کپرې په غاړه یا پلؤ مثلاً لمن، لستونرې وغیره باندی د سجدې کولو جواز بیانول دی. البته د الحر قید د راتلونکی حدیث د الفاظو د موافقت او محافظت د پاره دی. ځکه چه په یخنی کنبی هم داسې کول

(۱) کشف الباری: ۱/۲۹۱، ۲/۴۳۶.

(۲) کشف الباری: ۱/۲۹۱.

(۳) عمدة القاری: ۱۷۲/۴.

جائز دی بلکه کوم حضرات چه په کپرا باندې د سجده کولو د جواز قائل دی هغوی دا د خه حاجت سره مقید نه منی. (۱)

حضرت شیخ الحدیث صاحب نور الله مرقدہ فرمائی چه په دې باب کنبې امام بخاری رحمته الله علیه په شوافع باندې رد کوی. ځکه چه د هغوی په نیز په ثوب متصل باندې سجده کول مکروه دی بلکه منفصل کیدل پکار دی. او د جمهورو په نیز دا جائز دی. امام بخاری رحمته الله علیه د جمهورو سره دی. (۲)

علامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چه په رومی باب کنبې امام بخاری رحمته الله علیه په خپله کپرا باندې د سجده کولو جواز مطلقاً خودلی وو او دلته د سختې گرمۍ د وخت قید لگولو سره د هغې مسئله ئی هم جدا بیان کړې ده. ځکه چه د آثارو نه هم دواړه شان جواز ثابتیږی. ځکه چه په علم معانی کنبې دا امر فیصله شوې دې چه کله په یو مقید باندې حکم کولې شی نو هم قیود ملاحظه وی. لکه چامن زید، چامن زید راکها او چامن زید راکها امس کنبې فرق دې ځکه چه قیود زیاتیدو سره د هغې فاندې هم زیاتیرې. (۳)

تعلیق: وَقَالَ الْحَسَنُ: «كَانَ الْقَوْمُ سَجِدُونَ عَلَى الْعِمَامَةِ وَالْقَلَنُوقَ وَيَدَا فِي كُنْبِهِ»  
د تعلیق ترجمه: حضرت حسن بصری رحمته الله علیه او فرمائی: خلقو (یعنی صحابه کرامو رضی الله عنهم) به په پتکی او توپین باندې سجده کوله، په داسې حال کنبې چه د هغوی لاسونه به په لستونرو کنبې وو.

د تعلیق تخریج: دا تعلیق ابن ابی شیبه رحمته الله علیه او عبد الرزاق رحمته الله علیه موصولاً نقل کړې دې. د حضرت حسن بصری رحمته الله علیه مذکوره قول په دواړو کتابونو کنبې د هشام رحمته الله علیه په طریق سره ذکر دې ونی گورنی:

«حدثنا أبو أسامة، عن هشام، عن الحسن قال: إن أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم يسجدون وأيديهم في ثيابهم، ويسجد الرجل منهم على صامته» (۴)

او په مصنف عبد الرزاق کنبې مذکوره اثر دادي: «عبد الرزاق عن هشام بن حسان عن الحسن قال: أدر كنا القوم وهم يسجدون على صائمهم ويسجد أحدهم ويديه في قميصه» (۵)  
د تعلیق رجال:

الحسن رحمته الله علیه: دا مشهور تابعی ابو سعید حسن بن ابی الحسن یسار بصری رحمته الله علیه دې. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: إن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا وأصلحوا، فسامهم

(۱) فتح الباری: ۶۳۹/۱ عمدة القاری: ۱۷۳/۴.

(۲) تقریر بخاری شریف: ۳۷/۳. سراج القاری: ۴۱۴/۲.

(۳) انوار الباری: ۱۶۴/۱۲. فیض الباری: ۳۴/۲.

(۴) المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الصلاة، باب: فی الرجل یسجد ویداه فی ثوبه. رقم الحدیث: ۲۷۵۴. ۴۹۷/۲.

(۵) المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاة، باب: السجود علی العمامة، رقم الحدیث: ۱۵۶۶. ۴۰۰/۱.

المؤمنین لاندې تیر شوی دی<sup>(۱)</sup>

د تعلیق تشریح: حضرت حسن بصری رضی الله عنه فرمائی صحابه کرامو رضی الله عنهم به په پتکی او توپین باندې سجده کوله. القوم نه مراد اصحاب رسول رضی الله عنهم دی<sup>(۲)</sup>

د القلنسوة نه مراد توپین ده. المعجم الوسیط کبسي ليکلی دی: لباس للرأس، مختلف الأنواع والأشكال د سر هغه لباس کوم چه په مختلف شکلونو کبسي وی په دې لفظ کبسي خو لغات دی: قُلْتَسِيَّة، او جمع نی قلائش، قلايس، قلايق راخی<sup>(۳)</sup>

یډالې که د بخاری رضی الله عنه په اکثر نسخو کبسي هم دا شان دې. البته دکشمیهنی په روایت کبسي یډیه ل که دې<sup>(۴)</sup>

د اکثر و د قول مطابق یډالې مرکب اضافی به مبتداء شی او ل که د خپل متعلق سره خبر او پوره جمله به حال شی. تقدیری عبارت به داسې شی: ویډا کل واحدی که ”هسي مقام تقاضا کوله چه“ وایډیهم فی اکامهم فی ثيابهم ”وې لکه څنگه چه د المصنف لابن ابی شیبه په روایت کبسي وایډیهم فی ثيابهم دې<sup>(۵)</sup>

او دکشمیهنی د روایت مطابق به یډیه به حالت د نصب کبسي وی، د فعل محذوف د وجی نه، یعنی یچل کل واحد یډیه ل که<sup>(۶)</sup>

د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عینی رضی الله عنه فرمائی چه ددې اثر د ترجمه الباب سره مناسبت سره ډیر کوشش کولو سره ثابتولې شی ځکه چه ترجمه الباب دلالت کوی. ”السجود على الثوب“ باندې. او د ثوب اطلاق په عمامه او توپین باندې نه کیږی لیکن دا باب او ددې نه روستو درې ابوابو کبسي ”مخرج الارض“ باندې د سجدي کولو جواز بیان شو بلکه په هغه شی باندې د سجدي کولو جواز معلوم شو کوم چه په زمکه باندې خور شوې یا کیخودې شوې وی. مثلاً وړوکې پوزکې، غت پوزکې، تورشک، پتکې او توپین وغیره<sup>(۷)</sup>.

(۱) کشف الباری: ۲/۲۲۰.

(۲) عمدة القاری: ۴/۱۷۳، إرشاد الساری: ۲/۴۸.

(۳) المعجم الوسیط، ص: ۷۵۴، معجم الصحاح للجوهري، ص: ۸۸۰.

(۴) فتح الباری: ۱/۶۳۹، عمدة القاری: ۴/۱۷۳.

(۵) حدثنا أبو بكر قال: نا أبو أسامة، عن هشام، عن الحسن، قال: كان أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم يسجدون وأيديهم في ثيابهم، ويسجد الرجل منهم على عمامته. (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، باب: في الرجل يسجد ويده في ثوبه، رقم الحديث: ۲۷۵۴، ۲/۴۹۷).

(۶) فتح الباری: ۱/۶۳۹، عمدة القاری: ۴/۱۷۳، إرشاد الساری: ۲/۴۸.

(۷) عمدة القاری: ۴/۱۷۳.

لهذا په دې اعتبار سره مناسب ثابتیږي.

په لستونږي باندي د سجدې کولو شرط: په لستونږي باندي د سجدې کولو شرط دا دې چه د لستونږي يا لمن کپړا پاکه وي او هغه خاني هم پاک وي. که چرې هغه خاني پاک نه وي نو سجده به صحيح نه وي. دغه شان په هر هغه خيز باندي د سجدې کولو هم دغه حکم دې کوم چه د مونځ گذار د بدن سره لگيدلې دې. کله چه د هغه لاندي خاني پاک وي نو سجده جائز او صحيح ده، اگر چه هغه ملاؤ شوي خاني د مونځ گذار جزء وي ليکن لستونږي او ددې نه علاوه د متصل کپړې د سجدې د پاره بغيره عذر نه خورول مکروه دې. ځکه چه دا د کبر کار دې. لهذا که د کبر د وجې نه داسې او کړې نو مکروه تحریمی دې او که د کبر اراده ئې نه وي او بغيره ضرورت او بغيره عذر نه وي نو مکروه تنزیهي دې. که چرې عذر يعنی خاوره وي، کانږې وي يا د يخنې او گرمې وغيره د تکليف ويره وي نو مباح دې (١)

د پتکې په ول باندي د سجدې کولو حکم: د پتکې په ول باندي بغيره عذر نه سجده کول صحيح دې ليکن مکروه تنزیهي دې. کله چه ول په ټول تندي باندي وي يا د تندي په څه حصه باندي وي لکه بعضې وخت ول سست شي او تندي له راشي.

او د پتکې په ول باندي د سجدې د جائز کيدو شرط دا دې چه د سجدې خاني پاک وي او د ول لاندي نه د زمکې سختوالي مونځ گذار ته داسې محسوسیږي چه که سر ئې نور دباؤ کړو نو نه به دباؤ وپيږي. نو که تندي ئې کلک نه شو بلکه صرف ورسره اولگيدو چه که چرې دباؤ ئې کړي نو دباؤ به شي نو په داسې حال کبسي سجده اونه شوه ډير خلق ددې نه غافل دې. که چرې ول ئې په لره شان حصه باندي دې د تندي باقي حصه زمکې باندي لگي نو سجده جائز ده. او که د پتکې ول صرف د مونځ گذار په سر باندي دې (تندي باندي نه دې) او صرف په ول باندي سجده او کړې په زمکه باندي د هغه تندي اونه لگي نو سجده جائز نه ده، اکثر خلق ددې نه هم غافل دې (٢)

حديث باب [حديث نمبر ٣٧٨]

٣٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْمُغْضَلِ قَالَ حَدَّثَنِي غَالِبُ الْقَطَّانُ عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ (١) قَالَ كُنَّا نَصَلِّي مَعَ

(١) عمدة الفقه، كتاب الصلاة، فرائض الصلاة: ٩٤/٢.

(٢) عمدة الفقه، كتاب الصلاة، فرائض الصلاة: ٩٥/٢.

(٣) أخرجه البخاري أيضا وفي مواقيت الصلاة، باب وقت الظهر عند الزوال، رقم الحديث: ٥٤٢. وفي كتاب العمل في الصلاة، باب: بسط الثوب في الصلاة في السجود، رقم الحديث: ١٢٠٨. وسلم في صحيحه، كتاب الصلاة، في المساجد، باب: استحباب تقديم الظهر في أول الوقت في غير شدة الحر، رقم الحديث: ٦٢٠ وأبو داؤد في سننه، كتاب الصلاة، في الصلاة، باب: الرجل يسجد على ثوبه، رقم الحديث: ٦٦٠. والترمذي في سننه، في الصلاة، باب: ما ذكر من الرخصة في السجود على الثوب في الحر والبرد، رقم الحديث: ٥٨٤. والنسائي في سننه، كتاب الصلاة، باب: السجود على الثياب في الحر والبرد، رقم الحديث: ١٠٣٣. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الصلاة، القسم الأول في الفرائض، الباب الأول في الصلاة وأحكامها، الفصل السادس في شرائط الصلاة، الفرع الرابع في الأمكنة، النوع الأول فيه يصل على، رقم الحديث: ٣٢٦٠، ٤٦٨/٥.

النبي - صلى الله عليه وسلم - قبضه أحدًا طرف الثوب من شدّة الحر في مكان السجود.

ترجمه حديث: حضرت انس بن مالك رضي الله عنه فرمائي چه مونز به د نبي كريم صلى الله عليه وسلم سره مونخ كولو نو په مونز كښې به بعضې خلقو د گرمي د سختوالي د وجې نه د خپلې (اغوستې شوې) كپرو غاړه د سجدې كولو په ځانې كيخودلې. تو اجم رجال: مذكوره حديث شريف كښې ټول پنځه رجال دي.

① ابوالوليد هشام بن عبد الملك رضي الله عنه: دا ابوالوليد هشام بن عبد الملك الباهلي الطيالسي المصري رضي الله عنه دي. د دوى مختصر تذكره كشف الباري، كتاب الايمان، باب علامة الايمان حب الانصار لاندې او تفصيلي تذكره كتاب العلم، باب: اثم من كذب على النبي صلى الله عليه وسلم لاندې تيره شوې ده (١)

② بشر بن المفضل رضي الله عنه: دا بشر بن المفضل بن الاحق البصري رضي الله عنه دي. د دوى تذكره كتاب العلم، باب: قول النبي صلى الله عليه وسلم: رب مهذب اوعى من سائل لاندې تيره شوې ده (٢)

③ غالب القطان رضي الله عنه: د دوى پوره نوم ابو سليمان غالب بن خطاف دي. چاته چه ابى غيلان القطان ونيلى شى. دوى ته ابو عفان البصرى هم ونيلى شى (٣)

دې د يو قول مطابق مولى عبد الله بن عامر بن كرز دي. دويم قول د مولى بن تميم دي دريه قول د مولى بن غنم دي او د څلورم قول مطابق دا مولى بنى راسب دي (٤)  
خطاف د ځا، په فتحې سره د امام احمد بن حنبل رضي الله عنه نه نقل دي. او د ځا، په ضمي سره د ابن معين رضي الله عنه او على بن المديني رضي الله عنه نه نقل دي (٥)

دې چه د كومو استاذانو او شيوخو نه روايت كوي په هغوى كښې بكر بن عبد الله المزني، ابوالجوزاء، اوس بن عبد الله الربيعي، الحسن البصري، سعيد بن جبير، سليمان بن الاعمش، عمرو بن شعيب، مالك بن دينار، محمد بن سيرين، ابوالمهزم التيمي وغيره رحمهم الله شامل دي.

او د دوى نه روايت كونكو كښې بشر بن المفضل، اسماعيل بن عليه، حزم بن ابى حزم القطعي، حماد بن معقل البصري، خالد بن عبد الرحمن السلمى، الخليل بن ذكريا الشيباني، دويد بن مجاشع، الربيع بن صبيح، سهيل بن ابى حزم القطعي، سلام بن ابى مطيع، شعبه بن الحجاج رحمهم الله وغيره شامل دي (٦)

(١) كشف الباري: ٢/٣٨، ٤/١٥٩.

(٢) كشف الباري: ٤/٢٢٢.

(٣) تهذيب الكمال: ٨٤/٢٣، التاريخ الكبير للبخاري: ٩٩-١٠٠/٤.

(٤) الثقات لابن حبان: ٣٠٨/٧، الجرح والتعديل: ٦٤/٧.

(٥) تهذيب الكمال: ٨٤/٢٣، تهذيب التهذيب: ٢٤٢/٥.

(٦) تهذيب الكمال: ٨٥/٢٣، تهذيب التهذيب: ٦٤٢/٨.



د دوی باره کښې امام احمد بن حنبل رحمته الله علیه فرمائی ثقه، ثقه. (۱) يحيى بن معين رحمته الله علیه او امام نسائی رحمته الله علیه فرمائی: ثقه. (۲) ابو حاتم رحمته الله علیه فرمائی: صدوق صالح. (۳) عمار بن عمر بن المختار دخپل پلار نه روایت کولو سره وائی: حدثنا غالب القطان وكان والله من خيار الناس. (۴) ابن حبان رحمته الله علیه د دوی تذکره کتاب الثقات کښې کړې ده. (۵) د دوی روایات بخاری، مسلم او ابن ماجه کښې د بشر بن المفضل رحمته الله علیه په واسطې سره نقل دی. (۶)

(۷) بکر بن عبدالله رحمته الله علیه: دا بکر بن عبدالله بن عمرو بن هلال المزني رحمته الله علیه دی. د دوی تفصیلی

تذکره کشف الباری، کتاب الفسل، باب: عرق الجنب وأن المسلم لا ینجس لاندې تیره شوې ده. (۷)

(۸) انس بن مالک رضی الله عنه: دا مشهور صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضی الله عنه دی. د دوی

تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیره شوې ده. (۸)

شرح حدیث: "طرف ثوبه" دا جمله د "یضم" فعل د پاره مفعول جوړیږي. مراد دا چه د گرمی د سختوالی د وجې نه د سجدي په ځائی کښې به هر سړی خپله کپړا کیخودله. اوس دا کپړا خپله اغوستې شوې کپړا وه یا د بدن نه چرته جدا پرته وه، کومه چه به ئی خوروله او په هغې باندې به سجده کولې شوه؟

نوکه د هغه زمانې په اعتبار سره او کتلې شی نو ښکاره خبره ده چه د کپړو د قلت زمانه وه. لهذا هم هغه کپړا مراد کیدې شی کومه چه اغوستې شوې وه نه چه جدا کپړا، خاص کرد کپړې اضافت هم دا ښائی. (۹)

او د دې نه هم واضحه الفاظ په صحیح مسلم، سنن ابی داؤد او سنن ابن ماجه کښې دی چه "بسط ثوبه لیسجد علیه" (۱۰)

(۱) سیر اعلام النبلاء: ۲۰۶/۶، الجرح والتعديل: ۶۴/۷

(۲) الطبقات لابن سعد: ۲۷۱/۷، تهذيب الكمال: ۸۶/۲۳

(۳) الجرح والتعديل: ۶۴/۷، تقريب التهذيب: ۳/۲

(۴) تهذيب التهذيب: ۶۴۲/۸، تهذيب الكمال: ۸۵/۲۳

(۵) الثقات لابن حبان: ۳۰۸/۷

(۶) ميزان الاعتدال: ۳۳۱/۳، تهذيب الكمال: ۸۷/۲۳

(۷) كشف الباری، كتاب الفسل، باب: عرق الجنب وأن المسلم لا ینجس.

(۸) كشف الباری: ۲/۴

(۹) عمدة القاری: ۱۷۴/۴

(۱۰) حدثنا يحيى بن يحيى، حدثنا بشر بن المفضل، عن غالب القطان، عن بكر بن عبدالله، عن انس بن مالك قال: كنا نصلی مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في شدة الحر، فإذا لم يستطع أحدنا أن يمكن جبهته من الأرض، بسط ثوبه، فسجد عليه. (صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب السجود على الثوب في شدة الحر، رقم الحدیث: ۶۲۰). حدثنا أحمد بن حنبل، حدثنا بشر - یعنی: ابن المفضل -، حدثنا غالب القطان، عن بكر بن عبدالله عن انس.....

أود سنن نسائي به روایت کنبی دی «کننا إذا صلينا خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم بالظهار سجدا على ثيابنا اتقاء الحر»<sup>(١)</sup>

أود المصنف به روایت کنبی دی «کننا نصلی مع النبی صلی الله علیه وسلم فی شدة الحر والبرد، فیسجد علی ثوبه»<sup>(٢)</sup>

دَ حَدِيثِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَت: دَمَذْ كُورِهِ حَدِيثِ شَرِيفِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِهِ مَنَاسِبَت بِهِ پُورِهِ شَانِ سِرِهِ وَاضِحِ دِي<sup>(٣)</sup>

دَ حَدِيثِ شَرِيفِ نَهْ مَسْتَفَادِ امُورِ او اَدَابِ: ① دَمَذْ كُورِهِ حَدِيثِ شَرِيفِ نَهْ مَعْلُومِهِ شُوهِ چِهْ بِهِ مَانَحْهُ كُنْبِي بِهِ قَلِيلِ عَمَلِ سِرِهِ مُونِخِ نَهْ فَاَسْدِيْرِي.

② كِيْرَا دَ تَنْدِي لَانْدِي خُورُولِ او بِهِ هَغِي سَجْدِهِ كُولُو سِرِهِ هَمْ بِهِ مُونِخِ كُنْبِي خَهْ فَرْقِ نَهْ رَاخِي كِهْ هَغِي كِيْرَا مَتَّصَلِ وِي او كِهْ غَيْرِ مَتَّصَلِ.

بِهِ كِيْرَا بَانْدِي دَ سَجْدِي كُولُو بَارِهْ كُنْبِي دَ اَمُو مَذَاهِبِ: دَ كَرْمِي يَا يَخْنِي دَ سَخْتُوَالِي بِهِ وَخْتِ كَلِهْ چِهْ تَنْدِي بِهِ زَمَكِهْ بَانْدِي نَهْ لَكِي. بِهِ خِيْلِ بَدَنِ بَانْدِي دَ اَغُوسْتِي شُوي كِيْرِي خَهْ حَصِهْ خُورُولِ او بِهِ هَغِي بَانْدِي سَجْدِهِ كُولُ دَ اَمَامِ اَبُو حَنِيفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، اَمَامِ مَالِكِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ او اَمَامِ اَحْمَدِ بْنِ حَنْبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِهِ نِيْزِ جَائِزِ دِي<sup>(٤)</sup>

..... بن مالك، قال: كنا نصلى مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في شدة الحر، فإذا لم يستطع أحدنا أن يمكن وجهه من الأرض بسط ثوبه، فسجد عليه. (سنن أبي داؤد، كتاب الصلاة، باب: الرجل يسجد على ثوبه، رقم الحديث: ٤٦٠). حدثنا إسحاق بن إبراهيم بن حبيب قال: حدثنا بشر بن المفضل، عن غالب القطان، عن بكر بن عبدالله عن أنس بن مالك، قال: كنا نصلى مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في شدة الحر، فإذا لم يقدر أحدنا أن يمكن وجهه، بسط ثوبه، فسجد عليه. (سنن ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب: السجود على الثياب في الحر والبرد، رقم الحديث: ١٠٣٣).

(١) أخبرنا سويد بن نصر، قال: أنبأنا عبدالله بن المبارك، عن خالد بن عبدالرحمن هو السلمي، قال: حدثني غالب القطان، عن بكر بن عبدالله المزني، عن أنس قال: كنا إذا صلينا خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم بالظهار سجدنا على ثيابنا اتقاء الحر. (سنن النسائي، كتاب الصلاة، السجود على الثياب، رقم الحديث ١١١٧).

(٢) حدثنا أبو بكر قال: نابشر بن الفضل، عن غالب، عن بكر، عن أنس، قال: كنا نصلى مع النبي صلى الله عليه وسلم في شدة الحر، فإذا لم يستطع أحدنا أن يمكن وجهه من الأرض بسط ثوبه فسجد عليه (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الصلاة، باب: في الرجل يسجد على ثوبه من الحر والبرد، رقم الحديث ٢٧٨٥، ٣٦٩/١).  
(٣) عمدة القاري: ١٧٤/٤.

(٤) بدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل: وأما سننها فكثيرة: ١/٦٤٠، البحر الرائق، كتاب الصلاة، فصل: في اللغة فرق ما بين الشيتين: ٢١٢٠/١، حاشية الطحطاوي على مراقي الفلاح، كتاب الصلاة، باب: شروط الصلاة: ١٥٥/١، المدونة الكبرى كتاب الصلاة، السجود على الثياب والبسط: ١٧١/١، مواهب الجليل في الشرح الكبير، كتاب الصلاة، في فرائض الصلاة، فرع: فرش خمره فوق البساط وصى عليها: ٢٥٧/٢، المغني لابن قدامة، كتاب الصلاة، فصل: مباشرة الأعضاء والسجود للمصلي: ١٩٧/٢، الإنصاف، كتاب الصلاة، صفة الصلاة: ٤٨/٢، المبدع شرح المغني، كتاب الصلاة، في صفة الصلاة: ٤٠٣/١.

خوا امام شافعی رحمته ددی قائل نه دی. دهغوی په نیز د بدن سره متصل کپرا خورول او په هغې سجده کول خو جائز نه دی خو چه کومه کپرا د بدن نه جدا وي نو په هغې باندي سجده کولو کنبې څه حرج نشته دی. یعنی کومه کپرا چه په بدن باندي د پاسه ده دهغې څه حصه د سجدې په ځای کېږدی او هغه حصه د مونځ گذار په حرکت سره خوزیرې نو په هغې باندي سجده کول جائز نه دی. او که هغه کپرا دومره لویه ده چه د سجدې کولو په ځای هغه پرته وي او د هغې باقی حصه مونځ گذار اغوستې ده، که هغه رکوع ته څی یا سجده کوي یا قیام کوي نو په دې ټولو حالتونو کنبې هغه کپرا نه خوزیرې نو بیا په داسې کپرا باندي د سجدې کولو اجازت دی. یا بیا د مونځ نه خارج کپرا باندي د سجدې کولو اجازت دی. دهغوی په نیز ددی وجه داده چه د مونځ گذار په بدن باندي کومه کپرا وي هغه هم د بدن د جزء په شان کیدو د وجې د مونځ کونکی سره ده لهذا لکه څنگه چه د بدن په څه حصه باندي سجده نه شی کیدی بلکه په زمکه باندي سجده کول ضروری دی. دغه شان په دغه متصل کپرا باندي سجده کول هم صحیح نه دی. (۱)

## ۲۴- باب: الصلاة في النعال

دباب دې په بیان د خپلو سره د مونځ د حکم باره کنبې

قال النعال: دال د هل په معنی ده. یا د بآ په معنی؟ علامه عینی رحمته فرمائی چه دا د ظرفیه په معنی اخستل صحیح نه دی. (۲) په دې صورت کنبې به مطلب داشی چه خپلو سره یعنی خپلې اچولو سره مونځ کول څنگه دی؟

نعال جمع ده د نعل، ددی معنی ده خپلې او هر هغه څیز کوم سره چه خپه بیچ کولې شی (۳) د مذکوره باب د ماقبل سره مناسبت: ددی باب او د ماقبل باب مناسبت دادی چه هلته د مخ د هغه کپرې سره لگیدل وو په کوم چه سجده کولې شوه. اوس د خپې دهغه خپلې سره لگیدل دی کومه چه په خپه کنبې اچولې شوې ده. (۴)

حدیث باب [حدیث نمبر ۳۷۹]

۳۸۱- حَدَّثَنَا أَبُو مَرْثَدَةَ بْنُ أَبِي رَافِعٍ قَالَ قَالَ أَحِبْرَتَانَا أَبُو مُسْلِمَةَ سَعِيدُ بْنُ يَزِيدَ الْأَزْدِيُّ قَالَ سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ أَهْ أَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ قَالَ نَعَمْ

(۱) العزيز شرح الوجيز، كتاب الصلاة، كيفية الصلاة: ۵۲۱/۱، الحاوي الكبير للماوردي، كتاب الصلاة، باب: صفة الصلاة: ۱۶۴/۲، روضة الطالبين، كتاب الصلاة، باب: في صفة الصلاة: ۳۶۳/۱.

(۲) عمدة القاري: ۱۷۶/۴.

(۳) معجم الصحاح للجوهري، ص: ۱۰۵۳.

(۴) فتح الباري: ۱/۴، عمدة القاري: ۱۷۴/۴.

(۵) أخرجه البخاري أيضاً في اللباس، باب: النعال السنية، رقم الحديث: ۵۸۵ ومسلم في صحيحه، في المساجد، باب: جواز الصلاة في النعلين، رقم الحديث: ۵۵۵ والترمذي في جامعه، في الصلاة، باب: ما جاء في الصلاة في النعال، رقم الحديث: ۴۰۰ والنسائي في سننه، في القبلة، باب الصلاة في النعلين، رقم الحديث: ۷۷۶ وابن ماجه في سننه، في الصلاة، باب: الصلاة في النعال، رقم الحديث: ۱۰۳۷ وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: في الصلاة، الباب الأول: في الصلاة وأحكامها، الفصل السادس: في شرائط الصلاة، الفرع الثاني: في طهارة اللباس، رقم الحديث: ۳۶۱۸، ۴۴۵/۵.

ترجمه حديث: حضرت سعيد بن يزيد رضي الله عنه واني چه ما د حضرت انس بن مالك رضي الله عنه نه تپوس او كړو چه آيا نبی كريم صلى الله عليه وسلم به په خپلو خپلو (پنرو) كښې مونځ كولو؟ نو هغوی جواب راكړو چه او (نبی كريم صلى الله عليه وسلم د خپلو سره مونځ كولو).  
تواجم وچال: دمذكوره حديث شريف تول څلور رجال دي:

① آدم بن ابي اياس رضي الله عنه: دا ابو الحسن آدم بن ابي اياس عبد الرحمن العسقلاني رضي الله عنه دي. د دوی تذکره كشف الباري، كتاب الايمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده لاندې تيره شوې ده (١)

② شعبه رضي الله عنه: دا امير المؤمنين شعبه بن الحجاج بن الورد عتكي الواسطي بصري رضي الله عنه دي. د دوی تذکره كشف الباري، كتاب الايمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده، لاندې تيره شوې ده (٢)

③ ابو مسلمه سعيد بن يزيد الازدي رضي الله عنه: د دوی پوره نوم سعيد بن يزيد بن مسلمه الازدي دي. د دوی ته الطاحي هم وئيلي شي (٣). الطاحي د قاضي په شان دي چه د الازدي يوه محله الطاحيه طرف ته منسوب دي. (٤) دا نسبت ابن حبان رضي الله عنه د الطاحي په ځاني الطحان ذکر كړې دي. (٥) علامه مغلطائي رضي الله عنه دا نسبت ذكر كول جيد نه دي گرځولي. (٦) د دوی كښت ابو مسلمه البصري القصير دي. (٧)

مسلمه په ميم فتحه، د سين سکون او د لام فتحې سره دي. بعضې خلق دا د ميم ضمې او لام كسرې سره نقل كوي هغه صحيح نه دي. (٨) د دوی چه د كرمو استاذانو او مشائخونه روايت كوي په هغوی كښې انس بن مالك، ابونضره، عكرمه، ابي قلابه، مطرف، يزيد بن عبدالله بن الشخير، حسن بصري، شقيق بن نور وغيره رحمهم الله شامل دي. او د دوی نه روايت كونكو كښې شعبه، ابراهيم بن طهمان، حماد بن زيد، عباد بن عوام، خالد بن عبدالله، بشر بن المفضل، ابن عليه، يزيد بن زريع وغيره رحمهم الله شامل دي. (٩)

(١) كشف الباري: ١/٦٧٨.

(٢) كشف الباري: ١/٦٧٧.

(٣) تاريخ البخاري الكبير: ٢/٥٢٠، الكاشف: ١/٣٢٨، إكمال تهذيب الكمال: ٥/٣٧٢.

(٤) تهذيب الكمال: ٤/١٠٠، إحكام الأحكام شرح عمدة الأحكام: ١/٢٥٨.

(٥) الثقات لابن حبان: ٤/٢٧٩.

(٦) إكمال تهذيب الكمال: ٥/٣٧٢.

(٧) التاريخ الكبير للبخاري: ٢/٥٢٠ تهذيب الكمال: ١١/١١٤.

(٨) إكمال تهذيب الكمال: ٥/٣٧٣.

(٩) تهذيب الكمال: ١١/١١٥، تهذيب التهذيب: ٤/١٠٠.

ابو حاتم رضي الله عنه ددوی باره کنبی فرمائی: صالح (١) یحیی بن معین رضي الله عنه او امام نسائی رضي الله عنه فرمائی: ثقه (٢). حافظ ابن حجر رضي الله عنه فرمائی چه ابن سعد، العجلی او ابوبکر ابزار هم ددوی توثیق کړې دي. (٣) ابن حبان رضي الله عنه دوی په الثقات کنبی بیان کړې دي (٤).  
 ① انس بن مالك رضي الله عنه: دامشهور معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالك بن نضر خزرجی انصاری رضي الله عنه دي. د دوی تذکره كشف الباری، كتاب الايمان، باب: من الايمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه لاندې تیره شوی ده. (٥)

د ترجمه الباب مقصد: حضرت شیخ الحدیث صاحب رضي الله عنه فرمائی چه د حضرت امام بخاری رضي الله عنه مقصد دادې که خپلو سره څوک موندخ او کړی نو په دې کنبی څه بدیت نشته دي ځکه چه په قرآن پاک کنبی دي (فَأَخْلَمَ نَعْلَيْكَ) او موندخ خود وادی مقدس نه هم افضل دي. ځکه چه الصلې ینامې ربه راغلي دي. نو ابهام به راتلو چه موندخ هم په خپلو کنبی نه دي جائز کیدل پکار. چنانچه امام بخاری رضي الله عنه په دې باب سره د دې جواز ثابتوی. بعضی علماء داسې فرمائی چه دغریو په خپلو کنبی خو موندخ جائز دي په هندی خپلو کنبی نه دي. ددې وجه داده چه د هغوی خپلی بالکل د چپرو په شان وی لکه د نعلین شریفین د نقشی مبارکې نه معلومیری (٦).

شرح هدیث: د مذکوره حدیث شریف نه دا خبره ثابتیږي چه خپلو سره موندخ ادا کول په دي شرط سره جائز دي چه هغه پاکې وی. اودا خبره د رسول الله صلى الله عليه وسلم، صحابه کرامو رضي الله عنهم او د تابعینو رحمهم الله د آثارو نه ثابته ده.

علامه سیوطی رضي الله عنه دا خبره ددې امت د خصوصیاتو نه شمیر کړې ده (٧).  
 علامه مقرئ رضي الله عنه په خپل کتاب فتح المتعال فی مدح النعال کنبی د حافظ زین الدین العراقي رضي الله عنه یو سوال او جواب نقل کړې دي په کوم کنبی چه حافظ صاحب رضي الله عنه لیکلی دي چه (د بخاری شریف ددې حدیث نه) معلومیری چه په خپلو کنبی موندخ ادا کول د حضور پاک عادت مستمره وو (٨).

(١) الجرح والتعديل: ٤/٧٤.

(٢) خلاصة الخزرجي، ص: ١٤٥، تهذيب الكمال: ١١٥/١١.

(٣) تهذيب التهذيب: ١٠١/٤.

(٤) الثقات لابن حبان: ٢٧٩/٤.

(٥) كشف الباري: ٤/٢.

(٦) سراج القاري: ٤١٦/٢.

(٧) أنموذج اللبيب في خصائص الحبيب، اداب الأول: في خصائص التي اختص بهادون جميع الأنبياء، الفصل الثاني: فيما اختص به في شرعه وأمنته في الدنيا، ص: ٩٠.

(٨) فتح المتعال في مدح النعال، بحث جواز الصلاة في النعل، ص: ٩٣، دارالقاضي للتراث.

ددې جواب علامه عبدالرحمن لکهنوی رحمۃ اللہ علیہ په خپل کتاب غایة المقال فيما يتعلق بالنعال کښې دا ورکړې دې چه د حافظ عراقی رحمۃ اللہ علیہ د دوام او استمرار والا خبره د منلو قابل نه ده ځکه چه په حدیث کښې په دې خبره باندې دلالت کونکې هیڅ څیز نشته دې. او دا ممکن ده چه په حدیث کښې موجود لفظ "کان" نه استدلال کړې شوي وی چه دا د استمرار معنی پیدا کوی لیکن په دې باره کښې په دې خبره خان پوهول پکار دی چه لفظ "کان" اصالة په دوام او استمرار باندې دلالت نه کوی لکه چه امام نووي رحمۃ اللہ علیہ په خپله شرح مسلم کښې لیکلی دی (۱) لهذا ددې نه به هم دلیل نیول صحیح نه وی (۲)

ابن دقیق العید رحمۃ اللہ علیہ لیکي چه ددې حدیث شریف نه د خپلو اچولو سره د مونځ ادا کولو د جواز علم کیږي. لیکن دا مناسب نه دی چه ددې عمل د استحباب قول اختیار کړې شی ځکه چه دا امر د مونځ مطلوب معنی کښې داخل نه دي. په دې باندې که اعتراض او کړې شی چه خپلې اچولو سره بنائست حاصلیږي. چنانچه لکه څنگه په مانځه کښې د خو کپرو په ذریعه بنائست حاصلول مطلوب دی، دغه شان په دې معامله کښې هم کیدل پکار دی؟

نو ددې جواب دادې چه ستاسو خبره منلې شوې ده مگر خبره داده چه مونږ خپلې اچولو سره په زمکه باندې گرځو حالانکه په زمکه باندې پلیتې پرتې وی د کوم په وجه چه خپلې هم پلیتېږي. ددې په وجه په مونځ کښې د خپلو د وجې نه د حاصلیدونکې بنائست حکم ساقطیږي. دغه شان دلته د خپلو د بنائست او د خپل خان نه د نجاست والا څیزونه لرې کولو کښې تعارض پیدا شو. د کوم په ذریعه چه به د نجاست ختمولو ته ترجیح ورکولې شی. لهذا په مونځ کښې به خپلې کوزولو سره مونځ کولو ته ترجیح ورکولې شی ځکه چه هغه نجاست سره ککړ وی او د خپلو په ذریعه به بنائست حاصلول مرجوح شی (۳)

علامه شامی رحمۃ اللہ علیہ ذکر کړی دی چه تاتارخانیه کښې دې چه د یهودو د مخالفت په غرض پاکې خپلې یا موزې اچولو سره مونځ ادا کول افضل دی (۴)

طبرانی رحمۃ اللہ علیہ المعجم الکبیر کښې حدیث نقل کړې دي «صلوا فی نعالکم ولا تشبهوا بالیهود» (۵) علامه سیوطی رحمۃ اللہ علیہ په جامع الصغیر کښې دا حدیث صحیح گرځولي دي. هم په دې وجه حنبله دا فعل سنت گرځوی اگر چه ددې په اچولو سره په لارو کوڅو کښې گرځیدلې شی

(۱) شرح النووي، کتاب الحج، باب: الاشتراك فی الهدی و اجزاء البقرة، رقم الحدیث: ۳۳۲۷، ۴۶۱/۴.

(۲) احکام الأحكام شرح عمدة الأحكام، رقم الحدیث: ۹۴، الصلاة فی النعلین، ص: ۵۰، غایة المقال فيما يتعلق بالنعال، مسألة: يجوز الصلاة فی النعلین، ص: ۲۱.

(۳) احکام الأحكام شرح عمدة الأحكام، الحدیث: ۹۴، الصلاة فی النعلین، ص: ۲۰.

(۴) التاترخانیة، کتاب الصلاة، الفصل الرابع، فی بیان ما یکره للمصلی: ۵۷۱/۱.

(۵) عن هلال بن میمون، عن یعلی بن شداد، عن أبیه، أو غیره من أصحاب النبی صلی الله علیه وسلم، شک هلال، قال: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: صلوا فی نعالکم، ولا تشبهوا بالیهود. (المعجم الکبیر للطبرانی، رقم الحدیث: ۷۱۶۴، ۲۹۰/۷).

خکه چه نبی کریم ﷺ او صحابه کرامو ﷺ به خپلو سره د مدینې په لارو کوڅو کښې  
گرځیدل او بیا به ئی هم دغې کښې مونځ ادا کولو.

علامه شامی رحمته الله علیه فرمائی زه وایم که چرې د خپلو د وجې نه د جمات گرد او دورې وغیره سره  
ککر کیدل ثابتیروی نویا بغیر د خپلونه ادا کول بهتر دی اگر چه پاکې وی. مسجد نبوی خو  
د حضور پاک په زمانه کښې هم داسې وو چه ددې په فرش باندې به کانړی او باجرې وغیره  
خواره وو په خلاف زمونږ د زمانې چه نن صبا خو په مسجد نبوی او نورو جماتونو کښې  
قالینونه وغیره خواره دی.

او په عمده المفتی کښې د ذکر شوې قول چه په جمات کښې خپلن اچولو سره داخلیدل بې  
ادبی ده، محمل به ئی هم دغه وی. (۱)

علامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی زما راتې داده چه په خپلو کښې مونځ کول زیات نه  
زیات د مباح (بلاکراحت) په درجه کښې دې مستحب نه دې. لهذا په شامی کښې یو ځانی  
دې باره کښې مستحب لیکل او بل ځانی مکروه تنزیهی د تحقیق خلاف دی. زما په نیز  
حقیقت امر دادې چه حضرت موسی علیه السلام ته په کوه طور باندې د رسیدو په وخت د نعلین د  
کوزولو د حکم نه یهودو مطلقا ممانعت گنرلې وو. په دې وجه دهغوی په نیز په یو صورت  
کښې هم نعلین سره مونځ کول جائز نه دی. هم ددغه غلطی او سختی شریعت محمدیه  
اصلاح کړې ده او مطلق جواز ئی باقی ساتلې دې. بعضې روایاتو کښې "مخالفة اليهود" هم  
راغلې دې. معلومه شوه چه په کومو روایاتو کښې خپلو سره د مونځ حکم راغلې دې هغه  
هم د یهودو د مخالفت دپاره دې ددې د پاره نه چه هغه فی نفسه د شریعت مطلوب دې چه  
گنی مستحب دې او گنرلې شی.

موطا امام مالک کښې د کعب احبار رضی الله عنهم نه روایت موجود دې چه د حضرت موسی علیه السلام نعلین  
د مړ خرد څرمن وې په دې وجه دهغې د کوزولو حکم شوې وو. (۲)

ما د قرآن پاک د ظاهر نه دا گنرلې دی چه د نعلین کوزولو حکم "تأدبا" وو هم په دې وجه ددې  
نه مخکښې ﴿إِنِّي أَنذَرْتُكُمْ﴾ فرمائیلی شوی دی. لکه چه سبب د خلع طرف ته اشاره ده. لهذا دې  
نه به عدم جواز هم نه ثابتیروی. غرض دا چه په ادب سره د جواز تعلیم ملاویږی که امر خلع  
ددې وجې نه او گنرلې شی کوم چه کعب ذکر کړې دې یا په دې وجه وی د کوم طرف ته چه  
قرآنی الفاظ اشاره کوی. او د یهودو د عدم جواز والا د حکم هیڅ گنجائش نشته دې. شریعت  
محمدیه دغه شان په نورو ډیرو مواضعو کښې هم د یهودو د گمانونو تغلیط او اصلاح کړې  
ده. یعنی په کومو امورو کښې چه هغوی غلط شوی دی او هغوی د حقیقت نه لرې شوی دی  
زمونږ شریعت حقیقت واضح کولو سره دهغوی د غلطیانو اصلاح کړې ده. (۳)

(۱) رد المحتار، کتاب الصلاة، باب: ما یفسد الصلاة وما یکره فیها، مطلب: فی احکام المسجد: ۱۹۹/۴ دار الثقافة.

(۲) موطا امام مالک، الجامع، ماجاء فی النعال، رقم الحدیث: ۳۳۹۶.

(۳) انوار الباری: ۱۶۵/۱۲، فیض الباری: ۳۵/۲-۳۴.

دنعال نه شه مراد دي؟ علامه کشمیری رحمۃ اللہ علیہ فرمائی ہے دھغہ زمانہ نعال (خپلئ) زمونږ د زمانہ د خپلو نه مختلف وي او غالب دادی چه په دې خپلو کښي به مونځ صحيح هم نه وي ځکه چه خپې په دې کښي دننه وي په زمکه باندي نه لگي بلکه پورته زورندي وي لهذا سجده به کامل نه وي (۱)

علامه شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه دلته دا خبره په خیال کښي اوساتئ چه په عربو کښي نعل صرف خپلو ته نه شی وئيلي بلکه نعل په اصل کښي چپرو ته وئيلي شی او د عربو چپرې به داسې وي چه دھغې په اچولو سره به د خپو گوټي بالکلېه د زمکې نه جدا نه پاتي کيدې بلکه دھغې په (اچولو سره به هم) خپې زمکې سره ملصق وي. باقی دانن صبا زمونږ چه کومې خپلئ دی مثلاً بوت، دې ته په عربي کښي نعل نه وائی بلکه مداس ورته وائی. دا بوت یا ددې قسم چه کومې خپلئ هم وي دکوم په اچولو سره چه سجدي ته تللو کښي خپې د زمکې نه اوچتې وي داسې خپلئ اچولو سره مونځ صحيح نه دي ځکه چه د سجدي په وخت خپې زمکې سره لگيدل پکار دي.

دا خبره هم په خیال کښي ساتئ چه کومه خپلئ د عربو د نعل په شان وي (اوپاکې هم وي) په هغې کښي مونځ اگر چه جائز دي مگر نن صبا د دې په اچولو سره جمات ته نه دي تلل پکار ځکه چه نن صبا په جماتونو کښي قيمتي فرش وي (هغه خپلئ په گرد او دورو وغيره) سره ککړې وي. په مسجد نبوی کښي خو فرش نه وو شنګير خور وو. (۲)

علامه سهارنپوری رحمۃ اللہ علیہ فرمائی په خپلو کښي د مونځ ادا کولو حکم ديهودو د مخالفت د وجي نه ورکړې شوي دي او زمونږ په دې زمانه کښي مناسب دادی چه بريندي خپې د مونځ ادا کولو حکم ورکړې شی ځکه چه هغوی د خپلو سره خپل عبادت کوي (۳)

دهديث د ترجمه الباب سره مناسبت: دمذکوره حديث د ترجمه الباب سره مناسبت په پوره شان واضح دي. (۴)

## ۲۵ - باب: الصلاة في الخفاف

داباب په موزو کښي د مونځ کولو باره کښي دي.

خفاف بکر الغاء د خف جمع ده. ددې معنی د خرمن نه جوړې شوي موزي دي (۵)

دترجمة الباب مقصد:

حضرت شيخ الحديث صاحب نورالله مرقدہ فرمائی چې شراح ددې باب باره کښي هم دا فرمائی چې چونکه خفاف په لباس کښي داخل دي په دې وجه ئې ددې ذکر او فرمائيلو او

(۱) فيض الباری: ۳۴/۲، العرف الشدی، کتاب الصلاة، باب: ماجاء في الصلاة في النعال، رقم الحديث ۹۳، ۱۲۷/۱، انوار الباری: ۱۶۵/۱۲.

(۲) فضل الباری: ۱۰۱/۳، فتح الملهم، کتاب الصلاة، باب: جواز الصلاة في النعلين، رقم الحديث: ۶۰.

(۳) بذل المجهود، کتاب الصلاة، باب: الصلاة في النعل، رقم الحديث: ۶۵۲، ۳۲۱/۴ - ۳۲۰.

(۴) عمدة القاری: ۱۷۶/۴.

(۵) القاموس المحيط: ۱۳۱/۳، المعجم الوسيط، ص: ۲۷۷.



زما رائی دا ده چه د صلاة فی الخفاف اولویت بیانوی، خکه چه په ابوداؤد کنبی دی: خالفوا اليهود، فإنهم لا یصلون فی نعالهم ولا خفافهم،، نوپه دې باب کنبی امام بخاری رحمه الله دې اولویت طرف ته اشاره فرمائیلې ده. (١)

حدیث باب [حدیث نمبر ۳۸۰]

۳۸۰- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْأَعْمَشِ قَالَ سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ يُحَدِّثُ عَنْ هَمَامِ بْنِ الْحَارِثِ (١) قَالَ رَأَيْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بَالَ ثُمَّ تَوَضَّأَ، وَمَسَحَ عَلَى خُفَيْهِ، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى، فُسِّلَ فَقَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - صَنَعَ مِثْلَ هَذَا. قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَكَانَ يُعْجِبُهُمْ، لِأَنَّ جَرِيرًا كَانَ مِنَ آخِرِ مَنْ أَسْلَمَ.

ترجمه حدیث: حضرت همام بن حارث رضی اللہ عنہ فرمائی چه ما حضرت جریر به عبد الله رضی اللہ عنہ اولیدلو چه هغوی متیازی او کرې، بیانی اودس او کرو او په خپلو دواړو موزو باندي نی مسح او کره او مونخ نی او کرو. د هغه نه تپوس او کرې شو (چه دا تاسو څه او کره) نو هغوی جواب ورکرو چه ما رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په داسې کولو لیدلې دې. حضرت ابراهیم نخعی رضی اللہ عنہ فرمائی دا حدیث دخلقو ډیر خوښ وو خکه چه حضرت جریر بن عبد الله رضی اللہ عنہ په اسلام قبلونکو کنبی د آخری سرو نه وو. تراجم رجال: د دې حدیث ټول شپږ رجال دی.

① آدم بن ایس رضی اللہ عنہ: دا ابو الحسن آدم بن ابی ایاس عبد الرحمن العسقلانی رضی اللہ عنہ دی. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده لاندې تیره شوې ده. (٢)

② شعبه رضی اللہ عنہ: دا امیر المؤمنین شعبه بن الحجاج بن الورد عتکی الواسطی بصری رضی اللہ عنہ دی. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده، لاندې تیره شوې ده. (٣)

③ اعمش رضی اللہ عنہ: دا ابو محمد سلیمان بن مهران اسدی کوفی الاعمش رضی اللہ عنہ دی. د دوی تذکره

(١) تقریر بخاری شریف: ۱۳۷ / ۲.

(٢) رواه مسلم فی الطهارة، باب: المسح علی الخفین، رقم الحدیث: ۲۷۲. و ابوداؤد فی سننه، فی الطهارة، باب: المسح علی الخفین، رقم الحدیث: ۹۳. والنسائی فی سننه، فی الطهارة، باب: المسح علی الخفین، رقم الحدیث: ۱۱۸. وابن ماجه فی سننه، فی الطهارة، باب: ماجه فی المسح علی الخفین، رقم الحدیث: ۵۴۳. وفی جامع الأصول، حرف الطاء، کتاب الأول: فی الطهارة، الباب الرابع: فی الوضوء، الفصل الثالث: فی المسح علی الخفین، الفرع الأول: فی جواز المسح، رقم الحدیث: ۵۲۷۴، ۲۳۷/۷.

(٣) کشف الباری: ۱/۶۷۸.

(٤) کشف الباری: ۱/۶۷۸.

کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: ظلم دون ظلم، لاندې تیره شوي ده (۱)

⑤ ابراهیم رضی اللہ عنہ: دا ابو عمران ابراهیم بن یزید بن قیس بن اسود نخعی رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال

کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: ظلم دون ظلم، لاندې تیر شوي دي (۲)

⑥ همام بن حارث رضی اللہ عنہ: د دوی پوره نوم همام بن الحارث النخعی الکوفی رضی اللہ عنہ دي. (۳) دي د

اهل شام د طبقه اولی تابعی وو (۴). د دوی په استاذانو او مشائخو کنبی حضرت جریر بن عبد الله البجلي، حذیفه بن الیمان، عبد الله بن مسعود، عدی بن حاتم، عمار بن یاسر، عمر بن الخطاب، مقداد بن الاسود، ابو مسعود الانصاری او ام المؤمنین حضرت عائشه صدیقه رضی اللہ عنہا و رضی اللہ عنہ وغیره شامل دي.

او د دوی نه روایت کونکو کنبی ابراهیم نخعی، سلیمان بن یسار او وبره بن عبد الرحمن وغیره رحمهم الله شامل دي. (۵)

ابن حبان رضی اللہ عنہ دي په ثقاتو کنبی ذکر کړي دي. (۶) يحيى بن معين رضی اللہ عنہ د دوی باره کنبی

فرمائي: ثقة. (۷) ابو الحسن المحدثی رضی اللہ عنہ دوی د اهل کوفه په عبادو کنبی ذکر کوي. (۸)

دي به د شپې لپشان وخت او ده کیدو اکثر به ئی شپه په وینه په عبادت کنبی تیروله.

او اکثر به ئی دا دعا کوله "اللهم اشقني من نوم يسير، واجعل سهري في طاعتك" (۹) کله چه به دوی

اوده شو او پاسیدل به نو د هغوی مخ ته په کتو به پته لگیدله چه دي ټوله شپه نه دي اوده

شوي (۱۰). د دوی د وفات باره کنبی ابن حبان رضی اللہ عنہ لیکلی دي چه دي د یزید بن معاویه په

زمانه کنبی په ۶۲ هجری کنبی وفات شو. او "قیل" سره یو قول داهم ذکر کړي شوي دي چه

دي د عبد الله بن یزید په امارت کنبی ۶۵ هجری کنبی وفات شوي دي (۱۱). خو په تاریخ د

ابن قانع کنبی دي چه په ۶۱ هجری کنبی وفات شوي دي. او تاریخ خلیفه کنبی دي چه

۶۲ هجری کنبی وفات شوي دي (۱۲)

(۱) کشف الباری: ۲۵۱/۲.

(۲) کشف الباری: ۲۵۳/۲.

(۳) التاريخ الكبير للبغاري: ۲۳۶/۴، خلاصة الخزرجي، ص: ۴۱۱.

(۴) الطبقات الكبرى لابن سعد: ۱۱۸/۶.

(۵) تهذيب الكمال: ۲۹۷/۳۰، تهذيب التهذيب: ۶۶/۱۱.

(۶) كتاب الثقات لابن حبان: ۵۱۰/۵.

(۷) الجرح والتعديل: ۱۳۱/۹، سير اعلام النبلاء: ۲۸۴/۴.

(۸) حلية الأولياء: ۱۷۸/۴.

(۹) الطبقات الكبرى لابن سعد: ۱۱۶/۶، سير اعلام النبلاء: ۲۸۴/۴.

(۱۰) إكمال تهذيب الكمال: ۱۶۴/۱۲.

(۱۱) الثقات لابن حبان: ۵۱۰/۵، تهذيب التهذيب: ۶۶/۱۱.

(۱۲) إكمال تهذيب الكمال: ۱۶۴/۱۲، تهذيب التهذيب: ۶۶/۱۱.

⑥ جرير بن عبد الله رضي الله عنه: دا مشهور صحابي حضرت جرير بن عبد الله بجلی کوفی رضي الله عنه دي. دوی تذکره کشف الباری، کتاب الایمان، باب: قول النبی صلی الله علیه وسلم الیدین النصیحة، لاندې تیره شوې ده<sup>(١)</sup>

شرح هدیث: عَنْ هَمَامِ بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ: رَأَيْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ «بَالَ»، ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خَفِيهِ، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى. حضرت همام بن حارث رضي الله عنه روایت کوی چه ما حضرت جریر بن عبد الله رضي الله عنه اولیدلو چه هغوی متیازی او کرې بیانی اودس او کرو او په خپلو موزو باندې شی مسح او کره، بیاد مانخه د پاره اودریدو اومونخ شی ادا کرو.

د دومره خبرې ظاهر هم دادې چه هغوی هم په موزو کښې مونخ ادا کرو. ځکه چه که چرې هغوی موزې کوزې کرې وې نو په هغوی باندې به خپې وینخل ضروری کیدل د کوم په وجه چه به هغوی خپې وینخلې. چنانچه که چرې دا ټول هرڅه کیدل نو دا به نقل کولې هم شو اودلته دا ټول هرڅه ذکر نه دی. دکوم نتیجه چه دا شوه چه داسې هیڅ نه دی شوی.<sup>(٢)</sup>

فوله: قَبِلَ: نو حضرت جریر بن عبد الله رضي الله عنه نه دهغوی په موزو باندې د مسح کولو او هم په موزو کښې د مونخ ادا کولو باره کښې پوښتنه او کرې شوه چه دا تاسو څه او کرل؟<sup>(٣)</sup> ساقل څوک وو؟ طبرانی رضي الله عنه یو روایت ذکر کرې دي دکوم نه چه معلومیري چه د حضرت جریر بن عبد الله رضي الله عنه نه تپوس کونکې حضرت همام بن الحارث رضي الله عنه وو.<sup>(٤)</sup>

او هم په معجم الکبیر کښې امام طبرانی رضي الله عنه یو روایت نقل کرې دي په کوم کښې چه دی: «فَعَابَ ذَلِكَ عَلَيْهِ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ»<sup>(٥)</sup>

فوله: فَقَالَ: «رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ مِثْلَ هَذَا»: نو حضرت جریر بن عبد الله رضي الله عنه اوفرمائیل چه ما نبی کریم صلی الله علیه وسلم په داسې کولو لیدلې دي. یعنی نبی کریم صلی الله علیه وسلم هم داسې په

(١) كشف الباري: ٢/٧٦٤.

(٢) فتح الباري: ٤١/١، عمدة القاري: ١٧٨/٤.

(٣) فتح الباري: ٤١/١، عمدة القاري: ١٧٨/٤.

(٤) حدثنا أسلم بن سهل الواسطي، ثنا محمد بن حسان البرجاني، ثنا محمد بن يزيد الواسطي، عن جعفر بن الحارث، عن سليمان، عن إبراهيم، عن همام بن الحارث، قال: بَالَ جَرِيرٌ لَمْ تَوَضَّأْ وَمَسَحَ عَلَى خَفِيهِ، فَقُلْتُ لَهُ: أَنْفَعَلْ هَذَا وَقَدْ بَلْتَ؟ قَالَ: فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَالَ لَمْ تَوَضَّأْ، وَمَسَحَ عَلَى خَفِيهِ. (المعجم الكبير للطبراني، باب الجيم، جرير بن عبد الله البجلي، رقم الحديث: ٢٤٢٨، ٢/٣٤٣).

(٥) حدثنا محمد بن النضر الأزدي، ثنا معاوية بن عمرو، ثنا زائدة: عن الأعمش، عن إبراهيم، عن همام بن الحارث، قال: بَالَ جَرِيرٌ، فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خَفِيهِ، فَقَالَ جَرِيرٌ: إِنْ أَفْعَلْتُ فَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَلَ هَذَا. (المعجم الكبير للطبراني، باب الهمام بن الحارث، رقم الحديث: ٢٤٢٣، ٢/٧٤١).

نوټ: فتح الباري او عمدة القاري کښې 'فَعَابَ عَلَيْهِ ذَلِكَ' دي، خو په اصل کتاب کښې 'فَعَابَ ذَلِكَ عَلَيْهِ' دي یعنی د ذلك او عليه تقديم او تاخير دي. او گورئ: فتح الباري: ٤١/١، عمدة القاري: ١٧٨/٤.

موزو باندې مسح او كړه اوبياتي هم په هغه موزو كښې مونځ ادا كړو<sup>(١)</sup>.  
 قوله: قَالَ إِبْرَاهِيمُ: «فَكَانَ يُعْجِبُهُمْ لِأَنَّهُمْ إِذَا كَانُوا مِنْ آخِرِ مَنْ أَسْلَمَ». حضرت ابراهيم عليه السلام فرمائي چه دا حديث دخلقو ډير خوښ وو ځكه چه د حضرت جرير عليه السلام قبلول په آخره زمانه كښې وو. د ابراهيم نه مراد هم ابراهيم نخعی عليه السلام دي كوم چه په سند كښې ذكر دي<sup>(٢)</sup>.  
 د فکان ضمير مرجع به حديث جرير وي كوم چه د سياق اوسباق نه په پوهه كښې راځي او يعېهم كښې هم ضمير د قوم طرف ته راگرځي<sup>(٣)</sup>.

د حضرت جرير بن عبدالله عليه السلام دا حديث خلقوته ځكه ډير خوښ وو چه كوم خلق د نبي كريم صلى الله عليه وسلم د حيات طيبه په آخره كښې مسلمانان شوي وو په هغوي كښې حضرت جرير عليه السلام هم وو. لهذا دهغوي په اودس كښې په موزو باندې مسح كول اوبيا دا وئيل چه ما دغه شان په موزو باندې مسح كولو سره نبي كريم صلى الله عليه وسلم هم ليدلې دي. داددي خبرې دليل دي چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم په موزو باندې مسح كولو عمل تراخه پورې وو.

د صحيح مسلم په روايت كښې د حضرت جرير عليه السلام باره كښې دا الفاظ دي ((لأن إسلام جرير كان بعد نزول المائدة))<sup>(٤)</sup>

اوسنن ابی داؤد كښې د شهرين حوشب په روايت كښې دا الفاظ دي: ((إما كان ذلك قبل نزول المائدة، قال: ما أسلمت إلا بعد نزول المائدة))<sup>(٥)</sup>

اوسنن الترمذي كښې د شهرين حوشب په روايت كښې دي چه هغوي تپوس او كړو چه تاسو نبي كريم صلى الله عليه وسلم د سورة مائده د نزول نه مخكښې په داسې كولو ليدلې دي كه روستو؟ نوهغوي جواب وركړو چه زه خو مسلمان شوي د سورة المائدة د نزول نه پس يم يعنى هم د نزول مائده نه پس ما نبي كريم صلى الله عليه وسلم په داسې كولو ليدلې دي.

(١) إرشاد الساري: ٥٠/٢.

(٢) عمدة القاري: ١٧٨/٤، إرشاد الساري: ٥٠/٢.

(٣) عمدة القاري: ١٧٨/٤، إرشاد الساري: ٥٠/٢.

(٤) حدثنا يحيى بن التميمي، وإسحاق بن إبراهيم، وأبو كريب، جميعا عن أبي معاوية، ج، وحدثنا أبو بكر بن أبي شيبة، حدثنا أبو معاوية، ووكيع واللفظ ليحيى، قال أخبرنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن إبراهيم، عن همام، قال: قال جرير، ثم توطأ، ومسح على خفيه، فقيل: تفعل هذا؟ فقال: نعم، رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يال، ثم توطأ ومسح على خفيه. قال الأعمش: قال إبراهيم: كان يعجبهم هذا الحديث لأن إسلام جرير، كان بعد نزول المائدة. (صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب: المسح على الخفين، رقم الحديث: ٢٧٢).

(٥) حدثنا علي بن الحسين الدرهمي، حدثنا ابن داؤد، عن بكير بن عامر، عن أبي زرعة بن عمرو بن جرير أن جريرا يال ثم توطأ فمسح على الخفين، وقال: ما يمنعني أن أسح وقد رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم مسح، قالوا: إنما كان ذلك قبل نزول المائدة، قال: ما أسلمت إلا بعد نزول المائدة. (سنن أبي داؤد، كتاب الطهارة، باب: المسح على الخفين، رقم الحديث: ١٥٤).

امام ترمذی رحمته الله فرمائی ہے کہ دا حدیث مفسر دے چکے ہے بعضی منکرین پہ موزو باندی دے مسح بارہ کنبی دا خبرہ ذکر کوی ہے پہ موزو باندی مسح نبی کریم صلی الله علیه و آله دے سورت مائده دے نزول نہ مخکنبی کرے وہ خو حضرت جریر رضی الله عنه پہ دے حدیث کنبی دا خبرہ ذکر کوی ہے ہفہ دے سورت مائده دے نزول نہ پس نبی کریم صلی الله علیه و آله پہ موزو باندی پہ مسح کولو لیدلے دے ( )

دے علامہ کشمیری رحمته الله قول: علامہ کشمیری رحمته الله فرمائی ہے دے سورت مائده آیت: ﴿وَأَمْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ إِلَى الْكَعْبَتَيْنِ﴾ نہ حضرات صحابہ کرام رضی الله عنهم پہ اودس کنبی دے خپو دے وینخلو فرضیت گنرلے وو۔ پہ دے وجہ دے حضرت جریر رضی الله عنه پہ فعل او روایت مذکورہ باندی دے یر زیات خوشحالہ شوے وو چکے ہے پہ دے آیت سرہ پہ موزو باندی دے مسح خفین دے منسوخ کیدو وہم کیدی شو۔ اوہفہ دے ہفہ فعل او دے روایت دے وجی نہ ختم شوے وو۔ اودا خبرہ واضعہ شوے وہ ہے پہ موزو باندی دے مسح حکم دے مائده دے مذکورہ آیت نہ پس ہم ہفہ شان باقی دے۔ لیکن دے صحابہ کرام رضی الله عنهم دے علم او فہم خلاف روافضو دا گنرلی ہے دے مائده دے مذکورہ آیت مطابق پہ اودس کنبی دننہ پہ ہر حالت کنبی او بغیرہ موزو ہم پہ خپو باندی مسح کول پکار دی۔ وینخلو ئی فرض نہ دی۔ اودے خوارجو او امامیو پہ نیز پہ موزو باندی مسح صحیح نہ دے۔ ہفوی ہم دے سورت مائده دے آیت نہ دا گنرلی دے ہے دے مسح حکم صرف دے خپو دے پارہ دے لہذا دے موزو اچولو پہ حالت کنبی بہ پہ دے باندی مسح کول جائز نہ وی۔ دے دو اورو فرقونو نہ علاوہ تولو ائمہ مجتہدینو اودے تولو علماء کرامو سلف او خلف ہم دے مذهب دے ہے بغیرہ موزو نہ پہ اودس کنبی دے خپو وینخلو فرض دی اودے موزو پہ حالت کنبی پہ دے باندی مسح کول جائز دی۔

او پہ صحابہ کرام رضی الله عنهم کنبی صرف دے حضرت عائشہ رضی الله عنہا، ابن عباس، اودے حضرت ابوہریرہ رضی الله عنہ طرف تہ دے عدم جواز مسح علی الخفین قول منسوب کرے شوے دے۔ اول خودا نسبت ضعیف دے۔ بل دا ہے ہم دے حضراتو نہ دے جواز دے ثبوت دے پارہ قوی روایات موجود دی۔ او داہم ممکن دی ہے اول ئی ہفہ خیال وو او بیانی دے ہفہ نہ رجوع کرے وی۔ واللہ تعالی اعلم۔ پہ ائمہ کنبی دے امام مالک رحمته الله طرف تہ ہم انکار منسوب شوے دے لیکن علامہ ابن عبدالبر مالکی رحمته الله فرمائیے دی مائہ معلومہ نہ دے ہے دے فقہاء سلف نہ چاہم پہ موزو دے مسح نہ انکار کرے وی۔ البتہ دے امام مالک رحمته الله طرف تہ دے نسبت کرے شوے دے مگر پہ

(۱) ویروی عن شہر بن حوشب، قال: رأیت جریر بن عبد اللہ توضع، ومسح علی خفیه، فقلت له فی ذلک، فقال: رأیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم توضع، ومسح علی خفیه، فقلت له: أقیل المائدة، أم بعد المائدة؟ فقال: ما أسلمت إلا بعد المائدة، حدثنا بذلك قتیبہ، قال: حدثنا خالد بن زیاد الترمذی، عن مقاتل بن حبان، عن شہر بن حوشب، عن جریر، وروی بقیہ، عن إبراهيم بن آدم، عن مقاتل بن حبان، عن شہر بن حوشب، عن جریر، وهذا حدیث مفسر لأن بعض من أنکر المسح علی الخفین تناول أن مسح النبی صلی اللہ علیہ وسلم علی الخفین کان قبل نزول المائدة، و ذکر جریر فی حدیثہ أنه رأى النبی صلی اللہ علیہ وسلم مسح علی الخفین بعد نزول المائدة. (سنن الترمذی، کتاب الطہارۃ، باب: المسح علی الخفین، رقم الحدیث: ۹۴).

هغې کنبې چه کوم صحیح روایات دی هغه د ثبوت صراحت کوی (۱)  
 په موزو باندي مسح يو اجماعی مسئله ده: صاحب بدائع الصنائع فرمائی چه د صحابه کرامو  
 په موزو باندي مسح باره کنبې قولاً او فعلاً اجماع ده. تردې چه حضرت حسن بصری رضی الله عنه  
 فرمائی چه ما اویا بدری صحابه رضی الله عنهم لیدلی دی چه هغوی ټولو به په موزو د مسح روایت  
 کولو.

هم په دې وجه د امام ابوحنیفه رضی الله عنه په نیز په موزو باندي د مسح د جواز عقیده ساتل د اهل  
 سنت والجماعت د شرطونو نه یو شرط دې. هغوی او فرمائیل چه دا اهل سنت علامت دادې  
 چه تاسو شیخین (حضرت ابوبکر او حضرت عمر فاروق رضی الله عنهما) ته فضیلت ورکړئی او دوو  
 خومانو (حضرت عثمان او حضرت علی رضی الله عنهما) سره محبت اوساتئ، په موزو باندي مسح جائز  
 او گنړئی او د کهجورو نیبذ حرام مه گرځوئی.

د امام ابوحنیفه رضی الله عنه نه روایت دې چه ما تر هغه وخته پورې په موزو باندي مسح جائز اونه  
 گرځوله ترکومی پورې چه د دې جواز په ما باندي د رنړا ورځې په شان واضح نه شو. او د دې  
 نه انکار کول په صحابه کرامو رضی الله عنهم باندي رد کول دی او هغوی په خطا باندي گرځول دی. په  
 دې وجه علامه کرخی رضی الله عنه فرمائیلی دی څوک چه په موزو باندي د مسح نه انکار او کړی  
 ماته په هغه باندي د کفر ویره ده. د حضرت عائشه رضی الله عنها او براء بن عازب رضی الله عنه نه روایت دې  
 چه حضور پاک د سورت مائده د نازلیدو نه پس مسح کړې ده. او د حضرت جریر بن عبدالله  
 البجلی رضی الله عنه نه روایت دې چه هغوی نبی کریم صلی الله علیه و آله اولیدلو چه حضور پاک اودس او کړو او په  
 موزو باندي ئی مسح او کړه. د هغه نه پښتنه او کړې شوه چه د سورت مائده د نازلیدو نه  
 پس حضور پاک داسې او کړه؟ نو هغوی جواب ورکړو چه ما خو هم د سورت مائده د نازلیدلو  
 نه پس اسلام قبول کړې دې. (۲)

د مذکوره حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت: د ترجمه الباب سره مناسبت د حدیث شریف  
 د دې جملې «ومسح علی خفيه، ثم قام، فصلی» نه پوره واضح دې (۳)  
 د حدیث شریف نه مستنبط فواید او احکام: د مذکوره حدیث شریف نه ډیر فواید مستنبط  
 کیږی، مثلاً:

- ① د خلقو په موجودگي کنبې متیازې کول جائز دی، اگر چه سنت دادی چه د خلقو نه دې  
 لرې لارشی اودې کړی (۴)
- ② په موزو باندي مسح کول جائز دی. (۵)

(۱) انوار الباری: ۱۶۷/۱۲، فیض الباری: ۳۶/۲.

(۲) بدائع الصنائع، کتاب الطهارة، باب: المسح علی الخفین: ۱۳۰/۱ دارالکتب العلمیه.

(۳) عمدة القاری: ۱۷۷/۴.

(۴) عمدة القاری: ۱۷۹/۴، الشرح المیسر: ۴۳۹/۱.

(۵) عمدة القاری: ۱۷۹/۴، الشرح المیسر: ۴۳۹/۱.

- ⑤ په احکام کښې د یو حکم په باقی پاتې کیدو یعنی نه منسوخ کیدو باندې د خوشحالی اظهار کول خوښ کړې شوي امر دي (۱)
- ⑥ موزې اچولو سره مونځ کول جائز دي (۲)

حدیث باب: دویم حدیث [حدیث نمبر ۳۸۱]

۳۸۱- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَعْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سَامَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنِ مُسْلِمٍ عَنِ مَسْرُوقٍ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ (۱) وَضَاةُ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَسَمَ عَلَيَّ خُفِّيهِ وَصَلَّى.

ترجمه حدیث: حضرت مغیره بن شعبه رضی اللہ عنہ فرمائی ما په حضور پاک باندې اودس او کړو نو حضور پاک په خپلو موزو باندې مسح او کړه او مونځ ئی او کړو. تراجم رجال: په مذکوره حدیث مبارک کښې ټول شپږ رجال دي:

① اسحاق بن نعر رضی اللہ عنہ: دا اسحاق بن ابراهیم بن نصر البخاری السعدی رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الغسل، باب: من اغتسل عریانا وحده فی الغلوة وهی تستر فالستر افضل، لاندې تیر شوي دي (۳)

② ابو اسامه رضی اللہ عنہ: دا ابو اسامه حماد بن اسامه بن زید قرشي کوفی رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: فضل من علم وعلم، لاندې تیر شوي دي (۵)

③ اعمش رضی اللہ عنہ: دا ابو محمد سلیمان بن مهران اسدی کوفی الاعمش رضی اللہ عنہ دي. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب الايمان، باب: ظلم دون ظلم، لاندې تیره شوي ده (۷)

④ مسلم رضی اللہ عنہ: دا مسلم بن صبیح رضی اللہ عنہ دي یا مسلم بن عمران رضی اللہ عنہ، د دې باره کښې دوه قسم احتمالات دي ځکه چه دا دواړه حضرات د اعمش رضی اللہ عنہ نه روایت کوي. علامه کرمانی رضی اللہ عنہ فرمائی چه دا مسلم یا خو ابن عمران دي کوم چه په ابطین سره مشهور دي یا بیا ابن صبیح دي کوم چه په ابو الضحی سره مشهور دي. لیکن ظاهر دادي چه دلته مراد رومی رضی اللہ عنہ دي (۶)

علامه عینی رضی اللہ عنہ فرمائی چه د علامه کرمانی رضی اللہ عنہ دغه مذکوره دعوی کول صحیح نه دي ځکه چه دلته دویم مراد اخستل زیات ظاهر دي لکه چه امام مزنی رضی اللہ عنہ په "اطراف" کښې تصریح کړې ده (۸)

(۱) عمدة القاری: ۱۷۹/۴.

(۲) التوضیح لابن الملتن: ۳۶۸/۴، الشرح المیسر: ۴۳۹/۱.

(۳) مرتخیرجه تحت کتاب الوضوء، باب: الرجل یوضی صاحبه.

(۴) کشف الباری، کتاب الغسل، باب: من اغتسل عریانا وحده فی الغلوة وهی تستر، فالستر افضل.

(۵) کشف الباری: ۴۱۴/۳.

(۶) کشف الباری: ۲۵۱/۲.

(۷) شرح الکرماني: ۵۰/۴.

(۸) عمدة القاری: ۱۸۰/۴.

حافظ ابن حجر رحمته الله هم د حفاظو قول ذکر کولو سره هم مسلم بن صبيح ته ترجيح ورکړې ده (١)  
کوم صورت هم چه وی په دې کښې هيڅ حرج نشته دې ځکه چه دواړه هم د صحيح بخاری  
راویان دی او دواړه ثقه دی. (٢)

که چرې مسلم بن صبيح مراد وی نو د دوی ذکر کتاب الصلاة، باب: الصلاة في الجبة الشامية،  
ص: ٢٥٨ کښې تیر شوې دې او که چرې مسلم بن عمران مراد وی نو د دوی ذکر وړاندې کتاب  
العيدین، باب: فضل العمل في أيام التشريق کښې راځي.

⑤ مسروق رحمته الله: دا مسروق بن الاجدع بن مالك بن اميه وداعی همدانی رحمته الله دې. د دوی  
احوال كشف الهاري، کتاب الإیمان، باب: علامة المنافق، لاندې تیر شوې دی (٣)

⑥ مغيرة بن شعبه رحمته الله: دا مغيرة بن شعبه رحمته الله دې. د دوی احوال كشف الهاري، کتاب الوضوء،  
باب: الرجل الذي يرضع صاحبه، لاندې تیر شوې دی (٤)

شرح حديث: د مذکوره حديث مکمل تشریح کتاب الوضوء کښې تیره شوې ده.  
د مذکوره حديث د ترجمة الباب سره مناسبت: د دې حديث شريف مناسبت د ترجمة الباب سره  
واضح دې ځکه چه په دواړو کښې په موزو سره دمونځ د ادا کولو ذکر دې (٥)

## ٢٤ - باب: إِذَا لَمْ يَتِمَّ السُّجُودُ

د اباب دې چه کله مونځ گزار سجده پوره نه کړي (نو د هغه مونځ باطل دې)

د ترجمة الباب مقصد: د اباب او د دې نه پس راتلونکې باب ټيډې ضعيه ويجال في السجود د  
اشکال سبب جوړ شوی دی. ځکه چه امام بخاری رحمته الله د ستر مسائل او د مصلی د طهارت  
مسائل بيانوی. خودلته "إذالم يتم السجود" ترجمه نه ستر سره متعلق ده او نه د طهارت مصلی  
سره متعلق ده. بلکه د دې تعلق خو د صفت صلاة سره دې او د صفت صلوة ابواب وړاندې  
راځي او هلته هم دا دواړه ترجمې را روانې دي چنانچه د دې ذکر بهي محله دې.  
د تکرار اشکال خوبه هلته وی کله چه دا دوباره راشی. دلته خو په اول ځل راځي ليکن د بهي  
محل کيدو اشکال بهر حال موجود دې. د اصیلی په نسخه کښې دا دواړه ابواب موجود دی  
او د مستملی په نسخه کښې دا دواړه ابواب نشته دي، نو دا د نساخو غلطی ده (٦)  
د حضرت شاه ولی الله رحمته الله راټي: حضرت شاه ولی الله رحمته الله فرمائی د فربري نه دا نقل دی چه د

(١) فتح الباری: ٦٤٢/١

(٢) عمدة القاری: ١٨٠/٤.

(٣) كشف الباری: ٢٨١/٢.

(٤) كشف الباری، کتاب الوضوء، باب: الرجل الذي يرضع صاحبه.

(٥) عمدة القاری: ١٧٩/٤.

(٦) فتح الباری: ٦٤٢/١



بخاری بعضی پانزې جدا جدا وې. بعضی کاتبانو او ناسخینو ته دا مغالطه مخې ته شوه. هغوی ددې پانزو ابواب بې محله دلته ذکر کړل. دا ددې ابوابو مقام او محل نه دې. خبره هم یوه ده چه دا د ناسخینو غلطی ده<sup>(۱)</sup>

د حافظ ابن حجر رحمته الله وائي: حافظ صاحب رحمته الله فرمائي دمستملی نسخه زیاته معتبره ده. بل ځکه چه د هریاب په خپل مقام باندې راتلل زیات مناسب دی او بیا مصنف یعنی د امام بخاری رحمته الله عادت هم دا نه دې چه هغه دې ابواب مکرر راوړی. او که چرې د مناسبت لتون کول غواړی نو دا هم ممکن دی مثلاً ددې رومبې باب مناسبت دا جوړیدې شی چه چا په شرائطو د مونخ کنبې څه شرط موقوف کړو نو دا هم داسې دی لکه چه هغه د مونخ یو رکن ترک کړو. یعنی د دواړو مونخ به نه کیږی. نو دلته شی د سجدي نه پوره کولو سره د مونخ عدم تمامیت بیان کړې دې. او راتلونکی د دویم باب ماقبل سره مناسبت داسې جوړیدې شی چه په سجده کنبې مجافات (یعنی متې د خیتې نه لرې ساتل) دستر منافی نه دی، لهذا په دې سره به مونخ نه باطلیږی. لیکن فی الجملة اصل خبره هم هغه ده چه ددې ابوابو دلته ذکر کیدل د کاتبانو غلطی ده. دې سره به مونخ نه باطلیږی<sup>(۲)</sup>

د علامه عینی رحمته الله وائي: علامه عینی رحمته الله د حافظ صاحب رحمته الله ذکر کړې شوي آخری خبره (چه زما په نیز راجح هم دا دی چه دا د کاتبانو د غلطی د وجې نه دی) ذکر کولو نه پس لیکي چه د امام بخاری رحمته الله ددې دواړو ابوابو اعاده کول بغیر د څه وجې نه دی بلکه ددې وجه شته ځکه چه د امام بخاری رحمته الله عادت دې چه د څه فائدي د وجې نه تکرار کوی او هغه دلته موجود ده. مثلاً ترجمه الباب دې: اذالم يتم السجود او وړاندې راتلونکی باب کنبې عنوان تهاب: اذالم يتم الركوع دې.

او په دې ځای کنبې د امام بخاری رحمته الله استاذ الصلت ابن محمد دې چه د عن مهدي عن واصل عن ابن وائل من حذيفة انه رأى رجلاً..... الخ په سند سره روایت کوی. او وړاندې راتلونکی باب کنبې د امام بخاری رحمته الله استاذ حفص بن عمر رحمته الله دې چه د عن شعبة عن سليمان قال: سمعت زيد بن وهب قال: رأى حذيفة رجلاً..... الخ په سند سره روایت کوی. دې نه علاوه په متن کنبې هم څه قدرې تغایر شته. البته د دویم باب دې ځای کنبې ذکر بې محله دې. ځکه چه بالکلیه دا باب هم ددې ترجمې، متن او روایتو سره وړاندې راځی.

او که چرې دا سوال او کړې شی چه د اصیلی په روایت کنبې خودا دواړه ابواب موجود دی. نو بیا په دې صورت کنبې به ددې ابوابو د ماقبل ابوابو سره څه مناسبت وی؟ نو ددې جواب دادې چه مناسبت بنکاره دې چه ماقبل ابواب هم او دا دواړه ابواب هم د سجود د حکم سره

(۱) تراجم ابواب صحيح البخاری للدهلوی، ص: ۳۱.

(۲) فتح الباری: ۶۴۲/۱.

متعلق دی (۱)

د علامه کشمیری رحمۃ اللہ علیہ واثی: علامه محمد انور شاہ کشمیری رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ دا خبرہ ممکن ده چہ دا اوونیلپی شی چہ فقهاؤ کرامو د سجدي د پاره شرطونه ذکر کړی دی لکه د سجدي په حالت کښې د زمکې سختوالي محسوسول وغیره، نو په اعتدال سره سجده کول هم دې جهت سره د مانخه اود سجدي د شرطونو نه دي، نو په دې مناسبت ئی دا ذکر کړل (۲)

علامه بدر عالم صاحب میرتهی رحمۃ اللہ علیہ هم دلته فرمائی چہ په دې سره د سجدي تمامیت د مانخه د شرطونو نه کیدل مراد دی (۳)

د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ واثی: حضرت شیخ الحدیث مولانا محمد ذکریا کاندهلوی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی دا دواړه ابواب په صفحه ۱۱۲ باندې راخی او باب: لایکف ثوبه فی الصلاة په صفحه ۱۱۳ باندې دي. اوس سراج دا وائی چہ دلته خو ابواب الثیاب روان وو په مینخ کښې دا دوه ابواب څنگه راغله؟ که وی او که نه وی خودا د یو کاتب تصرف دي چہ په غلط ځائی باندې راغلی دی. اود لباس دوه ابواب کوم چہ په صفحه ۱۱۳ باندې راروان دی هغه په ابواب السجود کښې لارل، داهم د کاتب تصرف دي.

د حضرت شاه ولی الله صاحب محدث دهلوی رحمۃ اللہ علیہ وغیره هم دا واثی ده او هغوی د فربری نه ددې تائید نقل کړې دي چہ هغوی فرمائی چہ د بخاری شریف په نقل کښې بعضې بعضې غلطیانې واقع شوی دی. حافظ صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چونکه د بخاری شریف په نسخو کښې دا باب دلته موجود دي. په دې وجه ددې توجیه دا کیدی شی چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ په قیاس

او نظر سره دستر عورت اهمیت ثابتوی چہ من ترک شرطاً لا تصح صلواته کمن ترک رکناً.

مگر زما واثی داده چہ هریاب په خپل ځائی باندې دي هغه داسې چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ ابواب الثیاب ذکر کول نو امام صاحب رحمۃ اللہ علیہ باب: بیدي ضبعیه لگولو سره دا او خودل که چرې کپړې وړې وړې وی نو په سجده کښې دي اخفاء نه کوی بلکه ابداء دي او کړی. ځکه چہ پخپله نسی کریم ﷺ د کپړې وړې کیدو باوجود ابداء او کړه. که چرې کپړا وړه نه وي نو د ترخ مبارک سپینوالي به ئی څنگه ښکاریدو. اوددې د اثبات د پاره ئی باب: إذا لم يتم السجود قائم کړو چہ که چرې تجافی نه کوی نو اتمام سجود به نه وی او هلته په حیثیت د سجود کیفیت راخی په کوم چہ به مستقل کلام وی (۴)

(۱) عمدة القاری: ۱۸۰/۴.

(۲) فیض الباری: ۳۷/۲، أنوار الباری: ۱۷۱/۱۲.

(۳) البدر الساری إلى فیض الباری: ۳۷/۲.

(۴) تقریر بخاری شریف: ۱۳۸/۲، الكنز المتواری: ۷۶/۴، سراج القاری: ۴۱۹/۲.

حديث باب [حديث نمبر ٣٨٢]

٣٨٩- أَخْبَرَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا مَهْدِيٌّ عَنْ وَاصِلٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ حُدَيْفَةَ (١) رَأَى رَجُلًا لَا يَتِمُّ رُكُوعَهُ وَلَا سَجُودَهُ، فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ قَالَ لَهُ حُدَيْفَةُ مَا صَلَّيْتَ - قَالَ وَأَحْسِبُهُ قَالَ - لَوُمْتُ مَتَّ عَلَيَّ غَيْرِ سَنَةِ مُحَمَّدٍ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -.

ترجمہ حدیث: حضرت حذیفہ بن یمان رضی اللہ عنہ نے روایت دی ہے ہفوی یو سرے (پہ مونخ کولو) اولیدلو چہ ہفہ خیلہ رکوع او سجده پورہ شان سرہ نہ ادا کولہ. بیا چہ کلہ ہفہ خیل مونخ پورہ کرو نو حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ ہفہ سرے تہ او وئیل چہ تا مونخ (پہ کامل طریقہ سرہ) ادا نہ کرو (یعنی پہ تاباندی ددی مونخ واپس راگر خول واجب دی) حضرت ابو وائل رضی اللہ عنہ وائی چہ زما خیال دی چہ حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ دا ہم فرمائیلی وو چہ کہ چری تہ (پہ دی حالت کنسی) مر شوے نو تہ بہ حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم پہ طریقہ باندی نہ مری. تراجم رجال: ددی حدیث پہ سند کنسی تول پنخہ راویان دی.

① صَلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ: د دوی پورہ نوم ابوہمام الصلت بن محمد بن عبد الرحمن بن ابی مغیرة البصری رضی اللہ عنہ دی (٢)

دی چہ د کومو مشائخو نہ روایت کوی پہ ہفوی کنسی مہدی بن میمون، ابراہیم بن حمید بن عبد الرحمن الرؤاسی، ابو اسامہ حماد بن اسامہ، حماد بن زید، سفیان بن ربیعہ، عبد اللہ بن عبد العزیز اللیثی، عبد الواحد بن زیاد وغیرہ رحمہم اللہ شامل دی. اودہ نہ روایت کونکو کنسی امام بخاری، ابراہیم بن المستمر العروقی، احمد بن محمد بن ابی بکر المقدمی، روح بن حاتم ابو غسان البصری، عباس بن عبد العظیم العنبری، عبد الرحمن بن محمد بن حبیب وغیرہ رحمہم اللہ شامل دی. (٣) ابن حبان رضی اللہ عنہ دی پہ کتاب الثقات کنسی ذکر کری دی. (٤) د دہ تعلق د طبقہ عاشرہ سرہ وو. (٥) ابو حاتم رضی اللہ عنہ د دوی بارہ کنسی وئیلی دی: صالح الحدیث (٦) دارقطنی رضی اللہ عنہ فرمائیلی دی ثقہ. (٧)

(١) أخرجه البخاری أيضا فی صحیحہ، کتاب الأذان، باب: إذا لم يتم الركوع. رقم الحدیث: ٧٩١. وباب: إذا لم يتم السجود، رقم الحدیث: ٨٠٨ والنسائی فی سننہ، کتاب السجود، باب: تطییف الصلاة، رقم الحدیث: ١٣١٣. وفی جامع الأصول، حرف الصاد، کتاب الأول: فی الصلاة، القسم الأول: فی الفرائض. الباب الأول: فی الصلاة، الفصل الخامس: فی کیفیة الصلاة، الفرع الرابع: فی الركوع والسجود النوع الأول: مقدار الركوع والسجود، رقم الحدیث: ٣٤٩٥، ٣٦٧/٥. وفی تحفة الأشراف، حدیث: حذیفہ بن یمان، رواه عنه زید بن وهب الجہنی، رقم الحدیث: ٣٣٢٩، ٣٢/٣، ورواه عنه شقیق بن سلمة أبو وائل الأسدی، رقم الحدیث: ٣٣٤٤، ٣٩/٣.

(٢) التاريخ الكبير للبخاری: ٣٠٤/٤، سير أعلام النبلاء: ٤٢٦/١٠.

(٣) تهذيب الكمال: ٢٢٨/١٣، تهذيب التهذيب: ٤٣٥/٤.

(٤) الثقات لابن حبان: ٣٢٤/٨.

(٥) تقريب التهذيب: ٤٤٠/١.

(٦) الجرح والتعديل: ٤٠٨/٤، الكاشف: ٣٢/٢.

(٧) تهذيب التهذيب: ٤٣٦/٤.

ابوبكر البزار رضي الله عنه فرمائيلى دى: كان ثقة. (١) ابن حجر رضي الله عنه په تقريب كنبي د دوى د پاره د مدوق لفظ استعمال كړې دې. (٢)

① مهدي رضي الله عنه: د دوى پوره نوم مهدي بن ميمون الأزدي البجلي رضي الله عنه دې. (٣) معولي دميم په كسرې او عين سكون سره اود واؤ فتحي سره دې. (٤) د دوى كنيت ابويحيى دې. (٥) د كومو مشانخونه چه دوى روايت كړې دې په هغوى كنبي واصل مولى ابى عيينه، ابوالوازع جابر بن عمرو الراسبي، حسن بصرى، سعيد الجريرى، شعيب بن الحجاب، عبد الله بن صبيح البصرى، عبيد الله بن ابى بكر، انس بن مالك، عثمان ابن عبيد الراسبي، عمرو بن مالك النكري، عمران القصير، غيلان بن جرير او محمد بن سيرين وغيره رحمهم الله شامل دى. اود چانه چه دوى روايت كوى په هغوى كنبي ابو همام الصلت بن محمد الخاركي، اسد بن موسى، جباره بن مغلس، حبان بن هلال، حجاج بن منهل، حسن بن ربيع البجلي، خالد بن خدش او سريع بن النعمان وغيره رحمهم الله شامل دى. (٦) عبد الله بن ادريس رضي الله عنه وائى ما شعبه رضي الله عنه ته او وئيل چه تاسو د مهدي بن ميمون باره كنبي خه وايئ؟ هغوى په جواب كنبي او فرمائيل ثقة. (٧) دامام احمد بن حنبل رضي الله عنه د خوى عبد الله بيان دې چه ما د خپل پلار احمد بن حنبل رضي الله عنه نه اوريدلى دى هغوى به فرمائيل مهدي بن ميمون ثقة، وهو احب ال من سلام بن مسكين و ابى الأشهب، وحوشب بن عقيل. (٨) ابن سعد رضي الله عنه وائى كان كرميا، وكان ثقة. (٩) ابن حبان رضي الله عنه د هغوى ذكر كتاب الثقات كنبي كړې دې. (١٠) ابن معين رضي الله عنه، النسائي رضي الله عنه او ابن خراش رضي الله عنه فرمائى ثقة. (١١) دوى د طبقه سادسه سره تعلق لرلو. (١٢) ابو حاتم رضي الله عنه بيان كړې دې چه دې د مهدي په زمانه كنبي وفات شوې دې. (١٣) د ابن حبان

(١) اكمال تهذيب الكمال: ٣٩٥/٦، تهذيب التهذيب: ٤٣٦/٤.

(٢) تقريب التهذيب: ٤٤٠/١.

(٣) تهذيب الكمال: ٥٩٣/٢٨، تقريب التهذيب: ٢١٨/٢.

(٤) تقريب التهذيب: ٢١٨/٢، حاشية تهذيب التهذيب: ٣٢٦/١٠.

(٥) التاريخ الكبير للبخارى: ٤٢٥/٤، الطبقات الكبرى لابن سعد: ٢٨٠/٧.

(٦) تهذيب الكمال: ٥٩٣/٢٨، تهذيب التهذيب: ٣٢٦/١٠.

(٧) تهذيب الكمال: ٥٩٣/٢٨، الجرح والتعديل: ٣٨٥/٨.

(٨) الجرح والتعديل: ٣٨٦/٨، تهذيب التهذيب: ٣٢٦/١٠.

(٩) الطبقات الكبرى لابن سعد: ٢٨٠/٧.

(١٠) الثقات لابن حبان: ٥٠١/٧.

(١١) تهذيب الكمال: ٥٩٥/٢٨، تهذيب التهذيب: ٣٢٧/١٠.

(١٢) تقريب التهذيب: ٢١٨/٢.

(١٣) الجرح والتعديل: ٣٨٥/٨.

﴿۱﴾ او د محمد بن محبوب  
﴿۲﴾ او د امام ترمذی ﴿۱﴾ د بیان مطابق ۱۷۲ هجری کبسی شوی دې. (۱) او د محمد بن محبوب

﴿۳﴾ واصل ﴿۱﴾ دا واصل بن حیان احدب اسدی کوفی ﴿۱﴾ دې. د دوی احوال کشف الباری،

کتاب الإیمان، باب: وان طائفتان من المؤمنین اقتتلوا، فأصلحوایینهما، لاندې تیر شوی دې (۲)

﴿۴﴾ ابی وائل ﴿۱﴾ دا مشهور تابعی ابی وائل شقیق بن سلمه اسدی کوفی ﴿۱﴾ دې. د دوی

احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: خوف المؤمن من أن يحبط عمله وهو لا يشعر، لاندې تیر شوی  
دې (۳)

﴿۵﴾ حذیفه ﴿۱﴾ دا مشهور صحابی رسول حضرت خذیفه بن الیمان ﴿۱﴾ دې. د دوی احوال

کشف الباری، کتاب العلم، باب: قول المحدث: حدثنا وأخبرنا وأنبأنا، لاندې تیر شوی دې (۴)

شرح حدیث: عَنْ حُذَيْفَةَ، رَأَى رَجُلًا لَا يَتِمُّ رُكُوعَهُ وَلَا سُجُودَهُ

ترجمه: حضرت حذیفه ﴿۱﴾ یو داسې سړی اولیدلو چا (چه خپل مونځ ادا کولو په وخت) خپلې  
رکوع او سجده په ښه شان سره نه ادا کولې.

"رجلاً" دا رجل څوک وو؟ په دې باره کبسی چرته تصریح نشته دې (۵). لفظ "رجلاً" موصوف دې  
او وړاندې جمله "لا يتم ركوعه ولا سجوده" د دې صفت دې (۶).

قوله: فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ:

ترجمه: بیا چه کله هغه مونځ پوره کړو.

"قضى" د ادا په معنی کبسی دې او هم داسې کبسی لکه چه قرآن پاک کبسی دې ﴿۱﴾ فَأَيُّهَا أَهْلُ

الصلوة قَاتِلُوا فِي الْأَرْضِ ﴿۱﴾ "صلاته" نه مراد ناقص مونځ دې یعنی په کوم کبسی چه رکوع  
او سجده په کاملې طریقې سره نه وه ادا کړې شوی (۷)

قوله: قَالَ لَهُ حُذَيْفَةُ: «مَا صَلَّيْتَ؟»:

ترجمه: حضرت حذیفه ﴿۱﴾ هغه سړی ته او وئیل چه تامونځ نه دې کړې.

(۱) الثقات لابن حبان: ۵۰۱/۷.

(۲) التاريخ الكبير للبغاري: ۴۲۵/۴، تهذيب الكمال: ۵۹۵/۲۸.

(۳) كشف الباری: ۲۳۷/۲.

(۴) كشف الباری: ۵۵۹/۲.

(۵) كشف الباری: ۱۰۹/۳.

(۶) إرشاد الساری: ۵۱/۲.

(۷) عمدة القاری: ۱۸۱/۳، إرشاد الساری: ۵۱/۲.

(۸) عمدة القاری: ۱۸۱/۳، إرشاد الساری: ۵۱/۲.

(۹) إرشاد الساری: ۵۱/۲.

دلته سوال دا پیدا کیږي چه هغه خو مونځ کړي وو، البته رکوع او سجده نهي په کاملې طريقې سره نه وه کړې، بيا حضرت حذيفه رضي الله عنه د هغه د مکمل مونځ نفی ولي او کړه؟ نو ددې جواب دادې چه دلته چونکه جزء مفقود وو نو دهغې په نه کيدو سره لکه چه هم کل مفقود شو. چنانچه د رکوع نه پوره کيدل د رکوع نه کيدو لره مستلزم دي او د رکوع نه کيدل د مونځ نه کيدو لره مستلزم دي. هم دغه شان د سجدو حکم هم دي. (۱)

وَأَحْسِبُهُ قَالَ: «لَوْ مَتَّ مَتَّ عَلَى فِرْسِنَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»: وَأَحْسِبُهُ كُنِيَ دَ أَحْسِبُ فاعل ابوالل دي. او د هـ ضمير مرجع حضرت حذيفه رضي الله عنه دي. (۲)

لَوْ مَتَّ دادَ مخاطب صيفه ده. د ميم په ضمې سره د ماك يوك د باب نه دي. دا د ميم په كسري سره هم لوستلې شوې دي په دي صورت كنيې به د ماك يوك نه وي. (۳)

“على فرسنة” كنيې د سنة نه مراد طريقه ده كوم چه فرض او نفل دواړو ته شامل ده. (۴)

علامه ابن بطلال رحمته الله فرمائي: ماصليت كنيې نفی د كمال ده او د پوره عمل د تماميت نفی نهي خكه او كړه چه هلته د تجويد قلت وو. دا خبره مشهوره ده چه كله يو عمل ناقص او كړي شي نو داسې ونيلې كيږي چه تا خودا عمل هډو كړې نه دي. مراد دغه خائي كنيې د كمال نفی وي چه تا په پوره اهتمام او كامل طريقه دا عمل اونه كړو. چنانچه د صحابي رسول حضرت حذيفه رضي الله عنه دا قول “على فرسنة” په دي خبره باندي دلالت كوي چه طمانينت په مونځ كنيې مسنون دي. (۵)

علامه عيني رحمته الله فرمائي چه د ابن بطلال رحمته الله مذكوره تاويل د هغه كسانو د پاره خو صحيح دي چه په ركوع او سجدو كنيې د طمانينت مسنون كيدو قائل دي. د دوي نه علاوه د امام ابويوسف رحمته الله او امام شافعي رحمته الله په نيز خو طمانينت فرض دي نه چه مسنون، ددي تفصيلي د وضاحت وړاندي راروان دي. (۶)

يو بل روايت كوم چه د صحيح بخاري كتاب الاذان كنيې راخي په هغې كنيې دا الفاظ دي «مَتَّ عَلَى فِرْسِنَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» (۷)

(۱) عمدة القارى: ۱۸۱/۳، إرشاد السارى: ۵۱/۲.

(۲) عمدة القارى: ۱۸۱/۳، إرشاد السارى: ۵۱/۲ الكوثر الجارى: ۷۵/۲.

(۳) عمدة القارى: ۱۸۱/۳، إرشاد السارى: ۵۱/۲.

(۴) عمدة القارى: ۱۸۱/۳، إرشاد السارى: ۵۱/۲ الكوثر الجارى: ۷۵/۲.

(۵) شرح ابن بطلال: ۵۴/۶.

(۶) عمدة القارى: ۱۸۱/۴.

(۷) حدثنا حفص بن عمر، قال: حدثنا شعبة وعن سليمان، قال: سمعت زيد بن وهب، قال: رأى حذيفة رجلا لا يتم الركوع والسجود، قال: ما صليت ولومت مت على غير الفطرة التي فطراه محمدًا صلى الله عليه وسلم عليها. (صحيح البخارى، كتاب الصلاة، أبواب الأذان، باب: إذا لم يتم الركوع، رقم الحديث: ۸۰۸).

دا روایت دلالت کوی چه حضرت حدیفة رضی اللہ عنہ په دغه ارکانو کښې د طمانینت د وجوب قائل وو او هم په دې باندې اکثر ائمه دی (۱)

د فطرت نه څه مواد دي؟ د دې روایت مطابق تشریح کولو سره علامه عثمانی فرمائی فطرت ئی د سنت په معنی کښې اخستې دي او که چرې د فطرت لغوی معنی مراد واخستې شی نو هغه هم ممکن ده. د فطرت معنی ده چه په کومو خصلتونو باندې انسان پیدا شوې وی کوم ته چه جلی خصلت وئیلی شی. هر سرې دې خپل وجدان طرف ته اوگوری که چرې هغه د یو بادشاه یا حاکم دربار کښې حاضر وی نو د هغه ځائی تعظیمی آداب به څنگه په ځانې راوړی؟ سکون، تسلئ، سنجیدگئ او متانت سره یا هسې په منډو تررو لکه چه څوک د هغه په سر باندې خپلئ نیولې ولاړ دي؟ (بنکاره خبره ده چه په اولنی صورت کښې به وی لهذا په مانځه کښې دننه کوم چه په اصل کښې د احکم الحاکمین په دربار کښې د حاضرئ کولو نه عبارت دي. تادی کونکې په جلی خصلت باندې قائم نه دي) (۲)

په مانځه کښې د تعدیل ارکان حکم: د دې حدیث شریف نه د تعدیل ارکان مسئله هم راوځی د صحیح قول مطابق رکوع، سجده، قومه او جلسه په تسلئ سره په ښه شان سره ادا کول واجب دي. تعدیل د ارکان، د اندامونو داسې سکون ته وائی چه د مونځ گزار ټول جوړونه کم نه کم د یو ځل تسبیح (سبحان الله) په اندازه باندې او دریرې یعنی خپل حرکت ختم کړی او په سکون کښې راشی. (۳)

د طرفینو په نیز رکوع او سجدو کښې اطمینان او قرار واجب دي او د امام ابو یوسف رضی اللہ عنہ په نیز فرض دي. هم د دې قائل امام شافعی رضی اللہ عنہ هم دي. تردې چه که یو مونځ گزار اعتدال پریردی نو د طرفینو په نیز به ئی مونځ اوشی البته واجب الاعداده به وی. او د امام ابو یوسف رضی اللہ عنہ او امام شافعی رضی اللہ عنہ په نیز هډو مونځ ئی نه کیږی. (۴)

د علامه انور شاه کشمیری رضی اللہ عنہ راتې: علامه محمد انور شاه صاحب کشمیری رضی اللہ عنہ فرمائی په څومره اندازه سره چه تاکید د مونځ د ارکانو تعدیل دی بل د یو څه څیز نشته. تقریباً په دې کښې ۵۰ احادیث راغلی دی او دې ته ئی فطرة نبی وئیلی دي کوم چه د اهمیت د اظهار دپاره کافی دي.

تعدیل ارکان دادې چه بدن خپل طبیعی شکل ته اورسی او حرکت انتقال مبدل به سکون شی. حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ لیکلی دی چه مطلوبه طمانینت په مونځ کښې دا دي چه حرکت دي لارشی څنگه تفسیر چه د ابی حمید رضی اللہ عنہ په حدیث کښې راځی. «باب: اطمینة حین یرفع رأسه من الركوع» کښې ابو حمید رضی اللہ عنہ وئیلی دی چه حضور پاک صلی اللہ علیہ وسلم به خپل سر مبارک اوچتولو او

(۱) الكوثر الجاری: ۷۵/۲.

(۲) فضل الباری، کتاب الصلاة، کتاب الاذان، باب: إذا لم يتم الركوع: ۶۶۱/۳.

(۳) عمدة الفقه، کتاب الصلاة، فصل دوم: واجبات نماز: ۹۹/۲.

(۴) بدائع الصنائع، کتاب الصلاة، باب: صفة الصلاة، الواجبات: ۱۵۷/۲.

برابر به شو، تردی چه هر یو اندام به په خپل ځانی قرار نیولو<sup>(۱)</sup>  
 د علامه عثمانی رحمته الله علیه راتې: علامه عثمانی رحمته الله علیه په خپل تقریر بخاری<sup>(۲)</sup> کښې فرمائیلی دی چه  
 امام طحاوی رحمته الله علیه په دې مسئله کښې زموږ د ائمه ثلاثه رحمهم الله مسلک دا نقل کړې چه د  
 هغوی ټولو په نیز تعدیل د ارکان فرض دې، د طرفینو خلاف نی بیان نه کړو<sup>(۳)</sup>  
 زموږ بعضی فقهاؤ هم دا اختیار کړی دی چه په دې مسئله کښې زموږ ائمه ثلاثه په  
 فرضیت متفق دی او (امام ابویوسف رحمته الله علیه په شان) طرفین هم د جمهورو سره دی. د علامه  
 عینی رحمته الله علیه میلان هم دې طرف ته معلومیری<sup>(۴)</sup>  
 چنانچه هغوی د امام طحاوی رحمته الله علیه نقل پیش کولو سره دا شعر اولیکلو:

إذا قالت حرام فصدقوها فإن القول ما قالت جذام

مگر عام توگه باندي فقهاء په دې مسئله کښې د طرفینو رحمهم الله خلاف نقل کوی. علامه  
 عثمانی رحمته الله علیه نور فرمائی دلته په یوه کوتاهې باندي خبردارې کوم، هغه دا چه اکثر حنفی  
 خلق عملاً د تعدیل ارکان بالکل اهتمام نه کوی حالانکه د امام ابوحنیفه رحمته الله علیه په نیز فرض نه  
 سهی واجب خو ضرور دی. او د امام طحاوی رحمته الله علیه د نقل په وجه خو ورته فرض وئیل پکار  
 دی.

یو حنفی عالم (علامه محی الدین محمد پیر علی رومی معروف به برکلی رحمته الله علیه، متوفی:  
 ۹۸۱هـ) د دې مسئلې متعلق یوه رساله په نوم د معدل الصلاة لیکلې ده. په هغې کښې دوی  
 شمیر کړې دې چه د تعدیل ارکان پرواه نه کولو باندي ۳۰ آفتونه او ۲۵۰ نه زیات مکروهات  
 متفرع کیږی.

اوس پاتې شوه مسئله د تعدیل ارکان په کوم کښې چه اختلاف کیږی. د دې متعلق زما په  
 زړه کښې دا خیال تیریری چه کله کله د یو څیز مختلف او متفاوت مرتبې وی. بیا د نظر  
 کونکو نظر چه په کومه مرتبه باندي وی هغه هم د هغې متعلق حکم لگوی. په واقع کښې څه  
 حقیقی اختلاف نه وی صرف لفظی شان جگړه وی.  
 دلته هم دا کیفیت معلومیری په طمانینت او تعدیل کښې مختلف مرتبې دی. د رکوع لغوی

(۱) انوار الباری، کتاب الصلاة، باب: إذا لم يتم الركوع: ۱۶/۴۵۴.

(۲) فضل الباری، کتاب الصلاة، کتاب الأذان، باب: أمر الذي لا يتم ركوعه بالإعادة: ۳/۶۶۳.

(۳) وعبارة الطحاوی..... وخالفهم في ذلك آخرون فقالوا: مقدار الركوع أن يركع حتى يستوي راکعاً. ومقدار  
 السجود أن يسجد حتى يطمئن ساجداً، فهذا مقدار الركوع والسجود الذي لا ين منه..... وهذا قول أبي حنيفة  
 وأبي يوسف ومحمد رحمهم الله تعالى. (شرح معاني الآثار. كتاب الصلاة باب: مقدار الركوع والسجود الذي لا  
 يجزئ أقل منه: ۱/۲۳۲ دار عالم الكتب).

(۴) علامه عینی رحمته الله علیه په عمدة القاری کښې په دې مقام باندي یعنی کتاب الاذان کښې هم اختلاف نقل کړې دې د امام  
 طحاوی نقل نی نه دې پیش کړې البته یو بل ځانی کښې (باب: وجوب القراءة للإمام والمأمون ۶/۹۵) کښې په دې  
 مسئله باندي کلام کولو سره فرمائی: (أما الطحاوی الذي هو العمدة في بيان اختلاف العلماء في الفقه، فإنه لم ينصب  
 الخلاف بين أصحابنا الثلاثة على هذا الوجه، بياني ورائدي مذكوره شعر هم نقل کړې دې.



معنی "انحناء" اود سجود معنی "وضع الجبهة على الأرض" ده. دکومی یوه درجه خودا ده چه بس لغه مفهوم انحناء او مفهوم وضع الجبهة صادق راشی. او یوه دا ده چه په دغه انحناء او وضع الجبهة باندې قرار او مکث یعنی په دغه حالت باندې لږ شان ایسار شی. بیا په دغه مکث او قرار کښې هم مختلف مراتب دی. یو دا چه فی الجملة ادنی مکث وی په کوم سره چه دا رکوع او سجود په غرض د تعظیم او تعبد او کنترولې شی صرف لویې توقې اود خدا په شان نه وی.

قرآن پاک چه ﴿وَارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا﴾ سره د کومی رکوع او سجود حکم ورکړې دې هغه صرف لغوی انحناء او وضع الجبهة نه ده، لکه څنگه چه ظاهره بلکه د الله تعالی د طرف نه هغه انحناء او وضع الجبهة مطلوب ده چه په طریقه د تعظیم او تعبد وی. کما تبه علیه الشیم ولی الله الدهلوی رحمته نو فی الجملة مکث او قرار کوم سره چه د تعبد اود تعظیم استشعار او تحقق وی او د لویو توقو د صورت یا د مسخرو نه جدا شی، نو دومره مکث او قرار خو فرض کیدل پکار دی لکه څنگه چه جمهور وائی ځکه چه که بالکل مکث نه وی بلکه صرف تیتیدل او پاسیدل وی کوم ته چه په اردو کښې "الک بیک" وائی نو په دې کښې تعظیم او اجلال چرته دې؟ دا خو یو قسم د لویو توقو اود مسخرو صورت جوړیږی.

باقی دامکث کم نه کم څومره کیدل پکار دی؟ ددې تحدید مشکل دې. بیا اگر چه مونږ ددې پوره تحدید اونه کړې شو خوبیا به هم دامثل وی چه ددې یوه مرتبه داسې ضرور ده کومه چه فرض کیدل پکار دی. او یوه درجه ددې نه څه د زیات مکث ده هغه به فرض نه وی. نو زما وینا داده چه د تعدیل او طمانینت مرتبې مختلف دی. هیڅ لړې نه ده چه د مجتهدینو انظار چونکه په مختلف مرتبو باندې پریوتې وی وجه دا اختلاف پیدا شوی دې.

بیا ددې متعلق دا خیز هم د غور قابل دې چه د طمانینت او تعدیل په ترک کولو باندې سخت وعید راغلې دې. او په قرآن کریم کښې چه کوم کوم ځائی د مونځ د فرضیت بیان دې هلته عموماً ﴿وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ﴾ لفظ راغلې دې. لفظ "صلوا" نه دې راغلې. اود اقامت صلاة معنی داده چه ددې د حقوقو او شروطو سره ادا کړې شی صرف سرسری پاسیدو کیناستو ته اقامت صلاة نه شی وئیلې. د مونځ د فرضیت د بیان په موقع په کثرت سره ﴿أَقِمُوا الصَّلَاةَ﴾ راغلې دې. البته په موقع د ذم او تقيیح کښې "مصلن" په لفظ سره تعبیر کړې شوی دې لکه چه ﴿قَوْلٌ لِلْمُصَلِّينَ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ﴾ (الماعون: ۴، ۵)، او لکه ﴿قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ﴾ (المدثر: ۲۲)، دلته شی "ویل للمصلين الصلاة" نه دې فرمائیلی.

اود "صلوا" او "اقموا الصلاة" په مینځ کښې دا فرق په پوره طریقی سره د صلاة الخوف د آیت نه واضیح کیږی. چنانچه الله تعالی فرمائی: ﴿وَأَذَانُكَ لَهُمْ فَانْتَهُمُ الصَّلَاةَ﴾ (النساء: ۱۰۲)، چونکه حضور پاک ته په هر حال کښې طمانینت حاصل وو یو وخت به هم په مونځ کښې

خشوع او حضور د زره او طمانینت بالکلیه مفقود نه وو. په دې وجه د ویرې د حالت مونخ  
 نی هم د حضور پاک په حق په کښې "اقامت الصلاة" سره تعبیر کړو. لیکن نور خلق که هغه په  
 هره درجه کښې وی د رسول الله ﷺ مرتبې ته نه شی رسیدلې. او د دښمن د مقابلي د وخت  
 خارجي تکلیفونه او پریشانی هغوی داسې گډوډ کولې شی چه د زره طمانینت ورته نه شی  
 حاصلیدې. په دې وجه نی د هغوی په حق کښې "فلیصلوا" او ویلې. (چنانچه ارشاد دې  
 ﴿وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ﴾ النساء: ۱۰۲) "فلیقیموا الصلاة" نی اونه فرمائیلو یعنی  
 که چرې ته طمانینت معتد بها حاصل نه کړې شی او په مامور بها اقامت صلاة باندي پوره  
 قابو حاصله نه کړې شی نو چه څنگه هم ممکن وی هغه وخت مونخ ادا کړه. اوس چونکه د  
 طمانینت د نه حاصلیدلو د وجې په اقامت صلاة کښې نقصان راغلو نو لکه چه دا هم  
 اضطراری وو په دې وجه د دې د تلافی د پاره وړاندې فرمائی: ﴿فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَادْكُرُوا اللَّهَ﴾  
 (النساء: ۱۰۳) ځکه چه په ذکر الله سره طمانینت قلب حاصلیږي. فرمائی: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ  
 قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ﴾ (الرعد: ۲۸) دې نه پس چه کله دا د ویرې حالت ختم  
 شی نو هغه وخت چونکه د اقامت صلاة د پاره طمانینت ضروری دې مونخ څنگه چه د دې حق  
 دې هغه شان ادا کول پکار دی. په دې وجه وړاندې فرمائی: ﴿فَإِذَا أَطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ﴾  
 (النساء: ۱۰۳). اوس چونکه د ټولو حقوقو خیال ساتل ضروری او مطلوب دی څنگه نی  
 "فصلوا" اونه ویل، بلکه ﴿فَأَقِمْ وَ الصَّلَاةَ﴾ نی او فرمائیل.

الغرض د "اقیموا الصلاة" تقاضا دا ده چه مونخ په طمانینت سره ادا شی، لهذا د طمانینت او  
 تعدیل ارکان ښه خیال ساتل پکار دی. (۱)

د ترجمه الباب سره مناسبت: ترجمه الباب وو "إِذَا لَمْ يَتِمَّ السُّجُودُ" او هم دغه څیز پوره توگه  
 باندي په حدیث کښې موجود دې. (۲)  
 د حدیث شریف نه مستفاد امور: د پورته ذکر شوی حدیث شریف نه ډیر امور مستفاد کیږي  
 مثلاً:

- ① په مونخ کښې تعدیل د ارکانو واجب دې.
- ② د سنت په اهمیت باندي متعینه ژوند کښې ښکاره کیږي.
- ③ د ښه خاتمي د حاصلولو د پاره دنیاوی ژوندون د سنت مطابق برابرول پکار دی.
- ④ د نورو سره د خیر خواهی جذبې ساتل هم معلومیږي چه یو صحابی رسول په کوم فکر  
 مندی سره بل کس خبردار کړو وغیره وغیره. (۳)

(۱) فضل الباری، کتاب الصلاة، کتاب الأذان، باب: أمر الذی لا يتم ركوعه بالإعادة: ۳/۶۶۸-۶۶۵

(۲) عمدة القاری: ۴/۱۸۱.

(۳) عمدة القاری: ۳/۱۸۱.

## ٢٧ - بَاب: يُّدِي ضَبْعِيهِ وَيَجَافِي فِي السُّجُودِ

دا باب په سجده كښې د دواړو متو كولاؤ ساتلو اود

(دواړو اړخونونه) د جدا ساتلو په بيان كښې دي.

د ترجمه الباب مقصد د سابقه باب د ترجمه الباب د مقصد لاندې چه كوم بحث تير شوي دي

هم هغه بحث د دې باب د ترجمه الباب مقصد هم دي، هلته ئي اوگورئ:

د ترجمه الباب د ماقبل سره مناسبت: په وړاندې باب كښې د اتمام السجود بيان وو چه د

سجدو په پوره كولو كښې څنگه چه دا ضروري دي چه تمكنا وجه على الأرض كيدل پكار دي.

هم دغه شان د سجدو په پوره كولو كښې دا هم ضروري دي چه سرې دې خپلې متې د خپلو

ترخونو او تشو نه جدا اوساتي. لكه چه دا باب د مخكښي باب تتمه ده.

علامه عيني رحمته الله عليه فرمائي چه په دې ځاځي كښې كله صحيح بخاري كښې ذكر شوي باب كه

صحيح او منلې شي نو په دواړو ابوابو كښې به مناسبت داسې شي چه ماقبل باب كښې په

سجدو كښې د طمانينت حكم وو او په دې باب كښې د دواړه متو اود دواړو اړخونو د

يوځاځي حكم دې اودا ټولې خبرې د احكام سجود سره متعلق دي. (١)

قوله: "يُدِي" د باب افعال نه د "إهداء" مصدر فعل مضارع واحد مذكر غائب صيغه ده. مطلب

د دې "ښكاره كول" دي. "ضبعيه" دا د ضبع تشبيه ده دې نه مراد مت دي. (٢) د پورته طرف نه د

ترخ نه واخله تر نيم مت پورې حصې ته ضبع وئيلي شي. (٣) "يجال" دا د باب مفاعله نه د

مضارع معروف واحد مذكر صيغه ده. د دې معني ده لرې كول، جدا ساتل، مطلب به ئي دا

جوړيږي چه كله سجدې ته لارشي نو خپل لاسونه دې ښه كولاؤ كړي اود اړخونونه دې جدا

اوساتي. (٤) د "يجال" مفعول به محذوف وي او هغه دا دي "جنبه" جنب اړخ يعنى تشي ته وائي. (٥)

حديث باب [حديث نمبر ٢٨٣]

٢٩٠ - أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مَفْرَعٍ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ ابْنِ هُرْمُزٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكِ ابْنِ جُبَيْنَةَ (١) أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ إِذَا صَلَّى فَرَجَّ بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى

(١) عمدة القاري: ١٨٢/٤.

(٢) معجم الصحاح للجوهري، ص: ٤١٣، سراج القاري: ٤٢١/٢.

(٣) المعجم الوسيط، ص: ٥٢٣، سراج القاري: ٣٢١/٢.

(٤) المعجم الصحاح للجوهري، ص: ١٢٨.

(٥) عمدة القاري: ١٨٢/٤.

(أخرجه البخاري أيضا في صفة الصلاة، باب: يدي ضبعيه ويجافي السجود، رقم الحديث: ٨٠٧ وفي كتاب الأنبياء، باب: صفة النبي صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث: ٣٥٦٤، ومسلم في صحيحه، في الصلاة، باب: ما يجمع صفة الصلاة، وما يفتح به ويختم به، رقم الحديث: ٤٩٥، والنسائي في سننه، في الافتتاح، باب: صفة السجود، رقم الحديث: ١١٠٦، وفي جامع الأصول، حرف الصاد، كتاب الصلاة، القسم الأول: في الفرائض، الباب الأول: في الصلاة، الفصل الخامس: في كيفية الصلاة، الفرع الرابع: في الركوع والسجود، النوع الأول: هيئة الركوع والسجود، رقم الحديث: ٣٧٤/٥، ٣٥٠٧.

## بَدْوِيَّاتُ اِبْنِ اَبِيهِ.

توجه هديت حضرت عبد الله بن مالك ابن بحينه رضي الله عنه فرمائي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله چه به کله مونخ کولو نوډ خپلو دوارو متو په مينخ کښې به ئی دومره فاصله ساتله چه د حضور پاک د ترخونو مبارکو سپینوالي به ښکاریدلو.

تواجم رجال: د مذکوره حديث شريف رجال تول پنځه دي:

① يحيى بن بكير رضي الله عنه: دا ابو ذكريا يحيى بن عبد الله بن بكير القرشي المخزومي رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الباری، كتاب بدء الوحي د دريم حديث لاندې تير شوي دي.<sup>(۱)</sup>

② بكر بن مضر رضي الله عنه: د دوی پوره نوم بكر بن مضر بن محمد بن حكيم بن سلمان المصري رضي الله عنه دي. د دوی د كښت باره كښې دوه اقوال دي، ابو محمد او ابو عبد الملك. دي د ربيعه بن شرحبيل آزاد كړې شوي غلام وو.

د دوی په استاذانو كښې حضرت جعفر بن ربيعه بن شرحبيل بن حسنه، ابراهيم بن ابي عبله، حمزه النصيبي، خالد بن يزيد مصري، ربيعه بن سيف، سعيد بن بشير، صخر بن عبد الله بن هرمله مدلجي وغيره رحمهم الله او ديو لوثي جماعت نوم ملاويږي.

او د دوی نه فيضياب كيدونكو كښې يحيى بن عبد الله بكير، خلف ابن عبد الله، عبد الرحمن بن قاسم، عثمان بن صالح سهمي، عمرو بن خالد حراني، قتيبه بن سعيد ثقفی وغيره رحمهم الله شامل دي.

د دوی د پيدائش باره كښې يو قول د يوسل دوه هجري او دويم قول د سلمې هجري دي. امام احمد بن حنبل رضي الله عنه د دوی باره كښې فرمائي: ثقة ليس به بأس. يو بل خائي كښې فرمائيلى

دي: انه كان رجلا صالحا. ابن معين، نسائي او ابو حاتم وغيره رحمهم الله د دوی د توثيق اقوال ذكر كړي دي. د دوی د وفات باره كښې د ۱۷۳ او ۱۷۴ اقوال ملاويږي. په نهم د ذی الحجه او د نهې په ورځ وفات شوي دي. په ائمه سته كښې د ابن ماجه نه علاوه تولو د دوی روايات په خپلو كتابونو كښې نقل كړي دي. رحمه الله رحمة واسعه<sup>(۲)</sup>

③ جعفر رضي الله عنه: دا ابو بشر جعفر بن اياس يشكري واسطی بصری رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الباری، كتاب العلم، باب: من رفعه صوته بالعلم، لاندې تير شوي دي.<sup>(۳)</sup>

④ ابن هريرة رضي الله عنه: دا ابو داود عبد الرحمن بن هريرة مدني قرشي رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الباری، كتاب الايمان، باب: حب الرسول من الايمان، لاندې تير شوي دي.<sup>(۴)</sup>

(۱) كشف الباری: ۳۲۳/۱.

(۲) التاريخ الكبير للبخاری: ۹۵/۲، الجرح والتعديل: ۵۹۲/۱، الثقات لابن حبان: ۱۰۴/۶، الطبقات الكبرى لابن

سعد: ۵۱۷/۷، تهذيب الكمال: ۲۲۹/۴-۲۲۷.

(۳) كشف الباری: ۷۱/۳.

(۴) كشف الباری: ۱۱/۲.

⑤ عبد الله بن مالك ابن جهمنه رضی اللہ عنہ: دا صحابی رسول حضرت عبد الله بن مالك بن القشيب رضی اللہ عنہ دے دوی نوم جناب بن نضله بن عبد الله بن رافع بن محصن دے دے دوی کنیت ابو محمد دے دے بنوالمطلب حلیف وو۔ دے دوی شهرت پہ ابن بحینه سره شوے دے دے بحینه دے دوی دے مور نوم وو کومه چہ دے الأرت لور وه۔

واضحہ دے دے وی چہ بحینه دے عبد الله مور دہ دے مالک نہ دہ۔ ہم پہ دے دے وجہ ابن بحینه پہ الف سره به لیکلے شی خکہ چہ دے مالک صفت نہ دے بلکہ دے عبد الله صفت دے دے دے محمد بن سعد رضی اللہ عنہ بیان دے دے چہ دے دوی پلار ابو مالک بن القشيب دے مطلب بن عبد مناف حلیف وو۔ هغوی بحینه بنت حارث بن مطلب سره واده اوکرو، دے دوی نہ عبد الله پیدا شو دے چا کنیت چہ ابو محمد وو۔ هغه اسلام قبول کړو او دے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم صحبت ئی اختیار کړو۔ دے دے دیر فاضل او صائم الدهر وو۔ دے مدینے نہ دیرش میله فاصله باندي بطن ریم کنسے اوسیدلو۔ دے هغوی وفات پہ مدینہ کنسے اوشو۔ هغه وخت پہ مدینہ کنسے دے مروان بن حکم حکومت وو، او دے ولایت او حکومت موده ئی دے ۵۲ هجری نہ واخله تر دے قعدہ ۵۸ هجری پورے وو۔

دے دے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نہ روایت کوی او دے نہ روایت کونکو کنسے عبد الرحمن بن هرمز مز الأعرج، حفص بن عاصم بن عمر بن خطاب، ابو جعفر محمد بن علی بن حسین، محمد بن یحیی بن حبان او پخپله دے دے صحابی خوئی علی بن عبد الله بن بحینه رحمهم الله شامل دے۔ امام بخاری رحمہم اللہ او امام مسلم رحمہم اللہ دے دوی دے روایت تخریج کړے دے۔ سنن ابی داؤد او سنن ترمذی کنسے دے دوی روایت نشته دے دے (۱)

شرح حدیث: كَانَ إِذَا صَلَّى لَمْ يَزَلْ يَدِينُ يَدَيْهِ حَتَّى يَسْتَوِيَ رِجْلَيْهِ»

ترجمہ: کله چہ به حضور پاک مونخ فرمائیلو نو (سجدہ کنسے) به ئی دے خپلو دواړو متو په مینخ کنسے دو مره فاصله ساتله چہ دے حضور پاک دے ترخ مبارک سپینوالی به بنکاریدلو۔

ترجمہ: دے باب تفعیل نہ دے ماضی معروف واحد مذکر غائب صیغه دہ۔ دا دے سجده کولو دے حالت بیان دے دے چہ دے رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم متی به دے حضور پاک دے اړخو یعنی تشونه جدا وې۔ په داسې کولو کنسے دا حکمت کیدې شی چہ په دے کنسے دے تواضع او عاجزئی یو بنکلی نمونه وه۔ او داسې کولو کنسے تندي په زمکه باندي په پوره قوت سره او په سختی سره کیخودل ممکن وی کوم چہ په هغې سره سجدہ په کامل طریقہ ادا کیرې۔ او داسې کولو کنسے مونخ گزار دے سستو بند یگانو دے مشابهت نہ په پوره شان سره اوخی۔

په دینیدپه دا لفظ په خپل حقیقت باندي محمول دے یعنی دے حضور پاک په سجدہ کنسے کولاؤ والی اختیارول به دے خپلی مخې طرف ته وو (۱)

دے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دے سجده شکل: دے حضور پاک دے سجده دے هیئت باره کنسے په احادیثو

(۱) تهذيب الكمال: ۵۰۸/۱۵، تهذيب التهذيب: ۳۸۲/۵-۳۸۱، أسد الغابة: ۳۵۰/۳، الطبقات الكبرى: ۳۴۲/۴، الجرح والتعديل: ۱۸۴/۵، التاريخ الكبير للبخاري: ۱۰/۵، الثقات لابن حبان: ۲۱۶/۳.

(۱) عمدة القاری: ۱۸۳/۴.

مبارکو کنبی مختلف الفاظ راغلی دی چه تول هم په دې کیفیت باندي پوره وضاحت سره دلالت کوی. مثلاً صحیح مسلم کنبی دی: «إِذَا سَجَدَ يُجَاهِلُ سَجْدَهُ حَتَّى يُرَى وَضْعَ إِبْطِهِ»<sup>(۱)</sup> یعنی چه کله به حضورپاک سجدي ته تلو نو خپل مروندونه به نی د زمکې نه داسې اوچتول لکه چه مرغی خپلې وزرې اوچتوی. او د حضورپاک داسې سجدي کولو سره به د حضورپاک د ترخونو مبارکو سپینوالي ښکاریدو.

«يُجَاهِلُ» د باب تفعیل نه فعل مضارع معروف دې. د دې مطلب د مرغی د وزر اوچتولو په شان متې د زمکې نه اوچتول دی. «وضعه إبطيه» نه مراد د ترخونو سپینوالي دې.<sup>(۲)</sup> هم د صحیح مسلم په یو روایت کنبی دی: «كَانَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَجَدَ لَوْ شَاءَتْ بَهْمَةٌ أَنْ تَرْتَبِعَ يَدَيْهِ، لَمَرَّتْ»<sup>(۳)</sup>

یعنی چه کله به حضورپاک سجده کوله نو د هغوی د ترخونو د مینخ په مینخ کنبی که چرې د چیلن وړوکی بچی تیریدل غوښتل نو تیریدې شو (مطلب دا چه د حضورپاک بدن مبارک به د سجدي په حالت کنبی دومره کولاؤ وو).

قوله: «بَهْمَةٌ» د چیلن وړوکی بچی ته وائی که هغه مذکروى او که مؤنث وى.<sup>(۴)</sup>

هم د صحیح مسلم په یو بل روایت کنبی دی: «كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَجَدَ مَحْوَى بِيَدَيْهِ، يَعْنِي: جَنَحٌ، حَتَّى يُرَى وَضْعَ إِبْطِهِ مِنْ وِرَائِهِ»<sup>(۵)</sup>

یعنی نبی کریم ﷺ چه به کله سجده کوله نو د مرغی د وزر اوچتولو په شان خپلې متې اوچتولو سره به نی سجده کوله تردې چه که چا د حضورپاک د شا د طرف نه کتلې نو هغه ته به د حضورپاک د ترخونو مبارکو سپینوالي ښکاریدو.

(۱) حدثنا عمرو بن سواد، أخبرنا عبدالله بن وهب، أخبرنا عمرو بن العارث، والليث بن سعد. كلاهما عن جعفر بن ربيعة، بهذا الإسناد. وفي رواية عمرو بن العارث، كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا سجد يجنح في سجوده حتى يرى وضع إبطيه، وفي رواية الليث، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا سجد فرج يديه عن إبطيه حتى إنى لأرى بياض إبطيه. (صحیح مسلم، كتاب الصلاة، باب: ما يجمع صفة الصلاة، رقم الحديث: ۱۱۳۴).

(۲) عمدة القارى: ۱۸۳/۴.

(۳) حدثنا يحيى بن يحيى، وابن أبي عمير، جميعا عن سفيان، قال يحيى: أخبرنا، سفيان بن عيينة، عن عبيد الله بن عبدالله بن الأصم، عن عمه يزيد بن الأصم، عن ميمونة، قالت: كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا سجد لوشاءت بهمة أن ترتب بين يديه لمرت. (صحیح مسلم، كتاب الصلاة، باب: ما يجمع صفة الصلاة، رقم الحديث: ۱۱۳۵).

(۴) عمدة القارى: ۱۸۳/۴.

(۵) حدثنا إسحاق بن إبراهيم الحنظلي، أخبرنا مروان بن معاوية الفزاري، قال: حدثنا عبيد الله بن عبدالله بن الأصم، عن يزيد بن الأصم، أنه أخبره عن ميمونة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا سجد حوى بيديه، يعنى: جنح، حتى يرى وضع إبطيه من ورائه. وإذا قعد اطمأن على فخذه اليسرى. (صحیح مسلم، كتاب الصلاة، باب: ما يجمع صفة الصلاة، رقم الحديث: ۱۱۳۵).

خَوِيَّ مطلب دادي چه خيله خيته مبارکه به نبي د زمکي نه لري ساتله او پورته به نبي ساتله او خيلې خنگلې به نبي د خپلو اړخونو يعنى تشو نه جدا ساتلې: (١)

المستدرک علي الصحيحين کښې دى: «عن ابن عباس، قال: أتيت النبي صلى الله عليه وسلم من خلفه فرأيت بياض إبطيه وهو ممسحٌ، وفرج يديه» (٢)

يعنى حضرت ابن عباس رضي الله عنه فرمائي چه زه به د نبي کریم صلى الله عليه وسلم شاته راتلم او کتل به مي نو د حضور پاک د ترخونو مبارکو سپينو الې به ښکاريدو او حضور پاک به خيلې متې د خپلو تشو نه لري ساتلې.

قوله: «ممسحٌ» هغه هيئت ته وائي چه يو سرې خيلې متې د خپلو تشو نه لري کړي (٣)

او په صحيح ابن زريمه کښې دى: «أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا سجد جالس حتى يُرى بياض إبطيه» (٤)

يعنى کله چه به نبي کریم صلى الله عليه وسلم سجده کوله نو په کولاؤ انداز سره به نبي سجده کوله تردي چه د حضور پاک د ترخونو مبارکو سپينو الې به ښکاريدلو.

او سنن ابى داؤد کښې دى: «ثم كبر وسجد ووضع كفيه على الأرض، ثم جالس بين مرفقيه حتى استقر كل شيء منه» (٥)

(١) عمدة القارى: ١٨٣/٤.

(٢) أخبرنا أبو بكر محمد بن المؤمل، ثنا الفضل بن محمد الشعراني، ثنا النفيلي، ثنا زهير، ثنا أبو إسحاق، عن التميمي الذي قد يحدث بالفسير، عن ابن عباس، قال: أتيت النبي صلى الله عليه وسلم من خلفه فرأيت بياض إبطيه وهو ممسحٌ، وفرج يديه. (المستدرک على الصحيحين، كتاب الصلاة، باب: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا سجد روى وضع إبطيه، رقم الحديث: ٨٢٩، ٢٢٨/١).

(٣) عمدة القارى: ١٨٣/٤.

(٤) نامحمد بن يحيى، ومحمد بن رافع، وعبدالرحمن بن بشر قالوا: حدثنا عبدالرزاق، أخبرنا معمر، عن منصور، عن سالم بن أبي الجعد، عن جابر بن عبدالله، أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا سجد جالس حتى يُرى بياض إبطيه. قال الأعظمي: إسناده صحيح. (صحيح ابن زريمة، كتاب الصلاة، باب: التجافى فى السجود، رقم الحديث: ٦٤٩، ٣٢٦/١).

(٥) حدثنا زهير بن حرب، حدثنا جرير، عن عطاء بن السائب، عن سالم البراد قال: أتينا عقبه بن عمرو الأنصاري بأبامسعود فقلنا له: حدثنا عن صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم فقام بين أيدينا فى المسجد، فكبر، فلما ركع وضع يديه على ركبتيه، وجعل أصابعه أسفل من ذلك، وجافى بين مرفقيه، حتى استقر كل شئ منه. ثم قال: سمع الله لمن حمده، فقام حتى استقر كل شئ منه، ثم كبر وسجد ووضع كفيه على الأرض، ثم جافى بين مرفقيه حتى استقر كل شئ منه، ثم رفع رأسه فجلس حتى استقر كل شئ منه، ففعل مثل ذلك أيضاً، ثم صلى أربع ركعات مثل هذه الركعة، فصلى صلاته، ثم قال: هكذا رأينا رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلى. (سنن أبى داؤد، كتاب الصلاة، باب: صلاة من لا يقيم صلته فى الركوع، رقم الحديث: ٨٦٢).

یعنی (په حالت د سجدي کنبې به) حضور پاک په خپلو دواړو څنگلو کنبې کولاؤ والی پیدا کولو تردې چه هر یو اندام به په سکون سره په قرار اونیولو.

د سجدي د مذکوره هیئت حکمتونه: امام بخاری رحمته الله علیه ددې ترجمه الباب لاندې چه کوم حدیث ذکر کړې دې دهغې نه د سجدي مذکوره هیئت استحباب معلومیږي. ددې هیئت د استحباب حکمتونه بیانولو سره حافظ ابن حجر رحمته الله علیه فرمائی:

① یو حکمت دادې چه په دې سره په مخ باندې بوج کميږي او پوزه او تندي په زمکه باندې کیخودو کنبې هیڅ تکلیف نه وی.

② دویم خیال دادې چه په دې هیئت کنبې تواضع ده سستی نشته دې.

③ دریمه خبره داده چه په دې هیئت کنبې د یو اندام په بل اندام باندې اعتماد نه پاتې کیږي بلکه هر یو اندام لکه چه په مستقل توگه باندې سجدي له ځی. دا حکمت د یو حدیث شریف نه ماخوډ دې چه حضور پاک فرمائیلی دی چه د ځناور په شان په زمکه باندې لاسونه مه خورونی، صرف د لاس په تلو باندې اعتماد مه کوئی، متې جدا اوساتی، کله چه ناسو داسې سجده کوئی نو لکه چه ستاسو هر یو اندام به سجدي ته لارشی.

حافظ صاحب رحمته الله علیه فرمائی د دې احادیثو ظاهر خودادې چه په سجده کنبې د کولاؤ والی دا هیئت واجب او گرځولې شی. مگر چونکه په ابوداؤد کنبې د حضرت ابوهریره رضی الله عنه روایت دې په کوم کنبې چه فرمائیلي شوی دی چه صحابه کرامو د سجدي د اوږدیدو د مشقت شکایت او کړو. نو حضور پاک او فرمائی: «استعینوا بالرکب» او ددې دا مطلب اخستی شوي دې چه که چرې په سجده کنبې تکلیف وی نو څنگلې په زنگونونو باندې کیخودل هم جائز دی مکروه نه دی. په دې وجه دا هیئت د واجب گرځولو په ځانی مستحب یا مسنون گرځولې شوي دې. (۱)

د علامه کشمیری رحمته الله علیه په حافظ صاحب رحمته الله علیه باندې ده: علامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چه حافظ صاحب رحمته الله علیه لیکلی دی چه د حدیث الباب نه متې جدا ساتلو سره د سجدي وجوب معلومیږي او حدیث ابی داؤد نه ددې استحباب فهم ته راځی. په کوم کنبې چه دی چه صحابه کرامو رضی الله عنهم د سجدي د اوږدوالی په صورت کنبې د سجدي د مشقت شکایت او کړو نو حضور پاک او فرمائیلي چه د زنگونونو نه امداد واخلي، یعنی په دې باندې څنگلې لگولو سره. حالانکه دا صورت ددې نه جدا دې او متې د سجدي په حالت کنبې په عام حالاتو کنبې د جدا ساتلو حکم ورکړې شوي دې اودا خاص صورت دې چه د سجدي د اوږدوالی به حالت کنبې ستوماتتیا لري کولو دپاره د زنگونونو نه امداد واخستی شی. دا لکه چه خاص صورت حالت د عذر دې.

امام ترمذی رحمته الله علیه د استعانت بالرکب حکم نه د سجدي نه د قیام د پاره د پاسیدو وخت مراد اخستی دې. او امام طحاوی رحمته الله علیه د قومي نه پس سجدي ته دتلو په وخت استعانت بالرکب

(۱) فتح الباری، کتاب الصلاة، باب: یدی ضعیفه ریجانی فی سجده، رقم الحدیث: ۸۰۷ / ۲ - ۲۸۱ - ۲۸۰.



مراد اخستی دې. غرض دا چه څلور صورتونه جدا جدا دی او امام بخاری رحمته الله علیه دلته د سجدې صحیح او مشروع او مسنون صورت د عام حالت د پاره بیان کړې دې (۱).  
د حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی چه د مذکوره حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت د کان إذا صلی به وجه دې. ځکه چه مذکوره حدیث شریف کښې به لفظ "صلى" نه "سجد" مراد اخستی شی نو دا به اطلاق الكل على الجزء د قبیل نه وی. مراب به داشی چه کوم وخت په سجده کښې حضور پاک خپل دواړه لاسونه کولاؤ ساتل نو د دې لا زمی نتیجه داده چه د حضور پاک متې د هغوی د اړخونو یعنی تشو نه جدا وی. او هم دغه د ترجمه الباب نه ثابتېږي (۲).

د حدیث شریف نه مستنبط فواید او احکام: د مذکوره حدیث شریف نه چه کوم امور مستنبط کېږي د هغې نه دلته څه ذکر کولې شی:

① په مونځ کښې سنت دادې چه د سجدې په حالت کښې د دواړو لاسونو په مینځ کښې کولاؤ والې وی، په متو او تشو کښې فاصله وی. دا طریقه د سرو د پاره مسنون ده د بنځو د پاره نه ده بلکه د هغوی په حق کښې خود سجدې په حالت کښې خپل بدن راغونډول او یوځائی ساتل دی. یعنی چه څومره ممکن وی هغوی دې هم دوامه زمکې پورې لگیدو سره سجده کوی. ځکه چه په بنځو کښې مطلوب او محمود ستر دې او هغه هم دغه شان حاصلیدې شی (۳).

د بنځو او سرو په مونځ کښې په ډیرو مقاماتو کښې فرق دې کوم چه د احادیث نبوی نه ثابت دی. او هغه به ان شاء الله په خپل مقام باندې په تفصیل سره راشی.

② په مونځ کښې د اطمینان او اعتدال د وجوب هم معلومات او شو (۴).

③ په مونځ کښې د سجدې مذکوره هیئت په اظهار د خضوع او د الله تعالی د پاره په بندگنې باندې هم دلالت کوی (۵).

تعلیق: وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ تَخَوُّهُ [۷۷۴، ۳۲۷۱]

د تعلیق ترجمه: او لیث رحمته الله علیه او نیل چه ماته جعفر بن ربیع رحمته الله علیه د دې په شان بیان او کړو. د تعلیق تخریج: دا تعلیق امام مسلم رحمته الله علیه صحیح مسلم کښې موصولاً نقل کړې دې وئى کورنۍ: «حدثنا عمرو بن سواد، أخبرنا عبد الله بن وهب، أخبرنا عمرو بن العارث، والليث بن سعد، كلاهما

(۱) انوار الباری. کتاب الصلاة. باب: بیدی ضعیبه ویجافی فی السجود. رقم الحدیث: ۸۰۷ ۴۷۳/۱۶.

(۲) عمدة القاری: ۱۸۲/۴. شرح الکرمانی: ۵۳/۴.

(۳) التوضیح لابن الملقن: ۳۹۹/۴. عمدة القاری: ۱۸۳/۴. الشرح المیسر: ۴۴۱/۱.

(۴) التوضیح لابن الملقن: ۳۹۹/۴.

(۵) الشرح المیسر: ۴۴۱/۱.

من جعفر بن ربیعہ» ددی سند مطابق د جعفر بن ربیعہ رضی اللہ عنہ نہ روایت کونکی د هغوی دوه شاگردان دی. یو عمرو بن سواد رضی اللہ عنہ او دویم اللیث بن سعد رضی اللہ عنہ. دوارو روایاتو کنسی لبر شان فرق دی وئی گورئی:

«ولی روایة عمرو بن الحارث: کان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا سجد يجتم في سجوداً، حتى يرى وضاح إبطيه. ولی روایة اللیث: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا سجد فرج يديه عن إبطيه حتى يرى إبطيه» (۱)

دتعلیق ورجال: دمذکوره تعلیق دوه رجال دی.

① اللیث رضی اللہ عنہ: دا امام ابو الحارث اللیث بن سعد بن عبد الرحمن فهمی رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب ہدہ الوسی دریم حدیث لاندی تیر شوی دی (۲).

② جعفر بن ربیعہ رضی اللہ عنہ: دا ابو شرحبیل جعفر بن ربیعہ بن شرحبیل بن حسنہ القرشی الکندی المصری الازدی الحسنی رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب التیمم، باب: التیمم فی الحضرة إذا لم يجد الماء، رقم الحدیث: ۳۳۷ لاندی تیر شوی دی (۳).

دتعلیق مقصد: علامہ کرمانی رضی اللہ عنہ فرمائی چه په دی تعلیق کنسی د راوی د ظرف نہ تحدیث دی یعنی لیث بن سعد رضی اللہ عنہ د حدیثی په صیغی سره روایت کری دی او په ماقبل حدیث کنسی عنعنہ ده یعنی هلته راوی د عن صیغہ استعمالولو سره روایت کری دی. یعنی صرف د سند فرق خودل مقصود دی (۴).

(۱) صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: ما یجمع صفة الصلاة، رقم الحدیث: ۱۱۳۴، تغلیق التعلیق: ۲/۲۲۰.  
 (۲) کشف الباری: ۱/۳۲۴، ددوی باره کنسی دیر بنه تفصیل او مفید کلام انوار الباری: ۱۷۷/۱۲-۱۷۴ کنسی او گورئی.  
 (۳) کشف الباری، کتاب التیمم، باب التیمم فی الحضرة إذا لم يجد الماء، رقم الحدیث: ۳۳۷، ص: ۱۶۰.  
 (۴) شرح الکرمانی: ۵۳/۴.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## ۱۰ - ابواب القبلة (۱)

## ۱ - باب: فَضْلِ اسْتِقْبَالِ الْقِبْلَةِ

دا باب (مونخ کنبی) قبلی ته د مخ کولو د فضیلت په بیان کنبی دې

فوله: "بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ" علامه رشید احمد گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ بسم الله سره د یو باب یا کتاب شروع هغه وخت کوی کوم وخت چه د سابقه باب او د موجوده باب په لیکلو کنبی خه موده او وقفه تیره شوې وی، چنانچه دلته هم دغه شان اوشو (۲)

په دې باندې شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی د بخاری شریف هندوستاننې نسخه او د علامه کرمانی رحمۃ اللہ علیہ شرح المسمى الكوكب الدراري کنبی باب فضل استقبال القبلة نه مخکنی بسم الله موجوده. خو اکثر په مصری نسخو کنبی، دارنگ فتح الباری، عمدة القاری او ارشاد الساری کنبی دې خانی کنبی بسم الله موجود نه ده. اونه دې دربارو شارحینو د دې متعلق خه کلام کړی دی. البته زمونږ مشائخ فرمائی چه کله امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ ته د خپل کتاب په لیکلو کنبی وقفه واقع کیږی نو د نوی مجلس شروع د بسم الله نه کوی (۳)

د مذکوره باب د مقابل باب سره مناسبت: په مقابل کنبی د سترعورت باره کنبی ابواب روان وو. کله چه امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د سترعورت د بیان نه فارغ شو نو د استقبال قبله بیان نی شروع کړو ځکه چه مونخ گذار اول د سترعورت محتاج وی. کله چه هغه خپل ستر پټ کړی نو بیا به د قبلی طرف ته د مخ کولو محتاج کیږی په دې وجه نی د دې بیان شروع کړو. لهذا د سابقه ابوابو سره مناسبت بنکاره دې (۴)

فوله: يَسْتَقْبِلُ بِأَطْرَافِ رِجْلَيْهِ قَالَ أَبُو مُهْمَبٍ: عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [۷۹۴]

ترجمه: (مونخ گذار دې په مانخه کنبی د سجدي په حالت کنبی د خپلو خپو گوتې هم د قبلی طرف ته اوساتی، دا ابو حمید رحمۃ اللہ علیہ د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نه نقل کړی دی. د دې جملې متعلق د شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ وائې: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ

(۱) کشف الباری کنبی چه د الدكتور مصطفی ديب البغا کومه نسخه د متن په توگه بنياد جوړ کړې شوې دې دهغه نسخې مطابق دې خانی کنبی د "ابواب القبلة" لوني عنوان دې. د کوم لاندې چه د باب نمبر ۱ نه سلسله شروع شوې ده. خو په نورو نسخو کنبی مثلاً: فتح الباری، عمدة القاری، ارشاد الساری وغيره مطابق د دې باب نمبر ۲۸ دې.

(۲) لامع الدراری: ۳۶۰/۲ الكنز المتواری: ۷۷/۴.

(۳) الكنز المتواری: ۷۷/۴، تقریر بخاری شریف: ۲۵۴/۲، سراج القاری: ۴۲۳/۲.

(۴) عمدة القاری: ۱۸۴/۴، سراج القاری: ۴۲۳/۲.

فرمانی چونکه د مانخه شرطونه بیانیدل په دې وجه نی اول د اودس ذکر او کړو ځکه چه دا د ټولو نه اهم دې اویانی د لباس او بیانی د قبلي طرف ته د مخ کولو ذکر او کړو. او شروع نی د دې د فضیلت نه او کړه. مگر دلته دوه اشکالات دی بلکه درې اشکال دی:

① اول دا چه اوس خو د قبلي طرف ته د مخ کولو د فضیلت ذکر شروع شو نو د هم د اوس نه څنگه چه استقبال اطراف رجليں الی القبلة ته اور سیدو؟ حالانکه د اطراف رجليں استقبال په سجده کنبې کیرې نو پکار دا وه چه اول نی د استقبال، قیام وغیره ذکر کړې وې او بیاخی وار په وار د استقبال اطراف رجليں ذکر کړې وې.

② دویم اشکال دادې چه صفحه ۱۱۲ باندې باب: يستقبل القبلة بأطراف رجليں راخی نو دا باب مکرر شو؟

③ اودریم اشکال دادې چه په ترجمه کنبې نی اطراف رجليں که چرته ذکر کړې دې نو د دې روایت نی نه دې ذکر کړې. په دې وجه که چرې قال أبو حميد عن النبي صلى الله عليه وسلم: أو نيل (کوم کنبې چه د اطراف رجليں د استقبال ذکر دې) نو هغه روایت خو تراوسه پورې رانغلو چه هم دهغې نه اشاره شوې وې، ولې چه دا روایت به په صفة الصلوة کنبې راخی؟

اوس جوابونه واوړنی: امام بخاری رحمته الله "يستقبل القبلة بأطراف رجليه القبلة" د ترجمې جزء جوړ نه کړو او "مُثَبَّتٌ" په فتحې د بآء نی اونه گرځولو بلکه "مُثَبَّتٌ" په کسرې سره نی او گرځولو او غرض نی په دې ذکر سره د استقبال تاکید او فضل د استقبال واضح کول دی چه استقبال په دې درجه مؤکد دې چه په حالت د سجده کنبې هم نه شی پریخودې او د خپو د گوتو پورې کولې شی.

او قال أبو حميد سره نی د هغه روایت طرف ته اشاره او کړه کوم چه وړاندې راخی. اوس هیڅ اشکال باقی پاتې نه شو ځکه چه د ټولو اشکالو مدار هم دا وو چه دانی د ترجمې جزء گرځولې وې. هم په دې وجه تکرار هم لازمیدو، د روایت هم ضرورت پینسیدو او څه بې ترتیبی هم معلومیدله. پاتې شو دا اشکال چه ترجمه مکرر ده نو د دې شارحینو دا جواب ورکړې دې چه دلته دا باب بالتبع دې او هلته په صفحه ۱۱۲ باندې بالقصد راخی (۱)

د تعلیق تخریج: د أبو حميد رحمته الله روایت کړې شوي حدیث په مکمل سند سره صفة الصلاة کنبې باب: سنة الجلوس للتحهد کنبې راخی. بیا دې نه پس امام بخاری رحمته الله دا تکرره ترجمه الباب جوړولو سره هم ذکر کړې ده. یعنی باب: يستقبل القبلة بأطراف رجليه (۲)

(۱) تقرير بخاری شريف: ۱۳۹/۲، الكنز المتواری: ۴۸/۴، سراج القاری: ۴۲۴/۲.

(۲) عمدة القاری: ۱۸۴/۴. حدثنا يحيى بن بكير، قال: حدثنا الليث، عن خالد، عن سعيد، عن محمد بن عمرو بن حلحلة، عن محمد بن عمرو بن عطاء، وحدثنا الليث، عن يزيد بن أبي حبيب، ويزيد بن محمد، عن محمد.....

## دتعليق رجال:

قوله: أبو حميد رضي الله عنه: دا صحابي رسول حضرت ابو حميد الساعدي الانصاري المدني رضي الله عنه دي. ددوي دنوم باره كنيه دير اقول دي. رومبي قول د عبد الرحمن دي. دويم قول د المنذر بن سعد ابن المنذر دي. دريم قول د المنذر بن سعد بن مالك دي. او خلورم قول المنذر بن سعد بن عمرو بن سعد بن المنذر بن سعد بن خالد بن ثعلبه ابن عمرو بن الخزرج دي. ددوي باره كنيه و ثبيلي شي چه دي د حضرت سهل بن سعد الانصاري رضي الله عنه تره دي. دي صرف د نبي كريم صلى الله عليه وسلم نه احاديث نقل كوي. او ددوي نه روايت كونكو كنيه اسحاق بن عبد الله بن عمر بن الحكم، جابر بن عبد الله، ددوي نمسي سعد بن المنذر بن ابي حميد الساعدي، عباس بن سهل بن سعد الساعدي، عيد الرحمن بن ابي سعيد الخدري وغيره رحمهم الله شامل دي.

د واقدی رضي الله عنه بيان دي چه ددوي وفات د حضرت امير معاويه رضي الله عنه د خلافت په آخري زمانه كنيه شوي دي او دويم قول دادې چه ددوي وفات د يزيد بن معاويه د شروع په زمانه كنيه شوي دي. (١)

دتعليق مقصد: حافظ ابن حجر رضي الله عنه ليكي چه د امام بخاري رضي الله عنه دا مذكوره تعليق په دي خاني كنيه د ذكر كولو مقصود دادې چه د مونخ گذار د پاره په خومره اندازه باندي هم خپل اندامونه د قبلي طرف ته كول ممكن وي هغه هومره دي او كړي. (٢) ليكن علامه عيني رضي الله عنه د حافظ صاحب رضي الله عنه دا خبره رد كولو سره فرمائي چه معامله داسې نه ده خكه چه ترجمه الباب د استقبال قبله د فضيلت خودلو د پاره قائم كړې شوي دي د مشروعييت د پاره نه دي. او د حافظ صاحب رضي الله عنه د خبرې نه د مشروعييت علم كيرې د فضيلت نه. (٣)

..... بن عمرو بن حنبله، عن محمد بن عمرو بن عطاء، أنه كان جالسا مع نفر من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فذكرنا صلاة النبي صلى الله عليه وسلم، فقال أبو حميد الساعدي: أنا كنت أحفظكم لصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم، رأيتُه إذا كبر جعل يديه حذاء منكبيه، وإذا ركع أمكن يديه من ركبتيه، ثم هصر ظهره، فإذا رفع رأسه استوى حتى يعود كل فقار مكانه، فإذا سجد وضع يديه غير مفترش ولا قابضهما، واستقبل بأطراف أصابع رجليه القبلة، فإذا جلس في الركعتين جلس على رجله اليسرى، ونصب اليمنى، وإذا جلس في الركعة الآخرة قدم رجله اليسرى، ونصب الأخرى وقعد على مقعدته. وسمع الليث يزيد بن أبي حبيب، ويزيد بن محمد بن حنبله، وابن حنبله من ابن عطاء، قال أبو صالح، عن الليث: كل فقار، وقال ابن المبارك: عن يحيى بن أيوب، قال: حدثني يزيد بن أبي حبيب، أن محمد بن عمرو حدثه، كل فقار. (صحيح البخاري، كتاب صفة الصلاة، باب: سنة الجلوس في التشهد، رقم الحديث: ٨٢٨) (وكتاب الأذان، باب: يستقبل القبلة بأطراف رجليه، رقم الحديث: ١٣١).

( تهذيب الكمال: ٢٦٥/٣٣-٢٦٤، تهذيب التهذيب: ٧٩-٨٠/١٢، الكاشف: ٣١١/٣، الإصابة في تمييز الصحابة: ٤٤/٤، الجرح والتعديل: ٢٤٢/٥، التاريخ الكبير للبخاري: ٣٥٤/٧، إسعاف المؤطا برجال المؤطا للسيوطي: ٣٦٦/٢، أسد الغابة في معرفة الصحابة: ٣٤٩/٢، ٣٩١/٤، ٧٨/٥، معرفة الصحابة لأبي نعيم، ص: ٢٥١٥، الإستهباب في معرفة الأصحاب، ص: ٤٤٩.

( فتح الباري: ٦٤٣/١.

( عمدة القاري: ١٨٥/٤.

د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عینی رحمته الله فرمائی کله چه د استقبال قبله فرضیت اود دې استقبال فضیلت او پیژندلې شی نو بیا به د تعلیق او ترجمه الباب مناسبت هم واضح شی. اودا دواړه امور بدیهی دی چه د مونخ گذار نه دخپل بدن اندامونه خومره د قبلې طرف ته کول ممکن وی هم هغه هومره قبلې ته کول فرض دی اودا عمل مسنون دې چه دخپو د گوتو پورې دې قبلې طرف ته کړی. چنانچه په تعلیق کښې هم د رسول الله صلی الله علیه و آله د سجدي په حالت کښې د خپو د گوتو د قبلې طرف ته کول ذکر دی او هم په دې کښې د ترجمه الباب سره مطابقت دی. (۱)

حدیث باب (رومی حدیث) [حدیث نمبر ۳۸۴/۳۸۵]

۳۸۴- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُهْدِيِّ قَالَ حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ مَيْمُونِ بْنِ سَيَّاهٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ (۱) قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا، وَاسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا، وَأَكَلَ ذَيْبَعَتَنَا، فَذَلِكَ الْمُسْلِمُ الَّذِي لَهُ ذِمَّةُ اللَّهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ، فَلَا تُخْفَرُوا اللَّهَ فِي ذِمَّتِهِ».

ترجمه حدیث: د حضرت انس بن مالک رضی الله عنه نه روایت دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد او فرمائیلو کوم سرې چه زمونږ د مونخ په شان مونخ او کړی او هم زمونږ په شان استقبال قبله او کړی. او زمونږ ذبح کړې شوی خاړوی او خوری نو هغه به داسې مسلمان شمیرلې شی د چا د پاره چه د الله اود هغه د رسول د طرف نه د امان وعده ده نو تاسو د الله تعالی په دغه وعده کښې خیانت مه کوئی.

تواجم رجال: په مذکوره حدیث شریف کښې پنځه رجال دی:

① عمرو بن عباس رضی الله عنه: دا عمرو بن العباس الباهلی البصری الاهوازی الرزی رضی الله عنه دې ددوی کنیت ابو عثمان دې. دې چه د کومو مشائخونه روایت کوی په هغوی کښې عبد الرحمن بن مهدی، ابراهیم بن صدقه، ابراهیم بن ناصح، سفیان بن عیینه، محمد بن جعفر المنذر، محمد بن مروان العجلی او یزید بن هارون وغیرهم رحمهم الله شامل دی.

اود دوی نه روایت کونکو کښې امام بخاری، حرب بن اسماعیل الکرمانی، عباس بن عبد العظیم العنبری، عبدان بن احمد الاهوازی، عیسی بن شاذان، محمد بن ابراهیم بن جناد، محمد بن عمرو ابن عباد بن جبله بن ابی رواد او ابوبکر بن سلیمان البزار وغیرهم رحمهم الله شامل دی.

ابن حبان رضی الله عنه دوی په الثقات کښې شمیر کړی دی. ددوی وفات ذوالحجه ۲۲۵ هجری کښې شوی دې.

(۱) عمدة القاری: ۱۸۴/۴.

(۱) أخرجه البخاری أيضا تحت رقم الحدیث: ۳۹۳-۳۹۲ والنسائی فی الأیمان، باب: صفة المسلم، رقم الحدیث: ۴۹۹۷ وفی جامع الأصول، حرف الهمزة، الكتاب الأول: فی الإیمان والإسلام، الباب الأول: فی ترمیقها، الفصل الأول: فی حقیقتها، رقم الحدیث: ۱۸، ۲۳۵/۱.

① **ابن مهدی** رضی اللہ عنہ: دا عبد الرحمن بن مهدی بن حسان بن عبد الرحمن العنبری الازدی رضی اللہ عنہ دی. علامہ مزنی رضی اللہ عنہ ددوی دمشائخو او شاگردانو یو ډیر اوږد فہرست ذکر کړې دی. ددوی نه یو څو دلته ذکر کولې شی:

مشائخو کښې منصور بن سعد، ابان بن یزید العطار، ابراهیم بن سعد الزهري، ابراهیم بن نافع المکی، اسرائیل بن یونس، الاسود بن شیبان، حماد بن سلمه، سلام بن ابی مطیع وغیره رحمہم اللہ شامل دی. او په شاگردانو کښې عمرو بن عباس الباہلی الرزی، عبد اللہ بن المسندی، علی بن المدینی، عمرو بن علی الفلاس، محمد بن المثنی، اسحاق بن راہویہ وغیره رحمہم اللہ شامل دی.

ددوی پیدائش په ۱۲۵ هجری کښې شوې دی. ابو عبد اللہ رضی اللہ عنہ وائی چه ما بصره کښې د یحیی بن سعید او عبد الرحمن غوندي بنده نه دي لیدلي او په دواړو کښې هم زیات فقیه عبد الرحمن وو. علی بن المدینی رضی اللہ عنہ په ډیر کړتې وئیل "عبد الرحمن اعلم الناس" علی بن احمد الازدی رضی اللہ عنہ د علی بن المدینی رضی اللہ عنہ نه روایت کوی چه یحیی بن سعید اعلم بالرجال وو او عبد الرحمن رضی اللہ عنہ اعلم بالحديث وو. او فرمائیل به تی چه د عبد الرحمن د علم بالحديث باره کښې به زما دا شبهه پیدا کیدله چه د هغوی علم جادوئی علم دی. ده به هره شپه نیم قرآن لوستلو او دوو شپو کښې به تی قرآن پاک ختمولو. ابو بکر الاثرم رضی اللہ عنہ وائی چه ما احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ نه داسې اوریدلی دی چه کله عبد الرحمن بن مهدی رضی اللہ عنہ د یو سړي نه روایت او کړی نو هغه سړي به هم حجت وی. ددوی وفات ۱۹۸ هجری کښې شوې دی. (۱)

② **منصور بن سعد** رضی اللہ عنہ: دا منصور بن سعد البصری رضی اللہ عنہ دی. دې د صاحب اللؤلؤ په نوم باندي مشهور دی. ددوی په مشائخو کښې میمون بن سیاه، بدیل بن میسرې العقیلی، ثابت البنانی، حماد بن ابی سلیمان، عباد بن کثیر، فرزذق شاعر او عمار بن ابی عمار وغیرهم رحمہم اللہ شامل دی. او په شاگردانو کښې شی عبد الرحمن بن مهدی، جارود بن یزید، حسان بن ابراهیم او ابو سلمه موسی بن اسماعیل وغیرهم رحمہم اللہ شامل دی.

ددوی باره کښې یحیی بن معین فرمائی: ثقہ. علی بن المدینی رضی اللہ عنہ فرمائی: لم یکن به بأس. امام نسائی رضی اللہ عنہ فرمائی: ثقہ. ابن حبان کتاب الثقات کښې ددوی ذکر کړې دی. (۲)

③ **میمون بن سیاه** رضی اللہ عنہ: دا میمون بن سیاه البصری رضی اللہ عنہ دی. ددوی کنیت ابویجر دی. دې د حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ، جندب بن عبد اللہ البجلی، حسن بصری او حوشب وغیره رحمہم اللہ نه روایت کوی. او ددوی نه روایت کونکو کښې منصور بن سعد اللؤلؤی، حزم القطعی،

(۱) تهذیب الکمال: ۴۳۲/۱۷-۴۳۰، الطبقات الکبری لابن سعد: ۲۹۷/۷، الثقات لابن حبان: ۳۷۳/۸، سیر اعلام النبلاء: ۱۹۲/۹، تهذیب التهذیب: ۲۷۹/۶، خلاصة الخرجی: ۲، ارقم الترجمة: ۴۲۵۹.

(۲) تهذیب الکمال: ۵۲۷/۱۸، الجرح والتعديل: ۱۸، ارقم الترجمة: ۷۶۰، الطبقات لابن حبان: ۴۷۵/۷، تهذیب التهذیب: ۳۰۷/۱۰، الکاشف: ۱۳، ارقم الترجمة: ۵۷۳۴.

حماد بن جعفر، حمید الطویل و غیرهم رحمهم الله شامل دی. په دوی باندې بعضې ائمه رجال کلام کړې دي لیکن هغه کلام داسې نه دي د کوم په وجه چه د هغه راوی حدیث په ضعف شدید کښې داخل شي ځکه چه ډیرو زیاتو ائمه حضراتو د دوی تعدیل هم کړې دي مثلاً یحیی بن معین رضی الله عنه د دوی باره کښې ونیلی دی: ضعیف. ابو داؤد رضی الله عنه د دوی باره کښې ونیلی دی: «لیس بلك». ابن حبان رضی الله عنه د دوی ذکر کتاب الثقات کښې کړې دي. او ونیلی ئی دی: یغظم، دي نه پس ابن حبان رضی الله عنه المجروحین کښې هم د دوی ذکر کړې دي او فرمائیلی ئی دی چه دي د مشاهیر نه منکر روایت بیانولو کښې منفرد وي او کله چه دي منفرد وي نو هغه وخت د دوی روایت نه حجت نیول زما خوښ نه دی. ابو حاتم رضی الله عنه دی ثقه گرځولې دي. امام دارقطنی رضی الله عنه هم فرمائیلی دی: یحتج به. حسن بن سفیان رضی الله عنه فرمائی: دا سید القراء وو او حزم القعطی رضی الله عنه فرمائی چه ده به نه د چاغیبت کولو او نه به ئی اوریدلو. دده په مجلس کښې چه به غیبت شروع کیدو نو رتلو به ئی گنی د مجلس نه به پاسیدو.

حافظ ابن حجر رضی الله عنه اول د جرح کلمات نقل کړې دي بیانی د تعدیل کلمات ذکر کړې او فرمائیلی ئی دی چه امام بخاری رضی الله عنه او امام نسائی رضی الله عنه د دوی روایت نقل کړې دي. الدكتور بشار عواد اول د ضعیف اقوال اویا د تعدیل کلمات ذکر کړې دي. اویائی د ابن عدی رضی الله عنه قول نقل کړې دي چه دي د بصري د لویو زاهدانو او عابدانو نه یو وو. او زاهد خلق احادیث داسې نه ضبط کوي لکه څنگه چه ضروری دی. زما امید دي چه د دوی په احادیثو کښې به څه جرح نه وي. امام بخاری رضی الله عنه د دوی صرف هم یو روایت نقل کړې دي. (۱)

⑤ انس بن مالك رضی الله عنه: دامشهور او معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالك رضی الله عنه دي. د دوی په احوالو باندې تفصیلی کلام کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان ان یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیر شوی دي. (۲)

شرح حدیث: «مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا وَاسْتَقْبَلَ بَيْتَنَا، وَأَكَلَ ذَيْبِ حَتْمَا»  
حضرت انس بن مالك رضی الله عنه فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد او فرمائیلو کوم سرې چه زمونږ د مونځ کولو په شان مونځ او کړی، او زمونږ د قبلې طرف ته مخ کړی او زمونږ ذبیح کړې شوې ځناور او خوری.

قوله: «من صلّ صلاتنا»، أي: صلّى كما نصل، یعنی چه څنگه قیام، قراءت رکوع سجود وغیره

(۱) تهذيب الكمال: ۲۰۴/۲۹، الثقات لابن حبان: ۴۱۲/۵، تهذيب التهذيب: ۳۸۸-۳۸۹/۱۰، الطبقات الكبرى لابن سعد: ۱۵۲/۷، خلاصة الخزرجي: ۱۳ رقم الترجمة: ۷۳۵۰، تقريب التهذيب: ۲۳۳/۲، تحرير تقريب التهذيب: ۴۵/۳، هدى السارى لابن حجر، ص: ۶۲۹.  
(۲) كشف البارى: ۴/۲.



سره مونږ مونځ کوو هغه شان هغوی مونځ او کړی. لفظ "صلاتنا" منصوب بنزع الخافض دې نفس الامر کښې دا لفظ د محذوف مصدر صفت دې. پوره جمله به داسې شی: "صلی صلاة کصلاتنا" بیا تخفیفاً مصدر او خافض یعنی "ک" تشبیه حذف کړې شو او "صلی صلاتنا" باقی پاتې شو.<sup>(۱)</sup>

د مسلمانیدو د پاره ضروری امور: په مذکوره حدیث شریف کښې درې کارونه کونکې کس مسلمان ګرځولې شوي دي. په دې کښې ئی اولنی خبره "من صلی صلاتنا" په دې وجه ذکر کړه چه زمونږ په شان مونځ کونکې هغه سرې کیدې شی چه د توحید او رسالت اقرار کونکې وی. او کوم سرې چه د توحید او رسالت اقرار کونکې وی هغه به یقیناً "جمیع ما جاء به رسول الله صلی الله علیه وسلم من الله تبارک و تعالی" هم اقرار کونکې وی. او ددې معنی داده چه هغه مسلمان شو. ځکه چه هم هغه خو مسلمان وی څوک چه تصدیق کوی د هغه پوره دین او شریعت کوم چه رسول الله ﷺ راوړې دې. نو داسې مونځ کول به د هغه د اسلام علامت شی لهذا هغه به مسلمان ګرځولې شی.<sup>(۲)</sup>

قوله: "واستقبل قبلتنا" اوز مونږ د قبلي طرف ته مخ کولو سره مونځ ادا کړی. استقبال قبله مستقلاً ذکر کولو حکمت: په دې جمله باندې اشکال راځی چه د استقبال قبله ذکر خو په صلاة کښې موجود وو نو بیا دا ځان له ولې ذکر کړې شو؟

نوددې جواب دادې چه قبله په مقابله د مونځ کښې زیاته مشهوره ده. بې شمیره کسان وی چه د مونځ د کولو د ادابو، شرطونو او اصولو وغیره نه ناخبره او جاهل وی لیکن هغوی هم قبله پیژنی او هغوی ته معلومه وی چه زمونږ قبله کومه ده او کوم طرف ته ده.

دې نه علاوه بله خبره هم ده چه د مونځ دیر ارکان داسې دی چه زمونږ مونځ او د نورو په مونځونو کښې مشترک دی مثلاً قیام: زمونږ په مونځ کښې هم دې اود یهودو په مونځ کښې هم دې. قرائت زمونږ په مونځ کښې هم دې اود یهودیانو په مونځ کښې هم دې. لیکن قبله

کښې زمونږ اود هغوی فرق دې. په دې وجه ئی د "من صلی صلاتنا" نه پس "واستقبل قبلتنا" ذکر اوفرمائیلو.<sup>(۳)</sup>

علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی<sup>(۴)</sup> کله چه د هغه عبادتونو ذکر او کړې شو د کوم په ذریعه چه به په مسلم او غیر مسلم کښې فرق کیدلو نو د هغې نه پس ئی هغه څیز ذکر کړو چه عبادت او

(۱) عمدة القاری: ۱۸۶/۴، ذخیرة العقبی شرح سنن النسائی، کتاب المحاربة، باب: تعزیم الدم، رقم الحدیث: ۳۹۶۷، ۲۲۶/۳۱.

(۲) عمدة القاری: ۱۸۶/۴، تحفة الأبرار شرح مصابیح السنة، کتاب الإیمان، رقم الحدیث: ۸۰، ۴۷/۱.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۴۴، عمدة القاری: ۱۸۶/۴، إرشاد الساری: ۵۳/۲، ذخیرة العقبی شرح سنن النسائی، کتاب المحاربة، باب: تعزیم الدم، رقم الحدیث: ۳۹۶۷، ۲۲۶/۳۱.

(۴) عمدة القاری: ۱/۶۴۴.

عادت د دوارو په اعتبارو سره مسلم او غیر مسلم کښې فرق ښکاره کوی. او هغه دې زمونږ د ذبیحې استعمالول، د دې طرف ته ئې اشاره کولو سره او فرمائیل:

«أکل ذبیحة» د شرط اهمیت: «أکلوا ذبیحتنا» دا جمله په اصل کښې په دې خبره باندي دلالت کوی چه څنگه من حیث العبادۃ زمونږ او د نورو په مینځ کښې په ډیرو کارونو کښې فرق دې. دغه شان ډیر څیزونه داسې هم دی چه من حیث العبادۃ او من حیث العادة زمونږ او د هغوی په مینځ کښې فرق دې. «اکل ذبیحة» مسئله هم داسې ده چه عادت هم دغه دې چه د یو ملت خلق د بل ملت ذبیحه نه استعمالوی او د عبادت په نقطه نظر سره هم د یو ذبیحه د بیل د پاره صحیح اوتیک نه شی گرځولې کیندې. په دې وجه ئې په حدیث کښې «استقبل قبلتنا» نه پس «واکل ذبیحتنا» ذکر کړو (۱).

د علامه گنگوهی رحمته الله علیه را ئې: علامه رشید احمد گنگوهی رحمته الله علیه فرمائی چه د «أکلوا ذبیحتنا» قید د هغه کافرانو (د اسلام نه جدا ساتلو یا) د ویستلو د پاره دې کوم چه د مسلمانانو ذبیحه نه خوری گنی مشرکان او یهودیان او نصاری خود مسلمانانو ذبیحه خوری. د دې نه احتراز مقصود نه دې (۲).

د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه را ئې: د دې په شرح کښې حضرت شیخ الحدیث رحمته الله علیه لیکي چه د دې عبارت په ذریعه حضرت شیخ رحمته الله علیه د دې اعتراض جواب ورکړې دې چه مشرکان او اهل کتاب خود مسلمانانو ذبیحه خوری نوییاد هغوی ذکرولې او کړې شو؟ نو حضرت گنگوهی رحمته الله علیه چه کوم جواب ورکړو دهغې حاصل دادې چه بعضي مشرکانو او بعضي اهل کتابو به د مسلمانانو ذبیحه نه خورله او بعضي هغه وو چه د غیر الله د پاره به ئې ذبح کوله. نو د اول الذکر په رد کښې «أکل ذبیحتنا» او فرمائیل او د ثانی الذکر د رد د پاره د روایاتو نه په یو روایت کښې «ذبحوا مثل ذبیحتنا» الفاظ هم ملا ویرې (۳).

د علامه طیبی رحمته الله علیه را ئې: که په حدیث شریف کښې مذکوره کلام د یهودو په مقابله کښې شمیر کړې شی نو معامله آسانه ده چه د استقبال عطف په صلاۃ باندي کول اوییا د ذبیحې ځان له په خاص توگه باندي ذکر کولو سره ټول کارونه آسانیرې. ځکه چه یهودو به د مسلمانانو ذبیحه نه خورله. دا خو هغه خلق وو چا چه مسلمانانو ته هغه وخت پیغورونه ور کړی وو کوم وخت چه مسلمانانو ته د کعبې طرف ته مخ گرځولو حکم شوې وو. د کوم طرف ته چه قرآن پاک اشاره او کړه: «مَا وَلَهُمْ عَن قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا» چنانچه په حدیث شریف

(۱) عمدة القاری: ۱۸۶/۴ الکاشف عن حقائق السنن المعروف بشرح الطیبی، کتاب الإیمان، رقم الحدیث: ۱۳.

۱۳۱/۱.

(۲) لامع الدراری: ۲۶۲/۲.

(۳) الكنز المتواری: ۸۰/۴.

کښې هغوی د مسلمانانو نه د جدا کولو دپاره او فرمائیلې شو چه هغوی دې زمونږ په شان موند او کړی او قبلې طرف ته مخ کولو باره کښې او زمونږ د ذبیحې د خوړلو نه د منع کیدلو باره کښې دې مونږ سره جگړه پریرېدی نو هغوی به مسلمانان شمیرلې شی. (۱)

ذبیحة ذ نعيلة په وزن باندي د مفعولة په معنی دې او التاء د جنس د پاره ده لکه

الشاة کښې نو معنی به نې ذبح کړې شوې ځناور وی. (۲)

قوله: قَدْ لِكَ الْمُسْلِمِ الَّذِي لَهُ ذِمَّةُ اللَّهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ، فَلَا تُخْفِرُوا اللَّهَ فِي ذِمَّتِهِ»

نوهغه به داسې مسلمان شمیرلې شی د چا دپاره چه د الله او د هغه د رسول د طرف نه د امان وعده ده. نو تاسو د الله تعالی په دغه وعده کښې خیانت مه کوئ.

قوله: "فذلك" اسم اشاره ده د دې مشارالیه به "من جمیع هذه الأوصاف الثلاثة" شی. مطلب به

دا شی چه هغه سرې څوک چه دا دريواره صفات په خپل ځان کښې راجمع کړې هغه به

مسلمان وی. نو "ذلك" به د خپل مشارالیه سره مبتداء شی او د دې خبر به وړاندي پوره جمله

شی. (۳) بیا به جمله اسمیه د شرط د پاره جزاء جوړه شی. (۴)

"ذمة الله" د ذمة نه مراد امان، وعده او کفالت دې. یعنی داسې سرې د الله په امان کښې، د

الله په حفاظت کښې او د الله په کفالت کښې دې. (۵)

د دې پوره جملې مطلب به دا شی چه کوم سرې دغه مذکوره دريواره کارونه او کړې هغه به د

الله او د هغه د رسول ﷺ په حفاظت کښې راشی د کافرانو د وبال نه یعنی کافرانو سره چه

کوم قتل وغيره مشروع دی د دغه سرې نه به دغه حکم او چت کړې شی. د "ذمة" لفظ مکرر

ذکر کړې شوي دي د الله سره هم او د رسول سره هم، په دې سره دا خودل مقصود دی چه د

دواړو ذمه، امان او حفاظت د دنیا مقصود دې اگر چه اصل ذمه خو هم د الله ده او داهم

مقصود دی چه دواړه یو بل سره لازم دی. هم په دې وجه وړاندي جملې "فلا تخفروا الله في ذمته"

کښې صرف د "ذمة الله" په ذکر باندي اقتصار او کړې شو. (۶)

"فلا تخفروا" د آد باب افعال نه د نهی صیغه ده. "خفروا" د نصر ینصر او ضرب یضرب نه د امان او

حفاظت په معنی کښې استعمالیږي او کله چه دا په باب افعال کښې مستعمل وی نو همزه

د افعال به د سلب او ازالې په معنی کښې استعمالیږي. مطلب به دا شی چه امان مات کړې

(۱) الکاشف عن حقائق السنن المعروف بشرح الطيبي، کتاب الإیمان، رقم الحديث: ۱۳، ۱۳۱/۱.

(۲) مرقاة المفاتیح، کتاب الإیمان، رقم الحديث: ۱۳، ۱۵۲/۱ ضیاء الساری فی مسالك أبواب البخاری: ۲۵۷/۵.

(۳) مرقاة المفاتیح، کتاب الإیمان، رقم الحديث: ۱۳، ۱۵۲/۱.

(۴) عمدة القاری: ۱۸۶/۴، إرشاد الساری: ۵۳/۲.

(۵) الصحاح للجوهري، ص: ۳۷۵، النهاية لابن اثير: ۱۲/۱ ۶ مصابيح الجامع للداميني: ۱۰۸/۲.

(۶) فتح الباری: ۱/۴۴۴، عمدة القاری: ۱۸۲/۱، مرقاة المفاتیح، کتاب الإیمان، رقم الحديث: ۱۳، ۱۵۲/۱.

شو، د حفاظت نه او ویستلې شو، په وعده کښې خیانت او کړې شو. چنانچه "فلاتخفوا الله" معنی به دا شی تاسو الله سره خیانت مه کوئ او د هغه ورکړې شوي امان مه ماتوئ. (۱)

لی ذمته کښې د "ه" ضمیر مرجع کښې دوه احتمالات دی یو دا چه ددې مرجع الله وی او دویم دا چه ددې مرجع مسلم وی. په اول الذکر کښې به مطلب داشی چه ددې مسلمان د خان، مال، عزت او ناموس پسې کیدوسره د الله تعالی په ورکړې شوي امان کښې د خیانت مرتکب مه جوړیږئ. او په ثانی الذکر کښې به مطلب داشی چه ددې مسلمان باره کښې د الله تعالی وعده مه ماتوئ. (۲)

علامه خطابی رحمته الله علیه ددې جملې مطلب دا بیان کړې دې: "معناه: لاتخونوا الله فی تفسیه حق من هذا سیله" چه څوک دغه دریواړه اعمال اختیار کړی ددې په لار روان شوی وی نو تاسو د هغوی حقوق ختمولو سره د الله تعالی سره خیانت مه کوئ. (۳)  
د حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت د مذکور حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت د "استقبل قبلتنا" د لفظ د وجې. ددې جملې ذکر د قبلي په شان باندې د تنبیه په توگه ذکر دې ځکه چه استقبال قبله خو من جمله د نورو شرائطو "من صلی صلاتنا" کښې شامل وو. (۴)

د حدیث مبارک نه مستفاد امور او احکام: د مذکور حدیث شریف نه ډیر امور او احکام مستنبط کیږی په کوم کښې چه یو څو دلته لاندې نقل کولې شی:

① د مذکور حدیث نه د قبلي شان او عظمت معلومیږی چه ددې طرف ته مخ کول په مونځ کښې افضل ترین عبادت گرځولې شوې دې. کوم سړې چه عمداً قبلي طرف ته مخ نه کړی د هغه مونځ قبول نه دې. (۵)

② په مانځه کښې قبلي ته مخ کول مطلقاً شرط دې سواد ویری د حالت نه، چه په داسې حالت کښې د مونځ گذار نه دا شرط مرتفع کیږی. بیا په دې کښې نور تفصیل دادې چه کوم سړې په مسجد حرام کښې وی د هغه د پاره د عین قبلي استقبال شرط دې او کوم سړې چه د مسجد حرام نه بهروی د هغه د پاره د قبلي طرف کافی دې. (۶)

③ د مسلمانانو په علامت کښې د ذبیحې خورل هم معلوم شو ځکه چه د اهل کتابو یو

(۱) الصحاح للجوهري، ص: ۳۰۶، النهایة فی غریب الحدیث والأثر: ۵۱۰/۱، عمدة القاری: ۱۸۶/۴، فتح الباری:

۶۴۴/۱، إرشاد الساری: ۵۳/۲.

(۲) مرقاة المفاتیح، کتاب الإیمان، رقم الحدیث: ۱۳، ۱۵۲/۱، عمدة القاری: ۱۸۶/۴، إرشاد الساری: ۵۳/۲.

(۳) أعلام الحدیث فی شرح صحیح البخاری: ۳۷۵/۱.

(۴) عمدة القاری: ۱۸۷/۱، منار القاری: ۴/۲.

(۵) عمدة القاری: ۱۸۵/۴، إرشاد الساری: ۵۴/۲، مصابیح الجامع للدامینی: ۱۰۸/۲.

(۶) عمدة القاری: ۱۸۵/۴، إرشاد الساری: ۵۴/۲، مصابیح الجامع للدامینی: ۱۰۸/۲، اللامع الصبیح للبرماوی:

جماعت اوبت پرست د مسلمانانو ذبیحه نه خوری (۱)

③ د مسلمان د عزت، ناموس، مال او خان حفاظت زمونږ د ټولو ذمه واری ده (۲)

④ دا حدیث په دې خبره باندې هم دلالت کوی چه یو سرې صرف د شهادتین د وجې معصوم الدم نه گرخی نه بلکه په هغه باندې لا زم دی چه د شهادتینو حقوق هم ادا کړی او په حقوقو کښې د ټولو نه مؤکد حکم د مونخ دې. هم په دې وجه شی دا په خاص توگه ذکر کړو (۳)

⑤ یوه اهم خبره دا معلومه شوه چه خلقو کښې د بعضو امور د نورو بعضو دپاره د هغوی په ظاهر باندې محمول وی نه چه د هغوی په باطن باندې. اودا خبره چه کوم سرې د دین شعائر اود دین والو طور طریقې خپلوی نو په هغوی باندې هم د دین اود دین والو احکام جاری کولې شی کله چه د هغوی باطن معلوم نه وی. لکه چه یو مسافر سرې راشی اود هغه ظاهری شکل او صورت د مسلمانانو په شان وی نو هغه به هم مسلمان شمیرلې شی یعنی هغه سره به هم د مسلمانانو سلوک کولې شی تر کومې پورې چه د هغه نه د اسلام خلاف څه خبره ښکاره نه شی (۴)

حافظ ابن حجر رحمته الله علیه هم داسې لیکي چه د حدیث نه معلومه شوه چه د خلقو احوال او معاملات د هغوی په ظاهر باندې محمول کول پکار دی. لهذا چه کوم سرې د دین شعائر ښکاره کړی په هغه باندې به هم د مسلمانانو احکام جاری کولې شی تر کومې پورې چه د هغه نه د دین خلاف څه خبره ښکاره نه شی (۵)

د اسلام دپاره هم د دغه دريو امور و دانتخاب حکمت: علامه کرمانی رحمته الله علیه فرمائی چه که چرې څوک اعتراض او کړی چه د دین د ټولو ارکانو او واجباتو نه شی هم دا درې ولې په خصوصیت سره ذکر کړل؟

نوددې جواب دادې چه دا دریو اړه څیزونه په دین اسلام کښې د ډیرې لوئی درجې دی. په دې باندې عمل کونکې ډیر زر په نورو خلقو کښې ممتاز کیږی ځکه چه په ابتدائی ملاقات کښې اکثر وختونو کښې ملاویدونکې د خپل کوربه په باره کښې د هغه په مونخ باندې پابندی کول پیژنی په خلاف د روژې یا حج. اول ذکر شوی (روژه) خود امر باطن نوم دې اود فرض روژې په ذریعه امتیاز خو په پوره کال کښې یوه میاشت کښې کیږی شی اود دویم ذکر شوی (حج) معامله هم دغه شان ده. په څه کسانو باندې خودا د سر نه واجب نه وی او چه په چا باندې واجب وی د هغوی نه ددې کار پیژندگلو کښې میاشتی او کلونه لگیدې شی (۶)

اهل قبله سره متعلق یو تحقیق: علامه انور شاه صاحب کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چه هم ددې

(۱) عمدة القاری: ۱۸۷/۴، الشرح المیسر لصحیح البخاری: ۴۴۳/۲.

(۲) الشرح المیسر لصحیح البخاری: ۴۴۳/۲، منار القاری: ۴/۲.

(۳) فتح الباری لابن رجب حنبلی: ۱۰۸/۲، منار القاری: ۴/۲.

(۴) للامع الصبیح للبرماوی: ۱۳۲/۳، کوثر معانی الدراری فی کشف خبایا صحیح البخاری: ۱۱/۷.

(۵) فتح الباری: ۶۴۴/۱.

(۶) شرح الکرمانی: ۵۵/۴.

احادیثو نه د اهل قبله لقب د اهل اسلام دپاره اخذ کړې شوي دي. وجه داده چه دا د اهل اسلام دیر لونی او ښکاره علامات دی. په کوم سره چه دیر په آسانۍ سره د اسلام د دین والا د نورو مذاهبدو خلقو نه ممتاز کیږی. ځکه چه هغه خلقو زموږ د ذبیحې نه پرهیز کوی. زموږ په شان مونږ نه کوی او په خپلو عبادتونو کښې زموږ د قبلې طرف ته هم نه منځ کوی. لهذا دا دریواړه څیزونه د اسلام دپاره د شعار په درجه کښې دی. لیکن دا مطلب نه دي چه په کومو خلقو کښې دا درې څیزونه وی هغه به خامخا مسلمان گنرلې شی او مسلمان به ورته ونیلې شی که هغوی د دین د (ضروری) څیزونو نه انکار هم او کړی. او که هغوی د حضور پاک ﷺ د ارشاد مطابق د دین اسلام نه خارج هم شی. څنگه چه غشې د لنډې نه لري کیږی. او ښکاره خبره ده که یو سرې پوره دین منی او په هغې باندي عمل هم کوی خو که د قرآن پاک د یو وړوکی نه وړوکی سورت نه هم انکار او کړی یا دهغې حکم اونه منی یا ښه پوهیدو سره د هغې غلطه معنی او کړی نو د هغه په کفر کښې شک نه شی کیدی. څه چه یو سرې د نبوت دعوی او کړی، د انبیاء علیهم السلام سپکاوی او کړی، د هغوی د شان خلاف سخت نامناسب الفاظ استعمال کړی. د دین تحریف او کړی. د رسول الله ﷺ د احادیثو، اخبارو، واقعاتو او د معجزاتو انکار او مسخرې او کړی وغیره نودغه خلق څنگه په اسلام کښې داخل گرځولې کیدی شی؟

چنانچه زموږ په زمانه کښې مرزا غلام احمد قادیانی ددې ټولو موجبات کفر ارتکاب او کړو. حالانکه ددې نه د یو کار ارتکاب هم د کفر د ثبوت دپاره کافی وو. مگر افسوس چه زموږ په دې د جهالت دور کښې بعضی اهل علم هم چا ته چه د فقهې په کتابونو، د عقیدو او کلام په کتابونو باندي پوهه نه وه حاصله. د مرزا په تکفیر کښې شی تردد او کړو او ونی وئیل چه موږ احتیاط کوو او په دې باندي شی ځان پوهه نه کړو لکه څنگه چه اکفار مسلم باندي بهادری کول گناه ده بالکل هم دغه شان عدم اکفار کفار هم گناه ده. او هم په دې وجه خلیفه اول حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه د زکوٰة نه ورکونکو د جنگ باره کښې د حضرت عمر رضی الله عنه تردد ته کتلو سره فرمائیلې وو: «أجهارل الجاهلیة وحوارلئ الإسلام؟» یعنی د جاهلیت په زمانه کښې خو دیر لوی بهادر او تکره وی، اوس د اسلام په زمانه کښې بزلی او کمزوری څنگه؟ دې نه پس بیا زر حضرت عمر رضی الله عنه خپله رانې بدله کړه او ونی فرمائیل چه زما زړه هم دهغه خبرې دپاره کولاؤ شو د کومې دپاره چه د حضرت ابوبکر رضی الله عنه زړه کولاؤ شوې وو. او هغه پوهه شو چه د احتیاط تقاضا هم هغه وه کومه چه حضرت ابوبکر رضی الله عنه اختیار کړې وه (۱) د اهل قبله تعریف: ملا علی قاری رحمته الله علیه د اهل قبله تکفیر کولو او نه کولو بحث په مقام باندي د ټولو نه مخکښې د اهل قبله تعریف کولو سره فرمائی: «اعلم أن المراد بأهل القبلة، الذین اتفقوا علی ما هو من ضرورات الدین کحدوث العالم، وحش الأجداد، وعلم الله بالکلیات والجزئیات، وما أشبه ذلك من المسائل، فمن واطب طول عمره علی الطاعات والعبادات مع اعتقاد قدم العالم، أو نفی الحشر، أو نفی حمله

سبحانه بالجزئيات لا يكون من أهل القبلة<sup>(١)</sup>

**توجه:** داخبره پیژندل پکار دی چه د اهل قبله نه مراد هغه خلق دی چه په ټولو ضروریاتو دینیه باندې اتفاق لری، مثلاً: عالم حادث دې (یعنی الله تعالی دا پیدا کړی دی او خلق به د خپلو بدنونو سره په قیامت کښې یوځائی کیږی. او الله تعالی د ټولو کلیاتو او جزئیاتو علم لری. او ددې په شان نور مسائل هم هغه سرې منی. نو چه کوم سرې ټول عمر د طاعاتو او عباداتو پابندی کوی لیکن د هغه عقیده دا وی چه عالم قدیم دی (یعنی د همیشه نه دې) او په قیامت کښې به خلق د خپلو بدنونو سره نه رایوځائی کیږی یا الله تعالی ته د جزئیاتو (یعنی دهرڅیز) علم نشته دې نوداسې سرې د اهل قبله نه نه دې.

بیا نور فرمائی: «وان المراد بعدم تکفیر احد من اهل القبلة عند اهل السنة انه لا یکفر ما لم یوجد شیء من امارات الکفر وعلاماته ولم یصدر عنه شیء من موجباته»<sup>(٢)</sup>

**توجه:** او د اهل سنت په نیز د اهل قبله تکفیر نه کولو مراد دا دې چه د هغوی به تر هغه وخته پورې تکفیر نه شی کولې تر کومې پورې چه په هغوی کښې د کفر نښو او علامو نه څه څیز موجود نه شی او تر کومې پورې چه د هغوی نه د موجبات کفر نه څه خبره صادر نه شی د ملا علی قاری رحمته الله علیه مذکوره بحث ته کتلو سره د حدیث الباب وضاحت کیږی چه هلته د دریو کارونو کونکو د پاره د الله او د هغه د رسول صلی الله علیه و آله وسلم د ضمان اعلان کړې شوې دې نو هلته په ظاهري توگه باندې د دغه دریو اړو کارونو کونکی به صرف تر هغه وخته پورې مسلمان گنلې شی تر کومې پورې چه د هغوی نه د دین د نورو ضروریاتو نه انکار مخې ته رانه شی او کله چه د هغوی نه د نورو ضروریات دینیه خلاف څه خبره صادر شی نو بیا د هغوی د پاره د الله او د هغه د رسول صلی الله علیه و آله وسلم ضمان نشته دې. بلکه د هغوی تکفیر به کیږی. یعنی هغوی سره به د مسلمانانو والا سلوک نه شی کولې. کتب علم الکلام والعقائد کښې ددې امر پوره تصریح موجود ده.

د ابن امیر الحاج رحمته الله علیه تشریح: محقق ابن امیر الحاج رحمته الله علیه فرمائی: «اهل القبلة، هو المواقف علی ما هو من ضروریات الإسلام کحدوث العالم وحش الأجساد من غیر ان یصدر عنه شیء من موجبات الکفر قطعاً من اعتقاد راجع الی وجود اله غیر الله تعالی، أو الی حلوله فی بعض أشخاص الناس، أو انکار نبوة محمد صلی الله علیه وسلم اذمه، أو استخفافه، ودعوى ذلك المخالف فی اصول سواها مما لا تزاع أن الحق فیہ واحد کمسألة الصفات وخلق الأعمال وعبود الإرادة، وقدم الکلام ولعل الی هذا أشار المصنف ما ضیا بقوله اذ تمسکه بالقرا، أو الحدیث، أو العقل اذ لا خلاف فی تکفیر المخالف فی ضروریات الإسلام من حدوث العالم وحش الأجساد ودفی العلم بالجزئيات، وإن کان من اهل القبلة المواظب طول العبر علی الطاعات، وکذا المتلبس

<sup>(١)</sup> شرح الفقه الأكبر للملا علی القاری، مسئله: استحلال المعصية ولو صغيرة کفر، ص: ٢٥٨.

<sup>(٢)</sup> شرح الفقه الأكبر للملا علی القاری، مسئله: استحلال المعصية ولو صغيرة کفر، ص: ٢٨٥.

بشیر من موجبات الکفر ینبغی أن یکون کافراً بهلاخلال، وحينئذ ینبغی تکفیر الخطیئة لیسأدمنا عنهم فی فصل شرائط الروای، وقد ظهر من هذا أن عدم تکفیر أهل القبلة بذنب لیس علی عمومہ إلا أن یحمل الذنب علی ما لیس بکفر، فیخرج الکفر به کما أشار الیه السبکی،<sup>(۱)</sup>

ترجمه: اهل قبله هغه دی خوک چه موافق وی د دین د بولو ضروریاتو لکه د عالم حدوث او حشر اجساد، په داسې توگه چه دده نه خه څیز د موجبات کفر نه اونه شی مثلاً، داسې عقیده چه د الله تعالی سره چرته بل یو خدائی اله منلو طرف ته بونه څی یا د الله تعالی په یو سرې کبسي د حلول کیدلو طرف ته یا د نبی اکرم د نبوت نه دانکار طرف ته، یا د رسول الله ﷺ د مذمت او استخفاف طرف ته بونه څی، یا د دې په شان نورو خبرو طرف ته بونه څی (تر دې چه مصنف رحمته علیه فرمائی چه) دې نه معلومه شوه چه د اهل قبله د خه گناه د وجې د تکفیر نه کولو حدیث په خپل عموم باندې نه دي. البته که د گناه نه مراد د کفر نه علاوه خه بله معنی واخستې شی لکه چه دهغې طرف ته ملاسبکی رحمته علیه اشاره کړې ده نو عموم مراد اخستې شی.

د علامه تفتازانی رحمته علیه تشریح: په شرح المقاصد کبسي علامه تفتازانی رحمته علیه فرمائی: «ومعناه أن الذين اتفقوا على ما هو من ضروريات إسلام كحدوث العالم وحشر الأجساد، وما أشبه ذلك، واختلفوا في أصول سواها كسألة الصفات، وخلق الأعمال، وعموم الإرادة، وهدم الكلام، وجواز الرؤية، ونحو ذلك مما لا نزم أن الحق فيها واحد، هل يكفر المخالف للحق بذلك الاعتقاد والقول به أم لا؟ فلانزاع في كفر أهل القبلة المواقب طول العمر على الطاعات باعتقاد عدم العالم ونفى الحشر، ونفى العلم بالجزئيات، ونحو ذلك، وكذا ابعث ورشي من موجبات الكفر عنه»<sup>(۲)</sup>

ترجمه: کوم خلق چه په ضروریات اسلام باندې خو متفق دي مثلاً حدوث عالم او حشر وغیره منی، او د دې نه علاوه په نورو اصولو کبسي اختلاف کوی لکه مسئله صفات او خلق افعال او عموم اراده او د کلام الله قدیم کیدل او د رؤیت د الله جواز وغیره، په کوم کبسي چه هیڅ خه جگړه نشته دې چه په دې کبسي حق هم یو دې نو آیا د دې عقیدې او د دې د قائل کیدو د وجې نه د دغه حق مخالفت کونکی تکفیر به کولې شی که نه؟ نو د داسې اهل قبله په تکفیر کبسي هیڅ اختلاف نشته دې چه ټول عمر په همیشه والی سره د قدیم عالم او نفی د حشر او نفی د علم بالجزئیات وغیره قائل وی او هم دغه شان د موجبات کفر نه د یو څیز په صادر کیدو سره دهغه په کفر کبسي هیڅ اختلاف نشته دې.

د صاحب غایة التحقيق علامه عبدالعزیز البخاری رحمته علیه تشریح: علامه عبدالعزیز بن احمد ابن

(۱) التفریر والتجیر لابن امیر الحاج علی التفریر فی اصول الفقه، المقالة الثالثة: فی الاجتهاد وما يتبعه من التقليد والافتاء: ۴۰۲/۳.

(۲) شرح المقاصد للتفتازانی، المبحث السابع: فی حکم مخالف الحق فی أهل القبلة: ۲۲۸/۵.



محمد البخاری رحمته اللہ علیہ د اصول فقہ کتاب د حسامی پہ شرح غایۃ التحقیق کنبی فرمائی: «ان غلافیہ (ای: لی ہوا الحق) وجب الکفارۃ بہ لایعتبر خلافہ ووفاتہ ایضاً لعدم دخول فی مسی الأمة المشہود لہا بالعصر وان صلی الی القبلة واعتقد نفسه مسلماً، لأن الأمة لیست عبارة عن المصلین الی القبلة بل، عن المؤمنین، وهو کافر، وان کان لایدری أنه کافر» (۱)

توجہ: کہ چری یو سری پہ خپلو نفسانی خواہشاتو کنبی غلو او کرہ تردی چہ دہغه تکفیر واجب شو نو ددی (تکفیر) د خلاف بہ اعتبار نہ شی کولی. خکہ چہ دا سری دامت پہ هغه طبقه کنبی شامل نہ دی دچا د پاره چہ د حفاظت او عصمت وعده کرې شوی ده. اگر کہ دا سری د قبلی طرف ته مخ کولو سره مونخ هم کوی او خپل خان مسلمان هم گنری. خکہ چہ امت د قبلی طرف ته مخ کولو سره د مونخ کونکو نوم نہ دی بلکه امت خود مؤمنانو نوم دی او داسی سری (چہ غلو کونکی وی) کافر دی اگر چہ هغه ته د خپل کفر علم نہ وی. د علامه عبدالعزیز الفرہاوی رحمته اللہ علیہ تشریح: علامه عبدالعزیز الفرہاوی رحمته اللہ علیہ د شرح العقائد شرح النبراس کنبی فرمائی: «ومن قواعد اهل السنة أن لا یکفر مجهول من التکفیر، وهو النسبة الی الکفر أحد من اهل القبلة معناه اللغوی: من یصلی الی القبلة، أو یعتقدها قبله، وفي اصطلاح المتکلمین: من یصدق بضروریات الدین، ای: الأمور التي علم ثبوتها فی الشرا و اشتهر، فمن أنکر شيئاً من الضروریات کحدوث العالم وحشر الأجساد وعلم الله سبحانه بالجزئیات وفرضية الصلاة والصوم، لم یکن من اهل القبلة، ولو کان مجاهداً الی الطامات وكذلك من باشر شيئاً من أمارات التکذیب کسجود العنم والإهانة بأمر شرعی والاستهزاء علیه، فلیس من اهل القبلة، ومعنی عدم تکفیر اهل القبلة أن لا یکفر بارتکاب المعاصی ولا بارتکاب الأمور الخفیة غیر المشہورة، هذا ما حققه المحققون، فاحفظه» (۲)

توجہ: د اهل سنت د قواعدو نہ یوه قاعده داده چہ د اهل قبله تکفیر به نہ شی کولی. اهل قبله د معنی لغوی مطابق هغه سری ته ونیلی شی چہ د قبلی طرف ته مخ کولو سره مونخ ادا کونکی وی. یا د قبلی د قبله کیدو عقیده لرونکی وی. او د متکلمینو په اصطلاح کنبی هغه سری دی چہ د دین د ټولو ضروریاتو تصدیق کوی. یعنی د هغه امورو د کوم ثبوت چہ په شریعت کنبی معلوم او مشهور وی. نو چہ خوک انکار او کرې د یو د دین د ضروریاتو، لکه حدوث عالم، حشر، علم الله بالجزئیات او فرضیت د مونخ او روژې نو هغه به د اهل قبله نہ نه وی. سره ددی چہ هغه د طاعاتو پابند وی. او دغه شان هغه سری به هم د اهل قبله نہ نه وی چہ داسی کار او کرې کوم چہ د تکذیب بشکاره علامت وی لکه بت ته سجده کول، یا یو داسی کار او کرې چہ په هغې سره د شریعت د یو امر سپکاوی کیږی نو هغه د

(۱) غایۃ التحقیق، ص: ۲۰۸، میر محمد کتب خانہ، کراتش.

(۲) النبراس علی شرح العقائد، الاستهزاء علی الشریعة کفر، ص: ۵۷۲-۵۷۱.

اهل قبله نه نه دي. اود اهل قبله د تکفير نه کولو مطلب دادې چه د گناه د کولو د وجې دي د هغه تکفير اونه کړې شی یا د یو داسې پټ غیر مشهور څیز د انکار د وجې دي د هغه تکفير اونه کړې شی. دا هغه تحقیق دي کوم چه محققینو صحیح گرځولي دي، دا محفوظ کړنی.

دعلامه شمس الدین محمد بن عبدالرحمن السخاوی رحمته الله علیه تشریح: علامه شمس الدین محمد بن عبدالرحمن السخاوی رحمته الله علیه فتح المغیث شرح الفیه الحدیث کښې فرمائی: «إذ لا يكفر أحد من أهل القبلة إلا بإدكار قطع من الشريعة»<sup>(۱)</sup>، یعنی مونږ د اهل قبله نه د چا تکفير نه کوو مگر د شریعت د یو قطعی امر نه د انکار د وجې.

دغه شان شارح هدايه المسمى ب العناية علامه بابرتی رحمته الله علیه<sup>(۲)</sup> او علامه الغنيمي الميداني رحمته الله علیه<sup>(۳)</sup>

وغیره هم په شرح العقيدة الطحاوية کښې په دي باره کښې ښه بحث کړې دي. دعلامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه تشریح:

داهل قبله د تکفير مسئله: دعلامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمودات بیانولو سره علامه

بجنوری رحمته الله علیه انوار الباری کښې فرمائی چه امام بخاری رحمته الله علیه دلته دباب: فضل استقبال القبلة لاندې چه کوم احادیث د حضرت انس رضي الله عنه نه نقل کړي دي دهغې نه واضحه کيږي چه څوک هم د توحيد شهادت ورکړي او زمونږ د قبلي طرف ته مخ کړي، زمونږ په شان مونږ او کړي او زمونږ ذبيحه خوري هغه مسلمان دي، هغه د الله تعالی پناه او ذمه وارثي کښې راغلو.

<sup>(۱)</sup> فتح المغیث شرح ألفیه الحدیث، تنبيهات: ۳۱۰/۱.

<sup>(۲)</sup> (ونسي اهل قبلتنا مسلمين مؤمنين ما داموا بما جاء به النبي صلى الله عليه وسلم معترفين، وله بكل ما قال وأخبر مصدقين)، لقوله عليه السلام: "من صلى إلى قبلتنا، وأكل ذبيحتنا فهو منا"، فإذا كانوا معترفين بما جاء به النبي صلى الله عليه وسلم من الشرع والدين، ومعتقدين التوحيد، وتمسكين بالشريعة، نسيهم مؤمنين ونحكم عليهم بجميع أحكام المؤمنين، ونراعى ظواهرهم ونكل ضمائرهم إلى الله، بقوله عليه السلام: "بعت أتولى الظواهر، والله يتولى السرائر". وإيما قال: "ما داموا بما جاء به النبي صلى الله عليه وسلم معترفين"، لأن مجرد التوجه إلى قبلتنا لا يدل على الإيمان ما لم يصدق النبي صلى الله عليه وسلم. فيما جاء به من الشريعة، فإن الغلاة من الرافضة الذين يدعون أن جبريل غلط في الوحي لمحمد، فإن الله أرسله إلى علي، وبعضهم قالوا: بأنه إله، فهؤلاء وإن صلوا إلى القبلة ليسوا بمؤمنين. (شرح عقيدة الطحاوية للبابرتي، بيان شرط تسمية أهل القبلة مؤمنين، ص: ۸۹).

<sup>(۳)</sup> (ونسي اهل قبلتنا) وهم الذين شهدوا شهادتنا، واستقبلوا قبلتنا، وصلوا صلاتنا، وأكلوا ذبيحتنا (مسلمين) و (مؤمنين) وإن وصفوا بإرتكاب الكبائر فاسقين (ماداموا) أي: مدة دوامهم (بما) أي: بالذي (جاء به النبي صلى الله عليه وسلم معترفين، وله) صلى الله عليه وسلم (بكل ما قال وأخبر) به (مصدقين) جازمين به (غير مكذبين)، ففي صحيح البخاري عن، أنس بن مالك رضى الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "من صلى صلاتنا، واستقبل قبلتنا، وأكل ذبيحتنا، فذلك المسلم الذي له ذمة الله وذمة رسوله، فلا تخفروا الله في ذمته"، وفيه: عن أنس رضى الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا: لا إله إلا الله، فإذا قالوها وصلوا صلاتنا، واستقبلوا قبلتنا، وذبحوا ذبيحتنا، فقد حرمت علينا دماؤهم وأموالهم إلا بحقها، وحسابهم على الله. (شرح عقيدة الطحاوية للغنيمي الميداني، إيمان من صدق بكل ما جاء به النبي، ص: ۱۰۳)

لهذا د الله تعالى په پناه کښې دې څوک ځملا اندازی نه کوي د ټولو فرض دی چه د هغه د خان او مال حرمت گنړلو سره د هغې حفاظت او کړې بغیر د دې نه چه هغه پخپله خپل خان په قصاص و غیره یا په څه مواخذه کښې اخته نه کړې و غیره د دې احادیثو نه یوه اصولی مسئله په پوهه کښې راځی چه د یو اهل قبله تکفیر دې اونه کړې شی. لیکن د دې دا مطلب هیڅ کله نه شی کیدې چه د دې در یو اړو خبرو سره د هغه عقیده او اعمال څنگه د حق خلاف او د قرآن او حدیث خلاف وی نو هغه به اهل قبله پاتې شی؟ ځکه چه په دې احادیثو کښې هم د توحید شهادت و غیره سره اشاره دې طرف ته موجود ده چه د عقیدې په لحاظ د توحید د شهادت د تقاضو خلاف هیڅ یو کار د ده نه اونه شی او په لحاظ د عمل د قبلې او د ذبیحې باره کښې هغه دعام مسلمانانو نه جدا څه طریقه نه وی اختیار کړې.

ټولو ته معلومه ده چه ډیر زیات احادیثو کښې صرف توحید نه ټول ایمانیات او عقیدې مراد اخستې شوي دی. لکه «من قال لا اله الا الله دخل الجنة» او د مسلم و غیره نه دلته هم مونږ ذکر کړې دی چه حضور پاک په هغه ټولو څیزونو باندې ایمان راوړل ضروری گرځولی دی کوم چه هغوی راوړې دی. او د احم بنکاره خبره ده چه څوک زموږ د ذبیحې نه پر هیز کوی هغه به خامخا زموږ د عقیدې نه مختلف عقیده لري. یا کوم سرې چه مونږ سره یا زموږ امام پسې خپل مونږ جائز نه گنړې هغه به زموږ نه د مخالف عقیدې والا وی.

د یوې مغالطې ازاله: بعضې خلق د کم علمې او کم نظر په سبب په دې مغالطه کښې راگیر دی چه اهل قبله او د اهل تاویل تکفیر صحیح نه دې. حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه په خپله رساله اکفار الملحدین کښې په دې مسئله باندې ډیر بحث کړې دې دکوم نه پس چه د یو اهل چه علم او نظر ډپاره د مذکوره مسئلې صحیح په صورت باندې پوهیدو کښې هیڅ مشکل نه شی راتلې. حضرت رحمته الله علیه او فرمائیل د اهل قبله د تکفیر ممانعت اصل ماخذ د سنن ابی داؤد د احادیث دې چه درې څیزونه اصل ایمان دې. ① د لاله الا الله د اقرار کونکی خان او مال ته تعرض نه کول. ② د یو گناه د ارتکاب په وجه چاته کافر نه وئیل. ③ د یو عمل په وجه څوک د اسلام نه خارج نه گنړل. (ابوداؤد، کتاب الجهاد، باب: فی الفزوم مع ائمه الجور: ۳۴۲/۱)

د دې حدیث شریف نه دوه خبرې په خاص توگه معلومې شوي. یوه دا چه د یوې گناه د کولو د وجې یو مسلمان کافر یا د اسلام نه خارج نه دې گنړل پکار. بل دا چه د مذکوره ارشاد زیات تعلق د ائمه جور سره دې هم په دې وجه د مذکوره در یو خبرو د ذکر کولو نه پس حضور پاک او فرمائیل چه د جهاد د احکم به زما د بعثت نه د دجال پورې خامخا جاری وی که ائمه عدل سره او کړې شی یا د ائمه جور په ملگرتیا کیدو کښې کول وی. په دې وجه امام ابوداؤد رحمته الله علیه د احادیث د مذکوره عنوان لاندې راوړې دې او زموږ د حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه رائي هم دغه ده چه د عدم تکفیر اهل قبله تعلق په اصل کښې امراء او حکمرانانو سره دې چه د هغوی پوره تابعداری ضروری ده او ترکومې پورې چه د هغه نه څه بنکاره کفر داسې اونه وینی چه د هغې په کفر کیدو باندې د قرآن او حدیث په رنړا کښې دلیل او ثبوت موجود

وی د هغې خلاف بغاوت کول جائز نه دی. لکه چه د بخاری شریف او مسلم شریف احادیثو کښې نقل دی. د دې نه دا هم معلومه شوه چه داسې ښکاره کفر که چرې په چا کښې اولیدلې شی نو بیا د دې ضرورت باقی نه پاتې کیږي چه هغه قائل کولو سره بې جوابه هم کړې شی یا د هغه د ښکاره قولی یا فعلی کفر او شرک باره کښې د هغه نه تاویل معلوم کړې شی (ځکه چه د هغه معامله د دغه کتونکو اهل علم او نظر په فیصله او راتې باندې محمول کړې شوي ده د چا نظر چه د قرآن او حدیث په دلائلو او براهینو باندې حاوی وی. د یو گناه د وجې د عدم تکفیر خبره امام ترمذی رحمته الله علیه ابواب الایمان کښې باب: ما جاء لا یؤمن الیوان وهو مؤمن لاندې اختیار کړې ده د کوم حواله چه حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه د اکفار الملحدين په حاشیه کښې ورکړې ده.

حضرت رحمته الله علیه دا مغالطه هم لږې کړه چه ډیرو جاهلانو د امام اعظم رحمته الله علیه طرف ته هم د عدم تکفیر اهل قبله خبره مطلقاً منسوب کړې ده حالانکه محقق ابن امیر الحاج رحمته الله علیه په شرح تحریر کښې د امام صاحب رحمته الله علیه قول هم "ولانکفر اهل القبلة بذنوب" نقل کړې دي. او د هغوی دا ارشاد د علامه نوح آفندی رحمته الله علیه د تحقیق مطابق صرف د معتزلو او خوارجو د تردید د پاره دي (چه خوارج د کبیره گناه د وجې نه مسلمان ته کافر وائی او معتزله هغوی د ایمان نه خارج او مخلد فی النار گرځوی. لیکن مونږ اهل سنت والجماعت نه هغه ته د کبیره گناه د وجې کافر وایو او نه ئی د اسلام نه خارج او مخلد فی النار گنځو بلکه مسلمان او د مغفرت لائق ئی منو). د امام صاحب رحمته الله علیه طرف ته غلطه خبره ځکه هم منسوب شوه چه ټولو د امام صاحب رحمته الله علیه قول د "منتلی" په حواله بغیر د "بذنوب" نه نقل کړې دي. مثلاً په شرح مقاصد او مسابره وغیره کښې بغیر د "بذنوب" د قید موجود وو او هم په دې وجه حافظ ابن تیمیه رحمته الله علیه هم په خپل کتاب الایمان کښې لیکلی دی چه کله مونږ دا وایو چه اهل سنت په دې خبره باندې متفق دی چه د گناه د وجې یو مسلمان ته کافر اونه وائیلی شی نو د دغه گناه نه مراد زنا، شراب څکل وغیره گناهونه دی. علامه نوری رحمته الله علیه هم په شرح عقیده الطحاویه کښې د دې پوره وضاحت کړې دي او لیکلی ئی دی چه د "بذنوب" قید ښائی چه د عقیدې د فساد د وجې به ورته خامخا کافر وئیلی شی. (نقله الملاء علی قاری ل شرح الفقه الاکبر، ص: ۱۹۶)

خلاصه داده چه: ① د عدم تکفیر اهل قبله حکم د غیر ضروریات دین او غیر قطعی الثبوت امورو سره متعلق دی.

② د حکم عدم تکفیر اهل قبله تعلق د امر او حکمرانانو سره دي.

③ د مذکوره حکم تعلق د ذنوب سره دي نه چه د عقائدو او ایمانیاتو سره.

مونږ د اکفار الملحدين د مضامینو خلاصه پورته پیش کړې ده. باقی علماؤ او اهل تحقیق او نظر لره د پوره کتاب مطالعه کول پکار دي. گڼی د لږې نه به هغوی هم دا خیال گوی چه

دارالتکفیر: والوبه هسی بی تحقیقه څه لیکلی لوستلی وی. "والناس أعداء لما جهلوا"

دایمان، اسلام او ضروریات دین تشریح: د قرآن، حدیث او اجماع نه ثابت شوي ټول امور

غیبیه اود طاعت اعمال منل ایمان دې اود اعمالو ادا کول اسلام دې. بیا دې ټول ثابت شوی امور و ته د دین ضروریات وائی اود دې نه انکار یا تاویل باطل کفر دې. حضرت مجاهد رضی الله عنه او قتاده رضی الله عنه د آیت: **(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً)** (بقره) په تفسیر کښې فرمائیلی دی چه دا آیت مبارک مسلمانانو ته د شریعت محمدیه د هر یو جز د طاعت د التزام دعوت و رکوی که هغه فرائض وی یا مستحبات، واجب علی الأیمان وی یا واجب علی الکفایه. که چرې فرض عین وی نو د فرضیت په اعتقاد سره به د هغې ادا کول هم فرض وی او که چرې مستحبات وی نو د هغې د استحباب عقیده به لازم وی او عمل به نی صرف د مستحب په درجه کښې وی.

غرض دا چه د کومو څیزونو هم په دین کښې داخلیدل ټولو ته معلوم شوی دی هغه ټول په ایمانیات کښې داخل دی ځکه چه ایمان د رسول الله صلی الله علیه و آله کاملې او مکملې تابعداری کولو نوم دې. حضرت شاه صاحب رضی الله عنه د دین د ضروریاتو د تشریح نه پس فرمائی: مثلاً -

① مونځ کول فرض دی اود دې د فرض کیدو عقیده هم فرض ده او مونځ زده کول هم فرض دی اود فرض نه ځان ناواقفیت یا د دې نه انکار کفر دې.

② مساوک کول سنت دی مگر د دې د سنت کیدو عقیده فرض ده اود دې د مسنون کیدو نه انکار کفر دې. د دې علم حاصلول سنت دی ناخبري د محرومتیا سبب دې او په دې باندي عمل نه کول د عتاب نبوی او د ترک سنت د درجې د عذاب سبب دې.

د دې د مسنون کیدو انکار ځکه کفر دې چه د دې په معمولات نبوی کښې کیدل ټولو عامو او خاصو ته معلوم دی او کوم څیز هم چه د دې درجې وی هغه د دین په ضروریاتو کښې داخل دې. حضرت شاه عبدالعزیز رضی الله عنه هم په خپله فتاوی کښې پوره تفصیل سره د ایمان او کفر بحث ذکر کړې دې. هغوی فرمائی کوم سرې هم چه د دین د ضروریاتو نه انکار کوی هغه اهل قبله (او مسلمان) پاتې کیږی نه ځکه چه د دین ضروریات هم هغې ته وئیلی شی چه د کتاب الله او احادیث متواتره او د اجماع امت نه ثابت شوی دی. د دې دریوارو په ذریعه چه څومره هم عقائد او اعمال، فرض نفل وغیره ثابت دی هغه ټول منل ضروري دی. بیا عقائد پیژندل مستحب او عمل به هم صرف د مستحب په درجه کښې وی. لیکن د دین د ضروریاتو نه د یو څیز انکار به هم کفر وی.

د دین د ضروریاتو تفصیل: په دې لاندې حقیقتونو باندي ایمان او یقین ساتل د یو مؤمن د پاره ضروری دی:

① د الله تعالی وجود سره د ټولو صفاتو د کمال په داسې شان چه هغه د خپل ذات او صفاتو عالیو په لحاظ سره یو، بې مثال او ازلی، ابدی دې. اود صفات عیوب او نقصان، د مخلوق د صفاتو نه د هغه ذات سبحانه و تعالی منزّه او مبرا دې.

② هدوټ عالم: چه د الله تعالی نه سوا مخکښې هیڅ نه وو. د هغه نه سوا ټول موجودات عالم (علوی او سفلی) د هغه د قدرت او ارادې لاندې موجود او پیدا شوی دی.

۴) په قضاء او قدر باندې ایمان: چه تراوسه پورې څه په دنیا کښې شوی دی یا اوس کیږي او یا به راتلونکي وخت کښې کیږي هغه ټول د الله تعالی د ازلي علم مطابق دی. او هم دهغه په اراده او قدرت کامله سره ظهور او وجود حاصلوی. او بندیگان چه دکومو اعمالو مکلف جوړ کړي شوي دی دهغه د پاره بندیگانو ته هم په اندازه د ضرورت اختیار او اراده ورکړي شوې ده. یعنی بنده نه صرف مجبور دي او نه مختار مطلق او په کومه درجه کښې چه هم هغه ته اختیار او اراده ورکړي شوې هم دهغه اندازې د اعمالو جزا او سزا ورله مقرر کړي شوې ده. کوم چه سراسر انصاف دي. په دي وجه د دي خلاف عقیده لرل چه بنده ته هېڅ هم اختیار نشته یا هغه په مکمل توگه سره مختار مطلق دي دواړه خبرې د ایمان خلاف او کفر کښې داخل دي.

۵) فریښتي، پیریان او انسانان دهغه د ټولو نه اهم مخلوقات دي.

۶) بنیادم ته ئی په خپلو ټولو مخلوقاتو باندې عزت ورکړي دي او دي ئی په دنیا کښې خپل خلیفه جوړ کړي دي او د زمکې او آسمان ټول خیزونه ئی دده د پاره مسخر کړل.

۷) د بنیادمونه ئی انبیاء علیهم السلام منتخب کړل او هغوی ئی د نبوت په شرف او رسالت ورکولو سره ئی د جناتو او انسانانو د هدایت دپاره راوړلیرل.

۸) د هدایت او نیغې لار خود ئی د پاره ئی د وحی سلسله قائمه کړه او کتابونه ئی نازل کړل مثلاً تورات، زبور، انجیل او قرآن مجید.

۹) د انبیاءو علیهم السلام شمیر الله تعالی ته معلوم دي. دا سلسله په آخری پیغمبر سرور د عالم افضل الرسل حضرت محمد ﷺ باندې ختمه شوه. د حضور پاک نه پس به دنیا ته یو نوې نبي نه راځي.

۱۰) په آخره زمانه کښې به حضرت عیسیٰ علیه السلام د آسمان نه راکوزیدو سره د دین محمدی تائید او تقویت کوي. هغه آسمان ته ژوندې او چت کړي شوې وو او دي وخت کښې هم هلته ژوندې موجود دي او دنیا ته په راتلو سره به خپل مفوضه یعنی ورکړي شوي کارونو د پوره کولو نه پس وفات کیدو سره د رسول الله ﷺ په روضه مطهره مقدسه کښې دفن کیږي. د قرآن مجید او صحیح متواتر احادیثو نه دا ټولې خبرې ثابتې دي.

۱۱) د انبیاءو علیهم السلام نه پس مرتبه د حضور پاک د صحابه کرامو ده. د هغوی نه پس د تابعینو، تبع تابعینو، علماؤ او د امت د اولیاؤ درجې دي.

۱۲) د انبیاءو علیهم السلام د کومو معجزاتو ثبوت چه د قرآن او حدیث نه شوې دي هغه ټولې صحیح بغیرد څه تاویل نه منل ضروري دي.

۱۳) د شریعت محمدی ټول احکام کوم چه د قرآن مجید، حدیث، اجماع او قیاس نه ثابت دي دهغه ټول منل او درجه په درجه په هغې باندې عمل کول ضروري دي. یعنی فرائض، واجبات، سنن او مستحبات د دین ټول هم د دین جز منل او یقین کول خو ضروري دي. باقی د عمل په لحاظ فرض باندې عمل کول فرض (په واجب باندې عمل کول واجب، په سنت باندې عمل کول سنت او په مستحب باندې عمل کول، به مستحب وی وغیره. دغه شان د

نواهی او د منکراتو د دین حکم دې.

- ۱۳) د مرگ نه پس به هر سرې د آخرت په رومبې منزل کبسي مقیم وی کوم ته چه برزخ وانی.
- ۱۴) د قیامت د ورځې یقین، چه یوه ورځ به د الله تعالی په حکم سره ټوله دنیا، د زمکې او آسمان خیزونه فناه کیری.
- ۱۵) ورځ د جزاء یعنی د حساب کتاب ورځ چه د هر مکلف ټولو اعمالو جائزه اخستو سره به د جزاء او سزا حکم کولې شی.
- ۱۶) د جنت او دوزخ وجود حق دې. په جنت کبسي به د ابدی نعمتونو مستحق همیشه اوسیری او په دوزخ کبسي به د ابدی عذاب مستحق همیشه اوسیری او د چا د پاره به مرگ نه وی.

۱۷) د الله تعالی دمقربو او بزرگانو بندیکانو شفاعت به د گناهگارانو بندیکانو دپاره به د الله په اذن او اجازت کیری.

۱۸) په جنت کبسي به د الله تعالی د همیشه خوشحالی او د الله تعالی د دیدار دولت هم حاصلیری چه د ټولو نعمتونو نه به اوچت او غوره وی.

د کفر خبرې: پورته ذکر شوی ټول د دین ضروریات او کوم چه په نورو کتابونو دعقائدو او کلام کبسي په تفصیل سره درج دی په ټولو باندي ایمان او یقین ساتل د مؤمن د پاره ضروری دی او د یو خیز انکار هم د کفر په پوله کبسي د داخلولو دپاره کافی دی. مثلاً د الله تعالی د توحید یا یو صفت، یا د حدوث عالم نه انکار، او د جناتو او ملائکو د وجود، جنت، جهنم او معجزات وغیره یا د اسلام د احکامونه د یو نه انکار یا تاویل هم کفر دې. دغه شان د یو نبی د نبوت نه انکار یا د یو قرآنی آیت نه انکار او تحریف، یا د خاتم النبیین نه پس د یو نبی د نبوت اقرار، یا عالم قدیم گنرل، یا د الله تعالی، انبیاء او ملائکو باره کبسي د سپکاوی الفاظ استعمالول، او په چا کبسي د کفر خبرې موجودیدو باوجود هغه کافر نه گنرل، یا هغه ته کافر وئیلو کبسي شامل او تردد کول هم کفر دې. ځکه چه د دې نه ثابتیری چه هغه د کفر او ایمان په خبرو کبسي فرق نه کوی. والله اعلم. د نور تفصیل او دلائلو د پاره اکفار الملحدین او د کتب عقائدو کلام مطالعه دې او کرې شی. والله الموفق. (۱)

حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ۳۸۵]

۲۹۲ - حَدَّثَنَا نُعَيْمٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْبَارِكِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسِ (۲) بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أَمَرْتُ أَنْ أَقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. فَإِذَا قَالُوا هَذَا صَلَّوْا صَلَاتَنَا، وَاسْتَقْبَلُوا قِبَلَتَنَا، وَذَبَحُوا ذَبِيحَتَنَا، فَقَدْ حَرَمَتْ عَلَيْنَا دِمَاؤَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّهَا، وَجَسَابَتِهِمْ عَلَيَّ».

ترجمه: د حضرت انس بن مالک رضي الله عنه نه زوايت دې چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم ارشاد او فرمائیلو چه ماته

(۱) انوار الباری: ۱۲/۱۹۳-۱۷۹.

(۲) مرتخریجه نعت الحدیث السابق رقمه: ۳۹۱.

دخلقو سره د هغه وخته پورې د جنگ کولو حکم راکړې شوي دي تر کومې پورې چې هغوی لا اله الا الله اونه وائی. بیا چې کله هغوی دا او وائی او زمونږ په شان مونږ او کړی او زمونږ د قبلي طرف ته مخ کړی او زمونږ ذبیحه او خوری نو په مونږ باندې د هغوی خان او مال حرام شو، مگر په حق باندې او د هغوی حساب به الله تعالی ته حواله وي. تراجم رجال: په مذکوره حدیث شریف کښې ټول څلور رجال دي:

① نعیم بن عبد الله: دا ابو عبد الله نعیم بن حماد بن معاویه بن الحرث المروری رضی الله عنه دي. د دوی

تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: دفع السواک الی الاکبر کښې تیر شوی دی. (۱)

② ابن المبارک: دا مشهور امام عبد الله بن مبارک رضی الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباری،

کتاب بدم الوضوء پنځم حدیث لاندې تیر شوی دی. (۲)

③ حمید الطویل: دا ابو عبیده حمید بن ابی حمید الطویل الخزاعی البصری رضی الله عنه دي. د

دوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: خوف المؤمن من أن یحبط عمله وهو لا یسعد دویم حدیث لاندې تیر شوی دی. (۳)

④ انس بن مالک: دا مشهور او معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضی الله عنه دي.

د دوی په احوالو باندې تفصیلی کلام کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأهله ما یحب لنفسه لاندې تیره شوی ده. (۴)

شرح حدیث: «أَمِرْتُ أَنْ أَكَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا إِلَهًا إِلَّا اللَّهُ» یعنی ماته حکم راکړې شوي دي چې زه دخلقو سره جنگ او کرم تر هغې پورې چې هغوی (د توحید کلمه) لا اله الا الله اونه وائی.

أمرت صیغه دمجهول ده، مراد د دې نه دا دي چې الله تعالی ماته حکم راکړې دي. دم معروف په ځانې د مجهول صیغه ځکه استعمال کړې شوه چې فاعل مشهور او معروف دي او په دې کښې فاعل (د الله تعالی) تعظیم هم دي (۵). الناس نه مراد مشرکین دي. (۶)

د توحید اقرار سره د رسالت اقرار د نه ذکر کولو حکمت: حتی بقولوا تردې چې هغوی د توحید دکلمې اقرار او کړي. دلته د توحید اقرار سره د رسالت د اقرار ذکر اونه کړې شو. د دې وجه داده چې دلته کنایه د رسالت اقرار ذکر دي. هغه داشان چې مونږ په محمدی طریقې ادا کول، د قبلي طرف ته مخ کول، په محمدی طریقې باندې ځناور ذبح کول، ټول امور د رسالت د

(۱) کشف الباری: کتاب الوضوء، باب: دفع السواک الی الاکبر.

(۲) کشف الباری: ۴۶۲/۱.

(۳) کشف الباری: ۵۷۱/۲.

(۴) کشف الباری: ۴/۲.

(۵) عمدة القاری: ۱۸۸/۴، الکواثر الجاری: ۷۸/۲، إرشاد الساری: ۵۴/۲.

(۶) عمدة القاری: ۱۸۸/۴، الکواثر الجاری: ۷۸/۲، إرشاد الساری: ۵۴/۲.



اقرار طرف ته اشاره کونکی دی. خکه چه دا در یواړه امور د شریعت محمدی ﷺ خواص دی. دا خکه چه صرف لاله الا الله و یونکی د یهودو مونخ د رکوع نه خالی وو او د هغوی قبله د کعبې نه علاوه بله وه او د هغوی ذبیحه به هم زموږ د ذبیحې په شان نه وه. نو صرف د لاله الا الله اقرار هم د رسالت اقرار هم دی.

لکه چه خوک او وائی چه ما د (الْمَرْءُ ذَلِكَ الْكِتَابُ) قراءت او کړو نو د دې نه مراد صرف هم دا الفاظ نه وی بلکه د پوره سورت قراءت مراد وی. چنانچه اوس به وئیلی شی چه د یوکس دې زیانې وینا سره د هغه فعل ملاؤ شو یعنی کله چه خلق په ژبه باندي دا کلمه او وائی او فعل سره د دې کلمې معنی ثابته کړی نو د هغه د خان او مال حرمت به د نورو مسلمانانو په شان شی (۱)

قوله: "صلواتنا" نه مراد د رکوع او سجدي والا مونخ دې (۲)

قوله: "ذبحوا ذبیحتنا" په مصری نسخو کبسي په دې خائی کبسي هم داسې دی یعنی "ذبحوا" لیکن په هندي نسخو کبسي د "ذبحوا" په خائی "اکلوا" دې (۳) هم دغه وجه ده چه په لافع الدراري کبسي په دې مقام باندي "قوله: ذبیحتنا" وئیلو سره تشریح کړې شوي ده (۴)

علامه برماوی رحمته الله علیه لیکي چه تقاضا خودا ده چه دې خائی کبسي "اکلوا" وې نه چه "ذبحوا". چنانچه دې نه مراد دادې چه "ذبحوا مثل ذبیحتنا" (۵)

قوله: "ذبیحتنا" نه مراد "مذبحتنا" دې یعنی ذبح کړې شوي خناور، دغه شان "ذبیحة" د فعيلة په وزن باندي "مذبحوم" په معنی کبسي دې نو عبارت به داسې شی: "ذبحوا المذبحوم مثل مذبحنا" (۶)

یولغوی اشکال او د هغې جواب: په دې مقام باندي علامه کرمانی رحمته الله علیه یو اعتراض او د هغې جواب لیکي چه که خوک اعتراض او کړی چه "فعیل" کله د مفعول په معنی کبسي وی نو په هغې کبسي مذکر او مؤنث دواړه برابر وی نو په دې خائی کبسي چه (فعیل د مفعول په معنی کبسي دې نو) دې سره "التاء" ولې یو خائی کړې شوي ده؟ (کومه چه صرف په مؤنث باندي دلالت کوی).

نو د دې جواب دادې چه داسې په دې لفظ باندي د اسمیت د غلبې د وجه نه کړې شوی دی

(۱) عمدة القاری: ۱۸۸/۴، ارشاد الساری: ۵۴/۲.

(۲) لامع الصبیح شرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۳۳/۳، ارشاد الساری: ۵۴/۲.

(۳) صحیح البغاری: ۵۶/۱، قدیمی: ۱۱۷/۱، الطاف سنز کراتشی.

(۴) لامع الدراری: ۲۶۱/۲.

(۵) لامع الصبیح شرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۳۳/۳.

(۶) لامع الصبیح شرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۳۳/۳، عمدة القاری: ۱۸۸/۴، تحفة الباری: ۹۶/۲.

دویمه خبره داچه، د فعیل په وزن کنبی مذکر او مؤنث هغه وخت برابر وی کله چه دا د موصوف سره ذکر وی، او چه کلیه دا لفظ د موصوف نه بغیر ذکر وی نو هغه وخت په دې کنبی مذکر او مؤنث برابر نه وی (۱).

قوله: لَقَدْ حَرَمْتَ عَلَيْنَا دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ یعنی د دوی وینې او د دوی مالونه به په مونث باندې حرام شی. "حرمت"، د حاء زبر او راه پیش سره دې یعنی کرم یکریم د باب نه، په دې کنبی دویم لغت داهم دې چه دا د باب تفعیل نه د فعل ماضی مجهول صیغه "حرمت" وی. علامه سیوطی رحمته او ابن حجر رحمته اول ذکر شوی ته ترجیح ورکړې ده (۲)، او علامه برماوی رحمته دویم ته (۳) لیکن په دې باندې حافظ ابن حجر رحمته رد کړې دې او هم اول رانې شی راجح گرځولې ده (۴).

قوله: إِلَّا بِحَقِّهَا: مگر په حق باندې. علامه عینی رحمته لیکي: أَمْ: إِلَّا بِحَقِّ الدَّمِ وَالْأَمْوَالِ (۵) یعنی که چرې په داسې کس باندې د مال یا خان تاوان ارقصاص واجب شو نو هغه به د هغه نه خامخا وصول کولې شی او دا وصول کول به زموږ هغه سره دکړې شوې وعدې او ذمې خلاف نه متصور کیږي.

(۱) شرح الکرمانی: ۵۵/۴. د دې اعتراض جواب کوم تفصیل چه په عمده القاری کنبی نقل کړې شوې دې هغه دا شان دې: "فإن قلت: 'فعل' إذا كان بمعنى المفعول يستوي فيه المذكر والمؤنث. فلاتدخله التاء. قلت: لما زال عنه معنى الوصفية وغلبت، الاسمية عليه، واستوى فيه المذكر والمؤنث. فدخله التاء. وقد يقال: إن الاستواء فيه عند ذكر الموصوف معه وأما إذا انفرد عنه منه فلا". (عمده القاری: ۱۸۸/۴) په دې عبارت کنبی یوه جمله "واستوى فيه المذكر والمؤنث" (کومه چه د عمده القاری په نورو نسخو کنبی هم دغه شان ده) محل نظر ده، ځکه چه په دې مقام باندې علامه عینی رحمته د معترض جواب ورکوي چه معترض صاحب ستا بیان کړې شوې قاعده تیک ده لیکن دا هغه وخت دی کله چه "فعل" سره د دې موصوف هم ذکر کړې شوې وی چنانچه په داسې صورت کنبی په دې باندې تاء نه داخلېږي. لیکن چه کله "فعل" نه معنی د وصفیت زائل شی او په دې باندې اسمیت غالب راشی (لکه څنگه چه زموږ مباحث عنها عبارت کنبی دې) نو په دې باندې تاء داخلېږي. چنانچه "غلبت الاسمیه علیه" نه پس عبارت "واستوى فيه المذكر والمؤنث" د جواب او د قاعدې مطابق نه جوړېږي. په دې وجه چه دلته خود استوي نفی کول غواړی نو بیانی دلته دا څنگه ذکر کړو؟ نو یا خو به داسې وئیلی شی چه دا د علامه عینی رحمته یا د ناقلینو او کاتبینو وغیره د طرف نه تسامح شوې ده یا یو د لرې تاویل کولو سره به داسې وئیلی شی چه د دې جملې نه مراد دادې چه کله د "فعل" په وزن کنبی اسمیت غالب راشی نو هغه وخت په دې کنبی مذکر او مؤنث دواړه د حکم په اعتبار سره برابر دی چه په دې کنبی به هر یو مستقل حکم لری په دواړو کنبی به یو د بل تابع نه وی. بلکه د حکم په اعتبار سره هر یو په مستقل کیدو کنبی برابر دې. بله دا چه دې نه پس جمله "فدخله التاء" باندې هم فاء نه دی داخلول پکار ځکه چه دا جمله دلما جواب دې او دلما په جواب باندې فاء نه داخلېږي.

(۲) التوضیح للسيوطی: ۴۸۴/۳، فتح الباری: ۶۴۴/۱.

(۳) للامع الصبح شرح الجامع الصحيح للبرماوی: ۱۳۴/۳.

(۴) فتح الباری: ۶۴۴/۱.

(۵) عمده القاری: ۱۸۸/۴.

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ لیکتی: آی: بحق الکلمة والإسلام\* اود حق اسلام مطلب دادی چه که چری خوک داسی کار او کری په کوم باندی چه په اسلام کنسی حفظ دم وغیره نه وی مثلاً خوک هغه قتل کری یا محصن سره زنا او کری نو رومی سړی به قصاصاً قتلولی شی او دویم به رجم کولی شی. (۱)

قوله: **وَجَسَّاهُمْ عَلَى اللَّهِ**: اود هغوی حساب الله تعالی ته حواله دی. حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ په نیز ددی جملې تعلق د منافقانو سره دی چه د هغوی حساب الله تعالی ته حواله دی یعنی د روایت نه صفا معلومیری چه کوم سړی په ظاهری توگه د اسلامی کلمې اقرار او کری، اسلامی شعائر بنکاره کری مثلاً صرف په خلی او وانی چه زه مسلمان شوم یا ایمانی کلمه او وانی نو اوس ده ته تعرض جائز نه دی البته د ده معامله الله تعالی سره ده چه د هغه په زړه کنسی منافقت دی که اسلام. ځکه چه د زړه حالت خو هم هغه پیژنی. (۲)

قوله: **عَلَى اللَّهِ** علی لفظ په دی مقام باندی صرف د تشبیه د پاره دی چه د یو امر د وقوع په تحقق کنسی دا داسی دی لکه چه د الله په ذمه څه خیز لازم وی گنی په حقیقت کنسی خو په الله باندی هېڅ خیز لازم نه دی. یا بیا په دی ځای کنسی **عَلَى** د لام په معنی دی یا **إِلَى** په معنی دی. چنانچه معنی به دا شی چه **حَسَابَهُمْ مَوْكُولٌ أَوْ مَفْرُوضٌ إِلَى اللَّهِ** چه د دوی حساب الله تعالی ته حواله دی. (۳)

علامه خطابی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه ددی باب رومی حدیث په دی باره کنسی وو چه کوم کس شعائر اسلام بنکاره کونکې وی نو هغه ته څه تعرض مه کوئی نه د هغه په ځان کنسی او نه د هغه په مال کنسی. تردی چه د دغه کس نه د دین د شعائرو خلاف څه کار اونه شی. او دویم حدیث په دی باره کنسی دی چه کوم کس د شعائر دین منونکې نه وی نو هغه پسې شی تردی چه هغه دغه شرائط اومنی. (۴)

تعلیق: - ۲۱۳ قال ابن أبي مريم أخبرنا يحيى حدثنا حميد حدثنا انس عن النبي - صلى الله عليه وسلم -

د تعلیق تخریج: ددی تعلیق په تخریج کنسی حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ هدی الساری کنسی لیکتی: ((روایة ابن أبي مريم عن يحيى هو ابن أيوب وصلها محمد بن نصر المروزي في كتاب "تعظيم الصلاة"، والبيهقي

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۳۹/۲.

(۲) سراج القاری: ۴۲۷/۲-۴۲۶.

(۳) عمدة القاری: ۱۸۸/۴، إرشاد الساری: ۵۴/۲، مرقاة المفاتیح، کتاب الإیمان، رقم الحدیث: ۱۱، ۱/۱۵۱.

نوټ: د مذکورہ حدیث د تشریح سره متعلقه ډیر اہم مباحث کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: فإن تابوا وأقاموا الصلاة..... کنسی تیر شوی دی. او گورئی: کشف الباری: ۱۵۲/۲-۱۳۶.

(۴) أعلام الحدیث للخطابی: ۳۷۷/۲.

وابن منده في الإيمان»<sup>(١)</sup>  
يعنى دا تعليق موصولاً المروزي، البيهقي او ابن منده رحمهم الله بيان كرى دي. محمد بن نصر بن الحجاج المروزي رحمهم الله به خپل كتاب "تعظيم قدر الصلاة" كنبسي په دي سند سره مذكوره تعليق موصولاً نقل كرى دي: «حدثنا محمد بن يحيى ثنا ابن أبي مریم أن يحيى يعنى: ابن أيوب، قال: أخطبنا حميداً أنه سمع أنس بن مالك، يقول: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: أمرت أن أقاتل الناس حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله، وأن محمداً رسول الله، فإذ شهدوا أن لا إله إلا الله، وأن محمداً رسول الله، وصلوا صلواتنا، واستقبلوا قبلتنا، وأكلوا ذبيحتنا، حرمت علينا أموالهم ودماءهم إلا بحقها، له ما للمسلمين وعليه ما عليهم»<sup>(٢)</sup>

او امام بيهقي رحمهم الله په دي لاندینی سند سره مذكوره تعليق موصولاً نقل كرى دي: «أخبرنا علي بن محمد بن عبد الله بن بشران العدل ببغداد، أنها أبو الحسن علي بن محمد المصري، ثنا يحيى بن أيوب، ثنا سعيد بن أبي مریم، ثنا يحيى بن أيوب، حدثني حميد أنه سمع أنس بن مالك رضى الله عنه يقول: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: "أمرت أن أقاتل المشركين حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله وأن محمداً رسول الله، فإذا شهدوا أن لا إله إلا الله وأن محمداً رسول الله، وصلوا صلواتنا، واستقبلوا قبلتنا، وأكلوا ذبيحتنا، حرمت علينا أموالهم ودماءهم إلا بحقها، له ما للمسلم، وعليه ما على المسلم»<sup>(٣)</sup>  
او ابن منده رحمهم الله به خپل كتاب الإیمان كنبسي د مذكوره تعليق موصولاً چه كوم تخريج كرى دي هغه دادي: «أخبرنا صبر بن الربيع بن سليمان، ثنا يحيى بن أيوب المصري، حدثني حميد الطويل أنه سمع أنس بن مالك يقول: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: "أمرت أن أقاتل المشركين حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله وأن محمداً رسول الله، وصلوا صلواتنا، واستقبلوا قبلتنا، وأكلوا ذبيحتنا، حرمت علينا أموالهم ودماءهم إلا بحقها، لهم ما للمسلمين، وعليهم ما على المسلمين»<sup>(٤)</sup>  
د تعليق و حال: په مذكوره تعليق كنبسي خلور رجال دي:

① ابن أبي مریم رحمهم الله: دا ابو محمد سعيد بن الحكم بن محمد بن سالم جمحي المصري رحمهم الله  
دي: د دوى تفصیلی احوال كشف الباري، كتاب العلم، باب: من سمع شيئاً فراجع حتى يعرفه كنبسي تیر شوى دي.<sup>(٥)</sup>

(١) هدى السارى، الفصل الرابع فى بيان السبب فى إيراد الأحاديث المعلقة، ص: ٣٠.

(٢) تعظيم قدر الصلاة للمروزي، أول فريضة بعد الإخلاص بعبادة الله، رقم الحديث: ١٠، ٩٢/١.

(٣) سنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب: لا يأت مسلم بكافر لقول، رقم الحديث: ٥٣٤٧، ٩٢/٣.

(٤) الإیمان لابن منده، ذكر الأخبار التي جاءت عن النبي صلى الله عليه وسلم الدالة على أساس الإیمان وشعبه، رقم

الحديث: ١٩١، ٣٥٥/١.

(٥) كشف الباري: ١٠٦/٤.

⑤ بحسب رحمته: دا يحيى بن ايوب الفافقى المصرى رحمته دي. د دوى تفصيلى احوال كشف

البارى، كتاب الوضوء، باب: الهوايق والمخلط ونحوه فى الثوب كنبى تير شوى دى. (۱)

⑥ حميد رحمته: دا ابو عبيده حميد بن ابى حميد الطويل الخزاعى البصرى رحمته دي. د دوى

احوال كشف البارى، كتاب الايمان، باب: خوف المؤمن من أن يحبط عمله وهو لا يشعر دوىم حديث لاندى تير شوى دى. (۲)

⑦ انس بن مالك رحمته: دا مشهور او معروف صحابى رسول حضرت انس بن مالك بن نضر

خزرجى انصارى رحمته دي. د دوى تذكرة كشف البارى، كتاب الايمان، باب: من الايمان أن يحب

لأخيه ما يحب لنفسه لاندى تيره شوى ده. (۳)

د تعليق مقصد: امام بخارى رحمته په دي باب كنبى دخالد بن حارث روايت ذكر كړې وو كوم

چه د حميد الطويل رحمته نه نقل كونكي وو. اوس په دي تعليق كنبى نى د يحيى بن ايوب

رحمته روايت د حميد الطويل رحمته نه ذكر كولو سره متابعت كړې دي او په دي كنبى نى د حميد

رحمته د حضرت انس رحمته نه د سماع تصريح كړې ده. (۴)

امام بخارى رحمته دا تعليق ځكه ذكر كړې دي چه د حميد الطويل رحمته متعلق د تدليس قول نقل

دي. او هغوى د ترجمه الباب په دوىم روايت كنبى د حضرت انس بن مالك رحمته نه په صيغه د

عن نقل كړې دي او د مدلس په عنعنه كنبى د تدليس احتمال وي. په دي وجه د حديث

ثابتولو دپاره نى دا روايت ذكر كړو. (۵)

دوىم تعليق: وَقَالَ عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمِيدٌ قَالَ سَأَلَ مَيْمُونُ بْنُ سِيَّاهِ السِّنِّيَّ قَالَ يَا أَبَا حَمْزَةَ مَا يَجْرِمُ دَمَ الْعَبْدِ وَمَالَهُ فَقَالَ مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاسْتَقْبَلَ قِبَلَتَنَا، وَصَلَّى صَلَاتَنَا، وَأَكَلَ ذَبِيحَتَنَا، فَهُوَ الْمُسْلِمُ، لَهُ مَا لِلْمُسْلِمِ، وَعَلَيْهِ مَا عَلَى الْمُسْلِمِ.

د تعليق ترجمه: حميد رحمته او وئيل چه ميمون بن سياه رحمته د حضرت انس بن مالك رحمته نه

تپوس او كړو چه اي ابو حمزه كوم يو څيز د سزى خان او مال حراموى؟ نو هغه جواب وركړو

چه كوم سړى د دي خبرې گواهي وركړى چه د الله نه سوا بل څوك معبود نشته، اوزمونږ د

قبلې طرف ته مخ كړى، زمونږ په شان مونږ او كړى، اوزمونږ د ذبح كړې شوې ځناور غوښه

او خورى نو هغه مسلمان دي كوم چه د مسلمانانو حق وي هم هغه دده د پاره دي او كوم چه په

مسلمانانو باندي لازم دي هم هغه په ده باندي لازم دي.

(۱) كشف البارى، كتاب الوضوء، باب: الهوايق والمخلط ونحوه فى الثوب.

(۲) كشف البارى: ۵۷۱/۲.

(۳) كشف البارى: ۴/۲.

(۴) عمدة القارى، ۱۸۸/۴.

(۵) تقرير بخارى شريف، ۱۴۰/۲، الكنز المتوارى، ۷۹/۴.

د تعلیق رجال: د ذکر شوی تعلیق ټول څلور رجال دي:

① علی بن عبد الله: دا ابو الحسن علی بن عبد الله بن جعفر بن نجیح سعدی بصری رضی الله عنه دی. د ابن المدینی په نوم سره مشهور دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: المفهم فی العلم کبني تیر شوی دی. (۱)

② خالد بن الحارث: د دوی پوره نوم خالد بن الحارث بن عبید بن سلیمان بن عبید بن سفیان بن مسعود رضی الله عنه دی. د دوی کنیت ابو عثمان البصری دی. د سلیمان بن حارث رور دی. د تمیم قبیلې شاخ بنو العنبر د شاخ بنو الهجیم سره تعلق لري.

د دوی د استاذانو او مشائخو یو اوږد فهرست دی. د هغوی نه حمید الطویل، حاتم بن ابی مغیره، سعید بن ابی عروبه، سفیان الثوری، شعبه بن الحجاج، عبد الله بن عون، عبد الحمید بن جعفر وغیره رحمهم الله هم دي. او د دوی نه روایت کونکو کبني علی بن وهاب الحجبي او عمرو بن علی وغیره رحمهم الله او یو لونی جماعت دي.

یحیی بن سعید رضی الله عنه وائی چه ما د سفیان او خالد بن الحارث نه بهتر بل څوک نه دي لیدلي. ابوزرعه رضی الله عنه فرمائی چه د هغوی باره کبني وثیلی شی: خالد الصدوق. ابو حاتم رضی الله عنه فرمائی: امام ثقة. امام نسائی رضی الله عنه فرمائی: ثقة ثبت. په ۱۲۰ هجری کبني پیدا شوي دي او ۱۸۶ هجری کبني وفات شوي دي. (۲)

③ مهمون بن سیاه: د دوی پیژندگلود کشف الباری هم دي جلد کبني، باب: فضل استقبال القبلة لاندې تیره شوي ده. (۳)

④ انس بن مالك: دا مشهور او معروف صحابي رسول حضرت انس بن مالك بن نضر خزرجی انصاری رضی الله عنه دی. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب الايمان، باب: من الايمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه لاندې تیره شوي ده. (۴)

د تعلیق شرح: «يا أبا حمزة» دا د حضرت انس بن مالك رضی الله عنه کنیت دي. (۵)  
فوله: «وما يحرم؟» د اصیلی په روایت کبني د دې جملې په شروع کبني «و» نشته دي. د اثبات په صورت کبني په دې «واو» کبني دوه احتمالات دي. یو دا چه استینافیه وي او د «ما يحرم»

(۱) کشف الباری: ۲۹۷/۳.

(۲) تهذیب الکمال: ۳۸/۸-۳۵، الطبقات الكبرى لابن سعد: ۲۹۱/۷، سیر اعلام النبلاء: ۱۲۶/۶، تهذیب التهذیب: ۸۲/۳، إكمال تهذیب الکمال للمغلطانی: ۳۰۹/۱.

(۳) کشف الباری، کتاب الصلاة، باب: فضل استقبال القبلة، ص: ۱۸۰.

(۴) کشف الباری: ۴/۲.

(۵) عمدة القاری: ۱۸۹/۴، إرشاد الساری: ۵۵/۲.

نه کلام مستانفه وی. او دویم احتمال د "واؤد عاطفه" کیدو دې. په دې صورت کښې به ددې معطوف علیه "شین" محذوف وی. یعنی عبارت به داسې وی: "سأل عن شین ثم قال: وما یحرم؟" (۱)

یواشکال او د هغې جواب: دلته دا اشکال دې چه جواب د سوال مطابق نه دې ځکه چه د حضرت انس رضی الله عنه نه د تحریم د سبب (یعنی کوم یو څیز د سرې ځان او مال حراموی) متعلق سوال کړې شوی وو. ددې په جواب هغوی "من شهد أن لا اله الا الله" او فرمائیل نوبسکاره خبره ده چه جواب د سوال مطابق نه شو؟

نو ددې جواب دادې چه حضرت انس بن مالک رضی الله عنه په اصولی توگه جواب ورکړو په دې معنی چه کوم سرې د شهادت د کلمې اقرار او کړی، زمونږ په طریقه باندې مونځ او کړی، زمونږ د قبلي طرف ته منځ کړی، او زمونږ ذبیحه استعمال کړی نو داسې سرې مسلمان دې او د مسلمان وینه بهیول او د هغه مال پسې لگیدل حرام دی. یعنی هغوی چه په کومه اندازه باندې جواب ورکړو د هغې نه پخپله پته اولگیدله چه کوم څیز د مسلمانانو ځان او مال حراموی. (۲)

قوله: ما للمسلم: مراد چه کومه منافع او فوائد مسلمانانو ته رسیږی هم هغه به دې مسلم ته ملاویږی.

قوله: ما على المسلم: مراد چه کوم تکلیف د مسلمانانو د پاره وی هم هغه به ددې مسلم د پاره وی. (۳)

د تعلیق مقصد: امام بخاری رحمه الله دا یو بل استاذ پیش کوی. وړاندې د هغوی استاذ په اول حدیث کښې عمرو بن عباس رضی الله عنه وو په دویم حدیث کښې نعیم رضی الله عنه وو او دلته د علی بن المدینی رحمه الله روایت بیانوی. هم ددې باب په رومبی حدیث کښې نبي د میمون بن سیاه رضی الله عنه روایت پیش کړې وو. دلته د هغه تقویت بیانول مقصود دې. هلته د میمون نه نقل کونکي منصور بن سعد رضی الله عنه وو او دلته حمید الطویل رضی الله عنه دې. په دې وجه دا د حمید روایت د منصور د روایت متابع دې. او دا دواړه د میمون رضی الله عنه نه روایت کوی دغه شان تائید اوشو او د سماع تصریح هم اوشوه. په رومبی روایت کښې عن انس بن مالک رضی الله عنه وو او دلته "سأل" دې نو دا سماع شوه. (۴)

(۱) فتح الباری: ۱/۴۵۶، عمدة القاری: ۴/۱۸۹، إرشاد الساری: ۲/۵۵.

(۲) فتح الباری: ۱/۴۵۶، عمدة القاری: ۴/۱۸۹.

(۳) عمدة القاری: ۴/۱۸۹، إرشاد الساری: ۲/۵۵.

(۴) عمدة القاری: ۴/۱۸۹، إرشاد الساری: ۲/۵۵.

## ۲- (۱) بَابُ قِبْلَةِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ وَأَهْلِ الشَّامِ وَالْمَشْرِقِ

«لَيْسَ فِي الْمَشْرِقِ وَلَا فِي الْمَغْرِبِ قِبْلَةٌ» لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ بِغَايِطٍ أَوْ بَنُونَ،

وَلَكِنْ شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا»

دترجمة الباب مقصد:

دهضرت شیخ الحدیث رحمته واثی: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چه ما بیان کری دی چه دامام بخاری رحمته توله گتیه دهغوی تراجم دی او ما دا هم بیان کری وو چه چونکه د امام بخاری رحمته وظیفه د استنباط طریقہ ده په دی وجه دتعلیم په لحاظ سره بخاری شریف په دریمه درجه کنسی دی. اگرچه د فضیلت په لحاظ سره د تولو نه مقدم دی او د بخاری تولا روایات صحیح دی. که چرته چا کلام کری دی نو غلطی کری دی. نو دهغوی د تراجمو

اثبات پخپله یو معركة الآراء خیز دی او بیا ما باب: "من بدأ بالعباد والطیب کنسی دا ونیلی وو چه خه تراجم داسی هم دی په کوم کنسی چه شراحو او مشانخود خپلی طبع مطابق کوشش کری دی. او بیا داهم نه ده معلومه چه د امام بخاری رحمته غرض ددی ابواب نه خه دی؟ اگرچه توجیه هر خانی کوی نو دلته به هم توجیه بیانوم خکه چه دا باب هم د هغه ابواب نه دی کوم چه معركة الآراء دی

حضرت امام بخاری رحمته فرمائی: "باب قبلة أهل المدينة وأهل الشام" د اهل مدینه قبله خو په جنوب کنسی ده خکه چه مکه د مدینې نه د جنوب طرف ته واقع ده او د اهل شام قبله هم جنوب کنسی ده. خکه چه شام د مدینې نه په شمال کنسی واقع دی تردی پورې خو هیخ اشکال نشته مگر وړاندې چه کوم "والمشرق" امام بخاری رحمته اضافه کری دی دا په هیخ شان سره نه صحیح کیږی. خکه چه د بعضی شارحینو راثی خودا ده چه دا دکاتب غلطی ده. اود بعضی شارحینو راثی داده چه دا اشکال هغه وخت کیږی چه کله "والمشرق" په جر سره اولوستلی شی او که چری دا "والمشرق" چه رفع سره اولوستلی شی او خبر شی محذوف اومنلی شی نو بیا هیخ اشکال نشته. په دی صورت کنسی به تقدیری عبارت داسی شی: "والمشرق بخلافهما" یعنی "قبلة أهل المشرق قبلة أهل المدينة والشام" مگر په دی توجیه باندې دا اشکال دی چه بیا په دی مخالفت کنسی د مشرق خه تخصیص دی؟ د مغرب قبله هم ددی دواړو خلاف ده. علامه عینی رحمته ددی جواب ورکوی چه دلته "والمغرب" محذوف دی، علی طریقه قوله تعالی: ﴿سَرَابِيلٌ تَقِيكُمُ الْحَرَّ﴾ ای: والبرد یعنی د: أحد المتقابلین په ذکر نی اکتفاء او کره. خکه چه دویم به په خپله په پوهه کنسی راشی مگر په دی مجموعه باندې دوه اشکالات

(۱) کشف الباری کنسی د الکتور مصطفی د ببا البغا چه کومه نسخه د متن په توگه بنیاد جوړ کری شوی دی د هغه نسخې مطابق ددی باب نمبر د "ابواب القبلة لاندې دویم دی. خو په نورو نسخو کنسی کوم چه فتح الباری، عمدة القاری او ارشاد الساری وغیره کنسی دهغی مطابق ددی باب نمبر ۲۹ دی.



راخی. یو خودا چه بیا دا ترجمه د بخاری رضی الله عنه د شان موافق نه پاتی کیږی ځکه چه دا خبره خو بالکل بنکاره ده چه کومه د یو طرف والو قبله وی د بل طرف والو به نه وی. دویم اشکال دادې چه حافظ ابن حجر رضی الله عنه فرمائی: "والشمال" چه په کوم روایت کښې ذکر دې هغه په جر سره دې.

اوس تاسو دا واؤرئې چه "والشمال" نه په جر سره دې اونه په رفع سره. اوس چه دلته کوم اشکال راخی دهغې وجه داده چه "والشمال" نه عام مراد مراد اخستې شوې دې. حالانکه د امام بخاری غرض ددې نه عام نه دې بلکه خاص دې. اود خاص کیدو مطلب دادې چه ددې نه د خاص خطې خلق مراد دی کوم چه د بخارا او مرو وغیره دی. دا علاقې په هغه زمانه کښې مشرق یادیدلې او شام چونکه ددې نه مغرب کښې واقع دې په دې وجه به نې هغې ته مغرب وئیلو. نودلته د مشرق نه مراد خاص بخارا او مرو وغیره دی کوم چه د شام په مقابل کښې مراد دی او اهل شام دهغې په مقابل کښې په مغرب کښې دی. اود بخارا، مرو وغیره نه قبله د جنوب په طرف کښې ده لهذا کومه چه د اهل مدینه او شام قبله ده هم هغه د اهل مشرق خاص یعنی د اهل بخارا او مرو وغیره قبله شوه. مگر مرو وغیره لږ شان مشرق طرف کښې واقع دی په دې وجه د حضرت عبدالله بن مبارک رضی الله عنه نه امام ترمذی رضی الله عنه په ترمذی شریف کښې "واختار ابن المبارک لاهل مرو القیاس" نقل کړې دې چه لږ شان کس طرف ته مانل کیدو سره دې مونځ وغیره کوی اوس اشکال پاتی نه شو اود د کوکب الدرې صفحه ۱۶۲ جلد اول په حاشیه کښې دی چه کوم ځائی د حضرت ابن المبارک رضی الله عنه دا مقوله ترمذی کښې ذکر ده هلته د بخارا، مرو، مکه، مدینه او د شام صورت جوړولو سره ما دا واضحه کړې ده چه مطلق د اهل مشرق قبله مغرب ده لکه چه مونږ بالکل په مشرق کښې واقع یو لهذا قبله مغرب ده (۱)

د حضرت کشمیری رضی الله عنه راټې: د امام بخاری رضی الله عنه مقصد دادې چه د اهل مدینه اود کعبې په لحاظ سره هم ددې په طرف کښې واقع د شام ملک او مدینه طیبه نه د مشرق والابنارونو قبله د هغوی مشرقی او مغربی طرف کښې نه ده او هم ددې د پاره حضور پاک صلی الله علیه و آله ارشاد اوفرمائیلو چه د اودس ماتی په وخت د مشرق او مغرب طرف کښې ستاسو د پاره د مخ کولو اجازت دې چه داد کعبې معظمې په تعظیم کښې مخل نه دې. د امام بخاری رضی الله عنه دا مطلب نه دې چه د دنیا د هرې حصې د خلقو د پاره هم د مشرق او مغرب په طرف کښې قبله نشته دې ځکه چه د امام بخاری رضی الله عنه په شان جلیل القدر د زمانې علامه نه ددې څه توقع نه شی کیدې.

بیا هم علامه ابن بطال رضی الله عنه د امام رضی الله عنه هم دغه مراد گرځولو سره ددې د صحیح کولو توجیه کړې چه د کعبې په مشرق او مغرب کښې هم چه کومو بنارونه د هغه خط لاندې واقع دی چه د مشرق او مغرب پورې د کعبې د پاسه تیریرې، صرف هغه پریخودو سره باقی د هغه

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۴۴/۲-۱۴۳.

تولو د پاره چه د دغه خطې نسی او کس طرف ته آباد دی د انحراف د وجې نه د جواز گنجائش دی. لکه څنگه چه حضرت ابویوب رضی الله عنه او کره چه شام ته تلو سره د عیسایانو د زمانې د قبلي طرف ته جوړو شوو بیت الخلاگانو استعمال نې په انحراف سره او کپرو او چونکه د دې معمولی انحراف هغوی عادت نه وو نو هغه نې طبعاً او عادة مکروه گنرلو سره استغفار هم اختیار کړو.

محقق عینی رحمته الله علیه د علامه موصوف رحمته الله علیه دا توجیه ذکر کولو سره په دې باندې نه صرف دا چه څه نقد اونه کپرو بلکه د اسی نوره زیاته سنبالولو سره وړاندې کړې ده. کوم سره چه دواړه توجیهاټ په خپل خپل ځانې صحیح کیرې. یعنی د امام بخاری رحمته الله علیه مراد صرف اهل مدینه، اهل شام او د مدینې نه د مشرق طرف ته پراته د عربو ښارونه وی نوبیا خو خبره صفا ده لیکن که چرې د ابن بطال رحمته الله علیه والا توجیه مراد وی نوبیا هم څه حرج نشته دې چه د مشرق او مغرب نه مراد د مشرق او غرب طرف ته ټول طرفونه کیدې شی. ټیک د مینځ خط مشرق او مغرب پریخودو سره د جنوب او شمال طرف ته لږ شان انحراف هم د اودس ماتې وخت کښې کافی دې او هم دغه تشریح او تغریب دې. په کوم کښې چه د کعبې معظمې د تعظیم خلاف څه خبره نشته دې او چونکه ټیک د مینځمې خط والا به په نسبت د نورو طرفونو ډیر کم خلق وی. د هغوی طرف ته لکه چه په دې عام حکم کښې څه تعرض نه دې کړې شوي. محقق عینی رحمته الله علیه په دې توجیه کښې په خاص توگه د مذکوره انحراف سره د اودس ماتې هم قید ښکاره کړې دې دې د پاره چه معلومه شی لکه څنگه چه دلته د امت نه د تنگې لري کولو د پاره د عند الغائط په وخت لږ شان انحراف په طرف د شمال او جنوب شریعت کافی گرځولی دی. دغه شان بل طرف ته هم د تنگې د لري کولو د پاره په موندځ کښې د قبلي طرف ته مخ کولو په واسطه د دائرې د څلورمې حصې پورې توسع جائز کړې شوي ده. په دواړو ځایونو کښې توسع ملحوظ ده، ولله درالمحقق العینی رحمته الله علیه او کیدې شی چه هم د دې د پاره عینی د دې بحث په شروع کښې دا الفاظ ادا کړې دی چه دلته مونږ له قلم ته زور ورکولو سره لږ شان زور دار لیکل پکار دی ځکه چه بعضې نورو خلقو خامخا د دوه مخیزو بحثونو لار اختیار کړې ده.

دلته د ترمذی د دویم حدیث وغیره مراد هم واضح شو په کوم کښې چه مابین المشرق والمغرب قبله راغلي دي. محقق عینی رحمته الله علیه لیکلی دی چه هغه هم صرف مدینې او د دې په طرف کښ واقع ښارونو او ملکونو د پاره دي اولکه څنگه چه د هغوی د پاره وسعت دی هم دغه شان وسعت به د مشرق او مغرب طرف ته اوسیدونکو د پاره هم د جنوب او شمال په لحاظ سره وی او دې سره د قبلي په طرف کښې د دائرې د څلورمې حصې پورې د وسعت جواز هم ملاویرې. یعنی لکه څنگه چه د مدینې والو د کعبې معظمې نه په شمال کښې د نورو اوسیدونکو د پاره د قبلي طرف مابین المشرق والمغرب وسیع دې. دغه شان به د اهل مشرق د پاره مابین الشمال والجنوب وسعت وی (۱)

دَعَلَامَه شَبِير اَحمَد عِثْمَانِي صَاحِب رِثَائِي: حضرت عثمانی رضی اللہ عنہ فرمائی دلتہ دَ وَالْمَشْرِقِ خَدِ مطلب دے؟ پہ دے کنبی شارحینو دیر گریہ کری دے۔ پہ حقیقت کنبی دَ امام بخاری رضی اللہ عنہ مطلب دادے چہ دمَدینے او دَ شام والو قبلہ کوم طرف تہ دہ۔ (ہغہ بہ پہ دے باب کنبی بیانوم) "وَالْمَشْرِقِ" یعنی دَ اهل مشرق قبلہ کومہ دہ؟ ہغہ بہ ہم معلومہ شی۔ (امام بخاری رضی اللہ عنہ دلتہ صرف دَ مشرق ذکر کری دے)، دَ مغرب ذکر تے نہ دے کری لکہ چہ مراد ہغہ ہم دے مگر مشرق او مغرب (دے دو) ضدین نہ تے صرف دے یو ذکر کول کافی او گنرل، مراد دوارہ دی۔ لکہ چہ ﴿وَجَعَلَ لَكُمْ مِرَاقِبَ تَقِيكُمْ الْحَرَّ﴾ (النحل: ۸۱) (کنبی ضدین یعنی حر و برد نہ صرف دے یو ذکر کری شوی دے اگر چہ دوارہ مراد دی۔ الغرض مطلب دادے چہ دمَدینے او شام والو قبلہ خوبہ پہ خاص توگہ ذکر کوم۔ دا دوارہ پہ حدیث کنبی منصوص دی، ہم پہ دے سرہ بہ دَ اهل مشرق او اهل مغرب قبلہ معلومہ شی۔<sup>(۱)</sup>)

دَ حضرت کاندھلوی رضی اللہ عنہ رِثَائِي: حضرت مولانا محمد ادریس کاندھلوی رضی اللہ عنہ فرمائی چہ دے ترجمے نہ مراد دادے چہ دَ اهل مدینہ او اهل شام قبلہ دَ مشرق او مغرب طرف تہ نہ دہ بلکہ دَ جنوب او شمال طرف تہ دہ۔ دلیل دادے چہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دَ اهل مدینہ او دَ اهل شام دَ پارہ دَ مشرق او مغرب طرف تہ مخ کولوسرہ اودس ماتے مباح گر خولی دے۔ اودَ مشرق نہ مراد دَ عربو دَ بنارونو مشرق طرف دے نہ چہ دَ تولی دنیا مشرق۔ خلاصہ دَ کلام دادہ چہ دَ امام بخاری رضی اللہ عنہ مقصود دے ترجمے نہ صرف دَ اهل مدینہ او اهل شام دَ قبلی ذکر کول دی نہ چہ دَ تولی دنیا والو دَ قبلی طرف ذکر۔<sup>(۲)</sup>

دَعَلَامَه ابْن بَطَال رضی اللہ عنہ او عَلَامَه کورانی رضی اللہ عنہ رِثَائِي: پہ دے بارہ کنبی دَ صحیح بخاری دیر پخوانی شارح علامہ ابن بطال رضی اللہ عنہ یوہ داسے توجیہ بیان کری دہ کومہ چہ روستونو دَ حدیث شارحینو نہ یو شارح ہم نہ دہ قبولہ کری۔ ہغہ دا چہ ترجمہ الباب کنبی دَ ذکر شوی لفظ مشرق نہ صرف دَ اهل مدینہ یا اهل شام مشرق مراد نہ دے بلکہ دے نہ مراد دَ تولی دنیا مشرق والا خلق دی او پہ ظاہرہ ہم دے پہ تائید کنبی علامہ کورانی رضی اللہ عنہ ہم خپلہ دَ بخاری شریف پہ شرح الکواثر الجاری کنبی ہم دا قول ذکر کری دے<sup>(۳)</sup>

چنانچہ دے پہ تردید کنبی دَ تولو نہ تفصیلی کلام علامہ انور شاہ کشمیری رضی اللہ عنہ کری دے۔ ہغوی دے قول خرابیانی بیان کری دی۔ دے نہ علاوہ اکثر شرحو (حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ)، علامہ عینی رضی اللہ عنہ، علامہ قسطلانی رضی اللہ عنہ، شیخ الحدیث محمد زکریا کاندھلوی رضی اللہ عنہ او مولانا محمد ادریس کاندھلوی رضی اللہ عنہ دا توجیہ نہ دہ اختیار کری بلکہ دَ مشرق نہ مراد ہم دَ اهل مدینہ مشرق مراد دے<sup>(۴)</sup>

(۱) فضل الباری: ۱۰۵/۳-۱۰۴

(۲) تحفة القاری: ۴۶۲/۳

(۳) شرح ابن بطال: ۶۲/۲-۶۱ الکواثر الجاری: ۸۰/۲-۷۹

(۴) فیض الباری: ۴۱/۲-۴۰، فتح الباری: ۶۴۶/۱، عمدة القاری: ۱۹۱/۴-۱۹۰، إرشاد الساری: ۵۶/۲

الکتز المتزاری: ۸۲/۴، تحفة القاری: ۴۶۲/۲

دکلام خلاصه: دا ترجمه په مشکل تراجمو کښې شمیرلې شی لیکن مشکل نه ده. داسې او کترنی چه بعضې نسخې خو هغه دی په کوم کښې چه "لیس فی المشرق ولالی المغرب قبله" راغلې دي. یعنی د "لیس فی المشرق ولالی المغرب" نه پس لفظ "قبله" ذکر دي. کومه نسخه چه زمونږ مخې ته ده په دې کښې هم دغه شان دي. په دې صورت کښې به دا ونیلې شی چه لفظ "باب" مضاف دي او "قبله أهل المدينة" کښې لفظ "قبله" مضاف الیه مضاف دي او "أهل المدينة، وأهل الشام، والمشرق" دا دريواره د عطف په ذریعه د لفظ "قبله" مضاف الیه دي او معنی داده چه دا باب د أهل مدینه او أهل شام او د أهل مشرق د قبلي د بیانولو د پاره دي. په دې دريواره کښې أهل مدینه او أهل شام خو مشهور بنارونه دي او په آخره کښې چه کوم مشرق دي ددې نه مراد مشرق مدینه دي. د مدینې په مشرق کښې چه کوم خلق آباد دی لکه د نجد او عراق والا، د هغوی قبله بیانول غواړی. سوال اوشو چه د هغوی قبله کومه ده؟ جواب ورکړې شـ. چه "لیس فی المشرق ولالی المغرب" د هغوی قبله نه په مشرق کښې ده او نه په مغرب کښې بلکه د جنوب طرف ته ده. مطلب دا چه دایوه جمله د سوال د جواب ورکولو د پاره راوړلې شوې ده او "لیس فی المشرق ولالی المغرب" کښې د "المشرق" نه مراد عام مشرق نه دي بلکه مشرق د أهل مدینه او مغرب د أهل مدینه مراد دي. داخو یو حل شو د عبارت چه بالکل واضح دي. دلته یو وړوکې شان اشکال پیدا کیږی چه امام بخاری رحمته الله قبله أهل المدينة د أهل الشام والمشرق کښې صرف د مشرق ذکر کړې دي د مغرب ذکر ئی نه دي کړې. ددې وجه داده چه د أهل مدینه په مشرق کښې خود مسلمانانو یوه لویه آبادی وه په دې وجه ئی د هغوی ذکر او کړو او مغرب مدینه کښې خو آبادی نه وه په دې وجه ئی د هغې ذکر او نه کړو.

پرومې لفظ "المشرق" کوم چه د أهل مدینه او أهل شام نه پس ذکر شو، دي نه مراد د أهل مدینه مشرق دي. په دې کښې د نجد او عراق علاقه داخل ده او دویمه جمله کومه چه "لیس فی المشرق ولالی المغرب" ده. دا جمله مستانفه ده په دې وجه بغیر د واؤ راوړلې شوې ده. دا جمله به په حقیقت کښې د یو سوال جواب جوړیږی چه تاسو ددې دريواره قبله بیانول غواړی. نو اوساین جواب ورکړې شو چه ددې دريواره قبله نه په مشرق مدینه کښې ده او نه په مغرب مدینه کښې ده. لهذا اوس دوه طرفونه پاتې شوي یا جنوب مدینه یا شمال مدینه. بنکاره خبره ده چه شمال مدینه کښې خو بیت المقدس راخی نو په جنوب مدینه کښې کعبه واقع شوه لهذا معلومه شوه چه د هغوی قبله د مدینې په جنوب کښې ده.

دویم صورت: چرته چه "لیس فی المشرق ولالی المغرب" نه پس لفظ "قبله" نشته دي. بعضې نسخو کښې داسې هم دی نو په دې صورت کښې به لفظ "باب" باندې تنوین لوستلې شی او "قبله" به مرفوع وی او "أهل المدينة، وأهل الشام، والمشرق" خپلو معطوفاتو سره "قبله" د مضاف

د پاره به مضاف الیه کیدو سره مبتداء شی او ددی د پاره "لیس فی المشرق ولالی المغرب" خبر شی. مطلب به دا شی چه د اهل مدینه، اهل شام او اهل مشرق قبله نه خو مشرق کنسې ده اونه په مغرب کنسې.

په دې توجیه باندې یو اشکال پیدا کیږي چه "لیس فی المشرق ولالی المغرب" کنسې "لیس" نه بلکه، "لیست" راتلل پکار وو ځکه چه د "لیس" مذكر ضمیر د "قبلة" طرف ته راگرځي حالانکه مرجع مؤنث ده. نو ددی جواب دادې چه "قبلة" به د مستقبل په معنی واخستې شی او د "لیس" مذكر ضمیر به دهغې طرف ته راوگرځولې شی.

د مذکوره تفصیل نه پس دا اشکال کول چه امام بخاری رحمته الله علیه وئیلی دی چه "لیس فی المشرق ولا فی المغرب" په مشرق او مغرب کنسې خو هډو قبله نشته دې حالانکه د اهل هند او اهل بخارا او اهل چین، غیره د ټولو قبله د مغرب طرف ته ده. نو ددی جواب هم ورگړې شو چه دلته د مشرق نه مشرق مدینه او د مغرب نه مغرب مدینه مراد دی. مطلقاً عام د مشرق طرف او عام د مغرب طرف مراد نه دی.

دویمه خبره داده چه دلته مذکوره حدیث یا باب کنسې صرف د اهل مدینه، اهل شام او د اهل مشرق قبله خودل مقصود دی. د ټولې دنیا قبله بیانول مقصود نه دی. ځکه چه که د اهل هند قبله په مغرب کنسې وی او کوم خلق چه د مغرب په آخره کنسې آباد دی نو دهغوی قبله د مشرق طرف کنسې وی نو بالکل کیدې شی. دی نه دلته هډو تعرض مقصود نه دی.

تعلیق: لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ، بَغَائِطِ أَوْ بُولٍ» وَلَكِنْ شَرِقُوا أَوْ غَرَبُوا»

د تعلیق ترجمه: «د اهل مدینه، اهل شام او اهل مشرق قبله نه مشرق کنسې ده اونه مغرب کنسې، ددی دلیل د وجې چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم ارشاد فرمائیلې دی: (قضائې حاجت، غتې متیازې یا ورې متیازې کولو وخت کنسې د قبلې طرف ته مه مخ کوئی، لیکن د مشرق یا مغرب طرف ته مخ کوئی.

د تعلیق تخریج: مذکوره تعلیق هم په دغه الفاظو سره امام نسائی رحمته الله علیه په خپل سنن کنسې موصولاً نقل کړې دې ونی گورئ: «أخبرنا محمد بن منصور قال: حدثنا سفيان، عن الزهري، عن عطاء بن يريد، عن أبي أيوب رضى الله عنه، أن النبي صلى الله عليه وسلم قال: لا تستقبلوا القبلة ولا تستدبروها لغائط أو بول، ولكن شريقوا أو غربوا»<sup>(۱)</sup>

(۱) ملخص از فتح الباری: ۶۵/۱ عمدة القاری: ۱۹۱/۴-۱۹۰، إرشاد الساری: ۵۶/۱، فیض الباری: ۴۱/۲-۳۹، لایع المتواری: ۳۶۴-۳۶۲، عمدة القاری: ۱۹۱/۴.

(نوټه) په دې موضوع باندې (یعنی مذاهب ائمه باندې) تفصیلی کلام کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبلوا القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء: جدار او نحوه کنسې تیر شوې دې.

د تعلیق مقصد: علامہ عینی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ ددی حدیث د عموم نہ دلیل نیولہ دی کہ صحرا او آبادی پہ دی حکم کنسی برابر دی کہ پہ دغہ دوارو خایونو کنسی د اودس ماتی پہ وخت نہ قبلہ تہ مخ کول جائز دی او نہ قبلہ تہ شاہ کول. او مذکورہ حدیث نی د ترجمہ الباب د اثبات د پارہ دلیل جو رکړې دی.

د احنافو فقهاؤ کثر اللہ سودا هم دغہ مذهب دی او د امام احمد رحمۃ اللہ علیہ هم یو روایت هم ددی مطابق دی. خو امام مالک رحمۃ اللہ علیہ او امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ دی خبرې طرف تہ تلی دی کہ د اودس ماتی پہ وخت قبلہ تہ مخ کول په صحرا کنسی خو نا جائز دی لیکن په آبادی کنسی جائز دی.

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی کہ حضرت امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ، بَغَائِطٍ أَوْ بَوَلٍ وَلَكِنْ شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا» ذکر کولو سره یو خودا ثابتہ کره کہ په مشرق او مغرب کنسی د اهلِ مدینه "ومن على ستمهم" قبلہ نہ ده. هم دی سره نی دغہ خلقو په قول باندی هم رد او کړو خوک چه وائی چه د "ولکن شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا" خطاب عام دی. اهلِ مدینه اود هغوی نہ علاوه ټول د مشرق او مغرب طرف تہ په حالت د استنجا کنسی قبلہ تہ مخ کولې شی کہ قبلہ مخې تہ وی یا شاته ولی نہ وی (۱)

حدیث باب [حدیث نمبر ۳۸۴]

۳۸۳- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ (۱) أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ إِذَا أَتَيْتُمُ الْعَاظِبَةَ فَلَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ وَلَا تَسْتَدِيرُوهَا، وَلَكِنْ شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا». قَالَ أَبُو أَيُّوبَ فَقَدِمْنَا الشَّامَ فَوَجَدْنَا مَرَا حِيصَ بَيْنَتِ قِبَلِ الْقِبْلَةِ، فَتَنَحَّرَفْنَا وَتَسْتَغْفِرُ اللَّهُ تَعَالَى.

ترجمہ حدیث: حضرت ابو ایوب انصاری رضی اللہ عنہ نہ روایت دی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد او فرمائیلو کله کہ تاسو د اودس ماتی د پارہ خئی نو د قبلہ طرف تہ مخ کوئی او مہ شاہ کوئی. البتہ د مشرق یا مغرب طرف تہ مخ کوئی.

د حضرت ابو ایوب انصاری رضی اللہ عنہ بیان دی کہ بیا مونږ د شام ملک تہ اور سیدو نو مونږ هلته بیت الخلاء د قبلہ په طرف باندی جوړې شوې اولیدلې نو (د اودس ماتی په وخت) مونږ خپل مخ د قبلہ طرف نہ لږ شان اړولو اود اللہ تعالیٰ نہ به مو مغفرت غوښتلو. تراهم رجال: د مذکورہ حدیث شریف په سند کنسی ټول پنځه رجال دی.

① علی بن عبد اللہ رحمۃ اللہ علیہ: د حضرت ابو الحسن علی بن عبد اللہ بن جعفر بن نجیح سعادی البصری رحمۃ اللہ علیہ دی. د ابن المدینی رحمۃ اللہ علیہ په نوم مشهور دی. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری،

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱/۲، ۱۴۴، الكنز المتواری: ۴/۸۲، سراج القاری: ۲/۴۳۰.

(۲) مرتخیرجه رقم الحدیث: ۱۴۴، کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: "لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء: جدار او نحوه".

کتاب العلم، باب: المفهم فی العلم کتبی تیر شوی دی. (۱)

② سفیان بن یزید: دا مشهور امام حدیث، تبع تابعی حضرت ابو عبد الله سفیان بن سعید بن مسروق ثوری کوفی رضی الله عنه دی. د دوی تفصیلی حالات کتاب الایمان، باب: علامة المناق د دوی حدیث لاندی تیر شوی دی. (۲)

③ زهری رضی الله عنه: دا امام محمد بن مسلم، بن عبید الله، بن شهاب الزهری رضی الله عنه دی. د دوی مختصر حالات کشف الباری، کتاب ہدم الوسی د دریم حدیث لاندی تیر شوی دی. (۳)

④ عطاء بن یزید اللیثی رضی الله عنه: دا ابو محمد یا ابو یزید عطاء بن یزید اللیثی، ثم الجندعی المدنی، ثم الشامی رضی الله عنه دی. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه لاندی تیر شوی دی. (۴)

⑤ حضرت ابو ایوب انصاری رضی الله عنه: دا رسول الله میزبان، حضرت ابو ایوب خالد بن زید بن کلب بن ثعلبه بن عبد عوف بن غنم الانصاری النجاری الخزرجی رضی الله عنه دی. د دوی ہم تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه لاندی تیر شوی دی. (۵)

شرح حدیث: «إِذَا أَتَيْتُمُ الْغَائِظَ فَلَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ، وَلَا تَسْتَدْبِرُوهَا وَلَكِنْ شَرِقُوا أَوْ غَرَبُوا»

حضرت رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد فرمائیے دی چه کله تاسو د اودس ماتی د پارہ لارشی نو د قبلی طرف ته مه مخ کوئی اومه شاه کوئی البتہ د مشرق یا مغرب طرف ته مخ کوئی.

د دوی جملی تشریح، متعلقه مسئلہ، د علماؤ اختلاف او د احنافو د ترجیح وجه په پوره تفصیل سره کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو

نحوه رقم الحدیث: ۱۴۴ کتبی تیر شوی ده.

قوله: قَالَ أَبُو أَيُّوبَ: «فَقَدِمْنَا الشَّامَ فَوَجَدْنَا مَرَّاحِيضَ بُنِيَتْ قَبْلَ الْقِبْلَةِ فَنَنْعَرُفُ، وَنَسْتَغْفِرُ اللَّهَ تَعَالَى»  
یعنی د حضرت ابو ایوب انصاری رضی الله عنه بیان دی چه بیا مونږ د شام ملک ته اور سیدو نومونږ هلته بیت الخلا، د قبلی په طرف جوړی شوې اولیدلې نو (د اودس ماتی په وخت) به مونږ خپل مخ د قبلی نه لږ شان گرځولو اود الله تعالی نه به مو مغفرت غوښتلو.

(۱) کشف الباری: ۲۹۷/۳.

(۲) کشف الباری: ۲۷۸/۲.

(۳) کشف الباری: ۱/۳۲۶.

(۴) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه رقم الحدیث: ۱۴۴.

(۵) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه رقم الحدیث: ۱۴۴.

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی ہے اوس تاسو دا واؤرنی چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ دا تکرہ ہلتہ ذکر نہ کرہ چرتہ چہ د استقبال او استندبار ذکر دے۔ صرف د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما روایت نی نقل کرو خکہ چہ ہغہ د ہغوی موافق وو<sup>(۱)</sup>

ہولہ: "فَقَدِمْنَا الشَّامَ": د حضرت ابوایوب انصاری رضی اللہ عنہ بیان دے چہ بیا مونرہ د شام ملک تہ اورسیدو۔

د حضرت ابوایوب انصاری رضی اللہ عنہ دا مذکورہ کلام پہ شام کنسی اوشو کہ پہ معرکنسی؟ د صحیح بخاری پہ مذکورہ حدیث شریف کنسی دی چہ حضرت ابوایوب انصاری رضی اللہ عنہ خبرہ د شام د ملک نقل کرے دہ خود سنن نسائی پہ روایت کنسی دی چہ د حدیث راوی حضرت رافع بن اسحاق رضی اللہ عنہ د حضرت ابوایوب انصاری رضی اللہ عنہ نہ اوریدلی دی پہ داسے حال کنسی چہ ہغہ پہ مصر کنسی وو..... الخ<sup>(۲)</sup>

نو پہ دی بارہ کنسی علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ د شیخ ولی الدین العراقی رحمۃ اللہ علیہ پہ حوالہ او علامہ سندھی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ اگرچہ د صحیحین پہ روایت کنسی دا دی چہ دا معاملہ د شام پہ ملک کنسی پینہ شوے دہ لیکن پہ دے دوارو روایتونو کنسی ہیخ تعارض نشته دی اونہ دا دوارہ د یو بل معارض دی۔ خکہ چہ دے خبرے امکان موجود دے چہ د ابوایوب انصاری رضی اللہ عنہ دا کلام پہ مصر کنسی ہم شوے وی او پہ شام کنسی ہم<sup>(۳)</sup>

اوشیخ مختار بن محمد الشنقيطي رحمۃ اللہ علیہ خپلہ شرح سنن النسائي شمروق أنوار المنن الكبرى الإلهية کنسی دے خبرے متعلق نور فرمائی چہ (د علامہ عراقی رحمۃ اللہ علیہ او علامہ سندھی رحمۃ اللہ علیہ) دا خبرہ دیرہ قرین قیاس دہ پہ خاص توگہ چہ کلہ د دوارو احادیثو مخرج ہم مختلف دے خکہ چہ د امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ د تخریج کرے شوی حدیث سند د نورو تخریج کرے شوی ائمو د سند نہ مختلف دے۔ ہغہ داسے چہ د اکثر ائمہ ذکر کرے شوی روایت د امام زہری رحمۃ اللہ علیہ دے۔ کوم چہ ہغوی د عطاء بن یزید اللیثی رحمۃ اللہ علیہ نہ روایت کوی او د امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ روایت د اسحاق بن عبد اللہ رحمۃ اللہ علیہ دے کوم چہ ہغہ د رافع بن اسحاق رحمۃ اللہ علیہ نہ روایت کوی<sup>(۴)</sup>

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۴۲/۲۔

(۲) أخبرنا محمد بن سلمة والحارث بن مسكين قراءة عليه وأنا أسمع واللفظ له عن ابن قاسم قال حدثني مالك عن إسحاق بن عبد الله بن أبي طلحة عن رافع بن إسحاق أنه سمع أبا أيوب الأنصاري وهو بمصر يقول: والله ما أدري كيف أصنع بهذه الكرابيس وقد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "إذا ذهب أحدكم إلى الغائط أو البول فلا يستقبل القبلة ولا يسند برها". (سنن النسائي، كتاب الطهارة، النهي عن استندبار القبلة عند الحاجة، رقم الحديث: ۲۰)۔

(۳) حاشية السيوطي، والسندھی علی سنن النسائي، كتاب الطهارة، باب: النهي عن استقبال القبلة عند قضاء الحاجة، رقم الحديث: ۲۰، ۲۵/۱۔ ذخيرة العقبی شرح سنن النسائي، كتاب الطهارة، باب: النهي عن استقبال القبلة عند قضاء الحاجة، رقم الحديث: ۲۰، ۴۴۳/۱۔

(۴) شرح سنن النسائي المسمى ب شروق أنوار المنن الكبرى الإلهية، كتاب الطهارة، باب: النهي عن استقبال القبلة عند قضاء الحاجة، رقم الحديث: ۲۰/۱۴۷/۱۔



حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائیے دی چہ علماؤ د نسائی رحمۃ اللہ علیہ دا روایت غلط گر خولی دی او علماء موجهین فرمائی چہ قدوم نی پہ شام کنبی وو او روایت نی پہ مصر کنبی بیان کری وو (۱)

قوله: الشام: دا مشهور بشاردی. ددی استعمال د مذکر او مؤنث دواپو شان سرہ کیری. ددی همزه تسهیلآ پہ الف سرہ ہم لوستلی کیری. ددی ملک نوم د حضرت نوح علیہ السلام د خوی سام بن نوح پہ نوم باندی کیخودی شوی وو. بیا عجمی لفظ کیدو د وجہی نہ سین پہ شین سرہ بدل کری شو (۲)

قوله: مراحيض: بفتح الميم، وبالحاء المهملة والضماد المعجمة، جمع ده د مرحاض: په کسری د ميم داد یو داسی مکان نوم دی کوم چہ د اودس ماتنی د پاره تیارولپ شی (۳)

قوله: فنحرف: داد انحراف نه دی یعنی مونز به د قبلی د طرف نه تاویدو. دیوی نسخی مطابق دا لفظ فنحرف د التحرف نه دی. د دواپو مراد هم یو دی (۴)

قوله: ونستغفر الله تعالى: اود الله تعالى نه به مو په خپلو گناھونو باندی مغفرت غوښتلو. دانحراف عن القبلة مطلب: دانحراف عن القبلة دوه معنی کیدی شی. یودا چہ مونز به د شام ملک کنبی د بیت الخلا کانو مخ د قبلی طرف ته اولیدلو نو مونز به واپس کیدلو، هغه به مو نه استعمالولی اود الله تعالى نه به مو استغفار کولو.

انحراف عن القبلة باندي د استغفار وجه: په دی معنی باندی اشکال کیدی شی چہ کله هغوی استعمالولی نه نویائی استغفار په کومه خبره کولو؟ ددی اشکال اولنی جواب خودادی چہ دا استغفار د جوړونکو د پاره وو چہ هغوی دا څنگه خراب کار او کرو (۵)

ددی جواب باره کنبی حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ کومو خلقو چہ وئیلی دی چہ دائی د هغی د جوړونکو د پاره استغفار کولو نو دا غلط دی. ځکه چہ ددی جوړونکی خو کافران وو د هغوی د پاره د استغفار څه مطلب؟ (۶)

ددی جواب دا کیدی شی چہ ددوی استغفار به په هغه جوړونکو ددنی د پاره وو چہ د شام په

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۴۱/۲.

(۲) تخب الأفكار فی تنقیح مبانی الأخبار فی شرح معانی الآثار، کتاب الکراهة، باب: استقبال القبلة بالفروج للغناط والبول: ۱۸۹/۱۳، عمدة القاری: ۱۹۲.

(۳) تهذیب اللغة، المادة: رحض: ۲۰۳/۴، لسان العرب، المادة: رح ض: ۱۵۳/۷، تخب الأفكار فی تنقیح مبانی الأخبار فی شرح معانی الآثار، کتاب الکراهة، باب: استقبال القبلة بالفروج للغناط والبول: ۱۸۹/۱۳.

(۴) عمدة القاری: ۱۹۲/۲.

(۵) عمدة القاری: ۱۹۲/۴، الکوثر الجاری: ۸۰/۲، إرشاد الساری: ۵۷/۲، نخت الأفكار فی تنقیح مبانی الأخبار فی شرح معانی الآثار، کتاب الکراهة، باب: استقبال القبلة بالفروج للغناط والبول: ۱۸۹/۱۳، کوثر المعانی الدراری فی کشف خبایا صحیح البخاری الحدیث الثالث: ۱۸/۷.

(۶) تقریر بخاری شریف: ۱۴۲/۲، الکنز المتوارى: ۸۴/۴-۸۳.

ملك كنبی د حضرت عیسیٰ علیه السلام شریعت موجود وو دهغی باوجود هغه خلقو د قبلی طرف ته بیت الخلاء جوړې کړې یعنی په هغوی باندې انکار کولو سره ئی استغفار کولو (۱)  
دویم جواب دادې چه مونږ به استغفار کولو د قبلی طرف ته مخ کولو نه چه ای الله مونږ د اودس ماتی وخت کنبی د قبلی طرف ته دمخ کولو نه همیشه محفوظ اوساتی. مونږ تانه په دې خبره باندې معافی غواړو چه د اودس ماتی په وخت د قبلی طرف ته مخ کولو سره کینو یا شاه کولو سره کینو (۲)

یو دریم جواب داهم کیدې شی چه کله به هم مونږ ته دا خبره ښکاریدله چه خلقو په داسې طریقو باندې بیت الخلاء کانی جوړې کړی دی نو مونږ ته به خپله گناه یادیدله لکه چه څنگه هغوی دا غلطی کړې ده او د گناه کار ئی کړې دي دغه شان مونږ هم د گناه ډیر زیات کارونه کړی دی. په دې وجه به مونږ په خپلو گناهونو باندې استغفار کولو. د تقوی دارو خلقو دا شان وی چه د ښو د چا غلطی او گوری نو د خپلو غلطو نه استغفار کوی. (۳)

څلورم جواب دا کیدې شی چه ډیر ځل انسان څه منکر یا خرابه خبره لیدو سره استغفر الله وائی اگر چه هغه گناه د هغه نه صادر شوې نه وی، فلا اشکال. (۴)

د انحراف عن القبلة دویمه معنی دا کیدې شی چه مونږ به دغه بیت الخلاء کانی استعمالولی لیکن د خپل وس مطابق به په ککیدو سره کیناستو لیکن بیا به هم لږه ډیره غلطی کیدله او کوتاهی به واقع کیدله. په دې وجه د دغه کوتاهی کیدو باندې به مونږ استغفار کولو (۵)  
په دې باره کنبی حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه قاعده داده چه مشغول خلق اودس ماتی له هغه وخت څی کله چه سخته تقاضا وی. د صحابه کرامو رضی الله عنهم هم دغه حال وو چه ډیر مشغول وو او کله چه به په سختی سره په طبیعت باندې تقاضا کیدله نویاب به د بیت الخلاء طرف ته تلل او په تادئ کنبی به د دې خیال نه پاتې کیدو او په دغه مراحل کنبی کوم چه د قبلی طرف ته جوړ کړې شوې وو کیناستل به، خو چه کله به یادیدل نو خپل مخ به ئی اړولو او په خپله غلطی باندې لکه چه په هیره باندې به کیدله خپمانه کیدل او استغفار به ئی کولو. بهر حال دې حضراتو به په خپل فعل باندې استغفار کولو (۶)

(۱) الكوثر الجاری: ۸۰/۲

(۲) عمدة القاری: ۱۹۲/۴، إرشاد الساری: ۵۷/۲، نخب الأفكار فی تنقیح مبانی الأخبار فی شرح معانی الآثار، کتاب الکراهة، باب: استقبال القبلة بالفروج للغائط والبول: ۱۸۹/۱۳، کوثر المعانی الدراری فی کشف خبایا صحیح البخاری، الحدیث الثالث: ۱۸/۷.

(۳) عمدة القاری: ۱۹۲/۴، نخب الأفكار فی تنقیح مبانی الأخبار فی شرح معانی الآثار، کتاب الکراهة، باب: استقبال القبلة بالفروج للغائط والبول: ۱۸۹/۱۳، کوثر المعانی الدراری فی کشف خبایا صحیح البخاری، الحدیث الثالث: ۱۸/۷.

(۴) الكوثر الجاری: ۸۰/۲

(۵) الكوثر الجاری: ۸۰/۲

(۶) تقریر بخاری شریف: ۴۲/۲، الكنز المتواری: ۸۴-۸۳/۴، سراج القاری: ۴۳۱/۲

د حدیث شریف نه مستنبط شوې فوائده: د مذکورہ حدیث شریف نه ډیری فائده مستنبط کیږي په کوم کسې چه څه لاندې نقل کولې شی:

① د اودس ماتې وخت کسې قبلې ته مخ کول او شاه کول دواړه ناجائز دی. (۱)

② قبلې ته د مخ کولو او شاه کولو کراحت په صحرا او آبادنی دواړو ځایونو کسې دي. (۲)

③ د شعبان الله تعظیم او احترام باندې تنبیه معلومېږي. (۳)

④ اهل مدینه او اهل شام د پاره د قبلې طرف په مشرق او مغرب کسې کیدل معلومېږي. (۴)

تعلیق: وَعَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ عَطَاءٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا أَيُّوبَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
مِثْلَهُ [ز: ۱۲۲]

د تعلیق تخریج: امام بخاری رحمته الله علیه د سابقه حدیث متابعت د پاره یو بل سند پیش کړې دي.

چنانچه د "عن الزهري" عطف سابقه سند کسې "حدثنا سفيان عن الزهري" باندې دي یعنی سابقه

سند "حدثنا علي بن عبد الله قال: حدثنا سفيان قال: حدثنا زهري، عن عطاء بن يزيد، عن أبي أيوب الأنصاري

رضي الله عنه" وو او موجوده سند "عن الزهري عن عطاء قال سمعت أبا أيوب عن النبي صلى الله عليه وسلم

وسلم مثله" دي. د دې طریق فائده داده چه په دې طریق کسې د دې خبرې تصریح ده چه عطاء

د حضرت ابو ایوب رضي الله عنه نه سماع کړې ده او په مخکینی طریق کسې سماع ثابت نه وه. (۵)

او علامه کرمانی رحمته الله علیه فرمائی چه سماع د عنعنې نه قوی وی لیکن په دې کسې ضعف دي

"عن الزهري" د تعلیق په جهت سره. (۶)

(۱) عمدة القاری: کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۲/۲. الشرح الميسر للصابوني، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۳۵/۱.

(۲) التوضیح لشرح الجامع الصحیح لابن ملقن، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۱۰۶/۴. الشرح الميسر للصابوني، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۳۵/۱.

(۳) عمدة القاری: کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۲/۲. الشرح الميسر للصابوني، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۳۵/۱.

(۴) أعلام الحدیث للخطابی، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۳۹/۱. الشرح الميسر للصابوني، کتاب الوضوء، باب: لا تستقبل القبلة بغائط أو بول إلا عند البناء، جدار أو نحوه، رقم الحدیث: ۱۴۴، ۲۳۵/۱.

(۵) فتح الباری: ۶۴۶/۱، عمدة القاری: ۱۹۳/۴-۱۹۲، الکوثر الجاری: ۸۰/۲، اللامع الصبیح شرح الجامع الصحیح للبرماودي: ۱۱۸/۳.

(۶) شرح الكرمانی: ۵۸/۴.

نو حافظ ابن حجر رحمته الله او علامه عینی رحمته الله ددې جواب ورکړې دي چې په ظاهره خود علامه کرمانی رحمته الله خبره صحیح ده لیکن هم دغه حدیث په مسند اسحاق بن راهویه کښې مسنداً موجود دي لهذا اوس څه اشکال باقی نه پاتې کیږي (۱)

### ۳- باب: قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: { وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى }

[البقرة: ۱۲۵]

د الله تعالی ارشاد مبارک دي چې د ابراهیم عليه السلام د قیام خانی د مונخ خانی جوړ کړئ  
د ترجمه الباب غرض:

د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله رائي: د حضرت امام بخاری رحمته الله ددې باب نه څه غرض دي؟ د بعضې علماؤ رائي داده چې "اتخذوا" د امر صیغه ده، ددې نه په ظاهره وجوب په پوهه کښې راځي. نو حضرت امام بخاری رحمته الله د اباب قائمولو سره او خود ل چې امر ایجابی نه دي او هم دغه زما د والد صاحب قدس سره رائي ده. او د بعضې علماؤ رائي داده چې "اتخذوا" د خپل اطلاق د وجې مطلقاً په اتخاذ صلوۍ باندې دلالت کوي. نو امام بخاری رحمته الله دا ترجمه گردان کولو سره او روایتونه ذکر کولو سره او خود ل چې دي نه خاص رکعتی الطواف مراد دي. او د بعضې علماؤ رائي داده چې د من مقام ابراهیم د لفظ نه په ظاهره ددغه مقام تخصیص معلومیدلو. نو امام بخاری رحمته الله روایات ذکر کولو سره اشاره او فرمائیله چې هیڅ تخصیص نشته بلکه ددې سره خواؤشا حصه هم په مقام ابراهیم کښې داخله ده. خاص مقام مراد نه دي (۲)

او په سراج القاري کښې د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله په نسبت سره د لامع الدراري او الكنز المتواری د تحریرونو خلاصه داسې پیش کړې شوې ده چې "اتخذوا" د امر صیغه ده او د امر اصل وجوب دي او مقام ابراهیم هغه کانري دي په کوم باندې چې او دریدو سره حضرت ابراهیم عليه السلام د بیت الله تعمیر کړې وو. او په دغه کانري باندې د حضرت ابراهیم عليه السلام د دواړو خپو مبارکو نښې موجود دي. دا کانري د بیت الله مخامخ نصب دي. او د "مصلی" مطلب قبله ده. اوس لکه چې د آیت مفهوم دا شو چې مقام ابراهیم طرف ته دي مונخ او کړې شی. حالانکه د مقام ابراهیم طرف ته مונخ کول څوک ضروری نه گنري. په دي وجه لامحاله یا خودي "اتخذوا" کښې د وجوب نه علاوه څه بله معنی اختیار کړې شی یادي په مقام ابراهیم کښې توسع اختیار کړې شی. چنانچه اکثر حضراتو "اتخذوا" کښې د وجوب په ځاني استحباب مراد اخستي دي او مقام ابراهیم نه مراد شی هم هغه کانري اخستي دي په

(۱) فتح الباری: ۱/۶۴۶ عمدة القاری: ۴/۱۹۳.

(۲) تقریر بخاری شریف: ۲/۱۲۵.

کوم چه د ابراهيم عليه السلام د خپو نښې موجود دي. په دې صورت کښې چه کوم مونځ په مقام ابراهيم کښې دکولو حکم ورکړې شوې دي هغه صرف د تحية الطواف دوه رکعتې دي يعنى هغه دوه رکعتې کوم چه د طواف نه پس ادا کيږي. دهغې د پاره د ټولو مقاماتو نه اوچت مقام مقام ابراهيم دي. يعنى هغه ځانې چرته چه دا کانړې کيځودلې شوې دي او که چرې "اتخذوا" په خپل اصل معنى يعنى وجوب باندي بمحمول کړي شى نو په داسې صورت کښې به مقام ابراهيم کښې توسع کولو سره ددې نه مراد کعبه الله اخستې شى. ځکه چه کعبه حضرت ابراهيم عليه السلام جوړه کړې ده او ښکاره خبره ده چه کعبه چونکه د مونځ قبله ده. په دې وجه هر سرې مکلف دي چه ددې طرف ته مخ کولو سره موخ او کړي. په دې صورت کښې به صيغه د امر په خپل اصل معنى د وجوب په معنى وي او د مقام ابراهيم نه مراد به کعبه وي. (۱)

دعلامه فخرالدين احمد صاحب رحمته الله عليه راښي: صدر المدرسين دارالعلوم ديوبند ليکي چه "اتخذوا" صيغه د امر د وجوب د پاره نه ده بلکه د استخباب د پاره ده. ليکن په دې صورت کښې مشکلات دادى چه امام بخارى رحمته الله عليه چه د ترجمه الباب لاندي کوم درې روايتونه ذکر کړي دي په دې تقدير باندي به د دغه دريوارو روايتونو نه رومبې روايت خو د ترجمې سره بغير د څه تکلف نه منطبق شى ليکن د باقى دوو روايتونو د منطبق کولو د پاره به د تکلفاتو نه کار اخستلې کيږي. ځکه چه دامام بخارى رحمته الله عليه د ذکر کړې شوي رواياتو په رنړا کښې بهتر دا معلوم کيږي چه "اتخذوا" خو په خپل اصل معنى يعنى وجوب باندي بمحمول کړي شى او په مقام ابراهيم کښې توسع کولو سره ددې نه مراد بيت الله شريف و اخستې شى، ځکه چه بيت الله هم حضرت ابراهيم عليه السلام جوړ کړې دي او ښکاره خبره ده چه بيت الله د مونځ قبله ده په دې وجه هر سرې مکلف دي چه بيت الله طرف ته دې مخ کولو سره مونځ کوي. په دې صورت کښې صيغه د امر په خپل اصل معنى د وجوب په معنى پاتي شو او د مقام ابراهيم معنى بيت الله شوه په دې صورت کښې به د دريوارو رواياتو انطباق کښې هيڅ مشکل نه وي. (۲)

د مقام ابراهيم په مراد کښې يو شو احوال: په دې سلسله کښې د امت د علماؤ مختلف احوال دي: ① هغه مقام چرته چه هغه کانړې کيځودې شوې دي په کوم چه د ابراهيم عليه السلام د خپو نښې دي. ② بيت الله شريف. ③ مسجد حرام. ④ پوره حرم شريف. ددې څلورو مشهورو احوالو نه مونږ دويمه معنى مراد اخستې ده. په دريمه او څلورمه معنى کښې د يرزيات توسع ده او د آيت مبارك مراد دادې: "د بيت الله شريف د هرې يوې حصې استقبال په مونځ کښې فرض دي، چونکه بيت الله هغه مقام دي کوم چه حضرت ابراهيم عليه السلام قائم کړو او جوړ کړې وو او ستاسو ملت، ملت ابراهيمي دي په دې وجه بيت الله ستاسو قبله مقرر کړې شوه.

(۱) سراج القاري: ۴۳۲/۲، لامع الدراري: ۱۵۵/۱-۱۵۴، الكنز المتراي: ۸۵/۴-۸۴.

(۲) ايضاح البخاري: ۱۱۸/۳-۱۱۷.

دامعنی مراد اخستلو یوه فائده خو داده چه د امام بخاری رحمته الله ذکر کړې شوي روایت د بي تکلفه ترجمې سره منطبق کيږي. بله دا چه امام بخاری رحمته الله دا باب، ابواب قبله کښې ذکر کړې دي. که چرې "اتخذوا" په استحباب باندې محمول کړې شي او د مقام ابراهيم نه مراد هغه خاص کانږي واخستې شي نو ابواب قبله سره به د دې ربط کمزوري شي. والله اعلم (۱)

د علامه عثمانی رحمته الله راټي: حضرت مولانا شيبير احمد عثمانی صاحب رحمته الله صرف دو مره خبره کوي چه د قبلي په ابوابو کښې دا باب راوړلو سره (امام بخاری رحمته الله) د مذکوره آيت: (وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى) د تفسیر طرف ته اشاره کړې ده ځکه چه مقام ابراهيم لره د مصلي جوړولو ظاهري مطلب به دا گنډلې شي چه په دې باندې اورديدو سره مونځ او کړي امام بخاری رحمته الله (دا باب قائلونو سره) او خود ل چه دا مطلب نه دي بلکه مراد دادي چه مقام ابراهيم د قبلي په شان مخې ته کولو سره مونځ کونى. (۲)

حدیث باب (رومې حدیث) [حدیث نمبر ۳۸۷]

۳۹۵- حَدَّثَنَا الْحَمِيدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ سَأَلْنَا ابْنَ عُمَرَ (۲) عَنْ رَجُلٍ طَافَ بِالْبَيْتِ الْعُمْرَةَ، وَلَمْ يَطْفِئِ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، أَيَأْتِي امْرَأَتَهُ فَقَالَ قَدِمَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَطَافَ بِالْبَيْتِ سَبْعًا، وَصَلَّى خَلْفَ الْمَقَامِ كَعَتَيْنِ، وَطَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ.

ترجمه حدیث: د حضرت عمرو بن دینار رحمته الله نه روایت دي چه مونږ د حضرت عبد الله بن عمر رحمته الله نه د هغه سړي باره کښې تپوس او کړو چا چه د عمرې د پاره د بیت الله طواف او کړو او صفا مروه کښې ئی سعی اونه کړه، آیا هغه خپلې بی بی سره کوروالي کولی شي؟ نو حضرت ابن عمر رحمته الله په جواب کښې ارشاد او فرمائیلو چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د (حجة الوداع په موقع باندې مکې) ته تشریف راوړو، (نو) حضور پاک او وه خل د بیت الله طواف او کړو او د مقام ابراهيم شاته ئی دود رکعتو مونځ او کړو او بیائی د صفا مروه په مینځ کښې سعی او کړه. او بیشکه ستاسو دپاره د رسول الله صلی الله علیه و آله په ذات اقدس کښې بهترینه نمونه موجود

(۱) إيضاح البخاری: ۱۱۸/۳-۱۱۷، للامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۳۹/۳.

(۲) فضل الباری: ۱۰۶/۳.

(۳) أخرجه البخاری أيضاً فی الحج، فی باب: صلی النبی صلی الله علیه وسلم لسبوعه رکعتین رقم الحدیث: ۱۶۲۳، وفی باب: من صلی رکعتی الطواف خلف المقام، رقم الحدیث: ۱۶۲۷، وفی باب: ماجاء فی سعی بین الصفا والمروة، رقم الحدیث: ۱۶۴۵، ۱۶۴۷، وفی باب: منی یحل المعتمر، رقم الحدیث: ۱۷۹۳، ومسلم فی صحیحہ، فی الحج، باب: بیان أن المحرم بعمرة لا یتحل بالطواف قبل سعی وأن المحرم بحج لا یتحل بطواف القدم وكذلک القارن، رقم الحدیث: ۱۲۳۴، والنسائی فی سننه، فی الحج، باب: طواف من أهل بعمرة، رقم الحدیث: ۲۹۳۳، وابن ماجه فی سننه، فی الحج، باب: الرکعتین بعد الطواف، رقم الحدیث: ۲۹۵۹، وفی جامع الأصول، حرف الحاء، کتاب الأول: فی الحج والعمرة، الباب الثامن: فی التحلل وأحكامه، الفصل الثانی: فی وقت التحلل وجوازه، رقم الحدیث: ۱۶۱۲، ۳۰۷/۳.

ده. (لهذا دعمرې دپاره په صفا مروه کښې سعی ضرور کول پکار دی).  
حضرت عمرو بن دینار رضی الله عنه وائی چه هم دغه سوال مونږ د حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه نه  
او کړو. هغوی صراحة او فرمائیل داسې سرې دې هیخ کله خپلې بی بی سره کوروالې نه کوی  
تر هغې پورې چه د صفا مروه په مینخ کښې سعی او کړی.  
تو اجم رجال: په دې حدیث شریف کښې ټول څلور رجال دی:

① الحمیدی رضی الله عنه: دا ابوبکر عبد الله بن زبیر بن عیسی قریشی، اسدی، حمیدی، مکی، رضی الله عنه

دې. دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بدء الوحی، رومبی حدیث لاندې او تفصیلی

احوال کتاب العلم، باب: قول المحدث: حدثنا واخبرنا وانبأنا لاندې تیر شوی دی. (۱)

② سفیان رضی الله عنه: دا مشهور محدث، سفیان بن عیینه بن ابی عمران هلالی کوفی رضی الله عنه دې. د

دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بدء الوحی رومبی حدیث لاندې او تفصیلی احوال

کتاب العلم، باب: قول المحدث: حدثنا واخبرنا وانبأنا لاندې تیر شوی دی. (۲)

③ عمرو بن دینار رضی الله عنه: دا ابو محمد عمرو بن دینار مکی جحمی رضی الله عنه دې. د دوی احوال کشف

الباری، کتاب العلم، باب: كتابة العلم د دریم حدیث لاندې تیر شوی دی. (۳)

④ ابن عمر رضی الله عنه: دا مشهور صحابی رسول حضرت عبد الله بن عمر بن خطاب رضی الله عنه دې. د دوی

احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: بنی الإسلام علی خمس کښې تیر شوی دی. (۴)

شرح هدیث: طاف بالبيت العمرة. (د حضرت عمرو بن دینار رضی الله عنه نه روایت دې چه مونږ د

حضرت عبد الله بن عمر رضی الله عنه نه دهغه سرې باره کښې تپوس او کړو چه، چا د عمرې دپاره  
د بیت الله طواف او کړو.

په دې جمله کښې لفظ "العمرة" د حرف جر لام په حذف سره دې. دا د مستملی او حموی

روایت دې. دې ځائی کښې حرف جر محذوف منلونه بغیر معنی نه صحیح کیږی په دې وجه

تقدیر منل ضروری دی. او په نورو ډیرو نسخو کښې دا لفظ د "العمرة" په ځائی "للعمرة" دې (۵)

علامه برماوی رضی الله عنه لیکلی دی چه د لام نه بغیر هم صحیح دې په دې صورت کښې به دا

مفعول له وی او "العمرة" به د اعتمار په معنی کښې واخستلې شی. (۶)

(۱) کشف الباری: ۲۳۷/۱، ۹۹/۳.

(۲) کشف الباری: ۲۳۸/۱، ۱۰۲/۳.

(۳) کشف الباری: ۴/۳۰۹.

(۴) کشف الباری: ۱/۶۳۷.

(۵) الکوکب الدراری: ۵۹/۴، مصابیح الجامع: ۱۱۲/۲، عمدة القاری: ۱۹۴/۴.

(۶) للامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۳۹/۳.

داهم ممکن دی چه "العمره" نه مخکنبی لفظ د طواف په توگه د مضاف محذوف او منلې شی بیا مضاف حذف کولو سره د دې په ځانې مضاف الیه قائم مقام کړې شی (۱)  
 قوله: "ولم یطف بین الصفا والمروة" او د صفا مروه په مینځ کنبې شی سعی اونه کړه.

قوله: "لم یطف" دا لفظ د "لم یسع" په معنی دې یعنی "ولم یسع بین الصفا والمروة" چه هغه د صفا مروه په مینځ کنبې سعی اونه کړه. سعی لره په طواف سره د تعبیر کولو وجه دا کیدې شی چه سعی هم د طواف یو قسم دې. یا د مشاکلت او بیت الله د طواف مصاحب کیدو د وجې نه شی سعی په طواف سره تعبیر کړې ده (۲)

قوله: "أبأتی امرأته": آیا هغه خپلې بی بی سره کوروالې کولې شی؟  
 همزه د استفهام دپاره ده یعنی سوال شی او کړو چه عمره کنبې د صفا مروه په مینځ کنبې د سعی کولو نه مخکنې عمره کونکې به حلال وی که نه؟ او هم په دې وجه د داسې سړی د پاره به خپلې بنځې سره صحبت کول جائز وی که نه؟ په دې مقام باندې سوال صرف د بنځې سره د مجامعت د حلال کیدو یا نه کیدو باره کنبې په دې وجه کړې شوي دي چه بی بی له راتلل د احرام په حالت کنبې د کړې شوو حرامو کارونو کنبې د ټولو نه لوئی حرام کار دې گنی د احرام نه حلالیدونه مخکنې د ټولو محرماتو حکم هم داده دې چه د هغې ارتکاب جائز نه دې (۳)

قوله: فَقَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نو حضرت ابن عمر رضي الله عنهما په جواب کنبې ارشاد اوفرمائیلو (نبي کریم صلى الله عليه وسلم) د حجة الوداع په موقع باندې مکې ته، تشریف راوړو.

قوله: فَقَالَ: نه مراد "فأجاب" دې یعنی حضرت عبدالله بن عمر رضي الله عنهما د دې سوال جواب ورکړو په دې جواب کنبې اهم خبره داده چه هغوی نیغ په نیغه سخت جواب ورکولو په ځانې د نبی کریم صلى الله عليه وسلم فعل پیش کولو سره اوفرمائیل چه د خپل فعل د پاره د نبی کریم صلى الله عليه وسلم د عمل نه دلیل حاصل کړه ځکه چه الله تعالی د ژوند تیرولو دپاره بهترینه نمونه د خپل حبیب محمدرسول الله صلى الله عليه وسلم په ذات اقدس کنبې کیخودې ده. خاص کر د حج په معاملاتو کنبې خود حضور پاک صلى الله عليه وسلم صریح قول «لتأخذوا مناسککم» (۴).

(۱) مصابیح الجامع: ۱۱۲/۲، کوثر المعانی الدراری فی کشف خبايا صحيح البخاری: ۲۲/۷.

(۲) الکواکب الدراری: ۵۹/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحيح: ۱۳۹/۳، عمدة القاری: ۱۹۵/۴، فتح الملهم، کتاب الحج، باب: بیان أن المحرم بعمره لا يتحلل بالطواف قبل سعی: ۱۰۳/۶.

(۳) الکواکب الدراری: ۵۹/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحيح: ۱۳۹/۳، عمدة القاری: ۱۹۵/۴، کوثر المعانی الدراری فی کشف خبايا صحيح البخاری: ۲۲/۷، فتح الملهم، کتاب الحج، باب: بیان أن المحرم بعمره لا يتحلل بالطواف قبل سعی: ۱۰۴/۶.

(۴) عن جابر رضی الله عنه یقول: رأیت النبی صلی الله علیه وسلم یرمی علی راحلته یوم النحر، ویقول: لتأخذوا مناسککم، فإنی لا أدری لعلی لا أحج بعد حجتی هذه. (صحیح مسلم، کتاب الحج، باب: استحباب رمی الجمره العقبة یوم النحر راكباً، و بیان قوله صلی الله علیه وسلم: لتأخذوا مناسککم، رقم الحدیث: ۱۲۹۷، .....)



تفسير ابن كثير كنبى ددي آيت: (لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ) تشرح كنبى (چه كوم دليل حضرت ابن عمر رضي الله عنهما پيش كړې دي، علامه ابن كثير رحمته الله عليه ليكي: هذه الآية الكريمة أصل كبرئيل التأسى برسول الله صلى الله عليه وسلم في أقواله، وأفعاله، وأحواله (١).

يعنى دا آيت د نبى كريم صلى الله عليه وسلم د أقوالو، افعالو او احوالو اتباع كولو كنبى د يرلوني بنيادي حيثيت لري. او په دي مسئله كنبى چونكه نبى كريم صلى الله عليه وسلم د سعى كولو نه پس حلال شوې وو په دي وجه د سعى كولو نه مخكښې بې سره كوروالي كول جائز نه دي (٢).

د عمري نه حاليدو باره كنبى د حضرت ابن عباس رضي الله عنهما مذهب: د عمري نه د حاليدو باره كنبى د حضرت ابن عباس رضي الله عنهما مذهب په مذكوره حديث كنبى د بيان شوي مذهب نه خلاف دي او هغه دا چه كله د چا نظر په بيت الله باندې پريوخي نو د هغه احرام به كولاشي. لهذا داسې سړي د پاره خپلې ښځې سره صحبت كول جائز وي يعنى د طواف نه پس د سعى نه مخكښې به هغه حلال شي. هم په دي وجه يو صحابي د حضرت عبدالله بن عمر رضي الله عنهما نه سوال كړې وو نو هغوى اشاره جواب وركړې وو چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم اتباع او كړه. قاضي عياض رحمته الله عليه، علامه نووي رحمته الله عليه او حافظ ابن حجر رحمته الله عليه وغيره د دي خبرې تصريح كړې ده چه په دي باره كنبى د حضرت ابن عباس رضي الله عنهما مذهب د جمهورو صحابه كرامو سره نه وو (٣).

د حديث شريف د ترجمة الباب سره مناسبت: د مذكوره حديث د ترجمة الباب سره مناسبت د وصل خلف المقام ركعتين كنبى دي (٤). د امام بخاري رحمته الله عليه مقصد صرف "وصل خلف المقام ركعتين" سره دي. اوس كه چرې (اتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى) كنبى "اتخذوا" په استحباب باندې محمول كړې شي نو بيا هم مطابقت ښكاره دي چه د تحية الطواف د پاره د ټولو نه اوچت او اعلى مقام مقام ابراهيم دي، ضروري د چا په نيز هم نه دي. او كه چرې "اتخذوا" په وجوب باندې حمل كړې شي نو د مقام ابراهيم نه مراد به بيت الله وي. په دي صورت كنبى د روايت د ترجمة الباب سره انطباق ښكاره دي چه په موند كنبى دي كعبه قبله جوړه كړې

..... بيت الأفكار، هم موجود دي. (الكواكب الدراري: ٥٩/٤. كوثر المعاني الدراري في كشف خبايا صحيح

البخاري: ٢٢/٧، فتح الملهم، كتاب الحج، باب: بيان أن المحرم بعمرة لا يتحلل بالطواف قبل السعي: ١٠٤/٦.

( تفسير ابن كثير، سورة الأحزاب: ٣١، ٣٩١/٦

( كمال المعلم بفوائد مسلم، كتاب الحج، باب: ما يلزم من أحرم بالحج، ثم قدم مكة، من الطواف والسعي: ٣١٢/٤.

المنهاج شرح صحيح مسلم، كتاب الحج، باب: بيان أن المحرم بعمرة لا يتحلل بالطواف قبل السعي: ٢١٩/٨.

( شرح ابن بطلال، كتاب الحج، باب: متى يحل المعتمر، رقم الحديث: ١٥٦٧، ٢٩٨/٤، دارالكتب العلمية، إكمال

المعلم بفوائد مسلم، كتاب الحج، باب: ما يلزم من أحرم بالحج، ثم قدم مكة، من الطواف والسعي: ٣١٢/٤، المنهاج

شرح صحيح مسلم، كتاب الحج، باب: بيان أن المحرم بعمرة لا يتحلل بالطواف قبل السعي: ٢١٩/٨، فتح الباري:

٦٤٧/١، كوثر المعاني الدراري في كشف خبايا صحيح البخاري: ٢٢/٧.

( فتح الباري: ٦٤٧/١، عمدة القاري: ١٩٤/٤، كوثر المعاني الدراري في كشف خبايا صحيح البخاري: ٢٢/٧.

شي لکه چه په روایت کنسې د حضور پاک د عمل نه هم دغه ثابت دی (١)

حضرت مولانا انور شاه کشمیری رحمته اللہ علیہ فرمائی چه د ترجمې مطابقت وصلی خلف النقام نه حاصل شو کوم چه په اول حدیث الباب کنسې ذکر دی او محقق عینی رحمته اللہ علیہ هم ددې صراحت کړې دي. بیا نه ده معلومه چه للامع الدراري: ١٥٢/١ کنسې داسې ولې اولیکل چه په ترجمه الباب باندې دا اشکال دي چه امام بخاری رحمته اللہ علیہ په دې کنسې قرآنی آیت ذکر کړې دي په کوم کنسې چه په مقام ابراهیم باندې د مونخ کولو امر دي. بیا هغه چه کوم روایتونه ددې ترجمې لاندې راوړي دی په هغې کنسې مقام ابراهیم لره په مصلي جوړولو باندې هیڅ دلالت نشته دي. بیانی لیکلی دی چه حضرت اقدس مولانا گنگوهی رحمته اللہ علیہ هم ددې اشکال دوه جوابونه ورکړي دي الخ. حیرانتیا ده چه حضرت شیخ الحدیث دامت برکاتهم عدم مطابقت هم په گوته کړې دي او په ظاهره د حضرت گنگوهی رحمته اللہ علیہ په نیز هم دلته د عدم مطابقت څه اشکال نشته دي بلکه هغوي خود امام بخاری رحمته اللہ علیہ دا مراد واضح کول غواړي چه د مقام ابراهیم سره خواکې د مونخ د حکم باوجود هم د فرض استقبال کعبه په تاکد کنسې فرق نه راځي. ځکه چه حضور پاک خو صلوة خلف المقام سره هم د استقبال کعبه ترک نه دي فرمائیلي. دویمه خبره حضرت رحمته اللہ علیہ د امام بخاری رحمته اللہ علیہ دا خودلې ده چه په آیت کنسې اگر چه امر دي مگر هغه د سنیت یا استحباب د پاره دي د وجوب د پاره نه دي. ځکه چه که چرې د وجوب د پاره وي نو حضور پاک به مواجهه بیت الله کنسې مونخ نه کولو، کوم چه په دویم او دریم حدیث باب کنسې ذکر دي. (١)

ځکه چه په دې صورت کنسې خو مقام ابراهیم د حضور پاک شاته وو وړاندې نه وو او وړاندې

(١) ایضاح البخاری: ١٧٣/٢.

(١) الدرالمختار مع ردالمحتار. كتاب الصلاة. باب: الإمامة: ٣١٦/٢-٣١٤. بدائع الصنائع. كتاب الصلاة. فصل في بيان مقام الإمام والمأموم: ٦٧٤/١ الفتاوى الهندية. كتاب الصلاة. الباب الخامس في الصلاة. الفصل الخامس في بيان المقام الإمام والمأموم: ٨٨/١ (٢) حدثنا محمد بن العلاء، الهمداني أبو كريب، قال: حدثنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن إبراهيم، عن الأسود، وعلقمة، قال: أتينا عبدالله بن مسعود في داره، فقال: أصلي هؤلاء خلفكم؟ فقلنا: لا، قال: فقوموا فصلوا. فلم يأمرنا بأذان ولا إقامة، قال: وذهبنا لنقوم خلفه، فأخذ بأيدينا فجعل أحدنا عن يمينه والآخر عن شماله، قال: فلما ركع وضعنا أيدينا على ركبنا، قال: فضرب أيدينا وطبق بين كفيه، ثم أدخلهما بين فخذيه، قال: فلما صلى، قال: إنه ستكون عليكم أمراء يؤخرون الصلاة عن ميقاتها، ويخنقونها إلى شرق الموتى، فإذا رأيتهم قد فعلوا ذلك، فصلوا الصلاة لميقاتها، واجعلوا صلاتكم معهم سبحة، وإذا كنتم ثلاثة فصلوا جميعا، وإذا كنتم أكثر من ذلك، فيؤمكم أحدكم، وإذا ركع أحدكم فليفرش ذراعيه على فخذيه، وليجنأ، وليطبق بين كفيه، فلكنأي أنظر إلى اختلاف أصابع رسول الله صلى الله عليه وسلم فأراهم. (صحيح مسلم. كتاب الصلاة، باب الندب إلى وضع الأيدي على الركب في الركوع، رقم الحديث: ١٢٢١). والمذكور في "نزهة الألباب في قول الترمذي: وفي الباب هذا: "أما حديث ابن مسعود، فرواه مسلم: ٣٧٨/١، وأبو عوانة في مستخرجه: ١٨١/٢-١٨٠، والنسائي في المجتنبى: ٦٦/٢ والكبرى: ٣٧٨/١، وأحمد: ٤١٣/١، وغيرهم. (نزهة الألباب وفي قول الترمذي: "وفي الباب، كتاب الصلاة: ٥٥٤/٢).

صرف کعبه وه. دې نه علاوه دا خبره په خپل ځاني هم صحيح نه ده چه د باب په رواياتو کښي مقام ابراهيم لره په مصلى جوړولو باندې څه دلالت نشته دي. هم په رومبي حديث کښي د حضور پاك په مقام ابراهيم کښي دمونځ کولو ذکر په صراحت سره موجود دي. دا خو په پوره شان سره د ترجمه الباب د آيت په مصداق باندې عمل وو ليکن په دې باندې د عمل کولو باوجود داهم ښکاره کول ضروري وو چه مقام ابراهيم سره مونځ کول د شرف، برکت او اجر زياتيدو موجب دي، دا سي نه ده چه ددې په وجه د بيت الله د استقبال اهميت څه کم شو. بلکه د حضرت گنګوهي رضي الله عنه د تحقيق مطابق ددې نور تاکيد مفهوم شو چه دې سره مونځ هم په صحت د استقبال کعبه معظمه باندې موقوف دي او هم ددې د پاره حضور پاك هلته هم په مونځ کښي استقبال ترك نه کړو (۱)

د مذکوره حديث شريف نه مستنبط شوي احکام: د مذکوره حديث نه چه کوم فوائد او احکام مستنبط کيږي په هغې کښي يو خودادي:

① په اتفاق د علماؤ په عمره کښي سعی واجب ده. دې نه بغير عمره کونکي نه شي حلاليدې (۲)

② د سعی د پاره اووه چکري لازمي دي (۳)

③ دوه رکعته مونځ مقام ابراهيم سره کول واجب دي. په دې کښي د سيد المرسلين رضي الله عنهم اقتداء ده. دا د احنافو په نيز دي گني د شوافع په نيز دا دوه رکعته سنت دي (۴)

تعليق: «وَسَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، فَقَالَ: «لَا يَقْرَبُهَا حَتَّى يَطُوفَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ»

د تعليق ترجمه: حضرت عمرو بن دينار رضي الله عنه وائي چه هم دغه سوال مونږ د حضرت جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه او کړو نو هغوی (په صراحت سره) او فرمائيل چه داسې سرې دي هيڅ کله د خپلې بي بي سره کوروالي نه کوي، تر دې چه د صفا مروه په مينځ کښي سعی او کړي.

د تعليق تخريج: دا روايت مسند حميدي (۵)

او مصنف ابن ابي شيبه (۶) کښي موصولاً موجود دي.

(۱) انوار الباری: ۱۹۵/۱۲.

(۲) فتح الباری: ۶۴۷/۱، الشرح الميسر لصحيح البخاری: ۴۴۴/۱، کوثر المعاني الدراري فی کشف خبايا صحيح البخاری: ۲۲/۷.

(۳) الشرح الميسر لصحيح البخاری: ۴۴۴/۱.

(۴) فتح الباری: ۶۴۷/۱، الشرح الميسر لصحيح البخاری: ۴۴۴/۱، کوثر المعاني الدراري فی کشف خبايا صحيح البخاری: ۲۲/۷.

(۵) حدثنا الحميدي، قال: حدثنا سفيان، قال: حدثنا عمرو بن دينار، قال: سألنا جابر بن عبد الله، فقال: لا تقر بها حتى تطوف بين الصفا والمروة. (مسند الحميدي، كتاب الحج، باب: أيقع الرجل بإمراته قبل أن يسعى، رقم الحديث: ۵۴۱/۱، ۶۸۴).

(۶) حدثنا أبو بكر قال: حدثنا ابن عيينة عن عمرو قال: سألت جابر بن عبد الله عن رجل اعتمر، فطاف بالبيت، ثم أراد أن يقع على أهله قبل أن يطوف بين الصفا والمروة؟ فقال: لا، حتى يطوف بين الصفا والمروة. (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الحج، باب: في المعتمر بطوف بالبيت، أيقع على أهله، رقم الحديث: ۱۴۹۲۷، ۴۹۲/\_\_\_)

و تعلق مقصد ددی تعلق مقصد صرف دا خبره واضح کول دی چه مخکینی روایت کنسی حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما په صراحت سره د سائل د سوال جواب نه وو و زکړې بلکه صرف د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم عمل نی پیش کړې وو چه په دې کنسې ستاسو د پاره لار خودنه موجود ده ددې مطابق عمل او کړنی. لیکن په مذکورہ تعلق کنسې ددې خبرې وضاحت موجود دې چه حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہ په واضحه توگه باندي او خودل چه معتمر هغه وخته پورې حلالیدې نه شی ترکومې پورې چه سعی اونه کړی (۱)

حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ۳۸۸]

۲۱۷- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سَيْفٍ قَالَ سَمِعْتُ مُجَاهِدًا <sup>۲</sup> قَالَ أَتَى ابْنَ عُمَرَ فَقِيلَ لَهُ هَذَا رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - دَخَلَ الْكَعْبَةَ فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ فَأَقْبَلْتُ وَالنَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَمَخَّرَجْتُهُ وَأَجِدُ بِلَالًا قَائِمًا بَيْنَ الْبَابَيْنِ، فَسَأَلْتُ بِلَالًا فَقُلْتُ أَصَلَّى النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي الْكَعْبَةِ قَالَ نَعَمْ رَكْعَتَيْنِ بَيْنَ السَّائِرَتَيْنِ اللَّتَيْنِ عَلَى يَسَارِهِ إِذَا دَخَلْتَ، ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى فِي وَجْهِ الْكَعْبَةِ رَكْعَتَيْنِ.

ترجمه حدیث: حضرت مجاهد رضی اللہ عنہ روایت کوی چه حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما له یو سرې راغلو او ونی و نیل چه او گوره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم کعبې معظمې ته دننه تشریف اوړې دې د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما بیان دې چه زه هلته اورسیدم نو حضور پاک بهر تشریف راوړې وو او (لکه) چه زه بلال رضی اللہ عنہ (اوس هم) وینم چه دواړه د دروازي په مینخ کنسې ولاړ دی. ما د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه تپوس او کړو چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په کعبه کنسې دننه مونخ کړې دې؟ نوهغوی او و نیل چه او، دوه رکعته د هغه ستنو په مینخ کنسې کومې چه د بیت الله د داخلیدو په وخت نی او گس طرف ته وی. بیا حضور پاک بهر راغلو او دوه رکعته نی د کعبې مواجهه کنسې او کړل.

(۱) فتح الباری: ۱/۶۴۷، عمدة القاری: ۴/۱۹۵.

(۲) أخرجه البخاری أيضاً وفي المساجد، باب: الأبواب والخلق للكعبة والمساجد، رقم الحديث: ۴۶۸، وفي ستره المصلی، باب: الصلاة بين السور في جماعة، رقم الحديث: ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، وفي التطوع، باب: ماجاء في التطوع مني مني، رقم الحديث: ۱۱۶۷، وفي الحج، باب: إغلاق البيت ويصلى في أي نواحي البيت شاء، رقم الحديث: ۱۵۹۸، وباب: الصلاة في الكعبة، رقم الحديث: ۱۵۹۹، وفي الجهاد، باب الردف على الحمار، رقم الحديث: ۲۹۸۸، وفي المغازی، باب: دخول النبي صلى الله عليه وسلم من أعلى مكة، رقم الحديث: ۴۲۸۹، باب: حجة الوداع، رقم الحديث: ۴۴۰۰، ومسلم في صحيحه، في الحج، باب: استحباب دخول الكعبة للحاج وغيره، رقم الحديث: ۳۲۳۱، ۳۲۳۲، ۳۲۳۳، ۳۲۳۴، ۳۲۳۵، ۳۲۳۶، وأبو داود في سننه، في المناسك، باب: الصلاة في الكعبة، رقم الحديث: ۲۰۲۳، والترمذی في سننه، في الحج، باب ماجاء في الصلاة في الكعبة، رقم الحديث: ۸۷۴ والنسائي في سننه، في المساجد، باب: الصلاة في الكعبة، رقم الحديث: ۶۹۳ وفي القبله، باب: مقدار ذلك، رقم الحديث: ۶۵۰، وفي الحج، باب: دخول البيت، رقم الحديث: ۲۹۰۸، ۲۹۰۹، وباب: موضع الصلاة بالبيت، رقم الحديث: ۲۹۱۰، ۲۹۱۱، وابن ماجه في سننه، في المناسك، باب: ۳۰۶۳، وفي جامع الأصول، حرف الحاء، الكتاب الأول، في الحج والعمرة، الباب الرابع: في الطواف والسعي ودخول البيت، الفصل الثالث: في دخول البيت، رقم الحديث: ۱۵۱۴، ۲۲۵/۳.

تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کنبی قول پنخہ رجال دی:

① مسدد بن مسدد بن مسرہد بن مسربل بن مرعبل الاسدی البصری رضی اللہ عنہ دی اود بعضو

پہ نیز د دوی نوم عبد الملك بن عبد العزيز دی. د دوی مختصر حالات کشف الباری، کتاب

الإیمان، باب: من الإیمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه، لاندی او تفصیلی حالات کتاب العلم، باب:

من خص بالعلم قوما دون قوم کراهیة أن لا یفهموا لاندی تیر شوی دی. (۱)

② یحییٰ بن سعید بن فروخ القطان تمیمی رضی اللہ عنہ دی. د دوی کنیت ابو سعید دی

د دوی مختصر حالات کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الإیمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه

لاندی تیر شوی دی. (۲)

③ سیف بن سلیمان المخزومی المکی رضی اللہ عنہ دی. د دوی کنیت ابو سلیمان المکی

دی. (۳) دوی ته سیف بن ابی سلیمان هم وئیلی شو. (۴)

ابن معین رضی اللہ عنہ وائی سیف بن سلیمان المکی او سیف بن ابی سلیمان هم د یو کس دوه

نومونه دی. (۵) د دوی شمیر پہ طبقه سادسه کنبی کیدلو. (۶) دا د بنی مخزوم ازاد کرې شوی

غلام وو. (۷)

دوی چه دکومو مشانخو نه روایت کوی پہ هغوی کنبی مجاهد بن جبر، عبد الله بن ابی

نجیح، قیس بن سعد المکی، عدی بن عدی الکندی، عمرو بن دینار، ابو امیه عبد الکریم

بن ابی المخارق البصری، وغیره رحمهم الله شامل دی. (۸) اود دوی نه روایت کونکو کنبی

یحییٰ بن سعید القطان، ابو اسامه حماد بن اسامه، زید بن الحباب، سفیان الثوری، معتمر

بن سلیمان، عبد الله ابن المبارک، مسلم بن خالد الزنجی، زید بن الحباب، عبد الله بن نمیر

وغیره رحمهم الله شامل دی. (۹)

امام بخاری رضی اللہ عنہ فرمائی چه یحییٰ القطان رضی اللہ عنہ وائی کان عندنا لثقة من یصدق ویحفظ. (۱۰) هم د

قول ابو حاتم رضی اللہ عنہ د علی ابن المدینی رضی اللہ عنہ نه داسې نقل کرې دی چه ما د یحییٰ بن سعید نه

(۱) کشف الباری: ۲/۲، ۵۸۸/۴.

(۲) کشف الباری: ۲/۲.

(۳) تهذیب الکمال: ۳۲۰/۱۲.

(۴) الجرح والتعدیل: ۴۲۵/۶، تهذیب التهذیب: ۲۹۴/۴.

(۵) تاریخ ابن معین: ۸۴/۳.

(۶) موسوعة رجال الكتب التسعة: ۱۳۳/۲، تقریب التهذیب: ۴۹۸/۱.

(۷) التاريخ الكبير للبخاری: ۱۷۱/۴، تهذیب التهذیب: ۲۹۴/۴.

(۸) تهذیب الکمال: ۳۲۰/۱۲، تهذیب التهذیب: ۲۹۴/۴.

(۹) تهذیب الکمال: ۳۲۰/۱۲، تهذیب التهذیب: ۲۹۴/۴.

(۱۰) التاريخ الكبير للبخاری: ۱۷۱/۴.

دسیف بن سلیمان باره کنسی تپوس او کړو نو هغوی او فرمائیل کان عندنا ثبت ممن یصدق  
 ویحفظ (۱). صالح بن احمد رضی الله عنه وائی چه زما پلار احمد بن حنبل رضی الله عنه فرمائیلی دی: سیف ثقه.  
 ابو محمد رضی الله عنه وائی چه زما والد نه د سیف بن سلیمان رضی الله عنه باره کنسی پوښتنه او کړې شوه  
 نو هغوی او فرمائیل: لا بأس به. (۲) عجلی رضی الله عنه او ابوبکر البزار رضی الله عنه د هغوی باره کنسی  
 فرمائی: ثقه. (۳) ابوزرعه الدمشقی رضی الله عنه فرمائی: ثبت. (۴) ابن عدی رضی الله عنه د هغوی باره کنسی  
 فرمائی: حدیثه لیس بالکثیر، وأرجوانه لا بأس به. (۵) امام نسائی رضی الله عنه د هغوی باره کنسی  
 او فرمائیل ثقه ثبت. (۶) ابن حبان رضی الله عنه هغوی په الثقات کنسی ذکر کړی دی. (۷) یحیی ابن معین  
رضی الله عنه به وئیل چه سیف بن سلیمان او زکریا بن اسحاق دواړه قدری وو. (۸) حافظ ذهبی رضی الله عنه  
 فرمائی چه د ابن معین رضی الله عنه د دې تعنت باوجود یحیی بن سعید القطان رضی الله عنه د هغوی نه روایت  
 کړې دې. (۹)

حافظ ذهبی رضی الله عنه فرمائی چه ابن عدی رضی الله عنه په الكامل فی ضعفاء الرجال کنسی د هغوی ذکر کړې  
 دې او د هغوی دا حدیث ئی نقل کړې دې: «عن قیس بن سعید، عن عمرو بن دینار، عن ابن عباس، أن  
 النبی صلی الله علیه وسلم قضی بالیمین مع الشاهد الواحد». (الكامل فی ضعفاء الرجال: ۳/۲۳۸) او  
 عباس د یحیی ابن معین نه د دې حدیث باره کنسی تپوس او کړو نو هغوی جواب ورکړه:  
 لیس بحفوظ، وسیف قدری. حافظ ذهبی رضی الله عنه فرمائی چه زه وایم چه دا حدیث عبد الرزاق عن  
 محمد بن مسلم الطائفی، عن عمرو په سند سره روایت کړې دې او دا عن داؤد العطار، عن عمرو په  
 سند سره هم روایت کړې شوې دې. ابن عدی رضی الله عنه د دې پوره بحث نه پس او فرمائیل: أرجوانه لا  
 بأس به. (۱۰) الساجی رضی الله عنه وائی: أجمعوا علی أنه صدوق ثقه، غیر أنه اتهم بالقدر. (۱۱)

(۱) یعنی د ثقه په ځائی ثبت لفظ استعمال کړې دې. الجرح والتعديل: ۴/۲۵۴، تهذيب الكمال: ۱۲/۳۲۱

(۲) الجرح والتعديل: ۴/۲۵۴ تهذيب الكمال: ۱۲/۳۲۱.

(۳) تهذيب التهذيب: ۴/۲۹۴.

(۴) تهذيب الكمال: ۱۲/۳۲۰ تهذيب التهذيب: ۴/۲۹۴.

(۵) تهذيب الكمال: ۱۲/۳۲۰ تهذيب التهذيب: ۴/۲۹۴.

(۶) الكاشف: ۱/۴۷۵، تهذيب التهذيب: ۴/۲۹۴.

(۷) الثقات لابن حبان: ۱/۱۸۳.

(۸) تاريخ ابن معین بزوايه الدورى: ۳/۷۷.

(۹) میزان الاعتدال: ۲/۲۵۵ سیر اعلام النبلاء: ۶/۳۳۸.

(۱۰) میزان الاعتدال: ۲/۲۵۵ سیر اعلام النبلاء: ۶/۳۳۹-۳۳۸.

(۱۱) تهذيب التهذيب: ۴/۲۹۴ هدى السارى، ص: ۵۷۴.

ابوعبيد الاجري رضي الله عنه واني چه ما د ابو داؤد رضي الله عنه نه دهغه باره كښې تپوس او كړو نو هغوی او فرمائیل: ثقة، ما عرض او كړو: یرمى بالقدر نو هغوی جواب ور كړو: اعلیه. (١) حافظ ابن حجر رضي الله عنه فرمائی: ثقة ثبت، رمى بالقدر. (٢)

خلاصه دا چه په هغوی باندې كړې شوي دا جرح د جمهور ائمه الرجال د تعديل په مقابله كښې مذموم نه ده. حافظ ابن حجر رضي الله عنه هم مقدمه فتح الباري هدي الساري كښې په دې باندې تفصیلی كلام كړې دي. دهغوی د عمر آخری حصه بصره كښې تیره شوه او وفات ئی ١٥٦ هجري كښې شوې دي. (٣) دهغوی د وفات باره كښې دویم قول د ١٥١ هجري دي. (٤)

٣) مجاهد رضي الله عنه: دا ابو الحجاج مجاهد بن جبر مكی قرشي مخزومی رضي الله عنه دي. د دوی حالات كشف الباري، كتاب العلم، باب: الفهم في الحديث لاندې تیر شوی دی. (٥)

٤) ابن عمر رضي الله عنهما: دا مشهور صحابی رسول حضرت عبد الله بن عمر بن خطاب رضي الله عنهما دي. د دوی

احوال كشف الباري، كتاب الايمان، باب: بنی الإسلام على خمس كښې تیر شوی دی. (٦)  
شرح حدیث: أتى ابن عمر فقيل له: هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل الكعبة يعني حضرت ابن عمر رضي الله عنهما له څوك سړې راغلو او وئى وئيل چه گوره رسول الله صلى الله عليه وسلم كعبې معظمې ته دننه تشریف اوړې دي.

قوله: أتى - دهمزي په ضمي سره دمجهول صيغه ده. (٧) حافظ ابن حجر رضي الله عنه فرمائی ماته د ده سړي دنوم علم اونه شو چا چه حضرت ابن عمر رضي الله عنهما ته خبر ور كړې وو. (٨)

قوله: فأقبلت: د حضرت ابن عمر رضي الله عنهما بيان دي چه زه هلته اور سيدم.  
حضرت شيخ الحديث صاحب رضي الله عنه فرمائی چونكه حضرت ابن عمر رضي الله عنهما سخت د سنتو تابعدار وو په دې وجه چه كله هغوی ته دا خبر ملاؤ شو چه حضور پاك كعبې ته داخل شو نو هغه هم ورغلو چه او گوري چه حضور پاك هلته لاړو نو چه څه څه ئی او كړه او كوم څه چه حضور پاك او كړه چه هم هغه زه هم او كړم، مگر حضور پاك بهر تشریف راوړې وو. (٩)

قوله: والنبي صلى الله عليه وسلم قد خرج: په داسې حال كښې چه نبی كريم بهر تشریف راوړې

(١) تهذيب الكمال: ٣٢١/١٢ تهذيب التهذيب: ٢٩٤/٤.

(٢) تقريب التهذيب: ٤٩٨/١ تحرير تقريب التهذيب: ١٠٠/٢.

(٣) الجرح والتعديل: ٤٢٥/٦ تقريب التهذيب: ٤٩٨/١.

(٤) الكاشف: ٤٧٥/١.

(٥) كشف الباري: ٣٠٧/٣.

(٦) كشف الباري: ٦٣٧/١.

(٧) عمدة القاري: ١٩٦/٤ الكونثر الجازي إلى رياض أحاديث البخاري: ٨٢/٢.

(٨) فتح الباري: ٦٤٨/١ التوضيح لسبهمات الجامع الصحيح: ص: ٥٢.

(٩) تقرير بخاري شريف: ١٤٥/٢، الكنز المتواري: ٨٦/٤.

وود آخره: صلّه من الکعبه ده.

قوله: وأجد بلائاً فأبأبئین البائین: ما حضرت بلال رضی اللہ عنہ د بیت الله د دواړو دروازو په مینځ کښې ولاړ اولیدو. دلته اجد د مضارع صیغه ده لیکن د ماضی وجدت په معنی کښې ده. اودې نه مقصود د حال حکایت کول دی یاد تیرې شوې زمانې، هغه صورت په ذهن کښې حاضر ساتل دی. (۱)

یعنی ماضی نی د استقبال صیغې سره تعینیر کړه. ماضی د استقبال صیغې سره تعبیر کولو مطلب دا وی چه هغه واقع دې وخت کښې زما د سترگو مخې ته راتاؤ شوې ده څنگه چه هغه وخت زما د سترگو په وړاندې وه.

علامه سیوطی رحمته اللہ علیہ فرمائی: بین البائین نه مراد بین المصاعین دې. اود حموی په روایت کښې خو په دې ځای د بین الناس لفظ دې. (۲)

علامه برماوی رحمته اللہ علیہ فرمائی: بین البائین نه مراد مصراع الباب هم کیدې شی ځکه چه هغه وخت دکعبې هم یوه دروازه وه اود دې نه مراد دوه دروازې هم کیدې شی چه د حضرت ابراهیم رضی اللہ عنہ په زمانه کښې دکعبې دوه دروازې وې. هم په دې وجه حضرت عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ په خپل دور کښې دکعبې هم دوه دروازې کړې وې. اوبعضې نسخو کښې د البائین په ځای الناس لفظ هم دې. (۳)

قوله: فَسَأَلْتُ بِلَالَ، فَقُلْتُ: أَصَلَّى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْكَعْبَةِ؟ قَالَ: «نَعَمْ، رُكْعَتَيْنِ، بَيْنَ السَّارِيَتَيْنِ اللَّتَيْنِ عَلَى بَسَارِهِ إِذَا دَخَلْتَ:

یعنی ما د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه تپوس او کړو چه آیا نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم په کعبه کښې دننه مونځ کړې دې؟ هغوی اوونیل او. حضور پاک د دغه دوو ستونو په مینځ کښې چه ستا د داخلیدو په وخت گس لاس ته راځی دوه رکعته کړی دی.

قوله: نعم! رکعتین نه مراد نعم! صل رکعتین دې. (۴). الساریتین نه مراد الأسطواتین دی. او هل یساره نه مراد یسار الداهل دې. یا یسار البیت دې. یا بیا په دې مقام باندې د حاضر نه د غائب طرف ته التفات کړې شوې دې. گنی د مقام مناسب خو یسارک کیدل پکار وو.

(۱) شرح الکرمانی: ۵۹/۴. التوشیح شرح الجامع الصحیح للسیوطی: ۴۸۶/۳. اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۴۰/۳.

(۲) التوضیح شرح الجامع الصحیح للسیوطی: ۴۸۶/۳. یعنی دا خبره نه ده چه هغه وخت دکعبې دوه دروازې وې. یعنی یوه دروازه د داخلیدو د پاره اودویمه د وتلو د پاره. او نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د دغه دوو دروازو په مینځ کښې ولاړ وو. بلکه د دوو دروازو نه مراد د یوې دروازې دوه تنبې دی دکومې په مینځ کښې چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ولاړ وو. (از مرتب)

(۳) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۴۰/۳. وکذا فی شرح الکرمانی: ۵۹/۴.

(۴) التوشیح شرح الجامع الصحیح للسیوطی: ۴۸۶/۳.



نبی اکرم ﷺ په کعبه کښې دننه څو رکعتونه مونځ کړې دي؟ د روایت د دې مقام نه معلومېږي چه حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه سوال او کړو چه نبی کریم ﷺ څو رکعتونه مونځ کړې دي نو په دې باندې هغه جواب ورکړو چه دوه رکعتونه ئې کړې دي. خو په بعضې روایتونو کښې ذکر دي چه حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما په ډیر افسوس سره فرمائی چه (افسوس) ما د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه ولې تپوس اونه کړو چه نبی کریم ﷺ په کعبه کښې دننه څو رکعتونه مونځ ادا کړو (۱)

نو د دې اشکال مختلف جوابونه ورکړې شوي دي: ① علامه عینی رضی اللہ عنہ فرمائی چه د دې بهتر جواب دا دي چه حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما هغه وخت صرف دا سوال کړې وو چه حضور پاک بیت یعنی کعبه کښې دننه څه او کړه؟ نو حضرت بلال رضی اللہ عنہ د لاس په دوو ګوتو سره اشاره او کړه (۲)

د کوم نه چه ئې دوه رکعتونه او ګنړل. بیا په زبانی توګه باندې د دې وضاحت کول د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما نه هیر شوي وو په کوم چه ئې افسوس کولو (۳)

② حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ فرمائی چه حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما د رکعتین کوم لفظ چه ذکر کړې دي هغه د ده خپل کلام دي د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه دي. په ظاهره هغوي د مونځ تحقیقی مقدار باندې اعتماد کولو سره خپل دا قول ذکر کړې دي. هغه داسې چه د حضرت بلال رضی اللہ عنہ د طرف نه دا جواب خو ملاؤ شو چه حضور پاک مونځ کړې دي بل طرف ته د رسول

(۱) كما رواه البخاری فی صحيح البخاری: حدثنا أبو النعمان، وقتيبة بن سعيد، قال: حدثنا حماد بن زيد، عن أيوب، عن نافع، عن ابن عمر: "أن النبي صلى الله عليه وسلم قدم مكة فدعا عثمان بن طلحة، ففتح الباب، فدخل النبي صلى الله عليه وسلم وبلا وأسامه بن زيد وعثمان بن زيد وعثمان بن طلحة، ثم أغلق الباب، فلبث فيه ساعة، ثم خرجوا، قال ابن عمر: فدبرت فسالته بلالا فقال: صلى فيه، فقلت: في أي؟ قال: بين الأسوانتين، قال: ابن عمر: فذهب علي أسأله كم صلى. (كتاب الصلاة، باب: الأبواب والفتلح للكعبة والمساجد، رقم الحديث: ۴۶۸، دار طوق النجاة) ورواه أيضا: حدثنا يحيى بن بكير، حدثنا الليث، قال يونس: أخبرني نافع، عن عبدالله رضى الله عنه: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم أقبل يوم الفتح من أعلى مكة على راحلته مردفا أسامة بن زيد، ومعه بلال، ومعه عثمان بن طلحة من الحجة، حتى أناخ في المسجد، فأمره أن يأتي بفتح البيت، ففتح، ودخل رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه أسامة وبلال وعثمان، فمكث فيها نهارا طويلا، ثم خرج، فاستبق الناس، وكان عبدالله بن عمر أول من دخل، فوجد بلالا وراء الباب قائما، فسأله: "أين صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ فأشار له إلى المكان الذي صلى فيه، قال عبدالله: فنسيت أن أسأله كم صلى من سجدة. (كتاب الجهاد والسير، باب الردف على الحمار، رقم الحديث: ۲۹۸۸، دار طوق النجاة).

(۲) حدثنا إسحاق بن يوسف، حدثنا ابن أبي داود، عن نافع، عن ابن عمر، قال: صعد رسول الله صلى الله عليه وسلم البيت وهلال خلفه، قال: وكنت شابا، فسعدت، فاستقبلني بلال، فقلت له: ما صنع رسول الله صلى الله عليه وسلم هاهنا؟ قال: فأشار بيده، أي: صلى ركعتين. (مسند أحمد بن حنبل، حديث بلال، رقم الحديث: ۲۳۹۲۱، ۳۴۳/۳۹، مؤسسة الرسالة).

(۳) عمدة القاري: ۱۹۷/۴.

اکرم ﷺ نه په ورځ کښې د دوو رکعتونه زیات کول نقل نه دی نو ددې مقدماتو لازمی نتیجه به هم دا راوځي چه په کعبه کښې دننه د حضور پاک ﷺ مونځ کم نه کم دوه رکعته خو وو. هم په دې وجه حضرت عبدالله بن عمر رضی الله عنهما د رکعتین لفظ او وئیلو.

حافظ رضی الله عنه فرمائی چه بیا ماته دخپلې ددې خبرې تائید هم ملاؤ شو هغه داسې چه عمر بن شهبه رضی الله عنه کتاب مکه کښې د عبدالعزیز بن ابی رواد په طریق سره دا روایت نقل کړې دې: «عن نافع، عن ابن عمر:.... فاستقبلني بلال، فقلت: ما صنع رسول الله صلى الله عليه وسلم هاهنا، فأشار بيده، أي: صلى ركعتين بالسبابة والوسطى». لهذا د حضرت عبدالله ابن عمر رضی الله عنهما دا قول نسبت

ان أسأله کم صلى به په دې خبره باندې محمول کولې شی چه هغه په ژبې سره نه دا سوال او کړو اونه حضرت بلال رضی الله عنه په ژبې سره ددې جواب ورکړو یعنی دوه رکعته مونځ شی د هغه په اشاره سره او گنړلو نه چه دهغه کلام کولو سره. خلاصه د کلام دا چه د حضرت بلال رضی الله عنه دا

قول نسبت ان أسأله کم صلى به په دې خبره باندې محمول وی چه هغه ته ددې خبرې تحقیق اونه شو چه رسول الله ﷺ دوه رکعته مونځ کړې دې که ددوؤ نه زیات؟ (۱)

علامه کورانی رضی الله عنه ددې خبرې په جواب کښې فرمائی چه دا خو داسې جواب دې چه هیڅوک به هم ددې قائل نه شی. ځکه چه حضرت ابن عمر رضی الله عنهما په دې کښې دا فرمائی چه ما د حضرت بلال رضی الله عنه نه تپوس او کړو چه آیا نبی کریم ﷺ (په کعبه کښې دننه) مونځ او کړو؟ نو هغوی جواب را کړو چه او، د دوو ستونو په مینځ کښې شی دوه رکعته او کړه. نو ددې خبرې سوچ څنگه کیدې شی چه دا قول د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما خپل قول دې. صحیح جواب دا کیدې شی چه حضور پاک دوه ځل کعبه کښې دننه داخل شو، یو ځل د فتح مکې په موقع باندې او په دویم ځل د حجة الوداع په موقع باندې. (د تعدد دخول یا د تعدد واقعه) دلیل دادې چه په دې مقام کښې (یعنی حجة الوداع په موقع کعبې ته د داخلیدو په واقعه کښې) دادې چه حضرت ابن عمر رضی الله عنهما د بیت طرف ته راغلو. هغوی ته خبر ورکړې شو چه رسول الله ﷺ کعبې ته داخل شو. او د مکې د فتحې په موقع کعبې ته د داخلیدو په حدیث کښې دی چه حضرت ابن عمر رضی الله عنهما خلقو ته خبر ورکړو چه رسول الله ﷺ مکې ته تشریف راوړو او بیت الله کښې داخل شو او دروازه شی بنده کړه او دائی هم او فرمائیل چه حضرت بلال رضی الله عنه ما د کعبې د دروازې شاته ولاړ اولیدو. او د حجة الوداع والا واقعه کښې شی فرمائیلی وو چه ما حضرت بلال رضی الله عنه د دواړو دروازو په مینځ کښې ولاړ لیدلې وو. نو چه کوم سرې هم په دواړو قسم احادیثو کښې غور او فکر کوی هغه به دا ښکاره فرق ښه شان سره او پېژنی (۲)

(۱) فتح الباری: ۶۴۸/۱ شرح الزرقانی علی الموطا للإمام مالک، کتاب الحج، الصلاة فی البيت: ۲۴۹/۲.  
(۲) الکونثر الجاری الی ریاض احادیث البخاری: ۸۲/۲ خلاصه دا چه حدیث باب د حجة الوداع د موقع دې. دا جواب قیاس ته ډیر نيزدي دې په دې اعتبار سره چه فتحه مکه اول پېښه شوې وه او حجة الوداع روستو. نو دا خبره عین ممکن ده چه اول پېښیدونکې واقعه کښې هغه دا تپوس اونه کړې شو چه حضور پاک څو رکعته آدا کړل او روستو پېښیدونکې واقعه کښې هغه تپوس هم او کړو او هغه ته جواب هم ملاؤ شو، فلا تعارض. والله اعلم بالصواب. (از مرتب).

حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چه بعضی متاخرینو دا دواړه متضاد روایتونه داسې د جمع کولو کوشش کړې دي چه کله حضرت بلال رضی الله عنه حضرت ابن عمر رضی الله عنهما ته دا حدیث بیان کړو نو حضرت ابن عمر رضی الله عنهما نه د حضرت بلال رضی الله عنه نه دا سوال کول هیر شوی وو. بیا دوباره ملاقات او شو نو حضرت ابن عمر رضی الله عنهما د هغه نه سوال هم او کړو. حافظ صاحب رحمته الله فرمائی چه په دې جواب یا احتمال کښې دوو طریقو سره نظر دې یو دا چه دا قصه (یعنی د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما د حضرت بلال رضی الله عنه نه په کعبه کښې د نبی کریم صلی الله علیه و آله د مונخ کولو باره کښې پوښتنې والا) یو ځل پینښه شوې ده نه چه ډیر ځل. په دې باندې دلیل دادې چه دواړو روایتونو کښې د سوال جواب په مقام د "فاء" تعقیبیه استعمال موجود دې. او گورنی په رومی روایت کښې «فَأْتَيْتُ، ثُمَّ قَالَ: فَسَأَلْتُ بِلَالَ» دې او دویم روایت کښې «فَبَدْرْتُ، فَسَأَلْتُ بِلَالَ» دې نو د فاء تعقیبیه استعمال ددې خبرې دلیل دې چه مذکوره سوال هم یو ځل او هم په یو وخت شوي وو. دویمه خبره دا چه د حضرت ابن عمر قول "وَنَسِيتُ... إلخ" روایت کونکې د هغوی آزاد کړې شوي غلام نافع دې چه د ډیرې اوږدې مودې نه د هغوی سره اوسیدلو لیکن په آخری وخت کښې دې د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما سره نه وو بلکه د هغوی نه جدا شوي وو. نو دا خبره عین ممکن ده چه په دغه آخری وخت کښې ابن عمر رضی الله عنهما په خپل دې نسیان او هیرې والا قول باندې باقی پاتې نه وي بلکه هغوی د دوو رکعتو والا صریح قول اختیار کړې وي.)

علامه عینی رحمته الله د حافظ ابن حجر رحمته الله ذکر کړې شوي د نظر وجوهات بیانولو نه پس د حافظ صاحب رحمته الله نوم اخستلو نه بغیر فرمائی چه د مذکوره وجوهات په نظر سره تعبیر کولو کښې هم په ډیرو اعتباراتو سره نظر دې:

① اول خبره دا چه ددې قصې متعدد کیدو دعوی کول بلا دلیل دی. ددې قصې د متعدد کیدو نه څه څیز مانع دې؟ هغه دې ذکر کړې شی.

② دویمه خبره د فاء تعقیبیه کیدو نه استدلال کولو سره د تعدد نفی کول صحیح نه دی ځکه چه د "فاء" استعمال صرف د تعقیب د پازه نه کیږي بلکه د فاء استعمال د شم معنی د تراخی د پاره هم کیږي. لکه چه د الله تعالی په دې قول: ﴿لَمَّا خَلَقْنَا النَّطْقَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً﴾ کښې فخلقتنا باندې دا خلیدونکې فاء او ددې نه وړاندې ﴿فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ﴾ او ددې نه وړاندې ﴿فَكَوْنًا﴾ باندې دا خلیدونکې فاء د شم په معنی د تراخی د پاره دې. او که چرې ددې فاء د تعقیب د پاره کیدل او منلې شی نو بیا هم په یو څیز کښې تعقیب معنی هم د هغه څیز په اعتبار سره مراد اخستل صحیح وی. آیا دا خبره نه ده چه د عربو په نیز دا وئیلی شی "تزووج فلان، فولدله" حالانکه د تزووج او ولادت په مینځ کښې پوره موده د حمل د وخت موجود ده. دغه شان

(۱) فتح الباری: ۱/۴۸ ذخیره العقی شرح سنن النسائی، کتاب الساجد، الصلاة فی الکعبه: ۵۱۰/۸-۵۰۹ دار المعراج.

و نیلی شی: "دخلت البصرة، فبغداد" دلته په بغداد باندې فاء د تعقیب د پاره ده لیکن د بصرې او بغداد په مینځ کښې د دوو ښارونو مسافت موجود دې لهذا دا نظر هم قابل تسلیم نه دې.   
 ⑤ دریمه خبره دا وینا چه د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما آزاد کړې شوې غلام د نافع د هغوی نه جدا کیدل او بیا د هغوی آخری اوږد عمر کښې پخپله دا احتمال پیدا کول چه هغوی به خپل قول بدل کړې وی دا هم بې بنیاده خبره ده. ځکه چه انسان خو ماخوږ د نسیان نه دې. لهذا چه کله داسې ده نو د دې احتمال هم څه وقعت باقی نه پاتې کیږي. (۱)

⑥ علامه ولی الدین العراقي رحمته اللہ علیہ فرمائی زما پلار (علامه زین الدین العراقي رحمته اللہ علیہ) بیان کړې دې چه یو احتمال دادې چه ابن عمر رضی اللہ عنہما پخپله په دې باره کښې سوال نه وو کړې بلکه د هغوی د تپوس نه بغیر حضرت بلال رضی اللہ عنہ هغوی ته خبر ورکړې وو. لیکن په دې کښې بعد دې ځکه چه که چرې داسې وې نو په دې صورت کښې په پخپل تپوس نه کولو باندې هغه خپل ځان نه ملامتہ کولو. (۱)

⑦ دغه شان یو احتمال دا دې چه ابن عمر رضی اللہ عنہما د دوو رکعتو کولو ذکر د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه د تپوس کولو نه مخکښې کړې وی او بیانی روستو د هغه نه تپوس کړې وی یا بیا حضرت بلال د دوو رکعتو ادا کولو باره کښې حدیث د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما د دې قول نه روستو بیان کړې وی. لیکن په دې کښې هم بعد دې ځکه چه د ابن عمر رضی اللہ عنہما بعضې احادیث چه په دې باره کښې د هغوی نه نقل دی هغه د هغوی نه د حضرت بلال د وفات نه پس اوريدلې شوې دی   
 ⑧ یو احتمال دا دې چه حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما دا تپوس کول هیر کړې وو چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د دوو رکعتو نه زیات کړې وو که نه. (حواله بالا)

⑨ حضرت مولانا انور شاه کشمیری رحمته اللہ علیہ فرمائی چه حضرت شاه صاحب رحمته اللہ علیہ په دې موقع باندې فرمائی چه بعضې علماؤ لیکلی دی چه حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما په خپله زمانه کښې د حضرت عمر رضی اللہ عنہ نه دخپلې زمانې په لحاظ سره افضل وو هغه کیدې شی چه د دې په شان وجوه سره دې چه حضرت ابن عمر ته هر وخت د سنتو د اتباع کولو شوق لگیدلې وو او که چرې څه خبره د تحقق نه پاتې شوې وی نو د هغې افسوس به ئی کولو. دا د هغوی عجیبه او حیرانونکی شان د فضیلت خاصه موجب وو. نور فرمائی دلته چه کوم د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما په یقین سره د دوو رکعتو ذکر او فرمائیلو هغه د دې د پاره نه وو چه د حضرت بلال رضی اللہ عنہ نه ئی تپوس کړې وو بلکه په دې وجه چه کم نه کم مونځ هم دوه رکعته وی نو هم د دې قائل شو. (۲)

(۱) عمدة القاری: ۱۹۸/۴.

(۲) طرح التشریب فی شرح التقریب، باب: دخول الکعبة والصلاة فیها، هل كانت هذا الصلاة تحية الکعبة؟ وهل يستدل بها علی جواز صلاة الفریضة فی جوف الکعبة؟ ذکر المذاهب فی ذلك: ۱۳۹/۸، دار احیاء التراث العربی. ذخیرة العقبی شرح سنن النسائی، کتاب المساجد، الصلاة فی الکعبة: ۵۱۰/۸-۵۰۹، دار المعراج.

(۳) أنوار الباری: ۱۹۶/۱۲، فیض الباری: ۴۲/۲.

نبی کریم ﷺ کعبه کنبی په کوم ځای کنبی مونځ ادا کړو؟ کله چه نبی کریم ﷺ کعبه کنبی داخل شو نو حضور پاک کوم ځای کنبی په کعبه کنبی مونځ ادا کړو؟ په دې باره کنبی مختلف قسم روایات نقل دی (١).

تقریر بخاری شریف کنبی حضرت شیخ الحدیث صاحب نور الله مرقدہ ددې روایتونو په مینځ کنبی ډیر بهترین تطبیق کړې دې. شیخ الحدیث صاحب ﷺ فرمائی چه په مذکورہ حدیث کنبی یوه جمله ده: «الساريتين اللتين على يسار» بعضې روایاتو کنبی ددې عکس راغلې دې «على يمينه» او بعضې روایاتو کنبی «بين العمودين المقدمين» دې او بعضې کنبی دا دې چه د حضور پاک مخې ته درې ستنې وې. ددې مختلف روایاتو د وجې نه د دغه ځای په تعیین کنبی اختلاف پیدا شو.

زما والد صاحب اعلى الله مراتبه فرمائی چه په هغه زمانه کنبی به په عام توگه ستنې بې ترتیبه وې. هوارې او بالکل نیغې په یو خط کنبی او په یو لائن کنبی به نه وې. نو د هغه زمانې نقشه ددې قسم وه او حضور پاک داسې ولاړ وو چه په یسار کنبی هم دوه ستنې وې او په یمن کنبی هم دوه ستنې وې. په دې توگه د حضور پاک بین الساریتین کیدل هم صادق شو او دا چه د حضور پاک مخې ته هم دوه ستنې وې ځکه چه درې دی داسې یو خوا بل خوا مقابلہ کنبی دوه دی هم ددې ذکر ئی او کړو (٢).

(١) ابو زرعه ولى الدين، ابن العراقى رضي الله عنه. تقریب الأسانید وترتيب السانید شرح طرح التثريب کنبی دغه مختلف روایات او په هغې باندې تشریحی کلام نقل کولونه پس دخپل پلار ابو الفضل زين الدين العراقى رضي الله عنه اخذ کړې شوې نتیجه ذکر کوی چه بنه جامع او مانع ده، مقصود ته د رسیدو دپاره دهغې نقل کول مفید معلومیږي، ونی گورئ: عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل الكعبة..... فقال جعل عمودا عن يساره، وعمودين عن يمينه، وثلاثة أعمدة وراءه وكان البيت يومئذ على ستة أعمدة، ثم صلى. وفي رواية ابن القاسم عن مالك: «وجعل بينه وبين الجدار نحوًا من ثلاثة أذرع»، وفي رواية البخاري: «عمودا عن يمينه وعمودا عن يساره»، وفي رواية لمسلم: «عمودا عن يمينه وعمودين عن يساره»، وله في رواية: بين العمودين اليمانيين.

قال والدي: «في شرح الترمذي وهي موافقة لكونه مقابل الباب، وفي رواية في الصحيح أيضا صلى بين العمودين اليمانيين» وإذا نقرر ترجيح الرواية الأولى فلا ينافيها قوله في الرواية الثانية عمودا عن يمينه وعمودا عن يساره لأن معناها صلى بين عمودين وإن كان بجانب أحد العمودين عمود آخر ولا تفرقه في الرواية الأخيرة بين العمودين اليمانيين فإن لعمد الثلاثة أحدها يمانى وهو الأقرب إلى الركن اليماني والآخر وهو الأقرب إلى الهجر شامى والأوسط بينهما إن قرن بالأول قيل: اليمانيان وإن قرن بالثاني قيل الشاميان. ذكر المحب الطبري، وهو واضح، وأما الرواية الثالثة: فإنه يتعذر الجمع بينها وبين الأولى، فهي ضعيفة لشذوذها ومخالفتها رواية الأكثرين كما تقدم، والرواية الرابعة: فهي مقطوع بوجهها إذ ليس هناك أربعة أعمدة حتى يكون عن يمينه اثنان وعن يساره اثنان. (شرح التثريب في شرح التقریب، كتاب الحج، باب: دخول الكعبة، والصلاة فيها، حديث: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل الكعبة هو وأسامة بن زيد، فائدة: إثبات صلواته عليه السلام في الكعبة: ١٣٦/٥).

(٢) تقریر بخاری شریف: ١٤٤/٢ الكنز المتوارى: ٨٦-٨٧/٤

قوله: ثُمَّ خَرَجَ، فَصَلَّى فِي وَجْهِ الْكَعْبَةِ رَكَعَتَيْنِ « بیا بی کریم ﷺ دَ بَیت اللہ نہ بہر او وتلو بیانی دَ کعبی (دَ دروازی) مخامخ دوه رکعتہ مونخ ادا کرو.

قوله: "وجه الكعبة" نہ مراد "مواجهة باب الكعبة" دی. یعنی دكعبی مکرمی دَ دروازی مخی تہ (۱) علامہ برماوی رحمہ اللہ فرمائی چہ دَ دی لفظ "وجه الكعبة" دَ ظاہر نہ معلوم میری چہ دا دوه رکعتہ دَ مقام ابراہیم سرہ ادا کړی شوی وو او دَ وجہ کعبہ نہ عموم مراد اخستلو احتمال ہم شتہ چہ دَ کعبی دَ دروازی پہ جہت کنبی نی مونخ او کړو. (۲)

حضرت شیخ الحدیث صاحب نور اللہ مرقدہ فرمائی چہ دی "وجه الكعبة" سرہ تعمیم ہم او شو. خکہ چہ "وجه الكعبة" کنبی نی کلہ ادا کړو نو مقام ابراہیم شاتہ پاتې شو نو هغه رکعتین کوم چہ دَ مقام ابراہیم سرہ متعلق دی دَ هغی ایجاب پاتې نہ شو. (۳)

دَ روایت دَ ترجمة الباب سرہ مطابقت: دَ مذکورہ روایت دَ ترجمة الباب سرہ مطابقت دَ روایت آخری جملي "فصل في وجه الكعبة" کنبی دی. هغه داسې چہ "وجه الكعبة" نہ مراد دَ کعبی دَ دروازی طرف دی کوم تہ چہ مقام ابراہیم وائی.

دَ حدیث نہ مستنبط شوی احکام او فوائد: دَ مذکورہ حدیث شریف نہ دیر زیات احکام او فوائد مستنبط کیری. پہ هغی کنبی یو خو لاندی درج کولی شی:

① بیت اللہ تہ دننہ داخلیدل جائز دی. (۴) المغنی کنبی ذکر دی چہ کوم سرې حج او کړی نو دَ هغه دَ پاره مستحب دی چہ هغه دی بیت اللہ تہ ہم داخل شی او هلته دی دوه رکعتہ مونخ او کړی لکہ چہ څنگه حضور پاک ﷺ کړی وو. او بیت اللہ کنبی دی څپلی او موزی وغیرہ کوزولو سرہ داخل شی. (۵)

② بیت اللہ کنبی دوه رکعتہ مونخ کول مستحب دی. (۶)

③ دا حدیث دَ هغه حضراتو دلیل دی څوک چہ دَ دی خبرې قائل دی چہ پہ ورځ کنبی دوه رکعتہ کول افضل دی. (۷)

(۱) التوشیح شرح الجامع الصحیح للسيوطی: ۴۸۷/۳.

(۲) ظاهره: عند مقام ابراہیم، وبہ تحصل مطابقت الترجمة، ويحتمل جهة الباب عموماً. (اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۴۰/۳).

(۳) تقریر بخاری شریف: ۱۴۵/۲.

(۴) الإعلام بفوائد الأحکام لابن ملقن، کتاب الحج، باب: دخول مكة وغيرها، الحديث الثالث: ۱۸۰/۶، عمدة القاری: ۱۹۷/۴.

(۵) المغنی لابن قدامة الحنبلي، کتاب الحج، باب: الفدية وجزاء الصيد، مسألة ما لزم من الدماء، فصل: يستحب لمن حج أن يد كل البيت ويصلي: ۵۶۴/۵.

(۶) الإعلام بفوائد الأحکام لابن ملقن، کتاب الحج، باب: دخول مكة وغيرها، الحديث الثالث: ۱۸۰/۶، عمدة القاری: ۱۹۸/۴.

(۷) عمدة القاری: ۱۹۸/۴.

④ دا حدیث د ابن جریر طبری رحمہ اللہ خلاف پہ دے مسئلہ کنبی حجت دے چہ ہفہ ددے خبری قائل دے چہ پہ کعبہ کنبی مونخ کول جائز نہ دی کہ ہفہ فرض وی او کہ نفل وی (۱)

⑤ ددے حدیث نہ د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما عظیم منقبت معلومیری چہ ہفوی د احکاموزدہ کولو او ہرخانی او ہروخت د رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم د آثارو پہ لتون او اتباع باندي بنہ حریض وو

⑥ پہ خبر واحد باندي دعمل کولو ثبوت ہم کیری (۲)

بیت اللہ شریف کنبی دننہ د داخلیدو آداب او متعلقہ مسائل: معلم الحجاج (مؤلفہ: مفتی سعید احمد مظاہری رحمہ اللہ) کنبی بیت اللہ شریف تہ دننہ داخلیدو آداب بارہ کنبی مفید بحث

موجود دے ہفہ بعینہ لاندے نقل کولے شی (۳)

مسئلہ نمبر ①: بیت اللہ تہ دننہ داخلیدل مستحب دی پہ دے شرط چہ د داخلیدو موقع پہ

آسانی سرہ وی۔ پخپلہ تکلیف او چتول یا بل تہ تکلیف ورکولو سرہ داخلیدو نہ بیج کیدل

پکار دی۔ بل تہ تکلیف ورکول حرام دی۔ اکثر خلق پہ شوق کنبی داسی لیونی کیری چہ د بل

د تکلیف ہدو پرواہ نہ کوی۔ داسی شوق پہ کوم سرہ چہ د حرام ارتکاب وی د اللہ تعالیٰ د

ناراضگنی سبب دے نہ چہ د ثواب موجب (۴)

مسئلہ نمبر ②: بیت تہ د کنجی والا تہ خہ ورکولو سرہ داخلیدل حرام دی۔ نن صبا پہ عام

توگہ د بیت اللہ دربان بغیر د خہ اخستو داخلیدو تہ نہ پریردی۔ دا اخستل او ورکول حرام

دی خکہ چہ رشوت دے (دربان د داخلیدو پہ وخت د رشوت نوم نہ اخلی بلکہ بخشش وائی

د اہم رشوت دے۔ لکہ داسی او گنہنی چہ ثواب کیند درجام نو) (۵)

مسئلہ نمبر ③: بیت اللہ تہ کہ د داخلیدو موقع ملاؤ شی نومستحب دی چہ مونخ او کری او

دعا او غواری او بریندی خپے دے داخل شی۔ اول دے بنی خپہ کیری او پہ دیرہ خشوع

او خضوع سرہ دے داخل شی۔ چت طرف تہ دے نہ گوری او نہ دے اخواد یخوا گوری، دا بی

ادبی دہ۔ او کوم خانی چہ حضور پاک مونخ کرے وو نوہفہ خانی کنبی دے نفل او کری۔ یعنی

د دروازی نہ داخلیدو سرہ دے نیغ لارشی گلہ چہ مغربی دیوال درے لاسہ پاتی شی نو ہم پہ

دغہ خانی دوه یا خلور رکعتہ نفل کولو سرہ دے خپل مخ پہ دیوال باندي کیری او د اللہ

تعالیٰ حمد او ثنا دے او کری او د تہلیل، تکبیر او درود نہ پس دے دعا او غواری۔

(مسئلہ: کعبہ کنبی ددوو ستنو پہ مینخ کنبی شین بلاط د شین گانری فرش) عوام دے تہ

① الإعلام بفوائد الأحكام لابن ملقن، کتاب الحج، باب: دخول مكة وغيرها، الحديث الثالث: ۱۸۰/۶، عمدة القاری:

۱۹۸/۴

② الإعلام بفوائد الأحكام لابن ملقن، کتاب الحج، باب: دخول مكة وغيرها، الحديث الثالث: ۱۸۰/۶

③ معلم الحجاج بیت اللہ شریف کے اندر داخل ہونے کے آداب اور متعلقہ مسائل، ص: ۱۳۲، کاباسنز، کراچی

④ غنیۃ الناسک، باب: السعی بین الصفا والنروة، مطلب فی دخول البیت، ص: ۱۳۸، إرشاد الساری، فصل:

یستحب دخول البیت، ص: ۵۴۷-۵۴۶

⑤ غنیۃ الناسک، باب: السعی بین الصفا والنروة، مطلب فی دخول البیت، ص: ۱۳۸-۱۳۹، إرشاد الساری،

فصل: یستحب دخول البیت، ص: ۵۴۷-۵۴۶

د پیغمبر ﷺ مصلی وائی دا صحیح نه ده. (۱)

مسئله: دکعبې هرې ستنې سره نيزدې هم دعا غواړې دا د رسول الله ﷺ د فعل نه ثابت خبره ده. کما رواه الإمام احمد بن الحنبل. البته ستن له غاړه وړ کول ثابت نه دی. د امام مالک ﷺ نه تپوس او کړې شو نو وئې فرمائیل دکعبې ستن له دې غاړه نه وړ کوی ځکه چه پیغمبر ﷺ چه کله کعبې ته داخل شو نو مانه دی اوریدلی چه حضور پاک ستن له غاړه وړ کړې وی. کذا ذکر العزى بن جماعة. (۲)

مسئله نمبر ۴: حطيم هم د بيت الله حصه ده. که چرې يو سړی ته د بيت الله د داخلیدو موقع ملاؤ نه شی نو حطيم کنبې دې داخل شی. (۳)

مسئله نمبر ۵: دکعبې شريفې په مينځ کنبې يو مينځ دې هغې ته عوام "سراة الدنيا" (د دنيا نوم) وائی او په هغې باندي خپل نوم ايردې يا مخامخ ديوال کنبې يوه کړه ده هغې ته "عمدة الوثقى" وائی دا ټولې دعوامو د خانه خبرې دی داسې دې هيڅ کله نه کوی. (۴)

مسئله: کعبه کنبې خان له يا په جمع سره مونځ کول جائز دی او هلته دا شرط هم نشته چه د امام او مقتديانو مخ دې هم يو طرف ته وی ځکه چه هلته هر طرف ته قبله ده. البته دا ضروری دی چه مقتدی دې د امام نه وړاندي نه وی. که يو مقتدی د امام طرف ته مخ کولو سره مونځ کوی نو مونځ به ئې اوشی مگر داسې مونځ کول مکروه دی او په دې صورت کنبې دې مقتدی امام نه مخکنبې کوی. د وړاندي کيدو صورت دادې چه د مقتدی او امام دواړو مخ هم يو طرف ته وی او چه مقتدی وړاندي وی نو په دې صورت کنبې د مقتدی مونځ نه کيرې. (۵)

(۱) غنية الناسك، باب: السعي بين الصفا والمروة، مطلب في دخول البيت، ص: ۱۳۹-۱۳۸. إرشاد الساري، فصل: يستحب دخول البيت، ص: ۵۴۶-۵۴۷.

(۲) غنية الناسك، باب: السعي بين الصفا والمروة، مطلب في دخول البيت، ص: ۱۳۹. إرشاد الساري، فصل: يستحب دخول البيت، ص: ۵۴۶.

(۳) مجمع الزوائد، كتاب الحج، باب: العجر من البيت: ۴/۴۷۵، ۴۶۴.

(۴) الدر المختار، كتاب الحج، باب الهدى: ۲/۶۲۴ غنية الناسك، باب: السعي بين الصفا والمروة، مطلب في دخول البيت، ص: ۱۳۹.

(۵) الفتاوى عالمكبرية، كتاب الصلاة، وما يتصل بذلك الصلاة في الكعبة: ۱/۶۵، الفتاوى التاترخانية، كتاب الصلاة، الفرائض: ۱/۴۲۶.



حديث باب (درېم حديث)، [حديث نمبر ٣٨٩]

٣١٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ (١) قَالَ لَمَّا دَخَلَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الْبَيْتَ دَعَا فِي نَوَاحِيهِ كُلِّهَا، وَلَمْ يُصَلِّ حَتَّى خَرَجَ مِنْهُ، فَلَمَّا خَرَجَ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ فِي قُبْلِ الْكَعْبَةِ وَقَالَ هَذِهِ الْقِبْلَةُ».

ترجمه حديث: حضرت عطاء رضي الله عنه واثي چه ما د حضرت ابن عباس رضي الله عنه نه واؤريده چه كله حضور پاك بيت الله ته داخل شو نو حضور پاك دهغي په ټولو گوتونو كښې دعا او كړه او بهرته د تشریف راوړو پوري ئي مونځ اونه كړو. بيائي چه كله بهر تشریف راوړو نو دوه ركعتي ئي د كعبې مخامخ او كړل، او وئي فرمائيل چه هم دغه قبله ده. تراجم رجال: د مذكوره حديث شريف په سند كښې ټول پنځه رجال دي:

① اسحاق بن نصر رضي الله عنه: علامه عيني رضي الله عنه فرمائي چه امام بخاري رضي الله عنه په څو مقاماتو باندي دهغوي نه حديث روايت كړې دي. نو امام صاحب رضي الله عنه كله دهغوي نوم اسحاق بن ابراهيم بن سعد ذكر كوي او كله دهغوي نسبت دهغوي د نيکه طرف ته نسبت كولو سره اسحاق بن نصر ونيلو سره ئي ذكر كوي. ددوي تفصيلي حالات كشف الباري، كتاب الغسل، باب: من اغتسل عريانا وحده في خلوة لاندې تير شوي دي (٢)

② عبدالرزاق رضي الله عنه: دا ابوبكر عبدالرزاق بن همام صنعاني يمانی رضي الله عنه دي. ددوي حالات كشف الباري، كتاب الايمان، باب: حسن اسلام المرء ددويم حديث لاندې تير شوي دي (٣)

③ ابن جرير رضي الله عنه: ددوي پوره نوم عبدالملك بن عبدالعزيز بن جرير رضي الله عنه دي. ددوي حالات كشف الباري، كتاب الحيض، باب: غسل الحائض رأس زوجها وترجيله كښې تير شوي دي (٤)

④ عطاء رضي الله عنه: دا ابو محمد عطاء بن ابي رباح مكی قرشي رضي الله عنه دي. ددوي تفصيلي حالات كشف الباري، كتاب العلم، باب: عظة الإمام النساء وتعليمهن لاندې تير شوي دي (٥)

(١) أخرجه البخاري، أيضاً في الحج، باب: من كبر في نواحي الكعبة، رقم الحديث: ١٦٠١، وفي المغازي، باب: أين ركز النبي صلى الله عليه وسلم الراية يوم الفتح، رقم الحديث: ٤٢٨٨، ومسلم في الحج، باب: استحباب دخول الكعبة للحاج، رقم الحديث: ١٣٣١، والنسائي في الحج، باب: التكبير في نواحي الكعبة، رقم الحديث: ٢٩١٦، وفي باب: موضع الصلاة من الكعبة، رقم الحديث: ٢٩٢، وفي جامع الأصول، حرف الحاء، الكتاب الأول: في الحج والعمرة، الباب الرابع: في الطواف والسعي ودخول البيت، الفصل الثالث: في دخول البيت، رقم الحديث: ١٥١٣، ٢٢٥/٣.

(٢) كشف الباري، كتاب الغسل، باب: من اغتسل عريانا وحده في خلوة.

(٣) كشف الباري: ٤٢١/٢.

(٤) كشف الباري، كتاب الحيض، غسل الحائض، رأس زوجها وترجيله: ٢٠٤.

(٥) كشف الباري: ٣٩/٤.

⑤ ابن عباس رضی اللہ عنہما: دا مشهور صحابی رسول حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما دی. ددوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب ہدہ الوسی خلورم حدیث لاندی او تفصیلی حالات کتاب ایمان، باب: کفران العشرین، و کفر دون کفر لاندی تیر شوی دی. (۱)

شرح حدیث:

قوله: عَنْ عَطَاءٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَيْتَ، دَعَانِي تَوَاجِيهِ كَلْبًا: یعنی حضرت عطاء رضی اللہ عنہ وائی چه ما د حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما نه واوریده چه کله حضور پاک بیت الله ته داخل شو نو حضور پاک دهغی په تولو گو تونو کنسی دعا اوکره.

قوله: "تواجهه" جمع ده "ناحية" اودی نه مراد طرف دی. (۲)

قوله: وَلَمْ يُصَلِّ حَتَّى خَرَجَ مِنْهُ، فَلَمَّا خَرَجَ رَكَعَتَيْنِ فِي قُبُلِ الْكَعْبَةِ: اوبهرتشریف راوړو پورې ئی مونخ اونه کړو، بیانی بهر تشریف راوړو نو دوه رکعتی د کعبی مخامخ اوکره.

"رکعتین" نه مراد "صلی رکعتین" دی. جزء ذکر کولو سره کل مراد اخستی شوې دی. (۳)

قوله: "فِي قُبُلِ الْكَعْبَةِ" کنسی "قُبُل" د قاف او باء په ضمی سره ډې اودی نه مراد د یوخیز مخې ته کیدل دی. یعنی د کعبی مکرمې د دروازی مخې ته د مقام ابراهیم سره. (۴)

ابن رجب حنبلی رضی اللہ عنہ فرمائی چه دې نه مراد وجه کعبه ده یعنی د بیت الله دروازی سره لکه چه د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما ماقبل حدیث شریف کنسی چه تیر شو. (۵)

قوله: وَقَالَ: «هَذِهِ الْقِبْلَةُ»: او ارشاد ئی او فرمائیلو چه هم دغه قبله ده.

قوله: "هذه" اسم اشاره ده او مشارالیه کعبه ده. (۶)

د "هذه القبلة" وئیلو مطلب او مقصد: علامه خطابي رضی اللہ عنہ فرمائی چه حضور پاک ددې جملې په ذریعه لکه چه دا اراده او فرمائیله چه د قبلي معامله هم په دې بیت الله باندې په دې قرار نیولې. اوس ددې نه علاوه بلې قبلي طرف ته مخ اونه کړې شی. دائی په دې وجه ارشاد او فرمائیلو چه دې نه مخکنی به د بیت المقدس طرف ته هم مخ کولو سره مونخ کولی شو. بیا د بیت المقدس قبله کیدل منسوخ شو او قبله د کعبې طرف ته راوگرځولې شوه. لکه چه حضور پاک او فرمائیل چه د نن نه پس به ستاسو قبله نه شی بدلیدی. نو تاسو همیشه د کعبې

(۱) کشف الباری: ۲۰۵/۲، ۳۵/۱.

(۲) عمدة القاری: ۱۹۹/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۶۰/۴، اللامع الصبیح: ۱۴۱/۳، عمدة القاری: ۱۹۹/۴.

(۴) التنقیح لألفاظ الجامع الصحیح: ۱۵۰/۱، مصابیح الجامع: ۱۱۳/۲، اللامع الصبیح: ۱۴۱/۳، عمدة القاری:

۱۹۹/۴، حاشیة السندی علی سنن النسائی، کتاب المناسک، رقم الحدیث: ۶۹۰۸، ۲۳۶/۵، دارالمعرفة.

(۵) فتح الباری لابن رجب حنبلی: ۱۱۹/۲.

(۶) عمدة القاری: ۱۹۸/۴، الکواثر الجاری: ۸۸/۲.

طرف ته مخ کولو سره مونځ کوئی هم دغه ستاسو قبله ده. ددې جملي په مطلب کښې دویم احتمال دادې چې رسول الله ﷺ خپلو صحابه کرامو ﷺ ته دهغوی د امام د اودریدو مسنون ځائی او خودلو چه امام دې مواجهه بیت کښې اودریدې نه چه د بیت الله په گوټونو او یا باقی دريوارو طرفونونه یو طرف ته. اگر چه د بیت الله د اطرافو نه یو طرف کښې اودریدو سره هم مونځ کول جائز دی.

ددې جملي په مطلب کښې دریم احتمال دا دی چه په دې سره ئې صرف د هغه خلقو حکم او خودلو څوک چه د بیت الله مشاهده او معاننه کوی چه دهغوی د پاره مواجهه بیت عیانا ضروری دې. د خپلي اجتهادی رائي نه کار نه شی اخستی.

علامه نووی رحمته الله علیه یو بل احتمال ذکر کړې دې چه ددې معنی داده چه دا مسجد حرام دکوم د استقبال چه تاسو ته حکم درکړې شوې دې هم دغه قبله ده نه چه ټول حرم او نه مکه او نه هر هغه جمات کوم چه دکعبې نه چاپیره وی بلکه قبله هم صرف دغه ده. (۱)

نبی کریم ﷺ په بیت الله کښې دننه مونځ او کړو که نه؟ هم ددې باب دمذکور حدیث نه مخکښې د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما په روایت کښې د حضرت بلال رضی الله عنه دا ارشاد تیر شو چه رسول الله ﷺ په کعبه کښې دوه رکعته مونځ ادا کړو (۲)

خو په مذکوره حدیث شریف کښې د حضرت ابن عباس رضی الله عنهما دا ارشاد ذکر دې چه نبی کریم ﷺ په بیت الله کښې دننه دعا او غوښتله لیکن مونځ ئې ادا نه کړو.

په متعارض احادیثو کښې تطبیق: د احادیثو دا تعارض د تطبیق، توفیق او ترجیح په لار سره لرې کړې شوې دې. تطبیق ورکونکی حضراتو کښې امام زرقانی رحمته الله علیه دې هغوی فرمائی:

① مهلب رضی الله عنه فرمائی چه په دې باره کښې احتمال دې چه حضور پاک دوه ځل بیت الله کښې داخل شوې وی. یو ځل داخلیدو کښې ئې مونځ کړې دې او په دویم ځل داخلیدو کښې ئې مونځ نه دې کړې. ابن حبان رحمته الله علیه فرمائی چه زما په نیز دواړه قسم احادیث د راجمع کولو بهترین صورت دادې چه دواړه خبرې دوه مختلفو مواقعو کښې پینیدل او گرځولې شی. چنانچه کله د فتح مکه په موقع حضور پاک کعبه کښې داخل شو نو حضور پاک هلته مونځ

(۱) شرح النووی علی صحیح مسلم، کتاب الحج، باب: استحباب دخول الکعبه للحاج وغيره، رقم الحدیث: ۸۳/۹ علامه ابن رجب حنبلي رحمته الله علیه فرمائی: وزعم غيره أن مراده: أن القبلة هي الكعبة نفسها، لا المسجد ولا الحرم، وهذا قاله بعض من يرى أن الواجب على البعيد الاستقبال على العين. (فتح الباری لابن رجب حنبلي: ۱۲۰/۲). وقال السندي رحمه الله: الإشارة إلى الكعبة المشرفة، أو جهتها، وعلى الثاني الحصر واضح، وعلى الأول باعتبار من كان داخل المسجد، أو من كان بمكة. (حاشية السندي على سنن النسائي، كتاب المناسك، رقم الحدیث: ۲۹۰۸، ۲۳۶/۵، دالمعرفة).

(۲) حدثنا مسدد قال: حدثنا يحيى، عن سفيان قال: سمعت مجاهدًا قال: أتى ابن عمر، فقيل له: هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل الكعبة، فقال ابن عمر: فأقبلت والنبي صلى الله عليه وسلم قد خرج، وأجد بلائًا قائمًا بين البابين، فسألت بلائًا فقلت: أصلى النبي صلى الله عليه وسلم في الكعبة؟ قال: نعم، ركعتين، بين السارين اللتين على يساره إذا دخلت، ثم خرج، فصلى في وجه الكعبة ركعتين. (صحیح البخاری: رقم الحدیث: ۳۹۷).

او كرو لکه چه حضرت ابن عمر رضي الله عنهما د حضرت بلال رضي الله عنه نه روايت كړې دې او حضرت ابن عباس رضي الله عنهما چه كوم په كعبه كښې د مونخ كولو نفې كړې ده هغه د حجة الوداع په موقع باندي كعبه كښې د داخلیدو موقع ده. او هغوی ددې نسبت د حضرت اسامه رضي الله عنه طرف ته كړې دې لهذا تعارض ختم شو.)

ليكن امام نووی رحمته الله عليه په دې تاويل باندي اعتراض كړې دې چه په دې خبره كښې هيڅ اختلاف نشته دې چه نبي اکرم صلی الله علیه و آله د فتح مکه په ورځ بيت الله ته داخل شوې وو، نه چه د حجة الوداع په ورځ. او ددې خبرې شهادت هغه حديث دې كوم چه الازرقی رحمته الله عليه خپل كتاب مکه (اصل نوم اخبار مکه دې) كښې ذكر كړې دې: حضرت سفیان رضي الله عنه د ډيرو اهل علم نه داخبره نقل كړې ده چه نبي كريم صلی الله علیه و آله د فتح مکه په كال بيت الله ته صرف يو ځل داخل شوې وو. بيا حضور پاك حج او كرو نو بيت الله ته داخل نه شو. (١)

نو چه كله خبره داسې ده نو دا خبره ممتنع نه ده چه حضور پاك د فتح مکه په كال دوه ځل بيت الله ته داخل شوې وی. او د ابن عيينه رضي الله عنه په حديث كښې چه د كوم و حدة ذكر دې د هغې نه مراد دې وحدت سفر وی نه چه وحدت دخول په داسې حال كښې چه د دارقطنی د يو ضعيف حديث نه هم دې جمعې ته تقويت ملاوېږي. والله اعلم. (٢)

په يو بل مقام باندي فرمائي چه دا په دې خبره باندي دليل دې چه د حضور پاك كعبې ته د داخلیدو او هلته مونخ كولو باره كښې چه كوم احاديث ذكر دی هغه (دخول كعبه) د فتح مکه په موقع باندي وو او په دې كښې د چاهم اختلاف نشته دې او هغه ورځ د حجة الوداع ورځ نه وه. (٣)

① بعضې هغه حضرات چه په بيت الله كښې دننه مونخ كول مكره گرځوي. هغوی دا دواړه متعارض روايات داسې راجمع كړي دي چه په كوم حديث كښې د مونخ كولو ذكر راغلي دي په هغې كښې د صلاة نه مراد لغوی صلاة (يعنی دعا وغيره) مراد دی او په كومو احاديثو كښې چه د مونخ نه كولو ذكر دې په هغې كښې د مونخ نه مراد شرعی مونخ دې.

(١) قال المهلب: "يحتمل أنه دخل البيت مرتين، صلى في إحداها، ولم يصل في الأخرى.... وقال ابن حبان: "الأشبه عندي في الجمع أن يجعل الخبران في وقتين، فلما دخل الكعبة في الفتح، صلى فيها على مارواه ابن عمر عن بلال.... إلخ ونفى ابن عباس الصلاة فيها في حجة الوداع، لأنه نفاها وأسنده إلى أسامة، وابن عمر أثبتها، وأسنده إلى بلال وإلى أسامة أيضا، فبطل التعارض، وهذا جمع حسن. (شرح الزرقاني على المؤطا للإمام مالك، كتاب الحج، الصلاة في البيت: ٢٤٧/٤).

(٢) قال: حدثنا أبو الوليد، قال: وحدثني جدي، قال: سمعت سفیان يقول: سمعت غير واحد من أهل العلم يذكرون أن رسول الله صلى الله عليه وسلم إنما دخل الكعبة مرة واحدة عام الفتح، ثم حج، فلم يدخلها. (أخبار مکه وما جاء فيها من الآثار للأزرقی، الصلاة في الكعبة، رقم الحديث: ٣٣٤، مكتبة الأسدی).

(٣) نيل الأوطار، باب صلاة التطوع في الكعبة، رقم الحديث: ١٩٦، ١٦٤/٢، شرح الزرقاني على المؤطا للإمام مالك، كتاب الحج، الصلاة في البيت: ٢٤٧/٤. كوثر المعاني الدراري في كشف خبايا صحيح البخاري: ٣٧/٧.

(٤) شرح النووي على صحيح مسلم، كتاب الحج، استحباب دخول الكعبة للحاج وغيره، رقم الحديث: ٣٨٩، ٨٢/٩.

لیکن دا توجیه په دې خبره باندې رد کړې شوې ده چه په کومو احادیثو کښې د مونځ د اثبات ذکر دې په هغې کښې ذکر کتونو د تعداد هم ذکر دې. په دې صورت کښې د صلاة نه مراد صلاة لغوی مراد اخستل څنگه صحیح کیدی شی؟

⑤ امام قرطبی رحمته الله فرمائی چه د مالکيه د مذهب مطابق دا دواړه متعارض احادیث داسې راجمع کول ممکن دی چه د حضرت بلال رضی الله عنه د قول "انه صلی فیها" نه نفل مونځ مراد واخستی شی او د حضرت اسامه رضی الله عنه د قول "انه لم یصل" نه فرض مونځ مراد واخستی شی (۱)

علامه محمد یوسف صاحب بنوری رحمته الله فرمائی چه زمونږ شیخ (علامه کشمیری رحمته الله) فرمائی چه دا خبره ممکن ده چه اثبات اونافی دواړه روایتونه په مختلف واقعاتو باندې محمول کولو سره توفیق او تطبیق ورکړې شی لیکن محدثین حضرات دې طرف ته مائل نه شو بلکه د دغه حضراتو خیال د ترجیح طرف ته تلې دې (۲)

په دې باندې علامه بنوری رحمته الله فرمائی چه (د حضرت کشمیری رحمته الله خبره په خپل ځانی لیکن) راقم وائی چه (تطبیق والا لار اختیارولو سره د محدثینونه) علامه زرقانی رحمته الله فرمائی..... (۳). امام نووی رحمته الله فرمائی چه د حضرت بلال رضی الله عنه اثبات اود حضرت اسامه رضی الله عنه نفی داسې جمع کړې شی چه کله دا ټول حضرات بیت الله ته داخل شو نو په دعا کښې مشغول شو. نو حضرت اسامه رضی الله عنه نبی کریم صلی الله علیه و آله په دعا کښې مشغول اولیدلو نو حضرت اسامه رضی الله عنه هم په یو گوټ کښې کیناستو دعا کښې مشغول شو په داسې حال کښې چه نبی کریم صلی الله علیه و آله په دویم گوټ کښې وو. بیا نبی کریم صلی الله علیه و آله مونځ شروع کړو نو حضرت بلال رضی الله عنه اولیدلو ځکه چه هغه نبی کریم صلی الله علیه و آله ته ډیر نیزیږې وو او حضرت اسامه رضی الله عنه د لرې کیدو د وجې نه او په خپله دعا کښې د مشغولیدو د وجې نه اونه لیدلې شو. دا وجه هم کیدی شی چه د بیت الله دروازه بنده وه او په کعبه کښې دننه ډیرې ستنې هم وې. چنانچه هغوی د خپل گمان د وجې نفی او کړه (۴)

په متعارض احادیثو کښې ترجیح: بعضی نورو حضراتو په دې دواړو روایتونو کښې د تطبیق په ځانی د ترجیح لار اختیار کړې ده. چنانچه علامه خطابي رحمته الله فرمائی چه بهر حال د ابن

عباس رضی الله عنه قول "ان رسول الله صلی الله علیه وسلم لم یصل الی الکعبة تافی دې، خود حضرت بلال رضی الله عنه د روایت نه دا خبره ثابته ده چه نبی کریم صلی الله علیه و آله په بیت الله کښې مونځ کړې دې، په داسې حال کښې چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د هغه سره بیت الله کښې داخل شوې وو. اود مثبت قول د نافی د

(۱) ویمن ان یجمع بین حدیث اسامه وبلال علی مقتضى مذهب مالک، فیقال: ان قول بلال: "انه صلی فیها" یعنی به: "التطوع" وقول اسامه: "انه لم یصل فیها"، یعنی به: "الفرض". (المفهم لما أشکل من تلخیص کتاب مسلم، کتاب الحج، باب: ماجاء فی دخول النبی صلی الله علیه وسلم الکعبة: ۴۳۱/۳).

(۲) معارف السنن، باب: الصلاة فی الکعبة: ۱۷۳/۶ فیض الباری: ۴۲/۲.

(۳) معارف السنن، باب: الصلاة فی الکعبة: ۱۷۳-۱۷۴/۶.

(۴) شرح النووی علی صحیح مسلم، کتاب الحج، استعجاب دخول الکعبة للعاج وغیره، رقم الحدیث: ۳۸۹، ۸۲/۹.

قول نه افضل وی (۱)

محب طبری رضی اللہ عنہ فرمائی چه بیت الله ته د داخلیدو نه پس حضرت اسامه رضی اللہ عنہ به د خه حاجت د وجی نه د بیت الله نه وتلی وی په دې وجه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم په مונخ باندې خبر نه شو (۲). په دې باندې شاهد هغه روایت دې کوم چه ابوداؤد الطیالسی رضی اللہ عنہ په خپل مسند کښې نقل کړې دې چه حضرت اسامه رضی اللہ عنہ او فرماتیل زه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره کعبې ته داخل شوم هلته رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم جوړ شوی تصویرونه اولیدل نو حضور پاک د اوبو ډولچه راو غوښتله، زه لاړم راوړم. بیا حضور پاک په دغه اوبو سره هغه تصویران وړان کړل (۳).

امام قرطبی رحمته اللہ علیہ فرمائی چه حضرت اسامه رضی اللہ عنہ د خپل ډیر زر واپس راتلو د وجی نه د حضور پاک مونخ نه کولو باندې قیاس کړو (۴).

حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی چه عمر بن شبه خپل کتاب کتاب مکه کښې د علی بن بذیمه رضی اللہ عنہ په طریق سره یو روایت نقل کړې دې چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کعبې ته داخل شو په داسې حال کښې چه حضور پاک سره حضرت بلال رضی اللہ عنہ هم وو او حضرت اسامه رضی اللہ عنہ د بیت الله دروازي سره نيزدې کیناستو. بیا چه کله دا حضرات د بیت الله نه اووتل نو هغوی حضرت اسامه رضی اللہ عنہ احتباء سره ناست اولیدلو (یعنی هغه په خپلو کوناتو باندې داسې ناست وو چه هغه خپل زنگونونه اودرولې وو او د خپلې ملا او زنگونونو نه چاپیره شي لاسونه راتاؤ کړې شوي ترلې وو) الخ. نو عین ممکن ده چه د احتباء په حالت کښې هغه آرام کول غوښتل، بیا په هغه باندې پرکالی راغلو نو په دې وجه هغه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مونخ کول اونه لیدلې شو. نو چه کله د هغه نه د نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم په کعبه کښې د مونخ باره کښې تپوس او کړې شو نو هغوی نفی او کړه. بهر حال چه په دې ټوله قصه کښې هغه د خپل رؤیت نفی کړې ده نه چه د نفس الامر (۵).

(۱) اعلام الحديث للخطابی: ۳۸۱/۱.

(۲) فتح الباری، کتاب الحج، باب: من کبر فی نواحی الکعبه، رقم الحديث: ۱۶۰۱، ۴/۶۶۹.

(۳) حدثنا ابوداؤد، قال: حدثنا ابن أبي ذئب، عن عبدالرحمن ابن مهران، قال: حدثني عمير مولى ابن عباس، عن أسامة بن زيد، قال: دخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم في الكعبة، ورأى صوراً، قال: فدعا بدلوا من ماء، فأتيته به، فجعل يمسحها، ويقول: "قاتل الله قوما يصورون مالا يخلقون". (مسند أبي داؤد الطيالسي، مسند أسامة بن زيد، رقم الحديث: ۶۵۷، ۱۷/۲).

واضح دي وی چه مذکورہ جواب به د حضرت اسامه رضی اللہ عنہ په باره کښې صحیح شي لیکن د حضرت فضل بن عباس رضی اللہ عنہ حدیث جواب دا نه شي جوړیدی ځکه چه په کوم حدیث کښې چه د هغې باره کښې نقل دي چه هغه هم کعبه کښې داخل شو په هغې کښې داسې هیڅ خبره نشته ده چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم هغه د خه کارد باره بهر لیرلې وی، بلکه په ظاهره خو به هغه هم دننه وی. نو د هغوی باره کښې به هم هغه جواب ورکولې شي کوم چه پورته په متن کښې د امام نووی رحمته اللہ علیہ د طرف نه ذکر کړې شوي دي.

(۴) المفهم لما أشکل من تلخیص کتاب مسلم، کتاب الحج، باب: ماجاء فی دخول النبی صلی الله علیه وسلم الکعبه: ۳/۴۳۱.

(۵) فتح الباری، کتاب الحج، باب: من کبر فی نواحی الکعبه، رقم الحديث: ۱۶۰۱، ۴/۶۶۹.

حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ نور فرمائی ښکاره دي وی چه حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما په خپله بیت الله ته.....

چه هغوی د نبی کریم ﷺ مونیخ نه ادا کول لیدلو سره ارشاد اوکړو چه نبی کریم ﷺ په بیت الله کښې دننه دعا خو او غوښتله لیکن مونیخ ئی اونه کړو بلکه هغه د دغه نفی نسبت کله د حضرت اسامه رضی الله عنہ طرف ته منسوب کوی. (۱)

او کله ئی د خپل رور فضل بن عباس طرف ته (۲)

باوجود د دې چه د هغه رور فضل بن عباس نبی کریم سره بیت الله ته داخلیدل د یو شاذ روایت نه علاوه بل چرته نه ملاویږی. د دې نه علاوه د حضرت اسامه رضی الله عنہ په نسبت سره د حضرت ابن عباس رضی الله عنہما کوم چه د نبی کریم ﷺ د مونیخ کولو نفی ذکر ده نو د دې باره کښې عرض دا دې چه هم د حضرت اسامه رضی الله عنہ نه د نبی کریم ﷺ په کعبه کښې د مونیخ کول هم ذکر دی. (۳)

په دې وجه د مونیخ د نفی باره کښې احادیث مختلف شو خود مونیخ د اثبات متعلق احادیثو کښې اختلاف نشته دې. په دې وجه به مثبت له په نافی باندې ترجیح ورکولو سره دا وئیلې شی چه نبی کریم ﷺ په بیت الله کښې دننه مونیخ کړې دې. (۴)  
بیت الله کښې د مونیخ د جواز یا د عدم جواز حکم: یوه مسئله د حدیث باب لاندې د اهم راخی چه بیت الله کښې مونیخ کول، فرض وی که نفل، جائز دې یا ناجائز؟

..... نه وو داخل شوې. خکه چه بیت الله ته د داخلیدو په وخت نبی اکرم سره داخلیدونکی صحابه کرام رضی الله عنہم کښې صرف د دريو ذکر ملاویږی. په هغوی کښې حضرت ابن عباس رضی الله عنہما نشته دې بلکه حضرت بلال، حضرت اسامه بن زید او حضرت عثمان بن طلحة رضی الله عنہم دی، او گورثی: عن ابن شهاب. عن سالم عن أبيه أنه قال: دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم البيت هو وأسامة بن زيد وبلال وعثمان بن طلحة، فأغلقوا عليهم..... إلخ. (صحيح البخارى، كتاب الناسك، باب: إغلاق البيت، ويصلى فى أى نواحى البيت شاء. رقم الحديث: ۱۵۹۸).

(۱) حدثنا إسحاق بن إبراهيم وعبد بن حميد جميعا عن ابن بكر قال عبد: أخبرنا محمد بن بكر أخبرنا ابن جريج قال: قلت لعطاء: أسمعت ابن عباس يقول: إنما أمرتم بالطواف، ولم تؤمروا بدخوله؟ قال: لم يكن ينهى عن دخوله، ولكنى سمعته يقول: أخبرنى أسامة بن زيد أن النبى صلى الله عليه وسلم لما دخل البيت، دعا فى نواحيه كلها، ولم يصل فيه حتى خرج..... إلخ (صحيح مسلم، كتاب الحج، باب: استحباب دخول الكعبة للحج وغيره والصلاة فيها والدعاء فى نواحيها كلها، رقم الحديث: ۱۳۳۰).

(۲) حدثنا يونس بن محمد، حدثنا حماد بن سلمة، عن عمرو بن دينار عن ابن عباس عن الفضل بن عباس: أن النبى صلى الله عليه وسلم قام فى الكعبة، فسبح، وكبر، ودعا الله عزوجل، واستغفر، ولم يركع، ولم يسجد. (مسند أحمد، رقم الحديث: ۱۷۹۵، ۳/۳۱۳). د فضل بن عباس رضی الله عنہ هم دغه حدیث مسند احمد کښې هم په یو بل طریق (حدثنا أبو كامل، حدثنا حماد - یعنی: ابن سلمة - عن عمرو بن دينار عن ابن عباس عن الفضل بن عباس..... إلخ) سره روایت دې، او گورثی: (مسند أحمد، رقم الحديث: ۱۸۳۰، ۳/۳۳۱).

(۳) حدثنا أبو قطن، حدثنا المسعودى، عن أبي جعفر عن أسامة: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم صلى فى الكعبة. (مسند أحمد، رقم الحديث: ۱۷۹۷، ۳۶/۱۳۰).

(۴) فتح الباری، کتاب الحج، باب: من کبر فی نواحی الکعبة، رقم الحديث: ۱۶۱۰۱، ۳/۴۶۹.

نو په دې مسئله کېښي د جمهور علماء کرامو (۱)

په نیز په کعبه کېښي مونځ کول نه صرف جائز بلکه مستحب دي. خود امام مالک رضی اللہ عنہ په نیز فرض مونځ په بیت الله کېښي دننه کول ډیر سخت مکروه دي او په وخت کېښي دننه دننه د دغه مونځ راگرځول مستحب دي. نقل که چرې غیر مؤکده وي نو بیت الله کېښي دننه کول مستحب دي او که چرې مؤکده وي نو مکروه دي مگر د راگرځولو ضرورت نشته دي (۲)

او د امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ په نیز په کعبه کېښي نقل کول خو جائز دي لیکن فرائض کول جائز نه دي. صرف دا صورت کیدی شي چه بیت الله کېښي دننه یو دیوال سره داسې متصل او کړی چه دده نه شاته څه حصه پاتي نه شي (۳).

هم دې طرف ته اشاره کولو سره امام ترمذي رضی اللہ عنہ فرماني: "والعمل عليه عند أكثر أهل العلم لا يرون بالصلاة بأساً، وقال مالك بن أنس: لا بأس بالصلاة النافلة في الكعبة، وكره أن يصل المكتوبة في الكعبة". (۴)

د صاحب هدايه رضی اللہ عنہ يوه سببهو: صاحب هدايه علامه مرغيناني رضی اللہ عنہ نه په دې مقام باندي دمذاهب په نقل کولو کېښي سهو شوي ده. هغوی په کعبه کېښي دننه د مونځ نه جائز کيدل د امام شافعي رضی اللہ عنہ طرف ته منسوب کړی دی (۵).

(۱) د جمهور علماء نه مراد احناف او شوافع دي. او گورني: عند الأحناف: فتح القدير، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة: ۱/۱۶۰، دارالكتب العلمية. التتوير مع الدر، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة، ص: ۱۲۵، دارالكتب العلمية. البحر الرائق، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة: ۲/۱۳۵. البته د شوافعو په نیز که د بیت الله دروازه کولاؤ وي نو دننه د دې مخامخ او دريدو سره به مونځ صحيح نه وي. عند الشوافع: الحاروي في فقه الشافعي، كتاب الصلاة، باب: صفة الصلاة، فصل في الخشوع: ۲/۲۰۶. المجموع شرح المهذب، كتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة: ۳/۱۹۶. الحاروي الكبير للماوردي، كتاب الصلاة، باب صفة الصلاة وعدد سجود القرآن: ۲/۲۰۶.

(۲) مواهب الجليل لشرح مختصر خليل، كتاب الصلاة، فصل في استقبال القبلة: ۲/۲۰۰. الذخيرة للقرافي، كتاب الصلاة، الباب الثالث في شروط الصلاة، الشرط الخامس: استقبال القبلة: ۲/۱۱۲. الاستذكار لابن عبد البر، كتاب الحج، باب: الصلاة في البيت وقصر الصلاة: ۱۲۷/۱۳-۱۲۲.

(۳) د امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ په نیز د يو مشهور قول مطابق په کعبه کېښي او د کعبې په جت باندي فرض مونځ کول جائز نه دي. البته نقل مونځ کول جائز دي. او گورني: المقنع، كتاب الصلاة، باب اجتناب النجاسة، رقم المسئلة: ۳۴۳ ولا تصح الفريضة في الكعبة ولا على ظهرها: ۳/۳۱۳. الشرح الكبير، كتاب الصلاة، باب اجتناب النجاسة، رقم المسئلة: ۳۴۳ ولا تصح الفريضة في الكعبة ولا على ظهرها: ۳/۳۱۳. المبدع شرح المقنع، كتاب الصلاة باب: اجتناب النجاسات: ۳/۳۵۱. او په يو قول کېښي د امام احمد رضی اللہ عنہ نه دا هم نقل دي چه په کعبه کېښي دننه فرض وي او که نقل دواړه قسم مونځ جائز دي. او گورني: علامه مرداوي رضی اللہ عنہ فرماني: "وعند تصح، واختارها الأجرى وصاحب الفائق". (الإنصاف في معرفة الراجح من الخلاف على مذهب الإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، باب اجتناب النجاسة، رقم المسئلة: ۳۴۳، ولا تصح الفريضة في الكعبة ولا على ظهرها: ۳/۳۱۳)

(۴) سنن الترمذي، أبواب الحج، باب ماجاء في الصلاة في الكعبة، تحت رقم الحديث: ۸۷۴

(۵) الصلاة في الكعبة جائزة فرضها ونقلها خلافاً للشافعي فيهما. (الهداية، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة.



حالانکه امام شافعی رحمته الله په کعبه کنبی د مونخ د جواز قائل دی. ددی تصریح علامه ابن همام<sup>(۱)</sup> علامه عینی<sup>(۲)</sup> کړې ده. د مذکوره حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت د حدیث د جملې "قُلُّ الكعبة" کنبی دی. چه ددی نه مراد مقام ابراهیم دی کوم چه د بیت الله دروازی سره نیزی دی<sup>(۳)</sup>

#### ۴-باب: التَّوَجُّهُ نَحْوَ الْقِبْلَةِ حَيْثُ كَانَ

د اباب په دی باره کنبی دی چه مونخ گذار چرته هم وی، په مونخ کنبی دی خپل مخ قبلې طرف ته کړی.

قوله: "نحو القبلة" نه مراد جهة القبلة او ناحية القبلة دی. او حیث کان کنبی کان تامه دی. لکه چه د الله تعالی قول: ﴿وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ﴾ [البقرة: ۱۴۴] کنبی کان تامه دی. ددی فاعل به شخص وی چنانچه د حیث کان مطلب به دا شی چه یو کس په کوم ځای کنبی هم وی، په سفر کنبی وی یا په حضر کنبی په هغه باندي په فرض مونخ کنبی د قبلې طرف ته مخ کول لازم دی<sup>(۴)</sup> د ترجمه الباب مقصد: علامه عینی رحمته الله فرمائی چه امام بخاری رحمته الله په دی باب کنبی د فرض مونخ د پاره د قبلې طرف ته د توجو کولو ضرورت او فرضیت خودلې دی که مونخ گذار په سفر کنبی وی او که په حضر کنبی<sup>(۵)</sup>

(۱) خلافا للشافعي، سهو، فإن الشافعي رحمه الله يرى جواز الصلاة فيها. (فتح التدير، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة: ۱۶۰/۱، دارالكتب العلمية).

(۲) وقول المصنف: (خلافا للشافعي) ش: أي: في الفرض والنفل ليس كما ينبغي. قال: السفناقي: كان هذا اللفظ وقع سهوا من الكاتب، فإن الشافعي يرى جواز الصلاة في الكعبة فرضا ونفلا، كذا أورده أصحابه في كتبهم عن "الوجيز" و "الخلاصة" و "الذخيرة" وغيرهما، ولم يرد أحد من علمائنا أيضا هذا الخلاف فيما عندي من الكتب "كالمبسوط" و "الأسرار" و "الإيضاح" و "المحيط" و شروح الجامع الصغير وغيرها ما خلا أنه يشترط الترة المتصلة بالأرض اتصال قرار إذا كان المصلي في عرصة الكعبة كالحجر والشجر. (البنية، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة: ۲۸۱/۳، دارالكتب العلمية). وغيره، دلته صاحب النهاية د صاحب هدايه ددی مذاهو د نقل کولو تاویل کولو سره یو جواب ذکر کړې دی چه د صاحب هدايه رحمته الله مراد دا کیدی شی چه کله یو سړې په بیت الله کنبی دننه دهغې کولاؤ دروازی ته مخامخ داسې اودریری چه مونخ او کړی چه د هغه مخې ته څه سترا وغیره نه وی نو د شوافع په نیز مونخ نه کیږی. لهذا دا تاویل ددی نه بهتر دی چه د صاحب هدايه رحمته الله کلام په سهو باندي محمول کړې شی اگر چه د صاحب هدايه رحمته الله د کلام ظاهر ددی تاویل نفی کوی او گورنی: وقال صاحب النهاية..... وأجيب بأن مراده ما إذا توجه إلى الباب وهو مفتوح، وليست العتبة مرتفعة قدر مؤخرة الرجل، وهو خير من الحمل على السهو إلا أن إطلاق الكلام ينافية. (النهاية، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في الكعبة: ۱۶۰/۱، دارالكتب العلمية).

(۳) عمدة القاری: ۱۹۹/۴، مصابيح الجامع: ۱۱۳/۲.

(۴) اللامع الصبيح: ۱۴۲/۳، ضياء الساری فی مسالك أبواب البخاری: ۲۸۰/۵، التوشیح: ۴۸۸/۲.

(۵) عمدة القاری: ۲۲۰/۴.



دَ تَعْلِيْقٍ مَقْصِدٌ: دَ تَعْلِيْقٍ نَهْ مَقْصُودٌ دَ تَرْجَمَةِ البَابِ اَثْبَاتِ دِي چِهْ مَذْكَورِهْ حَدِيثِ كَنْبِي هَمْ دَ مَوْنَخِ حَالْتِ كَنْبِي دَ قَبْلِي طَرْفِ تَهْ مَخْ كَوْلِ لَازِمِ كَرْخُولِي شَوِي دِي.  
دَ تَرْجَمَةِ البَابِ سِرِهْ مَنَاسِبْتِ: دَ مَذْكَورِهْ تَعْلِيْقِ دَ تَرْجَمَةِ البَابِ سِرِهْ مَنَاسِبْتِ هَمْ صَفَا بِنْكَارِهْ دِي چِهْ پِهْ دَوَارُو كَنْبِي دَ اَسْتَقْبَالِ قَبْلِهْ ذَكَرِ دِي.

حَدِيثِ بَابِ (رُومِي حَدِيثِ) [حَدِيثِ نَمْبَرِ ٣٩٠]

٣٩١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا (١) قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- صَلَّى تَحْوِيَّتِ الْمُقَدِّسِ سِتَّةَ عَشَرَ أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- يُحِبُّ أَنْ يُوجَّهَ إِلَى الْكَعْبَةِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ (قَدْ تَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ) فَتَوَجَّهَ تَحْوَالِ الْكَعْبَةِ، وَقَالَ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ -وَهُمُ الْيَهُودُ- مَا وَلَاهُمْ عُنْ قِبَلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا (قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ) فَصَلَّى مَعَ النَّبِيِّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- رَجُلٌ لَمْ يَخْرُجْ بَعْدَ مَا صَلَّى، فَمَرَّ عَلَى قَوْمٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فِي صَلَاةِ الْعَصْرِ تَحْوِيَّتِ الْمُقَدِّسِ فَقَالَ هُوَ يَشْهَدُ أَنَّهُ صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ-، وَأَنَّهُ تَوَجَّهَ تَحْوَالِ الْكَعْبَةِ. فَتَحَرَّفَ الْقَوْمُ حَتَّى تَوَجَّهُوا تَحْوَالِ الْكَعْبَةِ.

دَ حَدِيثِ تَرْجَمِهْ: دَ حَضْرَتِ بَرَاءِ بْنِ عَازِبِ (رضي الله عنه) نِهْ رَوَايَتِ دِي چِهْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ١٦ يَا ١٧ مِيَا شَتُو پُورِي دَ بَيْتِ الْمُقَدَّسِ طَرْفِ تَهْ مَخْ كَوْلُو سِرِهْ مَوْنَخِ اَدَا كِرُو اَوْ حَضُورِيَاك (دَ زِرِهْ نِهْ) دَا غُونِبْتَلِ چِهْ (مَوْنَخِ) دَ كَعْبِي طَرْفِ تَهْ مَخْ كَوْلُو سِرِهْ اَوْ كِرِي شِي. نُو اَللَّهُ تَعَالَى آيَتِ: (قَدْ تَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ) (چِهْ اِي پِيغْمِبْرِهْ مَوْنَخِ سَتَا دَ آسْمَانِ طَرْفِ تَهْ بَارِ بَارِ مَخِ اَوْ چَتُولِ وَيَنُو) نَازِلِ كِرُو نُو حَضُورِيَاكِ پِهْ (مَوْنَخِ كَنْبِي) دَ قَبْلِي طَرْفِ تَهْ مَخْ كِرُو. پِهْ دِي بَانْدِي بِي وَقُوفَانُو خَلَقُو كَوْمِ چِهْ يَهُودِيَانِ وَو "طَنْزَا اَوْ كِرُو چِهْ اَوْسِ دَدُوِي دَ اَوْلَنِي قَبْلِي نِهْ چَا وَاپُول؟ (اللَّهُ تَعَالَى حَضُورِيَاكِ تَهْ اَوْ فَرْمَانِيَلِ) دُوِي تَهْ اَوْ اَوَايِهْ مَشْرُقِ اَوْ مَغْرِبِ دَوَارِهْ هَمْ دَ اَللَّهُ تَعَالَى دِي هَغِهْ چِهْ چَاتِهْ غَوَارِي دَ نِيغِي لَارِي هِدَايَتِ وَرَكُوِي. حَضُورِيَاكِ سِرِهْ يُو سِرِي مَوْنَخِ اَوْ كِرُو اَوْ بِيَا هَغِهْ دَ اَنْصَارُو دَ يُو قَبِيَلِي سِرِهْ تِيرِيدُو چِهْ دَمَازِيكِرِ مَوْنَخِ نِي دَ بَيْتِ الْمُقَدَّسِ طَرْفِ تَهْ مَخْ كَوْلُو سِرِهْ كَوْلُو. نُو هَغِهْ وَرْتِهْ اَوْ وِئِيلِ چِهْ اَللَّهُ گَوَاهِ دِي چِهْ مَا دَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ سِرِهْ مَوْنَخِ اَوْ كِرُو اَوْ رَاغْلَمِ اَوْ اَللَّهُ گَوَاهِ دِي چِهْ حَضُورِيَاكِ دَ كَعْبِي طَرْفِ تَهْ مَوْنَخِ كَوْلِ شُرُوعِ كِرِي دِي. پِهْ دِي بَانْدِي هَغِهْ قَبِيَلِي وَا (دَ بَيْتِ الْمُقَدَّسِ نِهْ) تَاؤْ شُو اَوْ هَغُوِي دَ كَعْبِي طَرْفِ تَهْ مَخْ كِرُو. تِرَاجِمِ رَجَالِ: دَ مَذْكَورِهْ حَدِيثِ شَرِيْفِ تُولِ خَلُورِ رَجَالِ دِي:

① عبد الله بن رجاء: واضحه دِي وِي چِهْ عبد الله بن رجاء دوه دِي. يو عبد الله بن رجاء بن عمر الغداني او دويم عبد الله بن رجاء المكي البصري دِي. پِهْ دِي حَدِيثِ كَنْبِي اَوْلِ ذَكَرِ شَوِي (عبد الله بن رجاء)، مَرَادِ دِي خُنْگِهْ چِهْ دَدِي تَصْرِيْحِ عِلَامِهْ عَيْنِي ﷺ كِرِي دِهْ (٢) دَدُوِي

(١) مرتخریچه فی کتاب الإیمان، باب: الصلاة من الإیمان، رقم الحديث: ٤٠ (كشف الباری: ٣٦٦/٢، ٤٠٧)

(٢) عمدة القاری: ٢٢٠/٤

تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الصلاة، باب: وجوب الصلاة فی الشیاب وقول الله تعالی ﴿ خذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ ﴾ ومن صلی ملتحفاتی ثوب واحد کنسی تیرشوی دی (۱)

۲) اسرائیل رضی اللہ عنہ: دا اسرائیل بن یونس بن ابی اسحاق سبعی رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: من ترک بعض الاحتیارات مخافة أن یقصر فهم بعض الناس عنه فیقعوا فی أشد منه لاندی تیرشوی دی (۲)

۳) ابواسحاق رضی اللہ عنہ: ددوی پوره نوم ابواسحاق عمرو بن عبد الله الکوفی رضی اللہ عنہ دی. ددوی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: الصلاة من الإیمان لاندی تیره شوی ده (۳)

۴) براء بن عازب رضی اللہ عنہ: دا مشهور صحابی رسول حضرت براء بن عازب بن حارث بن عدی انصاری رضی اللہ عنہ دی. ددوی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: الصلاة من الإیمان لاندی تیرد شوی دع (۴)

شرح حدیث: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى دَخَوِيَّتِ الْبُقْعِيسِ، سِتَّةَ عَشْرَ أَوْ سَبْعَةَ عَشْرَ شَهْرًا يَعْنِي دَ حَضْرَتِ بَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رضی اللہ عنہ نه روایت دی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ۱۶ یا ۱۷ میاشتو پوری د بیت المقدس طرف ته مخ کولو سره مونخ او کړو.

قوله: "بیت المقدس" دا لفظ "البُقْعِيسُ" هم لوستلې شی او "البُقْعِيسُ" هم (۵).  
قوله: "سِتَّةَ عَشْرَ أَوْ سَبْعَةَ عَشْرَ شَهْرًا" د کلمه او په ذریعه چه دکوم شک اظهار کیږی په ظاهره هغه د راوی د طرف نه دی. د بیت المقدس طرف ته مخ کولو سره ۱۶ یا ۱۷ میاشتې مونخ ادا کول د مدینې منورې طرف ته د هجرت کولو نه پس زمانه کنسی وو. ځکه چه په مکه مکرمه کنسی خو مکمل موده هم د بیت المقدس طرف ته مخ کولو سره مونخ ادا کیدلو (۶). او په صحیح مسلم کنسی ۱۶ میاشتې جزماً ذکر کړې شوی دی (۷). دا تعارض او د دفع کولو د تعارض او تطبیق باندې تفصیلی بحث کشف الباری، کتاب الإیمان کنسی تیرشوی دی (۸).

قوله: وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ أَنْ يُوجَّهَ إِلَى الْكَعْبَةِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ} [البقرة: ۱۴۳]، فَتَوَجَّهَ تَحْوَالِ الْكَعْبَةِ: او حضور پاک د (زړه نه) دا غوښتل چه (مونخ) د کعبې

(۱) کشف الباری، کتاب الصلاة، باب: ص: ۲۴۱.

(۲) کشف الباری: ۵۴۶/۴.

(۳) کشف الباری: ۳۷۰/۲.

(۴) کشف الباری: ۳۷۵/۲.

(۵) شرح الکرمانی: ۶۱/۴، التنقیح لألفاظ الجامع الصحیح، ص: ۳۳.

(۶) شرح الکرمانی: ۶۲/۴ عمدة القاری: ۲۰۱/۴.

(۷) صحیح مسلم کتاب المساجد، باب: تحویل القبلة من القدس إلى الکعبة، التنقیح لألفاظ الجامع الصحیح، ص: ۳۳.

(۸) کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: الصلاة من الإیمان: ۳۷۸-۳۸۲/۲.

طرف ته مخ كولو سره ادا كړې شي، نو الله تعالى آيت: **(قَدْ تَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ)** (چه اې پيغمبره مونږ ستا د آسمان طرف ته بار بار مخ او چترول وينو) نازل كړو، نو حضور پاك په (مونځ كېنې) د كعبې طرف ته مخ كړو<sup>(١)</sup>

قوله: **يُوجَّهُ** د مضارع مجهول صيغه ده، مراد دادي چه د كعبې طرف ته مخ كولو سره د مونځ ادا كولو حكم ملاؤ شي<sup>(٢)</sup>

قوله: **فَتَوَجَّهَ** چنانچه ددې آيت نازلېدو نه پس حضور پاك مونځ كېنې قبلې طرف ته مخ كړو خكه چه په پوره آيت كېنې **(قَوْلٍ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ)** هم دې. د آيت مبارك په دې تکره كېنې "المسجد" نه مراد كعبه ده.<sup>(٣)</sup>

قوله: **وَقَالَ الشُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ، وَهُمْ الْيَهُودُ: {مَا دَلَّاهُمْ} [البقرة: ١٣٢] عَنْ قِبَلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا، قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ [ص: ٨٩] وَالشُّعْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ فَصَلِّ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا، ثُمَّ خَرَجَ بَعْدَ مَا صَلَّى، فَمَرَّ عَلَى قَوْمٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فِي صَلَاةِ الْعَصْرِ نَحْوَ بَيْتِ الْمُقَدَّسِ:**

په دې باندې بې وقوفانو خلقو كوم چه يهوديان وو طنزاو كړو چه اوس دوى د خپل اولنې قبلې نه چا وارول؟ (الله تعالى حضور پاك ته او فرمائيل، دوى ته او وايه چه مشرق او مغرب دواړه هم د الله دى، هغه چه چاله غواړي د نېغې لار هدايت وركوي. حضور پاك سره يو سړى مونځ او كړو او بيا هغه د انصارو د يوې قبيلې سره تير شو چه د مازيگر مونځ شى بيت المقدس طرف ته مخ كولو سره كولو.

قوله: **رجل** د بخارى شريف په بعضې نسخو كېنې مثلاً د مستملى او حموى په نسخو كېنې د رجل په ځاى رجال د جمع صيغه استعمال شوې ده. د دغه نسخې مطابق كه يو څوك اعتراض او كړي چه كه چېرې رجال د جمع صيغه صحيح او منلې شى نو بيا د حديث پاك په وړاندې جمله كېنې د **خرجه** فعل ضمير رجال د جمع طرف ته څنگه راگرځي؟ نو د هغې جواب به دا شى چه د ضمير مرجع به هغه وى په كوم چه رجال دلالت كوي او هغه مفرد دې يا به د **خرجه** معنى **خرجه** عارجه وى لهذا هيخ اشكال نشته. او د حافظ ابن حجر **رحمته** د تصريح مطابق به **خرجه** بعض اولئك الرجال" تقديراً راويستلى شى.<sup>(٤)</sup>

<sup>(١)</sup> شرح الكرماني: ٦٢/٤

<sup>(٢)</sup> شرح الكرماني: ٦٢/٤ اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوى: ١٤٤/٣، فتح البارى: ٦٥١/١ عمدة القارى: ٢٠١/٤.

<sup>(٣)</sup> شرح الكرماني: ٦٢/٤ اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوى: ١٤٤/٣.

<sup>(٤)</sup> شرح الكرماني: ٦٢/٤ اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوى: ١٤٤/٣ فتح البارى: ٦٥١/١ التوشيح لشرح الجامع الصحيح للسيوطي: ٢٨٨/٢ عمدة القارى: ٢٠١/٤.

رجل نه شوک مراد دي؟ ددي "رجل" نه شوک مراد دي؟ په دي باره کښي د دوو کسانو نومونه ملاويږي. عباد بن بشر دي يا عباد بن نهيك<sup>(۱)</sup>. او ابن الملقن رضي الله عنه يو بل نوم ذکر کړي دي: عباد بن وهب<sup>(۲)</sup>.

قوله: في صلاة العصر نحويت المقديس: دا جمله د کشميهني رضي الله عنه په روايت کښي "في صلاة العصر" يُملون نحويت المقديس" ده په ظاهره په دي جمله کښي زيات وضاحت او فصاحت دي<sup>(۳)</sup>.  
قوله: "صلاة العصر" ددي حديث نه معلومېږي چه د دغه سړي تيريدل په قبا، کښي د انصارو د قبيلې سره د سحر په مونځ کښي شوي وو. نو په دغه دواړو روايتونو کښي څه منافات نشته دي. داسې چه هغه سړي مدينه منوره کښي د يوجماعت سره تير شونود مازيگر وخت وو. بيا به هغه سفر کولو سره د مدينې نه بهر د قبا، والو ته رسيدلې وي نو هلته د سحر وخت وو<sup>(۴)</sup>.  
په دي تعارض، دفع د تعارض او تطبيق باندې تفصيلي بحث کشف الباري کتاب الايمان کښي تير شوي دي<sup>(۵)</sup>.

قوله: "فقال" ددي فعل ضمير او "هو" ضمير د "رجل" طرف ته راگرځي. يعنى هغه سړي "هو" ضمير نه خپل ځان مراد واخستلو. دمتکلم خپل ځان د غائب په صيغې سره تعبير کول جائز دي. دا د التفات په توگه وي. يو احتمال داهم دي چه راوي د حديث د دغه رجل د کلام معنى نقل کړي وي په داسې توگه چه د هغه اصل کلام "انا شهد" وو<sup>(۶)</sup>.  
د روايت د ترجمه الباب سره مناسبت: دمذکوره حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت د حديث "فتوجه نحو الكعبة" جمله کښي دي. چه په باب کښي هم دغه ذکر دي او حديث کښي هم<sup>(۷)</sup>.  
د حديث شريف نه مستفاد شوي فوايد او احکام: دمذکوره حديث شريف نه ډير فوايد مستنبط کيږي. د هغه ټولو نه يو څو دلته ذکر کولې شي چه:  
① ددي حديث شريف نه د احکامو د منسوخ کيدو جواز معلومېږي<sup>(۸)</sup>.

(۱) التنقيح لألفاظ الجامع الصحيح، ص: ۳۳. فتح الباري: ۹۷/۱. عمدة القاري: ۲۰۱/۴.  
(۲) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، كتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة، الحديث الثاني: حديث عبدالله بن عمر: ۴۸۷/۲.  
(۳) فتح الباري: ۶۵۱/۱. التوشيح لشرح الجامع الصحيح للسيوطي: ۲۸۸/۲. عمدة القاري: ۲۰۱/۴.  
(۴) شرح الكرماني: ۶۲/۴.  
(۵) كشف الباري، كتاب الإيمان، باب: الصلاة من الإيمان: ۳۸۸-۳۹۰/۲.  
(۶) شرح الكرماني: ۶۲/۴. اللمع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوي: ۱۴۴/۳. فتح الباري: ۶۵۲. التوشيح لشرح الجامع الصحيح للسيوطي: ۲۸۸/۲. عمدة القاري: ۲۰۱/۴.  
(۷) عمدة القاري: ۲۰۰/۴.  
(۸) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، كتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة، الحديث الثاني: حديث عبدالله بن عمر: ۴۹۷/۲. عمدة القاري: ۲۰۲/۴.

- ② په دې حدیث شریف کښې د نسخ السنة بالقرآن دلیل دې. (۱)
- ③ په دې حدیث شریف کښې د خبر واحد په قبلیدو باندي دلیل دې. (۲)
- ④ د قبلي طرف ته مخ کول او مونځ کول او د کعبې قبله کیدو باندي د اجماع کیدل هم معلومیري. (۳)
- ⑤ د مکلف سړي په حق کښې به د احکامو منسوخ کیدل هغه وخت معتبر وي کله چه د دغه منسوخ کیدو هغه ته خبر اورسیري. (۴)
- ⑥ په دې حدیث شریف کښې د دې خبرې هم دلیل دې چه د کعبې طرف ته مخ کولو نه مخکښې د بیت المقدس طرف ته مخ کولو سره ادا کړې شوی مونځونه د الله تعالی په نیز مقبول دی د هغې اعاده به نه شی کولي. (۵)
- حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ۳۹۱]

۳۰۰- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ (۱) كَانَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَصَلِّي عَلَى رَأْسِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ، فَإِذَا أَرَادَ الْفَرِيضَةَ نَزَلَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ.

د حدیث ترجمه: حضرت جابر رضی اللہ عنہ او فرمائیل چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم به په خپله سورلي باندي که د هغې مخ به هر طرف ته وو (نفل) مونځ به ئی کولو. لیکن چه کله به ئی فرض مونځ کول غوښتل نو د سورلي نه به را کوزیدلو او د قبلي طرف ته به ئی مخ کولو سره مونځ کولو. تراجم رجال: د مذکوره حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه رجال دی:

① مسلم رضی اللہ عنہ: دا مسلم بن ابراهیم القصاب ازدي بصری رضی اللہ عنہ دې. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: زیادة الإیمان و نقصانه لاندي تیر شوی دی. (۷)

(۱) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام. كتاب الصلاة. باب: استقبال القبلة. الحديث الثاني: حديث عبدالله بن عمر: ۴۹۷/۲، عمدة القاری: ۲۰۲/۴.

(۲) أعلام الحديث للخطابي: ۳۸۳/۱. الإعلام بفوائد عمدة الأحكام. كتاب الصلاة. باب: استقبال القبلة. الحديث الثاني: حديث عبدالله بن عمر: ۴۹۷/۲، عمدة القاری: ۲۰۲/۴.

(۳) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام. كتاب الصلاة. باب: استقبال القبلة. الحديث الثاني: حديث عبدالله بن عمر: ۴۹۷/۲، عمدة القاری: ۲۰۲/۴.

(۴) أعلام الحديث للخطابي: ۳۸۳/۴.

(۵) أخرجه البخاری أيضاً في تقصير الصلاة. باب: صلاة التطوع على الدابة وحيثما توجهت. رقم الحديث: ۱۰۹۴، و باب: ينزل للمكتوبة. رقم الحديث: ۱۰۹۹، وفي المغازی. باب: غزوة أنمار. رقم الحديث: ۴۱۴۰. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول في الصلاة، الباب الأول في الصلاة وأحكامها، الفصل الرابع في استقبال القبلة. رقم الحديث: ۲۹۸/۵، ۳۳۸۰.

(۷) كشف الباری: ۴۵۵/۲.

② هشام بن سالم: دا ابوبکر هشام بن ابو عبد الله بصری الدستوائی رضی الله عنه دی. ددوی تفصیلی

احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: زیادة الإیمان ونقصانه لاندې تیرشوی دی<sup>(۱)</sup>

③ یحیی بن ابی کثیر رضی الله عنه: دا یحیی بن ابی کثیر طائی یمامی رضی الله عنه دی. ددوی تفصیلی احوال

کشف الباری، کتاب العلم، باب: کتابة العلم د دویم حدیث لاندې تیرشوی دی<sup>(۲)</sup>

④ محمد بن عبد الرحمن رضی الله عنه: دا محمد بن عبد الرحمن بن المغیره بن الحارث قرشی عامری

مدنی رضی الله عنه دی. ددوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: حفظ العلم د دویم حدیث

لاندې تیرشوی دی<sup>(۳)</sup>

⑤ جابر بن عبد الله رضی الله عنه: دا مشهور صحابی رسول حضرت جابر بن عبد الله الانصاری رضی الله عنه دی. ددوی

احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: من لم یر الوضوء إلا من المخرجین من القبل والدبر لاندې

تیرشوی دی<sup>(۴)</sup>

د حدیث شرح: «كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي عَلَى رَأْسِهِ، حَيْثُ تَوَجَّهَتْ»:

حضرت جابر رضی الله عنه فرمائی چې نبی کریم صلی الله علیه و آله به په خپله سورلي باندې که دهغې هر طرف ته مخ

وو (نفل) مونځ ئی کولو.

قوله: "على راسه" د راحله نه مراد هغه اوبنه ده چه د سور د اورلو صلاحیت لری. اوداهم

ونیلې شی چه راحله د اوبن سورلی ده. عام ده چه هغه اوبن وی که اوبنه وی.<sup>(۵)</sup>

د حدیث شریف ددې جملې نه دلیل نیولو سره احنافو او مالکیو فرمائیلی دی چه د پیدل

تلونکی د پاره په روانه روانه نوافل ادا کول جائز نه دی. خود شوافع او حنابله په نیز په دې

حالت کبسي هم د نوافلو ادا کول جائز دی.<sup>(۶)</sup>

قوله: "حيث توجهت" د کشمیهنی روایت کبسي توجهت نه پس ددې صله به هم ذکرده.<sup>(۷)</sup>

علامه ابن ملقن رضی الله عنه لیکي چه په حالت فرسفر کبسي په سورلي باندې په ناسته د نوافل کولو

وجه به دا وه چه د سفر د وجې نه د الله تعالی عبادت پاتې نه شی یا مسافر د نوافلو نه

محروم پاتې نه شی.<sup>(۸)</sup>

(۱) کشف الباری: ۴۵۶/۲.

(۲) کشف الباری: ۲۶۷/۴.

(۳) کشف الباری: ۴۴۲/۴.

(۴) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: من لم یر الوضوء إلا من المخرجین من القبل والدبر.

(۵) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، کتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة، الحدیث الأول: حدیث عبدالله بن عمر:

۴۹۷/۲، عمدة القاری: ۲۰۳/۴.

(۶) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، کتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة، الحدیث الأول: حدیث عبدالله بن عمر: ۴۸۲/۲.

(۷) عمدة القاری: ۲۰۳/۴.

(۸) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، کتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة، الحدیث الأول: حدیث عبدالله بن عمر: ۴۸۱/۲.



قوله: «فَإِذَا أَرَادَ الْقَرِيبَةَ نَزَلَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ» لیکن چه کله به نئی فرض مونخ کول غوښتل نوډ سورلئ نه به کوزیدلو اوډ قبلي طرف ته مخ کولو سره مونخ ادا کول.

د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت: دمذکوره حديث د ترجمه الباب سره مناسبت د حديث په دې جملې "فاستقبل القبلة" کښې دې (۱) د حديث شريف نه مستنبط فوائد او احکام: دمذکوره حديث شريف نه ډير فوائد مستنبط کيږي. دهغې نه څه دادی چه:

① د سفر په حالت کښې چه کوم طرف ته هم مخ وي، د سوريډو په حالت کښې نوافل ادا کول جائز دي. (۲)

② فرائضو کښې د قبلي طرف ته نه مخ کول صحيح نه دي. په دې وجه به حضور پاك د فرض د پاره د سورلئ نه کوزيدو سره قبلي طرف ته مخ کولو او مونخ به نئی ادا کولو. البته د سختې ويري حالت ددې نه منستنی دي او د مجبورثی او معذورثی په حالت کښې په سورلئ باندي هم فرض مونخ کول صحيح کيږي. (۳)

دمذکوره حديث شريف لاندي دوه مسئلې زیر بحث راځي. يو په سورلئ باندي د مونخ (فرض وي که نفل) کولو حکم او دويم په سورلئ باندي مونخ کولو سره د قبلي طرف ته د مخ کولو حکم، لاندي دواړه مسئلې په تفصيل سره ذکر کولې شي:

په سورلئ باندي د مونخ (فرض وي که نفل) کولو حکم: د فرض مونخ د صحيح کيدو چه کوم شرائط دي که په سورلئ باندي د سوريډو په حالت کښې هم د هغې پوره کيدل ممکن وي نو په سورلئ باندي به د فرض مونخ ادا کيدل صحيح وي او که چرې ټولو شرائطو سره د فرائضو ادا کول ممکن نه وي نو د دغه فريضې ادا کول به په سورلئ صحيح نه وي.

په ښاريه کښې دننه د مقيم سړي د پاره په ځناور باندي سوريډو سره نفل مونخ ادا کول د امام ابوحنيفه رحمته الله عليه په نيز جائز نه دي. او د امام ابو يوسف رحمته الله عليه په نيز په ښاريه کښې هم بغير د څه کراهت نه جائز دي او د امام محمد رحمته الله عليه په نيز د کراهت سره جائز دي.

د ښاريې نه بهر وتلو نه پس مسافر (شرعی) د پاره د ټولو فقهاؤ په نيز او د غير مسافر د پاره د اکثر فقهاؤ په نيز (تردې چه که يو سړي د خپلو پتو وغيره طرف ته يا د ښار گردونواح ته تلې وي، د هغه د پاره هم) په سورلئ باندي سوريډو سره نفل کول جائز دي. د ښار نه بهر وتلو د حد نه مراد هغه ځانې دي دکوم ځانې نه چه د مسافر د پاره قصر کول جائز کيږي. د هغه ځانې نه په سورلئ باندي نفل کول جائز کيږي. سنت مؤکده او غير مؤکده ټول د نفل په حکم کښې دي بغير د سحر د سنتو نه چه دا د امام صاحب په نيز په سورلئ باندي کيناستو

(۱) عمدة القاری: ۲۰۲/۴.

(۲) الإعلام بفوائد عمدة الأحكام، کتاب الصلاة، باب: استقبال القبلة، الحديث الأول: حديث عبدالله بن عمر: ۴۸۳/۲.

(۳) عمدة القاری: ۲۰۳/۴.

سره ادا کول جائز نه دی خکه چه ددی دیرزیات تاکید راغلی دی (۱)  
 هم دغه حکم د هر قسم سورلی دی که هغه د پخوانی زمانی وی بلکه او بی، قچر او خر  
 وغیره) او که دموجوده زمانی (لکه جهاز، ریل گاډی، بس، موټر وغیره) (۲)  
 په ریل گاډی کښې د سفر کولو په حالت کښې د مونخ حکم: په ریل گاډی کښې د سفر کولو په  
 وخت چه د مانخه وخت راشی نومونخ کول فرض دی. چونکه په ریل گاډی کښې قیام کول  
 او د قبلي طرف ته مخ کول ممکن وی په دې وجه په مکمل مونخ کښې قبلي ته مخ کولو سره  
 په ولاړه مونخ ادا کول ضروری دی. تردې که په مونخ کښې ریل گاډی د قبلي نه تاؤ شی نو د  
 مونخ گذار د پاره هم خپل مخ تاوول ضروری دی. (۳)  
 په ریل گاډی کښې د سفر کولو په وخت کښې که ډیره بیره وی، د اودریدو خانی نه وی نو د  
 خپل سفر د ملگرو نه د مونخ د پاره خانی غوښتل پکار دی، که چرې خانی ملاؤ شی نوبه  
 ده گنی په هغه وخت په ناسته سره مونخ ادا کول پکار دی لیکن روستوئی بیا راگرخول لا  
 زم دی (۴)

په سورلی باندي د مونخ کولو وخت کښې قبلي ته د مخ کولو حکم: په سورلی باندي د فرض  
 مونخ د صحیح کیدو د پاره د قیام په شان د قبلي طرف ته مخ کول هم ضروری دی گنی  
 مونخ به نه کیری. البته په سورلی باندي د نفل کولو په حالت کښې (که په ولاړه وی او که په  
 ناسته) قبلي ته مخ کول فرض نه دی. په ډیرو زیاتو احادیثو کښې د نبی کریم ﷺ پاره کښې  
 دا نفل دی چه حضور پاک به په سورلی باندي نفل مونخ کولو. که سورلی به هر طرف ته هم  
 تلله. او گورنی: د حضرت عامر بن ربیعہ رضی الله عنه نه روایت دی چه رسول الله ﷺ مې په سورلی  
 باندي نفل مونخ د سر په اشارې سره کونکې لیدلې دی. کوم طرف ته چه به هم سورلی وه هم

(۱) قال الحصکفی رحمته الله: (و یتنفل المقيم (راکبا خارج المصرا) محل القصر (مومنا) فلو سجد اعتبر إيماء لأنها إنما  
 شرعت بالإيماء (إلى أي جهة توجهت دابته). قال ابن عابدین رحمته الله: قوله: (ويتنفل المقيم راکبا..... إلخ) أي: بلا عذر،  
 أطلق النفل، فشم السنن المؤکدة إلا سنة الفجر، كما مر، وأشار بذكر المقيم إلى أن المسافر كذلك بالأولى،  
 واحترز بالنفل عن الفرض والواجب بأنواعه كالوتر والمنذور وما لزم بالشروع والإفساد وصلاة الجنابة وسجدة  
 تليت على الأرض، فلا يجوز على الدابة بلا عذر لعدم الحرج كما في البحر، قوله: (راکبا) فلا تجوز صلاة الماشي  
 بالإجماع، بحر عن المجتبى، قوله: (خارج المصرا) هذا هو المشهور، وعندهما يجوز في المصرا، لكن بکراهة  
 عند محمد لأنه يمنع من الخشوع، وتامه في الحلية، قوله: (محل القصر) بالنصب بدل من خارج المصرا، وفائدته  
 شمول خارج القرية وخارج الأحياء ح: أي المحل الذي يجوز للمسافر قصر الصلاة فيه، وهو الصحيح، بحر. وقيل:  
 إذا جاوز ميلا، وقيل: فرسخين، أو ثلاثة. قهستاني. (ردالمحتار مع الدرالمختار، كتاب الصلاة، مطلب: في الصلاة  
 على الدابة: ۴۸۷/۲-۴۸۶).

(۲) الموسوعة الفقهية الكويتية مادة: الصلاة، الصلاة على الراحلة: ۲۲۹/۲۷.

(۳) الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب الثالث في شروط الصلاة، الفصل الثالث في استقبال القبلة: ۶۳/۱.

(۴) العذر إن كان من قبل الله لا تجب الإعادة، وإن كان من قبل العبد، وجبت الإعادة. (البحر الرائق، كتاب الطهارة،  
 باب: التيمم: ۱۴۲/۱).

هغه طرف ته به ئی مخ کولو. او رسول الله ﷺ به داسې فرض مونخ کنبې نه کول. (١)  
حدیث باب (دریم حدیث) (حدیث نمبر ٣٩٢)

١٠٠٠ - حَدَّثَنَا عُمَانُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ  
(٢) صَلَّى النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَدْرِي زَادَ أَوْ نَقَصَ - فَلَمَّا سَلِمَ قِيلَ لَهُ  
يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَحَدَثَ فِي الصَّلَاةِ شَيْءٌ قَالَ «وَمَا ذَاكَ» قَالَُوا صَلَّيْتَ كَذَا وَكَذَا. فَتَشَى  
رِجْلَيْهِ وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَلَمَّا أَقْبَلَ عَلَيْنَا بَوَّجَهُ قَالَ «إِنَّهُ لَوْ حَدَّثَ  
فِي الصَّلَاةِ شَيْءٌ لَنَبَأْتُكُمْ بِهِ، وَلَكِنْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلَكُمْ، أَنَسِي كَمَا تَنْسُونَ، فَإِذَا نَسِيتُ  
فَدَكِّرُونِي، وَإِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاتِهِ فَلْيَتَحَرَّى الصَّوَابَ، فَلْيَتِمَّ عَلَيْهِ ثُمَّ سَلِّمْ، ثُمَّ نَجِدْ  
سَجْدَتَيْنِ».

د حدیث ترجمه: حضرت عبد الله بن مسعود رضی اللہ عنہ فرمائی چې رسول الله ﷺ مونخ ورکړو. ابراهیم وائی چې ماته (اوس) معلومه نه ده چې د مانخه (رکعتونو کنبې) کمې او شو که زیاتې بیا چې کله حضور پاک سلام او گرځولو نو حضور پاک ته عرض او کړې شو چې یا رسول الله! آیا د مونخ (ادا کولو باره) کنبې څه نوې حکم نازل شوي دي؟ حضور پاک تپوس او کړو چې هغه څه؟ خلقو او وئیل تاسو دومره دوامر د رکعتونه او کړل دي او ریدو سره حضور پاک خپلي خپې راغوندي کړې او د قبلي طرف ته ئی مخ کړو او د (سهو) دوه سجدي ئی او کړې او د

(١) عن عامر بن ربيعة قال: رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو على الراحلة يسبح. يومئ برأه قبل أي وجه توجه. ولم يكن رسول الله صلى الله عليه وسلم يصنع ذلك في الصلاة المكتوبة. (صحيح البخاري، كتاب الصلاة، باب: ينزل للمكتوبة، رقم الحديث: ١٠٩٧). وكذا عن ابن عمر رضي الله عنهما قال: كان النبي صلى الله عليه وسلم يصلي على راحلة تطوعا جثما توجهت به وهو جاء من مكة إلى المدينة، ثم قرأ ابن عمر هذه الآية: ﴿وَاللَّهُ الْمَلِكُ وَالْقَدِيمُ الْأَبَدِيُّ﴾ فقال ابن عمر: هذا أنزلت هذه الآية. (سنن الترمذي، أبواب التفسير، من سورة البقرة، رقم الحديث: ٢٩٥٨).

(٢) أخرجه البخاري في الصلاة، باب: ما جاء في القبلة ومن لا يرى الاعادة على من سها، فصلى إلى غير القبلة. رقم الحديث: ٤٠٤. وفي كتاب السهو، باب: إذا صلى خمسا، رقم الحديث: ١٢٢٦. وفي الأيمان، باب: إذا حنث ناسيا في الأيمان، رقم الحديث: ٦٦٧١. وفي كتاب أخبار الأحاد، باب: ما جاء في إجازة خبر الواحد الصدوق في الأذان والصلوة والصوم والفرائض والأحكام، رقم الحديث: ٧٢٤٩. ومسلم في صحيحه، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب: السهو في الصلاة والسجود له، رقم الحديث: ٥٧٢. وأبو داود في سننه، في كتاب الصلاة، باب: إذا صلى خمسا، رقم الحديث: ١٠١٩، ١٠٢٠، ١٠٢١، ١٩٠٢٢. والترمذي في جامعه، في الصلاة، باب: ما جاء في سجدتي السهو بعد السلام والكلام، رقم الحديث: ٣٩٢، ٣٩٣. والنسائي في سننه، في السهو، باب: ما يفعل من صلى خمسا، رقم الحديث: ١٢٥٥، ١٢٥٦، ١٢٦٠. وابن ماجه في سننه، في كتاب إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: من صلى الظهر خمسا وهو ساه، رقم الحديث: ١٢٠٥. وفي باب: ما جاء فيمن شك في صلاته، فتحرى الصواب، رقم الحديث: ١٢١١، ١٢١٢. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: في الصلاة القسم الأول: في الفرائض وأحكامها، الباب الأول: في الصلاة وأحكامها، الفصل السابع: في السجودات، الفرع الأول: في سجود السهو القسم الثاني: في السجود بعد التسليم، رقم الحديث: ٣٧٦٦، ٥٤١/٥.

هغې نه پس نى سلام او گرځولو. بيانى زمونږ طرف ته مخ کړو او ارشاد نى او فرمائيلو. که چرته په مونځ کبسي څه نوې حکم نازل شوې وي نو ما بيه د مونځ نه مخکې تاسو نه خودلې دې، ليکن زه خو هم ستاسو په شان يو انسان يم، لکه څنگه چه تاسو نه هيريرې هغه شان ما نه هم هيريرې. په دې وجه چه کله ماته هيره اوشى نو تاسو ماته رايادوئ را کوئى. او کله چه په تاسو کبسي دچا په مونځ کبسي شک پيدا شى نو د صحيح خبرې معلومولو کوشش دى او کړى او هم د هغې مطابق دې مونځ پوره کړى. بيا دې سلام گرځولو سره دوه سجدي د (سېو) او کړى.

تراجم رجال: دمذکوره روايت په سند کبسي ټول شپږ رجال دى:

① عثمان بن عفان: دا عثمان بن محمد بن قاضى ابوشيبه ابراهيم کوفى رضي الله عنه دې. ددوى احوال

کشف البارى کتاب العلم، باب: من جعل لأهل العلم أياماً معلومة لاندې تير شوى دى (۱)

② جرير بن عبد الحميد: دا جرير بن عبد الحميد بن قرط رازى رضي الله عنه دې. ددوى احوال کشف البارى کتاب

العلم، باب: من جعل لأهل العلم أياماً معلومة لاندې تير شوى دى (۲)

③ منصور بن عمار: دا منصور بن المعتمر السلمى الكوفى رضي الله عنه دې. ددوى احوال کشف البارى

کتاب العلم، باب: من جعل لأهل العلم أياماً معلومة لاندې تير شوى دى (۳)

④ ابراهيم بن محمد: دا ابراهيم بن يزيد النخعي رضي الله عنه دې. ددوى احوال کشف البارى کتاب

الإيمان، باب: ظلم دون ظلم لاندې تير شوى دى (۴)

⑤ علقمه بن قيس: دا علقمه بن قيس بن عبد الله نخعي رضي الله عنه دې. ددوى احوال کشف البارى کتاب

الإيمان، باب: ظلم دون ظلم لاندې تير شوى دى (۵)

⑥ عبد الله بن مسعود: دا مشهور صحابئ رسول حضرت عبد الله بن مسعود رضي الله عنه دې. ددوى احوال

کشف البارى کتاب الإيمان، باب: ظلم دون ظلم لاندې تير شوى دى (۶)

شرح حديث: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: حضرت عبد الله بن مسعود رضي الله عنه

او فرمائيل چه نى كريم صلی الله علیه و آله مونځ ورکړو.

دا کوم يو مونځ وو؟ د يو قول مطابق دا د ماسپنين مونځ وو او د دويم قول مطابق دا د

مازيگر مونځ وو. طبرانى رضي الله عنه هم ددې راوى د ابراهيم رضي الله عنه حديث نقل کړې دې د طلحه بن

(۱) کشف البارى: ۲۶۶/۳.

(۲) کشف البارى: ۲۶۸/۳.

(۳) کشف البارى: ۲۷۰/۳.

(۴) کشف البارى: ۲۵۳/۲.

(۵) کشف البارى: ۲۵۶/۲.

(۶) کشف البارى: ۲۵۷/۲.

مصرف په طریق، په هغې کبسي د مازیگر د مونخ تصریح ده<sup>(۱)</sup> او هم د دوی روایتی د شعبه عن حماد په طریق سره نقل کړې دې په هغې کبسي د ماسپینین د مونخ ذکر دې<sup>(۲)</sup>

قوله: قَالَ إِبْرَاهِيمُ: لَا أَذْرِي زَادًا أَوْ نَقَصًا: راوی ابراهیم رضی الله عنه او وئیل چه ماته (اوس) معلومه نه ده چه د مونخ (رکعتونو) کبسي کمې شوې وو که زیاتې. ابراهیم دا ابن یزید النخعی دې. او یو قول داهم دې چه دا ابن سوید النخعی دې<sup>(۳)</sup>

قوله: زَادًا أَوْ نَقَصًا: د دواړو افعالو ضمیرونه د نبی کریم صلی الله علیه و آله طرف ته راجع دی. اودا دواړه افعال په دې مقام باندې متعدی دی<sup>(۴)</sup>

د راوی حدیث بیان دې چه زما خیال کبسي نشته چه په مونخ کبسي خه زیاتې شوې وو که کمې، لیکن لږ شان وړاندې هم د دې راوی حدیث په یو بل سند سره راروان دې دهغې نه معلومیرې چه په مونخ کبسي زیاتوالې شوې وو یعنی د خلورو په خانی باندې شی پنځه رکعته کړې وو. دهغوی شک د سجده سهو د سبب په بنیاد باندې واقع شو چه سجده سهو په رکعتونو کبسي د کمې پیښیدو د وجې نه او کړې شو او که په رکعتونو کبسي زیاتې کیدو د وجې نه کړې شوې وه<sup>(۵)</sup>. علامه کرمانی رحمته الله علیه فرمائی چه دا پوره جمله د راوی منصور ادراج دې<sup>(۶)</sup>

قوله: فَلَمَّا سَلَّمَ قَبِلَ لَهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَحَدَتْ فِي الصَّلَاةِ شَيْءٌ؟: بیا چه کله حضور پاک سلام او گرځولو نو حضور پاک ته عرض او کړې شو چه یا رسول الله آیا مونخ (ادا کولو باره) کبسي خه نوې حکم نازل شوې دې؟

۱- همزه د استفهام د پاره دې او "حَدَتْ" د دال په فتحی سره د "وقع" معنی دې. مطلب د دې جملې دا دې چه آیا د وحی په ذریعه د مونخ باره کبسي خه داسې حکم نازل شوې دې چه هغې د مونخ مخکینی طریق په بدله کړې ده. یعنی د خلورو په خانی د پنځو رکعتو حکم راغلې

(۱) عن طلحة بن مصرف عن إبراهيم عن علقمة عن عبد الله قال: صلى بنا رسول الله صلى الله عليه وسلم العصر، فنهض في الرابعة، ولم يجلس حتى صلى بنا الخامسة، فقيل: يا رسول الله صليت بنا خمسا، فاستقبل القبلة، وكبر، وسجد سجدتين. (المعجم الكبير للطبراني، تابع عبدالله بن مسعود، رقم الحديث: ۹۸۳۶، ۳۴/۱۰).

(۲) عن شعبة عن حماد عن إبراهيم عن علقمة عن عبدالله أن رسول الله صلى الله عليه وسلم صلى الظهر خمسا، فقيل: يا رسول الله في الصلوة؟ قال: "وما ذاك؟" قالوا: صليت خمسا، فسجد سجدتين. (المعجم الكبير للطبراني، تابع عبدالله بن مسعود، رقم الحديث: ۹۸۳۹، ۳۵/۱۰).

(۳) اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوي: ۱۴۶/۳.

(۴) اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوي: ۱۴۶/۳. په دې مقام باندې علامه ابن حجر رحمته الله علیه تصریح کړې ده چه دا ابراهیم بن یزید نخعی رضی الله عنه دې څوک چه د دې ابراهیم نه مراد کبسي د بل چا ذکر کوی هغه په خطا باندې دې. (فتح الباری: ۶۵۲/۱).

(۵) عمدة القاری: ۲۰۵/۴ الکوثر الجاری: ۹۲/۲.

(۶) شرح الكرمانی: ۶۳/۴ اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوي: ۱۴۶/۳.

(دې)

قوله: قَالَ: «وَمَا ذَاكَ»، قَالُوا: صَلَّيْتَ كَذَا وَكَذَا: حضور پاك تپوس او كړو چه هغه څه؟ خلقو اونیل چه تاسو دومره دومره ركعتونه كړي دي.

ذَ وَمَا ذَاكَ - استعمال د داسې سرې د طرف نه كيږي چاته چه هيڅ خبر نه وي چه د هغه نه څه كار شوي دي نه په يقيني توگه او نه په غالب گمان سره. (۱)

د خبرو اترو كولو نه پس د مونځ د باقى كيدو حكم: دلته يو اشكال پيدا كيږي چه نبى كريم ﷺ سلام گرځولې وو د هغې نه پس حضور پاك «وَمَا ذَاكَ؟» په ذريعه سوال او كړو نو د دې خبرو اترو كولو نه پس حضور پاك د مونځ بنا څنگه او كړه؟ نو د احنافو د طرف نه دا جواب ور كړې شوي دي چه د خبرو اترو كولو دا واقعه په مونځ كښې د كلام د حرمت نه د مخكښې وخت دي. (۲)

يو بل سوال پيدا كيږي چه دلته خو تلقين من خارج الصلاة موندلې شي يعنى د مونځ كونكى د پاره د خپل غير په خبره باندي عمل كول خو جائز نه وي بيا څنگه حضور پاك د بل چا په خبره باندي عمل كولو سره خپل مونځ مكمل كړو؟ نو د دې دا جواب ور كړې شوي دي چه نبى كريم ﷺ د «وَمَا ذَاكَ» په ذريعه چه كوم سوال كړې وو هغه په مونځ كښې د خپلې غلطې د پيژندلو د پاره وو. كله چه د صحابه كرامو په خودلو سره حضور پاك پوهه شو نو د خپل علم په بنياد باندي حضور پاك خپل مونځ مكمل كړو نه دا چه صرف د غير په خبره باندي ئى عمل او كړو. (۳)

په دې باندي علامه عيني رحمته الله عليه فرماني چه په اصل كښې په دې جمله كښې په شافعيه مذهب باندي اشكال لا زميږي. هغه داسې چه د هغوى په نيز په مونځ كښې د مونځ گذار د ځان نه غير طرف ته رجوع كول جائز نه دي. كه هغه امام وي او كه مقتدى. بلكه هم د خپل زړه په خبره باندي عمل كول لا زم دي. په دې وجه امام نووي رحمته الله عليه هغه جواب ور كړو كوم چه پورته د شرح الكرماني په حواله ذكر كړې شوي دي. په دې جواب باندي اشكال كولو سره علامه

عيني رحمته الله عليه فرماني چه دلته دا جواب ور كولو چه نبى كريم ﷺ د «وَمَا ذَاكَ» په ذريعه چه كوم سوال كړې وو هغه په مونځ كښې د خپلې غلطې پيژندلو د پاره وو، د منلو قابل نه دي. ځكه چه د ذواليدين په قصه كښې چه د حضور پاك د هغوى طرف ته رجوع ده هغه د خبرو اترو او سوال او جواب د پاره ده نه يوازې دا چه د خپل نفس د تسلى د پاره. فافهم. (۴)

قوله: كَذَا وَكَذَا - سره كناية ده د هغه ركعتونو د شمير طرف ته كوم چه په ذهن كښې كم يا

(۱) شرح الكرماني: ۶۳/۴ اللمع الصبيح بشرح الصحيح للبرماوي: ۴۶/۳ فتح الباری: ۶۵۲/۱ عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۵۲/۱ عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۳) شرح الكرماني: ۶۵/۴.

(۴) شرح الكرماني: ۶۵/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۰۹/۴.

زیات شو<sup>(۱)</sup>

په مونخ کښې د خبرو اترو کولو حکم: د جمهور فقهاؤ په نیز په قصد سره داسې خبرې اترې کولو سره مونخ باطلیږي کوم چه د مونخ د اصلاح په خاطر نه وی.<sup>(۲)</sup>

د احنافو مذهب: د احنافو په نیز په مونخ کښې په دريو شرطونو سره<sup>(۳)</sup> خبرې اترې کولو سره مونخ فاسدیږي. که هغه خبرې لږې وی او که ډیرې او که په هیڅ سره وی (یعنی مونخ کول ورته یاد نه وی، خپل ځان د مونخ نه بهر گنرلو سره خبرې اترې او کړې، یا په خطا سره) مثلاً ارادة خوئی په خله "یاایهاالناس" وئیل غوښتل، لیکن دخلې نه ترې اووتل "یا زید"، که د جهالت د وجې نه وی (یعنی هغه ته پته نه وی چه په خبرو اترو سره مونخ فاسدیږي) یا که د چا په مجبورولو باندې وی او که یا عمدأ وی (یعنی په خپله اراده او خوشی سره ئی کلام او کړو) که د مونخ د اصلاح د پاره وی (مثلاً امام د قعدې په موقع باندې اودریدو او مقتدی هغه ته اووئیل چه کینه یا د قیام په موقع باندې کیناستو نو مقتدی ورته اووئیل اودریره. حالانکه وئیل پکار وو سبحانه الله یا الله اکبر) او که د اصلاح د پاره نه وی اود راجح قول مطابق په مونخ کښې په اوده کیندو سره وی او که په بیدارئی کښې وی، په هر حال کښې به مونخ فاسدیږي<sup>(۴)</sup>

د شوافعو مذهب: د شوافعو په نیز په مونخ کښې دننه کلام کونکې که چرته یو داسې سرې وی چه په هیڅ سره کلام او کړې یا هغه په دغه کلام کولو باندې د مرتب کیدونکې حکم نه جاهل وی او قلیل کلام او کړې نو مونخ ئی نه فاسدیږي<sup>(۵)</sup>

د مالکیو مذهب: د مالکیو په دې مسئله کښې دوه روایتونه دی. یو د احنافو مطابق او دویم دادې چه که چرې کلام د مونخ د اصلاح د پاره وی نو په دې سره مونخ نه فاسدیږي اوددې

(۱) شرح الکرمانی: ۶۴/۴ اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۴۶/۳.

(۲) یتکلم عامداً لا لمصلحة الصلاة فتبطل صلاته بالإجماع، نقل الإجماع، فیہ ابن المنذر وغیره لحدیث معاویة بن الحکم السابق وحدیث ابن مسعود وحدیث جابر وحدیث زید بن أرقم وغیرہ - من الأحادیث التي سنذکرها إن شاء الله تعالی. (المجوع شرح المذهب، کتاب الصلاة، مسائل تتعلق بالكلام فی الصلاة: ۸۵/۴).

(۳) (۱) د زبې نه وتلې کلام کم نه کم په دوو حروفو باندې مشتمل وی، د یو حرف په وئیلو سره مونخ نه فاسدیږي. (۲) چه هغه کلام داسې وی چه د خلقو په خپل مینځ کښې خبرو اترو کښې چلیږي. یعنی د مونخ سره متعلق اذکار وغیره نه وی، د مونخ سره متعلق اذکار وغیره سره مونخ نه فاسدیږي. (۳) چه هغه کلام دومره آواز سره وی چه پخپله اوریدل ئی ممکن شی. که چرې ددې نه کم آواز کښې دغه کلام وی نو مونخ به نه فاسدیږي. (عمدة الفقه: ۲۴۵/۲).

(۴) البحر الرائق، کتاب الصلاة، باب ما یفسد الصلاة وما یکره فیها: ۲/۵-۳. ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الصلاة، باب: ما یفسد الصلاة وما یکره فیها: ۲/۳۷۱-۳۷۰. حشبة الطحطاوی علی مراقی الفلاح، کتاب الصلاة، باب: ما یفسد الصلاة، ص: ۳۲۲-۳۲۱.

(۵) (۱) المجوع شرح المذهب، کتاب الصلاة، مسائل تتعلق بالكلام فی الصلاة: ۸۵/۴. المذهب، کتاب الصلاة، فصل فی انضحک والكلام فی الصلاة: ۲/۲۸۹. نهاية المحتاج إلى شرح المنهاج، کتاب الصلاة، باب: صفة الصلاة: ۲/۳۸.

برعكس كلام سره مونغ فاسديري<sup>(١)</sup>

د حنابلو مذهب د حنابلو په دې مسئله كښې څلور روايتونه دي. درې روايتونه خود الله ثلاثو د مذهب مطابق دي او څلورم روايت دا دې چه كه يو سرې دا او گنډې چه زه په مونغ كښې نه يم او كلام او كړې نو په دې سره به مونغ نه فاسديري، اگر چه هغه په مونغ كښې وي او د دې برعكس كه يو كس په دې خبره باندي پوهيدو سره كلام او كړې چه هغه مونغ كوي نو د هغه مونغ به فاسديري<sup>(٢)</sup>

د احنافو رومي دليل: د احنافو دليل د ټولو نه ورومېي د قرآن پاك نه دي. د الله تعالى ارشاد دي: **(وَقَوْمًا لَّهُ قِيَّتِينَ ٥)** په دې آيت كښې د قانتين معنى سكوت او خاموشي ده. د ډيرو زياتو صحابه كرامو **رضي الله عنهم** نه د دې آيت د شان نزول باره كښې دا خبره نقل ده چه دا آيت په مونغ كښې د كلام بندولو د پاره نازل شوې دي<sup>(٣)</sup>

بيا په دې آيت كښې څه تفصيل نشته دي چه د كوم قسم كلام نه منع كړې شوې ده. لهذا د هر نوعيت د كلام منع كيدل به مراد وي<sup>(٤)</sup>

دويم دليل: دويم دليل د حضرت زيد بن ارقم **رضي الله عنه** حديث دي په كوم كښې چه هغوي فرمائي

<sup>(١)</sup> بداية المجتهد، كتاب الصلاة، الباب السابع في معرفة التروك المترطه في الصلاة: ١١٩/١. مواهب الجليل في شرح مختصر خليل، كتاب الصلاة، باب في السهو: ٢٣٢/٢. الشرح الكبير للدردير، كتاب الصلاة، فصل في سن سجود السهو: ٢٠٥/١. طرح التثريب في شرح التثريب، كتاب الصلاة، باب السهو في الصلاة، حديث سجود السهو، فائدة: تعدد الكلام في الصلاة لإصلاحها، الثالثة والعشرون: ١٦/٣.

<sup>(٢)</sup> طرح التثريب في شرح التثريب، كتاب الصلاة، باب السهو في الصلاة، حديث سجود السهو، فائدة: تعدد الكلام في الصلاة لإصلاحها، الثالثة والعشرون: ١٦/٣. الشرح الكبير للمقدسي، كتاب الصلاة باب سجود السهو، فصل فإن تكلم في هذه الحال..... لغير مصلحة الصلاة..... بطلت صلاته: ٣٠/٤-٢٩. الإنصاف في معرفة الراجح من الخلاف للمرداوي تحت الشرح الكبير للمقدسي، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، فصل فإن تكلم في هذه الحال..... لغير مصلحة الصلاة..... بطلت صلاته: ٣٠/٤-٢٩.

<sup>(٣)</sup> عبدالرزاق عن الثوري عن منصور عن مجاهد قال: كانوا يتكلمون في الصلاة، ويعلم الرجل أخاه، حتى نزلت هذه الآية: **(وَقَوْمًا لَّهُ قِيَّتِينَ ٥)**، فقطعوا الكلام، قال: القنوت هو السكوت، والقنوت: الطاعة. (المصنف لعبدالرازق، كتاب الصلاة، باب: الكلام في الصلاة، رقم الحديث: ٣٥٧٤، ٣٣١/٢). أخبرنا فضيل عن عطية في قوله: **(وَقَوْمًا لَّهُ قِيَّتِينَ ٥)** قال: كانوا يتكلمون في الصلاة بحوائجهم، حتى نزلت: **(وَقَوْمًا لَّهُ قِيَّتِينَ ٥)**، فتركوا الكلام في الصلاة. (تفسير الطبري، القول في تأويل قوله تعالى: **(وَقَوْمًا لَّهُ قِيَّتِينَ ٥)**: ٣٧٨/٤). وكذا في تفسير الراغب الأصفهاني: ٤٩٢/١، وتفسير السمعاني: ٢٤٤/١، وتفسير ابن كثير: ٦٥٥/٤، وتفسير الماتريدي: ٢١٢/٢، وتفسير السعدي: ١٠٦/١.

<sup>(٤)</sup> إن أحاديث ابن مسعود وزيد بن أرقم ومعاوية بن الحكم وغيرها صحيحة صريحة في تحريم الكلام من غير تخصيص أو استثناء، فهي نص في الباب بوصف مطرد معلوم منضبط معقول المعنى، بل وقع بعضها بياناً لنص القرآن القطعي الثبوت..... إلخ. (معارف السنن، كتاب الصلاة، باب ما جاء في الرجل يسلم في الركعتين من الظهر والعصر: ٥٤١/٣).



چه مونږ به په مونځ كښې خبرې اترې كولې. يو سړي به په خپل خوا كښې ولاړ مونځ كونكي سره (په وخت د ضرورت) خبرې اترې كولې. بيا چه كله آيت ﴿وَقَوْمًا لِلَّهِ فِتْيَانٌ﴾ نازل شو نومونږ ته په مانځه كښې د خاموشه پاتې كيدو حكم راكړې شو او د خبرو اترو نه منع كړې شو. دا حديث په كتب صحاح كښې موجود دي<sup>(١)</sup>

دريم دليل: دريم دليل د حضرت عبداللہ بن مسعود رضي الله عنه حديث دي په كوم كښې چه هغوی فرمائي چه مونږ به رسول الله صلى الله عليه وسلم ته په مانځه كښې سلام كولو، حضور پاك به جواب راكولو. مونږ چه كله د حبشي د ملك نه واپس راغلو نو حضور پاك ته ما سلام او كړو حضور پاك جواب رانه كړو. ماته خپل نيزدي اولرې فكرونه راپيدا شو (يعني د قسم قسم پخواني او نوي نوي خيالات راتلل)، او ددې خبرې افسوس كيدو چه حضور پاك په څه وجه جواب رانه كړو؟ كوم وخت چه حضور پاك د مونځ نه فارغ شو نو ارشاد ئي او فرمائيلو الله تعالى چه كله غواړي نوې فرمان جاري كولې شي. اوس الله تعالى دا حكم نازل كړې دي چه په مونځ كښې خبرې اترې مه كوئې<sup>(٢)</sup>

څلورم دليل: څلورم دليل د حضرت معاويه بن حكم سلمى رضي الله عنه حديث دي هغوی فرمائي چه ما حضور پاك سره مونځ كولو چه ناڅاپي په جمع كښې يو سړي ته اتروشي راغلو نو ما هغه ته "يرحكك الله" او وئيل. په دې باندې ماته خلق برند شو نو ما او وئيل "واثكل أميأه" (دا د عربو يوه محاوره ده كومه چه د مذكوره نوعيت په ماحول كښې استعماليرې) په تاسو څه چل شوې دي چه تاسو ماته داسې گورئې. خلقو په خپلو فتونانو باندې لاسونه وهل شروع كړه، نوزه پوهه شوم چه دا خلق ماته د چپ كيدو د پاره وائي د عثمان (يو بل راوي) په روايت كښې دي چه كله ما او كتل چه خلق ماته د چپ كيدو د پاره وينا كوي نوزه چپ شوم. كله چه حضور پاك د مونځ نه فارغ شو نو زما مور پلار دي په حضور پاك باندې قربان شي چه هغوی نه زه اورېلم او نه ئي راته بدې ردې او وئيلې البته دومره ئي راته او فرمائيل چه دا مونځ دي او په دې كښې خبرې كول جائز نه دي بغيرد تسبيح او تكبير او تلاوت د قرآن نه. يائي څه داسې خبره ارشاد او فرمائيله<sup>(٣)</sup>

<sup>(١)</sup> عن زيد بن أرقم قال: كنا نتكلم خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم في الصلاة، يكلم الرجل مناصبه إلى جنبه، حتى نزلت: ﴿وَقَوْمًا لِلَّهِ فِتْيَانٌ﴾ [البقرة: ٢٣٨] فأمرنا بالسكوت، ونهينا عن الكلام. (سنن الترمذي، كتاب الصلاة، ماجاء في نسخ الكلام في الصلاة، رقم الحديث: ٤٠٥).

<sup>(٢)</sup> عن ابن مسعود قال كنا نسلم على النبي صلى الله عليه وسلم، فيرد علينا السلام حتى قدمنا من أرض العجبة، فسلمت عليه، فلم يرد علي، فأخذني ما قرب وما بعد، فجلست حتى إذا قضى الصلاة قال: "إن الله عز وجل يحدث من أمره ما يشاء، وإنه قد أحدث من أمره أن لا يتكلم في الصلاة". (سنن النسائي، كتاب الصلاة، باب الكلام في الصلاة، رقم الحديث: ١٢٢٤).

<sup>(٣)</sup> عن معاوية بن الحكم السلمي قال: صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم، فغطس رجل من القوم، فقلت: يرحمك الله، فرماني القوم بأبصارهم، فقلت: واثكل أميأه، ما شأنكم تنظرون إلي؟ فجعلوا يضربون بأيديهم على أفخاذهم، فعرفت أنهم يصمتوني - فقال عثمان: فلما رأيتهم يسكنوني لكني سكت - قال: .....

د ائمه ثلاثو دلیل: د ائمه ثلاثه رحمهم الله دلیل حدیث د ذوالیدين دې چه د دريو صحابه کرامو رضی الله عنہم نه په سپارلسو طرقو سره نقل دې. پوره تفصیل شرح معانی الآثار کنبی ذکر دې. (۱)

امام طحاوی رحمته الله په ډیر تفصیل سره په دې مسئله کلام کړې دې. هم دهغې خلاصه حضرت بنوری رحمته الله په معارف السنن کنبی ذکر کړې ده. (۲)

کومه چه د کتو قابل ده. دهغې حاصل دا دې چه د شوافعو په نیز حدیث ذوالیدين داسې دلیل جوړیږي چه د ذوالیدين کلام د حکم د ناواقفیت په وجه باندي وو او د نبی کریم صلی الله علیه و آله کلام نسیانا وو. د امام مالک رحمته الله په نیز دا ټولې خبرې اترې د مونخ د اصلاح په خاطر وې په کوم سره چه مونخ نه فاسدیږي. د امام احمد رحمته الله په نیز د نبی کریم صلی الله علیه و آله د طرف نه خبرې اترې کیدل خود دې وجې نه وو چه د حضور پاک په گمان کنبی مونخ پوره شوې وو. او د ذوالیدين کلام هم په دې گمان باندي وو ځکه چه دلته دا احتمال موجود وو چه په مونخ کنبی به د رکعتونو دکمی حکم نازل شوې وی. نو هم ددې احتمال د وجې نه د مونخ پوره کیدو گمان جوړ شو. بیا هغوی د تصدیق په خاطر د حضور پاک نه تپوس او کړو.

د ائمه ثلاثو د دلیل رومبې جواب: خود احنافو په نیز دا واقعه په کومه کنبی چه په مونخ کنبی کلام شوې وو د "نسخ الکلام فی الصلاة" نه مخکنبی ده. زمونږ په دې خبره باندي [چه دا واقعه د "نسخ الکلام فی الصلاة" نه دمخکنبی وخت ده] رومبې دلیل هغه ټول روایات دی په کوم کنبی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د امام نه د غلطی کیدو په وخت د مونخ د تصحیح د پاره مقتدیانو ته د سرو کیدو په صورت کنبی د سبحان الله یا الله اکبر و نیلو او د بنسحو کیدو په صورت کنبی د تصفیق یعنی لاس په لاس باندي د وهلو تلقین کوی. څنگه چه که په مونخ کنبی خبرې اترې کول مشروط پاتي وې نو د تسبیح او تصفیق د تلقین به هیڅ ضرورت نه پاتي کیدو. ددې په ځانی به مونخ گذار هم په مونخ کنبی خبرې کولو سره ونیل چه امام صاحب تاسو غلطی کړې ده. داسې نه ده بلکه داسې او کړنې، لیکن تاسو ته پته ده چه داسې نه کیري. (۳)

دویم جواب: دویم دلیل د حضرت معاویه بن خدیج رضی الله عنه حدیث دې چه یو ځل د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه په هیره یو رکعت پاتي شو. حضور پاک ته خبر ورکړې شونو حضور پاک د اذان او اقامت حکم ورکړو. ددې نه پس حضور پاک یو رکعت مونخ ورکړو. حالانکه د ټولو په دې باندي اتفاق دې چه په مونخ کنبی اذان او اقامت ونیل مونخ باطلوی. خود حدیث مطابق رسول

..... فلما صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، بأبي وأمي ما ضربني، ولا كهرني، ولا سبني، ثم قال: إن هذه الصلاة لا يحل فيها شيء من كلام الناس هذا، إنما هو التسبيح والتكبير وقراءة القرآن، أو كما قال رسول الله صلى الله عليه وسلم. (سنن أبي داود، كتاب الصلاة، باب تسميت العاطس في الصلاة، رقم الحديث: ۹۳۰).

(۱) شرح معانی الآثار، كتاب الصلاة، الكلام في الصلاة لما يحدث فيها من السهو: ۵۸۱-۵۶۹/۱.

(۲) معارف السنن، كتاب الصلاة، باب ما جاء في الرجل يسلم في الركعتين من الظهر والعصر: ۵۰۴/۳.

(۳) شرح معانی الآثار، كتاب الصلاة، الكلام في الصلاة لما يحدث فيها من السهو: ۵۷۴/۱-۵۷۳.

الله ﷻ هم داسې او کړه. نو د دې نه معلومه شوه چه حضور پاک داسې په هغه وخت یا هغه دور کښې کړی وو کوم وخت چه په مونځ کښې خبرې کول مباح وو، په دې سره به مونځ نه فاسدیدو. لیکن روستو په مانځه کښې خبرې اترې کول بند شو. هم په دې وجه خو په دې مسئله باندې اچه په مانځه کښې اذان او اقامت وئیل مونځ باطلوی د ټولو اتفاق دې. لهذا حدیث ذوالیدین به هم په هغه زمانه باندې محمول کولې شی. (۱)

دریم جواب: دریم دلیل دادې چه د حدیث ذوالیدین والا واقعه کښې شریک د یو جلیل القدر صحابی نه د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه په زمانه کښې د یو مونځ د امامت په دوران کښې غلطی اوشوه. په دوو رکعتو باندې ئی په هیره سره سلام او گرځولو حالانکه مونځ څلور رکعتیز وو. د مونځ نه پس خلقو وریاده کړه نو خلیفه المسلمین د دغه خبرو اترو کیدو نه پس د نوي سر نه څلور رکعتو او کړه، نه دا چه هم په هغه دوو رکعتو باندې ئی بنا او کړه. د دې نه هم معلومه شوه چه دغه وخت په مانځه کښې خبرې اترې کول بند شوی وو گڼی د خلقو د خبردارولو نه پس به ئی صرف دوه رکعتو کول لیکن هغوی داسې اونه کړه ځکه چه هغوی ته معلومه وه چه په مونځ کښې خبرې کول منسوخ شوی دی. (۲)

څلورم جواب: څلورم جواب دادې چه دې وخت کښې د پوره امت اجماعی مسئله ده چه که د امام نه غلطی اوشی نو هغه له خبردارې ورکولو دپاره به سبحان الله وئیلی شی، خبرې اترې کولو سره به ورته نه شی خودلې. خوبل طرف ته په حدیث ذی الیدین کښې صحابه گرامو رضی الله عنهم د سبحان الله وئیلو په ځائی خبرې اترې او کړې او نبی پاک صلی الله علیه و آله د هغوی په دې فعل باندې هیڅ نکیر اونه کړو. د دې نه هم معلومیږی چه دا واقعه په مونځ کښې د خبرو اترو د منسوخ کیدو نه د مخکښې وخت ده. (۳)

عقلی دلیل: بیا امام طحاوی رحمته الله علیه خپل عقلی دلیل (کوم چه په نظر طحاوی سره تعبیر کولې شی، پیش کوی. چه ډیر مختلف قسم عبادتونه داسې دی چه دهغې د شروع کولو نه پس نور ډیر کارونه ممنوع کیږی. مثلاً د مونځ شروع کولو نه پس خبرې او نور منافی الصلاة کارونه ممنوع کیږی. د روزې ساتلو نه پس خوراک څښاک او جماع ممنوع کیږی. د اعتکاف په حالت کښې کوروالې، د جمات نه وتل وغیره. اود حج او عمرې د احرام په حالت کښې خوشبوئی، گڼلې شوې کپړې او جماع وغیره ممنوع کیږی. د دې تفصیل نه پس پوهه شی چه په اتفاق د فریقینو په دې ټولو عبادتونو کښې د منع کړې شوو کارونو کولو سره که په قصد سره وی او که په هیره سره وی دا عبادتونه فاسدیږی. نو دغه شان مونځ هم یو ډیر اهم عبادت دې. په دې کښې د قصد او هیرې د قید نه بغیر خبرو په موجودیدو سره مونځ فاسد

(۱) شرح معانی الآثار، کتاب الصلاة، الکلام فی الصلاة لما یحدث فیها من السهو: ۵۷۴/۱.

(۲) شرح معانی الآثار، کتاب الصلاة، الکلام فی الصلاة لما یحدث فیها من السهو: ۵۷۵/۱.

(۳) معارف السنن، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی الرجل یسلم فی الرکعتین من الظهر والعصر: ۵۴۳/۳.

نوټ: د ائمه ثلاثه د طرف نه په دې دلائلو باندې اعتراضات اود هغې ښه په تفصیل اومدلل جوابونه د شوق لرونکو دپاره د معارف السنن طرف ته مراجعت به ډیر د فرحت سبب وی.

کیدل پکار دی. لکه څنگه چه (د انمه ثلاثه په نیز) قصدا کلام سره مونځ فاسد یري. دغه شان په هیره سره خبرې سره هم مونځ فاسد یدل پکار دی. (۱)

قوله: فَنَتَى رَجُلِيهِ: دې اوریدو سره رسول الله ﷺ خپلې دواړه خپې راغونډې کړې.

قوله: فَنَتَى: دا د باب ضرب یضرب نه د ماضی صیغه ده دکوم معنی چه د تاوولو ده. یعنی حضور پاک خپلې خپې مبارکې راتاؤ کړې او داسې کیناستو لکه چه په قعده کښې د تشبیه ونیلو دپاره کښې (۲)

قوله: رَجُلِيهِ: دا د کشمیهنی او اصیلی د روایت مطابق دې گنی په نورو نسخو کښې رجله د واحد صیغه ده (۳)

د سجده سهو گولو متعلق د حضرت کشمیری رحمته الله علیه رائي:

قوله: فَنَتَى رَجُلِيهِ وَتَجَدَّ تَجَدَّتَيْنِ: باندي حضرت کشمیری رحمته الله علیه فرمائیلی دی چه که چرې او نیلې شی چه هغه وخت کلام په مونځ کښې جائز وو نو د سجده سهو څه ضرورت وو؟ زه وایم چه هغه په مونځ کښې اجزاء صلوة دغیر د دخل اندازنی په سبب وه. دا باب اگرچه علماؤ نه دې ذکر کړې مگر غالباً هغه وخت به هم دغه مسئله وه چه کلام وغیره سره د مونځ د نه فاسد کیدو سره سره د هغې تلافی به په سجده سهو سره کیدله (۴)

قوله: وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، وَتَجَدَّ تَجَدَّتَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ: او د قبلي طرف ته نی مخ کړو او د (سهو) دوه سجدي نی او کړې او د دې نه پس نی سلام او گرځولو.

حضرت شیخ الحدیث کاندهلوی رحمته الله علیه فرمائی چه دلته حضور پاک د سجده سهو د پاره قبلي طرف ته مخ کړو. د دې نه زما استدلال دې په دې باندي چه چرته هم وی، که د مونځ آخره وی او که شروع، قبلي ته به مخ کولې شی (۵)

د پنځو رکعتو والا مونځ، د ماسپښین مونځ څنگه جوړ شو؟ په دې حدیث شریف کښې د صحابه کرامو رضی الله عنهم د طرف نه خبر ورکړې شو چه حضور پاک د ماسپښین د څلورو رکعتو په ځانی دومره دومره رکعتونه مونځ او کړو. د وړاندي باب حدیث کښې په تصریح سره د دغه شوو رکعتونو ذکر موجود دې چه هغه پنځه رکعتو وو. بیا حضور پاک په آخره کښې سجده سهو او کړه. اوس دا د ماسپښین څلور رکعتو څنگه جوړ شو؟

په دې باره کښې علامه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چه په داسې صورت کښې د احنافو په نیز په څلورم رکعت کیناستل ضروری دی گنی فرض مونځ به نفل جوړ شی لیکن د شوافعو په مسلک باندي په دې (قعده) کیناستل ضروری نه دی. بهر صورت د فرض په توگه به صحیح

(۱) شرح معانی الآثار، کتاب الصلاة، الکلام فی الصلاة لما یحدث فیها من السهو: ۵۸۰/۱-۵۷۹.

(۲) شرح الکرمانی: ۶۴/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۴۶/۳، عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۵۲/۱، عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۴) انوار الباری: ۲۰۳/۱۲.

(۵) تقری بخاری شریف: ۱۴۵/۲، فتح الباری: ۶۵۲/۱.

شی. ز منبر جواب دادی چه مسئله اجتهادی ده چاره هم شرعی دلیل نشسته دی. البته منبر سره د تفقه په لحاظ سره قوی دلیل موجود دی. هغه دا چه په دین محمدی کسې مونخ په درې قسمه دی. دوو رکعتو والا، دريو رکعتو والا او څلورو رکعتو والا. او بنکاره خبره ده چه د مونخ د دوو یا څلورو رکعتو کیدو تحقق چه د دین د متواتراتو نه دی صرف په قعدې سره کیږي. لهذا هغه هم فرض او ضروری شوه ځکه چه د واجب مقدمه به هم واجب وی. په دې وجه احنافو او وئیل چه د یو رکعت نه دکم رفض او ترك جائز دي په خلاف ددې چه د پوره رکعت کیدو نه پس به د مونخ اهتمام فرض شی. ځکه چه دا د دین د متواتراتو نه دی یعنی شریعت دا معتدبه امر گرځولې دي کوم چه نه شی ترك کولې. ځکه چه په دې سره د دین د یو متواتر، مسلم امر ماتیدل یا د ابې وقعته کول لازمیږي. (۱)

فَلَمَّا أَقْبَلَ عَلَيْنَا يَوْجِبُهُ، قَالَ: «إِنَّهُ لَوْ حَدَّثَ فِي الصَّلَاةِ شَيْءٌ لَنَبَأْتُكُمْ بِهِ:» بیانی ز منبر طرف ته مخ کړو او وئې فرمائیل که چرې په مونخ کسې څه نوې حکم نازل شوې وې نو ما به (د مونخ نه مخکسې) تاسو ته خودلې وې.

قوله: «لَنَبَأْتُكُمْ بِهِ» کسې لام د تاکید د پاره دي او د بعضو په نیز دا د «لو» په جواب کسې راتلونکې لام دي. «لَنَبَأْتُ» د هغه افعالو نه دي کوم چه د دريو مفعولونو تقاضا کوي. چنانچه دلته رومي مفعول د مخاطب «کم» ضمیر دي. دویم مفعول جار مجرور یعنی «به» دي په دې کلمه کسې «ه» ضمیر د هغه حدوث طرف ته راگرځي کوم چه د رسول الله ﷺ قول ((لحدث في الصلاة شيء)) نه مفهوم کیږي.

او دریم مفعول محذوف دي. یعنی که چرې په مونخ کسې د بدلیدو څه حکم راغلې وې نو د مونخ نه وړاندې به ما تاسو خلقو ته د هغه بدلون باره کسې ونیلې وی چه هغه دادې (۲)  
قوله: «وَلَكِنْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ» لیکن زه هم ستاسو په شان یو انسان یم.

قوله: «إِنَّمَا» کلمه حصر ده دکوم مقتضاء لغوی چه داده چه د حضور پاک بشریت د عامو انسانانو سره په مماثل کیدو کسې محصور دي. لیکن واضحه دي وی لکه څنگه چه د جنس لاندې انواع وی دغه شان د جنس بشریت لاندې هم ډیر زیات درجات دی. په کوم کسې چه د ټولو نه په اوچته درجه باندې رسول الله ﷺ دي. چنانچه په نفس بشریت کسې خو مماثلت شته لیکن هغه د هغې درجې دي چه بل یو انسان هغه درجې ته نه شی رسیدې. ځکه چه د عامو انسانانو په شان د حضور پاک هم دوه سترگي، دوه لاسونه او داسې نور اندامونه دی لیکن د اوصافو په اعتبار سره رسول الله ﷺ د کمال په هغه اوچتوالی باندې دي چه عام انسان د هغې تصور هم نه شی کولې. یعنی دلته حصر مطلق نه دي بلکه حصر مخصوص دي کوم چه د سیاق او سباق نه معلومیږي (۳)

(۱) انوار الباری: ۲۰۳/۱۲.

(۲) شرح الکرمانی: ۶۴/۴ اللمع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۴۶/۳ عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۳) ملخص من عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

نبي كريم ﷺ نور وو كه بشروا: د قران، حديث، صحابه كرام ﷺ، سلف صالحين، مفسرين كرام، محدثين عظام اود ائمه اربعه رحمهم الله تعليمات، تحقيقات اوتصريحات مخي ته كيخودو سره د رسول الله ﷺ نور او بشر كيدو باره كښي د اهل سنت والجماعت عقیده داده چه حضور پاك ﷺ په يو وخت بشر هم دي او نور هم ليكن د جنس او ذات په اعتبار سره بشر دي. اود صفاتو او د هدايت په اعتبار سره نور دي. اود واړه اعتباراتو د نور او بشر كيدو اعتبار، سره حضور پاك په داسي مقام او درجه باندي فائز دي چه نه د حضور پاك نه مخكښي اونه روستو څوك د حضور پاك په شان تير شوي دي.

قاضي عياض مالكي رحمته الله عليه فرمائي چه حضرت محمد ﷺ او باقي ټول انبياء كرام او رسولان عليهم الصلوة والسلام بشر وو. اود حضور پاك بدن مبارك او ظاهري خواص بشري وو. حضور پاك باندي هغه ټول هر څه جائز دي چه په نورو انسانانو باندي طاري كيږي. مثلاً تكليفونه، مصيبتونه، آلام، بيمارني اود مرگ پيالي څكل وغيره ددي ټولو امور و د وجي نه د رسول الله ﷺ په شان كښي څه كمې يا نقص نه راځي.)

البته هم په دي خبره كښي دوه راڼي نشته چه حضور پاك افضل البشر وو، خاص الخواص وو. چنانچه علامه شامي رحمته الله عليه فرمائي:

د بشر دري قسمونه دي: خواص: لكه حضرات انبياء كرام عليهم السلام اود مينخمي درجي لكه حضرات صحابه كرام ﷺ وغيرهم او عوام: لكه نور خلق.)

نبي كريم ﷺ په دي توگه د سر نه تر څپو پورې نور گرځول چه په هغې سره د بشريت، آدميت اود انسانيت كيدو نه انكار او كړې شي دا د صريح او قطعي نصوصو خلاف دي. او دي سره سره چه يو سرې دا او وائي چه ماته پته نشته چه حضور پاك انسان وو كه پيري، نو فقهاؤ ذكر كړي دي چه داسي سرې كافر دي مسلمان نه دي. بلكه دا عقیده لرل ضروري دي چه حضور پاك په اعتبار د جنس بشر او په اعتبار د ايمان او هدايت نور وو.)

(١) وقد قدمنا أنه عليه الصلوة والسلام وسائر الأنبياء والرسل من البشر وأنه جسمه وظاهره خالص للبشر. يجوز عليه من الآفات والتغييرات والألام والأسقام وتجرع كأس الجمام ما يجوز على البشر، وهذا كله ليس بنقيضة فيه، لأن الشيء إنما يسمى ناقصاً بالإضافة إلى ما هو أتم منه وأكمل من نوعه..... فقد مرض صلى الله عليه وسلم، واشتكى، وأصابه الحر والقر، وأدركه الجوع والعطش، ولحقه الغضب والضحجر، وناله الإعياء والنعب، ومسه الضعف والكبر، وسقط فجعش شقه، وشجه الكفار، وكسروا ربايعته، وسقى السم. وسحر، وتداوى، واحتجم، وتنشر، وتعود، ثم قضى نحبه، فتوفى صلى الله عليه وسلم ولحق بالرفيق الأعلى، وتخلص من دار الامتحان والبلوى، وهذه سمات البشر التي لا محيص عنها. (الشفابتعريف حقوق المصطفى، القسم الثالث: فيما يجب النبي للنبي صلى الله عليه وسلم، الباب الثاني: فيما يخصهم في الأمور النبوية وما يطرأ عليهم من العوارض البشرية: ١٧٨/٢، دار الكتب العلمية.)

(٢) وحاصله أنه قسم البشر إلى ثلاثة أقسام: خواص، كالأنبياء، وأوساط، كالصالحين من الصحابة وغيرهم، وعوام، كباقي الناس. (ردالمحتار، كتاب الصلوة، مطلب: في تفضيل البشر على الملائكة: ٢٤٢/٢، دار عالم الكتب.)

(٣) ومن قال: لا أدري أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إنسياً أو جنياً، يكفر، كذا في الفضول العمادية. (الفتاوى الهندية، كتاب السير، الباب التاسع في أحكام المرتدين، موجبات الكفر: ٢٦٣/٢، رشيدية.)

قوله: أُنْسَى كَمَا تَنْتَوْنَ، فَإِذَا نَسِيتَ: لکه څنگه چه تاسو نه هیره کيږي داسې مانه هم هیره کيږي، په دې وجه چه کله مانه هيرشي.

قوله: أُنْسَى - همزه مفتوحه او سين مخففه سره دې. او چاچه همزه مضموم او سين مشدد سره ذکر کړې دې هغه صحيح نه دې<sup>(۱)</sup>

د نسيان معنی: د نسيان لغوی مطلب، او اصطلاحی مطلب: د یو څیز نه د زړه غافل کیدو نوم دې. د نسيان یوه معنی د پریخودو هم راځي لکه چه د الله تعالی قول: (لَسْوَ اللَّهِ فَنَسِيَهُمْ) کسبې د نسيان معنی د ترک کولو ده.<sup>(۲)</sup>

د انبياء کرامو عليهم السلام نه هیره ممکن ده که نه؟ د حدیث مبارک د دې جملې نه معلومیږي چه د انبياء کرامو عليهم السلام نه په افعالو کسبې د نسيان صدور ممکن دې. لیکن په دې خبره باندې د علماؤ کرامو اتفاق دې چه د الله تعالی د طرف نه د هغوی په نسيان باندې خبردار کولې شي. هغوی په نسيان باندې برقرار پاتې کيږي. بیا بعضې علماء د دې خبرې قائل دی چه انبياء کرام د هغوی په نسيان باندې فوری خبردار کولې شي او د بعضو په نیز فوری توگه باندې خبردار کول ضروري نه دی. بلکه تر ژونده پورې هغوی خبرول صحیح دی.<sup>(۳)</sup>

علامه نووی رحمته الله علیه فرمائي چه د رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم اقوال بلاغیه (یعنی امور تبلیغیه) کسبې د سهو واقع کیدل په اجماع د امت ممکن نه دی. یعنی چه حضور پاک صلی الله علیه و آله وسلم د الله تعالی په احکاماتو د تبلیغ کسبې سهوه یا نسيان کسبې اخته شي او امت ته غلطه خبره اورسوی داممکن نه دی. البته په دنیاوی معاملاتو کسبې او عباداتو کسبې اکثر وختونو کسبې به په حضور پاک باندې نسيان راتلو. لیکن هم په هغه وخت د الله تعالی د طرف نه په حقیقت حال باندې خبردار کولې شو او په هغه نسيان کسبې اخته کیدل به هم په حقیقت کسبې د امت د تربیت د پاره فعلاً نمونه جوړیدله.<sup>(۴)</sup>

علامه ابن دقیق العید رحمته الله علیه فرمائي چه دا حدیث د انبياء کرامو عليهم السلام نه د سهو په صادریدو باندې دلالت کوی. عامه العلماء په دې باره کسبې هم دغه مذهب دې لکه چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم پخپله ارشاد فرمائي چه مانه هم ستاسو د هیرې په شان هیره کيږي. او په غلو کسبې مبتلا پوي دې په دې باره کسبې نظریه داده چه په نبی باندې سهو نه شي راتلې بلکه نبی خو قصداً د نسيان والا صورت اختیاروی دې د پاره چه امت ته فعلی تبلیغ او کړې شي. نو دا نظریه په قطعې توگه باندې باطله ده. ځکه چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم خو پخپله خبر ورکوی چه مانه هیره او شوه. او دویمه خبره داده چه داسې سړی صورت جوړول په چا چه هیره راځي

(۱) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۴۶/۳.

(۲) عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۴) المنهاج شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب الصلاة، مواضع الصلاة، صلاة المسافر، رقم الحدیث: ۵۷۲، ۶۲/۵-۶۱.

نودا خو عمدا د یوفعل د اختیارونکی په شان شو او افعال عمدیه مونخ باطلوی (۱)  
 ددې اقوالو خلاصه دا ده چه دلته دوه څیزونه دی یو افعال نبی او دویم اقوال نبی. د افعال  
 نبی ﷺ باره کنبی تحقیقی خبره داده چه په دغه افعالو کنبی قصداً نسیان یا سهوه  
 موجودیدل خو ممتنع ده یعنی د نبی نه ممکن نه ده. او سهواً هیرې موجودیدل ممکن دی  
 لیکن داسې به د الله تعالی د طرف نه کیدل دې د پاره چه امت ته تعلیم اوشی او په هغې  
 باندي به فوری یا څه وخت پس حضور پاک خبرولې شو. او که چرې اقوال نبوی ﷺ به د دینی  
 امورو سره متعلق وو نو هم په هغې کنبی سهو یا نسیان نه کیدلو. او که چرې اقوال نبی ﷺ  
 د دنیاوی امورو سره متعلق وو نو په هغې کنبی د نسیان د مضر نه کیدو د وجې د هغې  
 واقع کیدل محال نه دی (۲)

فوله: "فَدَّكْرُونِي": نوتاسو ماته رایادوئی. مراد دادې چه په مانخه کنبی د تسبیح یا تکبیر په  
 ذریعه ماته رایادوئی (۳)

نبی کریم ﷺ ته څو ځل سهو پېښه شوې وه؟ علامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه د علامه تقی  
 الدین ابن دقیق العید رحمته الله علیه په حواله لیکلی دی چه هغوی فرمائیلی دی چه رسول الله ﷺ نه  
 څلور ځل په مونخ کنبی سهو شوې ده. په هغې کنبی د دوو ذکر خو صحیح البخاری کنبی  
 دې. یوه دا واقعه چه په مذکوره حدیث کنبی بیان شوه چه حضور پاک د څلورو رکعتو په  
 ځانی پنځه رکعتو مونخ او کړو. دلته صراحت نشته دې لیکن وړاندې صراحت هم موجود دې.  
 دویمه واقعه دا شوې وه چه حضور پاک د څلورو رکعتو په مونخ کنبی په دوو رکعتو باندي  
 سلام او گرځولو ددې ذکر هم موجود دې.

دریمه واقعه داده چه د حضور پاک نه نسیاناً قعده اولی پاتې شوه. دا صورت امام  
 ابوداؤد رحمته الله علیه ذکر کړې دې.

څلورمه واقعه داده چه حضور پاک نه په مانخه کنبی یو آیت هیر شو نو د مونخ نه پس  
 حضور پاک د حضرت عبد الله بن مسعود رضی الله عنه نه تپوس او کړو ولې ته په مونخ کنبی نه وې؟  
 هغوی او وئیل او جی زه موجود ووم. حضور پاک او فرمائیل نو تا بیا ولې ماته هغه آیت  
 رایاد نه کړو؟ دا څلورواقعات هغه دی کوم چه ابن دقیق العید رحمته الله علیه ذکر کړی دی. خود  
 حضور پاک د سهو یو پنځم مقام هم په کتابونو کنبی ملاویږې او هغه دادې چه حضور پاک  
 د ماښام په مونخ کنبی د دريو رکعتو په ځانی دوه رکعتو باندي سلام گرځولې وو. (۴)

(۱) احکام الأحکام شرح عمدة الأحکام. کتاب الصلاة. باب: سجود السهو. جواز السهو علی الأنبياء. الحدیث: ۱۰۵، ۱/۲۷۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۶۴/۴ عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۴) فیض الباری: ۴۵/۲، العرب الشذی، کتاب الصلاة، باب: ماجاء فی سجدتی السهو قبل السلام، رقم الحدیث:

۳۹۱، ۱/۳۷۰. رومی واقعه صحیح البخاری کنبی موجود ده. اوگورئی: حدیثنا عثمان، قال: حدیثنا جریر، عن  
 منصور، عن ابراهیم، عن علقمة، قال: قال قال عبدالله صلی الله علیه وسلم، قال ابراهیم: لا أدري، زاد أو  
 نقص، فلما سلم قيل له: يا رسول الله! أحدث في الصلاة شيئاً؟ قال: وما ذاك؟ قالوا: صليت كذا وكذا.....



د امام بخاری رحمته اللہ علیہ پہ نیز پہ مونیخ کنبسی د کلام الناس د جواز حکم: علامہ انور شاہ کشمیری رحمته اللہ علیہ فرمائی چہ امام بخاری رحمته اللہ علیہ د سہو حدیث خوخل ذکر کرې دې او مختلف تراجم قائم لوسره ئی دھقی نہ د متعددو مسئلو استنباط کرې دې. لیکن ترجمہ او عنوان جواز کلام الناس ئی چرته نہ دہ قائم کرې. معلومہ شوہ چہ پہ دې مسئلہ کنبسی ہغوی د احنافو موافقت کرې دې. واللہ تعالیٰ اعلم (۱)

قوله: "وَإِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاتِهِ": او چہ کلہ پہ تاسو کنبسی چاتہ پہ مانخہ کنبسی شک شی د شک معنی او مفہوم: شک پہ لغت کنبسی خلاف یقین تہ وائی او اصطلاح کنبسی د شک نہ

..... فثنى رجله، واستقبل القبلة، وسجد سجدتين، ثم سلم، فلما أقبل علينا بوجهه، قال: إنه لو حدث في الصلاة شيئاً لبأتكم به، ولكن إنما أنا بشر مثلكم، أنسى كما تنسون، فإذا نسيت فذكروني، وإذا شك أحدكم في صلاته، فليتحرر الصواب، لينم عليه، ثم ليسلم، ثم يسجد سجدتين. (صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب: التوجه نحو القبلة حيث كان، رقم الحديث: ٤٠١). دريمه واقعه هم صحيح البخارى كنبسى موجود ده. وئى گورنى: حدثنا مسدد، قال: حدثنا يحيى، عن شعبة، عن الحكم، عن إبراهيم، عن علقمة عن عبدالله، قال: صلى النبي صلى الله عليه وسلم الظهر خمسا، فقالوا: أزيد في الصلاة؟ قال: وما ذاك؟ قالوا: صليت خمسا، فثنى رجله وسجد سجدتين. (صحيح البخارى كتاب الصلاة، باب: ما جاء في القبلة ومن لا يرى الإعادة على من سها فصلى إلى غير القبلة، رقم الحديث: ٤٠٤). دريمه واقعه سنن ابى داؤد كنبسى موجود ده او گورنى: حدثنا القعنبي، عن مالك، عن ابن شهاب، عن عبدالرحمن الأعرج عن عبدالله ابن بعيثة أنه قال: صلى لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ركعتين، ثم قام فلم يجلس، فقام الناس معه، فلما قضى صلاته وانتظرنا التسليم كبر، فسجد سجدتين وهو جالس قبل التسليم، ثم سلم صلى الله عليه وسلم. (سنن أبى داؤد كتاب الصلاة، باب: من قام من ثنتين ولم يتشهد، رقم الحديث: ١٠٣٦). خلورمه واقعه شرح السنة للبعوى كنبسى موجود ده. ليكن پہ دې واقعه كنبسى د حضور پاك عليه السلام سوال د حضرت ابى عليه السلام نه وو، وئى گورنى: عن عبدالله بن عمر أن النبي صلى الله عليه وسلم صلى صلاة، فقرأ فيها، فلبس عليه، فلما انصرف، قال: لأبى: أصليت معنا؟ قال: نعم، قال: فما منعك؟ ومعقول أن المراد منه: ما منعك أن تفتح على. (شرح السنة للبعوى، كتاب الصلاة، باب: تعود بين السجدتين، رقم الحديث: ٦٦٥). او د سنن ابى داؤد پہ روايت كنبسى د دوى نه علاوه د يو متعين صحابى نه بغيردا قصه موجود ده، وئى گورنى: عن المسورين يزيد المالكي أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يحيى وربما قال شهدت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأ في الصلاة، فترك شيئاً لم يقرأه، فقال له رجل يا رسول الله تركت آية كذا وكذا، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "هلا أذكرتنيها". (سنن أبى داؤد، كتاب الصلاة، باب: الفتح على الإمام في الصلاة، رقم الحديث: ٩٠٧). او پنخمه واقعه المستدرک على الصحيحين للحاكم كنبسى موجود ده وئى گورنى: أخبرنا أبو عمرو عثمان بن أحمد بن سماك، ببغداد، ثنا على بن إبراهيم الواسطى، ثنا وهب عن جرير بن حازم، قال: سمعت يحيى بن أيوب، يحدث، عن يزيد بن أبى حبيب، عن سويد بن قيس، عن معاوية بن خديج، قال: صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم المغرب فها، فسلم في ركعتين، ثم انصرف، فقال له رجل: يا رسول الله إنك سهوت فسلمت في ركعتين، فأمر بلالا فأقام الصلاة، ثم أتم تلك الركعة، فسألت الناس عن الرجل الذي، قال: يا رسول الله إنك سهوت، فقبل لي: تعرفه، قلت: لا، إلا أن أراه، فمر بي رجل، فقلت: هو هذا، فقالوا: هذا طلحة بن عبيد الله. اختصره الليث بن سعد، عن أبى حبيب. (المستدرک على الصحيحين للحاكم، كتاب الصلاة، تحت باب التأمين، رقم الحديث: ٩٦٠).

مراد هغه کیفیت دې چه یو سرې د پوهیدو او نه پوهیدو د کیفیت په مینځ کښي وی، یو طرف ته د هغه خیال نه وی. او چه کله یو طرف ته د هغه خیال لار شی لیکن په بل طرف د ذهن نه جتکه ورنه شی نو دې ته ظن یعنی گمان وائی او کله چه هغه ته جتکه ورکړې شی نو هغې ته غالب گمان وائی کوم چه د یقین قائم مقام وی<sup>(١)</sup>

نوله: "فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ": نو د صحیح خبرې معلومولو کوشش دې او کړی.

تحری وائی د یو شی د طلب کولو بڼه کوشش کول. علامه کرمانی رحمته الله علیه فرمائی چه د "فلیتحر" معنی ده "فلیجتهد"<sup>(٢)</sup>.

د صحیح بخاری کتاب الایمان کښي راتلونکی روایت کښي دا الفاظ دی: "فیتحری الصواب"<sup>(٣)</sup>

د سنن النسائی او ابن ماجه روایت کښي "فلیتحر أقرب ذلك من الصواب" الفاظ دی:<sup>(٤)</sup>

د صحیح مسلم یو روایت کښي "فلیتحر الذی هو الصواب" الفاظ ملاویری<sup>(٥)</sup>.

<sup>(١)</sup> وقيل: الشك، ما استوى طرفاه، وهو الوقوف بين الشينين لا يميل القلب إلى أحدهما، فإذا ترجح أحدهما ولم يطرح الآخر فهو ظن، فإذا طرحه فهو غالب الظن، وهو بمنزلة اليقين. (التعريفات للجرجاني، باب: الشين، رقم التعريف: ١٠٢٢، ص: ١١٠). وكذا المصباح المنير في غريب الشرح الكبير، كتاب الشين: ٤٣٦/١.

<sup>(٢)</sup> شرح الكرمانی: ٤٤/٤، اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوی: ١٤٦/٣.

<sup>(٣)</sup> حدثنا إسحاق بن إبراهيم، شمع عبدالعزيز بن عبدالصمد، حدثنا منصور، عن إبراهيم، عن علقمة، عن ابن مسعود رضي الله عنه أن نبي الله صلى الله عليه وسلم صلى بهم صلاة الظهر، فزاد أو نقص منها، قال منصور: لأدري إبراهيم وهم أم علقمة، قال: قيل: يارسول الله! أقصرت الصلاة أم نسبت؟ قال: وما ذك؟ قالوا: صليت كذا وكذا، قال: فسجد بهم سجدتين، ثم قال: هاتان السجدتان لمن لا يدري، زاد في صلاته أم نقص فتحرى الصواب، فبتم ما بقي، ثم يسجد سجدتين. (صحيح البخاري في الإيمان، باب: إذا حنث ناسياً في الإيمان، رقم الحديث: ٦٦٧١).

<sup>(٤)</sup> أخبرنا إسماعيل بن مسعود، قال: حدثنا خالد بن الحارث، عن شعبة، قال: كتب إلى منصور، وقرأته عليه وسمعتة يحدث رجلاً، عن إبراهيم، عن علقمة، عن عبدالله، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم صلى صلاة الظهر، ثم أقبل عليهم بوجهه فقالوا: أحدث في الصلاة حدث؟ قال: وما ذاك؟ فأخبروه بصنيعه، فثنى رجله، واستقبل القبلة، فسجد سجدتين، ثم سلم، ثم أقبل عليهم بوجهه، فقال: إنما أنا بشر أنسى كما تنسون، فإذا نسيت فذكروني وقال: لو كان حدث في الصلاة حدث أنباتكم به وقال: إذا أوهم أحدكم في صلاته فليتحر أقرب ذلك من الصواب ثم لبتم عليه، ثم يسجد سجدتين. (سنن النسائي، كتاب الصلاة، باب: ما يفعل من صلى خسأً، رقم الحديث: ١٢٤٣).

<sup>(٥)</sup> حدثنا محمد بن بشار، حدثنا محمد بن جعفر، حدثنا شعبة، عن منصور، قال شعبة: كتب إلى وقرأته عليه، قال: أخبرني إبراهيم، عن علقمة، عن عبدالله، قال: صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم صلاة لاندري أزد أو نقص، فسأل، فحدثناه، فثنى رجله، واستقبل القبلة، وسجد سجدتين، ثم سلم، ثم أقبل علينا بوجهه، فقال: لو حدث في الصلاة شيء لأنباتكموه، وإنما أنا بشر أنسى كما تنسون، فإذا نسيت فذكروني، وأبكم ما شك في الصلاة فليتحر أقرب ذلك من الصواب، فبتم عليه ويسلم ويسجد سجدتين. (سنن ابن ماجه، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء فيمن شك في صلاته فتحرى الصواب، رقم الحديث: ١٢١١).

هم د سنن النسائی یو روایت کنې - فليتحرا الذي يرى أنه الصواب<sup>(۱)</sup>  
 او په یو بل روایت کنې - فليتنظر آخرى ذلك إلى الصواب - الفاظ هم ملا ویږی<sup>(۲)</sup>  
 مقصود د ټولو نه هم یو دې چه په دوو امورو کنې د یو طلب کولو ته تحری و نیلی شی په  
 داسې حال کنې چه د دې نه به یو صحیح وی<sup>(۳)</sup>  
 علامه کرمانی رحمته الله فرمائی چه د الصواب - معنی: - الأخذ بالیقین - او - البناء على الأكل - ده. خود  
 امام ابو حنیفه رحمته الله په نیز د دې معنی: - البناء على غالب الظن - ده<sup>(۴)</sup>  
 دلته یو سوال پیدا کیږی چه د راوی خو بیان دې چه "لا ادري، زاد او نقص" یعنی د هغه شک و  
 نوچه چرته شک و و هلته صواب ته (یعنی صحیح خبرې ته) څنگه رسیدې شی؟ نو د دې جواب  
 دادې چه داسې تحری کوم چه یقین سره لاحق شی اختیار وئی<sup>(۵)</sup>  
 د شک په وخت گړی د تحری په بنیاد باندي د مونځ پوره کولو حکم: په دې ځانی کنې نبی  
 اکرم صلی الله علیه و آله حکم ورکړو چه کله تاسو ته د رکعتونو په شمیر کنې شک پیدا شی نو بیا د  
 رکعتونو شمیر په ښه شان سره د سوچ او فکر په ذریعه متعین کړئ. داسې قسم روایاتو  
 کنې تتبع نه پس دا خبره مخې ته راځی چه د شک په مسئله کنې د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه دري  
 قسم روایات نقل دی:

(<sup>۱</sup>) وحدثنا عثمان، وأبو بكر، ابنا أبي شيبة، وإسحاق بن إبراهيم، جميعاً عن جرير، قال عثمان: حدثنا جرير، عن منصور، عن إبراهيم، عن علقمة، قال: قال عبدالله: صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، قال إبراهيم: زاد أو نقص، فلما سلم قيل له: يا رسول الله! أحدث في الصلاة شيئاً؟ قال: وما ذاك؟ قالوا: صليت كذا وكذا، قال: فثني رجلي، واستقبل القبلة، فسجد سجدتين، ثم سلم، ثم أقبل علينا بوجه فقال: إنه لو حدث في الصلاة شيء أنباتكم به، ولكن إنما أنا بشر أنسى كما تنسون، فإذا نسيت فذكروني، وإذا شك أحدكم في صلاته فليتحرا الصواب، فليتم عليه، ثم ليسجد سجدتين. (صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب: السهو في الصلاة والسجود له، رقم احاديث: ۵۷۲).

(<sup>۲</sup>) أخبرنا محمد بن رافع، قال: حدثنا يحيى بن آدم، قال: حدثنا مفضل وهو ابن مهلهل، عن منصور، عن إبراهيم، عن علقمة، عن عبدالله، برفعه إلى النبي صلى الله عليه وسلم قال: إذا شك أحدكم في صلاته فليتحرا الذي يرى أنه الصواب فيتمه، ثم يعني: يسجد سجدتين، ولم أفهم بعض حروفه كما أردت. (سنن النسائي في السهو، باب: ما يفعل من صلى خمسا، رقم الحديث: ۱۲۴۰).

(<sup>۳</sup>) أخبرنا سويد بن نصر، قال: أنبأنا عبدالله، عن مسعر، عن منصور، عن إبراهيم، عن علقمة، عن عبدالله، قال: صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فزاد أو نقص، فلما سلم قلنا: يا رسول الله! هل حدث في الصلاة شيئاً؟ قال: لو حدث في الصلاة شيء أنباتكموه، ولكني إنما أنا بشر أنسى كما تنسون، فأيكم ما شك في صلاته فليتنظر آخرى ذلك إلى الصواب، فليتم عليه، ثم ليسجد وليسجد سجدتين. (سنن النسائي في السهو، باب: ما يفعل من صلى خمسا، رقم الحديث: ۱۲۴۲).

(<sup>۴</sup>) شرح الكرماني: ۶/۴، اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوي: ۱۴۶/۳.

(<sup>۵</sup>) شرح الكرماني: ۶۵/۴.

درومبی قسم د روایت مطابق په رکعتونو کښې د شک پېښیدو په وخت دې د سره مونځ ادا کړی. دا روایت د حضرت عبدالله بن عمر رضی الله عنهما نه نقل دې کوم چه په مصنف ابن ابی شیبه کښې موجود دې. دارنگ د اسحاق بن یحیی په طریق سره د حضرت عباده بن صامت رضی الله عنهما روایت په مجمع الزوائد کښې موجود دې. (۱)

دویم روایت دادې کوم چه د صحیح بخاری په دې باب کښې موجود دې. (۲)  
په دې کښې دا خبره ذکر شوې ده چه د تحری کولو نه پس دې په غالب گمان باندي عمل کولو سره مونځ پوره کړی او د هغې نه پس دې سجد سهو او کړی.

او دریم قسم روایت دادې چه بناء علی الاقل دې او کړی مثلاً چه په دريو او څلورو کښې نسی شک وی نو چونکه د دريو ادا کول یقینی دی نوهم درې گنرلو سره دې مونځ پوره کړی او په آخره کښې دې سجده سهو او کړی. ددې روایت راوی حضرت عبدالرحمن بن عوف رضی الله عنهما دې اودا په سنن ترمذی کښې موجود دې. (۳)

ددې نه علاوه د حضرت ابو سعید الخدری رضی الله عنهما روایت هم ددې مطابق دې کوم چه په سنن ابوداؤد کښې موجود دې. (۴)

احنافو د شک راتلو په صورت کښې دا دريواره روایتونه جمع کړی دی. هغه داسې چه په مونځ کښې په شک پیدا کیدو باندي په درجاتی اعتبار سره درې صورتونه دی:

(۱) عن ابن عمر رضی الله عنهما قال: "أما أنا فإذا لم أدر كم صليت، فإني أعيد". وأيضاً عن ابن عمر: في الذي لا يدري ثلاثاً صلى أو أربعاً، قال: يعيد حتى يحفظ. (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، من قال: إذا شك فلم يدركم صلى أعاد، رقم الحديث: ۴۴۵۴، ۴۴۵۵، ۴۳۵/۳).

دارنگ دا قول هم په المصنف کښې د حضرت ایوب، سعید بن جبیر، شعبی، شریح، طاؤس، عطاء او میمون وغیره کبار تابعینو رحمهم الله نه هم نقل دې. (اوگورثی: رقم الحديث: ۴۴۵۶ - ۴۴۶۴). عن عبادة بن الصامت: "أن رسول الله صلى الله عليه وسلم سئل عن رجل سها في صلوته، فلم يدركم صلى؟ قال: ليعد صلاته، وليسجد سجدتين قاعداً. رواه الطبراني في الكبير هكذا، وإسحاق بن يحيى لم يسمع من عبادة، والله أعلم. (تغية الرائد في تحقيق "مجمع الزوائد ومنبع الفوائد، كتاب الصلاة، باب السهو في الصلاة، رقم الحديث: ۲۹۲۳، ۳۵۵/۲-۳۵۴).

(۲) صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب: التوجه نحو القبلة حيث كان، رقم الحديث: ۴۰۱.

(۳) عن عبدالرحمن ابن عوف قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: "إذا سها أحدكم في صلاته فلم يدر واحدة صلى أو ثنتين، فليبين على واحدة، فإن لم يدر ثنتين صلى أو ثلاثاً فليبين على ثنتين، فإن لم يدر ثلاثاً صلى أو أربعاً فليبين، على ثلاث، وليسجد سجدتين قبل أن يسلم". (سنن الترمذی، أبواب الصلاة، باب ماجاء في الرجل يصلى فيشك في الزيادة والنقصان، رقم الحديث: ۳۹۸).

(۴) حدثنا محمد بن العلاء، حدثنا أبو خالد، عن ابن عجلان، عن زيد بن أسلم، عن عطاء بن يسار عن أبي سعيد الخدری، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: إذا شك أحدكم في صلاته فليلق الشك، وليبين على اليقين، فإذا استيقن التمام سجد سجدتين، فإن كانت صلاته تامة كانت الركعة نافلة والسجدتان، وإن كانت ناقصة كانت الركعة تماماً لصلاته وكانت السجدتان مرغمتي الشيطان. (سنن أبي داؤد، كتاب الصلاة باب: إذا شك في الثنتين والثلاث، من قال: يلقى الشك، رقم الحديث: ۱۰۲۴).

① که چرې داسې شک نئ په اول خل شوې دې نو مونخ دې د سره او کړې. په اول خل شک کیدو نه څه مراد دې؟ په دې کښې د فقهاؤ کرامو یو څو اقوال دی دکوم نه چه صحیح دادې چه په مونخ کښې هیریدل دهغه عادت نه وی، معنی دا ده چه کله په عمر کښې سهو شوې نه وی دا په اول روایت باندې عمل دې.

② که د شک واقع کیدل نئ معمول وی یعنی اکثر ورته شک پیدا کیږي نو په ښه شان سره دې سوچ او فکر او کړې او د غالب گمان مطابق دې عمل او کړې. اود بعضي مشائخو په نیز دې سجده سهو نه کوی خود اکثر و مشائخو په نیز دې سجده سهو او کړې. دا په دویم روایت باندې عمل شو.

③ او که چرې غالب گمان نئ نه قائمیږي نو یقینی امر یعنی د کم شمیر مطابق دې مونخ پوره کړې او په آخره کښې دې سجده سهو او کړې. دا د دریم روایت مطابق عمل شو (۱)  
خود شوافعو په نیز صرف او صرف بناء علی الأقل دې او کړې یعنی که د رکعت پاتې کیدو باره کښې شک پیدا شی چه هغه یو رکعت کړې دې که دوه، یا درې رکعت یا څلور رکعت نو په ده باندې لازم دی چه د کم والا صورت دې اختیار کړې لکه چه دوه رکعت ادا کړې شوی دی که درې؟ نو په دې کښې د دوؤ ادا کیدل خو یقینی دی د دریم شک دې. لهذا دې دې دوه رکعت شمیر کولو سره خپل مونخ پوره کړې. هم دغه شان د باقی صورتونو حکم دې. الغرض ددی حضراتو په نیز صرف په یو قسم روایت باندې عمل کولې کیږي (۲)

حضرت مولانا انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چه د احادیثو نه تائید هم زمونږ د مذهب راوځی. ځکه چه بیا د سره د مونخ کولو روایت هم دې. مثلاً مصنف ابن ابی شیبه کښې تحری او اخذ بالاقل روایت هم دې. لکه څنگه چه په مسلم شریف او دا بخاری شریف کښې دې. لهذا مونږ په ټولو احادیثو باندې عمل او کړو او شافعیه صرف د اقل والا باندې عمل او کړو اود باقی ټولو نئ تاویل او کړو. او تحری صواب نئ هم په اقل باندې محمول کړو حالانکه په لغت کښې بالکل ددې خلاف دی اود دې اصل معنی لغو کول صحیح نه ده. خاص کر په شریعت کښې د غالب گمان اعتبار په ډیرو ابوابو کښې موجود هم دې. لهذا دې نوع لره دلته د غیر معتبر گړخولو هیڅ وجه نشته. بل د هغوی په مذهب باندې به یو نوع د هغې د حکم نه بلکلیه خالی کول لازم راشی کوم چه صحیح نه دې (۳)  
قوله: "فَلْتَمَّ عَلَيْهِ": او هم ددې مطابق دې خپل مونخ پوره کړئ.

د تَمَّ صله چه کله "علی" وی نو دا د اتمام په معنی وی. د تحری کولو نه پس د غالب گمان

(۱) البحر الرائق کتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۱۹۲/۲. الجوهرۃ النيرة، کتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۸۳/۱. ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۵۶۱/۲-۵۶۰.

(۲) المجموع شرح المهذب کتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۳۹/۴. العزيز شرح الوجيز المعروف ب الشرح الكبير، کتاب الصلاة، الباب السادس فی السجدة، القول فی سجود السهو: ۸۲/۲. العاوی الكبير للماوردي، کتاب الصلاة، باب سجود السهو وسجود الشکر: ۲۱۲/۲.

(۳) انوار الباری: ۲۹۱/۱۲.

مطابق خپل مونیخ پوره کول د امام صاحب ابو حنیفه رضی الله عنه په نیز دی او په یقین باندې بنیاد کيخودل د امام شافعی رضی الله عنه په نیز دی. (۱)

قوله: **ثُمَّ لَيْسَلَمْ، ثُمَّ سَجَدُ سَجْدَتَيْنِ**: بیا سلام گرځولو سره دې دوه سجدي د (سهو) او کړي.

په یو روایت کښې د **ثُمَّ يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ** په ځای **ثُمَّ لَيْسَلَمْ سَجْدَتَيْنِ** الفاظ دی. مراد دادې چه د سهو د وجې نه دې دوه سجدي او کړي. (۲)

په مذکوره روایت باندې یو اشکال او ذهني جواب: په مذکوره حدیث کښې یو تعارض معلومیږي هغه داسې چه د حدیث باب په شروع کښې د سلام نه مخکښې په سجده کولو باندې دلالت وو او په آخر حدیث کښې روستو د سلام نه سجده سهو کولو باندې دلالت دې. ددې جواب دا ورکړې شوي دي چه په دې سره د دواړو امورو د جواز طرف ته اشاره کړې شوي ده. (۳)

سجده سهو به د سلام نه مخکښې کولې شي که د سلام نه پس؟ د حدیث پاک په دې آخری جمله کښې د حضور پاک صلی الله علیه و آله وسلم فرمان دې چه د سلام گرځولو نه پس د سهو دوه سجدي او کړي. ددې نه ثابتیږي چه د سجده سهو وخت د سلام نه پس دې نه چه مخکښې.

د احنافو مذهب: په دې باره کښې د مختلف قسم احادیثو د راتلو د وجې ائمه کرامو رحمهم الله په مینځ کښې هم اختلاف پیدا شوي دي. چنانچه د امام ابو حنیفه رضی الله عنه په نیز افضل دادې چه د سلام نه پس دې دوه سجدي او کړي شي. (۴)

د سجده سهو د پاره د سلام گرځولو طریقه: د سلام باره کښې د احنافو په نیز درې اقواله دي. یو مونیخ گزار دې د خپلې مخې ته کتلوسره، ښی او گس طرف ته د کتلو نه بغیر سلام او وائی او ددې نه پس دې دوه سجدي او کړي. دا قول مفتی به نه دي. دویم ښی او گس دواړو طرفو ته مخ گرځولو سره دې سلام او گرځوی. صاحب هدایه رضی الله عنه دا قول صحیح گرځولي دي. (۵)

(۱) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۲) الامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۴۷/۳، عمدة القاری: ۲۰۶/۴. علامه انور شاه کشمیری رحمته الله فرمائی چه حافظ ابن حجر رحمته الله **ثُمَّ لَيْسَلَمْ، ثُمَّ يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ** باندې خاموشی اختیار کړه او بغیر د جواب ورکولو نه وړاندې لارو. په داسې موقع چه په خپل مذهب کښې کمزوری وي، خاموشی وي، او چرته چه څه قوت وي نو په نورو باندې نکیر کښې د اعتدال د حد نه وړاندې کیدل، د اهل ادب او تحقیق د پاره مناسب نه دي. (انور الباری: ۱۹۹/۲).

(۳) الکوثر الجاری: ۹۲/۲.

(۴) الدر المختار مع رد المحتار، کتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۵۴۰/۲، الهدایه، کتاب الصلاة، باب سجود السهو:

۳۳۱/۱. بدائع الصنائع، کتاب الصلاة، باب: سجود السهو، فصل فی بیان محل سجود السهو: ۷۱۱/۱.

(۵) ویاتی بتسلیمین، هو الصحیح. (الهدایه، کتاب الصلاة، باب: سجود السهو: ۳۳۱/۱، المكتبة البشری).

أودى ته به بدائع الصنائع كنبى د عامة العلماء قول وثيلى شوي دي (١)  
 دريم صرف بنى طرف ته سلام گر خولو سره دوه سجدي او كرى شى، په دي قول فتوى ده. (٢)  
 د شوافعو مذهب: د شوافعو په نيز سجده سهو كول واجب نه ده بلكه سنت ده. اود اصح قول  
 مطابق د سلام گر خولو نه مخكښي به سجده سهو كولي شى. دي نه علاوه دوه روايتونه نور  
 دي. يو روايت د امام مالك رضي الله عنه مطابق دي او د دي قائل امام مزني رضي الله عنه دي. اودويم روايت  
 دهغوى قديم قول دي چه د غلطي كيدو په وجه مونخ گزار ته اختيار دي چه د سلام نه  
 مخكښي سجده سهو او كرى يا د سلام نه پس (٣)

د اصح قول مطابق به د سجده سهو طريقه دا شى چه په قعه آخره كښي تشهد، درود، دعا  
 ټول هرڅه وټيلو نه پس به دوه سجدي كولي شى اود دي نه پس به سلام گر خولي شى. د  
 شوافعو دليل د نبى كريم صلى الله عليه وسلم هغه حديث دي كوم چه امام بخارى رضي الله عنه (٤)

د حضرت عبد الله بن بختيار رضي الله عنه نه روايت كړې دي په كوم كښي چه دي: ((كبر قبل التسليم،  
 فسجد سجدتين وهو جالس، ثم سلم)).

علامه رشيد احمد صاحب گنگوهي رحمته الله عليه فرمائي چه شوافع په خپل مذهب باندي داسي  
 استدلال كړې دي چه د سجده سهو قبل السلام والا د حديث راوي متأخر الاسلام دي لهذا  
 دا حديث به هم د روستو وخت وي. نو د دي جواب ظاهر دي چه دا خوب بنياد د نسخ دعوى

(١) وعامتهم على أنه يسلم بتسليمتين عن يمينه وعن يساره قول النبي صلى الله عليه وسلم: لكل سهو سجدتان  
 بعد السلام، ذكر السلام بالألف واللام، فينصرف إلى الجنس أو إلى المعهود، وهما تسليمتان. (بدائع الصنائع،  
 كتاب الصلاة، باب سجود السهو، فصل في قدر سلام السهو وصفته: ٧١٦/١).

(٢) هذا قول الجمهور، منهم شيخ الإسلام وفخر الإسلام. وقال في الكافي: إنه الصواب، وعليه الجمهور، وإليه أشار  
 في الأصل ١هـ. (حاشية ابن عابدين، كتاب الصلاة، باب سجود السهو: ٥٤٠/٢). أحدهما: أنه يسلم عن يمينه فقط.  
 وصححه في المجتبى. ثانيهما لو سلم التسليمتين سقط عنه سجود السهو لأنه بمنزلة الكلام، حكاه الشارح عن  
 خواهر زاده، فقد اختلف التصحيح فيها، والذي ينبغى الاعتماد عليه تصحيح المجتبى أنه يسلم عن يمينه فقط لأن  
 السلام عن اليمين معهود وبه يحصل التحليل فلا حاجة إلى غيره. (البحر الرائق، كتاب الصلاة، باب سجود السهو:  
 ١٦٥/٢). وقال ابن عابدين في حاشيته المسمى بمنحة الخالق تحت قوله: أحدهما أنه يسلم عن يمينه فقط.  
 والحاصل أن ما صححه في المجتبى هو بعينه ما تقدم أنه قول الجمهور وأنه الأصوب والصواب. (منحة الخالق على  
 البحر الرائق، كتاب الصلاة، باب سجود السهو: ١٦٥/٢).

(٣) العزيز شرح الوجيز المعروف ب الشرح الكبير للقرظيني، كتاب الصلاة، باب سجود السهو: ٩٧-٩٩/٢. منهاج  
 الطالبين وعمدة المفتين للنووي، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ص: ١١٢. المعنى المحتاج إلى معرفة معاني  
 المنهاج، كتاب الصلاة، باب سجود السهو: ٣٢٢/١.

(٤) حدثنا عبدالله بن يوسف، أخبرنا مالك بن أنس، عن ابن شهاب، عن عبد الرحمن الأعرج، عن عبدالله ابن بختيار  
 رضى الله عنه، أنه قال: صلى لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ركعتين من بعض الصلوات، ثم قام، فلم يجلس،  
 فقام الناس معه، فلما قضى صلاته ونظرنا تسليمه، كبر قبل التسليم، فسجد سجدتين وهو جالس، ثم سلم. (صحیح  
 البخاری، کتاب اصلا، أبواب ما جاء فی السهو، رقم الحديث: ١٢٢٤).

ده. خُکّه چه د راوی متاخر الإسلام کیدو سره د حدیث مؤخر کیدل نه لازمیری. (۱)  
 د مالکیو مذهب: د مالکیه په نیز که په مونخ کبسي خه کمي پاتي شوي وي نو د سلام نه  
 مخکبسي به دوه سجدي کولې شي او په مانخه کبسي که د يوفعل زياتوالي واقع شوې وي  
 نو د سلام نه پس به دوه سجدي کولې شي. (۲)

او که چري د يو مونخ په خه رکن کبسي کمي هم اوشي او زياتي هم، نو د مالکیو په نیز سجده  
 سهو به د سلام نه مخکبسي وي خُکّه چه د هغوی په نیز نقص ته په زياتي باندي غلبه  
 ورکولې شي. (۳)

علامه رشيد احمد گنگوهي رحمته الله عليه فرمائي چه مالکیو په احاديث نبويه کبسي غور کولو نه پس  
 دا ثابت کړي وو چه دکمي کيدو په صورتونو کبسي نبي کریم صلی الله علیه و آله وسلم سجده سهو مخکبسي د  
 سلام نه کړې وه او په مونخ کبسي د زياتي کيدو په صورتونو کبسي نبي کریم صلی الله علیه و آله وسلم سجده  
 سهو د سلام نه پس کړې وه. نو د دې جواب دادې چه د سنن الترمذي باب ماجاء في الإمام ينهض  
 في الركعتين ناسيًا کبسي يو روايت تير شوې دي. (۴)

چه حضرت مغیره بن شعبه رضي الله عنه مونخ ورکړو او په دوو رکعتو باندي د تشهد وئيلو نه بغير  
 او دريدو. مقتديانو سبحان الله او وئيل نو په جواب کبسي هغوی هم سبحان الله او وئيل بيا د  
 مونخ په آخره کبسي هغوی د سلام گرځولو نه پس دوه سجدي او کړې او بياني او فرمائيل چه  
 رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم هم داسې کړي وو. اوس غوراو کړئې چه په دې حدیث کبسي په مونخ کبسي د  
 کمي باوجود سجده سهو د سلام گرځولو نه پس او کړې شوه لهذا دا حدیث به د امام  
 مالک رحمته الله عليه خلاف حجت وي. (۵)

په دې باندي شيخ الحديث حضرت مولانا محمد زکريا کاندهلوی رحمته الله عليه فرمائي چه د مالکیو  
 مذهب د هغه احاديثو هم خلاف دي په کوم کبسي چه دا حکم دي چه په مونخ کبسي د شک  
 پريوتلو په صورت کبسي دي مونخ گزار په يقين باندي بناء او کړي او دوه سجدي به  
 مخکبسي د سلام نه او کړي. اوس غوراو کړئې چه په دې احاديثو کبسي مونخ گزار ته دا شک  
 دي چه هغه مونخ پوره کړې دي او که په دغه مونخ کبسي ئي خه زياتي کړې دي او په داسې

(۱) الكوكب الدرّي، كتاب الصلاة، باب ماجاء في سجدة السهو قبل السلام: ۱۷۳/۱. سعيد.

(۲) بداية المجتهد، كتاب الصلاة، الجملة الرابعة في قضاء الصلاة وجبر ما يقع فيها من خلل. الباب الثالث من  
 الجملة الرابعة في سجود السهو، الفصل الثاني في معرفة مواضع سجود السهو: ۱۹۲/۱. متن الأخضري في العبادات  
 على مذهب الإمام مالك، كتاب الصلاة، باب في السهو، ص: ۱۶. بُلغة السالك لأقرب السالك المعروف ب حاشية  
 الصاوي على شرح الصغير، كتاب الصلاة، فصل في بيان سجود السهو، السجود القبلي والبعدي للسهو: ۳۵۶/۱.

(۳) الكوكب الدرّي، كتاب الصلاة، باب ماجاء في سجدة السهو قبل السلام: ۱۷۲/۱. سعيد.

(۴) عن شعبي قال: صلى بنا المغيرة بن شعبه، فنهض في الركعتين، فسيح به القوم، وسيح بهم، فلما قضى صلاته  
 سلم، ثم سجد سجدة السهو، وهو جالس، ثم حدثهم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم فعل به مثل الذي فعل.  
 (سنن الترمذي، كتاب الصلاة، باب ماجاء في الإمام ينهض في الركعتين ناسيًا، رقم الحديث: ۳۶۴).

(۵) الكوكب الدرّي، كتاب الصلاة، باب ماجاء في سجدة السهو قبل السلام: ۱۷۳/۱. سعيد.



صورت کنبی د مالکیو په نیز سجده سهوه روستو د سلام نه کول پکار دی. حالانکه په دې احادیثو کنبی مخکښې د سلام نه د سجده سهو کولو حکم دې کیدې شی چه هم په دې وجه علامه باجی رحمته وغیره په داسې روایاتو کنبی د تاویل نه کار اخستی دې (۱)

د حنابلو مذهب: د حنابلو په نیز که چرته د مونخ گذار نه داسې غلطی اوشی کومه چه د حضور پاک نه نقل ده په هغې کنبی به سجده سهو داسې کیولی شی لکه څنگه چه په حدیث کنبی راغلی دی. او که چرې د مونخ گذار نه داسې غلطی او سهو اوشی کومه غلطی اوسهوه چه د حضور پاک نه ثابته نه وی، په هغې کنبی د امام احمد رحمته مذهب د شوافع مطابق دې یعنی سجده سهو به د سلام نه مخکښې وی (۲)

بادی النظر کنبی د حنابلو مذهب ډیر زیات زره راښکونکې دې لیکن حقیقت دادې چه کما حقه په دغه مذهب باندي عمل کول ممکن نه دی ځکه چه حضرت مغیره بن شعبه رضی الله عنه په حدیث کنبی دی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله په مونخ کنبی قعده اولی هیره کړه نو حضور پاک د سلام نه پس سجده سهوه او کړه (۳)

او د حضرت عبداللہ بن بحینه روایت کنبی دی چه د حضور پاک نه د ماسپښین په مونخ کنبی قعده اولی هیره شوه او اودریدو نو حضور پاک مخکښې د سلام نه سجده او کړه (۴)

دا دواړه احادیث صحیح دي. لیکن اوس د امام احمد بن حنبل رحمته مذهب مخې ته کیخودو سره چه سوچ او کړې شی چه په دوو صحیح احادیثو کنبی هم په یو قسم غلطی باندي دوه شان عملونه موجود دی، نو اوس په دې باندي د عمل کولو څه صورت ممکن دې؟

د احنافو دلائل: په دې مسئله کنبی د احنافو استدلال د حضرت عبداللہ بن مسعود رضی الله عنه د حدیث نه دې کوم چه امام بخاری رحمته روایت کړې دې:

«عن عبد الله بن مسعود أن رسول الله صلى الله عليه وسلم صلى الظهر خمسًا، فقيل له: أزيد في الصلاة؟ فقال:

وما ذاك؟ قال: صليت خمسًا، فسجد سجدتين بعد ما سلم» (۵)

دویم دلیل هم د صحیح بخاری حدیث دې کوم چه په مذکوره باب کنبی تیر شوي دې په کوم

(۱) الكوكب الدرر، كتاب الصلاة، باب ما جاء في سجدتي السهو قبل السلام: ۱۷۳/۱، سعيد.

(۲) المغني لابن قدامة، كتاب الصلاة، باب سجدتي السهو، مسئله: وما عدا من السهو فسجوده قبل السلام: ۴۱۵/۲. الشرح الكبير للمقدسي مطبوع تحت المقنع، كتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۱۹/۴. الإنصاف في معرفة الراجح من الخلاف للمرداوي مطبوع مع المقنع والشرح الكبير، كتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۲۱/۴-۱۹.

(۳) عن شعبي قال: صلى بنا المغيرة بن شعبه، فنهض في الركعتين، فسبح به القوم، وسبح بهم، فلما قضى صلاته سلم، ثم سجد سجدتي السهو، وهو جالس، ثم حدثهم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم فعل به مثل الذي فعل. (سنن الترمذي، كتاب الصلاة، باب ما جاء في الإمام ينهض في الركعتين ناسيًا، رقم الحديث: ۳۶۴).

(۴) عن عبدالله بن بحينة الأسدي، حليف بنى عبدالمطلب: أن النبي صلى الله عليه وسلم قام في صلاة الظهر وعليه جلوس، فلما أتم صلاته سجد سجدتين، يكبر في كل سجدة وهو جالس، قبل أن يسلم وسجدهما الناس معه مكان مانسي من الجلوس. (سنن الترمذي، كتاب الصلاة، باب ما جاء في سجدتي السهو قبل السلام، رقم الحديث: ۴۰۰).

(۵) صحيح البخاري كتاب الصلاة، باب إذا صلى خمسًا، رقم الحديث: ۱۲۲۶.

کنبی چه صفایه وضاحت سره دی: ((فلیتص الصواب، فلیتم علیه، ثم یسلم، ثم یسجد سجدتین))<sup>(۱)</sup> دریم دلیل د حضرت عبد الله بن جعفر رضی اللہ عنہما حدیث دی کوم چه امام ابو داؤد رضی اللہ عنہ روایت کرې دی: ((عن عبد الله بن جعفر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: "من شك في صلاته، فليسجد سجدتين بعد ما یسلم" ))<sup>(۲)</sup>.

خلورم دلیل د حضرت عمران بن حصین روایت دی کوم چه امام مسلم رضی اللہ عنہ روایت کرې دی دهغی آخره کنبی دی: ((فصلی الركعة التي كان ترک، ثم سلم، ثم سجد سجدتي السهو، ثم سلم))<sup>(۳)</sup> پنخم دلیل هغه آثار د صحابه کرامو رضی اللہ عنہم دی کوم چه په سجده سهو مخکنی د سلام باندي دلالت کوی. په هغوی کنبی د حضرت عبد الله بن عباس، حضرت عبد الله بن مسعود، حضرت علی، حضرت سعد بن ابی وقاص، حضرت عمار، حضرت عبد الله بن زبیر رضی اللہ عنہم وغیره شامل دی. اوگورنی: شرح معانی الآثار او مصنف لابن ابی شیبہ.<sup>(۴)</sup> شپږم دلیل عقلی دی چه روستو د سلام نه سجده کولو کنبی عبادت او مشقت زیات دی ځکه چه په دغه صورت کنبی التحیات دوه ځل وئیلې کیږی نو د صورت افضل گرځول بهتر دی.<sup>(۵)</sup>

اووم دلیل نظر طحاوی دی چه سجده سهوه د نورو سجوو واجبه فی الصلاة په شان نه وی چه دهغی واجبی دو سره فوری ادا کول ضروری وی بلکه ددی واجبی دل علی سبیل التأخیر وی. اوس دا تأخیر څومره کیدل پکار دی؟ نو په دې کنبی د ائمه مجتهدینو اختلاف دی. د بعضی رجحان دی طرف ته شو چه د سلام نه علاوه د باقی ټولو افعالو د مونخ نه روستو کیدل پکار دی او د بعضو رجحان دا جوړ شو چه د سلام نه هم روستو کول پکار دی. لیکن دا غور کولو سره راجح دا معلومیږی چه کله په اتفاق سره د سلام نه علاوه د باقی ټولو افعالو نه دا روستو کولې شی او باقی افعال په دغه سجده باندي مقدم کولې شی نو د قیاس او نظر تقاضا دا جوړیږی چه د نورو کارونو په شان دې سلام هم د دغه دوو سجدو نه مقدم وی

(۱) صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب التوجه نحو القبلة حيث كان، رقم الحديث: ۴۰۱.

(۲) سنن ابی داؤد، کتاب الصلاة، باب من قال بعد التسليم، رقم الحديث: ۱۰۳۳.

(۳) وحدثنا اسحاق بن إبراهيم، أخبرنا عبد الوهاب الثقفي، حدثنا خالد وهو الحذاء، عن أبي قلابه، عن أبي المنهلب، عن عمران بن حصين، قال: سلم رسول الله صلى الله عليه وسلم في ثلاث ركعات، من العصر، ثم قام فدخل العجرة، فقام رجل بسيط اليمين، فقال: أقصرت الصلاة يا رسول الله؟ فخرج مفضيا، فصلی الركعة التي كان ترک، ثم سلم، ثم سجد سجدتين السهو، ثم سلم. (صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب السهو فی الصلاة والسجود له، رقم الحديث: ۵۷۴).

(۴) شرح معانی الآثار، کتاب الصلاة، باب سجود السهو فی الصلاة، هل هو قبل التسليم أو بعده: ۵۶۹-۵۶۳/۱. المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الصلاة، فی السلام فی سجدتي السهو: قبل السلام أو بعد، رقم الحديث: ۴۴۷۰، ۴۴۸۱، ومن ان يقول: اسجدهما قبل أن تسلم، رقم الحديث: ۴۴۸۲، ۴۴۸۳.

(۵) معارف السنن، کتاب الصلاة، باب ما جاء فی سجدتي السهو قبل السلام، رقم الحديث: ۴۰۰، ۱/۴۸۹.

اودا سجدي دي د سلام نه روستو وی (۱).  
 د احنافو د مذهب د ترجیح وجه: احنافو ته په دي توگه وجه ترجیح حاصله ده چه په دي باب کښي احاديث فعلیه او قولیه دواړه قسم دي. په کوم کښي چه په غور کولو سره دا خبره مخي ته راځي چه د حضور پاك فعل په دواړه طريقو سره ملاويږي. مخکښي د سلام نه هم او روستو د سلام نه هم. چنانچه احنافو د حضور پاك هغه فعل ته ترجیح ورکړه د کوم مطابق چه د حضور پاك قول هم وو. دغه شان د احنافو په نيز په قول او فعل دواړو باندي عمل اوشو.

په دي باندي د شوافعو د طرف نه دا اعتراض کيږي چه لکه څنگه د احنافو سره د فعلی سره سره قولي حديث هم شته. دغه شان شوافعو سره هم دواړه احاديث موجود دي. نو د دي جواب دادې چه په احاديث قولیه کښي چه کله تعارض پيدا شي نو د قياس په ذریعه ترجیح ورکولي شي. د قياس تقاضا داده چه د سلام په ذریعه په سجده سهو کښي فصل کيدل پکار دي. ځکه چه سجده سهو د مونخ دکمي پوره کولو شئ دي او د يو شئ کمی پوره کونکي شئ د هغه خيز غير وي. لکه په فرض مونخونو کښي دننه د سنتو کوتاهي د مونخ نه پس سنت او ذکر نه دغه کمی پوره کوي. لهذا دلته هم سجده سهو د سلام نه پس راتلل پکار دي دي د پاره چه د کمی پوره کونکي شئ سره جدائي راشي اودا د اصل شئ غير ثابت وي. ليکن چونکه دواړه طريقی سجده سهو مخکښي د سلام نه او روستو د سلام د حضور پاك نه قولا او فعلا ثابتي دي لهذا مونږ څوک نه شو منع کولي (۲).

په مذکوره مسئله کښي د مذاهبو د اختلاف حيثيت: د سلام نه مخکښي يا روستو سجده سهو کولو کښي د ائمه اختلاف د جواز او عدم جواز نه دي بلکه د افضل او غير افضل دي، يعني دواړه جائز دي (۳).

د حضرت گنگوهي رحمته الله عليه يوه سهو او صحيح خبره: په دي مقام باندي د حضرت مولانا رشيد احمد گنگوهي نه سهو شوي ده. د مذاهبو د نقل کولو په وخت هغوی ليکلي دي چه د امام شافعي رحمته الله عليه مذهب دادې چه سجده سهو به پس د سلام نه کيږي ليکن مخکښي د سلام نه سجده کول جائز نه دي ځکه چه د هغوی په نيز د هغوی د مستدل حديث نه علاوه باقي ټول منسوخ دي نو په منسوخ حديث باندي عمل کول څنگه جائز دي (۴)؟

شيخ الحديث صاحب رحمته الله عليه فرمائي چه حضرت گنگوهي رحمته الله عليه د امام ترمذي رحمته الله عليه راتلونکي قول چه "سجدة السهو قبل التسليم" والا احاديث د نورو احاديثو د پاره ناسخ دي، د دي نه استدلال کړي دي چه د شوافعو په نيز سجده سهو هلو جائز نه ده ځکه چه په منسوخ حديث باندي

(۱) شرح معاني الآثار، کتاب الصلاة، باب سجود السهو في الصلاة، هل هو قبل التسليم أو بعده؟: ۵۶۹-۵۶۸/۱.

(۲) الكوكب الدرّي، کتاب الصلاة، باب ماجاء في سجدة السهو قبل السلام: ۱۷۳/۱-۱۷۲، سعيد.

(۳) الدرالمختار مع ردالمختار، کتاب الصلاة، باب سجود السهو: ۴۱/۲ هـ الهداية، کتاب الصلاة، باب سجود السهو:

۳۳۱/۱. اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوي: ۱۴۸/۳.

(۴) الكوكب الدرّي، کتاب الصلاة، باب ماجاء في سجدة السهو قبل السلام: ۱۷۲/۱، سعيد.

عمل صحیح نه وی. لیکن د شوافعو د مذهب اکثر ناقلینو په دې باندې اجماع نقل کړې ده چه دواړه شان جائز دی. چنانچه حافظ رحمته الله علیه فتح الباری کښې د ماوردی رحمته الله علیه نه نقل کړې دی چه په دواړو د سجده سهوه کولو په جواز باندې اجماع ده. اختلاف خود افضلیت دې دغه شان امام نووی رحمته الله علیه د اجماع قول نقل کړې دې، استعمل کذا فی الاوجز (۱).

دهدیت د ترجمه الباب سره مناسبت: د مذکوره حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت د حدیث دې جملې "فشئ رجلیه واستقبل القبلة" سره دې (۲).

د مذکوره حدیث نه مستنبط شوی احکام او فوائد: د دې حدیث شریف نه ډیرې زیاتې فائدې مستنبط کړې. دهغې نه یو څو لاندې لیکلې شی:

- ① د صحابه کرامو رضی الله عنهم په دې سوال "أحدث فی الصلاة شیئ؟" سره د نسخ جواز معلومېږي (۳).
- ② د انبیاء کرامو علیهم السلام نه سهوه او نسیان واقع کیدل هم معلومېږي (۴).
- ③ د دې حدیث شریف نه هغه فقهاء کرامو دلیل نیسی څوک چه د دې خبرې قائل دی چه په هیره سره کلام کولو سره موندنه فاسدېږي (۵).
- ④ په دې حدیث کښې په دې خبره باندې دلیل دې چه د سهوه دوه سجده وی (۶).
- ⑤ په دې حدیث کښې په دې خبره باندې دلیل دې چه د سهوه دوه سجده د سلام نه پس دی نه چه مخکښې (۷).
- ⑥ د دې حدیث نه دا هم معلومېږي چه د (هغه) موندنه پس (په کوم کښې چه د فرضو نه پس سنت نه وی نو) امام دې د مقتدیانو طرف ته راگرځیدو سره کښې (۸).
- ⑦ تابع ته د متبوع طرف نه د دې خبرې حکم ورکول چه کله مانه هیره او شی نوماته رایادونی، هم معلومېږي (۹).
- ⑧ دا هم معلومېږي چه د یو خبرې وضاحت دهغې د حاجت د وخت نه روستو کول نه دی پکار لکه چه حضور پاک او فرمائیل «لوحدث فی الصلاة شیئ لثماتکم به» (۱۰).

(۱) الکرکب الدرې، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی سجده السهو قبل السلام: ۱۷۲/۱، سعید.  
(۲) فتح الباری: ۶۵۲/۱، عمدة القاری: ۲۰۵/۴، کوثر المعانی الدراری فی کشف الخبايا صحیح البخاری:

۴۶/۷، الكنز المتواری: ۹۱/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۶) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۷) عمدة القاری: ۲۰۶/۴، کوثر المعانی الدراری فی کشف الخبايا صحیح البخاری: ۵۳/۷.

(۸) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۹) المنهاج للنووی، کتاب الصلاة، مواضع الصلاة، صلاة المسافرین، رقم الحدیث: ۵۷۲، ۶۲/۵-۶۱.

(۱۰) فتح الباری: ۶۵۳/۱، عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

- ④ په دې حدیث شریف کښې د احنافو دلیل دې چې کله په مونځ کښې چاته د رکعتونو په تعداد کښې شک واقع شی نو هغه دې تحری کولو سره خپل مونځ پوره کړی (۱).
- ⑤ په دې خبره باندې هم دلیل دې چې سجده سهو د متعدد اسبابو په وجه سره معتدد کیږی نه، بلکه چه خومره هم غلطیانی وی د هغې په تدارک کښې صرف هم دوه سجده دي لکه چه په دې واقعه کښې حضور پاک په رکعتونو کښې هم سهو شو او دې نه پس د حضور پاک نه کلام هم صادر شو (۲).

۵- باب: بَابُ مَا جَاءَ فِي الْقِبْلَةِ، وَمَنْ لَا يَرَى الْإِعَادَةَ عَلَى مَنْ سَهَا،

### فَصَلَّى إِلَى غَيْرِ الْقِبْلَةِ

دباب د هغه روایاتو باره کښې دې کوم چه د قبلي باره کښې راغلی دی او د هغه حضراتو باره کښې دې څوک چه د دې خبرې قائل دی چه په هیره سره د غیر قبلي طرف ته مونځ کونکی باندې د مونځ واپس راگرځول واجب نه دی.

دترجمة الباب وضاحت: "وَمَنْ لَا يَرَى الْإِعَادَةَ" او بعضې نسخو کښې "وَمَنْ لَا يَرَى الْإِعَادَةَ" دې یعنی "لا يري" په ځانې باندې "لم يري" دې مقصود د دواړو نه هم یو دې "وَمَنْ لَا يَرَى الْإِعَادَةَ" عطف په "القبلة" باندې دې په دې صورت کښې به پوره عبارت "باب ماجاء فی من لا يري الاعادة علی من سها، فصلی الی غیر القبلة" شی (۳).

علامه کرمانی رحمته الله فرمائی چه کلمه "فصلی" کښې فاء تفسیریه ده او "فصلی" لفظ تفسیر دې د کلمه "سها" (۴).

علامه عینی رحمته الله د دې په جواب کښې فرمائی: په دې تشریح کښې بعد دې بهتر توجیه داده چه فاء سببیه جوړد کړې شی نه چه تفسیریه. لکه چه د الله تعالی قول: ﴿الْمُرْتَدَّانَ اللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً﴾ کښې فاء سببیه ده نه چه تفسیریه. او که چرې د "فصلی" په ځانې باندې "وصلی" وې نو زیاته بهتر به وه (۵). علامه عینی رحمته الله نور فرمائی: دا باب د ما قبل والا باب نه جدا دې، هلته د قبلي طرف ته د مخ کولو بیان وو او دلته دا خودل مقصود دی چه که یو سړې په غلطنی سره د قبلي نه علاوه بل طرف ته مخ کولو سره مونځ او کړی نو د هغه مونځ به اوشی او که نه؟ دامام بخاري رحمته الله خپل مسلک په دې باره کښې دادې چه داسې سړې

(۱) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۰۶/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۱۳/۴.

(۴) شرح الکرمانی: ۶۶/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۱۳/۴.

به خپل مونځ واپس نه راگرځوي<sup>(١)</sup>.

د ترجمه الباب مقصد: حضرت شيخ الحديث صاحب رحمته الله فرمائي چه د شار حينو په نيز ومن لا يرا إعادة على من سئل تفسير دي د ما جاء على القبلة. او زمونږ په نيز ما جاء في القبلة جدا دي او ومن لا يرا إعادة على من سئل جدا دي. ځکه چه د قبلي باب اوس ختميرې او قاعده ده چه هر يو مصنف د باب په ختميدو باندې يو باب د مسائل شتي ليکي. په دي اعتبار سره دلته هم مسائل شتي امام بخاري رحمته الله ليکي<sup>(٢)</sup>.

د قبلي مشتبه کيدو په صورت کښې د مونځ حکم: د دي مسئلې باره کښې د ائمو اختلاف دي. د احنافو په نيز مسئله داده چه کله د يو مونځ گذار په قبله کښې شک پيدا شي او څوک د قبلي خودونکې نه وي او مونځ گذار تحري او اجتهاد کولو سره يو طرف د قبلي د پاره متعين کړي او مونځ او کړي. روستو ورته معلومه شي چه قبله خو بل طرف ته وه، نو د داسې سړي د پاره د دغه مونځ واپس راگرځول لازم نه دي<sup>(٣)</sup>. د حنابلو په نيز هم مسئله هم دغه شان ده<sup>(٤)</sup>. د مالکيه په دي باره کښې دوه اقوال دي. يو خو هم هغه کوم چه د احنافو په نيز دي او دويم دا چه په وخت کښې دننه دننه معلوميدو په صورت کښې به اعاده کوي<sup>(٥)</sup>. د شوافعو په نيز مسئله دا ده چه د مونځ نه فارغيدو نه پس بنکاره شو چه هغه خو مونځ د غير قبلي طرف ته ادا کړې دي، نو دي به د سره مونځ ادا کوي دا حکم په هغه صورت کښې دي کله چه ده ته په خپله خطا باندې کيدل بغيرد کوشش نه معلوم شوي وي. او که باقاعده غور او فکر کولو سره هغه ته د خپلې غلطې علم وي نو په هغه باندې اعاده واجب نه ده<sup>(٦)</sup>.

(١) عمدة القارى: ٢١٣/٤.

(٢) الكنز المنوارى: ٩٤/٤-٩٣. سراج القارى: ٤٤٢/٢.

(٣) البحر الرائق، كتاب الصلاة، شروط الصلاة: ٤٩٨-٥٠٢/١. الهداية و كتاب الصلاة، باب شروط الصلاة التى تقدمها: ١٨٠/١-١٧٩، مكتبة البشرى. الفتاوى الهندية و كتاب الصلاة، الباب الثالث: فى شروط الصلاة، الفصل الثالث فى استقبال القبلة: ٦٤/١.

(٤) المقنع مع الشرح الكبير والإنصاف، كتاب الصلاة، باب استقبال القبلة، مسئله: ومن صلى بالاجتهاد إلى جهة، ثم علم أنه أخطأ القبلة: ٣٥٤/٣. الكافى لابن قدامة المقدسى، كتاب الصلاة، باب استقبال: ٢٦٠/١. المحرر فى فقه المذهب للإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، باب استقبال القبلة: ٥٢/١.

(٥) بداية المجتهد، كتاب الصلاة، الجملة الثانية فى الشرط، الباب الثالث من جملة الثانية فى القبلة: ١١١/١. المدونة الكبرى، كتاب الصلاة الأول، فىمن صلى إلى غير القبلة ١٧٤/١. الشرح الكبير للدردير و حاشية الدسوقي، كتاب الصلاة، فصل شروط صحة الصلاة، الشرط الرابع وهو استقبال القبلة: ٢٢٥/١.

(٦) الأم كتاب الصلاة، باب استقبال القبلة، فىمن استبان الخطأ بعد الاجتهاد: ٢١٣/٢. تحفة الحبيب على شرح الخطيب المعروف ب حاشية البجيرمي على الخطيب، كتاب الصلاة، فصل فى شروط الصلاة، القول فى مراتب القبلة وتعلم أدلتها: ١٣٢/٢. الحاوى فى فقه الشافعى، كتاب الصلاة، باب استقبال القبلة وأن لا فرض إلا الخمس: ٨٦/٢.

تعليق: «وَقَدْ سَلَّمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكَعَتَيِ الظُّهْرِ، وَأَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ بِوَجْهِهِ ثُمَّ أَتَمَّ مَا بَيْنَهُ» [١: ١٤٦٨] دَ تعليق ترجمه: او تحقيق نبي كريم ﷺ دَ مَاسِيبِينَ پِه دُوو رَكَعَتُو كُنْبِي سَلَامِ گِرْخُولُو سِرِه دَخْلَقُو طَرَفِ تِه مَخ كِرُو، دِي نِه پَس چِه كُوم بَاقِي پَاتِي شُوي وُو هَغِه نِي پُورِه كِرِي وُو. دَ تعليق تَخْرِيج: دَعَلَامِه اِبْنِ بَطَالِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَمَانِ دِي چِه دَا حَدِيثِ دَحَضْرَتِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ دَ حَدِيثِ تَكَرَّرِه دِه<sup>(١)</sup>. عَلَامِه اِبْنِ حَجْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَوْ عَلَامِه عَيْنِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَرْمَائِي پِه دِي مَعَامَلِه كُنْبِي اِبْنِ بَطَالِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تِه وَهَم شُوي دِي. پِه دِي وَجِه چِه دَحَضْرَتِ اِبْنِ مَسْعُودِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ پِه حَدِيثِ كُنْبِي پِه دُوو رَكَعَتُو دَ سَلَامِ گِرْخُولُو هَدُو ذِكْرِنَشْتِه دِي. بَلَكِه دَا تَعْلِيْقِ حُو دَ حَدِيثِ اِبُو هَرِيْرِه رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ پِه كُوم كُنْبِي چِه ذَوَالْيَدِيْنَ ذَكَر دِي<sup>(٢)</sup>. دَهْفِي تَكَرَّرِه دِه<sup>(٣)</sup>.

دَ تَعْلِيْقِ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِه مَنَاسِبَت: عَلَامِه عَيْنِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَرْمَائِي چِه دَمَذْكَوْرِه تَعْلِيْقِ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سِرِه مَنَاسِبَت پِه دِي اِعْتِبَارِ سِرِه دِي چِه خُنْگِه دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ نِه مَعْلُومِيْرِي چِه كُوم سِرِي پِه هِيْرِه سِرِه دَ غَيْرِ قِبْلِي طَرَفِ تِه مَخ كُولُو سِرِه مَوْنَخِ اَوْ كِرِي نُو پِه هَغِه بَآنْدِي مَوْنَخِ رَاگِرْخُولِ وَاجِبِ نِه دِي اَوْهَمِ دَا خِيْزِ دَ مَذْكَوْرِه تَعْلِيْقِ نِه مَعْلُومِيْرِي. هَغِه دَاسِي چِه حَضُورِ پَاكِ پِه غَلْطِي سِرِه پِه دُوو رَكَعَتُو بَآنْدِي سَلَامِ اَوْ گِرْخُولُو. دِي نِه پَس دَ مَقْتَدِيَانُو طَرَفِ تِه مَخ كُولُو سِرِه كِيْنَا سَتُو. بِيَا چِه كَلِه پِه غَلْطِي بَآنْدِي خِيْرِ كِرِي شُو نُو بِيَا نِي قِبْلِي تِه مَخ كُولُو سِرِه مَوْنَخِ پُورِه كِرُو. اَوْسِ چِه خُوْمَرِه وَخْتِ حَضُورِ پَاكِ دَ خَلْقُو طَرَفِ تِه مَتُوْجِه دِي دُوْمَرِه وَخْتِ دَ قِبْلِي نِه تَاؤْشُوي دِي جَالَانَكِه هَغِه وَخْتِ هَم دَ حَضُورِ پَاكِ شَمِيْرِ هَم پِه مَوْنَخِ كُنْبِي وُو. اَوْ رُوَسْتُو بِيَا حَضُورِ پَاكِ دَ مَوْنَخِ اِعَادِه هَم اَوْنِه كِرِه<sup>(٤)</sup>.

<sup>(١)</sup> وقد أشار البخاري في ترجمته إلى هذا الاستدلال من حديث ابن مسعود فقال: وقد سلم النبي عليه السلام في ركعتي الظهر وأقبل على الناس بوجهه..... إلخ. (شرح ابن بطال: ٧٨/٢).

<sup>(٢)</sup> حدثنا إسحاق، قال: حدثنا النضر بن شميل، أخبرنا ابن عون، عن ابن سيرين، عن أبي هريرة، قال: صلى بنا رسول الله صلى الله عليه وسلم إحدى صلاتي العشاء قال ابن سيرين: سماها أبو هريرة ولكن نسيت أنا، قال: فصلى بنا ركعتين، ثم سلم، فقام إلى خشبة معروضة في المسجد، فاتكأ عليها كأنه غضبان، ووضع يده اليمنى على اليسرى، وشبك بين أصابعه، ووضع خده الأيمن على ظهر كفه اليسرى، وخرجت السرعان من أبواب المسجد، فقالوا: قصرت الصلاة؟ وفي القوم أبو بكر وعمر، فهابا أن يكلماه، وفي القوم رجل في يديه طول، يقال له: ذواليدين، قال: يا رسول الله! أنسيت أم قصرت الصلاة؟ قال: لم أنس ولم تقصر، فقال: أكما يقول ذواليدين؟ فقالوا: نعم، فتقدم فصلى ما ترك، ثم سلم، ثم كبر وسجد مثل سجوده أو أطول، ثم رفع رأسه وكبر، ثم كبر وسجد مثل سجوده أو أطول، ثم رفع رأسه وكبر، فربما سألوه: ثم سلم؟ فيقول: نبئت أن عمران بن حصين، قال: ثم سلم. (صحيح البخاري، كتاب الصلاة، باب تشبيك الأصابع في المسجد وغيره، رقم الحديث: ٤٨٢).

<sup>(٣)</sup> فتح الباري: ١/٦٥٤ عمدة القاري: ٤/٢١٣.

<sup>(٤)</sup> (١ فتح الباري: ١/٦٥٤ عمدة القاري: ٤/٢١٣). حضرت شيخ الحديث صاحب رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَرْمَائِي: دَدِي تَعْلِيْقِ نِه دَاسِي اِسْتِدْلَالِ دِي چِه حَضُورِ پَاكِ بِه هِيْرِه سِرِه سَلَامِ اَوْ گِرْخُولُو اَوْ خَلْقُوْتِه نِي مَخ كِرُو، دَ قِبْلِي طَرَفِ نِه نِي مَخ وَاِرُولُو. بِيَا دَ صَحَابِه كِرَامُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمُ پِه خِيْرِدَارُو سِرِه نِي قِبْلِي تِه مَخ كِرُو بَاقِي مَوْنَخِ نِي پُورِه كِرُو. سَجْدِه سَهُو كُولُو سِرِه نِي سَلَامِ اَوْ گِرْخُولُو. دَلْتِه دَا اِعْرَاضِ كُولِ دِي چِه كِه هَغِه رُوْمَبِي مَوْنَخِ صَحِيْحِ نِه وُو نُو خُنْگِه اَوْ شُوْه اَوْ پُورِه كِيْدَلِ نِي خُنْگِه صَحِيْحِ شُو؟ اَوْ سَجْدِه نِي خُنْگِه اَوْ كِرِه؟ كِه چِرِي.....

حدیث باب (رومی حدیث) [حدیث نمبر ۳۹۲-۳۹۳]

۳۰۲- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْفٍ قَالَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَنَسٍ (۱) قَالَ قَالَ عُمَرُ وَأَقْبَتُ رَبِّي فِي ثَلَاثٍ، فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ اتَّخَذْنَا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى فَتَزَلْتُمْ (وَأَتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى) (وَأَيُّهُ الْحِجَابُ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَوْ أَمَرْتَ نِسَاءَكَ أَنْ يَتَّخِجْنَ، قَالَهُنَّ يُكَلِّمْنَ الْبُرُوقَ الْفَاجِرُ. فَتَزَلْتُمْ آيَةَ الْحِجَابِ، وَاجْتَمَعَ نِسَاءُ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي الْقُبُورِ عَلَيْهِ فَقُلْتُ هُنَّ عَسَى رَبُّهُنَّ أَنْ يَطَّلِقَنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُنَّ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ. فَتَزَلْتُمْ هَذِهِ الْآيَةَ.

د حدیث ترجمہ: حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ نے روایت دی ہے کہ دربو معاملاتو (بارہ) کبسی حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ او فرمائیل چه زما رائی زما پروردگار سره موافق شوه. یو دا چه ما عرض او کرو یا رسول الله که چری مونو مقام ابراهیم مصلی (د مانخه خانی) جو رکرو نو بهتر به وی. چنانچه دا آیت مبارک ﴿ وَأَتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ﴾ نازل شو. دویمه موقع د حجاب یعنی پردی د آیت ده. ما عرض او کرو یا رسول الله که چری تاسو ازواج مطهرات ته په پرده کبسی د اوسیدو حکم ورکړئ نو دا به بهتر وی. ځکه چه هغوی سره خبری اتری کونکو کبسی ښه او خراب هر قسم خلق وی. چنانچه دا آیت د حجاب ﴿ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَلُّوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ﴾ نازل شو. دریمه موقع دا شوه چه د رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم ازواج مطهرات د حضور پاک په خدمت کبسی د خان خودونکو جذباتو په وجه راجمع شوې نو ما د زجر په توگه هغوی ته او وئیل که چری رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم خفه شی او تاسو ټولو ته طلاق درکړی نو هیڅ عجیبه نه ده چه ستاسو پروردگار حضور پاک ته ستاسو نه بهتری بیبانی ورکړی، نو هم ددی مضمون آیت نازل شو. ﴿ عَسَى رَبُّهُنَّ أَنْ يَطَّلِقَنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُنَّ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَنِيَتَاتٍ تَيِّبَاتٍ عِبَادَاتٍ سَخِيَّاتٍ تَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ﴾

تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف په سند کبسی ټول پنځه رجال دی:

① عمرو بن عوف رضی اللہ عنہ: دا ابو عثمان عمرو بن عون بن اوس بن الجعد السلمي الواسطي

..... حضور پاک د دغه وخته پورې هم په مونځ کبسی وو نو بنا صحیح شوه. لهذا صلاة إلى غير القبلة ساهبا لازم شو او حضور پاک په هغې باندي بنا او کره. ښکاره دي وی چه صلاة إلى غير القبلة سهواً سره مونځ فاسدیږی. (تقریر بخاری شریف: ۳۱۳/۲).

(۱) أخرجه البخاری أيضاً فی تفسیر سورة البقرة، باب قوله تعالى: ﴿ وَأَتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ﴾، رقم الحديث: ۴۴۸۳ - وفي تفسیر سورة الأحزاب، باب قول الله تعالى: ﴿ لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ ﴾، رقم الحديث: ۴۷۹۰ - وفي سورة التحريم، باب قوله تعالى: ﴿ عَسَى رَبُّهُنَّ أَنْ يَطَّلِقَنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُنَّ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ ﴾، رقم الحديث: ۴۹۱۶. وأخرجه مسلم فی صحيحه، فی فضائل الصحابة، باب من فضائل عمر، من حديث ابن عمر، رقم الحديث: ۲۳۹۹. وأخرجه الترمذی فی جامعه، فی التفسیر، باب ومن سورة البقرة، رقم الحديث: ۲۹۶۰. وأخرجه ابن ماجه فی سننه، فی صلاة، باب القبلة، رقم الحديث: ۱۰۰۹. وفي جامع الأصول، حرف التاء، الكتاب الأول فی تفسیر القرآن، سورة البقرة، رقم الحديث: ۴۷۴، ۹/۲.



الرازحی رضی اللہ عنہ دی. د ابو العجفاء السلمی ازاد کرې شوی غلام وو. د بصرې اوسیدونکې وو. د دوی په مشهورو استاذانو کې هشیم بن بشیر، اسحاق بن یونس الازرق، حماد بن زید، خالد بن عبد الله الواسطی وغیره رحمهم الله شامل دی. اود دوی په مشهورو شاگردانو کې امام بخاری، امام ابوداؤد، امام دارمی، احمد بن سلیمان الرهاوی، احمد بن محمد وزیر الواسطی وغیره رحمهم الله شامل دی.

یحیی بن معین، العجلی، یزید بن هارون، ابوزرعه او ابو حاتم وغیره رحمهم الله ټولو د دوی توثیق کرې دي. ابن حبان رضی اللہ عنہ کتاب الثقات کې د دوی ذکر کرې دي. د ابن حبان، امام بخاری، امام ابوداؤد او امام حاتم رحمهم الله د اقوالو مطابق د دوی وفات ۲۲۵ هجری کې شوی دي (۱).

② هشیم رضی اللہ عنہ: دا ابو معاویه هشیم بن بشیر بن قاسم الواسطی رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب التیم، باب قول الله تعالی: ﴿قَلَّمْ تَحْمِداً وَامَاءَ قَتَمٍ مَّوْاصِعِداً طَبِيباً فَاَمْحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَاَيْدِيكُمْ مِنْهُ﴾ د دویم حدیث لاندې تیر شوی دی (۲).

③ حمید رضی اللہ عنہ: دا ابو عبيده حمید بن ابی حمید الطویل الخزاعی البصری رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: خوف المؤمن من أن يحبط عمله وهو لا يشعر، لاندې تیر شوی دی (۳).

④ انس رضی اللہ عنہ: دا انس بن مالک رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الإیمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه لاندې تیر شوی دی (۴).

⑤ عمر رضی اللہ عنہ: دا امیر المؤمنین حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ دي. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: بدء الوحي پومی حدیث کې او تفصیلی احوال کتاب الإیمان، باب: أحب الدين إلى الله أدرم لاندې تیر شوی دی (۵).

د حدیث شرح قال عمر بن الخطاب رضي الله عنه، وافقت ربي ثلاث: حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ د دريو ساعملانو (باره) کې او فرمائیل چه زما رائي زما د پروردگار موافق شوی ده قوله: وافقت ربي - د اکثر و شارحینو د حدیث په نیز حضرت عمر رضی اللہ عنہ د ادب د وجې نه داسې او فرمائیل گنی حضرت عمر رضی اللہ عنہ یوه خبره او کړه او الله تعالی د هغه د خبرې مطابق وحی

(۱) تهذيب الكمال: ۱۸۰/۲۲-۱۷۷، الطبقات لابن سعد: ۳۱۶/۷، تاريخ الكبير للبخاري: ۶ رقم الترجمة: ۲۶۳۸، الثقات لابن حبان: ۴۵۸/۸، سير اعلام النبلاء: ۴۵۰/۱۰، تهذيب التهذيب: ۸۷/۸-۸۶.

(۲) كشف الباری، كتاب التيم، ص: ۸۴.

(۳) كشف الباری: ۷۱/۲.

(۴) كشف الباری: ۴/۲.

(۵) كشف الباری: ۲۳۹/۱، ۲۷۴/۲.

نازل کره. لکه چه موافقت د الله تعالی د طرف نه شوی دې. لیکن په باب مفاعله کښې فعل چونکه من الجانبین وی په دې وجه د ادب رعایت کولو سره حضرت عمر رضی الله عنه داسې او وئیل چه ما د خپل رب موافقت او کړو اودا عنوان ئی بی ادبی او گنډله چه الله تعالی زما موافقت او کړو. په دې وجه ئی **وَأَقْبَىٰ رَبِّيٰ** اونه وئیل.

علامه برماوی رحمته الله علیه فرمائی چه ددې تشریح ضرورت نشته دې، دلته د موافقت اصطلاحی معنی یعنی امتثال او امر رب عزوجل مراد نه دې بلکه د موافقت لفظ په خپل اطلاق باندې استعمال شوی دې. یعنی کومه خبره چه د حضرت عمر رضی الله عنه وه د قرآن پاک آیت هم د هغې موافق نازل شو (۱).

علامه کورانی رحمته الله علیه هم دا خبره ذکر کولو سره نور فرمائیلی دی چه که چرې د ادب د رعایت د وجې **وَأَقْبَىٰ رَبِّيٰ** وینا کول او منلې شی نو بیا د صحیح بخاری کتاب التفسیر کښې هم ددې آیت په نازلیدو باندې د حضرت عمر رضی الله عنه **وَأَقْبَىٰ رَبِّيٰ** وئیل نقل دی، ددې به څه جواب وی (۲)؟ علامه کرمانی رحمته الله علیه د تمییز "أمورا" ذکر کړې دې او په دې باندې یو اشکال ذکر کولو سره د هغې جواب ورکړې دې چه "أمورا" جمع ده د "امر"، کوم چه مذکر دې. ددې تقاضا داده چه لفظ "ثلاث" مؤنث وی نو ددې جواب ئی دا ورکړو چه تمییز ذکر نه وی (لکه څنگه چه دلته دې) نو د عدد مذکر یا مؤنث راوړلو کښې اختیار وی (۳). خو علامه برماوی رحمته الله علیه د "ثلاث" نه مراد قضایا اخستی دې (۴) او حافظ ابن حجر رحمته الله علیه لیکلی دی چه **ثلاث** نه مراد "ثلاثة وقائم" دې (۵).

موافقات عمر رضی الله عنه: دلته د دريو مقاماتو ذکر دې چه په دې دريو مقاماتو کښې وحی د حضرت عمر رضی الله عنه د رائي موافق راغلي ده. دا (درې مقامات) غالباً د مقام او مصلحت په رعایت سره بیان کړې شوي دی چه دهغه مقام او دهغه ځائی د مصلحت تقاضا ددې دريو ذکر وه په دې وجه ئی د دريو ذکر او کړو (۶). یا به داسې وئیلې شی چه اقل عدد د اکثر نفی نه کوی (۷).

یوه توجیه دا هم ممکن ده چه ددې قول په وخت صرف هم په دريو امورو کښې موافقت

(۱) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۰/۳.

(۲) الکوثر الجاری للکورانی: ۹۵/۲.

(۳) شرح الكرمانی: ۶۶/۴.

(۴) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۰/۳.

(۵) فتح الباری: ۶۵۴/۱.

(۶) التوضیح لشر الجامع الصحیح لابن ملقن: ۴۱۱/۵. اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۰/۳. فتح

الباری: ۶۵۴/۱.

(۷) شرح الكرمانی: ۶۶/۴. فتح الباری: ۶۵۴/۱.

مخې ته راغلي وی اوباقی مواقع ددې قول نه پس حاصل شوې وی (۱). دا مذکوره توجیه د علامه کرمانی رحمته الله علیه ذکر کړې ده. علامه عینی رحمته الله علیه د مذکوره توجیه ذکر کولو نه پس په دې باندې رد کولو سره فرمائی چې په دې توجیه کښې نظر دې ځکه چې حضرت عمر رضی الله عنه ددې موافقاتو خبر د نبی کریم صلی الله علیه و آله د وفات نه پس ورکړې وو لهذا مذکوره احتمال صحیح کیدې نه شی (۲).

علامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرمائی چې د تعداد اهتمام غالباً د وحی قرآن مجید د موافقت د وجې نه ښکاري گنی د ابن عمر رضی الله عنهما د ارشاد مطابق مطلق د وحی نبوت موافقت په کثیر تعداد باندې موجود دې. او که ددې ټولو هم د شمیر طرف ته توجه کولې نو عدد به ډیر زیاتیدو (۳).

د موافقات عمر رضی الله عنه تعداد: حقیقت دادي چې د حضرت عمر رضی الله عنه موافقت په ډیرو مقاماتو کښې ثابت دې. چنانچه حافظ ابن حجر رحمته الله علیه پنځلس مقامات شمیر کړي دي (۴) او امام سیوطی رحمته الله علیه دا شل او یویشته ته رسولی دي (۵) بلکه د دوی (امام سیوطی رحمته الله علیه) خو په دې باره کښې مستقل یو منظوم کلام هم دې (۶).

(۱) شرح الکرمانی: ۶۶/۴ التوضیح لشرح الجامع الصحیح لابن ملقن: ۴۱۱/۵.

(۲) عمدة القاری: ۲۰۵/۴.

(۳) انوار الباری: ۲۰۴/۱۲.

(۴) فتح الباری: ۶۵۴/۱.

(۵) تاریخ الخلفاء للسيوطی رحمته الله علیه فصل فی موافقات عمر رضی الله عنه قد وصلها بعضهم إلى أكثر من عشرين ص: ۸۳-۸۵.

(۶) د دغه منظوم کلام نوم "قطف الثمر فی موافقات عمر" دې. کوم چې د امام سیوطی رحمته الله علیه د مجموعه رسائل الحاوی للفتاوی: ۳۷۷/۱.

جزء دې او د هغې سره جهاپ شوې دې. ونی گورنئ:

|                          |                          |
|--------------------------|--------------------------|
| الحمد لله و صل الله      | عل تشبيه الذي اجتمعا     |
| ياسائل والعاوئات تكثر    | من الذي والحق فيه حمر    |
| وما يرى اول الكتاب       | مواقفاً لرأيه الصواب     |
| خذ ما سألته منهل آيات    | منظومة تأمن من شتات      |
| ففي المقام وأسارى بدر    | و آيتي ظاهر و ستر        |
| و ذكر جهيل لأهل العدر    | و آيتين أتولا لي العبر   |
| و آية الصيام حل الرث     | وقوله نساؤكم حرث بيت     |
| و قوله لا يؤمنون حتى     | يحكموك إذ يقتل الحق      |
| و آية فيها لبدر أدبه     | ولا تصل آية لي التوبة    |
| و آية قل النور هذا بهتان | و آية فيها بها الاستئذان |
| بل عتار آية في المؤمنين  | تبارك الله بحفظ المتقين  |
| وثلة من مل صفات السابقين | بل سواء آية المناقلين    |

|                          |                         |
|--------------------------|-------------------------|
| رصدوا من ذاك نسيم الرسم  | لاية قد أدبرت لالرحم    |
| وقال قولاً هو التوراة قد | بهبه كعب عليه فسجد      |
| دل الأذان الذكرك للرسول  | رأيته لى عبر موصول      |
| دل القرآن جهه بالتحقيق   | ما هو من موائق الصديق   |
| كقوله هو الذى يصل        | عليكم أعظم به من فضل    |
| وقوله لى آخر المجادله    | لا تجد الآية لى المغاشه |
| هبت ما رأيته متقولا      | والحمد لله على ما أول   |

ذ فائدي ذ باره هغه ١٦ آياتونه لاندي ذكر كولې شى به وخت ذ ضرورت دې سره متعلقه تفصيلي مباحث او د دې شان نزول په تفاسيرو كسبي كتلي شى:

١ آيت: ﴿قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلجِبْرِيلِ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ﴾ (البقرة: ٩٧-٩٨)

٢ آيت: ﴿وَأَجْعَلْنَا البَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ رَبِّيهِمْ مَّصَلًى وَعَهْدًا إِلَىٰ رَبِّيهِمْ وَسَمِعْتُمُ أَن طهراً يَتَّبِقُنَّ لِلطَّاغُوتِ وَالْكُفِيِّنَ وَالرِّكْمِ السُّجُودِ﴾ (البقرة: ١٢٥)

٣ آيت: ﴿بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ قُلْ فِيهِمَا أَلَمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِرٌ لِلنَّاسِ وَأُمَّمَةٌ كَبِيرٌ مِّنْهُمَا﴾ (البقرة: ٢١٩)

٤ آيت: ﴿أَجَلٌ لَّكُمْ لِكَلِمَةٍ العِيَامِ الرَّفْعِ إِلَىٰ سَابِكُمْ هُنَّ لِيَّاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِيَّاسٌ لَّهُنَّ عَلَّمَ اللَّهُ لَكُمْ كُنْتُمْ عَشَاةُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالْغَنُّ بِأَيْمُونَهُمْ وَأَنْبَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَامْرَأُوا حَتَّىٰ يَتَّبِعَ لَكُمْ الخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ الخَيْطِ الأَسْوَدِ مِنَ الفَجْرِ لَمْ أَهْوِ العِيَامُ إِلَى الأَيْلِ وَلَا بُشْرًا لَهُمْ وَأَنْتُمْ عَاقِبُونَ فِي المَسْجِدِ الَّذِي كُنْتُمْ تُكَذِّبُونَ فِيهِ فَلَا تُقْرَبُوا كَذَلِكَ يَتَّبِعُ اللَّهُ أَنبِيَآهُ لِيُصْطَفَىٰ﴾ (البقرة: ١٨٧)

٥ آيت: ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُخْرُجُوا فِي سَبْعِ مَسَاجِدَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيَسْمَعُوا تِلْكَ﴾ (النساء: ٦٥)

٦ آيت: ﴿كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِن بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَاذِبُونَ﴾ (الأنفال: ٥)

٧ آيت: ﴿مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُطْرَقَ فِي الأَرْضِ لِيُرِيدَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الأُخْرَةَ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ لَوْلَا كَتَبَ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَكُمُ فَمَا أَغْدُتُمْ عَذَابَ عَظِيمٍ﴾ (الأنفال: ٦٨)

٨ آيت: ﴿وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ﴾ (البقرة: ١٧٦) ﴿وَمَا تَوَّاهُمْ فَيَقُونَ﴾ (التوبة: ٨٤)

٩ آيت: ﴿لَمَّا عَلِمْنَا النُّطْلَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا العَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا المُضْغَةَ عِظًا فَكُنْتُمُ العِظَامَ نُحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الخَالِقِينَ﴾ (المؤمنون: ١٢)

١٠ آيت: ﴿وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا الشُّعْبِكَ هَذَا بَيْتُنَا عَظِيمٌ﴾ (النور: ١٦)

١١ آيت: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَأْذِنُوا الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَمْلِكُوا العِلْمَ مِنْكُمْ لَمَّا مَرَّتْ مِنْ قَبْلِ صَلوة الفجرِ وَحِينَ تَضَعُونَ رِجْلَكُمْ مِنَ الصَّلوةِ وَمِن بَعْدِ صَلوة العشاءِ لَمَّا كُنْتُمْ عَوْرَتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوْفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الأيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ﴾ (النور: ٥٨)

١٢ آيت: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرٍ نَبِيئِينَ إِنَّهُ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا إِذَا طَلَبْتُمْ فَاتَّعِبُوا وَلَا مَسْتَأْذِينَ بَعْدَ ذَلِكَ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَعِزُّ مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَعِزُّ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُولِكُمْ وَلِقَوْلِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنْكِرُوا آيَاتِهِ مِنْ بَعْدِ مَا أُنزِلَتْ وَإِنْ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا﴾ (الاحزاب: ٥٣)

١٣ آيت: ﴿لِلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ﴾ (الواقعة: ٣٠)

او امام ترمذی رحمته الله به صحیح سند سره د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما روایت ذکر کړې دې. چه کله به خه خبره پینیدله او په هغې کښې به د رائي اختلاف کیدو. خلقو به یوه خبره کوله او حضرت عمر رضی الله عنه به بله خبره کوله نو قرآن پاک به د حضرت عمر رضی الله عنه د رائي مطابق نازلیدلو (۱).

رب سره د موافقت وجه: د دې نه معلومیږي چه یو خو مقاماتو کښې نه بلکه ډیرو مقاماتو کښې به په کثرت سره داسې کیدل چه وحی به د حضرت عمر رضی الله عنه د رائي په موافقت کښې نازلیدله. د دې وجه دا معلومیږي چه حضرت عمر رضی الله عنه محدث دی. (۲) محدث هغه سړی ته وائی د چا په زړه کښې چه د الله تعالی د طرف نه صحیح خبره اچولې کیږي. یا هغه سړی ته وائی د چا د ژبې نه چه بغیر د ارادې صحیح خبره جاری کیږي (۳).

د خطاء نه محفوظ صرف انبیاء گرام علیهم السلام دی: د رسول الله صلی الله علیه و آله د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه باره کښې د مذکوره او نورو ډیرو بشارتونو مطلب دا هم نه دي چه هغوی د خطاء او غلطی نه محفوظ وو. ځکه چه د الله تعالی د طرف نه د خطاء نه حفاظت صرف او صرف د انبیاء علیهم السلام کیږي خود دې برخلاف اصحاب رسول رضی الله عنهم نه خطاگانې صادر شوي. او په دې باب کښې هم د امت مرحومه د پاره اسوه نبوی صلی الله علیه و آله مخي ته راغله خوبیا هم دومره ضروری دی چه د دغه پاک دامن جماعت قدسیه د الله تعالی د طرف نه هم په دنیا کښې د خلاصی، د گناهونو نه د پاکیدو او د الله تعالی د رضا کیدو اعلان او شو. ﴿رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ﴾.

چنانچه د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه محدث او ملهم کیدو او د دې په سبب ډیر قرآنی موافقات کیدو باوجود د هغوی نه خو خل خطاء هم شوي او روستود هغې نه رجوع هم شوي. مثلاً

- ④ آیت: ﴿سَاءَ عَلَيْهِمْ أَنْتَفَقَتْ لَهُمْ أَمْ لَهُمْ مُتَعَفِّرَةٌ لَهُمْ ۖ لَنْ يُغْفَرَ اللَّهُ لَهُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝﴾ (المنافقون: ۶)  
 ⑤ آیت: ﴿عَلَىٰ رَيْبٍ أَنْ طَلَقْتُمْ أَنْ تُبَدِّلَهُ أَزْوَاجًا غَيْرَ امْتَنَکُمْ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ فَنِيحْتُنَّ فِي حَبْطِ عَيْدَتِ تَيْبَتٍ وَأَبْكَارًا ۝﴾ (التحریم: ۵)  
 ⑥ آیت: ﴿إِنْ تَوَلَّوْا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَعَتْ كُلُّ رُكْبَةٍ ۚ وَإِنْ يَظْهَرْ عَلَيْكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاكُمْ وَجَبْرَائِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝﴾ (التحریم: ۴)

(۱) عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: إن الله جعل الحق على لسان عمر وقلبه، وقال ابن عمر: ما نزل بالناس أمر قط، فقالوا فيه، وقال فيه عمر. أو قال ابن الخطاب فيه - شك خارجه - إلا نزل فيه القرآن على نحو ما قال عمر. (سنن الترمذی، المناقب، باب فی مناقب عمر بن الخطاب رضی الله عنه، رقم الحديث: ۳۶۸۲).  
 (۲) عن أبي هريرة رضي الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لقد كان فيما قبلكم من الأمم محدثون، فإن عليه وسلم: لقد كان فيمن كان قبلكم من بني إسرائيل رجال، يكلمون من غير أن يكونوا أنبياء، فإن يكن من أمتي منهم أحد فعمر قال ابن عباس رضي الله عنهما: من نبى ولا محدث. (صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب مناقب عمر بن الخطاب رضی الله عنه، رقم الحديث: ۳۶۸۹).

(۳) الكاشف عن حقائق السنن، كتاب المناقب، مناقب عمر، رقم الحديث: ۳۸۵۴/۱۲، ۶۰۵۳، إرشاد الساری للقسطلانی، كتاب المناقب، باب مناقب عمر بن الخطاب رضی الله عنه، رقم الحديث: ۳۶۸۹، ۱۰۳/۶.

① د صلح حدیبیه په موقع باندې چه کله بغیر د عمرې صلح کیدو په وجه د واپس تلو حکم اوشو نو د حضرت عمر رضی الله عنه په دې باندې سینه کولاونه وه د کوم په وجه چه هغه د حضور پاک په خدمت کښې حاضر شو او په دې باره کښې ئی ډیر اوږده سوالونه او جوابونه او کړه. او د دې نه پس ئی هم هغه سوال او جواب د حضرت صدیق اکبر رضی الله عنه نه هم او کړه. د الله تعالی شان ته گوره چه دهغوی جوابونه هم بالکل هغه شان وو کوم چه د نبی کریم صلی الله علیه و آله وو. روستو بیا د حضرت عمر رضی الله عنه فرمان هم ملاویږی چه هغوی به په خپلو دغه جذباتو باندې خیمانتیا کوله.

② دویمه موقع هغه وه چه کله د رسول الله صلی الله علیه و آله انتقال اوشو نو هغه وخت حضرت عمر رضی الله عنه توره راویستله او اودریدو. هغوی د نبی کریم صلی الله علیه و آله د وفات نه انکار او کړو او اعلان ئی او کړو چه که چرې چا داسې او وئیل چه نبی کریم صلی الله علیه و آله وفات شوې دې نوزه به دهغه سر قلم کړم. بلکه په رسول الله صلی الله علیه و آله خو هسې سکتته راغلی ده څنگه چه موسی علیه السلام راغلی وه. الله

۱ صحیح بخاری کښې د صلح حدیبیه په تفصیلاتو باندې ډیر اوږد حدیث شریف موجود دې د افاده عام په خاطر د متعلقه واقعہ ترجمه لاندې ذکر کولې شی:

د عمرې کولو نه بغیر چه کله د واپس حکم اوشو نو په عامو مسلمانانو باندې دهغوی واپس کیدل سخت تیر شو. د حضرت عمر نه صبر اونه شو او عرض ئی او کړو یا رسول الله! ولې تاسو د الله تعالی په حقه نبی نه یئ؟ حضور پاک او فرمائیل ولې نه. حضرت عمر عرض او کړو آیا مونږ په حقه او هغوی په باطله باندې نه دې؟ حضور پاک او فرمائیل بې شکه. حضرت عمر رضی الله عنه عرض او کړو یا رسول الله! بیا مونږ دا ذلت ولې برداشت کړو؟ حضور پاک او فرمائیل زه د الله تعالی رسول او په حقه نبی یم دهغه د حکم نه خلاف نه شم کولې او هغه زما ملگری او امدادی دې. حضرت عمر رضی الله عنه عرض او کړو یا رسول الله! تاسو دا نه وو فرمائیلې چه مونږ به د بیت الله طواف کوو؟ حضور پاک ارشاد او فرمائیلو آیا ما وئیلی وو چه دې کال به طواف کوو؟ حضرت عمر رضی الله عنه جواب ورکړو چه نه، حضور پاک او فرمائیل چه بیا په دې کښې هیڅ شک نشته چه ته به بیت الله ته اورسې او د هغې طواف به کوي.

حضرت عمر رضی الله عنه بیان او کړو چه بیا زه حضرت ابوبکر رضی الله عنه له لارم او د هغوی نه مې هم دغه تپوس او کړو چه ای ابوبکر! ولې دا حقیقت نه دې چه حضور پاک د الله تعالی نبی صلی الله علیه و آله دې؟ هغوی هم او فرمائیل ولې نه؟ ما وئیل ولې مونږ په حقه باندې نه یو او زموږ دښمن به باطله باندې دې؟ هغوی وئیل ولې نه. ماتپوس او کړو چه بیا مونږ د دین په معامله کښې ولې ښکته شو؟ حضرت ابوبکر رضی الله عنه او فرمائیل حضور پاک بغیر د شک او شبهې د الله رسول دې او هغوی د خپل رب د حکم نه ډډه نه شی کولې او د هغوی رب هم دهغوی مددگار دې. پس د هغوی رښی په مضبوطیا سره اونیسه الله گواه دې چه هغوی په حق باندې دې. ما ورته او وئیل چه ولې حضور پاک مونږ ته دا نه وو وئیلی چه مونږ به زر بیت الله ته اورسو او د هغې طواف به کوو؟ هغوی جواب ورکړو چه دا هم صحیح ده لیکن حضور پاک تاته فرمائیلې وو چه هم دې کال کښې به ته بیت الله ته رسیږې؟ ما او وئیل نه. حضرت ابو بکر رضی الله عنه او فرمائیل بیا په دې کښې هیڅ شک شبه نشته چه ته به بیت الله ته رسیږې او د هغې طواف به کوي. (صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد والمصالحة مع أهل الحرب و کتابه الشروط، رقم الحدیث: ۲۷۳۱).

حضرت عمر رضی الله عنه فرمائی چه روستو زه په دغه خپله گستاخی باندې ډیر خیمانه شوم او د دې په کفارو کښې مې ډیر زیات مونږونه او کړه، روزې مې اوساتلې او صدقې او خیراتونه مې او کړل او ډیر زیات غلامان مې آزاد کړل. (بیرت مصطفی صلی الله علیه و سلم، صحیح حدیبیه، شرائط ص: ۳۳۷-۳۳۶).

تعالی به هغه دوباره دې مخکښې په شان کوی او هغه وخت به حضور پاک د داسې وینا کونکو خپې لاسونه پرې کوی. هغه وخت حضرت ابوبکر رضی الله عنه تشریف راوړو او حضرت عمر رضی الله عنه نی خاموش کړو او په منبر باندې وراوختو او د قرآن پاک دا آیت نسی تلاوت کړو: **(إِنَّكَ مَيِّتٌ وَأَنْتُمْ مُبْتَلُونَ ۝)** [الزمر: ۳۰]. **(وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ ۗ)** [آل عمران: ۱۴۲] دې آیاتونو اوریدو سره حضرت عمر رضی الله عنه فرمائی چه ما دا آیاتونه واوړیدل نو سکتته کښې راغلم او ماته داسې محسوسه شوه چه زما خپې لاسونه به زما بوج اوچت نه کړې شی او زه به په زمکه باندې راپریوخم (۱).

⑤ یو دریمه موقع هم ده چه د حضور پاک صلی الله علیه و آله د وفات نه پس کله چه حضرت ابوبکر رضی الله عنه د مرتدینو سره د جنگ اراده او کړه نو حضرت عمر رضی الله عنه د حضرت ابوبکر رضی الله عنه مخالفت او کړو. لیکن هغه په خپله فیصله باندې کلک ولاړ وو. په دې باندې روستو چه کله د حضرت ابو بکر رضی الله عنه په دې اقدام باندې ښه اثرات مخې ته راغلل نو حضرت عمر رضی الله عنه به فرمائیل په الله قسم الله تعالی په دغه معامله کښې د هغوی سینه کولاؤ کړې وه او ما او پیژندلو چه هغه په حق باندې وو. (۲)

۱ صحیح البخاری کښې دا واقعه په تفصیل سره په ډیرو مقاماتو کښې موجود ده. د افاده عام په خاطر د متعلقه واقعې ترجمه لاندې ذکر کولې شی:

حضرت عبدالله بن عباس رضی الله عنهما بیان کړې دي چه..... حضرت ابوبکر رضی الله عنه تشریف راوړو نو حضرت عمر رضی الله عنه خلقوته څه وئیل. حضرت ابوبکر رضی الله عنه او فرمائیل ای عمر کینه. لیکن حضرت عمر رضی الله عنه کیناستو نه انکار او کړو. په دې کښې خلقو حضرت عمر رضی الله عنه پرېخودو او حضرت ابوبکر رضی الله عنه له لارل. هغوی دا آیت تلاوت کړو: **(وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ ۗ)** اما بعدا تاسو کښې چه جا هم د حضرت محمد صلی الله علیه و آله عبادت کولو نو هغه ته دې معلومه وي چه هغوی وفات شوی دی او چا چه د الله تعالی عبادت کولو نو (د هغه معبود) الله همیشه ژوندې پاتې کیدونکې دې او په هغه باندې کله هم مرگ نه راځی. الله تعالی پخپله فرمائیلی دی: محمد صرف رسول دې، ددوی نه مخکښې هم رسولان تیر شوي دی..... الخ..... د زهری رحمته الله علیه بیان دې چه ماته سعید بن مسیب رضی الله عنه خبر را کړ چه حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائیل خدائی گواه دې چه ماته هغه وخت هوش راغلو کوم وخت چه ما د حضرت ابوبکر رضی الله عنه نه ددې آیت تلاوت واوړیدو. کله چه ما د هغوی نه تلاوت کولو سره واوړیده چه حضور پاک وفات شوي دې نو زه سکتې کښې راغلم او داسې مې محسوس کړه چه زما خپې به زما بوج اوچت نه کړې شی او زه به په زمکه راپریوخم. (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی صلی الله علیه وسلم ووفاته، رقم الحدیث: ۴۴۵۴).

۲ صحیح بخاری کښې ددې واقعې تفصیل موجود دي. د افاده عام په خاطر د متعلقه واقعې ترجمه لاندې ذکر کولې شی:

حضرت ابوهریره رضی الله عنه بیان کړې دي چه کله حضور پاک وفات شو نو حضرت ابوبکر رضی الله عنه خلیفه جوړ شو. بل طرف ته د عربو ډیرو قبائلو (د خلافت او زکوٰة وغیره) نه انکار شروع کړو نو (د هغوی به انکار باندې حضرت ابوبکر رضی الله عنه د هغه منکرینو سره د جنگ قصه او کړو په دې باندې) حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائیل تاسو د حضور پاک ددې فرمان چه ماته حکم را کړې شوي دې چه زه به خلقو سره تر هغې پورې چنگیم تر کومې پورې چه هغوی د لا اله الا الله گواهی ور نه کړی او کوم سړې چه ددې گواهی ور کوی.....

په حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ باندې یو اشکال اود هغه جواب: علامه ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ د حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ باره کښې یو اعتراض ذکر کړې دې چه څه وجه وه چه هغه په شریعت محمدی علی صاحبها الف الف تحیات باندې اکتفاء نه کوله، حالانکه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم هغه یو ځل منع کړې هم وو کوم وخت چه هغه د توریت خو پانرې راوړې وې نو حضور پاک هغه ته اوفرمائیل: «أمطها عننا یا همس». بیا ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ ددې اعتراض جواب نقل کړې دې. دتبع کتب نه دا خبره مخې ته راځي چه دا جواب په اصل کښې علامه خطابی رحمۃ اللہ علیہ ذکر کړې دې. (۱) دکوم تسهیل چه ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ نقل کړې دې. هغه دا چه د حضرت عمر رضی اللہ عنہ مخې ته د قرآن دوه روایات وو، یو: «إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا» [سورة بقره: ۱۲۲] او دویم: «أَنْ تَبْعُ مَلَأَ أَيْرَاهِمَ حَنِينًا» [النحل: ۱۲۳]. په اول آیت کښې حضرت ابراهیم عليه السلام د پوره انسانیت د پاره امام او گرځولې شو او دویم آیت کښې دملت ابراهیمی د اقتداء حکم ورکړې شو. نو هغه ددې خبرې نه په دې پوهه شو چه د نورو انبیاء کرامو نه جدا دوی لره امام جوړول اوددوی اقتداء کول مشروع دي. بیا دا خبره هم د هغوی مخې ته وه چه د بیت الله نسبت هم د دوی طرف ته دي چه هغوی ددې پاک کور تعمیر او کړو. بیانی د الله تعالی په حکم سره خلق ددې کور طرف ته راوغوښتل. بله دا خبره هم د هغوی مخې ته وه چه مقام ابراهیم کوم چه یو کانهرې دې په کوم چه د حضرت ابراهیم عليه السلام د قدم مبارک نشه هم باقی ده. دا داسې ده لکه چه یو سړي یو عمارت جوړ کړی او د یادگار د پاره په هغې باندې خپل نوم اولیکي دې د پاره چه د هغه د مرگ نه پس هم د هغه نوم باقی وی. چنانچه د حضرت عمر رضی اللہ عنہ په زړه کښې دا خبره راغله چه په دې مقام باندې دوه رکعته مونځ ادا کړې شی دا به هم داسې وی چه یو آباد کړې شوې کور ته راتلونکي سړي هلته لیکلې شوې د هغه عمارت د جوړونکي نوم لولی. نو د هغوی په دې رائي باندې د الله تعالی د طرف نه تائید اوشو او په حضور پاک باندې وحی نازل شوه. لیکن داسې اتباع یا د اتباع رائي د حضرت ابراهیم عليه السلام نه علاوه د بل نبی باره کښې نه ده شوې (۲).

..... نو زما د طرف نه به د هغه مال او خان محفوظ وی. د هغه حق اود هغه حساب د الله تعالی په ذمه وی، په موجودگني کښې څنگه هغوی سره جنګ کولې شي؟ په دې باندې حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ هغه ته جواب ورکړو په الله قسم زه به هر هغه سړی سره جنګ کوم څوک چه په زکوة او مونځ کښې فرق کوی. ځکه چه زکوة د مال حق دې په الله قسم که هغوی (زکوة کښې) د څلورو میاشتو د بچی ورکولو نه هم انکار او کړو لکه څنگه چه به هغوی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته ورکولو نوزه به هم هغوی سره جنګیوم. حضرت عمر رضی اللہ عنہ روستو اوفرمائیل په خدائی چه دا خبره د هغې نتیجه وه چه الله تعالی د حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ سینه کولاؤ کړې وه او روستو زه هم په دې نتیجه باندې اوسیدم چه حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ په حقه باندې وو. (صحيح البخاری، کتاب الزکوة، باب وجود الزکوة، رقم الحدیث: ۱۳۹۹).

(اعلام الخديث للخطابی: ۳۸۵/۱)

(کشف المشکل من حدیث الصحیحین لابن الجوزی، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث الرابع عشر: ۸۲/۱ او گورن دا اشکال او جواب علامه ابن الملتن رحمۃ اللہ علیہ په خپله شرح البخاری (التوضیح لشرح الجامع ....



فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَوْ اتَّخَذْنَا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى، فَنَزَلْتُ: ﴿وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى﴾ (البقرة: ۱۲۵): (یودا چه) ما عرض او کرو یا رسول الله ﷺ که چری مونزو مقام ابراهیم مصلی (دمونخ خانی) جور کرو نو بهتر به وی. نو آیت مبارک: ﴿وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى﴾ نازل شو.

قوله: "لَوْ اتَّخَذْنَا" کنبی د کلمه "لو" جواب به محذوف وی یعنی "لکان خیراً" یا به کلمه "لو" دتمنی د پاره ده. په دې صورت کنبی جواب د "لو" ضرورت نشته<sup>(۱)</sup>.

قوله: "وَاتَّخِذُوا" کنبی دوه قراءتونه دی یو: "وَاتَّخِذُوا" په کسری د خاء دا قراءت د ابن کثیر، عاصم، ابو عمرو، حمزه او کسائی رحمهم الله نه نقل دې. اودویم قراءت: "وَاتَّخِذُوا" په فتحي د خاء د نافع رضی الله عنه او ابن عامر رضی الله عنه نه نقل دې<sup>(۲)</sup>.

قوله: "وَأَيُّهُ الْحِجَابِ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَوْ أَمَرْتُ نِسَاءَكَ أَنْ يُحْجِبِينَ، فَإِنَّهُ يُكَلِّمُهُنَّ الْبُرُوقَ وَالْقَاجِرُ، فَنَزَلْتُ آيَةَ الْحِجَابِ:

دویمه موقع د حجاب د آیت ده. ما عرض او کرو چه یا رسول الله ﷺ که چری تاسو ازواج مطهرات ته په پرده کنبی د اوسیدو حکم او کړئی نو بهتره به وی. ځکه چه هغوی سره خبرې اتری کونکو کنبی ښه او بد هر قسم خلق وی. چنانچه د حجاب آیت نازل شو.

قوله: "وَأَيُّهُ الْحِجَابِ" ددې عطف په ماقبل کنبی په مقدر عبارت "اتخاذ المصلی مقام ابراهیم" باندې وی کوم چه د سیاق عبارت نه معلومیری. لفظ "آیه" باندې کسره وئیل زیات ظاهر دی په دې صورت کنبی به دا لفظ د عبارت د لفظ "ثلاث" نه بدل شی<sup>(۳)</sup>.

..... (الصحيح: ۴۱۱۲/۵-۴۱۱) کنبی د علامه ابن الجوزی رضی الله عنه په نسبت سره په دې الفاظو "فإن قلت: ما السر في أن عمر لم يقنع بما في شريعتنا حتى طلب الاستكان بيلة إبراهيم. وقد نهى الشارع عن مثل هذا حين أتى بأشياء من التوراة، فقال له: أمثلها منك يا عمر" ذکر کړې دې لیکن په دې کنبی په ظاهره د کاتب د غلطی د وجې نه په دوو مقاماتو کنبی سهوه شوې ده: یو لفظ "استکان" او بل د شارع صلی الله علیه وسلم قول "أمثلها منك يا عمر". ځکه چه د علامه ابن الجوزی رضی الله عنه کتاب "کشف المشکل من حدیث الصحیحین" کنبی چه ددې اشکال کوم عبارت دې په هغې کنبی داسې نه دې. اصل عبارت او گورئی: "فإن قيل: فما السر في أن عمر لم يقنع بما في شريعتنا حتى طلب الاستكان بيلة إبراهيم، وقد نهى رسول الله عن مثل هذا حين أتى بأشياء من التوراة، فقال: أمثلها عنا يا عمر". (کشف المشکل من حدیث الصحیحین لابن الجوزی، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث الرابع عشر: ۸۲/۱).

<sup>(۱)</sup> شرح الكرمانی: ۶۶/۴، الامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۱/۳.

<sup>(۲)</sup> جامع البیان عن تأویل آی القرآن المعروف بتفسیر الطبری. سورة البقرة، رقم الآية: ۱۲۵، ۵۲۲/۲ وقال الإمام الطبری رحمه الله: والصواب من القول والقراءة في ذلك عندنا: ﴿وَاتَّخِذُوا﴾ بكسر الغاء على تأویل الأمر باتخاذ مقام إبراهيم مصلى. (ایضاً: ۲/۵۲۴) الجامع لأحكام القرآن المعروف بتفسیر القرطبی، سورة البقرة، رقم الآية: ۳۷۳/۲، ۱۲۵.

<sup>(۳)</sup> شرح الكرمانی: ۶۷/۲-۶۶.

ددې نه علاوه دا لفظ مبتدا گرځولو سره مرفوع لوستل هم صحیح دی. (۱) په دې صورت کښې به خبر محذوف کذلك شی (۲).

د حجاب د آیت په مصداق کښې اختلاف: د علامه کرمانی رحمته او علامه برماوی رحمته د تصریحاتو مطابق د حجاب آیت: (يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ) (۳) دې (۳).

خو علامه کورانی رحمته د دې دواړو حضراتو د دې آیت تعیین ته د بعضی خلقو قول و نیلو سره سهوہ گرځولي ده او د حجاب د آیت نه مراد ئی هم د سورت احزاب آیت نمبر ۵۳:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ نَبِيٍّ أَنْهَ لِوَكِنِ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا إِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مَسْتَأْنِينَ بِحَدِيثٍ إِنْ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْخَرُ مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْخَرُ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا) (۴) گرځولي دي (۴).

قوله: وَاجْتَمَعَ نِسَاءُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْغُبَرَةِ عَلَيْهِ، فَقُلْتُ لِمَنْ: (عَسَى رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنْ أَنْ يُبَدِّلَكَ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكَ)، فَزَلَّتْ هَذِهِ الْآيَةُ " قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ:

دریمه موقع دا شوه چه د نسی کریم رحمته ازواج مطهرات د حضور پاک په خدمت کښې د غیرت د جذباتو د وجې نه راجمع شوې نو ما زجرأ هغوی ته او وئیل چه که رسول الله رحمته خفه شو او تاسو ټولو ته ئی طلاق درکړو نو هیڅ عجیبه نه ده چه دهغوی پروردگار حضور پاک ته تاسو نه بیترې بییانی ورکړی. نو هم د دې مضمون آیت نازل شو.

ددې آیت د نزول پس منظر تفصیلاً کتاب التفسیر سورة التحريم کښې راځی (۵).

قوله: "فَزَلَّتْ آيَةُ الْحِجَابِ": حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته لیکلی دی چه روایت تیر شوې دې په باب: خروج النساء إلی البراز کښې چه حضرت سوده رحمته بهر او وتله. حضرت عمر رحمته او وئیل چه مونږ او پیژندله چه سوده ده. دغه وخت د حجاب آیت نازل شو (۶). حضرت عمر رحمته له په کومه خبره غیرت راغلو؟

قوله: "وَاجْتَمَعَ نِسَاءُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْغُبَرَةِ عَلَيْهِ" غیرت خو یا په دې خبره باندي وو چه حضرت ماریه رحمته سره ئی صحبت او کړو یا په دې وجه چه حضرت ام سلمه رحمته کره ئی شات او خکل. دا پوره واقعه به په خپل ځانی راشی. هغه دا چه یو ځل حضرت عمر رحمته څه او فرمائیل په دې باندي د هغه بی بی هغه اورتلو. حضرت عمر رحمته او فرمائیل ته څوک ئی

(۱) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۱/۳، تحفة الباری: ۱۰۸/۲.

(۲) ضیاء الساری فی مسالک أبواب البخاری: ۲۹۵/۵.

(۳) شرح الکرمانی: ۶۷/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۱/۳.

(۴) الکوثر الجاری للکورانی: ۹۶/۲.

(۵) شرح الکرمانی: ۶۷/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح للبرماوی: ۱۵۱/۳.

(۶) تقریر بخاری شریف: ۱۴۸/۲.

خبرې کونکې؟ او د دې وجه دا وه چه د انصارو بنخو به هميشه خپلو خاوندانو سره بلاتکلف اونيغ په نيغه خبرې اترې کولې او د قریشو بنخې بالکل چپ او د خپلو خاوندانو مخې ته به ډيرې غلې اوسيدې صحابه کرامو رضي الله عنهم چه کله هجرت او کړو او مدينې منورې ته راغله نو د انصارو بنخو نه د قریشو بنخو دهغوی عادتونه او طور طريقې زده کړې خريوزه خريوزې ته په کتو سره رنگ نيسي. بنخې ورته عرض او کړو. خپلې لور ته نه گورې چه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته څنگه جواب ورکوي. حضرت عمر رضي الله عنه دې اوريدو سره ام المؤمنين حضرت حفصه رضي الله عنها کړه تشریف يورو او ورته ئی او فرمائيل چه بيا هيڅ کله داسې اونه کړې او خپلې بنې سره ضد مه کوه هغه د خپل حسن د وجې نه نياز بينه ده. که ستا څه ضرورت وی نو ماته وايه. حضرت عمر رضي الله عنه بيا ام سلمه رضي الله عنها له راغلو او ورته ئی او فرمائيل چه ما اوريدلی دی چه ته حضور پاك ته جواب ورکوي. حضرت ام سلمه رضي الله عنها او وئيل اي عمرا (ته) د حضور پاك د بيبيانو باره کبسي په هره خبره کبسي خپه تاووي. غرض دا چه د شاتو ځکلو واقعه يا د حضرت ماريه رضي الله عنها خبره پيښه شوه او حضور پاك په مشربه کبسي قيام او کړو (۱).

د حديث مبارک ترجمه الباب سره مناسبت: علامه کرمانی رحمته الله عليه او علامه برماوی رحمته الله عليه فرمائي چه دا حديث د ترجمه الباب په اول جزء باندې دلالت کوي او وړاندې حديث د ترجمه الباب په جزء اخير باندې دلالت کوي. دلالت به په دې توگه وی چه د مقام ابراهيم د مصداق باره کبسي علماء مختلف دی. نو چه کوم علماء د مقام ابراهيم نه مراد کعبه اخلي نو دهغوی په نيز خو مطابقت او دلالت واضح دې او کوم علماء چه د مقام ابراهيم نه مراد پوره حرم اخلي دهغوی په نيز به (وَأَخْبَدُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ط) کبسي کلمه مِنْ تبعيضيه وی. لکه چه حضرت عمر رضي الله عنه غوښتنه ښکاره کړه چه يا رسول الله زما زړه غواړي چه مقام ابراهيم يعنی د پوره حرم څه حصه قبله جوړه شی.

او د (مُصَلًّى) نه مراد به قبله يا د دې طرف ته مخ کولو سره د مونخ کولو ځائی وی. يان ترجمه الباب نه مراد ما جعلنا القبلة وما يتعلق بها واخستې شی او هم دا زياته ښکاره ده ځکه چه متبادر ال الفهم د مقام نه هغه کانري مراد دې په کوم چه حضرت ابراهيم عليه السلام ولاړ وو او د دې د نصب کيدو ځائی مشهور او معروف دې (۲).

علامه خطابی رحمته الله عليه ليکلی دی چه حضرت عمر فاروق رضي الله عنه د نبی کریم صلى الله عليه وسلم نه دې باره کبسي تپوس او کړو چه که چرې دا کانري مونخ گذار د قبلي او خپل مينخ کبسي کړي په کوم چه حضرت ابراهيم عليه السلام او دريدو سره تعمير او کړو او مونخ ادا کړي نو څنگه دې؟ نو د دې تپوس کولو باندې د الله تعالی د طرف نه مذکوره آيت مبارک نازل شوې وو (۳).

ابن رجب الحنبلي رحمته الله عليه فرمائي چه امام بخاری رحمته الله عليه دا حديث په دې باب کبسي ذکر کړو د دې

(۱) تقرير بخاری شريف: ۱۴۹/۲-۱۴۸.

(۲) شرح الكرمانی: ۶۷/۴ الامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوی: ۱۵۱/۳، تعفة الباری: ۱۰۹/۲.

(۳) اعلام الحديث للخطابی: ۳۸۵/۱.

مقصود دادې چه هغوی د الله تعالی ددې قول: (وَأُخْبِدُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلِّينَ) تفسیر بیت الله یعنی د کعبی (کومه چه حضرت ابراهیم علیه السلام تعمیر کړې وه) طرف ته مخ کولو سره موخه ادا کولو سره کړې دي.)

د بعضې شارحینو وینا ده چه زیاته مناسب خبره دا وه چه امام بخاری علیه السلام دا حدیث ماقبل باب کنبی ذکر کړې وې. نو حافظ ابن حجر علیه السلام ددې په جواب کنبی لیکلی دی چه داسې وینا کول صحیح نه دی ځکه چه هلته حدیث ابن عمر علیه السلام کنبی د مقام ابراهیم مصلی جوړولو تصریح وه او دلته حدیث عمر علیه السلام کنبی ددې تصریح نشته دي.)

تعليق: وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا جَمْحَرُ بْنُ أَيُّوبَ، قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا بَهْدَا [٢٢١٣، ٢٥١٢، ٢٦٣٢]

د ابو عبد الله نه مراد امام بخاری علیه السلام پنخپله دي. هغوی داتعلیق په دې مقام باندې او کتاب التفسیر کنبی تعلیقاً ذکر کړې دي. ددې تعلیق نه مقصود صرف دادې چه په دې تعلیق کنبی د حمید علیه السلام راوی د حضرت انس علیه السلام نه د سماع تصریح ده. په کوم سره چه د تدلیس نه امن حاصلیږي. او ماقبل روایت کنبی عنعنه وه یعنی عن حمید عن انس سره روایت ذکر وو او دلته حدیث حمید قال: سمعت أبا... دي.)

حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ٢٩٥]

٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: (بَيْنَا النَّاسُ بِقُبَاءٍ فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ

(١) فتح الباری لابن رجب الحنبلی: ٢٨٥/١.

(٢) فتح الباری لابن حجر: ٦٥٥/١-٦٥٤ ضیاء الساری فی مسالک أبواب البخاری: ٢٩٥/٥.

(٣) فتح الباری: ٥٢٠/١ عمدة القاری: ٢٠٥/٤.

(٤) أخرجه البخاری أيضاً فی التفسیر، سورة البقرة، باب قوله الله تعالى: (وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنُعَلِّمَ مِنْ يَتِيمِ الرُّسُولِ) رقم الحدیث: ٤٤٨٨ و باب: (وَلَكِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ) رقم الحدیث: ٤٤٩١ و باب: (وَمِنْ حَيْثُ عَرَّجْتَ قَوْلَ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ) رقم الحدیث: ٤٤٩٣ و باب: (وَمِنْ حَيْثُ عَرَّجْتَ قَوْلَ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ) رقم الحدیث: ٤٤٩٤. و فی اخبار الأحاد، باب ماجاء فی إجازة خبر الواحد الصدوق، رقم الحدیث: ٧٢٥١. و رواه مسلم فی صحیحه، فی المساجد، باب: تحویل القبلة، رقم الحدیث: ٥٢٦. و رواه الترمذی فی جامعه، فی الصلاة، باب: ماجاء فی ابتداء القبلة، رقم الحدیث: ٣٤١. و رواه النسائی فی سننه، فی القبلة، باب: استبانة الخطأ بعد الاجتهاد، رقم الحدیث: ٤٩٤. و فی جامع الأصول، حرف التاء الكتاب الأول: فی تفسیر القرآن و أسباب نزوله، سورة البقرة، رقم الحدیث: ٤٧٩، ١٤/٢. علامه ابن الملقن علیه السلام په التوضیح کنبی لیکلی دی چه د حضرت ابن عمر علیه السلام مد کوره حدیث صحیح البخاری کتاب الصلاة کنبی په دوو نورو ځایونو کنبی هم راځي او کتاب التفسیر کنبی به څلور ځل راځي. او گورنې و الکلام علیه من أوجه: أحدها: هذا الحدیث سیاتی ان شاء الله فی الصلاة فی موضعین، و فی التفسیر فی أربعة مواضع، و فی خبر الواحد، و قد سلف فی الإیمان من حدیث البراء. (التوضیح لابن الملقن: ٤١٤/٥-٤١٣). خو معلومیږي داسې چه د علامه ابن الملقن علیه السلام نه په دې باره کنبی سهوه شوې ده. ځکه چه دا حدیث کتاب الصلاة کنبی صرف هم په یو مقام باندې او کتاب التفسیر کنبی پنځو مقاماتو کنبی راغلي دي.

صلى الله عليه وسلم - قَدْ أُنزِلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةُ قُرْآنٌ، وَقَدْ أَمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ فَاَسْتَقْبَلُوهَا، وَكَانَتْ وُجُوهُهُمْ إِلَى الشَّامِ، فَاَسْتَدَارُوا إِلَى الْكَعْبَةِ.

د حدیث ترجمه: حضرت عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما او فرمائیل چه مونبره په قبا کنبی د سحر مونخ کولو چه په دې کنبی یو سرې راغلو هغه او وئیل چه په رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم باندي تیره شپه د قران پاک آیاتونه نازل شوی دی او هغه ته دکعبې طرف ته (په مونخ کنبی د مخ) کولو حکم شوی دی. لهذا تاسو هم د قبلي طرف ته مخ کړئ. دغه وخت هغوی د شام (ملك) طرف ته مخ کړې ولاړ وو په دې وجه هغوی د کعبې طرف ته راتاؤ شو.

تواهم رجال: د مذکوره حدیث شریف په سند کنبی ټول څلور رجال دی:

① عبدالله بن یوسف رضی اللہ عنہ: دا عبد الله بن یوسف تنیسی دمشقی رضی اللہ عنہ دی. د دوی مختصر

تذکره کشف الباری، کتاب بده الوحی، الحدیث الثانی او تفصیلی تذکره کتاب العلم، باب: لیعلم

العلم الشاهد الغائب لاندې تیره شوې ده (۱).

② مالك بن انس رضی اللہ عنہ: دا مالك بن انس بن مالك بن ابی عامر المدنی رضی اللہ عنہ دی. د دوی

تفصیلی تذکره کشف الباری کتاب الإیمان باب: من الدین، الفرار من الفتن لاندې تیره شوې ده (۲).

③ عبدالله بن دینار رضی اللہ عنہ: دا ابو عبد الرحمن عبد الله، بن دینار ورشی عدوی مدنی رضی اللہ عنہ دی. د

دوی تفصیلی تذکره کتاب العلم، باب: قول المحدث: حدثنا وأخبرنا وأنبأنا لاندې تیره شوې ده (۳).

④ عبدالله بن عمر رضی اللہ عنہما: دا د مشهور صحابی حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ خوئی حضرت عبد الله

بن عمر رضی اللہ عنہما دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: الإیمان وقول النبی صلی الله علیه

وسلم: بنی الإسلام على خمس لاندې تیر شوی دی (۴).

د حدیث شرح: قَالَ: بَيْنَا النَّاسُ بِقَبَاءٍ فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ: حضرت عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما فرمائی

چه مونبره په قبا کنبی د سحر مونخ کولو.

قوله: "بَيْنَا": دا کلمه نورو نسخو کنبی په میم سره یعنی "بَيْنَنَا" ده مطلب ددې "بَيْنَ أوقات کذا"

دې یعنی د هغه اوقاتو په مینځ کنبی چه خلق په قبا کنبی..... إلخ (۵) کلمه "بَيْنَنَا" صیغه

د ظرف ده د مفاجاة په معنی کنبی. ددې استعمال د جملې طرف ته په اضافت سره کیږي

اودا د خپل معنوی تمامیت د پاره د جواب هم محتاج وی. چنانچه په دې مقام باندي ددې

(۱) کشف الباری: ۲۸۹/۱، ۱۱۳/۴.

(۲) کشف الباری: ۲۹۰/۱۱، ۸۰/۲.

(۳) کشف الباری: ۲۵۸/۱، ۱۲۵/۳.

(۴) کشف الباری: ۶۳۷/۱.

(۵) التوضیح لابن الملقن: ۴۱۴/۵.

کلمې د اضاقت مبتداء او خبر (الناس بقوله صلاة الصبح) طرف ته دي. لهذا مضاف او مضاف اليه ملاويدو نه پس د دې جواب به راتلونکې جمله (اذ جاءهم آت) وي (۱).

قوله: "الناس" کښې الف لام عهدی ذهني دي. مراد اهل قباء او هغه کسان دي چه هغه وخت هلته حاضر وو (۲).

قوله: "قَبَاءٌ" د صحيح مشهور قول مطابق دا کلمه په مد سره لوستلې کيږي. او د مد نه علاوه قصر سره، مذکر هم، مؤنث هم، منصرف هم او غير منصرف هم استعمالیږي. دامدینې سره نيزدې د مدینې عوالی کښې د يو ځای نوم دي (۳)، او دې نه مراد مسجد قباء دي (۴).  
د قبلي د بدلیدو حکم په کوم مونځ کښې اوشو؟

قوله: "صَلَاةُ الصُّبْحِ" په دې حديث کښې د سحر د وخت ذکر دي خو دې نه مخکښې باب: "التوجه نحو القبلة" کښې د مازيگر د وخت ذکر دي. نو په دې دواړو کښې څه منافات نشته دي. تطبيق ممکن دي. هغه داسې چه کوم سړې مدينه کښې اوسيدونکي وو هغه ته خبر د مازيگر په وخت کښې رسيدلې وو او کوم چه د مدينې نه بهر (مثلاً قباء وغيره کښې) اوسيدونکي وو هغه ته خبر په صبا نځ ورځ د سحر په مونځ کښې به رسيدلې وي (۵).  
قوله: «إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ، فَقَالَ: «إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَنْزَلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ قُرْآنٌ. چه په دې کښې يو سړې راغلو هغه او وئيل چه په رسول الله ﷺ باندي تيره شپه د قرآن آیاتونه نازل شوي دي.

دا راتلونکې سړې څوک وو؟ "إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ" دا راتلونکې څوک وو؟ په دې باره کښې علامه کرمانی رحمته الله عليه ليکلی دی چه دهغه نوم عباد بن ابي بشر وو (۶). او علامه ابن الملقن رحمته الله عليه درې نومونه ذکر کړي دي په دې دريو کښې يو وو عباد بن نهيك، عباد بن ابن بسر او عباد بن ابن وهب (۷).

قوله: "أَنْزَلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ" په دې کښې لفظ "اللَّيْلَةَ" مطلق دي دکوم نه مراد چه تيره شوې ورځ او هغې سره متصل شپه ده (۸).

قوله: "قُرْآنٌ" نه مراد دمکمل قرآن نازلیدل نه دی بلکه د بعضې قرآن نازلیدل مراد دی. ځکه

(۱) عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۵۵/۱، عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

(۳) شرح الکرماني: ۶۸/۴، التوضیح لابن الملقن: ۴۱۴/۵، عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۵۵/۱.

(۵) شرح الکرماني: ۶۸/۴، په دې موضوع باندي تفصیلی کلام کشف الباری: ۲/۲۹۴-۳۹۲ کښې تیر شوي دي.

(۶) شرح الکرماني: ۶۸/۴، عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

(۷) التوضیح لابن الملقن: ۴۱۴/۵، الإعلام بفوائد عمدة الأحكام لابن الملقن: ۴۸۹/۲.

(۸) فتح الباری: ۶۵۵/۱، عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

چه په دې باندي تنوين د تبعيض دې يعنی د قران يو شو اياتونه نازل شوي دي (۱). اود دغه اياتونو نه مراد «قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ» والا اياتونه دي (۲).

قوله: وَقَدْ أَمْرًا أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ، فَاسْتَقْبَلُوهَا: او هغوی ته د کعبې طرف ته (په مانځه کبې د مخ) کولو حکم شوي دي. لهذا تاسو هم قبلي طرف ته مخ کړئ.

قوله: «وَقَدْ أَمْرًا» حضرت محمد ﷺ ته حکم ورکړې شو (۳). هم په دې کبې دا امر موجود دي چه د حضور پاك به هسسط سره د حضور پاك امت ته هم دا حکم ورکړې شوي. هم د دې نه هم دا معلومېږي چه د امت د پاره د حضور پاك د افعالو تابعداري کول هم هغه شان ضروري دي ځنګه چه د رسول الله ﷺ د اقوالو تابعداري کول، تر هغه وخته پورې چه د دغه فعل نبوي باره کبې څه قرينه قائم شي چه دا فعل نبی اکرم ﷺ سره خاص دي (۴).

قوله: «فَاسْتَقْبَلُوهَا» په دې کلمه کبې دوه احتمالات دي. رومبې احتمال دا دي چه دا امر صيغه وي (د حديث ترجمه کبې هم د دې مطابق ترجمه کړې شوې ده)، اودويم احتمال دا دي چه دا فعل ماضي وي په دې صورت کبې به دا جمله د خبر د پاره وي چه نبی کریم ﷺ او صحابه کرامو ﷺ په مونځ کبې خپل مخ د قبلي طرف ته کړې دي (۵).

ابن الملقن رحمه الله فرمائي چه دا د امر صيغه لوستل د ماضي صيغه لوستلو نه زیاته بهتر او مشهوره ده. ابن عبد البر رحمه الله ليکلي دي چه د بخاري اکثر رواة هم په دې باندي دي (۶).

قوله: وَكَانَتْ وُجُوهُهُمْ إِلَى الشَّامِ، فَاسْتَدَارُوا إِلَى الْكَعْبَةِ: هغه وخت هغوی د شام (ملك) طرف ته مخ کړې شوي وو. په دې وجه هغوی د کعبې طرف ته تاؤ شو. مذکوره دواړه جملې د حضرت ابن عمر رضي الله عنهما دي نه چه د دغه خبر ورکونکی سړی (۷).

د حديث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه کرمانی رحمه الله ليکي چه د دې حديث د ترجمه الباب د رومبې جزء سره مطابقت خو «فَاسْتَقْبَلُوهَا» د امر په صيغه کبې دي. او په دويم جزء باندي دلالت په دې جهت سره دي چه د مانځه شروع هغه خلقو د داسې قبلي طرف ته مخ کولو سره کړې وه کومه چه منسوخ شوې وه. دکوم علم چه هغوی ته نه وو. چنانچه هغوی د هيرونکو په شان شو. بيا د اعلان کونکی اعلان اوريدوسره هغوی ته د صحيح قبلي علم

(۱) شرح الکرمانی: ۶۸/۴. اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوی: ۱۵۲/۳. فتح الباری: ۶۵۵/۱.

(۲) عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۵۵/۱.

(۵) شرح الکرمانی: ۴/۶۸.

(۶) التوضیح لابن الملقن: ۴۱۴/۵. خو علامه دامیني رحمه الله د دې برعکس ذکر کړی دی چه د جمهورو روااتو مطابق دا ماضي صيغه ده اود اصیلي په روايت کبې د امر صيغه ده. ونی گورثی: المصابيح الجامع الدمايني: ۱۱۵/۲. والله اعلم بالصواب.

(۷) شرح الکرمانی: ۶۸/۴. اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح للبرماوی: ۱۵۳/۳. عمدة القاری: ۲۱۹/۴.

اوشو. ددی نه پس هغوی هم په مونخ کښې خپل مخ تاؤ کړو نوچه کوم مونخ دهغوی د غیر قبلې طرف ته اوشو د هغه مونخ هغوی ته د راگرخولو حکم اونه کړې شو. اوهم دغه خبره د ترجمه الباب په دویم جزء کښې ذکرده (۱).

ابن الملقن رحمته الله صرف هم دومره خبره کړې ده چه ددی حدیث مطابق د انحراف قبلې په صورت کښې هم د مونخ د راگرخولو حکم نه ورکول هم داسې دی لکه مجتهدل القهله چه په هغه باندې هم د مونخ واپس راگرخول لازم نه دی (۲).

د حدیث مبارک نه مستنبط شوی فوائد او احکام: د مذکوره حدیث شریف نه ډیر احکام مستنبط کيږي په هغې کښې څه لاندې نقل کولې شی:

① معلومه شوه چه د حضور پاک په توسط سره دهغوی امت ته هم دا حکم ورکړې شو. هم ددی نه دا هم معلومیږي چه د امت د پاره د حضور پاک د افعالو تابعداری کول هم هغه شان ضروری دی څنگه چه د حضور پاک د اقوالو تابعداری کول ترهغه وخته پورې چه د فعل نبوی باره کښې څه قرینه قائم شی چه دا فعل د نبی کریم صلی الله علیه و آله سره خاص دی (۳).

② د افعال نبوی صلی الله علیه و آله تابعداری کولو کښې که ددی عمل په وجوب باندې څه قرینه قائم وي نو ددی فعل اتباع کول به واجب وي، په بل صورت کښې به د دلیل په قائمیدو باندې د تابعدارتی حکم متعین کيږي (۴).

③ ددی حدیث نه د خبر واحد د مقبول کیدو علم کيږي (۵).

④ دا هم معلومه شوه چه که مونخ گذار سرې د غیر مونخ گذار خبره واوری نو دا د هغه د پاره نقصانی نه ده (۶).

⑤ دا هم معلومیږي چه کومو کسانو ته د ورځې یو حکم نه وی رسیدلې نو د هغوی نه به د دغه حکم تپوس پوښتنه نه کيږي تر کومې چه هغه د دین حکم هغوی ته اونه رسیږي (۷).

⑥ ددی حدیث نه دا حکامو د منسوخ کیدو د جواز علم هم کيږي (۸).

(۱) شرح الکرمانی: ۶۸/۴

(۲) التوضیح لابن الملقن: ۴۱۴/۵، المصابیح الجامع للدمامینی: ۱۱۵/۲، الامع الصبیح بشرح الجامع التصحیح للبرماوی: ۱۵۱/۳، فتح الباری: ۶۵۵/۱، عمدة القاری: ۲۱۸/۴.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۵۵، عمدة القاری: ۲۲۰/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۲۰/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۲۰/۴، الإعلام بفوائد الأحکام لابن الملقن: ۴۹۸/۲.

(۶) عمدة القاری: ۲۲۰/۴.

(۷) الإعلام بفوائد عمدة الأحکام لابن الملقن: ۴۹۹/۲، عمدة القاری: ۲۲۰/۴. واضحه دي وی چه دا حکم دارالاسلام کښې د آزاد عاقل بالغ د پاره نه دي بلکه دهغوی د پاره خو بېخپله د بلوغت نه مخکښي یا د بلوغت نه پس متصل احکامات دینیه زده کول ضروری دی. دهغوی داسې عذر چه مونخو ته خو داسې حکم هاورسیدلې نه دي د الله تعالی په نیزبه مسموع نه وی. والله اعلم بالصواب.

(۸) الإعلام بفوائد عمدة الأحکام لابن الملقن: ۴۹۷/۲.



④ داهم معلومیری چه د "الليلة" اطلاق په تیره شوی شپه باندي خو صحيح دي ليکن د راتلونکې شپې دپاره صحيح نه دي (١).

حديث باب: (دریم حديث) [حديث نمبر ١٣٩٤]

٣٠٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنِ الْحَكَمِ عَنِ إِبْرَاهِيمَ عَنِ عَلْقَمَةَ عَنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ (٢) صَلَّى النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الظُّهْرَ خَمْسًا فَقَالُوا أَزِيدُ فِي الصَّلَاةِ قَالَ «وَمَا ذَاكَ» قَالُوا صَلَّيْتَ خَمْسًا فَتَنَّى رَجُلِيهِ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ.

دهديث ترجمه: حضرت ابن مسعود رضي الله عنه نه روايت دي چه يو ځل رسول الله صلى الله عليه وسلم د ماسپښين مونځ ورکړو او پنځه رکعتونه ئي اوکړه. نو خلقو عرض اوکړو آيا په مونځ کښې څه د زياتي حکم کړې شوي دي؟ حضور پاك او فرما ئيل څه مطلب؟ خلقو عرض اوکړو تاسو پنځه رکعته اوکړل. دي اوريدو سره حضور پاك خپلې خپې راغونډې کړې او دوه سجدي ئي ادا کړې.

تراجم رجال. د مذکوره حديث شريف په سند کښې ټول اووه رجال دي:

① مسدد رضي الله عنه: دا مسدد بن مسرهد بن مسر بل بن مرعبل الاسدي بصري رضي الله عنه دي. د بعضو په

نيز د دوي نوم عبد الملك بن عبد العزيز دي. د دوي مختصر حالات كشف الباري كتاب الايمان،

باب: من الايمان ان يحب لأخيه ما يحب لنفسه، لاندي او تفصيلي حالات كتاب العلم، باب: من خص

بالعلم قوما دون قوم كراهية أن لا يفهموا د دويم حديث لاندي تير شوي دي (٣).

② يحيى رضي الله عنه: دا يحيى بن سعيد بن فروخ القطان تميمي رضي الله عنه دي. د دوي كنيث ابو سعيد

دي. د دوي مختصر حالات كشف الباري كتاب الايمان، باب: من الايمان ان يحب لأخيه ما يحب

لنفسه لاندي تير شوي دي (٤).

③ شعبه رضي الله عنه: دا امير المؤمنين شعبه بن الحجاج بن واسطي بصري رضي الله عنه دي. د دوي تذکره

كشف الباري، كتاب الايمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده، لاندي تيره شوي ده (٥).

④ حكيم رضي الله عنه: دا حكيم بن عتيبه الكندي الكوفي رضي الله عنه دي. د دوي احوال كشف الباري، كتاب

العلم، باب: السمرق العلم لاندي تير شوي دي (٦).

١ (الإعلام بفوائد عمدة الأحكام لابن الملقن: ٥٠١/٢).

٢ (مرئجه رقم الحديث: ٣٩٢).

٣ (كشف الباري: ٢/٢، ٥٨٨/٤).

٤ (كشف الباري: ٢/٢).

٥ (كشف الباري: ٦٧٨/١).

٦ (كشف الباري: ٤١٤/٤).

⑤ **ابراهيم رضي الله عنه**: دا ابو عمران ابراهيم بن يزيد النخعي رضي الله عنه دي. ددوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: ظلم دون ظلم، لاندې تیر شوی دی (۱).

⑥ **علقمه رضي الله عنه**: دا علقمه بن قیس بن عبد الله نخعی رضي الله عنه دي. ددوی احوال کشف الباری کتاب الإیمان، باب: ظلم دون ظلم لاندې تیر شوی دی (۲).

⑦ **عبدالله رضي الله عنه**: دامشهور صحابئ رسول حضرت عبد الله بن مسعود رضي الله عنه دي. ددوی احوال کشف الباری کتاب الإیمان، باب: ظلم دون ظلم لاندې تیر شوی دی (۳).

د هدیث شرح: د مذکورہ حدیث مکمل شرح ماقبل باب: التوجه نحو القبلة حيث كان كنيته حدیث نمبر ۲۰۱ لاندې تیر شوی ده. په دې باب کښې هم د هغه سابقه حدیث څه تکرره ذکر کولو نه مقصود صرف داخودل یا واضح کول دی چه په غلطی سره سلام گرځولو نه پس حضور پاک د قبلي نه تاویدو سره د خلقو طرف ته مخ کړو او کیناستو. په سهوه باندې خبردار کولو نه پس دوباره قبلي طرف ته تاو شو او سجده سهوه ئی او کړه. که چرته د قبلي نه تاویدو سره حضور پاک د مونخ نه وتلې وې نو صرف په سجده سهوه باندې به ئی اکتفاء نه کوله بلکه مونخ به ئی راگرځولو لیکن حضور پاک داسې اونه کړل. لهذا ددې نه معلومه شوه چه په خطا د قبلي نه تاویدل مونخ واپس راگرځول نه واجبوی (۴).

د هدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت: د مذکورہ حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت ښکاره دي چه حضور پاک سهوه شو او حضور پاک صرف سجده سهوه او کړه مونخ ئی راونه گرځولو او هم دغه څیز په ترجمه الباب کښې ذکر دي (۵).

(۱) کشف الباری: ۲۵۳/۲.

(۲) کشف الباری: ۲۵۶/۲.

(۳) کشف الباری: ۲۵۷/۲.

(۴) عمدة القاری: ۲۲۰/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۲۰/۴.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## ۱۱- أبواب المساجد

ماقبل سره مناسبت: علامه عینی رحمته اللہ علیہ فرمائی ہے کہ احکام قبلہ نہ پس اوس د ابواب مساجد پہ مینخ کنسی مناسبت واضح دی. ددی باب نہ داخله تر باب سترة الامام پوری دتولو ابوابو تعلق هم دمساجدو سره دی. (۱)

## ۱- بَابُ حَكِّ الْبِزَاقِ بِالْيَدَيْنِ مِنَ الْمَسْجِدِ

داباب پہ جمات کنسی دپریوتلی توکانرې او بلغم په خپلو لاسونو سره د صفا کولو په بیان کنسی دی.

د ترجمه الباب مقصد:

د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته اللہ علیہ واتی: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته اللہ علیہ فرمائی ہے چونکه د قبلې ذکر شروع وو نو امام بخاری رحمته اللہ علیہ ۵۵ ابواب مساجد سره متعلق د باب (حک البزاق بالیدین من المسجد نه تر باب المساجد علی طرق المدینة) منعقد کرل او دتولو خلاصه داده ہے د مساجدو باره کنسی تشدیدات او وعیدات په کثرت سره راغلی دی. په یو روایت کنسی دی چه یو سری په جمات کنسی فضول خبرې کولې. حضور پاک او فرمائیل «لاردها الله عليك» او په کنز العمال کنسی د جماتونو په آدابو کنسی داسې روایات ذکر کړې شوی دی د کوم تقاضا چه داده ہے په جماتونو کنسی دې هیخ قسم کلام اونه کړی صرف تلاوت قرآن، د الله ذکر او مونخ دې او کړی. چنانچه په یو روایت کنسی دی چه په جمات کنسی خندا په قبر کنسی د تیارو سبب دی. یو خل حضرت عمر رضی اللہ عنہ په مسجد نبوی کنسی دوه کسان په زوره خبرې کولو باندي اولیدل نو وئی فرمائیل چه که تاسو ددی خانی اوسیدونکې وئی نو تاسو به مې وهلی وئی. نو امام بخاری رحمته اللہ علیہ ابواب المساجد او ترل او په دې کنسی نی دوه خیزونه ذکر کړی دی. یو خو هغه چه د امام بخاری رحمته اللہ علیہ په نیز په آدابو کنسی داخل دی. هغه ئی ثابت کړو لکه حک البزاق او بل نی د هغه خیزونو استثناء او کړه د کوم چه په جمات کنسی کول جائز دی. لکه چه ددی عموم ئی مقید کړو لکه چه «من دعی الی الطعام فی المسجد».

امام بخاری رحمته اللہ علیہ په ترجمه الباب کنسی د «ید» قید لگولې دې د «ید» ذکر صرف په یو روایت کنسی دی. حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی چه په ترجمه کنسی تعمیم دې د بالید او بغيره، «ید» احترازی قید نه دی او د بعضی علماؤ رانی داده چه امام بخاری رحمته اللہ علیہ د «بالید» په قید سره «تول بنفسه» طرف ته اشاره او کړه چه پخپله کول پکار دی. اوس نی که په لاس سره لرې کوی او که په بل خیز سره.

او د حضرت شاه ولی الله صاحب رحمته اللہ علیہ رانی مبارک په خپلو تراجمو کنسی داده چه د امام

(۱) عمدة القاری: ۲۲۰/۴.

بخاری رضی اللہ عنہ مقصد کله کله ابواب نه وی بلکه روایات وی. چنانچه دلته هم غرض ابواب نه دی بلکه روایات دی او باب نی د روایاتود الفاظو لحاظ کولوسره د تفنن په توگه او ترلو گنی د دواړه بابونو (باب الهزاق او باب المخاط) غرض هم یو دی او هغه ده ازاله.

اوزما رانې داده چه امام بخاری رضی اللہ عنہ دوه بابونه ترلوسره هزاق و مخاط کنبی فرق او کړو چه هزاق کنبی خو ید کافي کيږي ځکه چه په دې کنبی دننه لزوجت نه وی او مخاط کنبی ید نه کافي کيږي بلکه ددې د پاره د حصی وغیره ضرورت وی ځکه چه په دې کنبی لزوجت وی. (۱)

د علامه شبیر احمد عثمانی رضی اللہ عنہ وائې: علامه شبیر احمد عثمانی صاحب رضی اللہ عنہ فرمائی چه د حک الهزاق بالید دوه مطلبونه کیدې شی ① بعضو وئیلی دی چه "بالید" د "بالعصا ونحوه" په مقابله کنبی دې یعنی لرگی وغیره سره نه بلکه بغیرد واسطې په لاس سره دې هغه لرې کړی. ② بعضو وئیلی دی چه "بالید" د "بالغیر" په مقابله کنبی دې یعنی پخپله په خپل لاس سره دې هغه لرې کړی، بل ته دې حکم نه کوی. (۲)

د علامه ابن رجب الحنبلی رضی اللہ عنہ وائې: علامه ابن رجب الحنبلی رضی اللہ عنہ فرمائی چه د امام بخاری رضی اللہ عنہ ددې تبویب نه دا خبره معلومیږي چه حضور پاک پخپله او بغیرد څه حائله په خپل لاس مبارک سره هغه بلغم صفا کړو. په دې باندې دلیل دادې چه ددې باب نه پس نی باب حک المخاط بالحمی من المسجد په عنوان سره قائم کړې شوې دې. یعنی راتلونکی باب کنبی د "بالحمی" قید او په دې باب کنبی د "بالید" قید احترازی دې نه چه واقعی. (۳)

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۵۰/۲-۱۴۹، الكنز المتواری: ۹۷/۴. سراج القاری کنبی د حضرت شیخ الحدیث صاحب رضی اللہ عنہ یو بل تقریر نقل دې: حک الهزاق بالید په تشریح کنبی حضرت شیخ الحدیث صاحب رضی اللہ عنہ فرمائی چه ددې باب لاندې امام بخاری رضی اللہ عنہ درې روایتونه نقل کړی دی لیکن د "ید" ذکر صرف په رومی روایت کنبی دې. حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ او علامه عینی رضی اللہ عنہ فرمائی آی سواء کان، بآله ام لا مطلب دادې چه د ید قید، قید احترازی نه دې بلکه په ترجمه کنبی تعمیم دې که هغه په لاس وی او که په بل څه خیز سره وی مقصد دغه گندگی د الله تعالی د کور نه لرې کول دی. صحیح مسلم او سنن ابوداؤد کنبی د حضرت جابر رضی اللہ عنہ بیان دې چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم زمونږ جمات ته تشریف راوړو او د حضور پاک په لاس مبارک کنبی عرجون (د کهجورې د غنچې جرړه کومه چه ککه وی او د غنچې پرې کیدو باندې په ونه کنبی اوچیدو سره باقی پاتې کيږي) ابن طاب وو. په دې کنبی د حضور پاک نظر مبارک په جمات کنبی قبلې طرف ته پروت بلغم باندې پریوتلو نو حضور پاک هغه د عرجون په ذریعه صفا کړو. دې نه پس زمونږ طرف ته متوجه شو وئې فرمائیل: (ایکم یحب ان يعرض الله عنه بوجهه، ثم قال: إن أحدکم إذا قام یصلی، فإن الله قبل وجهه، فلا یبصقن قبل وجهه، ولا عن یمین، ولیبزیق عن یساره تحت رجله الیسری، فإن عجلت به بادره، فلیقل بثوبه هكذا، ووضعه علی فیه ثم دلکه، الحدیث). ددې نه معلومه شوه چه د حضور پاک په لاس مبارک کنبی چه کوم لرگی وو د هغې په مدد سره نی هغه بلغم صفا کړو. (سراج القاری: ۴۴۹/۲-۴۴۸).

(۲) فضل الباری: ۱۱۶/۳.

(۳) فتح الباری لابن رجب الحنبلی: ۱۰۸/۳.

حديث باب (رومي حديث) [حديث نمبر ٣٩٧]

٣٠٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَنَسٍ (١) أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَأَى نُخَامَةَ فِي الْقِبْلَةِ، فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَيْهِ حَتَّى رَيْسَ فِي وَجْهِهِ، فَقَامَ فَحَكَهُ بِيَدِهِ فَقَالَ «إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ فِي صَلَاتِهِ، فَإِنَّهُ يَنَاجِي رَبَّهُ - أَوْ إِنَّ رَبَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ - فَلَا يَبْزُقَنَّ أَحَدَكُمْ قَبْلَ قِبَلَتِهِ، وَلَكِنْ عَنِ بَسَارِهِ، أَوْ تَحْتَ قَدَمَيْهِ». ثُمَّ أَخَذَ طَرَفَ رِدَائِهِ فَبَصَقَ فِيهِ، ثُمَّ رَدَّ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ، فَقَالَ «أَوْ يَفْعَلْ هَكَذَا».

ترجمه حديث: حضرت انس بن مالك رضي الله عنه نه روایت دي چه يو خل حضور پاك د قبلي طرف ته ديوال باندي بلغم لكيدلي اوليدلو نو په حضور پاك باندي دا خبره ډيره سخته اولگيدله تردې چه د حضور پاك په مخ مبارك باندي ددې اثر ښكاره شو. بيا حضور پاك په ولاړه باندي هغه په خپل لاس مبارك سره اوتوگلو. بياني او فرمائيل په تاسو كښي چه څوك د مونځ د پاره اودرېږي نو هغه خپل پروردگار سره مناجات كوي. نور ئي او فرمائيل لكه چه بيشكه د هغه رب د هغه او د قبلي په مينځ كښي وي. په دې وجه دي يو كس هم خپل د قبلي طرف ته هيڅ كله نه توکي او خپل كس طرف ته يا د خپو لاندي د توگلو گنجائش شته. ددې نه پس حضور پاك د خپل خادر مبارك غاړه اونيوله او په هغې كښي اوتوكل او وئى مېرل او وئى فرمائيل پل دي داسې كوي.

تراجم رجال: د مذكوره حديث شريف د ټولو رجالو ذكر ما قبل كښي تير شوې دي (٢).

شرح حديث: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى نُخَامَةَ فِي الْقِبْلَةِ، فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَيْهِ: يو خل حضور پاك د قبلي په ديوال باندي بلغم لكيدلي اوليدلو نو په حضور پاك باندي دا خبره ډيره سخته تيره شوه.

قوله: «نُخَامَةَ» ابن اثير رحمته الله ليكلي دي چه نخامه هغه بلغم وي چه د حلق د آخر او د خاء معجمه د مخرج نه راوځي (٣) علامه طيبي رحمته الله هم دغه ذكر كړي دي (٤). ليكن لېږم ياد كښي راځي چه ملا علي قاري رحمته الله په دې رد كړې دي (٥). او په مغرب كښي ئي

(١) برتخريجه في كتاب الرضوء باب: البصاق والمخاط ونحوه في الثوب، رقم الحديث: ٢٤١.

(٢) د مذكوره حديث مبارك مكمل سند كتاب الايمان، باب: خوف المؤمن أن يعبط عمله كښي تير شوې دي د رجال د احوال د پاره اوگورئي: كشف الباري: ٥٧١/٢.

(٣) النهاية في غريب الحديث والأثر، المادة: ن خ م: ٧٢٣/٢.

(٤) الكاشف عن حقائق السنن المعروف بشرح الطيبي، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ٧٤٦، ٢٥٩/٢.

(٥) ملا علي قاري رحمته الله ليكلي دي چه د علامه ابن اثير رحمته الله خبره صحيح نه ده ځكه چه د خاء معجمه مخرج اقصي الحلق نه بلكه اذق الحلق دي. يعنى د ابن اثير رحمته الله د قول مطابق نخامه هغه توكانرې يا بلغم دي كوم چه د اقصي حلق او مخرج خاء نه راوځي، خو مخرج خاء اقصي حلق نه بلكه اذق حلق دي، چنانچه توكانرې په يو وخت د دغه دواړو مقاماتو نه نشي وتلې. مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ٧٤٦، ٤٢٠/٢.

ليكلى دى چه هغه بلغم چه د پوزي سونر كولو په وخت د پوزي نه اوځي (١).  
 په دې باره كښې حافظ ابن حجر رحمته الله عليه فرمائي چه نخامه باره كښې وئيلى شوى دى چه دې نه  
 مراد هغه بلغم دې كوم چه د سينې نه اوځي اودا هم وئيلى شوى دى چه كه دا لفظ په عين  
 سره وي يعنى نخامة نودې نه مراد د سينې نه وتونكې بلغم دې او كه دا لفظ په ميم سره وي  
 يعنى نخامة نودې نه مراد د سر د طرف نه راتلونكې بلغم دې (٢).

قوله: "فى القبلة" نه مراد هغه ديوال دې كوم چه د قبلي طرف ته وو (٣).

قوله: "فشق ذلك" د ذلك مشاړاليه به هغه منظر شى كوم چه د حضورپاك مخې ته د قبلي د  
 ديوال راغلي وو. يعنى دا منظر په حضورپاك باندي ډير سخت تير شو يا د مشقت سبب  
 جوړ شو.

قوله: "حتى ربي فى وجهه، فقام فحككه بيده" تردې چه د حضورپاك په مخ مبارك باندي ددې اثر  
 راښكاره شو. بيا حضورپاك اودريدو او دائي په خپل لاس مبارك سره اوتوكل.

قوله: "ربي" فعل مجهول دې، ددې ضمير كوم چه به نائب فاعل جوړيږي. ددې مرجع به د  
 "فشق ذلك عليه" معنى شى كراحت، ناخوښى اوبد لكيدل وغيره (٤). په رواياتو كښې دا هم  
 ذكر دې چه ددې منظر د وجې نه د ناخوښى اثرات د حضورپاك په مخ مبارك باندي اوليدلي  
 شو (٥).

اود سنن النسائي په روايت كښې دى چه د غصې د وجې نه د حضورپاك مخ مبارك تك سور  
 شو (٦). دې نه علاوه په صحيح بخارى كښې "العمل فى الصلاة" او "الأدب" كښې د حضرت ابن  
 عمر رضي الله عنهما يو حديث دې په كوم كښې چه دى چه نبى كريم صلى الله عليه وسلم ددې منظر د وجې په جمات  
 والو باندي غصه هم شو (٧).

(١) المغرب فى ترتيب المعجم، المدة: ن خ م: ٢٩٤/٢.

(٢) فتح الباري: ١/٦٥٨.

(٣) شرح الكرماني: ٤/٧٠، مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ٧٤٦، ٢/٤٢٠.

(٤) شرح الكرماني: ٧٠/٤، مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ٧٤٦، ٢/٤٢٠.

(٥) اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح: ١٥٥/٣، عمدة القارى: ٢٢١/٤.

(٦) اخبرنا إسحاق بن إبراهيم قال: حدثنا عائد بن حبيب قال: حدثنا حميد الطويل، عن أنس بن مالك قال: رأى رسول الله صلى الله عليه وسلم نخامة فى قبلة المسجد، فضغبت حتى احمر وجهه، فقامت امرأة من الأنصار فحككتها وجعلت مكانها خلوقا، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ما أحسن هذا. (سنن النسائي، كتاب المساجد، تخليق المساجد، رقم الحديث: ٧٢٨)

(٧) حدثنا سليمان بن حرب، حدثنا حماد، عن أيوب، عن نافع، عن ابن عمر رضى الله عنهما: أن النبى صلى الله عليه وسلم رأى نخامة فى قبلة المسجد، فتغيظ على أهل المسجد، وقال: إن الله قبل أحدكم، فإذا كان فى صلاته فلا يبرزن أو قال: لا يتنخنن، ثم نزل فحتها بيده وقال ابن عمر رضى الله عنهما: إذا برز أحدكم فليزق على يساره. (صحيح البخارى، أبواب العمل فى الصلاة، باب: ما يجوز من اللبصاق والتفخ فى الصلاة، .....)

قوله: «فَقَامَ، نَحْكُهُ بِبَيْدِهِ» په دې جمله کې اشاره ده چه د قوم سردار د هغوی خادم وی. په دې وجه نبی ﷺ پخپله اودریدو او په خپل مبارک لاس باندې ئی صفا کړو اودا صفا کول د الله تعالی د پاره تواضع او عاجزی اختیارول وو. اود الله تعالی کور د جمات سره د محبت وجه وه اود ضعیف امت د طرف نه دعوض په توگه وو(۱).

قوله: «فَقَالَ: «إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ فِي صَلَاتِهِ فَإِنَّهُ يُنَاجِي رَبَّهُ: بَيَانِي أَوْ فَرْمَانِيِلِي بِه تاسو کې چې څوک کله د مانځه د پاره اودریدو نو هغه خپل پروردگار سره مناجات کوی.

قوله: «إِذَا قَامَ فِي صَلَاةٍ» په دې جمله کې تعمیم دی چه هغه په جمات کې موندل کونکې وی یا د جمات نه علاوه چرته بل ځای کې موندل کونکې وی(۲).

قوله: «فَأَنَّهُ يُنَاجِي رَبَّهُ» یعنی کله چه موندل کونکې د مانځه کې قراءت، ذکر او دعا کوی نو دې په ژبه د الله تعالی سره خبرې کوی. او کله چه رکوع سجده او قعدو وغیره کې د یو حالت نه بل حالت ور بدلېږي نو د خپل بدلیدو په احوالو سره د الله تعالی سره خبرې کوی(۳).

علامه کرمانی رحمته الله علیه لیکلی دی چه کلمه "فإنه" د کانه په معنی ده. د کوم معنی چه به داشی لکه چه هغه د خپل رب سره مناجات کوی(۴).

قوله: «أَوْ إِنَّ رَبَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ، فَلَا يَبْزُقُنْ أَحَدَكُمْ قَبْلَ قِبَلَتِهِ» او وئې فرمائیل لکه چه بیشکه د هغه رب، د هغه او د قبلې په مینځ کې وی. په دې وجه دې یوکس د خپلې قبلې طرف ته هیڅ کله توکانرې نه توکی. د مستملی او حموی په نسخه کې "أَوْ إِنَّ رَبَّهُ" په ځای "وإن ربه"

دی(۵). "أَوْ إِنَّ رَبَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ" علامه کرمانی رحمته الله علیه لیکلی دی چه د دې جملې ظاهری معنی مراد اخستل خو ممکن نه دی ځکه چه الله تعالی خو په یو مکان وغیره کې د را کوزیدو وغیره نه بی نیازه دې نودلته صرف تشبیه مراد ده چه دې وخت لکه چه الله تعالی د دغه موندل کونکې د قبلې د دیوال په مینځ کې موجود دی(۶).

علامه بغوی رحمته الله علیه شرح السنه کې د دې جملې په معنی کې لیکي چه ظاهراً خو موندل کونکې د قبلې ته مخ کولو سره اودریدو. لیکن په دغه اودریدو کې هغه د الله تعالی قصد کوی

..... (رقم الحديث: ۱۲۱۳). حدثنا موسى بن إسماعيل، حدثنا جويرية، عن نافع، عن عبد الله رضي الله عنهما، قال: بينا النبي صلى الله عليه وسلم يصلي، رأى في قبلة المسجد نخامة، فحكها بيده، فتغيظ، ثم قال: إن أحدكم إذا كان في الصلاة، فإن الله حيال وجهه، فلا يتنخمن حيال وجهه في الصلاة. (صحيح البخاري، كتاب الأدب، باب: ما يجوز من الغضب والشدة لأمر الله، رقم الحديث: ۶۱۱۱).

(۱) مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۴۲۰/۲.

(۲) مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۴۲۰/۲.

(۳) مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۴۲۰/۲.

(۴) شرح الكرمانی: ۷۰/۴.

(۵) اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح: ۱۵۵/۳، فتح الباری: ۶۵۸/۱.

(۶) شرح الكرمانی: ۷۰/۴.

نولکه چه هغه هم د الله تعالی په مخکې ولاړ دې یعنی د دغه مونځ گذار اود قبلي د دیوال په مینځ کښې الله تعالی موجود دې. چنانچه حضور پاک د دغه طرف د خیال د ساتلو اود توکانرو توکلو وغیره نه د دې د حفاظت کولو حکم ورکړې دې<sup>(۱)</sup>.

علامه خطابی رحمته الله فرمائیلی دی چه د دې جملې معنی داده چه د مونځ گذار قبلي ته د مخ کولو مقصد قبله نه ده بلکه د هغه رب دې نولکه چه د مونځ گذار رب د هغه اود قبلي په مینځ کښې دې. هم په دې وجه حکم ورکړې شو چه د دغه طرف حفاظت دې او کړې شی دغه طرف ته دې توکانرې توك نه کړې شی او نه دې امتیازې او کړې شی<sup>(۲)</sup>.

قوله: «فَلَا يَبْزُقْنَ أَحَدُكُمْ قِبَلَ قِبَلَتِهِ» د قبلي طرف ته د اشرف الجهات کیدو په سبب د هغې طرف ته د توکانرې توکلو نه په تاکید سره منع کړې شوي ده<sup>(۳)</sup>.

ابن بطال رحمته الله د امام مهلب رحمته الله طرف ته نسبت کولو سره لیکلی دی چه په دې حکم کښې د قبلي اعزاز، اکرام او هغه د گندگي وغیره نه پاک صفا ساتل دی. ځکه چه مونځ گذار خپل رب سره مناجات کوی نو په هغه باندې لازم دی چه د قبلي داسې اکرام او کړې لکه د مخلوقاتو سره د خبرو اترو کولو په وخت چه د هغوی طرف ته مخ کولو سره خبرې اترې کوی. یعنی څنگه چه د دغه مخلوقاتو اکرام کولې شی هم دغه شان دې د الله تعالی هم اکرام او کړې ځکه چه الله تعالی خود مخلوقاتو په مقابله کښې د ډیر زیات اکرام لائق دې.

د طاؤس تابعی رحمته الله قول دې چه د الله تعالی د قبلي اکرام کوئی داسې چه د هغې طرف ته مخ کولو سره مه توکئ. نبی کریم صلی الله علیه و آله دا خبره واضحه کړه چه د قبلي طرف ته د توکانرو توکلو نه د ممانعت وجه د الله تعالی سره مناجات کول دی کوم چه مونځ گذار په خپل مونځ کښې د قبلي طرف ته مخ کولو سره د الله تعالی سره کوی. څومره لوئی ظلم او بې ادبی ده چه یو سړي د رب الارباب او شهنشاه په مخکښې ولاړ وی اود هغه طرف ته مخ کولو سره توکانرې اوتوکي<sup>(۴)</sup>.

قوله: «وَلَكِنْ عَنِ نَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمَيْهِ» او خپل گس طرف ته یا دخپلو خپو لاندې د توکلو گنجائش شته.

قوله: «عَنِ نَسَارِهِ» به د فعل محذوف «لِيَبْصُقَ» سره متعلق وی<sup>(۵)</sup>.

(۱) شرح السنة للبغوی، کتاب الصلاة، باب: کراهية النزاق في المسجف ونحو القبلة، رقم الحديث: ۴۹۲، ۳۱۲/۲. علامه طیبی رحمته الله هم دغه خبره د علامه بغوی رحمته الله طرف ته د نسبت کولو نه بغیر ذکر کړې ده. وئی کورنی: الکاشف عن حقائق السنن المعروف بشرح الطیبی، کتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۲/۲۵۹.

(۲) اعلام الحديث للخطابی: ۳۸۶/۱.

(۳) مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۲/۴۲۰.

(۴) شرح ابن بطال: ۶۸/۲.

(۵) مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۲/۴۲۰.



قوله: «تَحْتِ قَدَمَيْهِ» کنسی دَ قَدَمِ نَه مَراد هَم گس قَدَم دې. (۱)  
 علامه خطابي رحمته الله فرمائی چه گس طرف ته دَ توکلو حکم نی خکه ورکړو چه په دې کنسی د  
 نسی طرف تحفظ هم وو خکه چه په بعضي رواياتو کنسی دا هم راغلی دی چه نسی طرف ته مه  
 توکی خکه چه نسی طرف ته فریسته وی. او گس طرف ته دَ توکلو حکم هم هغه وخت دې کله  
 چه گس طرف ته بل مونخ گذار نه وی یعنی که چرته گس طرف ته هم خوک مونخ گذار وی نو  
 بیادې گس او نسی یو طرف ته هم نه توکی بلکه دَ خپو لاندې یا په خپله کپرا کنسی دې  
 او توکی څنگه چه حضور پاک او کرل. (۲)

علامه نووی رحمته الله لیکلی دی چه د ضرورت په وخت په دغه دواړو طرفونو کنسی دَ توکلو  
 حکم هغه وخت دې کله چه مونخ بهر د جمات نه ادا کولې شی خو چه کله مونخ په جمات  
 کنسی ادا کولې شی او بیا دَ توکلو ضرورت راغلو نو صرف هم په خپله کپرا کنسی دې  
 توکی، نسی، گس طرف ته یا دَ خپو لاندې دې نه توکی. (۳)

د علامه نووی رحمته الله په دې خبره باندې ملا علی قاری رحمته الله د حافظ ابن حجر رحمته الله د طرف نه یو  
 اشکال نقل کولو سره د هغې جواب ورکړې دې. چنانچه فرمائی: حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی  
 چه [د علامه نووی رحمته الله] په دې توجیه کنسی نظر دې. خکه چه کله مونخ گذار په جمات کنسی  
 څه کپرا یا جائی نماز وغیره خورولو سره مونخ کوی نو د ضرورت په وخت د هغه د پاره جائز  
 دی چه خپل گس طرف ته یا خپو لاندې دې توکی خکه چه مقصود دا وو چه د توکانرو،  
 قرینګ یا بلغم نه څه هم په جمات کنسی پرینوخی لکه څنگه چه دلته دې مونخ گذار په خپله  
 کپرا باندې پرینوخی نه چه د جمات په فرش باندې.

په دې باندې ملا علی قاری رحمته الله فرمائی چه د علامه نووی رحمته الله ذکر کړې شوی تفصیل کنسی د  
 څه قسم اشکال نه پیدا کیږي خکه چه د حدیث شریف د جملې «إِلَّا ثَوْبَهُ» د مطلق کیدو نه چه  
 څه مفهوم کیږي هغه صحیح او صریح دې په دې کنسی د څه قسم نظر نشته دې. عملی  
 صورت ددې جملې دا دې چه حضور پاک د خپل څادر مبارک یو گوټ اونیولو او په هغې  
 کنسی نی او توکل. خکه چه په عامه توګه باندې خلق په مونخ کنسی جدا د خان لاندې څه  
 کپرا نه خوروی. (۴) ابن الملتن رحمته الله هم د علامه نووی رحمته الله تائید کړې دې. (۵)

قوله: «ثُمَّ أَخَذَ طَرَفَ رِدَائِهِ، فَبَصَّقَ فِيهِ ثُمَّ رَدَّ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ، فَقَالَ: «أَوْ يَفْعَلُ هَكَذَا».

دې نه پس حضور پاک د خپل څادر مبارک یو گوټ اونیولو او په هغې کنسی توکلو سره

(۱) كما في حديث أبي هريرة في الباب الذي بعده.

(۲) أعلام الحديث للخطابي: ۳۸۷/۱-۳۸۶.

(۳) شرح النووي، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب: النهي عن البصاق في المسجد في الصلاة، رقم الحديث: ۵۵۰، ۴۱/۵.

(۴) مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحديث: ۷۴۶، ۴۲۱/۲.

(۵) التوضيح لابن الملتن: ۴۱۹/۵.

او مبرلو او ارشادئی او فرمائیلو یا دې داسې کوی  
 قوله: «ثُمَّ أَخَذَ رِدَائِهِ» ته واخله تر آخر پورې په وخت د ضرورت د بلغم د غورزولو طریقه  
 او خود لې شوه. اودا د بیان بالفعل د قبیل نه دې ځکه چه دا طریقه د سامع د پاره اوقع فی  
 النفس وی (۱).

قوله: «أَوْ يَفْعَلُ» ددې عطف به د لکن حرف استدراک نه پس په فعل محذوف باندې وی.  
 تقدیری عبارت به داسې شی: «ولکن یبیزق عن یساره او یفعل هکذا» (۲). علامه عینی رحمته  
 فرمائی چه کلمه د او د شک د پاره نه ده بلکه د تنویح د پاره ده. د کوم معنی چه به دا وی چه  
 هغه ته په دواړو عملونو کښې اختیار دې کوم هم چه کوی (۳).

د حدیث مبارک ددې جملې نه معلومیږی چه توکل کونکی ته د دواړو کارونو نه د یو د کولو  
 اختیار دې لیکن د څلورو ابوابو نه پس ذکر شوی یو باب کښې د راتلونکی روایت د وجې  
 مصنف دغه آخری عمل بهتر گرځولې دې (۴).

د بلغم د پاکوالی یا ناپاکوالی حکم: د حدیث شریف په آخره کښې د ذکر کړې شوي طریقی نه  
 معلومیږی چه بلغم پاک وی نجس نه وی. اودا حکم اجماعی دې. ددې خلاف چه د کومو ائمه  
 حضراتو چه څه اقوال دی هغه د شاذ په حکم کښې دی. لکه قاضی عیاض رحمته فرمائی چه  
 توکل د هغه سرې په حق کښې گناه ده چه هغه خښ نه کړی او که یو سرې د توکلو نه پس هغه  
 په خاوره یا شکه کښې ورڅښ کړی یا داسې ممکن نه کیدو د وجې په څه څیز هغه او توگی  
 نو د هغه په حق کښې گناه نشته (۵).

د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه کرمانی رحمته فرمائی اگر چه په ترجمه  
 الباب کښې د حک بالید ذکر دې لیکن حدیث باب کښې د «حک» تصریح خوشته اود بالید  
 تصریح نشته دې. لیکن متبادر الی الفهم دا خبره موجود ده چه حضور پاک به د دیوال نه هغه  
 بلغم وغیره هم په خپل لاس سره صفا کړې وی (۶).

د حدیث شریف نه مستفاد امور او اداپ: د مذکوره حدیث شریف نه د دیرو امورو او آدابو  
 استنباط کیږی د هغې نه یو څو لاندې ذکر کولې شی:

① ددې حدیث شریف نه د ښې طرف د گس طرف نه افضل کیدل معلومیږی (۷).

② د بدن فضلات د جمات نه د لرې ساتلو حکم معلومیږی (۸).

(۱) فتح الباری: ۶۵۹/۱

(۲) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۵۶/۳.

(۳) عمده القاری: ۲۲۲/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۵۹/۱

(۵) التوضیح لابن الملقن: ۴۱۹/۵.

(۶) شرح الکرمانی: ۷۱/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۵۶/۳، عمده القاری: ۲۲۱/۴.

(۷) التوضیح لابن الملقن: ۴۱۹/۵، عمده القاری: ۲۲۲/۴.

(۸) عمده القاری: ۲۴۲/۴.

- ④ دَ قِبَلِي دَ طرف تعظيم هم معلوميرى. (١)
- ⑤ دَ جمات دَ صفائى مستحسن كيدل معلوميرى. (٢)
- ⑥ دَ توكانرو، بلغم وغيره پاك كيدل معلوميرى خكه چه مونخ گذار ته په حالت دَ مانخه كنبى په خپله كپرا كنبى دَ توكلو حكم ددى امر تقاضا كوى چه هغه دى پاك وى. كنبى دَ مونخ گذار كپرا ناپاكه كيدل اود دغه نجس كپري دَ وجي به مونخ نه كيدل لازم تى دكوم چه هيخوك هم قائل نه دى. (٣)

حديث باب: (دويم حديث) [حديث نمبر ٢٣٩٨]

٣٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ. (٤) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَأَى بُصَاقًا فِي جِدَارِ الْقِبْلَةِ فَحَكَّهُ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ «إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ يُصَلِّي، فَلَا يَبْصُقْ قَبْلَ وَجْهِهِ، فَإِنَّ اللَّهَ قَبْلَ وَجْهِهِ إِذَا صَلَّى».

د حديث ترجمه: د حضرت عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روايت دى چه نبى كريم صلى الله عليه وسلم د قبلي طرف ته ديوال باندي بلغم لكيدلى اوليدلو نو هغه نى اوتوكل. بياني خلقو طرف ته متوجه كيدو سره ارشاد اوفرمائيلو كله چه تاسو كنبى خوك مونخ كوى نو خپلي مخي ته دى نه توكي، خكه چه الله تعالى د مونخ گذار مخي ته وى.

تواجم رجال: د مذكوره حديث شريف په سند كنبى ټول څلور رجال دى:

① عبدالله بن يوسف: دا عبد الله بن يوسف تنيسى دمشقى رضي الله عنه دى. د دوى مختصر

احوال كشف الباري، كتاب بده الوسى په دويم حديث كنبى او تفصيلى احوال كتاب العلم، باب:

ليبلغ الشاهد الغائب لاندې تير شوې دى. (٥)

② مالك بن انس: دا مشهور امام مالك بن انس بن مالك الاصبهى المدنى رضي الله عنه دى. د

دوى احوال كشف الباري، كتاب بده الوسى په دويم حديث كنبى او تفصيلى تعارف كتاب

(١) عمدة القارى: ٤/٢٢٢ هـ.

(٢) عمدة القارى: ٤/٢٢٢ هـ.

(٣) عمدة القارى: ٤/٢٢٢ هـ.

(٤) رواه البخارى ايضاً فى صفة الصلاة، باب: هل يلتفت لأمر ينزل به، رقم الحديث: ٧٥٣، وفى العمل فى الصلاة.

باب: ما يجوز من البصاق والنفخ فى الصلاة، رقم الحديث: ١٢١٣، وفى الأدب، باب: ما يجوز من الغضب والشدة

لأمر الله تعالى، رقم الحديث: ٦١١١، ورواه مسلم فى صحيحه فى المساجد، باب: النهى عن البصاق فى المسجد،

رقم الحديث: ٥٤٧، ورواه أبوداؤد فى سننه فى الصلاة باب: فى كراهية البزاق فى المسجد، رقم الحديث: ٤٧٩.

ورواه النسائى فى سننه فى المساجد، باب: النهى عن أن يتنخم الرجل فى قبلة المسجد، رقم الحديث: ٧٢٥، وفى

جامع الأصول، حرف الميم، الكتاب السادس فى المساجد وما يتعلق به، الفصل الثانى فى أحكام تتعلق بالمسجد،

البرق الأول فى البصاق، رقم الحديث: ٨٧٢٩، ١١/١٩١.

(٥) كشف الباري: ١/٢٨٩، ٤/١١٣.

الإيمان، باب: من الدين القرار من الفتن لاندې تير شوي دي<sup>(۱)</sup>.

① نافع بن عمر: دا مولى عبد الله بن عمر القرشي رضي الله عنه دي. د دوى احوال كشف البارى، كتاب العلم،

باب: ذكر العلم والفتيا المسجد لاندې تير شوي دي<sup>(۲)</sup>.

② عبد الله بن عمر رضي الله عنه: دا مشهور صحابى رسول د حضرت عمر فاروق رضي الله عنه خونى حضرت

عبد الله بن عمر رضي الله عنه دي. د دوى احوال كشف البارى، كتاب الإيمان، باب: الإيمان وقول النبي صلى الله

عليه وسلم: بنى الإسلام على خمس كنبې تير شوي دي<sup>(۳)</sup>.

د حديث شروح: "فى جدار القبلة كنبې د القبلة الف لام د عهد ذهنى د پاره دي يعنى فى جدار

قبلة المسجد، د مستملى په روايت كنبې فى جدار المسجد الفاظ دي<sup>(۴)</sup>.

هم په صحيح البخارى كنبې د كتاب الصلاة په آخر كنبې د "ايوب بن نافع" په طريق سره يو

روايت موجود دي په هغې كنبې د "فى قبلة المسجد" الفاظ دي. او په دي روايت كنبې د "ثم

ذل، فحتها بيده" الفاظو زياتوالي هم دي. د دي زياتوالي نه معلوميرى چه حضور پاك خطبه

ارشاد فرمائيله كوم وخت چه حضور پاك په ديوال باندې بلغم اوليدلو<sup>(۵)</sup>.

قوله: "فَأَنَّ اللَّهَ قَبَّلَ" يعنى الله تعالى ستاسو د مخ په طرف كنبې دي. په دي حديث شريف

كنبې دا جمله د تشبيه په توگه وئيلې شوي ده. يعنى لكه چه الله تعالى د مونخ گذار مخ ته

مخامخ دي. لهذا دغه طرف ته مه توگئ ځكه چه په دي عمل كنبې د هغه پاك ذات تخفيف

لازميرى<sup>(۶)</sup>.

د حديث مبارك د ترجمة الباب سره مناسبت: د دي حديث شريف به د ترجمة الباب سره

مناسبت په دي حيثيت سره قائميرى چه په دي حديث كنبې د "حك" نسبت د نبى كريم صلى الله عليه وسلم

طرف ته دي نو په پوهه كنبې راتلونكې خبره هم داده چه د دغه بلغم توكل به هم د لاس په

ذريعه شوي وي.

دويمه خبره دا چه په حديث كنبې "جدار القبلة" نه مراد "جدار قبلة مسجد رسول الله صلى الله عليه

وسلم" دي. په دي تقدير سره به هغه اعتراض هم ختم شى كوم چه د بعضي كسانو د طرف نه

كړې شوي دي چه د دي حديث د ترجمة الباب د كل سره نه بلكه د جزء سره مطابقت دني ځكه

(۱) كشف البارى: ۲/۱۸۰/۲۹۰.

(۲) كشف البارى: ۱/۶۴۸.

(۳) كشف البارى: ۱/۶۳۷.

(۴) عمدة القارى: ۴/۲۲۳.

(۵) صحيح البخارى، العمل فى الصلاة، باب: ما يجوز من البصاق والنفخ فى الصلاة، رقم الحديث: ۱۲۱۳.

(۶) عمدة القارى: ۴/۲۲۳.

چه ترجمه الباب كنبی "جدار المسجد" ذكر دي او حديث كنبی "جدار القبلة" ذكر دي (١).  
حديث باب: دريم حديث [حديث نمبر ٣٩٩]

٣٠٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ (٢) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- رَأَى فِي جِدَارِ الْقِبْلَةِ مَخَاطَأَ أَوْ بَصَاقًا أَوْ نَجَامَةً فَحَكَّهُ.

د حديث ترجمه: د ام المؤمنين حضرت عائشه رضي الله عنها نه روايت دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د قبلي طرف ته ديوال باندي قرينگ، توکانري يا بلغم لگيدلي اوليدلو نو هغه ني اوتوگلو. تراجم رجال: د مذکورہ حديث په سند كنبی ټول پنځه رجال دي:

① عبدالله بن يوسف رضي الله عنه: دا عبد الله بن يوسف تنيسی دمشقي رضي الله عنه دي. د دوی مختصر

احوال كشف الباري، كتاب بده الوسى د دويم حديث او تفصیلی احوال كتاب العلم، باب: ليهدم

الشاهد الغائب لاندې تير شوی دي (٣).

② مالك بن انس رضي الله عنه: دا مالك بن انس المدني رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الباري، كتاب

بده الوسى د دويم حديث او تفصیلی تعارف كتاب الايمان، باب: من الدين الفرار من الفتن لاندې

تير شوی دي (٤).

③ هشام بن عروة رضي الله عنه: دا هشام بن عروه بن زبير رضي الله عنه دي. د دوی مختصر احوال كشف

الباري، كتاب بده الوسى د دويم حديث او تفصیلی احوال كتاب الايمان، باب: أحب الدين إلى الله

أدوم لاندې تير شوی دي (٥).

④ عروة بن زبير رضي الله عنه: دا عروه بن زبير بن عوام رضي الله عنه دي. د دوی مختصر احوال كشف الباري، كتاب بده

الوسى، دويم حديث لاندې او تفصیلی احوال كتاب الايمان باب: أحب الدين إلى الله أدومه لاندې تير

شوی دي (٦).

⑤ حضرت عائشه رضي الله عنها: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بنت ابی بكر صديق رضي الله عنه ده. د

(١) عمدة الفاری: ٢٢٣/٤.

(٢) أخرجه مسلم في صحيحه في المساجد، باب: النهي عن البصاق في المسجد، رقم الحديث: ٥٤٩. وفي جامع

الأصول، حرف الميم، الكتاب السادس في المساجد وما يتعلق به، الفصل الثاني في أحكام تتعلق بالمسجد، الفرع

الأول في البصاق، رقم الحديث: ٨٧٣٣، ١٩٥/١١.

(٣) كشف الباري: ٢٨٩/١، ١١٣/٤.

(٤) كشف الباري: ٢٩٠/١، ٨٠/٢.

(٥) كشف الباري: ٢٨٩/١، ١١٣/٤.

(٦) كشف الباري: ١/٢٩١، ٢/٤٣٢.

دوی احوال کشف الباری، کتاب ہدہ الوسی، ددویم حدیث لاندی تیر شوی دی (۱).  
 دہدیت شرح: د مذکورہ حدیث تشریح ورا ندی تیر شوی دوارو احادیثو کنبی تیرہ شوی دہ  
 دہدیت شریف د ترجمہ الباب سرہ مناسبت: د حدیث مبارک د ترجمہ الباب سرہ مناسبت  
 واضح دی چہ متبادرالی الفہم ہم دادی چہ دغہ بلغم بہ نئی ہم پہ خپل لاس مبارک سرہ  
 توگلی وی (۲).

## ۲- بَابُ حَاكِ الْمَخَاطِ بِالْحَصَى مِنَ الْمَسْجِدِ

داباب دی د جمات تہ د وړوکی کانری پہ ذریعہ د بلغم توگلو بارہ کنبی  
 د مذکورہ باب د ماقبل سرہ مناسبت: علامہ عینی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ سابقہ باب کنبی پہ لاس  
 سرہ توکانری یا بلغم د لری کولو بیان وو او دلته پہ قوتکانری یا کانری وغیرہ سرہ د لری  
 کولو بیان دی. پہ دوارو کنبی فرق دادی چہ د "مخاط" رطوبت یالزوجت پہ نسبت د بلغم یا د  
 توکانروزیات وی لہذا دا د جمات نہ پہ مکملہ توگہ لری کولو د پارہ صرف لاس کافی نہ  
 وی بلکہ پہ خہ خیز وغیرہ سرہ د لری کولو ضرورت وی. پہ دی وجہ پہ وړوکی کانری سرہ د  
 صفا کولو بیان پہ دی حدیث مبارک کنبی ذکر شو. پہ دی مقام باندی یو اشکال پیدا کیږی  
 چہ ترجمہ الباب کنبی خو د "مخاط" ذکر دی خو پہ حدیث مبارک کنبی د "نخامہ" ذکر دی  
 نو ددی جواب دادی چہ دا دوارہ د انسانی بدن پاک فضلات دی. پہ دی دوارو کنبی د حکم  
 پہ اعتبار سرہ ہیخ فرق نشته دی. علامہ عینی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ دا جواب علامہ کرمانی رحمۃ اللہ علیہ  
 ذکر کړی دی. زما پہ نیز زیات بہتر جواب دادی چہ اگر چہ پہ دی دوارو کنبی خہ فرق دی چہ  
 "مخاط" د پوزی نہ وتونکی بلغم وی او "نخامہ" د سینې نہ وتونکی بلغم. لیکن پہ ترجمہ  
 الباب کنبی د "مخاط" ذکر او حدیث شریف کنبی د "نخامہ" ذکر ددی خبری خبر وړوکی لکہ  
 خنگہ چہ دوارہ پہ خپل خان کنبی د غور ووالی او تینگوالی پہ اعتبار سرہ برابر دی نو ہم  
 دغہ شان دوارہ پہ حکم کنبی ہم برابر دی (۳).

حضرت شاه ولی الله محدث دهلوی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ ددی ترجمې قائمولو  
 مقصد پہ هغه بعضې حضراتو باندی رد کول دی چا چہ د پوزی اوبہ او رطوبت پلیت  
 گر خولی دی او دلیل نئی ددی حدیث مبارک نہ نیولی دی. کوم چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ پہ دی باب  
 کنبی ذکر کړی دی. او ددی بنیاد نئی دا گر خولی دی چہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم پخپله دا رطوبت صفا  
 کول صرف د جمات د صفائی او نظافت پہ خاطر نہ وو کړی بلکہ جمات د دغہ نجاست نہ  
 پاکول هم وو. نو عین ممکن دی چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ دداسی کسانو دتردید دپارہ دا ترجمہ  
 قائمہ کړی وی. خاص کر د ابن عباس رضی اللہ عنہما اثر به نئی ہم ددی د پارہ قائم کړی وی چہ د دغہ اثر

(۱) کشف الباری: ۱/۲۹۱.

(۲) عمدة القاری: ۲۲۲/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۲۴/۴.

نه د هغه بعضي حضراتو ترديد كيدلو.

حضرت شاه صاحب رحمته الله فرمائي چه يونبه توجيه زما په نيز دا ده چه امام بخاري رحمته الله سره كه چري يو حديث په مختلف طرق سره وي نو د هغوي عادت دا دي چه دغه ټول طرق د يو عنوان لاندې نه راجمع كوي بلكه هر روايت د مستقل عنوان لاندې ذكر كوي. د حديث الفاظ مخې ته ساتلو سره ترجمه الباب او عنوان كښي تنويح پيدا كوي. او اصل مقصد د حديث طرق بيانول وي هم دغه شان دلته هم شوي دي (۱).

د صحيح بخاري د بعضي نسخو مطابق امام بخاري رحمته الله د حضرت ابن عباس رضي الله عنهما يو اثر د دي ترجمه الباب جزء جوړولو سره تعليقا نقل كړې دي هغه هم لاندې نقل كولي شي  
تعلق نمبر (۲): «إِنْ وَطِئْتَ عَلَى قَدْرٍ رَطْبٍ، فَأَغْيِلَهُ وَإِنْ كَانَ بَابًا قَلًا»  
د تعلق تخريج: د حضرت عبدالله ابن عباس رضي الله عنهما دا اثر ابن ابي شيبه رحمته الله خپل مصنف كښي ذكر كړې دي، وني گورني:

(«حدثنا حفص بن هياث، عن الأعمش، عن يعقوب بن وثاب قال: سئل ابن عباس عن رجل خشي الصلاة فوطئ على عذرة، قال إن كانت رطبة غسل ما أصاب، وإن كانت يابسة لم تضر» (۲))

د تعلق ترجمه: حضرت ابن عباس رضي الله عنهما فرمائي چه كه چري ستا خپي په څه لمده گندگي باندي اولگي نو هغه او وينځه او كه چري په اوچه گندگي باندي اولگي نو د وينځلو ضرورت نشته.

د تعلق د ترجمه الباب سره مناسبت: حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائي چه په دي نهي كښي لوڼي او اهم علت د قبلي احترام دي صرف د رطوبت د نفرت قابل كيدل نه دي، اگر چه د دي قابل نفرت كيدل هم يو سبب دي ليكن د قبلي د احترام په مقابله كښي د كمې درجي سبب دي هم دغه وجه كيدي شي چه د جمات په معامله كښي د رطوبت صفا كولو كښي د دي د لوند يا د اوچيدو فرق نه دي كړي شوي (په خلاف د دي كه چري د نهي علت صرف د دي د نفرت قابل كيدل وي نو هلته په دواړو كښي فرق كيدل پكار دي چه چرته په اوچ رطوبت باندي خپه راشي نو څه د حرج خبره نه ده ليكن چه كوم ځاني په لوند رطوبت باندي خپه راشي نو هغه وخت دغه رطوبت وينځل پكار دي. چنانچه ونيلي شي چه د ابن عباس رضي الله عنهما په اثر كښي په رطوبت باندي د خپي راتلو واقعه د جمات نه وي بلكه د جمات نه به د بهر وي. په دي وجه د جمات په معامله كښي به د رطوبت لوند كيدو يا اوچ كيدو ته نه شي كتلي بلكه دا به صفا كولي شي (۳).

(۱) الأبواب والتراجم للدهلوي في بداية صحيح البخاري، باب: حك المغطا بالحصي، ص: ۳۰.  
(۲) مذكوره تعلق الدكتور مصطفى ديب البغا والا نسخه كوم چه د كشف الباري د پاره بنياد جوړ كړې شوې دي، كښي نشته دي ليكن شرح حديث په دي كلام كړې دي. په دي وجه كشف الباري كښي هم د دي تشریح كړې شوې ده.

(۳) المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الطهارة، باب في الرجل يتوضأ فيطأ على العذرة، رقم الحديث: ۶۱۳/۱ ۴۲۶.

(۴) فتح الباري: ۶۶۰.

علامه عینی رحمۃ اللہ علیہ د حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ پەرد کنبی فرمائی چہ داسی صحیح نہ دی پە دې کنبی دیر بعد دې بلکه علت د ممانعت د قبلی احترام سره سره د تکلیف موجودیدل هم دی ځکه چہ لوشان روستو د حضرت ابو سہلہ رضی اللہ عنہ روایت راځی چہ حضور پاک ارشاد فرمائیلې دې. «انک آذیت الله ورسوله»، ددې ارشاد نہ پە واضحه توگه باندي د تکلیف حصول علت ممانعت کیدل معلومیرې.

د ترجمه الباب سره د حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما ددې اثر مناسبت پە دې توگه باندي هم ممکن دی چہ ترجمه کنبی «حک المخاط بالحمق» دې او د روایت نہ دا خبره هم معلومیرې چہ د پوزې هغه رطوبت اوچ وو ځکه خو پە کانړی سره صفا کول ممکن کیدې شی گنی پە کانړی سره به پە ځانی د صفا کیدو نور زیات خوریدلو. چنانچہ مذکورہ اثر پە اوچ او لوند نجاست کنبی د فرق د پاره راورلې شوی دې. سره ددې چہ ظاهر حدیث کنبی پە دې باندي څه دلالت نشته دې. چنانچہ اثر او ترجمه کنبی پە دې حیثیت سره مناسبت دې او دومره مقدار د مناسبت کافی دې (۱).

د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت: د مذکورہ اثر یا تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت پە پورته دواړو اقوالو کنبی واضح شوی دې.

حدیث باب: رومی حدیث [حدیث نمبر ۴۰۰]

۳۰۹ و ۳۰۸ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو هَيْمٍ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شَكَّابٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَاهُ رَزَقَةَ وَأَبَا سَعِيدٍ <sup>(۲)</sup> حَدَّثَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَأَى نُخَامَةً فِي جِدَارِ الْمَسْجِدِ، فَتَنَاوَلَ حَصَاةً فَحَكَهَا فَقَالَ «إِذَا تَنَخَّمَ أَحَدُكُمْ فَلَا يَتَنَخَّمَنَّ قِبَلَ وَجْهِهِ وَلَا عَنِ يَمِينِهِ، وَلْيَبْصُقْ عَنِ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمَيْهِ الْيُسْرَى».

دهدیت ترجمه: د حضرت ابو هريره رضی اللہ عنہ او حضرت ابو سعید رضی اللہ عنہ بیان دې چہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم د جمات پە دیوال باندي بلغم اولیدلو نو یو کانړې نی راواخستلو او هغې سره نی اوگرولو. بیانی او فرمائیل کله چہ تاسو کنبی څوک بلغم توکی، نو نه دې خپلې مخې طرف ته توکی او نه دې خپلې نی طرف ته بلکه خپل گس طرف ته یا د څپو لاندې دې توکی. تراهم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پە سند کنبی ټول شپږ راویان دی:

(۱) عمدة القاری: ۲۲۵/۴-۲۲۴.

(۲) أخرجه البخاری أيضاً فی المساجد، باب: لا یبصق عن یمینه فی الصلاة، رقم الحدیث: ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۴، ۴۱۶. و مسلم فی صحیحه فی المساجد، باب النهی عن البصاق فی المسجد، رقم الحدیث: ۵۴۸. وأبو داؤد فی سننه فی الصلاة، باب فی کراهیه البزاق فی المسجد، رقم الحدیث: ۴۸۰. والنسائی فی سننه فی المساجد، باب ذکر نهی النبی صلی الله علیه وسلم عن یبصق الرجل بین یدیه أو عن یمینه وهو فی صلاته، رقم الحدیث: ۷۲۶. وابن ماجه فی سننه فی المساجد، باب کراهیه النخامة فی المسجد، رقم الحدیث: ۷۶۱. وفی جامع الأصول، حرف المیم. الکتاب السادس، فی المساجد وما یتعلق به أو لا وأخراً، الفصل الثانی: فی احکام تتعلق بالمساجد، الفرع الأول: فی البصاق، رقم الحدیث: ۸۷۳۰، ۱۹۳/۱۱.



- ① موسی بن اسماعیل: دا ابو سلمه موسی بن اسماعیل التبوذکی البصری رحمته دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب ہدایہ الوسی د خلورم حدیث او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: من اجاب الفتیا بإشارة الید والرأس لاندی تیر شوی دی (۱).
- ② ابراہیم بن سعد: دا ابو اسحاق ابراہیم بن سعد بن ابراہیم الزہری رحمته دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب الإیمان باب: من کراه أن یعودی الکفر کما یکره أن ینزل فی النار من الإیمان او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: ما ذکر فی ذهاب موسی علیہ السلام فی البحر الی الخضر..... لاندی تیر شوی دی (۲).
- ③ ابن شہاب: دا ابوبکر محمد بن مسلم، بن عبید اللہ، بن عبد اللہ بن شہاب الزہری المدنی رحمته دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب ہدایہ الوسی دریم حدیث لاندی تیر شوی دی (۳).
- ④ حمید بن عبد الرحمن: دا حمید بن عبد الرحمن بن عوف رحمته دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: تطوع قیام رمضان من الإیمان لاندی تیر شوی دی (۴).
- ⑤ ابو ہریرہ: دا مشہور صحابی رسول حضرت ابو ہریرہ رحمته دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: امور الإیمان لاندی تیر شوی دی (۵).
- ⑥ ابو سعید: دا مشہور صحابی رسول حضرت ابو سعید خدری رحمته دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الدین الفرار من الفتن لاندی تیر شوی دی (۶).
- د حدیث شرح: د مذکورہ حدیث شریف تشریح ورا ندی باب کنبی تیرہ شوې ده. نور د تشریح قابل شع خیز نشته دي. سوا ددی نه چه په دي روایت کنبی "فحکها" لفظ دي خود کشمیہنی په روایت کنبی هم دغه لفظ "فحتها" دي خبره په دوارو کنبی هم یوه ده. د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت: د حدیث مبارک ترجمه الباب سره مناسبت هم او په دي باندی یو اشکال او جواب هم د باب په شروع کنبی تیر شوې دي.

① کشف الباری: ۴۳۲/۱، ۴۷۷/۱.

② کشف الباری: ۱۲۰/۲، ۲۳۳/۳.

③ کشف الباری: ۱/۳۲۶.

④ کشف الباری: ۲/۳۱۶.

⑤ کشف الباری: ۶۵۹/۱.

⑥ کشف الباری: ۸۲/۲.

## ۳- بَابُ: لَا يَصُحُّ عَنْ يَمِينِهِ فِي الصَّلَاةِ

په دې باب کښې ذکر کړې شوی دی چه مونځ گذار دې  
د مونځ په وخت خپل ښی طرف ته نه توکی.

د ترجمه الباب مقصد:

د حضرت شیخ الحدیث صاحب نورالله مرقده رانې: حضرت شیخ الحدیث صاحب نورالله مرقده فرماني چه شارحینو دې ابوابو ته هیڅ تعرض نه دی کړې بلکه دا فرماني چونکه د مذکورہ روایاتو نه مختلف احکام ثابتیدل په دې وجه امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ په هر یو باندي مستقل باب او تړلو. خو زما په نیز د هر یو باب نه ځانله یو غرض دې. چنانچه د دې باب غرض دادې چه په دې کښې اختلاف چه د بصاق عن الیمین نهی د صلوة سره خاص ده او که عام ده صلوة او غیر صلوة ټولو ته ځکه چه روایات دواړه شان دی.

د حضرت امام مالک رحمۃ اللہ علیہ نه تخصیص بالصلوة نقل دې او امام نووی رحمۃ اللہ علیہ فرماني چه عام دې. او د دې اختلاف وجه اختلاف فی التعلیل دې. کوم خلق نی چه عام منی هغوی وانی چه نهی د بصاق الیمین معلل کړې شوې ده د فریستی د ښی طرف ته په کیدو سره. او هغه هر وخت انسان سره وی لهذا نهی عام ده، ځکه چه دا د هغې د احترام خلاف ده. مگر په دې باندي اشکال دا کولې شی چه گس طرف ته خو هم د گناهونو لیکونکې فریسته وی. ویراعی للأمر بما لا ییراعی للامور. دې نه علاوه د نیکو لیکونکې فریستی لره بدی لیکونکې فریسته د گناه لیکلو نه منع کوی. لهذا د هغې په مونځ باندي احسان دې په دې وجه مونځ لره هم د هغې احترام کول پکار دی.

او حضرت امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ فی الصلاة زیاتولو سره د امام مالک رحمۃ اللہ علیہ تائید کړې دې. اوزما رانې هم دغه ده چه نهی د صلاة سره خاص ده او کوم علت چه شارحینو بیان کړې دې او د "ملك" نو "کاتبین حسنات" مراد اخستی دې دا زما په نیز صحیح نه دی. اگر چه د مشرانو نه نقل دی او د صحیح نه کیدو وجه داده چه کاتب سیئات اگر چه کاتب سیئات ده مگر فریسته خوبیا هم ده او فریستی ټول په ټولې مکرم دی. "هم عباد مکرمون". بله دا چه هغه خود سیئات کتابت پخپله نه کوی بلکه هغه مامور ده لهذا د هغې هم احترام کیدل پکار دی. بله دا خبره چه توکانرې ښکته پریوخی او فریسته پورته وی. لهذا زما په نیز دا صحیح نه ده چه د "ملك" نه مراد کاتب حسنات وی بلکه دې نه مراد د دې نه علاوه بله فریسته ده چه خاص هم په مونځ کښې راخی او ښی طرف ته اودریږی او دده د زره حفاظت کوی. او یو شیطان راخی کوم چه گس طرف ته اودریږی او دده په زره کښې وسوسې اچوی. نو د دغه فریستی نه مراد دا فریسته ده او چونکه دا لاندې ولاره وی په دې وجه که توکی نو هغه توکل به په دې باندي

پریوخی (۱)

د حضرت مولانا محمد ادریس کاندھلوی رحمۃ اللہ علیہ واثم: ترجمۃ الباب کنسی فی الصلاة نہ دی خبری طرف تہ اشارہ کیبری چہ دا ممانعت صرف د مونخ دوران کنسی دی د مانخہ نہ بہر نہ دی لکہ چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د ہفہ حضراتورد کوی خوک چہ پہ مونخ کنسی اود مونخ نہ بہر ہر حالت کنسی توکل منع کوی. اگرچہ ادب تہ نیزدی خبرہ ہم دا دہ چہ پہ ہر حالت کنسی د قبلی طرف تہ توکل منع وی خنگہ چہ بہ د حضرت ابن مسعود، حضرت معاذ بن جبل، حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ عنہم وغیرہ د مونخ نہ بہر ہم قبلی طرف تہ توکل مکروہ گر خول (۲).

حدیث باب (رومی حدیث) [حدیث نمبر ۲۰۱]

۳۱۶۱۰- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شَكَّابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ وَأَبَا سَعِيدٍ (۳) أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - رَأَى نُحَامَةً فِي حَاطِطِ الْمَسْجِدِ، فَتَنَاوَلَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - حَصَاةً فَحَثَّهَا ثُمَّ قَالَ «إِذَا تَأْتَاكُمْ أَحَدُكُمْ فَلَا يَتَأَخَّمْ قَبْلَ وَجْهِهِ وَلَا عَنِّ مِمَّنِيهِ، وَلْيَبْصُقْ عَنِّ نَسَارَةً، أَوْ تَحْتَ قَدَمِيهِ الْيُسْرَى».

د حدیث ترجمہ: د حضرت ابو ہریرہ او حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ عنہما بیان دی چہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم د جمات پہ دیوال بانڈی بلغم اولیدلو نو یو کانری ٹی راواخستلو او ہغی سرہ ٹی او گرولو، پیلٹی او فرمائیل کله چہ تاسو کنسی خوک بلغم توکی، نو نہ دی خپلی محی طرف تہ توکی او نہ دی خپل بنی طرف تہ بلکہ خپل گس طرف نہ یا د خپو لاندی دی توکی. تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کنسی قول او وہ راویان دی:

① یحییٰ بن بکیر رحمۃ اللہ علیہ: دا ابوزکریا یحییٰ بن عبداللہ بن بکیر القرشی المخزومی رحمۃ اللہ علیہ دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوس، باب: کیف کان ہدم الوس دریم حدیث لاندی تیر شوی دی (۲).

② اللیث رحمۃ اللہ علیہ: دا امام ابو الحارث اللیث بن سعد بن عبدالرحمن رحمۃ اللہ علیہ دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوس، باب: کیف کان ہدم الوس دریم حدیث لاندی تیر شوی دی (۳).

③ عقیل رحمۃ اللہ علیہ: دا عقیل بن خالد بن عقیل رحمۃ اللہ علیہ دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوس، باب: کیف کان ہدم الوس دریم حدیث لاندی او تفصیلی احوال کتاب العلم باب: فضل

① تقریر بخاری شریف: ۳۶۲/۲.

② تحفة القاری للکاندھلوی: ۴۷۱/۲.

③ مرتخیرجہ تحت رقم الحدیث: ۴۰۰.

④ کشف الباری: ۱/۳۲۳.

⑤ کشف الباری: ۱/۳۲۴.

العلم لاندې تیر شوی دی (۱).

④ ابن شهاب رضی الله عنه: دا ابوبکر محمد بن مسلم، بن عبید الله، بن عبد الله بن شهاب الزهري المدنی رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی دریم حدیث لاندې تیر شوی دی (۲).

⑤ حمید بن عبد الرحمن رضی الله عنه: دا حمید بن عبد الرحمن بن عوف رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: تطوع قیام رمضان من الإیمان لاندې تیر شوی دی (۳).

⑥ ابوهریره رضی الله عنه: دا مشهور صحابی رسول حضرت ابوهریره رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: امور الإیمان لاندې تیر شوی دی (۴).

⑦ ابوسعید رضی الله عنه: دا مشهور صحابی رسول حضرت ابوسعید خدری رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الدین الفرار من الفتن لاندې تیر شوی دی (۵).

د حدیث شوح: د مذکور حدیث مبارک مکمل شرح وړاندې تیره شوې ده په دې کښې هیڅ څه نوې خبره نشته دي. وړاندې او دې موجوده حدیث شریف کښې صرف څه لفظی فرق دي په کوم سره چه په معنی او مباحثو باندې هیڅ فرق نه پریوځي. مثلاً هلته "جدار المسجد" وو او دلته "حائط المسجد" دي هلته "فحکها" وو او دلته "فحتها" دي هلته "فلايتنخن" وو او دلته "فلايتنخم" دي. هلته "تحت قدمه" وو او دلته "تحت قدمه الیسری" دي. د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت: د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت په دې جمله "فلايتنخم قبل وجهه ولا عن يمينه" کښې دي. که چرې دا اعتراض او کرې شی چه ترجمه الباب کښې خو دی: "لا يصق عن يمينه" او په حدیث مبارک کښې د "لايتنخم" الفاظ دی نو د دې جواب دادې چه د حکم په اعتبار سره "نخامه" او "بصاق" یو گرځولې شوی دی د نورو احادیثو نه د دې تساوی اشاره ملاویږي (۶).

(۱) کشف الباری: ۱/۳۲۵، ۳/۴۵۵.

(۲) کشف الباری: ۱/۳۲۶.

(۳) کشف الباری: ۲/۳۱۶.

(۴) کشف الباری: ۶۵۹/۱.

(۵) کشف الباری: ۸۲/۲.

(۶) عمدة القاری: ۲۲۶/۴. مثلاً لیر شان روستور اتلونکې حدیث شریف کښې دی لا یبزن فی قبلته ولكن عن يساره، حضور پاک دا جمله د قبلي په دیوال کښې "نخامه" لیدلونه پس ارشاد فرمائیلې وه. دا دلالت دي چه نخامه او بزاق د حکم په اعتبار سره برابر دی. (عمدة القاری: ۲۲۶/۴).

حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ۲۰۲]

۳۱۲ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي قَتَادَةُ قَالَ (۱) سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ قَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «لَا يَتَّقُلْنَ أَحَدُكُمْ يَدَيْهِ وَلَا عُنُقَيْهِ، وَلَكِنْ عَنْ بَسَارِهِ أَوْ تَحْتِ رِجْلِهِ».

د حدیث ترجمہ: حضرت انس رضی اللہ عنہ فرمائی کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چہ تاسو کنبی دے خوک خپلی مخی تہ نہ توکی او نہ دے خپل بنی طرف تہ لیکن (چہ دے توکلو ضرورت پینس شی نو) خپل گس طرف او دے خپو لاندے توکلی شی. تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کنبی ٲول ٲلور راویان دے:

① حفص بن عمر رضی اللہ عنہما: دا حفص بن عمر، ابن الحرث الحوضی رضی اللہ عنہ دے. دے دوی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: إذا شرب الکلب فی اناء أحدکم فلیغسله سبعاً، الحدیث الرابع لاندے تیر شوی دے. (۲)

② شعبه رضی اللہ عنہ: دا امیر المؤمنین شعبه بن الحجاج بن الورد عتکی الواسطی بصری رضی اللہ عنہ دے. دے دوی تذکرہ کشف الباری، کتاب الایمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه وینده، لاندے تیرہ شوی دے. (۳)

③ قتادة رضی اللہ عنہ: دا قتاده بن دعامة رضی اللہ عنہ دے. دے دوی تذکرہ کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندے تیرہ شوی دے. (۴)

④ انس رضی اللہ عنہ: دا مشهور معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالک بن نضر خزرجی انصاری رضی اللہ عنہ دے. دے دوی تذکرہ کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندے تیرہ شوی دے. (۵)

دے حدیث شرح: دے مذکورہ حدیث شریف تشریح او وضاحت ہم ورا ندے تیر شوی دے. "لَا یَتَّقُلْنَ" دا صیغہ دے باب لعمہ او ضرب دوارو نہ مستعمل دے. یعنی دے فاء کمرہ او ضمہ دوارہ شان لوستلے کیدی شی. دے دے معنی دے توکلو دے. "لَا یَتَّقُلْنَ" او "لَا یَمْرُقْنَ" یا "لَا یَمْسُقْنَ" دے دے ٲولو ہم یوہ معنی دے. (۶)

① مرتخریجہ تحت رقم الحدیث: ۲۴۱، فی کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: البزاق والمخاط ونحوه فی التوب.

② کشف الباری: ۶۷۸/۱.

③ کشف الباری: ۶۷۸/۱.

④ کشف الباری: ۳/۲.

⑤ کشف الباری: ۴/۲.

⑥ عمدة القاری: ۲۲۷/۴.

د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: د مذکورہ حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت بالکل واضح دې چه په دواړو کښې هم یوه خبره ذکر ده (۱).

### ۳- بَابُ: لِيَبْزُقَ عَنْ يَسَارَةٍ، أَوْ تَحْتَقْدَمِهِ الْيُسْرَى

د باب دې په دې باره کښې چه (مونځ گذار له) پکار دی چه (د ضرورت په وخت) خپل گس طرف ته توکی یا د خپلې گسې خپې لاندې د باب د عنوان بعضې نسخو کښې لیبزق په ځانې لیبصق دې. د دواړو معنی هم یوه ده (۲). د ترجمه الباب مقصد: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چه امام بخاری رحمته په دې باب سره یو اختلاف طرف ته اشاره کړې ده او هغه دا چه قاضی عیاض رحمته فرمائی چه بصاق فی المسجد لکنه دې او د دې نه د دفن کول گناه ده. او امام نووی رحمته فرمائی بصاق فی المسجد گناه ده او د دې کفار د دې دفن کول دی.

ما بیان کړی وو چه دا دواړه د پخوانو شارحینو نه دی. قاضی عیاض رحمته مقدم دې او مالکی دې. او امام نووی رحمته مؤخر دې او شافعی دې. نو اکثر وختونو کښې د حدیث معانی بیانولو کښې دواړه اختلاف کوی او بیا د هغوی نه پس راتلونکی دوه فریق شو. یو د امام عیاض رحمته موافقت کوی او دویم د امام نووی رحمته تائید کوی. هم د دغې نه دا اختلاف هم دې. امام بخاری رحمته د مختار قاضی عیاض رحمته طرف ته اشاره فرمایلې ده. د مختار قاضی عیاض رحمته دا مطلب نه دې چه امام بخاری رحمته مختار عیاض رحمته گنرلو سره د هغه طرف ته اشاره کړې ده. چونکه شهرت هم په امام عیاض رحمته سره شوې وو په دې وجه هغه طرف ته منسوب کړې شو (۳).

حدیث باب (رومې حدیث) [حدیث نمبر ۲۰۲]

حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ (۱) قَالَ قَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «إِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا كَانَ فِي الصَّلَاةِ فَأَتَمَّ نَجَى رَبَّهُ، فَلَا يَبْزُقُ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَا عَن يَمِينِهِ، وَلَكِنْ عَن يَسَارَةٍ أَوْ تَحْتَقْدَمِهِ».

د حدیث ترجمه: حضرت انس رحمته فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد او فرماتیلو مؤمن چه کله په مانځه کښې وی نو هغه د خپل پروردگار سره مناجات کښې مشغول وی. چنانچه د (تو کلو حاجت راتلو په وخت) دې خپل مخامخ یا خپل ښی طرف ته نه توکی بلکه خپل گس طرف ته یا د خپو طرف ته دې توکی.

تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف په سند کښې ټول څلور راویان دی:

(۱) عمدة القاری: ۲۲۷/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۶۲/۱ عمدة القاری: ۲۲۷/۴.

(۳) تقریر بخاری شریف: ۱۵۱/۲.

(۴) مرغریجه رقم الحدیث: ۳۹۷.

① آدم عليه السلام: دا آدم بن ابي اياس العسقلاني عليه السلام دي. د دوی احوال كشف الباري، كتاب الايمان،

باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده لاندي تير شوي دي. (١)

② شعبه عليه السلام: دا امير المؤمنين شعبه بن الحجاج بن الورد عتكي الواسطي بصري عليه السلام دي.

د دوی تذکره كشف الباري، كتاب الايمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده، لاندي تيره شوي ده. (٢)

③ قتادة عليه السلام: دا قتاده بن دعامة عليه السلام دي. د دوی تذکره كشف الباري، كتاب الايمان، باب: من

الايمان ان يجب لأخيه ما يجب لنفسه لاندي تيره شوي ده. (٣)

④ انس بن مالك رضي الله عنه: دا مشهور او معروف صحابي رسول حضرت انس بن مالك بن نضر

خزرجي انصاري رضي الله عنه دي. د دوی تذکره كشف الباري، كتاب الايمان، باب: من الايمان ان يجب

لأخيه ما يجب لنفسه لاندي تيره شوي ده. (٤)

د حديث شرح: دمذكوره حديث شريف تشريح ماقبل كنبسي تيره شوي ده.

دمذكوره حديث د ترجمه الباب سره مناسبت: دمذكوره حديث د ترجمه الباب سره مناسبت

ولكن عن يسارة أو تحت قدمه كنبسي دي. معنى ددي جملي داده چه پكاردی چه خپل گس

طرف ته اونه توکی. واضحه دي وي چه ماقبل ترجمه الباب كنبسي د في الصلاة قيدو و خو په دي

روايت كنبسي دا قيد نه وو. اودلته په ترجمه الباب كنبسي دا قيد نشته دي خو په حديث

شريف كنبسي دا قيد موجود دي. (٥)

حديث باب (دويم حديث) [حديث نمبر ٢٠٢]

٣٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُهَيْبَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ. (١) أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَبْصَرَ نَخَامَةً فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ فَحَكَهَا بِمِخْصَاةٍ، ثُمَّ نَهَسَ أَنْ يَبْزُقَ الرَّجُلَ بَيْنَ يَدَيْهِ أَوْ عَنْ يَمِينِهِ، وَلَكِنْ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمِهِ الْيُسْرَى. وَعَنْ الزُّهْرِيِّ سَمِعَ مُحَمَّدًا عَنْ أَبِي سَعِيدٍ نَحْوَهُ.

د حديث ترجمه: د حضرت ابو سعيد خدری رضي الله عنه نه روايت دي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د جمات قبلي طرف (ديوال) باندي بلغم اوليدلو نو حضور پاك په يو كانزي باندي هغه او گرولو. بيا

(١) كشف الباري: ٦٧٨/١

(٢) كشف الباري: ٦٧٨/١

(٣) كشف الباري: ٣/٢

(٤) كشف الباري: ٤/٢

(٥) عمدة القاري: ٢٢٧/٤

(٦) مرتخر بجه تحت رقم الحديث: ٤٠٠.

حضور پاک منع او فرمائیکہ چہ یو کس دی ہم خپل مخی طرف ته یا خپل نبی طرف ته نه توکی بلکه (د ضرورت په وخت) دی خپل کس طرف ته یا د خپلی کسې خپې لاندې توکی. تواجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه رجال دی:

① علم: دا علی بن عبد الله المدینی رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: الفهم فی العلم لاندې تیر شوی دی (۱).

② سفيان: دا سفيان بن عيينه رضی اللہ عنہ دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، الحدیث الاول او تفصیلی حالات کتاب العلم، باب: قول المحدث: حدثنا او اخبرنا وانہانا لاندې تیر شوی دی (۲).

③ زهري: دا امام محمد بن مسلم، بن عبید الله، بن شهاب الزهري رضی اللہ عنہ دی. د دوی مختصر حالات کشف الباری، کتاب بده الوسی د دریم حدیث لاندې تیر شوی دی (۳).

④ حميد بن عبد الرحمن: دا حميد بن عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: تطوع قیام رمضان من الإیمان لاندې تیر شوی دی (۴).

⑤ ابوسعید الخدری: دا مشهور صحابی رسول حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ دی. د دوی تفصیلی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الدین الفرار من الفتن لاندې تیر شوی دی (۵).

د حدیث شرح: دا روایت هم واضح دی. د دې تشریح هم ماقبل ابواب کښې بیان شوي ده. د مذکورہ حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت ولکن من یساره او تحت قدمه کښې دی. معنی د دې جملې داده چہ پکار دی خپل کس طرف ته اونه توکی (۶).

قوله: وَعَنِ الزُّهْرِيِّ، سَمِعَ حُمَيْدًا، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ نَحْوَهُ: د دې تکرې په ذریعہ امام بخاری رضی اللہ عنہ دا اشاره کول غواری چہ مذکورہ حدیث ماقبل سند کښې زهري رضی اللہ عنہ د حميد بن عبد الرحمن رضی اللہ عنہ نه په عنعنہ سره روایت کړې وو او د زهري رضی اللہ عنہ د حميد بن عبد الرحمن رضی اللہ عنہ نه سماع هم ثابتہ ده. چنانچہ دا سند هم په دغه سماع باندې دلالت کوي (۷).

(۱) کشف الباری: ۲۹۷/۳.

(۲) کشف الباری: ۱۰۲/۳، ۲۳۸/۱.

(۳) کشف الباری: ۱/۳۲۶.

(۴) کشف الباری: ۲/۳۱۶.

(۵) کشف الباری: ۲/۸۲.

(۶) عمدة القاری: ۲۲۷/۴.

(۷) شرح الکرمانی: ۷۳/۴، عمدة القاری: ۲۲۸/۴.



دَدِي تَكَرَّرِي بَارَه كِنْبِي عَلَامَه كَرْمَانِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَرْمَانِي چَه دَا تَعْلِيْق دِي. (١) خُو حَافِظِ ابْنِ حَجْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَهْفَوِي دَنُومِ اخْسَتُونَه بَغْيِرِ نَقْدِ كُولُو سِرَه فَرْمَانِي چَه دَا تَعْلِيْقِ كَرْخُولِ دَ شَرَا حُو وَهَمِ دِي بَلَكَه دَا مَوْصُولِ دِي لَكَه چَه دَدِي نَه مَخْكِنْبِي هَم دَاسِي شَوِي دِي. (٢) پَه دِي بَانْدِي عَلَامَه عَيْنِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَ عَلَامَه كَرْمَانِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ طَرَفِ دَارِي كُولُو سِرَه دَدِي تَعْلِيْقِ كِيدَلِ رَاجِحِ كَرْخُولِي دِي. (٣)

### ٥- بَابُ: كَفَّارَةُ الْبُزَاقِ فِي الْمَسْجِدِ

دَا بَابِ دَدِي بَارَه كِنْبِي دِي چَه پَه جَمَاتِ كِنْبِي دَ بَلْغَمِ غُورْزُولُو كَفَّارَه خَه دَه؟

دَ تَوْجُمَةِ الْبَابِ مَقْصِدُ: حَضْرَتِ شَيْخِ الْحَدِيثِ صَاحِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَرْمَانِي چَه پَه دِي بَابِ سِرَه اِمَامِ بَخَارِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَ اِمَامِ نَوَوِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَخْتَارِ (مَذْهَبِ) طَرَفِ تَه اِشَارَه كَرِي دَه. (اَوْدَ سَابِقَه اِبُو اَبُو نَه دَ قَاضِي عِيَاضِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَ مَذْهَبِ تَائِيْدِ كِيدَلُو). (٤)

پَه جَمَاتِ كِنْبِي دَ تُو كُولُو يَا نَه تُو كُولُو دَ اَهْكَامَاتُو خَلَاصَه: دَ تَيِرُو شَوُو اِبُو اَبُو دَمَقَاصِدُو خَلَاصَه بَه دَا رَاؤُخِي چَه پَه جَمَاتِ كِنْبِي دَمُونِخِ دَرُوَانِ كِنْبِي يَا دَ مُونِخِ نَه بَهْرِ كَه چَرْتَه دَ تُو كَانَرُو تُو كُولُو مَجْبُورِي پَيِنْبَه شِي نُو دَ اَحَادِيثُو مَطَابِقِ پَه جَمَاتِ كِنْبِي خِيْلِ كَسِ طَرَفِ تَه يَا دَ خِيْلِي كَسِي خِيْلِي لَانْدِي دَ تُو كُولُو تَصْرِيحِ ذَكَرِ دَه. هَغَه پَه دِي شَرْطِ سِرَه چَه جَمَاتِ كَجَه وَيِ دَكُومِ پَه بِنِيَادِ چَه هَغَه تُو كَانَرِي پَه خَاوَرَه وَغَيْرَه سِرَه پَتِيُولِ مَمْكِنِ وَيِ نُو دَاسِي دِي كُوِي خُو كَه جَمَاتِ پُوخِ دِي نُو بِيَا دَ جَمَاتِ پَه فَرَشِ بَانْدِي دَ تُو كُولُو اِجَازَتِ نَشْتَه دِي. پَه دِي صُورَتِ كِنْبِي پَه خِيْلَه كِيْرَا وَغَيْرَه كِنْبِي تُو كُولُو سِرَه هَغَه مَرِيْلِ پِكَارِ دِي. زَمُونِ دَدِي خَبَرِي تَائِيْدِ دَ اِبُو دَاوُدِ شَرِيْفِ دِي رُوَايَتِ نَه هَمِ كِيْرِي. (٥)

حديث باب [حديث نمبر ٢٠٥]

٣١٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ (٦) قَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «الْبُزَاقُ فِي الْمَسْجِدِ خَطِيئَةٌ، وَكَفَّارَتُهَا دَفْنُهَا».

(١) شرح الكرماني: ٧٣/٤.

(٢) فتح الباري: ٦٦٢/١.

(٣) عمدة القاري: ٢٢٨/٤.

(٤) تقرير بخاري شريف: ١٥٢/٢.

(٥) عن عبدالرحمن بن أبي حدرود الأسلمي قال سمعت أبا هريرة يقول: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "من دخل هذا المسجد، فبزق فيه، أو تنخم، فليحفر، فليدفنه، فإن لم يفعل، فليبزق في ثوبه ثم ليخرج به." (سنن أبي داؤد، كتاب الصلاة، كراهية البزاق في المسجد، رقم الحديث: ٤٧٧).

(٦) أخرجه مسلم في صحيحه في المساجد، باب: النهي عن البصاق في المسجد، رقم الحديث: ١٢٦٠. وأبو داؤد في سننه، في الصلاة، باب: في كراهية البزاق في المسجد، رقم الحديث: ٤٧٤، ٤٧٥، ٤٧٦. والترمذي في جامعه، في الصلاة، باب: ما جاء في كراهية في المسجد، رقم الحديث: ٥٧٢. والنسائي في سننه في المساجد، باب: البصاق في المسجد، رقم الحديث: ٨٠٤. وفي جامع الأصول، حرف الميم، الكتاب السادس: في المساجد، الفصل الثاني: في أحكام تتعلق بالمساجد، الفرع الأول: في البصاق، رقم الحديث: ٨٧٣٢، ١٩٤/١١.

د حدیث ترجمه: حضرت انس رضی اللہ عنہ فرمائی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه جمات کنبی توکل گناه ده او ددی کفارہ دفن کول دی.

تراجم رجال: د مذکورہ حدیث په سند کنبی ټول څلور راویان دی:

① آدم رضی اللہ عنہ: دا آدم بن ابی ایاس العسقلانی رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده لاندې تیر شوی دی (۱).

② شعبه رضی اللہ عنہ: دا شعبه بن الحجاج رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده، لاندې تیر شوی دی (۲).

③ قتاده رضی اللہ عنہ: دا قتاده بن دعامة رضی اللہ عنہ دی. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الإیمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیره شوې ده (۳).

④ انس بن مالک رضی اللہ عنہ: دا مشهور او معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالک بن نضر خزرجی انصاری رضی اللہ عنہ دی. د دوی تذکره کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الإیمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیره شوی ده (۴).

د حدیث شرح: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْبِزَاقُ فِي الْمَسْجِدِ خَطِيئَةٌ: نَبِي كَرِيم صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه په جمات کنبی توکانرې توکل گناه ده. قوله: "الْبِزَاقُ فِي الْمَسْجِدِ" د صحيح بخاری د روایت الفاظ خودادی لیکن د صحيح مسلم په روایت کنبی د "البواق" په ځای د "التقل" لفظ دی یعنی "التقل في المسجد" معنی د دواړو هم یوه ده (۵).

قوله: "فِي الْمَسْجِدِ" دا ظرف دی د وقوع فعل د پاره یعنی دا خبره ضروری نه ده چه فاعل دی هم په ظرف کنبی دننه وی بلکه فاعل د ظرف نه بهروی او دهغه فعل په ظرف کنبی دننه واقع وی نو بیا به هم ممانعت متوجه وی. چنانچه توکونکې که په جمات کنبی دننه وی که بهروی په دواړو صورتونو کنبی توکانرې په جمات کنبی غورزیدل گناه ده (۶).

قوله: وَكَفَّارَتُهَا دَفْنُهَا: او ددی کفارہ دفن کول دی. په جمات کنبی که چرته خاوره، شکه یا واره کانرې وغیره وی نو د دفن کولو نه مراد دادې چه د جمات په خاوره وغیره کنبی دی هغه توکانرې پټې کړی. او که دغه ذکر شوی څیزونه نه

(۱) کشف الباری: ۱/۶۷۸.

(۲) کشف الباری: ۱/۶۷۸.

(۳) کشف الباری: ۳/۲.

(۴) کشف الباری: ۴/۲.

(۵) أخرجه مسلم في صحيحه في المساجد، باب: النهي عن البواق في المسجد، رقم الحديث: ۱۲۶۰.

(۶) عمدة القاری: ۲۲۹/۴.

وی مثلاً پوخ فرش وی یا قالینونه وغیره خوآره وی نو د دفن کولو نه مراد به دا وی چه توکانرې یا بلغم د جمات نه اوباسی یعنی ونی گروی یا نئی په څه کپرا وغیره باندې نئی صفا کړی.)

د سنن ابوداؤد حدیث کښې ددې امر طرف ته اشاره موجود ده ونی گورنئ: «عن عبدالرحمن بن ابی حذرر الأسلی قال سمعت ابا هریرة یقول: قال رسول الله صل الله علیه وسلم: "من دخل هذا المسجد، فبرق علیه، أو تنخم، فلیطمر، فلیدقنه، فإن لم یفعل، فلیبرق فی ثوبه ثم لیغمر به"» (۱).

امام نووی رحمته الله فرمائی چه دا حکم د جمات نه د بهر سړی دې نه چه په جمات کښې د داخل سړی، په جمات کښې د داخل سړی حکم خودادې چه هلته دې هډو توکی نه او که چرې د توکلو حاجت راغلو نو په خپله کپرا کښې دې او توکی (۲).

علامه عینی رحمته الله ددې خبرې په تردید کښې فرمائیلو سره لیکي چه (د علامه نووی رحمته الله په دې خبره باندې دیر زیات احادیث دال دی چه دا ټول احکام په جمات کښې د دننه توکلو او صفا کولو سره متعلق دی) (۳) علامه قرطبی رحمته الله فرمائی چه په توکانرو باندې به د گناه اطلاق هغه وخت کیږی کله چه هغه بغیر د دفن کولو نه هم داسې پریخودې شی صرف د توکلو د وجې نه به د گناه حکم نه لاگو کیږی (۴).

علامه عینی رحمته الله د حضرت سعید بن منصور رحمته الله یو اثر نقل کړې دې چه حضرت ابو عبیده رضی الله عنه ته یو ځل د شپې د مجبورنئ په صورت کښې توکل پښ شویا هغه صفا کول هیر کړل او خپل کور ته لاړو. کور ته چه اور سیدو نو ورته یاد شو د اور شغله نئی د رنړا د پاره راوړه. جمات طرف ته راؤگرخیدو جمات ته په رسیدو نئی توکانرې اولتولې او هغه نئی دفن کړې. یعنی صفائی کړې. بیانی او فرمائیل ټول ثنا اوصفت هم د الله تعالی د پاره دی چه هغه زما په عمل نامه کښې د شپې دغه خطا اونه لیکلده (۵).

د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مطابقت بالکل واضح دې چه په دواړو کښې هم یوه خبره ذکر ده.

(۱) عمدة القاری: ۲۲۹/۴.

(۲) سنن ابی داؤد، کتاب الصلاة، کراهیه البزاق فی المسجد، رقم الحدیث: ۴۷۷.

(۳) شرح النووی علی صحیح مسلم، کتاب الصلاة، کتاب المساجد، باب النهی عن البصاق فی المسجد فی الصلاة وغیرها: ۳۹/۵.

(۴) عمدة القاری: ۲۲۹/۴.

(۵) للمفهم لما أشکل من تلخیص کتاب مسلم للقرطبی، کتاب الصلاة، باب النهی عن الاختصار، وما یجوز من اللبس فیها، وما جاء فی البصاق فی المسجد، رقم الحدیث: ۱۰۴۹، ۱۵۵/۲.

(۶) عمدة القاری: ۲۲۹/۴.

## ۶- بَابُ: دَفْنِ النَّخَامَةِ فِي الْمَسْجِدِ

دا باب په جمات کښې د بلغم د دفن کولو باره کښې دې  
 د ترجمه الباب مقصد: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چې نخامه په جمات کښې  
 دفن کول جائز دی. علامه رویانی رحمته وائی چې جمات د تحت الثری نه واخله تر آسمانه پورې  
 دې. لهذا که په جمات کښې دفن کړې شو نو هم په جمات کښې به وی او حک د جمات د  
 احترام د وجې نه کیرې نو اوس هم د احترام خلاف شو، لهذا د فن نه مراد د دې بهر کول دی.  
 حضرت امام بخاری رحمته د دفن جواز ثابتوی. ځکه چې اوس هغه (بلغم) د خاورې لاندې شوې  
 دې او د دې نه لاندې نه ده معلومه چې څومره څیزونه دي، مری هم وی. لهذا دا د دې خلاف دی  
 او دویم غرض دا دې چې دفن د جمات سره خاص دې د جمات نه بهر نه دې (۱).

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۰۶]

۳۱- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَامِ بْنِ سَمْعَانَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ (۲) عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ: «إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَلَا يَبْصُقُ أَمَامَهُ، فَإِنَّمَا يَنْجِي اللَّهُ مَا دَامَ فِي مُصَلَّاهُ، وَلَا عَنْ يَمِينِهِ، فَإِنَّ عَنْ يَمِينِهِ مَلَكًا، وَيَبْصُقُ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمَيْهِ، فَيَذَرُهَا».

د حدیث ترجمه: حضرت ابو هریره رضی الله عنه د نبی اکرم صلی الله علیه و آله نه نقل کوی چې حضور پاک ارشاد فرماتیلی دې کله چې تاسو نه څوک د مانځه د پاره او درېرې نو هغه دې خپلې مخې ته نه توکی، ځکه چې تر کومې پورې هغه په خپل مونغ کښې مشغول وی نو تر هغه وخته پورې الله تعالی سره مناجات کوی. او خپل بڼی طرف ته دې هم نه توکی، ځکه چې د هغه بڼی طرف ته یوه فرشته وی البته خپل گس طرف ته یا د خپلو څپو لاندې دې توکی بیا دې هغه دفن کړی. تواجم و حال: د مذکور حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه راویان دی:

① اسحاق بن نصر رحمته: دا اسحاق بن ابراهیم بن نصر رحمته دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: من اغتسل عریانا و حده فی خلوة لاندې تیر شوې دې (۲).

② عبد الرزاق رحمته: دا عبد الرزاق بن همام بن نافع صنعانی رحمته دې. د دوی احوال کشف

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۵۲/۲، سراج القاری: ۴۵۸/۲، الكنز المتواری: ۱۰۶/۴.

تقریر بخاری شریف په حواشی کښې د مولوی سلمان صاحب طرف ته منسوب تقریر کښې یوه بله خبره ذکر ده چې د بعضی علماؤ نه د نخامه د دفن کولو ممانعت نقل کړې شوې دې د احترام د خلاف کیدو د وجې، نوزمونو د طرف نه د دې جواب دادې چې دا د احترام مخالفت تر هغې به هله وی چې هغه پخپله ناپاک وی. بزاق پخپله ناپاکه نه دې بلکه د استقذار د وجې دفن کولې شی او په دې حیثیت سره د احترام خلاف نه دې. (حاشیه تقریر بخاری شریف: ۱۵۲/۲).

(۲) تقدم تغريبه تحت رقم الحديث: ۴۰۰.

(کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: من اغتسل عریانا و حده فی خلوة).

الباری، کتاب الإیمان، باب: حسن اسلام المرء لاندې تیر شوې دی<sup>(۱)</sup>.  
 (۲) معبر رحمته: دا ابو عروه معمر بن راشد الازدی رضی الله عنه دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی خلورم حدیث او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: کتابه العلم لاندې تیر شوې دی<sup>(۲)</sup>.

(۳) همام رضی الله عنه: دا همام بن منبه بن کامل یمانی صنعانی رضی الله عنه دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: حسن اسلام المرء او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: کتابه العلم د دریم حدیث لاندې تیر شوې دی<sup>(۳)</sup>.

(۴) ابو هریره رضی الله عنه: دا مشهور صحابئ رسول حضرت ابو هریره رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: أمور الإیمان لاندې تیر شوې دی<sup>(۴)</sup>.

د حدیث شرح: إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ إِلَى الصَّلَاةِ، فَلَا يَبْصُقْ أَمَامَهُ: حضرت ابو هریره رضی الله عنه د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه نقل کوی چه حضور پاک ارشاد او فرمائیلو کله چه تاسو کبني خوک د مانځه د پاره او درېری نوهغه دې خپلې مخې ته نه توکی.

قوله: "فَلَا يَبْصُقْ" دا د نهی غائب واحد مذکر غائب صیغه ده.

قوله: "فَأَيُّهَا أَجِي اللَّهُ مَا دَامَ فِي مُصَلَّاةٍ": ځکه چه ترکومې پورې هغه په خپل مونځ کبني مشغول وی نو تر هغه وخته پورې د الله تعالی سره مناجات کوی. د کشمیهنی په روایت کبني "فانه ينأى" الفاظ دی<sup>(۵)</sup>.

قوله: "مَا دَامَ فِي مُصَلَّاةٍ" خو پورې، چه په مونځ کبني مشغول وی تر هغه وخته پورې په جمات کبني د توکلو ممانعت صرف د مونځ دوران کبني دی که د مونځ نه بهر هم دی؟ په دې باندې اشکال راځی چه د دې روایت مطابق د توکلو ممانعت صرف د مونځ په حالت کبني دی حالانکه د روایت په کوم کبني چه د دې وجه مسلمان ته تکلیف رسول خودلې شوې وو، تقاضا خود داده چه ممانعت دې د مانځه سره خاص نه وی بلکه مطلق وی.

د دې جواب دا ورکړې شوې دی چه د دې ممانعت مختلف درجې دی. دا کار په مانځه کبني کول ډیره سخته گناه ده او بیا د جمات د نورو حصو په نسبت د قبلې دیوال باندې کیدل نوره هم سخته گناه ده وغیره وغیره<sup>(۶)</sup>.

(۱) کشف الباری: ۴۲۱/۲.

(۲) کشف الباری: ۴۶۵/۱، ۳۲۱/۴.

(۳) کشف الباری: ۴۲۸/۲، ۳۱۷/۴.

(۴) کشف الباری: ۶۵۹/۱.

(۵) فتح الباری: ۶۶۴/۱ عمدة القاری: ۲۳۰/۴.

(۶) فتح الباری: ۶۶۴/۱ عمدة القاری: ۲۳۰/۴.

قوله: وَلَا عَنْ يَمِينِهِ، فَإِنَّ عَنْ يَمِينِهِ مَلَكًا: او خپل بنی طرف ته دې هم نه توکی ځکه چه دده بنی طرف ته یوه فرېسته ده.

قوله: مَلَكًا: په یو روایت کېنې دا لفظ "ملك" استعمال شوې دې په دې صورت کېنې به دا د لفظ "ان" خبر وی او د "ان" اسم په ضمیر الشان وی (۱).

کس طرف ته توکلو کېنې ولې د فرېستې بې احترامی نشته؟ په دې عبارت باندې یو اشکال دا راځی چه بنی طرف ته د فرېستې د کیدو د وجې نه د هغې په اکرام کېنې بنی طرف ته توکل منع دی. خو فرېسته خو گس طرف ته هم وی لهذا گس طرف ته توکل څنگه جائز کیدې شی؟ نو د دې مختلف جوابات ورکړې شوی دی:

یو جواب علامه کرمانی رحمته الله علیه ورکړې دې چه مونځ کوم چه ام الحسانت دې د دې د ادا کیدو په وخت کېنې د بدنې د لیکونکې فرېستې هیڅ عمل دخل نه وی لهذا د مونځ په حالت کېنې هغه فرېسته نه وی. یا بیا د اهرم مراد کیدې شی چه د کراما کاتبین نه علاوه څه بله فرېسته ورسره وی لهذا هیڅ اشکال نشته (۲).

لیکن علامه عینی رحمته الله علیه دا جوابات رد کولو سره یو خپل جواب نقل کړې دې چه هر انسان سره یوه فرېسته او یو قرین (شیطان) وی، د فرېستې ځانې بنی طرف ته او د قرین ځانې گس طرف ته وی. نو کیدې شی چه گس طرف ته توکلې بلغم په شیطان باندې پریوځې په فرېسته باندې نه (۳). هم د دې طرف ته د طبرانی رحمته الله علیه په یو روایت کېنې اشاره هم ملاویری (۴).

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه دا فرېسته کاتب حسانت نه ده بلکه دا هغه فرېسته ده چه مصلی له راشی بنی طرف ته او دربرې او الام حسانت کوی (۵).

قوله: وَلَيَبْصُرُ عَنْ يَسَارَةٍ، أَوْ تَحْتَ قَدَمَيْهِ، فَمَذْفُوقًا: البته خپل گس طرف ته یا د خپلو خپو لاندې دې او توکی او بیا دې هغه دفن کړی.

قوله: وَلَيَبْصُرُ: دا لفظ د یو بل روایت مطابق "وليبزق" دې (۶).

(۱) شرح الكرمانی: ۷۴/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۲/۳.

(۲) شرح الكرمانی: ۷۴/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۲/۳.

(۳) عمدة القاری: ۲۳۰/۴.

(۴) عن أبي امامة قال قام رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم، فاستفتح الصلاة، فرأى نخامة في التبتة فخلع نعليه، ثم مشى إليها فحتها، ففعل ذلك ثلاث مرات، فلما قضى صلاته، أقبل على الناس بوجهه، فحمد الله وأثنى عليه، ثم قال: أيها الناس! إن أحدكم إذا قام في الصلاة فإنه في مقام عظيم، يسأل أمرا عظيما الفوز بالجنة، والنجاة من النار، وإن أحدكم إذا قام في الصلاة، فإنه يقوم بين يدي الله مستقبل ربه وملكه عن يمينه، وقرينه عن يساره، فلا يتفلن أحدكم بين يديه، ولا عن يمينه، ولكن عن يساره تحت قدمه اليسرى..... (المعجم الكبير للطبراني، صدى بن العجلان أبو امامة الباهلي، رقم الحديث: ۷۸۰۸، ۱۹۹/۸).

(۵) الكنز المتواری: ۱۰۲/۴، سراج القاری: ۴۵۹/۲، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۲/۳.

(۶) مصابيح الجامع شرح الجامع الصحیح للإمام البخاری: ۱۱۸/۲.

قوله: "فَيَذْفُئُهَا" په دې فعل باندې دريواره اعراب (نصب، رفع او جزم) لوستل جائز دی. د نصب لوستلو په صورت کښې به دا صیغه د امر واقع کېږي. د رفع په صورت کښې به مبتداء محذوف "هو" خبروی او د جزم لوستلو په صورت کښې به ددې عطف په امر "ليصق" باندې وی (۱).

قوله: "فَيَذْفُئُهَا" د هاء ضمير مرجع به "الْهَيْقَةَ" جوړولې شی په کوم چه د حديث شريف قول "وليصق" دلالت کوي (۲).

علامه کرمانی رحمته الله يو اشکال ذکر کولو سره د هغې جواب هم ورکړې دې چه ترجمه الباب خو "دفن دخامة" په ذکر باندې دې او حديث شريف "وفن بزاق" باندې دلالت کوي. نو ددې جواب دادې چه د حکم په اعتبار سره دواړه (خامه او بزاق) برابر دي (۳).  
توکانرې په جمات کښې د دفن کولو صورت:

قوله: "فَيَذْفُئُهَا" يو صورت خودا دې چه دمونخ پوره کولونه پس په هغې باندې لږه ډيره خاوره اچولو سره پټ کړې شی نو دلته دامعنی مراد نه ده. ځکه چه په دې صورت کښې به دا خطر به باقی پاتې وي چه هلته د چا خپه راشی يا هغه هم په دغه ځایي باندې کښی نو په دې سره به هغه ته تکلیف او پریشانی اورسی. بلکه ددې د دفن کولو طریقه به دا مراد وي چه باقاعدہ لږه شان زمکه او کښی د هغې په خاوره کښې دغه بلغم پټ کړی شی. اوس بنسکاره خبره ده چه دا په هغه صورت کښې ممکن کیدې شی کله چه د جمات فرش کچه وي خو که فرش پوخ وي نو دا خبره بیا وړاندې تیره شوې ده چه په دې صورت کښې د جمات په فرش باندې اونه توکلی شی بلکه دخپلې کپړې په یوه غاړه کښې دې اوتوکی او اودې مړی. او که هم په هغه فرش باندې توکل او شو نو په دې صورت کښې به دمونخ نه پس په کپړا یا اوبو سره هغه توکانرې صفا کول مراد وی (۴).

د ترجمه الباب سره مناسبت: دمذکوره حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت د روايت لفظ په "فَيَذْفُئُهَا" کښې دې په دې توگه چه بزاق او خامه هم په يو حکم کښې دی (۵).

(۱) شرح الکرمانی: ۷۴/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۲/۳، عمدة القاری: ۲۳۰/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۳۰/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۷۴/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۶۴/۱.

(۵) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۲/۳، فتح الباری: ۶۶۴/۱، عمدة القاری: ۲۲۹/۴.

## ۷- بَابُ: إِذَا بَدَرَهُ الْبُزَاقُ فَلْيَأْخُذْ بِطَرَفِ ثَوْبِهِ

دا باب په دې باره کښې دې چه کله مونځ گزار باندې د توکلو غلبه راشی نو هغه دې دا توکافرې د کپړې په غاړه کښې واخلي.

د ترجمه الباب مقصد: په دې باب کښې دا خودل مقصود دی چه که مونځ گزار د توکلو وغیره د پاره مجبوره شی نو د هغه د پاره په کپړا کښې توکل هم جائز دی. (۱)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چه امام بخاری رحمته تنبیه فرمائی چه په روایت کښې نې "بصاق فی اليسار" او "تحت القدم" او "فی الثوب" کښې تسویه فرمائیلې ده. دا مطلب نې نه دې چه په کپړه کښې دې واخلي او دې مړې بلکه دا هغه وخت دی کله چه بصاق په ده غالب راشی او بل څه لار نه وی نو داسې دې او کړی. اگر چه ترجمه شارحه ده او ما بیان کړې دې چه د امام بخاری رحمته د اصول نه دی چه هغه کله ترجمه شارحه تری. په کوم کښې چه د ابهام توضیح او د خاص تعمیم او دعام تخصیص وی. (۲)

(۱) انوار الباری: ۳۲۲/۱۳. مولانا بجنوری رحمته په دې مقام باندې لیکي چه په دې موقع باندې امام بخاری رحمته "بدره" د عربیت خلاف لیکلی دی صحیح "بدر إلیه" وو لکه چه جوهری وغیره اهل لغت او تصرف لیکلی دی. محقق عینی رحمته لیکلی دی حافظ ابن حجر رحمته چه په دې موقع باندې د امام بخاری رحمته کوم بې خایه حمایت کړې دې هغه پخپله د هغه د علم تصرف نه د ناواقفیت دلیل دې. (عمده: ۳۲۴/۳). دلته په دې خبره باندې حیرانتیا نه دی کول پکار چه امام بخاری رحمته یا حافظ ابن حجر رحمته په علم تصرف کښې کمزورې وو ځکه چه لکل فن رجال دی، دا کله ضروری دی چه امام بخاری رحمته او حافظ ابن حجر رحمته د علم حدیث او رجال امامان وی نو د لغت او تصرف دې هم امامان وی. علامه کشمیری رحمته په درس د بخاری شریف کښې په څو مواقعو د امام بخاری رحمته په عربیت باندې نقد کړې او فرمائیلې نې وو چه ده له خو په جرح او تعدیل د رواة کښې کیدل پکار دی دلته خو به هم د زمخشری رحمته اتباع کولې شی ځکه چه هغه د عربیت مالک دې. یو ځانی کښې د احم فرمائیلې دی چه که د امام بخاری رحمته عربیت کامل وی نو هغه به د مجاز القرآن نه په نقل کولو باندې اکتفاء نه کوله بلکه پخپله به نې هم څه لیکل. دا هم داسې دی لکه چه حافظ ابن تیمیه رحمته د امام نحو سیبویه غلطیانې بنانې حالانکه په قول د حضرت کشمیری رحمته هغه به په کتاب سیبویه باندې پوره شان سره پوهه شوې هم نه وی. (انوار الباری: ۳۲۳/۱۳) وکذا فی عمدة القاری: ۲۴۰/۴.

(۲) تقریر بخاری شریف: ۱۵۲/۲. په دې مقام د تقریر بخاری شریف په حاشیه کښې یوه بله توجیه ذکرده: زما په نیز د امام بخاری رحمته غرض یوې باریکې طریقې سره تنبیه کول دی. هغه دا چه په کثرت سره دامضمون راغلې دې چه لکن عن يساره او تحت قدمه، او بفعل هكذا. نو حضرت امام بخاری رحمته "إذا بدو، البزاق زیاتولو سره او خودل چه دا په کپړې سره بلغم مړل د لاندې توکلو برابر نه دې لکه چه لفظ "ار" نه معلومیرې. بلکه دا مقید دې "إذا بدره" سره او ددې درجه د لاندې توکلو نه کمه ده او لاندې توکل ددې فعل ثوب نه وړاندې شوې دې. (کذافی تقریر مولوی احسان).



۳۱۷- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ أَنَسٍ (۱) أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -رَأَى نُخَامَةً فِي الْقِبْلَةِ فَحَكَهَا بِيَدَيْهِ، وَبَيَّ مِنْهُ كَرَاهِيَةً- أَوْ بَيَّ كَرَاهِيَتَهُ لِذَلِكَ وَشَدَّتْهُ عَلَيْهِ -وَقَالَ «إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ فِي صَلَاتِهِ فَأَيُّمَا بَنَاجِي رَبَّهُ - أَوْ رَبَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ قِبْلَتِهِ - فَلَا يَبْزُقَنَّ فِي قِبْلَتِهِ، وَلَكِنْ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمَيْهِ». ثُمَّ أَخَذَ طَرَفَ رِدَائِهِ فَبَزَقَ فِيهِ، وَرَدَّ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ، قَالَ «أَوْ يَقَعُ هَكَذَا».

د حدیث ترجمہ: حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ روایت کوی چہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د جمات د قبلہ والا دیوال بانڈی بلغم لکیدی اولیدلو نو حضور پاک ہغہ پہ خپل لاس مبارک سرہ صفا کرو پہ داسی حال کنسی چہ د ناخوبی آثار د حضور پاک پہ مخ مبارک بانڈی اولیدی شو. یا (راوی او فرمائیل چہ) پہ دغہ دیوال د جمات بانڈی د بلغم د پریوتلو د وجی نہ د خفگان آثار د حضور پاک پہ مخ مبارک بانڈی اولیدی شو. بیا حضور پاک او فرمائیل کله چہ تاسو کنسی خوک د مانخہ د پارہ اودریبری نو ہغہ د خپل رب سرہ مناجات کوی. یا (داسی نی او فرمائیل چہ) د ہغہ رب لکه چہ د ہغہ او د ہغہ د قبلہ پہ مینخ کنسی وی. لہذا ہغہ دے د قبلہ طرف تہ نہ توکی بلکہ خپل گس طرف تہ یا د خپلو خپو لانڈی دے توکی. بیا حضور پاک د خپل خادر مبارک غارہ اونیولہ پہ ہغی کنسی نی او توکل او ہغہ نی او مرلہ او وئی فرمائیل یادی داسی کوی.

تواجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کنسی تول خلور راویان دی:

① مالک بن اسماعیل رضی اللہ عنہ: دا مالک بن اسماعیل ابو غسان النهدی رضی اللہ عنہ دے دوی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: الماء الذي يغسل به شعر الإنسان، رقم الحديث: ۱۷۰ لانڈی تیر شوی دی (۲).

② زهير بن محمد رضی اللہ عنہ: دا زهير بن معاوية بن حديج حنفی کوفی رضی اللہ عنہ دے دے دوی احوال کشف الباری، کتاب الايمان، باب: الصلاة من الايمان لانڈی تیر شوی دی (۳).

③ حميد بن محمد رضی اللہ عنہ: دا حميد بن ابي حميد الطويل ابو عبيده بصری رضی اللہ عنہ دے دے دوی احوال کشف الباری، کتاب الايمان، باب: خوف المؤمن من أن يحبط عمله وهو لا يشعر دویم حدیث لانڈی تیر شوی دی (۴).

④ انس بن مالك رضی اللہ عنہ: دامشهور او معروف صحابن رسول حضرت انس بن مالك رضی اللہ عنہ دے

(۱) مرتخریجہ تحت کتاب الوضوء، باب: البزاق والمغاط ونحوه فی الثوب، رقم الحديث: ۲۴۱.

(۲) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: الماء الذي يغسل به شعر الإنسان، رقم الحديث: ۱۷۰.

(۳) کشف الباری: ۲/۳۶۷.

(۴) کشف الباری: ۲/۵۷۱.

د دوی په احوالو باندې تفصیلی کلام کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان ان یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیر شوی دی. (۱)

د هدیث شرح: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى نُحَامَةً فِي الْقِبْلَةِ، فَحُكَّتْهَا بِيَدَيْهِ وَدَبَّرَ مِنْهُ كَرَاهِيَةً. حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ روایت کوی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د جمات د قبلې والا دیوال باندې بلغم لگیدلې اولیدلو نو حضور پاک په خپل لاس مبارک سره صفا کړو په داسې حال کښې چه د خفگان آثار د حضور پاک په مخ مبارک باندې اولیدلې شو.

قوله: "فَدَبَّرَ مِنْهُ كَرَاهِيَةً" حضرت شیخ الحدیث رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه قاعده دا ده چه کله یو سرې ښکلې وی نو غم او خفگان، خوشحالی او راحت د هغه په مخ نه ښکاري. او د حضور پاک نه زیات حسین او جمیل څوک کیدې شی؟ نه د حضور پاک په شان ښکلې څوک پیدا شوې دې او نه به پیدا شی. چنانچه د حضور پاک د زیات حسن د وجې نه به په مخ مبارک باندې چه کومه خبره وه هغه به ښکاره معلومیدلې. (۲)

قوله: "أَوْرِيهِ كَرَاهِيَتَهُ لِذَلِكَ وَشِدَّتُهُ عَلَيْهِ" یا (راوی او فرمائیل چه) په دغه دیوال د جمات باندې د بلغم د پریوتلو د وجې نه د خفگان آثار د حضور پاک په مخ مبارک باندې اولیدلې شو.

"او" نه د راوی د شک بیان دې او شک په هغه امر کښې دې چه د لفظ "کراهية" د "هو" ضمیر طرف ته اضافت دې که نه. بعضې نسخو کښې دا لفظ د یاء نه بغیر او په اضافت سره دې یعنی "کراهته" (۳).

قوله: "شِدَّتُهُ" مرفوع او مجرور دواړه شان لوستل صحیح دی. د مرفوع په صورت کښې به د دې عطف په "کراهيته" باندې وی او د مجرور لوستلو په صورت کښې به د دې عطف په "ذلك" باندې وی (۴).

د روایت د ترجمه الباب سره مناسبت: ترجمه الباب کښې دوه اجزاء دی. اول "إذ ابدره الهزاق" او دویم "فلما أخذ بطرف ثوبه". خو په روایت کښې د رومی هیک ذکر نشته دې البته د دویم جز ذکر موجود دې او هغه دادې "ثم أخذ طرف رداءه فمزق فيه، ورد بعضه على بعض" لیکن "إذ ابدره الهزاق" چه کوم جز وو د هغې ذکر په روایت کښې نشته دې. "إذ ابدره الهزاق" معنی ده چه داسې توکانرې ورته راغلې چه د هغې غورزول ضروری وی تیرولې نه شی. نو د دې جواب دادې چه امام مسلم رضی اللہ عنہ روایت نقل کړې دې: «وان عجلت به بادره، فیاخذها»

(۱) کشف الباری: ۴/۲.

(۲) تقریر بخاری شریف: ۱۵۲/۲.

(۳) شرح الکرمانی: ۷۵/۴.

(۴) شرح الکرمانی: ۷۵/۴، اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۳/۳، عمدة القاری: ۲۳۱/۴.

بطرف ثوبه) (١) امام بخاري رحمته الله دذي روايت طرف ته په ترجمه الباب كنبې اشاره كول غواړي او دلته هغوی باب كنبې د ترجمې دغه جز سره متعلق څه حديث نه دي نقل كړي. او داسې هغه وخت كيږي كله چه هغه حديث د امام بخاري رحمته الله د شرائطو مطابق نه وي نو بيا امام بخاري رحمته الله هغه د خپل ترجمه الباب جز جوړوي. يا د هغې طرف ته اشاره كوي.

علامه سندي رحمته الله او فرمايل چه امام بخاري رحمته الله دذي ترجمې په ذريعه دي خبرې طرف ته اشاره كوي چه په باب كنبې كوم مطلق حديث دي هغه به دذي روايت د وحي اذاهدره سره مقيد وي كوم چه امام صاحب رحمته الله نه دي ذكر كړي او امام مسلم رحمته الله هغه ذكر كړي دي (٢). حافظ ابن حجر رحمته الله فرمايلي چه دي داسې روايات صحيح مسلم، سنن ابوداؤد او مصنف ابن ابي شيبه كنبې موجود دي (٣).

د حديث مبارك نه مستنبط شوي احكام او مسائل: دذي حديث شريف نه ډيرزيات مسائل مستنبط كيږي. په كوم كنبې چه يو څو لاندې ذكر كولې شي:

① معلومه شوه چه توكانړې ناپاكي نه وي، بلكه پاكي وي (٤).

② توكانړې توكل مونغ نه باطلوي (٥).

(١) تفصيل وړاندې په حاشيه نمبر ٤ كني راځي.

(٢) حاشية السندي على الجامع الصحيح: ١٢٢/١، الطاف سنن.

(٣) فتح الباري: ١/٦٦٥ صحيح مسلم كنبې د مذكوره حديث متعلقه حصه: «ثم مضينا حتى أتينا جابر بن عبد الله في مسجده... أتانا رسول الله صلى الله عليه وسلم في مسجدنا هذا... قال [رسول الله صلى الله عليه وسلم]: فإن أحدكم إذا قام يصلي، فإن الله تبارك وتعالى قبل وجهه، فلا يبصقن قبل وجهه، ولا عن يمينه، وليبصق عن يساره، تحت رجله اليسرى، فإن عجلت به بادرة، فليل بثوبه هكذا» ثم طوى ثوبه بعضه على بعض... (صحيح مسلم، كتاب الزهد، باب: حديث جابر الطويل وقصة أبي اليسر، رقم الحديث: ٣٠٠٨). سنن ابي داؤد كنبې مذكوره حديث شريف: «عن أبي سعيد الخدري: أن النبي صلى الله عليه وسلم كان يحب الرعاجين ولا يزال في يده منها، فدخل المسجد فرأى نخامة في قبلة المسجد فحكها، ثم أقبل على الناس مفضبا فقال: أيسر أحدكم أن يبصق في وجهه، إن أحدكم إذا استقبل القبلة فإنما يستقبل ربه عز وجل والملك عن يمينه، فلا يتقل عن يمينه ولا في قبلته، وليبصق عن يساره أو تحت قدمه، فإن عجل به أمر فليقل هكذا - ووصف لنا ابن عجلان ذلك - أن يتقل في ثوبه ثم يرد بعضه على بعض» (سنن ابي داؤد، كتاب الصلاة، باب: في كراهية البزاق في المسجد، رقم الحديث: ٤٨٠، ٤٨٥). مصنف ابن ابي شيبه كنبې مذكوره حديث شريف: «عن أبي سعيد قال دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم ويده عرجون - وكان يحب العرجون - ، فرأى نخامة في القبلة، فحكها، ثم أقبل على الناس فقال: أيها الناس، إن أحدكم إذا قام يصلي استقبله الله، وعن يمينه، ملك، أفيحب أحدكم أن يستقبله الرجل فيبزيق في وجهه؟ فلا يبزيق أحدكم في القبلة ولا عن يمينه، وليبزيق تحت رجله اليسرى أو عن يساره، فإن عجلت به بادرة فليل هكذا» يعني: في ثوبه. (المصنف لابن ابي شيبه، كتاب الصلاة، من كره أن يبزيق تجاه المسجد، رقم الحديث: ٧٥٢٧، ١٤٤/٥).

(٤) شرح الكرماني: ٧٥/٤، اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح: ١٦٣/٣، عمدة القاري: ٢٣١/٤.

(٥) شرح الكرماني: ٧٥/٤، اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح: ١٦٣/٣، عمدة القاري: ٢٣١/٤.

- ④ دقبلې طرف محترم او مکرم کیدل اودا صفا ساتل هم معلومیږي (۱).  
 ⑤ داهم معلومیږي چه د مونغ په حالت کښې مونغ گذار د خپل رب سره مناجات کښې مشغول وي (۲).  
 ⑥ ددې امر دیره لویه خطا کیدل هم معلوم شو چه د مونغ گذار توجه بواسطه جانب قبله د الله تعالی طرف ته وي، په دې وجه دغه طرف ته توکانږې توکل د ادب خلاف کیدو د وجې نه ممنوع دی (۳).  
 ⑦ نسی او گس طرفونو نه د نښې طرف افضل کیدل معلوم شو (۴).  
 ⑧ جمات د ناخوبه خیزونو نه پاک صفا ساتل هم معلوم شو (۵).  
 ⑨ د جمات د امام د پاره د جمات د احوالو کتل او خیال ساتل هم مستحسن او مستحب دی (۶).

## ۸- بَابُ: عِظَةُ الْإِمَامِ النَّاسِ فِي إِتْمَانِ الصَّلَاةِ، وَذِكْرِ الْقِبْلَةِ

داباب امام له خلقو ته د مونغ د پوره کولو اود قبلې د ذکر نصیحت کولو بیان کښې دې د ترجمه الباب ماقبل سره مناسبت او مقصد: علامه شبیر احمد عثمانی رحمته الله علیه فرماني ددې باب کښې دلته ابواب سره هیڅ تعلق نه وو په دې وجه هم پخپله امام بخاری رحمته الله علیه د ذکر القبلة لفظ زیات کړو، چه (دا باب) د هغه ابوابو سره مناسب شی (۱).  
 حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرماني چه زما په نیز ابواب المساجد شروع شو لیکن ددې باب د مسجد سره تعلق نه معلومیږي. بل وړاندې چه کوم دویم جز د باب دې یعنی د ذکر القبلة په دې باندې اشکال پیدا کیږي چه په دې صورت کښې ددې تعلق باب: استقبال القبلة سره شو، ابواب المساجد سره نه شو. زما رائي داده چه د قبلې ذکر تنبیهاً او استطراداً راغلي دي او مقصود اول جز دي او په عام توگه خلق په جمع سره مونغونه په جماتونو کښې کوی په دې اعتبار سره دا ابواب مساجد سره متعلق شو (۲).  
 د مسجد مصالح ډیر دي د هغه ټولو نه یو دا چه جهلاء جمات ته راشی د علماؤ عبادت ته په کتلو سره خپل عبادت صحیح کولې شی. وغیره وغیره. ددې نه یو داهم دې چه امام دې د

(۱) شرح الکرمانی: ۷۵/۴. الاعم الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۴۲۲/۵. الاعم الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۳/۳.

(۲) شرح الکرمانی: ۷۵/۴. الاعم الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۳/۳.

(۳) شرح الکرمانی: ۷۵/۴. الاعم الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۳/۳.

(۴) شرح الکرمانی: ۷۵/۴. الاعم الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۳/۳. عمدة القاری: ۲۳۱/۴.

(۵) التوضیح لشرح الجامع الصحیح: ۴۲۲/۵. فتح الباری: ۶۶۵/۱. عمدة القاری: ۲۳۱/۴.

(۶) فتح الباری: ۶۶۵/۱. عمدة القاری: ۲۳۱/۴.

(۷) فضل الباری: ۳/۱۲۲.

(۸) حاشیه تقریر بخاری: ۱۵۳/۳.

قوم نگرانی کوی او د هغوی په غلطیانو باندې دې توکی او هغوی دې پوهه کوی. مگر روره دا خو هم ضروری دی چه خپل حالات د مخکښې نه صحیح کړی (۱).  
 علامه انور شاه کشمیری رحمته الله علیه فرماتی چه د امام بخاری رحمته الله علیه دا عادت دې چه یوه سلسله روانه وی په مینځ کښې څه خاص فائده د هغه سلسلې د روایاتو نه مستفاد کیږی نو امام بخاری رحمته الله علیه د لږ ساعت د پاره هغه سلسله کتې کړی او په هغه فائده جلیله باندې تنبیه کوی. شاه صاحب رحمته الله علیه فرماتی چه ما ددې نوم "انجاز" کیخودې دې. دلته چونکه د استقبال قبلې سلسله روانه وه په دې کښې یو خاص خبره مینځ کښې راغله په هغې باندې خبرداره کولو د پاره امام بخاری رحمته الله علیه دا ترجمه قائمه کړه (۲).

په رومبې باب کښې ئی ادب خودلې وو چه دمونځ په حالت کښې د بلغم د توکلو غلبه وی نو ددې د دفع کولو په وخت د قبلې د طرف عظمت او ادب په خیال کښې اوساته. په دې باب کښې د مونځ د ارکانو پوره شان سره ادا کولو حکم ئی او خودلو او په دې کښې هم د قبلې طرف ته مخ کولو ذکر ضمناً راغلې دې. لهذا سابقه باب سره ئی مناسبت معلوم دې.  
 او هم دا توجیه په کلی توگه محقق عینی رحمته الله علیه او په جزوی توگه حافظ ابن حجر رحمته الله علیه ذکر کړې ده. ددې دواړو اکابرو توجیه او مناسبت ابواب لره بعید او ابعده گړخولو سره د لامع الدراری دا توجیه مونږ اوجه منلو کښې په تردد کښې یو چه په دواړو ابوابو کښې جمات او د جمعې احکامو باندې دې خبردارې ورکړې شوې دی ځکه چه نه باب سابق "اذا بدره الهزاق فلیأخذ بطرف الثوبه" کښې د جمات او جمع ذکر وو اونه په دې باب "عظة الإمام" کښې د اتمام صلوة حکم د جمات او جمع سره مخصوص دې. اتمام صلوة خو په هر مونځ کښې ضروری دې که هغه ځان له وی او که په جمع سره وی، که په جمات کښې وی او که غیر د جمات نه وی. او حضرت شاه ولی الله رحمته الله علیه چه کوم مصالح "حجة الله" کښې ذکر کړی دی هغه هم د مساجد سره خاص نه دی، مطلق د جمع د پاره دی او پخپله امام بخاری رحمته الله علیه هم دلته "ابواب المساجد" عنوان چرته قائم کړې دې؟ کتاب الصلوة لاندې مساجد او غیر مساجد د ټولو احکام ئی مختلف عنوانات قائمولو سره بیان کړی دی. والله اعلم. واضحه دې وی چه د شاه ولی الله رحمته الله علیه رساله شرح تراجم ابواب البخاری کښې باب عظة الإمام او د دې نه مخکښې هم د ډیرو ابوابو ذکر نشته دې (۳).

(۱) الكنز المتواری ۱۰۸/۴، سراج القاری: ۴۶۱/۲.

(۲) فیض الباری: ۵۱/۲.

(۳) انوار الباری: ۱۴/۵.

حديث باب (رومبي حديث) [حديث نمبر ٢٠٨]

«حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ (١) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَالَ «هَلْ تَرَوْنَ قِبْلَتِي هَاهُنَا قَوْلَ اللَّهِ مَا يَخْفَى عَلَى خُشُوعِكُمْ وَلَا رُكُوعِكُمْ، إِنِّي لَأَرَاكُمْ مِنْ وُدَاءِ ظَهْرِي».

د حديث ترجمه: د حضرت ابو هريره رضي الله عنه نه روايت دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم ارشاد فرمائيلې دي تاسو څه گنړئې چه زما قبله هم دي طرف ته ده؟ زه قسم خورم وايم چه زما نه نه ستاسو خشوع پته ده او نه ركوع، بيشكه زه خو تاسو د خپل شا طرف نه هم وينم. تراجم و حال: د مذكوره حديث شريف په سند كښې ټول پنځه راويان دي:

① عبدالله بن يوسف: دا عبدالله بن يوسف تيسی رضي الله عنه دي. د دوی مختصر احوال كشف الهاري، كتاب بده الوحي په دويم حديث او تفصيلی احوال كتاب العلم، باب: ليدهم الشاهد الغائب لاندې تير شوې دي (٢).

② مالك بن انس: دا امام مالك بن انس رضي الله عنه دي. د دوی مختصر احوال كشف الهاري، كتاب بده الوحي په دويم حديث او تفصيلی احوال كتاب الايمان، باب: من الدين الفرار من الفتن لاندې تير شوې دي (٣).

③ ابي الزناد: دا ابو الزناد عبدالله بن ذكوان مدني قرشي رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الهاري، كتاب الايمان، باب: حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الايمان لاندې تير شوې دي (٤).

④ الاعرج: دا ابو داؤد عبد الرحمن بن هرمز مدني قرشي رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الهاري، كتاب الايمان، باب: حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الايمان لاندې تير شوې دي (٥).

⑤ ابو هريره: دا مشهور صحابې رسول حضرت ابو هريره رضي الله عنه دي. د دوی احوال كشف الهاري، كتاب الايمان، باب: امور الايمان لاندې تير شوي دي (٦).

(١) أخرجه البخاري في صفة الصلاة، باب: الخشوع في الصلاة، رقم الحديث: ٧٤١، ومسلم في صحيحه، في الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة واتمامها والخشوع فيها، رقم الحديث: ٤٢٥، وفي جامع الأصول، حرف الصاد، القسم الأول: في الفرائض وأحكامها وما يتعلق بها، الباب الثاني في صلاة الجماعة، الفصل الرابع في أحكام المأموم، الفرع الثالث: في آداب المأموم، رقم الحديث: ٣٩١٢، ٤٢٣/٥.

(٢) كشف الباري: ٢٨٩/١، ١١٣/٤.

(٣) كشف الباري: ٢٩٠/١٨٠/٢.

(٤) كشف الباري: ١٠/٢.

(٥) كشف الباري: ١١/٢.

(٦) كشف الباري: ١/٤٥٩.

ذَ حَدِيثِ شَرْحٍ: عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: هَلْ تَرَوْنَ قِبَلْتِي هُنَا: ذَ حَضْرَتِ ابُو هُرَيْرَةَ رضي الله عنه نَه رَوَايَتِ دِي چِه رَسُولِ اَكْرَمِ صلی اللہ علیہ وسلم اَرشَادِ اَوْ فَرْمَانِيْلُو تَا سُو خِه گَنْرِنِي چِه زَمَا قِبَلِه هِم دِي طَرَفِ تِه دِه؟

قَوْلُهُ: "هَلْ تَرَوْنَ" ذَا اسْتِفْهَامِ اِنْكَارِي دِي اَوْ "تَرَوْنَ" نَه مَرَادِ حَقِيقِي رَوِيْتِ نَه دِي بَلَكِه دَاذَ "تَطْنُونَ" پِه مَعْنِي دِي يَعْنِي آيَا تَا سُو دَا گِمَانِ كُوْنِي....

قَوْلُهُ: "قِبَلْتِي" دِي نَه مَرَادِ اِصْطِلَاحِي قِبَلِه نَه دِه بَلَكِه ذَا مَوْنَخِ گِذَارِ ذَا مَخِي طَرَفِ مَرَادِ دِي يَعْنِي كَوْمِ طَرَفِ تِه چِه مَا مَخِ كَرِي دِي (۱).

قَوْلُهُ: "هُنَا" خُكِه چِه عَامِ قَاعِدِه خُو دَغِه دِه چِه كَلِه يُو طَرَفِ تِه مَخِ كَرِي شِي نُوذَ هَغِي پِه مِقَابِلِ طَرَفِ تِه شَاهِ رَاخِي (۲)...

اَوْ سَبِه دَدِي جَمَلِي مَكْمَلِ مَرَادِ دَا شِي اِي زَمَا صَحَابِه كَرَامُو دَا تَا سُو چِه دَا گَنْرِنِي چِه پِه مَانَخِه كِنْسِي زَمَا مَخِ قِبَلِي طَرَفِ تِه وَيِ وِسْتَا سُو طَرَفِ تِه مِي شَا وَيِ پِه دِي وَجِه مَاتِه سْتَا سُو ذَا اَفْعَالُو خِه خَبِرِ نَه وَيِ نُو سْتَا سُو دَا گَنْرِلِ صَحِيحِ نَه دِي بَلَكِه زِه چِه خُنْگِه ذَا مَخِي نَه گُورْمِ هِم دَغِه شَانِ دَا شَا نَه هِم گُورْمِ (۳).

قَوْلُهُ: قَوْلِ اللَّهِ مَا يَنْفَى عَلَيَّ خُشُوعَكُمْ وَلَا رُكُوعَكُمْ: زِه قَسْمِ خُورْمِ اَوْ وَايْمِ چِه زَمَانِه نَه سْتَا سُو خُشُوعِ پَتِه دِه اَوْ نَه رُكُوعِ. پِه يُو رَوَايَتِ كِنْسِي "رُكُوعِكُمْ وَلَا خُشُوعَكُمْ" الْفَاظِ رَاغَلِي دِي (۴).

حَافِظُ ابْنِ حَجْرٍ رحمته الله فَرْمَانِي چِه دَلْتِه مَرَادِ تَوَلُّ اَرْكَانِ دِي نَه چِه صَرْفِ رُكُوعِ اَوْ سَجُودِ. اَوْ يُو اِحْتِمَالِ دَاهِمِ دِي چِه ذَا رُكُوعِ ذَا كُرُكُولُوسِرِه سَجُودِ مَرَادِ اَخْسَتِي شُوي وَيِ، خُكِه چِه ذَا سَجْدِي پِه حَالْتِ كِنْسِي دِ پُورِه دَرَجِي خُشُوعِ وَيِ. پِه دِي حَالِ كِنْسِي چِه ذَا صَحِيحِ مُسْلِمِ حَدِيثِ كِنْسِي رُكُوعِ سِرِه ذَا سَجُودِ ذَا كُرُكُوعِ پِه تَصْرِيحِ سِرِه مَوْجُودِ دِي (۵). چِه پِه دِي صُورْتِ كِنْسِي ذَا سَجُودِ نَه مَرَادِ تَوَلُّ اَرْكَانِ وَاخْسَتِي شِي نُو بِيَا بِه ذَا رُكُوعِ ذَا كُرُكُوعِ ذَا تَخْصِيصِ بَعْدِ التَّعْمِيمِ ذَا قَبِيْلِ نَه وَيِ يَا پِه دِي وَجِه چِه رُكُوعِ ذَا نُوْرُو اَرْكَانُو پِه نَسْبِتِ يُو لُوْنِي رُكْنِ دِي پِه دِي اَعْتِبَارِ چِه اِمَامِ پِه رُكُوعِ كِنْسِي نُوْنِدُوْنِكِي ذَا رُكْعَتِ حَاصِلُوْنِكِي گُرْخُولِي شُوي دِي. اَوْ ذَا رُكُوعِ نَه پَاتِي كِيْدُوْنِكِي ذَا رُكْعَتِ فُوْتِ كُوْنِكِي گُرْخُولِي شُوي دِي (۶).

(۱) عمدة القارى: ۲۳۲/۴. شرح العلامة الزرقانى على المواهب اللدنية بالمنح المحمدية، المقصد الثالث فيما فضله لله تعالى به، الفصل الأول فى كمال خلقته وجمال صورته صلى الله عليه وسلم: ۲۶۴/۵. أيضاً

(۲) اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح: ۱۶۵/۳، فتح البارى: ۶۶۶/۱، عمدة القارى: ۲۳۲/۴.

(۳) شرح العلامة الزرقانى على المواهب اللدنية بالمنح المحمدية، المقصد الثالث فيما فضله لله تعالى به، الفصل الأول فى كمال خلقته وجمال صورته صلى الله عليه وسلم: ۲۶۴/۵. فتح البارى: ۶۶۶/۱.

(۴) عمدة القارى: ۲۳۲/۴، شرح العلامة الزرقانى على المواهب اللدنية بالمنح المحمدية، المقصد الثالث فيما فضله لله تعالى به، الفصل الأول فى كمال خلقته وجمال صورته صلى الله عليه وسلم: ۲۶۴/۵.

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی کہ بعضی علماء و د رکوع لفظ لیدو سرہ د خشوع تفسیر پہ سجود سرہ کرے دی مگر زما پہ نیز اولی دا دی کہ خشوع پہ خپل عموم باندی اوساتلی شی دی د پارہ چہ د مانخہ تولو افعالو تہ شامل شی گنی پہ صورت اولی کنبی بہ صرف د سجدی او رکوع ذکر وی د باقی بہ نہ وی او چہ کلہ د مونخ تولا افعال پہ خشوع کنبی دننہ راغلہ اویا پہ خاص توگہ شی رکوع خکہ ذکر کرہ چہ زیات گریہ ہم پہ رکوع کنبی کیڑی، ہم ددی اتمام نہ کیڑی، سجدہ خو لہرہ ډیرہ بیا ہم اوشی خکہ چہ پہ سجدہ کنبی سر پہ زمکہ باندی کیخودی شی. پہ دی وجہ هلته لہر ساعت ایساریڑی پہ خلاف د رکوع او ډیر خلق خو داسی دی چہ د هغوی د تادنی د وجی د هغوی هلو رکوع نہ کیڑی (۱).

پہ اصل کنبی مشهورہ خودادہ چہ د خشوع تعلق د زہ سرہ دی او د خضوع تعلق د جوارحو سرہ دی لیکن حقیقت دادی چہ خشوع د زہ سرہ محدود کول صحیح نہ دی خکہ چہ د خشوع تعلق خنکہ چہ زہ سرہ دی لکہ چہ د قرآن پاک پہ دی آیت: ﴿الْمُرَائِي لِلَّذِينَ آمَنُوا نَحْنَمُ قُلُوبُهُمْ لِيُذَكِّرُوا﴾ کنبی ذکر دی، ہم دغه شان د خشوع تعلق د اصواتو سرہ ہم دی لکہ چہ: ﴿وَحَشَمَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ﴾ او دغه شان د خشوع تعلق د سترگو سرہ ہم دی لکہ چہ قرآن پاک کنبی راغلی دی: ﴿خَائِشَةً أَبْصَارُهُمْ﴾.

قولہ: اِنِّي لَارَاكُم مِّنْ وَّرَاءِ ظَهْرِي: بیشک زہ تاسو د خپل ش طرف نہ ہم وینم. دا جملہ بہ ماقبل

جملہ کنبی موجود جواب قسم "ما یحلی علی خشوعکم ولا رکوعکم" بدل یا بیان جوړ شی (۲). د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د شاتہ کتلو مطلب: د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم شاتہ لیدل حقیقی کتل و ادراکی یعنی عقلی نہ وو. د اهل سنت والجماعہ پہ نیز ہم دغه حق دی چہ د کتلو د پارہ د یو خاص اندام کیدل یا مخامخ کیدل شرط نہ دی (۳). او د امام بخاری رحمته ہم دغه مسلک معلوم کیڑی. زمونږ

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۵۳/۲.

(۲) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۶۵/۲، عمدة القاری: ۲۳۲/۴. شرح العلامة الزرقانی علی المواہب اللدنیہ بالنسخ المحمدیہ، المقصد الثالث فیما فضلہ لہ تعالیٰ بہ، الفصل الأول فی کمال خلقته وجمال صورته صلی اللہ علیہ وسلم: ۲۶۴/۵.

(۳) قاضی ابوالولید الباجی رحمته فرمائی: بعضی حضرات ددی خبری طرف تہ تلی دی چہ: اِنِّي لَارَاكُم مِّنْ وَّرَاءِ ظَهْرِي. معنی "لاعلم بافعالکم" دہ خکہ چہ رؤیت دعلم پہ معنی کنبی ہم وی لکہ چہ د اللہ تعالیٰ فرمان دی: ﴿الْمُرَّاكِبُ لِقَلِّ رَبِّكَ بِأَعْصَابِ الْفِيلِ﴾ (الفیل: ۱۱) پہ دی آیت کنبی دالم تر معنی "لم تعلم" دہ. او جمهور ددی خبری قائل دی چہ دی خانی کنبی رؤیت حقیقی مراد دی. قاضی ابوالولید رحمته نور فرمائی: زما پہ نیز صحیح ہم دغه دہ اکوم چہ پورته د جمهورو مسلک بیان شوا خکہ چہ کہ چری ددی نہ رؤیت علمی مراد واخستی شی نو د رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ددی قول من وراء ظهري. پہ ہیخ معنی باقی پاتی نہ شی. خکہ چہ کلہ ددی نہ مراد علم واخستی شی نو شاتہ کتو او مخی تہ کتو کنبی بہ خہ فرق باقی پاتی نہ شی. بلکه رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خو خبر ورکری دی لکہ خنکہ چہ زہ تاسو د خپل وړاندی کیدو پہ حالت کنبی وینم ہم دغه شان چہ کلہ تاسو شاتہ شی نو زہ بیا ہم تاسو وینم. (المتنقی شرح مؤظا مالک، کتاب الصلوة، باب: فی العمل فی جامع الصلاة، رقم الحدیث: ۳۹۶، ۳۱۸/۲)، عمدة القاری: ۲۳۲/۴.



دَدې خبرې تائید د صحیح مسلم د هغه روایت نه هم کیږي په کوم کبسي چه دی: ((لای لأبصر من وراي کما أبصر من بین یدی))<sup>(۱)</sup>

علامه سیوطی رحمته الله الخصائص الکبری کبسي د جمهورو مذهب هم دا نقل کړې دې<sup>(۲)</sup>. ابن عبد البر رحمته الله فرماني چه څه خلقو تاویلاً دلته آری: د املم په معنی اخستې دې لکه چه الله تعالی په قرآن حکیم کبسي د حضرت شعيب عليه السلام قول: ((إني أراكم مخفيين)) نقل کړې دې کوم چه هغوی خپل قوم ته وئیلې وو. ددې مطلب کتل نه وو بلکه پیژندل وو، چه هغوی او فرمائیل زه ښه شان سره پوهیږم چه تاسو مالدار یئ. چنانچه په دې صورت کبسي به د حدیث مبارک مطلب دا شی چه نبی کریم صلى الله عليه وسلم فرماني چه زه ستاسو د خشوع او ستاسو د رکوع تمامیت پیژنم الله تعالی ستاسو د احوالو معرفت زما په زړه کبسي اچوی.

ابن عبد البر رحمته الله ددې په جواب کبسي فرماني چه په دې دعوی کبسي په ظاهر مخالفت کولو سره د رسول الله صلى الله عليه وسلم دا صفت محدود کول دی حالانکه څنگه چه نور خرق عادت امور دی او معجزات نبویه دی دغه شان دا بیان نبوی صلى الله عليه وسلم دې هم خرق عادت او معجزه تصور کړې شی او ددې هم ظاهری معنی دې مراد و اخستې شی. البته ددغه کتلو کیفیت به څه وو نو دا د نبوت د اعلامو او معجزاتو نه یو معجزه کیدو د وجې نه پیژندل ممکن نه دی.

د ابوبکر الاثرم رضي الله عنه وینا ده چه ما د امام احمد بن حنبل رحمته الله نه د حضور پاک ددې قول: ((أني لأراكم من وراء ظهري)) باره کبسي تپوس او کړو نو هغوی جواب را کړو چه حضور پاک به څنگه خپلې مخې ته کتل هم هغه شان به ئی خپل شاته هم کتل. ما وئیل چه د یو انسان نه دا خبره څنگه ممکن ده هغه خو خپلې مخې ته یا خپلې نسی او گس طرف والا لیدلې شی نو په دې باندې هغوی ډیره په مضبوطه طریقه رد او کړو<sup>(۳)</sup>.

ددې شاته کتو په تشریح کبسي بعضې حضراتو وئیلی دی چه دې نه مراد دادې چه دوحی او الهام په ذریعه به حضور پاک ته د هغوی د حالت علم کیدلو اگر چه چرې هغوی به شاته وو. لیکن دا توجیه ضعیف ده ځکه چه دوحی او الهام په ذریعه د هغوی علم کیدل دا خوبیا د مونځ سره مخصوص نه دی د مانځه نه علاوه هم کیدي شی<sup>(۴)</sup>.

بعضې حضراتو وئیلی دی چه ددې مطلب دادې چه کله تاسو نسی او گس طرف ته یئ یا

<sup>(۱)</sup> حدثنا أبو كريب محمد بن العلاء الهمداني، حدثنا أبو أسامة، عن الوليد يعني ابن كثير، حدثني سعيد بن أبي سعيد المقبري، عن أبيه، عن أبي هريرة، قال: صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم يوماً ثم انصرف فقال: يا فلان! ألا تنظر المصلي إذا صلى كيف يصلي؟ فإنما يصلي لنفسه، إني والله لأبصر من ورائي كما أبصر من بين يدي. (صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: الأمر بتحصين الصلاة وإتمامها والخشوع فيها، رقم الحديث: ۴۲۳).  
<sup>(۲)</sup> الخصائص الكبرى، باب: المعجزه والخصائص في عينيه الشريفين: ۱۰۶/۱، فتح الباری: ۶۶۶/۱ عمدة القاری: ۲۳۲/۴.

<sup>(۳)</sup> الاستذکار لابن عبد البر، کتاب الصلاة، باب: حديث أبي هريرة: "أترون قبلي ها هنا؟" ۲۷۴-۲۷۳.

<sup>(۴)</sup> فتح الباری: ۶۶۶/۱ شرح الزرقانی علی الموطأ، کتاب الصلوة، العمل فی جامع الصلاة: ۳۰۲/۱.

شاته یی نوزه تاسو ته د سترگې د گوت نه گورم اوستاسو کیفیت زمانه پته نه وی. دا توجیه هم ضعیف ده (۱). لهذا دلته به دا وئیلی شی چه دلته د کوم رویت حضور پاک ذکر فرمائی دا رویت کشفیه نه دې یا دا رویت د سترگې په گوت نه دې بلکه دا رویت هم داسې دې لکه چه مخامخ څه خیز وی او هغه انسان وینی. حضور پاک فرمائی چه کله تاسو شاته یی نوماته تاسو هغه وخت هم داسې ښکارئی. امام احمد بن حنبل رحمته الله علیه فرمائی دی چه په دې کښې د حیرانتیا هیڅ خبره نشته. د سړی غوږ مخامخ آواز هم اوری، د ښی طرف اود گس طرف آواز هم اوری او شاته آواز هم اوری. دغه شان د انسان قوت شامه ده دمخې نه یا شانه خوشبوئی یا بدبوئی راځی دهغې هم هغه احساس کوی. د ښی یا گس طرف نه چه کومه خوشبوئی یا بدبوئی راځی دهغې هم احساس کوی. لکه څنگه چه د قوت سامعه او قوت شامه د پاره مقابل او دمخې طرف ته کیدل ضروری نه دی نو دغه شان څه لرې خبره ده چه الله تعالی رسول الله صلی الله علیه و آله ته هم هغه طاقت ورکړې وی چه دعامو انسانانو قوت سامعه او قوت شامه ته حاصل وی (۲).

نور حضرات دا فرمائی چه په اصل کښې به د رسول اکرم صلی الله علیه و آله د شاته مونځ گذارو کیفیت منکشف کیدلو. په دې وجه به دهغوی عکس د قبلي په دیوال کښې منعکس کیدلو (۳). بعضې حضراتو دا وئیلی دی چه د حضور پاک په ملا کښې د سم الحیاط برابر، بعضو وئیلی دی چه یو او بعضو وئیلی دی چه دوه سترگې وې. اود کپرو په مینځ کښې حائل کیدل د ابصار او د رویت د پاره مانع نه وو او حضور پاک به د خرق عادت په توگه اود معجزې په توگه په هغه سترگو کومې چه د حضور پاک په شا کښې وې شاته طرف ته مونځ گذار کتل (۴). لیکن دا خبره د دلائلو په اعتبار سره قوی نه ده تردې چه علامه قسطلانی رحمته الله علیه دا خبره "المواهب اللدینه" کښې نقل کولو سره وئیلی دی چه که چرې دا خبره د حضور پاک نه په صحیح طریقې سره ثابته شی نو بیا به دا قبلولې شی اودا به د خرق عادت د قبیل نه گرځولې شی. په بل صورت کښې به دا د ظاهر حدیث نه د مخالف کیدو په وجه قبلول صحیح نه وی. شارح المواهب علامه زرقانی رحمته الله علیه هم ددې خبرې تائید کړې دې (۵).

(۱) المنتقى شرح مؤظا مالک، کتاب الصلوة، باب: فی العمل فی جامع الصلوة، رقم الحدیث: ۳۹۶، ۲/۳۱۸، کمال اكمال المعلم، کتاب الصلوة، خروج النبی صلی الله علیه وسلم لبني عمرو بن عوف لیصلح بینهم: ۱۷۷/۲-۱۷۸، فتح الباری: ۶۶۶/۱ عمدة القاری: ۲۳۲/۴.

(۲) شرح العلامة الزرقانی علی المواهب اللدینه بالمئج المحدثیه، المقصد الثالث فیما فضله له تعالی به، الفصل الأول فی کمال خلقته وجمال صورته صلی الله علیه وسلم: ۲۶۶/۵.

(۳) فتح الباری: ۶۶۶/۱ عمدة القاری: ۲۳۲/۴، شرح الزرقانی علی المؤظا، کتاب الصلوة، العمل فی جامع الصلوة: ۳۰۲/۱.

(۴) فتح الباری: ۶۶۶/۱ عمدة القاری: ۲۳۲/۴، شرح الزرقانی علی المؤظا، کتاب الصلوة، العمل فی جامع الصلوة: ۳۰۲/۱، الغصاص الکبری، باب: المعجزه والخصائص فی عینیه الشریفین: ۱۰۷/۱.

(۵) شرح العلامة الزرقانی علی المواهب اللدینه بالمئج المحدثیه، المقصد الثالث فیما فضله له تعالی به، الفصل الأول فی کمال خلقته وجمال صورته صلی الله علیه وسلم: ۲۶۷/۵.

دمنکرینو اشکالات اود هغوی دلائل: د عقل نه دخالی خلقو یو جماعت دا حدیث شریف رد کړې دي. دهغوی وینا ده چه دا حدیث څنگه قبلولې شی حالانکه ددې برعکس احادیث موجود دي. مثلاً حضرت ابوبکره رضی اللہ عنہ حدیث کوم کبني چه دی چه هغوی امام په رکوع کبني لیدو سره د صف نه شاته نیت ترلو سره رکوع کړې وه اوددې نه پس قدم په قدم تلو سره صف ته اورسیدلو. بیا چه کله نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د مونخ نه فارغ شو نورسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تپوس اوکړو چه هغه څوک سرې دي چه د صف نه شاته اودریدو سره شی رکوع اوکړه بیا تلو سره په صف کبني شامل شو؟ نو حضرت ابوبکره رضی اللہ عنہ جواب ورکړو چه ما. نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ورته اوفرمائیل الله تعالی دي ستا په حرص کبني نوره هم اضافه اوکړې خو بیا داسې مه کوه. بلکه په صف کبني شاملیدو سره مونخ شروع کوه. (دغه شان د حضرت انس رضی اللہ عنہ حدیث دي په کوم کبني چه هغه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نه روایت کوی چه یو سرې تیز تیز راتگ سره راغلو او صف کبني داخل شو، نو د هغه سا تیزه چلیدله. بیا چه کله هغه په صف کبني داخل شو نو هغه اووئیل: الحمد لله صداً کثیراً طیباً مهارکافیه. بیا د مونخ نه فارغیدو باندې نبی صلی اللہ علیہ وسلم تپوس اوکړو هغه سرې څوک دي چه دا کلمات شی اووئیل..... (۱)

چنانچه دغه جماعت ددې قسم احادیث نقل کولونه پس وئیلی دی چه ولې نه گورئې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته ددې خبرې علم اونه شو چه د صف نه شاته رکوع کولو سره صف کبني شاملیدونکې څوک دي. تردې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ددې باره کبني تپوس اوکړو اود دویم حدیث مطابق حضور پاک ته د دغه کلماتو د ویونکی هم علم اونه شو تردې چه حضور پاک تپوس اوکړو چه دا کلمات چا اووئیل. نو بیا دا صحیح کیدل څنگه ممکن کیدې شی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم به په مانځه کبني د خپل شاطرف نه هم کتل. که چرې داسې کیدې نو د مذکوره دواړو احادیثو په شان واقع به نه پېښیدله.

د اشکالاتو جواب: ددې په جواب کبني ابن عبدالبر رحمته اللہ علیہ وائی چه د پورته ډلې د اشکال جواب دادې چه په هره یوه راتلونکې لمحہ کبني به د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم فضائل په مقابله د سابقه لمحې زیاتیدل یعنی په هغې کبني به زیاتوالې کیدو. اوداسې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم د دنیا نه پرده کولو پورې کیدل لکه دا خبره دتولو په مخکبني ده چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد اوفرمائیلو چه زه د نبوت ملاویدو نه مخکبني یو بنده ووم اود رسول جوړولو نه مخکبني

(۱) عن الحسن أن أبابكر جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم راعع فرقع دون الصف، ثم مشى إلى الصف، فلما قضى النبي صلى الله عليه وسلم صلاته قال: "أيكم الذي رقع دون الصف ثم مشى إلى الصف؟ فقال أبو بكر: أنا، فقال النبي صلى الله عليه وسلم: "زادك الله حرصاً ولا تعد". (سنن أبي داؤد، كتاب الصلاة، باب: الرجل يصلى وحده خلف الصف، رقم الحديث: ۶۸۳).

(۲) عن أنس أن رجلاً جاء فدخل الصف وقد حفزة النفس، فقال: "الحمد لله حمداً كثيراً طيباً مباركاً فيه". فلما قضى رسول الله صلى الله عليه وسلم صلاته فقال: "أيكم المتكلم فالكلمات؟ فآرم القوم. فقال: "أيكم المتكلم بها؟ فإنه لم يقل بأساً". فقال رجل: جئت وقد حفزني النفس فقلتها، فقال: "تقد رأيت اني عشر ملكاً يبتدرونها أبهم يرفعها". (صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب: ما يقال بين تكبيرة الإحرام والقراءة، رقم الحديث: ۱۳۵۷).

یونبی ووم. دغه شان نبی کریم ﷺ ارشاد او فرمائیلو چه تاسو کنبی خوک (زما باره کنبی) دا مه واین چه زه د حضرت یونس بن متی رضی الله عنه نه بهتریم. یو سری حضور پاک ته "یا خیر البریه" و نیلوسره مخاطب کرو نو حضور پاک ارشاد او فرمائیلو "خیر البریه" خو حضرت ابراهیم رضی الله عنه وو.

دغه شان یو سری حضور پاک ته "یا سیداهن السادة" یا "یا شریف ابن الشرفاء" و نیلوسره مخاطب کرو نو حضور پاک ارشاد او فرمائیلو چه هغه خو حضرت یوسف بن یعقوب بن اسحاق بن ابراهیم رضی الله عنه دی. نو د حضور پاک دا مبارک ارشاد په حضور پاک باندي د سورة الفتح د نازلیدو نه دمخکنبی وخت دی. بیا چه کله سورة الفتح نازل شو او په هغې کنبی دا آیت: **(لَيَغْفِرَنَّ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ)** نازل شو په داسې حال کنبی چه د حضور پاک نه مخکنبی د چاهم سابقه گناهونه معاف شوې نه وو. الغرض چه کله داسې اوشو نو هغه وخت حضور پاک ارشاد او فرمائیلو: «أنا سيد ولد آدم ولا فخر». او هم هغه وخت حضور پاک ارشاد او فرمائیلو الله تعالی بنه شان سره پوهیری چه زه تاسو خلق د شان وینم.

الغرض د حضور پاک فضائل ورځ په ورځ زیاتیدله کمیدل نه. (نو چه کله داسې ده نو دا وئیلی شی چه د معترضینو پیش کړې شوی نظائر به د شروع د دوروی روستو د حضور پاک د طرف نه دا ارشاد مبارک مخی ته راغلو چه زه تاسو د خپل شاطرف نه وینم.)<sup>(۱)</sup>

د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه ذکر کړې شوي تشریح: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه په دې روایت کنبی د شارحینو حضراتو پنځه اقوال دی. کوم چه مختلفو شراحو جدا جدا ذکر کړی دی. ماته چرته یو ځائی نه دی ملاؤ شوی:

① اول دا چه التفات سره په ئی کتل. مگر په دې باندي دا اشکال دی چه په دې کې د حضور پاک څه خصوصیت دی؟ د حضور پاک نه علاوه بل څوک خوهم په التفات سره کتلې شی.

② دویم قول دادې چه د وحی په ذریعه علم شوې وو. دا د اول نه زیات صحیح دی. مگر په دې صورت کنبی د "ان لاراکم" وئیلو نه زیات مناسب "ان لادوسی" وو.

③ دریم قول دادې چه د قبلي دیوال به د حضور پاک د پاره د آئینی په مثال کیدلو. صحابه کرامو رضی الله عنهم چه به څه کول هغه به حضور پاک ته ښکاریدل. عام مشائخو دا اختیار کړې ده.

④ څلورم قول دادې چه د حضور پاک د ست شاته دوه سترگې وې په کوم سره چه به حضور پاک کتل کول مگر دا محقیینو رد کړې دي. په دې وجه چه که چرې دا خبره صحیح وې نو د حضور پاک په احوالو کنبی به خامخا ددې تذکره کیدله.

⑤ او پنځم قول د اوریدو نه مخکنبی یو تمهید واوړتی هغه دا چه د الله تعالی لیدل په دنیا کنبی ممکن نه دی او د اهل سنت والجماعة عقیده ده چه دا څیز به په جنت کنبی وی. لیکن معتزلو انکار کړې دي. دا ځکه چه په دې سره خودا لازم راځی چه د الله تعالی د پاره جهت وی. مرئی د رائی مخامخ وی. ددې جواب دا ورکړې شوې دي چه د رؤیت د پاره د

(۱) الاستذکار لابن عبدالبر، کتاب الصلاة، باب: حدیث ابی هریره: "اترون قبلی هاهنا؟ : ۶/۲۷۲ - ۲۷۳.

جهت کیدل ددی عالم سره خاص دې د آخرت په عالم کښې به جهت ضروری نه وی. نولکه څنگه چه به په آخرت کښې ټول کسان الله تعالی بغیرد جهت نه گوری دغه شان څه عجیبه ده چه په دنیا کښې د حضور پاک د پاره په مونځ کښې دا خصوصیت وی چه حضور پاک مقتدیان بغیرد جهت نه گوری. هم دا زما په نیزراجح دې (۱).

دکلام خلاصه: د پوره بحث نه څه اهم د نتیجې خبرې معلومیری چه مختصراً لاندې نقل کولې شی:

① علامه سهیلی الشامی رحمته الله علیه لیکلی دی چه قاضی رحمته الله علیه فرمائیلی دی چه حضور پاک ته ددې صفت حاصلیدل د معراج د شپې نه په واپسې باندي شوی وو. لکه څنگه چه موسی عليه السلام الله تعالی سره په کوه طور باندي کلام کړې وو نو د هغې نه پس د هغوی په بصیرت کښې دیره زیاته اضافه شوې وه. تردې چه هغوی به په توره تیاره شپه کښې د لسو فرسخو د فاصلې نه هم تور میړې لیدلو. (۲)

② دا رؤیة رؤیة ادراک وو او رؤیة د اهل حق په نیزد یو اندام، رنرا یا بل څه څیز مخې ته راتلو سره نه حاصلیری. دا شان د حق تعالی شانده دې. چه هغه دکتلو دپاره نه یو اندام مثلاً سترگه وغیره محتاج دې او نه د هغې دکتلو دپاره د څه رنرا ضرورت وی او نه د الله تعالی دکتلو دپاره دا ضروری دی چه څوک به د هغه مخې ته راځی نو بیا به د هغه د طرف نه دکتلو فعل صادریری. لکه انسان چه ترهغه وخته پورې به هغه کتونکې نه یادیری تر کومې پورې چه د هغه مخې ته دمذکوره دریو امورو نه یو امر په وجود کښې رانه شی.

دا خو تفصیل وو د خالق د لیدو، پاتې شو مخلوق نو د هغوی کتل خو به هم په دغه دریو څیزونو باندي موقوف وی. چنانچه د چا سترگې خوشته لیکن تیاره ده او د هغه د سترگې مخې ته څوک هم نشته نو دا نه شی کتلې د خالق په نسبت سره چونکه نبی کریم صلی الله علیه و آله هم مخلوق دې لهذا د هغوی دکتلو صفت به هم په دغه امورو باندي موقوف وی. البته هغه ذات اقدس چه په سترگه کښې بصارت پیدا کولو باندي قادر دې هم هغه په دې خبره باندي هم قادر دې چه د سترگې نه علاوه په بل اندام کښې د لیدو صفت راپیدا کړی. چنانچه د حضور پاک شانده لیدل به هم د خرق عادت په توگه هم ددې قبیل نه وی. (۳)

③ قرطبی رحمته الله علیه فرمائیلی دی چه د حضور پاک دا خبر ددې په ظاهر باندي محمول کول اولی دی. ځکه چه په دې امر کښې د نبی کریم صلی الله علیه و آله د کرامت او د بزرگنۍ په اوچته درجه کښې اظهار دې. (۴)

(۱) تقریر بخاری شریف: ۲/۱۵۲.

(۲) سبیل الهدی والرشاد فی سیرة خیر العباد، جماع ابواب صفة جسده الشریف صلی الله علیه وسلم، الباب الخامس: فی صفة عینیه وحاجبیه صلی الله علیه وسلم، تنبیهاً: ۳۶/۲.

(۳) سبیل الهدی والرشاد فی سیرة خیر العباد، جماع ابواب صفة جسده الشریف صلی الله علیه وسلم، الباب الخامس: فی صفة عینیه وحاجبیه صلی الله علیه وسلم، تنبیهاً: ۳۶/۲ - ۳۷.

(۴) سبیل الهدی والرشاد فی سیرة خیر العباد، جماع ابواب صفة جسده الشریف صلی الله علیه وسلم، الباب الخامس: فی صفة عینیه وحاجبیه صلی الله علیه وسلم، تنبیهاً: ۳۶/۲ - ۳۷.

د نبی کریم ﷺ د پاره د علم غیب په ثبوت باندې یو غلط استدلال: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی: "من وراء ظهري" بعضې خلقو دې نه علم غیب مراد اخستی دې. لیکن دا بالکل غلطه ده ځکه چې د دې مطلب دادې چې زه پخپله د مونځ گزارو حالات وینم او داسې ماته علم کیږي. بل دا حالت کلی هم نه دې پخپله د حضرت ابوبکره رضی الله عنه په روایت کې دې چې هغه جمات ته راغلو هلته جمع کیدله، هغه هم د لرې نه رکوع او کره. د مانځه نه پس حضور پاک ته دا خبره په تپوس کولو سره معلومه شوه.

دغه شان یو روایت کېږي دې چې یو سړې سانپولې راغلو او د رکوع نه اوچتیدو سره ئې لږ په اوچت آواز سره "حمداً طیباً کثیراً مبارکاً" او وئیل. حضور پاک د مونځ نه پس تپوس او کړو نو بیا ورته معلومه شوه چې فلانکې سړې وو. لهندا قاعده کلیه نه شوه او بعضې ظاهريه د خپل ظاهربین د وجې نه داسې وائی چې د دې ظاهري معنی مراد ده. یعنی د حضور پاک په سټ مبارک کېږي دوه سترگې لگیدلې وې. لیکن دا صحیح نه ده. که چېرې داسې وې نو خامخا به چرته نه چرته یو حدیث کېږي د دې تذکره ملاویدله لکه مهر نبوت، په ډیرو احادیثو کېږي د دې ذکر دې (۱).

علامه شبیر احمد عثمانی رحمته فرمائی چې دا تنبیه هغه خلقو ته وه چې تر دغه وخته پورې (په ایمان او یقین کېږي) پاخه شوی نه وو، څه کمزوری پاتې شوی وو گنې د صحابه کاملین رضی الله عنهم په حق کېږي د الله تعالی کتل (د دې د پاره) کافی وو (چې مونځونه په مکمل خشوع او خضوع سره او کړي، ځکه چې کاملینو ته خو د احسان مرتبه حاصله وې. البته قاصرین تر دغه وخته پورې چې د احسان مرتبې ته نه وو رسیدلې دهغوی په حق کېږي خپل مرشد مثلاً د حضور پاک کتل ډیر مؤثر دی ځکه چې د حضور پاک کتل بالکل مشاهد، ظاهر او باهر دی. (۲)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: علامه عینی رحمته فرمائی چې د حدیث شریف د ترجمة الباب سره مناسبت به داسې جوړیږي چې په حدیث کېږي مونځ گزارو ته نصیحت او کړې شو. هغوی ته دا وینا کولو سره تنبیه او کړې شوه چې د نبی کریم ﷺ نه د مونځ گزارو رکوع، سجده او دهغوی خشوع او خضوع پته نه پاتې کیږي ځکه چې نبی کریم ﷺ ارشاد او فرمائیلو چې زه خپل شا طرف ته هم کتلي شم لکه چې وړاندې گورم (۳).

علامه شبیر احمد عثمانی رحمته فرمائی چې دا شبه کیدې شي چې په حدیث باب کېږي بیشکه لفظ د قبلي راغلو مگر صرف په لفظ راتلو سره خو ترجمه الباب قائمیدې نشي؟ د ترجمه الباب (لاندې ذکر کړې شوي حدیث) کېږي خو د مذکور عنوان سره متعلق څه مسئله ذکر کیدل پکار دی.

(۱) حاشیه تقریر بخاری: ۱۵۳/۳.

(۲) فضل الباری: ۱۲۲/۳.

(۳) عمدة القاری: ۲۳۲/۴.

جواب دادې چه دلته امام بخاری رحمته الله علیه په ډیر مزیدار او عجیبه انداز سره د یوې مسئلې استنباط کوی کومه چه هم د قبلې سره متعلق ده. هغه دا چه انحراف عن القبلة چه بعضې وختونو کښې مونځ مفسد کوی په دې انحراف کښې د کوم یو اندام اعتبار دې؟ (یعنی د کوم یو اندام منحرف عن القبلة کیدو سره مونځ فاسد یرې). نو معلومه دې وی چه د انحراف درې صورتونه دی:

① یو دا چه په سینې سره انحراف وی یعنی د مونځ گذار سینه د قبلې نه واوړی.

② دویم دا چه صرف په مخ سره انحراف وی (یعنی مخ د قبلې نه واوړی).

③ دریم دا چه صرف نظر او سترگه اخوا (یعنی د قبلې نه) اخوا شی.

زمونږ فقهاء لیکي چه رومیې صورت مفسد صلوة دې، دویم مکروه دی او دریم د ضرورت په وخت بغیرد څه کراهت نه جائز دی، بغیرد ضرورت نه داهم مکروه دې مگر ددې کراهت د دویم (د کراهت نه) کم دې. غالباً هم ددې مسئلې طرف ته امام بخاری رحمته الله علیه څه قدرې اشاره کوی چه او گورنې حضور پاک فرمائی چه زه د شانه هم گورم یعنی په مونځ کښې. نو معلومه شوه چه د انحراف عن القبلة په مسئله کښې د نظر او بصر اعتبار نشته (ددې په منحرف کیدو باندې به مونځ نه فاسد یرې)، گنی په شاته کتلو سره به د حضور پاک مونځ معاذ الله فاسد یا مکروه گرځی. نو په انحراف کښې به اعتبار صرف د سینې او مخ وی. (الغرض) په حدیث کښې د قبلې سره متعلق د یوې مسئلې طرف ته لطیف اشاره ده، لهذا اوس شبه پاتې نه شوه).<sup>(۱)</sup>

د حدیث شریف نه مستنبط شوی امور او احکام: د مذکوره حدیث شریف نه ډیر احکام مستنبط کیرې دهغې نه څه لاندې ذکر کولې شی:

① ددې حدیث نه معلومه شوه چه مونځ په ډیره خشوع او خضوع سره، او ټول ارکان په کاملې طریقې سره ادا کول پکار دی.<sup>(۲)</sup>

② د یوې خبرې د مؤکد کولو دپاره قسم سره د بیانولو گنجائش معلوم یرې.<sup>(۳)</sup>

③ امام له پکار دی چه د مقتدیانونه په چا کښې د دینی امورو سره متعلق څه کمې کوتاهې او گوری نو هغه خلق دې خبردار کړی او هغوی لره دې دکمال پورې د بوتللو کوشش او کړی.<sup>(۴)</sup>

(۱) فضل الباری: ۱۲۲/۳.

(۲) شرح النووی، کتاب الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة، رقم الحديث: ۴۲۳۰، ۱۵۰/۴.

(۳) شرح النووی، کتاب الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة، رقم الحديث: ۴۲۳۰، ۱۵۰/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۳۲/۴.

حديث باب (دويم حديث) (حديث نمبر ٢٠٩)

٣١٩ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ (١) قَالَ صَلَّى بِنَا النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - صَلَاةً ثُمَّ رَقِيَ الْيَنْبِئَ، فَقَالَ فِي الصَّلَاةِ وَفِي الرُّكُوعِ: «إِنِّي لَأُرَاكُمْ مِنْ وَّرَائِي كَمَا أُرَاكُمْ».

د حديث ترجمه: حضرت انس رضي الله عنه فرمائی چہ یوہ ورخ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم مونبر تہ مونخ را کرو. بیا بہ منبر باندی تشریف فرما شو. او د مونخ او رکوع بارہ کبھی نی او فرمائیل. زہ تاسو د شانہ ہم داسی وینم لکہ خنگہ چہ (د مخی نہ) وینم تو اجمہ رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کبھی قول خلور راویان دی:

① یحییٰ بن صالح رضي الله عنه: دا ابوزکریا یحییٰ بن صالح الوحاظی رضي الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الصلاة، باب: إذا كان الثوب ضيقاً، الحديث الأول لاندي تیرشوی دی (٢).

② فلیح بن سلیمان رضي الله عنه: دا ابو یحییٰ فلیح بن سلیمان بن ابی المغیرہ الخزاعی رضي الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: من سئل علماً وهو مشغول في حديثه، فأتى الحديث ثم أجاب السائل لاندي تیرشوی دی (٣).

③ هلال بن علی رضي الله عنه: دا هلال بن علی بن اسامہ قرشی رضي الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: من سئل علماً وهو مشغول في حديثه، فأتى الحديث ثم أجاب السائل لاندي تیرشوی دی (٤).

④ انس بن مالک رضي الله عنه: دا مشهور صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضي الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان أن يجب لأخيه ما يجب لنفسه لاندي تیرشوی دی (٥).

د حدیث شرح: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: صَلَّى بِنَا النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً، ثُمَّ رَقِيَ الْيَنْبِئَ: حضرت انس بن مالک رضي الله عنه فرمائی چہ یوہ ورخ مونبر تہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مونخ را کرو، بیا بہ منبر باندی تشریف فرما شو.

(١) رواه البخاری أيضاً في الصلاة، باب: الخشوع في الصلاة، رقم الحديث: ٧٤٢. وفي كتاب الإیمان والنذور، باب: كيف كانت يمين النبي صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث: ٦٦٤٤. ومسلم في صحيحه، في الصلاة، الأمر بتحسين الصلاة، واتمامها والخشوع فيها، رقم الحديث: ٤٢٥. والنسائي في سننه، في الصلاة، في الافتتاح، باب: الأمر باتمام الركوع، رقم الحديث: ١٠٥٥. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: في الصلاة، القسم الأول: في الفرائض وأحكامها، الفصل الخامس: في كيفية الصلاة، الفرع الرابع: في الركوع والسجود، النوع الأول: في الركوع والسجود، الاعتدال، رقم الحديث: ٣٤٩٠، ٣٦٣/٥.

(٢) كشف الباری، كتاب الصلاة، باب: إذا كان الثوب ضيقاً، الحديث الأول، ص: ٣٠٦.

(٣) كشف الباری: ٥٥/٣.

(٤) كشف الباری: ٦٢/٣.

(٥) كشف الباری: ٤/٢.



قوله: «صَلَّى بِنَا» په دې روایت کېنې دَ صلي صله ب' ده خود ابوذر، اصیلی او ابن عساکر په روایت کېنې ددې صله 'لام' استعمال شوې ده. یعنی 'صلي لنا' په دې صورت کېنې به معنی دا شی 'صلي لاجلنا' چه زمونږ د خاطره نی مونخ او کرو (۱).

قوله: فَقَالَ فِي الصَّلَاةِ وَفِي الرُّكُوعِ: «إِنِّي لَأَرَاكُمْ مِنْ وَرَأَيْ كَمَا أَرَاكُمْ»: اودَ مونخ او رکوع باره کېنې نی او فرمائیل: زه تاسو ته دَ شانِه هم داسې گورم لکه څنگه چه دَ (مخې نه) گورم.

قوله: فَقَالَ فِي الصَّلَاةِ وَفِي الرُّكُوعِ: په دې جمله کېنې حذف دې، تقدیری عبارت داسې دې:

«تَقَالَ لِي شَأْنُ الصَّلَاةِ وَرَأَيْ كَمَا أَرَاكُمْ» یعنی حضور پاك دَ مونخ او رکوع په باب کېنې او فرمائیل چه زه تاسو ته دَ شانِه هم داسې گورم لکه څنگه چه دَ مخې نه وینم (۲).

د رکوع ذکر خاص په دې وجه او کرې شو چه رکوع د نورو ارکانو په نسبت یو لوئی رکن دې په دې توگه چه امام لره په رکوع کېنې موندونکې د رکعت حاصلونکې گرځولې شوې دې. اود رکوع نه پاتې کیدونکې د رکعت فوت کونکې گرځولې شوې دې. په دې وجه نی په دې باندې د تنبیه کولو د پاره جدا ددې رکن ذکر او کرو (۳).

قوله: «إِنِّي لَأَرَاكُمْ مِنْ وَرَأَيْ كَمَا أَرَاكُمْ» په دې حدیث کېنې چه مطلقا دا فرمائیلې شوی دی چه زه تاسو د شانِه گورم، ددې د اطلاق تقاضا دا ده چه دا (د شانِه کتل) د مونخ حالت او غیرد مونخ د وارو ته عام وی. لیکن د سیاق حدیث تقاضا داده چه دا کیفیت هم په مونخ کېنې وی (۴).

حافظ ابن حجر رحمته الله لیکلی دی چه ظاهر د حدیث خودا دلالت کوی چه دا کیفیت دې هم د مونخ سره خاص وی لیکن دا احتمال موجود دې چه دا کیفیت په ټولو احوالو کېنې وی. لکه چه د بقی بن مخلد رحمته الله نه نقل دی چه نبی اکرم صلی الله علیه و آله به په تیاره کېنې هم هغه شان لیدل لکه چه په رنرا کېنې (۵). «مِنْ وَرَأَيْ» بعضې روایاتو کېنې دا کلمه دَ «ي» نه بغیره یعنی: «مِنْ وَرَاءِ» (۶).

قوله: «كَمَا أَرَاكُمْ» په دې روایت کېنې ددې فعل مفعول به ذکر نه دې خو په نورو روایاتو کېنې بالتصریح ذکر دې. اودې سره به عبارت «کما أراکم من أمانی» وی (۷).

(۱) إرشاد الساری: ۷۶/۲.

(۲) شرح الکرمانی: ۷۷/۴، عمدة القاری: ۲۴/۴، التوشیح للسيوطی: ۴۹۹/۲.

(۳) شرح الکرمانی: ۷۷/۴، عمدة القاری: ۲۴/۴، التوشیح للسيوطی: ۴۹۹/۲، شرح العلامة الزرقانی علی المواهب اللدینه بالمنح المحمدیه، المقصد الثالث فیما فضلہ الله تعالی به، الفصل الأول فی کمال خلقته وجمال صورته صلی الله علیه وسلم: ۵/۲۶۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۳۴/۴.

(۵) فتح الباری: ۶۶۷/۱.

(۶) شرح الکرمانی: ۷۷/۴، عمدة القاری: ۲۳۴/۴.

(۷) التوشیح للسيوطی: ۴۹۹/۴.

دی نه علاوه دمسلم په روایت کښې خو په تصریح سره دا خبره ده: «ان لأبصر من ورائی كما أبصر من بین یدی» چه زه د خپل شا طرف نه هم داسې گورم لکه چه دخپلې مخې طرف نه (۱). کما أراکم کښې کاف دتشبیه د پاره دې. مشبه لأراکم من ورائی دې او مشبه به ما بعد والا کلام یعنی أراکم من أمامی (۲).

نور ټول بحثونه دماقبل حدیث شریف لاندې تیر شوی دی.

## ۹- يَابُّ: هَلْ يُقَالُ: مَسْجِدُ بَنِي فُلَانٍ؟

دباب په دې باره کښې دې چه آیا (د یو جمات باره کښې) وئیلې شی چه دا جمات د فلانکو خلقو دې؟

دترجمة الباب د ماقبل ابوابو سره مناسبت: په مخکینو بابونو کښې د جماتونو متعلق احکام ذکر وو او په دې باب کښې هم د جمات د احکامو نه یو حکم (یعنی د جمات نسبت د یوسړې طرف ته د کولو) ذکر دې لهذا د دومره مناسبت موجودیدل کافی دی (۳).

دترجمة الباب مقصد: ددې باب مطلب دادې چه قرآن پاک کښې: ﴿وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ﴾ راغلي دي په دې سره شبه کیږي چه جماتونه خو د الله تعالی دی. لهذا د یو سړی یا د یو قبیلې طرف ته به ددې اضافت صحیح نه وی؟ په سلفو کښې بعضي حضراتو لکه حضرت ابراهیم نخعی رضی الله عنه دې ته مکروه وئیلی دی (۴). لیکن حدیث باب دا نظریه رد کوی.

امام بخاری رضی الله عنه داخودل غواړی چه "مسجد بنی فلان" یا "د فلانکی جمات" وئیلو کښې هیڅ حرج نشته دې یعنی د جمات نسبت یو قبیلې یا یو کس طرف ته کول جائز دی. پاتې شوه دا خبره کومه چه په قرآن پاک کښې ذکر ده. نو ددې مطلب دادې چه په حقیقت کښ خو جماتونه هم د الله تعالی د پاره جوړولې شی لیکن دا چه وئیلی شی چه دا جمات د فلانکی قبیلې والو دې یا دا جمات د فلانکی سړی دې نو داسې وینا کول صرف د پیژندگلو د پاره وی، د فرق او امتیاز د پاره وی. ددې دا مطلب هیڅ کله نه دې چه اسناد یا اضافت حقیقی د فلانکی قبیلې او یا فلانکی سړی طرف ته دې (۵).

(۱) حدثنا أبو كريب محمد بن العلاء الهمداني، حدثنا أبو أسامة، عن الوليد يعني ابن كثير، حدثني سعيد بن أبي سعيد المقبري، عن أبي هريرة قال: صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم يوماً ثم انصرف فقال: يا فلان! ألا تحسن صلاتك؟ ألا ينظر المصلي إذا صلى كيف يصلي؟ فإنما يصلي لنفسه، إنى والله لأبصر من ورائي كما أبصر من بين يدي. (صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة وإتمامها والخشوع فيها، رقم الحديث: ٤٢٣).

(۲) عمدة القاري: ٢٣٤/٤.

(۳) عمدة القاري: ٢٣٤/٤.

(۴) حدثنا هشيم عن مغيرة عن إبراهيم أنه كان يكره أن يقول: "مسجد بنى فلان". ولا يرى بأساً أن يقول: "مصلى بنى فلان". (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، باب: فى المسجد ينسب إلى قوم، يقال: مسجد بنى فلان، رقم الحديث: ٣٤١/٥، ٨١٥٤).

(۵) عمدة القاري: ٢٣٤/٤.

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی ہے کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ مقصد د دغہ مقولہ جواز خود دی حکمہ چہ نسبت د تعریف دی نہ چہ د تخصیص. ورا ندی روایت د کتاب الجہاد دی. د حضور پاک پہ زمانہ کنبی بہ جنگ مخامخ کیدلو او د ہغی د پارہ بہ د آسونو زغلول کیدل. خیر محل د ترجمہ صرف دادی چہ بہ روایت کنبی مسجد بنی زریق راخی. د دی نہ ثابتہ شوہ چہ د فلانکی د خوئی جمات وئیل جائز دی لیکن بیا اشکال پیدا کیڑی چہ کلہ دا ثابتہ ده او د دی د پارہ روایت ہم پیش کوی چہ مسجد بنی فلان وئیل جائز دی نو بیا بہ ترجمہ کنبی بہ ہل و لی اولگولی شو؟

نوددی جواب دادی چہ د ہل مقصد طالب علمان خبردار کول دی چہ خبرہ خو ہم داسی ده لیکن پہ دی کنبی خہ نور خہ ہم دی او ہغہ دا چہ بہ روایت کنبی مسجد بنی زریق کوم لفظ راغلی دی. د حضور پاک پہ زمانہ کنبی ہم دا نوم وو او کہ د حضور پاک نہ پس د صحابہ کرام رضی اللہ عنہم پہ زمانہ کنبی کیخودلی شوی دی؟ پہ دی کنبی لہ شان غور او کرنی. (۱)  
حدیث باب [حدیث نمبر ۴۱۰]

۲۲۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ (۲) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سَأَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي أَضْمَرْتُ مِنَ الْحَفِيَاءِ، وَأَمْدَهَا ثِنِيَةَ الْوَدَاعِ، وَسَأَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تُضْمَرْ مِنَ الثَّنِيَةِ إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقٍ، وَأَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ فِيهِنَّ سَأَقَ بِهَا.

د حدیث ترجمہ: د حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما نہ روایت دی چہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہغہ آسونہ کوم چہ (د جہاد د پارہ) تیار کرے شوی وو د مقام حفیاء نہ تر مقام ثنیۃ الوداع پوری اوزغلول. او چہ کوم آسونہ تیار کرے شوی نہ وو د ہغوی منڈہ تی د ثنیۃ الوداع نہ واخلہ د مسجد بنی زریق پوری او کرہ او حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما د ہغہ خلقو نہ وو چا چہ پہ دغہ منڈہ کنبی حصہ واخستلہ.

تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کنبی خلور رجال دی:

① عبداللہ بن یوسف رحمۃ اللہ علیہ: دا عبداللہ بن یوسف تنیسی رحمۃ اللہ علیہ دی. د دوی مختصر احوال کشف

(۱) الأبواب والتراجم: ۲/۲۱۰، سراج القاری: ۲/۴۶۳.

(۲) رواہ البخاری ایضاً فی الجہاد، باب: السبق بین الخیل، رقم الحدیث: ۲۸۶۸، وباب: إضمار الخیل للسبق، رقم الحدیث: ۲۸۶۹، وباب: غایۃ السبق للخیل المضمرة، رقم الحدیث: ۲۸۷۰، وفی الاعتصام، باب: ما ذکر النبی صلی اللہ علیہ وسلم وحض علی اتفاق أهل العلم، رقم الحدیث: ۷۳۳۶، ومسلم فی صحیحہ، فی الإمارة، باب: السابقة بین الخیل وتضمیرہا، رقم الحدیث: ۱۸۷۰، وأبو داؤد فی سننہ، فی الجہاد، باب: فی السبق، رقم الحدیث: ۲۵۷۵، والترمذی فی جامعہ، فی الجہاد، باب: ماجاء فی الرهان والسبق، رقم الحدیث: ۱۶۹۹، والنسائی فی سننہ، فی الخیل، باب: إضمار الخیل للسبق، رقم الحدیث: ۳۶۱۴، وابن ماجہ، فی الجہاد، باب: السبق والرهان، رقم الحدیث: ۲۸۷۷، وفی جامع الأصول، حرف السین، کتاب الثالث: فی السبق والرسم، الفصل الأول: فی أحكامہا، رقم الحدیث: ۳۰۳۵، ۳۸/۵.

الباری، کتاب ہدۃ الیوم پہ دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: لیبدلہ الشاہد الغائب لانڈی تیرشوی دی (۱).

① **مالك بن انس**: دا امام مالك بن انس رضی اللہ عنہ دی. دے دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب ہدۃ الیوم پہ دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب الایمان، باب: من الدین الفرار من الفتن لانڈی تیرشوی دی (۲).

② **نافع بن عمر**: دا مولیٰ عبد اللہ بن عمر القرشی رضی اللہ عنہ دی. دے دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: ذکر العلم والفتیانی المسجد لانڈی تیرشوی دی (۳).

③ **عبد اللہ بن عمر**: دا مشہور صحابی رسول حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ عنہما دی. دے دوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: استثناء فی الایمان کنبی تیرشوی دی (۴).

دے حدیث شرح: عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، «أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي أُضْمِرَتْ مِنَ الْخَفِيَاءِ، وَأَمْدَهَا ثِيَابُ الْوَدَاعِ: دے حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ عنہما نے روایت دی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دے ہفہ اسونو کوم چہ دے جہاد دے پارہ، تیار کرے شوے وو، دے مقام خفیا نہ تر مقام ثنیۃ الوداع پوری دمنڈی مقابلہ او کرہ.

دے مسابقہ نہ مراد: "سابق" دا دے باب مفاعله نہ فعل ماضی معروف دی. دے باب مفاعله خاصہ دے چہ پہ دے کنبی دے اشتراک معنی وی. او مصدری معنی دے منڈی لگول. چنانچہ ہفہ منڈی پہ کوم کنبی چہ دوه یا دے دوو نہ زیات کسان شریک وی ہفہ تہ بہ مسابقہ وئیلی شی. اودا دمنڈی مقابلہ دے اسونو پہ مینخ کنبی او کرے شوہ. پہ دغہ منڈی کنبی دے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس ہم شریک شوے وو. دے ہفہ نوم السکب وو. دے بنو فزارہ نہ دا حضور پاک اخستی وو. دے ہغوی پہ نیز دے نوم ضررس وو. عجیبہ خبرہ دا دے چہ دا اولنہ اس وو کوم چہ حضور پاک اخستی وو او ہم دا ہفہ رومبہ اس دی پہ کوم چہ کیناستو سرہ حضور پاک پہ جہاد کنبی شرکت کرے وو. او بیا دا ہم چہ دغہ اس پہ مقابلہ کنبی شریک شو او گتہ تی ہم او کرہ. چنانچہ دے حضور پاک اس مبارک تہ دا فضیلت او درجہ حاصلہ شوہ نو پہ دے سرہ حضور پاک اودے حضور پاک صحابہ کرام رضی اللہ عنہم تہ ہم خوشحالی او شوہ (۵).

علامہ ابی رضی اللہ عنہ فرمائی دے سابق معنی "أذن فی المسابقة" دے. او بعضو "أمر للمسابقة" ذکر کرے دی (۶). او بعضو "أمر بالسباق" یا "أباحہ" معنی ذکر کرے دے (۷).

(۱) کشف الباری: ۲۸۹/۱، ۱۱۳/۴.

(۲) کشف الباری: ۲۹۰/۱۸۰/۲.

(۳) کشف الباری: ۶۵۱/۴.

(۴) کشف الباری: ۱/۶۳۷.

(۵) عمدة القاری: ۲۳۵/۴.

(۶) إكمال إكمال المعلم للأبی. کتاب الإمارة، باب: الخیل فی نواصیہا الخیرالی یوم القیامة، رقم الحدیث: ۱۸۷۰/۲۱۷/۵.

(۷) ذخیرة العقبی، کتاب الخیل، غایة السبق للتی لم تضمنیر، رقم الحدیث: ۳۶۱۰، ۲۳/۳۰.

دَ تَضْمِيرِ دَدُوو مَعْنُو بِيَان: "أَضْرَبْتَ" دَ أَضْبَارِ مُطْلَبِ دَا وِي چِه اَس بَانْدِي زَيْن اِچْوِي اَوْ بِيَا دَ هَغِي دَ پَاسِه زَل (خَادِر) اِچْوَلِي شِي اَوْ هَغِه دَغِه شَان مَسْلَسَلِ پِه زَيْن كِنْسِي تَرَلِي اَوْ پِه زَل (خَادِر) كِنْسِي پَتِ وِي. بِنِه خَوْلِي پَرِي رَاخِي نُو دَ هَغِه دَ بَدَنِ پُوَسْتَوَالِي خَتْمِيرِي اَوْ دَ هَغِه بَدَنِ دَ اَوْ سِنِي پِه شَان سَخْتِيرِي. (۱)

دَ أَضْبَارِ يُوْبَلِه طَرِيقَه هَم دِه چِه پِه اَس بَانْدِي بِنِه خَوْرَاك كُوِي اَوْ پِه بِنِه شَان سَرِه دَ هَغِه خَدْمَتِ كُوِي. كَلِه چِه هَغِه بِنِه چَاقِ اَوْ تَازِه شِي نُو بِيَا هَغِه پِه يُوِه كُوْتِه كِنْسِي بِنْدُوِي. چِرْتِه چِه پِيرِه گَرْمِي وِي. پِه دَغِه زَمَانِه كِنْسِي پِه هَغِه بَانْدِي اَوْچِ وَا بِنِه خَوْرِي. پِه دِي سَرِه دَ هَغِه پِه بَدَنِ بَانْدِي بِنِه خَوْلِه رَاخِي. پِه كَوْمِ سَرِه چِه دَهَغِه پِه بَدَنِ كِنْسِي چِه خَوْمَرِه وَا زَنگِه وِي اَوْ زِيَاتِي غَوْبَنِه وِي هَغِه وِيلِي كِيرِي اَوْ قَوْتِ اَوْ طَاقَتِ نِي بَاقِي پَاتِي كِيرِي. دِي اَسُونُو تِه مَضْرُونِيلِي شِي اَوْ دَا عَمَلِ أَضْبَارِ اَوْ تَضْمِيرِ يَادِيرِي. (۲)

حَفِيَاءُ نَه مَرَاد: "الْحَقِيَاءُ": دَحَاءِ فَتْحِه اَوْ فَاءِ سَكُونِ سَرِه دَ يُو خَانِي نُوْمِ دِي. دَ هَغِه خَانِي نَه دَ مَقَامِ ثَنِيَةِ الْوَدَاعِ فَاصِلِه پِه قَوْلِ دَ حَضْرَتِ سَفِيَانِ ثَوْرِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ پِنَخِه يَا شَيْبِ مِيلِه دِي اَوْ پِه قَوْلِ دَ حَضْرَتِ مُوسَى بْنِ عَقْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ پِه نِيْزِ شَيْبِ يَا اَوْ وِه مِيلِه دِي. دَدِي لَفْظِ اسْتِعْمَالِ مَمْدُودِ يَعْنِي "حَفِيَاءُ" اَوْ مَقْصُورِه يَعْنِي "حَفِيَاءُ" دَوَاپَرِه شَان صَحِيحِ دِي. (۳)

عَلَامَه نُووِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَرْمَانِي چِه صَاحِبِ دَ مَطَالَعِ ذِكْرِ كَرِي دِي چِه بَعْضِي خَلْقُو دَا دَحَاءِ ضَمِي سَرِه هَم لُولِي هَغِه پِه خَطَا بَانْدِي دِي. بَلِ دَا لَفْظِ دَ يَاءِ تَقْدِيمِ سَرِه "حَفِيَاءُ" هَم لُوَسْتَلِي شِي. لِيكِنِ دَحَدِيثِ پِه كِتَابُونُو كِنْسِي يَاءِ مُؤَخَّرِ كُولُو سَرِه حَفِيَاءُ لُوَسْتَلِ مَشْهُورِ دِي. (۴)

قَوْلِه: "أَمْدُهَا" هَمَزَه اَوْ مِيمِ مَفْتُوحِه سَرِه دِي. دَدِي مَعْنِي دَ غَايَتِ اَوْ حُدُودِ. اَوْ مُطْلَبِ دَا چِه دَمْنَدِي شَرُوعِ دَمَقَامِ حَفِيَاءِ نَه اَوْ شُوِه اَوْ خَتْمِيدَلِ ثَنِيَةِ الْوَدَاعِ بَانْدِي اَوْ شُوِه. (۵)

دَ ثَنِيَةِ الْوَدَاعِ دَ تَسْمِيِي وَجِه اَوْ مُطْلَبِ: "ثَنِيَّةُ الْوَدَاعِ" دَا دَثَاءِ فَتْحِه نُونِ كَسْرِه اَوْ يَاءِ تَشْدِيدِ سَرِه مَسْتَعْمَلِ دِي. ثَنِيَّةُ مَعْنِي دَ دُوو غَرُونُو مِينَخِ كِنْسِي تَلُونَكِي لَارِ اَوْ "وَدَاعُ" نَه مَرَادِ رَخْصَتِ

(۱) عمدة القارى: ۲۳۵/۴.

(۲) معالم السنن للخطايى، كتاب الجهاد، باب: السبق: ۲/۲۴۵. عمدة القارى: ۴/۲۳۵. الكوكب الوهاج والروض البهاج، كتاب الإمارة، باب: الخيل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۲۰/۱۵۵.

(۳) إكمال إكمال المعلم للأبي، كتاب الإمارة، باب: الخيل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۶/۲۸۵. الديباج على صحيح مسلم للسيوطى، كتاب الإمارة، باب: الخيل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۴/۴۶۸.

(۴) المنهاج شرح صحيح مسلم، كتاب الإمارة، باب اخليل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۱۳/۱۴. عمدة القارى: ۴/۲۳۵.

(۵) الكوكب الوهاج والروض البهاج، كتاب الإمارة، باب: الخيل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۲۰/۱۵۵.

کول دی. چنانچه په دې تناظر کښې د ثنیه الوداع معنی به دا جوړېږي چه دا د مدینې منورې سره څوک د یو وادنی نوم دې. کوم ځانی پورې چه به د مدینې خلق د رخصت کولو دپاره تلل. هم ددې وجې نه ددې وادنی نوم ثنیه الوداع مشهور شو (۱).  
هم ددې طرف ته په دې شعرونو کښې اشاره ده چه د نبی کریم ﷺ په استقبال کښې د مدینې نه بهر راتلو سره د مدینې ماشومانو جینکو وئیل: طللم الهدر علینا من ثنیا الوداع (۲).  
دې نه علاوه ددې لفظ وجه تسمیه کښې نور اقوال هم دی، مثلاً: کله چه نبی کریم ﷺ د مدینې طرف ته هجرت او کړو نو هغه وخت دغه مقام نه خپل ځان سره راتلونکی کسان واپس رخصت کړل په دې وجه ددې ځانی نوم ثنیه الوداع مشهور شو. بعضې ذکر کړې دې چه دا هغه ځانی وو دکوم ځانی نه چه بعضې لښکرې د جهاد دپاره رخصت کړې او صحیح هم هغه دی کوم چه پورته ذکر شو چه اهل مدینه به د چا د رخصت کولو دپاره ددې مقام پورې تلل (۳).

قوله: وسائق بين الخيل التي لم تظم من الثنية إلى مسجد بنى زريق: او کوم اسونه چه نه وو تیار کړې شوي دهغوی منډه نی د ثنیه الوداع نه واخله تر مسجد بنی زریق پورې ورکړه.

د بنی زریق مصداق: بنی زریق داد تصغیر صیغه ده. فعیل په وزن باندې دې. دانصار مدینه مشهور قبیلې خزرج یو ښاخ بنو زریق بن عامر مراد دې. د دغه غیر مضمراسونو دمنډې مقابلې ختمیدل مسجد بنی زریق باندې شوي وو. علامه ابی مالکی رحمته الله لیکلی دی چه ثنیه الوداع او مسجد بنی زریق په مینځ کښې د یو میل فاصله وه (۴).

قوله: وان عبد الله بن عمر رضي الله عنه هغه خلقوه وو چاچه په دغه منډه کښې حصه واخستله.

قوله: سائق بها كني ذهاء ضمير مرجع الخيل هم كيدي شي او المسابقة هم. یعنی حضرت عبد الله بن عمر رضي الله عنه هم په هغه خلقو کښې شامل وو چاچه د آسونو منډه کښې حصه واخسته. د حدیث شریف دمد کوره تکرې باره کښې امکان دې چه دا پخپله هم د حضرت ابن عمر رضي الله عنه قول وی چه هغوی دخپل طرف نه په طریق د حکایت نقل کړې وی (۵). اوداهم امکان دې چه دا دهغوی د شاگرد نافع رضي الله عنه قول وی (۶).

(۱) إكمال المعلم بفوائد مسلم، في الإمارة، باب المسابقة بين الخيل وتضميرها، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۲۸۵/۶. اللبیب علی صحیح مسلم للسيوطی، کتاب الإمارة، باب: الخيل في نواصيها الخير إلى يوم القيامة، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۴۶۸/۴.

(۲) ذخيرة العقبى، كتاب الخيل، غايه السبق للتي لم تظم، رقم الحديث: ۳۶۱۰، ۲۳/۳۰.

(۳) بذل المجهود، كتاب الجهاد، باب في السبق: ۷۵/۱۲.

(۴) إكمال المعلم بفوائد مسلم، في الإمارة، باب المسابقة بين الخيل وتضميرها، رقم الحديث: ۱۸۷۰، ۲۸۵/۶.

(۵) عمدة القارى: ۲۳۵/۴، بذل المجهود، كتاب الجهاد، باب في السبق: ۸۵/۱۲.

(۶) عمدة القارى: ۲۳۵/۴.

داسونو زغلولو حکم: د مذکورہ حدیث شریف په رنړا کښې د ټولو ائمه حضراتو په نيز د جهاد په نيت سره اسونه تيارول او د هغوی په مينځ کښې مقابله کول جائز دی. البته که په مقابله کښې شرط اولگولې شي نو په هغې کښې څه تفصيل دي. کوم چه به ان شاء الله کتاب الجهاد کښې بيانولې شي (۱).

(۱) کشف الباری، کتاب الجهاد، باب: السبق بين الخيل، رقم الحديث: ۲۸۶۸، وباب: إضمار الخيل للسبق، رقم الحديث: ۲۸۶۹، وباب: غايه السبق للخيل المضرة، رقم الحديث: ۲۸۷۰، دلته اختصاراً د اسونو د مقابلې جائز صورتونو حکم نقل کولې شي:

داسونو د زغلولو جائز صورتونه: داسونو زغلولو ټولو جائز صورتونو کښې دوه شرطونه لازمي دي: ① چه ددې مقصد صرف لوبې او تماشي نه وي بلکه قوت جهاد يا جسماني ورزش وي. ② کوم انعام چه مقرر کړې شي هغه معلوم او متعين وي مجهول يا غير متعين نه وي.

رومېي صورت: مشروط رقم باندي د اسونو زغلولو جائز صورت يودا دي چه فریقین څوک چه خپل خپل اسونه زغلولو سره بازي لگوي په خپل مينځ کښې د يو بل نه اخستل وړ کول نه وي، بلکه د حکومت يا دريم سړي يا جماعت د طرف نه د انعام په توگه رقم گټونکي د پاره مقرر وي.

دويم صورت: د گټونکي د پاره رقم يا انعام د فریقینو نه وي مگر چه صرف د يو طرف نه وي دواړو طرفونه شرط نه وي. مثلاً زيد او عمر د اسونو زغلولو کښې بازي لگوي. زيد او وائي چه که عمر وړاندي شو نو زه به هغه له زر روپي انعام وړ کوم. د بل طرف نه يعنی د عمر د طرف نه دا شرط نه وي چه که زيد مخکښې شو نو عمر به هغه ته زر روپي وړ کوي. د دوو طرفو شرط صورت د جوارشي دي کوم چه حرام دي.

دريم صورت: د دوو طرفو شرط هم په يو خاص صورت کښې جائز دي هغه دا چه فریقین يو دريم په اس سورته مثلاً خالد خپل ځان سره شريك کړي، د کوم چه دوه صورتونه دي: ① چه د شرط صورت دا اوگرځي چه زيد وړاندي شي نو عمر به زر روپي هغه ته وړ کوي او که عمر وړاندي شو نو زيد به دومره رقم هغه ته ادا کوي او که خالد وړاندي شي نو هغه ته څه وړ کول د چا په ذمه نشته. ② چه شرط داسې وي چه خالد وړاندي شي نو زيد او عمر دواړه به زر روپي وړ کوي او زيد او عمر دواړه يا د دوی نه يو که وړاندي شو نو د خالد په ذمه هيڅ نشته. څو که په زيد او عمر کښې دواړو نه يو وړاندي شي به دواړو کښې به په يو باندي هغه ته زر روپي ادا کول لازم راځي. به دې دواړو صورتونو کښې چه کوم دريم سړي شريك کړې شوي دي هغه ته په حدیث کښې محلل وئيلې شوي دي. په يو صورت کښې هم به هغه ته څه وړ کول نه وي. دې نه علاوه ددې حدیث د وجې نه د اهم ضروري دي چه دريم اس د زيد او عمر اسونو سره يوشان حیثیت لري د کوم په وجه چه د هغه د وړاندي کيدو يا روستو پاتې کيدو دواړه احتمال مساوي وي. داسې نه وي چه د کمزورني يا عيب د وجې نه د هغه شاته پاتې کيدل عاده يقيني وي يا د زيات قوې او چالاک کيدو د وجې نه د هغه وړاندي کيدل يقيني وي.

د اسونو د زغلولو ناهائز صورتونه: ① د اسونو د زغلولو بازي صرف لوبه تماشه يا د روپو طمع د پاره وي او د قوت جهاد نيت نه وي. ② د معاوضه يا انعام شرط فریقین کښې دوطرفه وي او يو دريم فریق (محلل) په مذکورہ بالا طريق باندي ورسره نه وي يوځاني کړي. ③ د منلې مروجه شکل چه د اسونو زغلول د يو کيمنى يا کلب د طرف نه وي. اسونه د کيمنى ملکيت او سواره هم د کيمنى نوگران وي او نور نور خلق د اسونو په نمر باندي خپل داؤ لگوي د کوم قيس چه هغوی داځلوي. د کوم نمر اس چه مخکښې لارو په هغې باندي داؤ لگونکي ته د انعام رقم ملا ويري باقي د ټولو خلقو قيس ضبط کړي. دا صورت مطلقاً حرام او جوارشي ده او حرام دي. بيا په دې کښې د جهاد يا بدني ورزش څه تعلق نشته ځکه چه بازي لگونکي نه اسونه ساتي اونه د سورلني مشق سره د هغوی څه تعلق وي.

تنبیه: کوم احکام چه د جائز او ناجائز تفصيل د اسونو په زغلولو کښې ليکلي شوي دي هم دغه حکم د اوسانو په زغلولو او خپي ابله منلې او د نښې ويشتلو هم دي. (ماخوذ من مسائل شيخ زبير، ملکی عبدالواحد زید محمد، باب: قرار ورجع کایمان: ۲۶۰-۲۶۱، مجلس نشریات اسلام، کراچی)

د اسونو زغلولو په شرکاؤ کښې د نبی کریم ﷺ دانعام تقسیمول: ابن الملتن رضی اللہ عنہ توضیح کښې د ابن التین په حواله سره ذکر کړې دې چې نبی کریم ﷺ د اسونو زغلول او کرل په دې موقعه حضور پاك له د یمن نه چغې وغیره راغلې وې نو حضور پاك په اول نمبر راتلونکی ته درې چغې ورکړې په دویم نمبر باندې راتلونکی ته دوه او په دریم نمبر راتلونکی ته ئی یو چغه ورکړه. په څلورم نمبر باندې راتلونکی ته ئی یو دینا ورکړو. پنځم نمبر باندې راتلونکی ته ئی یو درهم ورکړو او په شپږم نمبر راتلونکی ته ئی د چاند ئی لږه شان حصه ورکړه او ټولو ته ئی د برکت دعا او کړه (۱).

د حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت: د مذکور حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت د راوی قول إلى مسجد بنی زریق کښې دې (۲).

د حدیث مبارک نه مستنبط شوې فواید او احکام: د مذکور حدیث شریف نه ډیر زیات فواید او احکام مستنبط کیږي. د کوم نه چې یو څو دلته نقل کولې شی:

① علامه نووي رحمته اللہ علیہ فرمائي په دې حدیث سره د اسونو مینځ کښې د زغلولو د جواز علم کیږي او د دې د تضمیر د جواز هم علم کیږي. دا دواړه امور د ټولو په نیز اتفاقی دی. ځکه چې د جنگ د پاره د تیز صحت منداو کلکو اسونو ضرورت وی. لهذا د اسونو په تضمیر کښې او د هغوی د زغلولو په مقابله کولو کښې په اسونو کښې مطلوبه صفتونه پیدا کولې شی (۳).

② په دې کښې دلیل دې چې د پیژندگلو د پاره جمات د هغې د جوړونکی یا یو سړی یا د قبیلې وغیره طرف ته منسوب کولو سره یادول جائز دی (۴).

③ د اسونو د تضمیر جواز معلوم کیږي (۵).

④ د یو کار د حکم ورکونکی طرف ته د هغه کار نسبت کول هم صحیح دی. لکه څنگه چې د دې حدیث د رومې جملې "سابق" نه معلومه شوه چې حضور پاك خود دغه مقابله اجازت ورکړې وویا ئی مباح گرځولې وه یا ئی حکم فرمائیلې وو. لیکن انداز د تعبیر دا اختیار کړې شو چې حضور پاك په خپله په مقابله کښې حصه واخسته (۶).

(۱) التوضیح لابن الملتن: ۴۲۸/۵.

(۲) التوضیح لابن الملتن: ۴۲۶/۵، عمدة القاری: ۲۳۵/۴.

(۳) المنهاج شرح صحیح مسلم، کتاب الإمارة، باب: الخیل فی نواصبها الخیر إلى یوم القیامة، رقم الحدیث: ۱۸۷۰، ۱۴/۱۳.

(۴) فتح الباری: ۶۶۷/۱، عمدة القاری: ۲۳۶/۴، المنهاج شرح صحیح مسلم، کتاب الإمارة، باب: الخیل فی نواصبها الخیر إلى یوم القیامة، رقم الحدیث: ۱۸۷۰، ۱۵/۱۳.

(۵) عمدة القاری: ۲۳۶/۴، تحفة الأحوزی، کتاب الجهاد، باب: ماجاء فی الرهان والسبق، رقم الحدیث: ۱۶۹۹، ۲۵/۵، ذخیرة العقبی، کتاب الحیل، غایة السبق للئی لم تضر، رقم الحدیث: ۳۶۱۰، ۲۵/۳۰.

(۶) فتح الباری: ۶۶۷/۱، عمدة القاری: ۲۳۶/۴، تحفة الأحوزی، کتاب الجهاد، باب: ماجاء فی الرهان والسبق، رقم الحدیث: ۱۶۹۹، ۵/۳۵، ذخیرة العقبی، کتاب الحیل، غایة السبق للئی لم تضر، رقم الحدیث: ۳۶۱۰، ۲۵/۳۰.



- ⑤ دَ اسونو دَ زغلولو مقامات ابتداء او انتهااء مقرر كولو دَ مشروعيت هم علم كيرې (١).
- ⑥ خُناورو سره بغير دَ ضرورت نه چه كوم معاملات ناجائز دي مثلاً (اوگي ساتل او هغه دَ ضرورت نه زيات زغلول وغيره) هم هغه معاملات دي چه په وخت دَ ضرورت (مثلاً: دَ جهاد دَ تياري دَ پاره) جائز كيرې (٢).
- ⑦ خُناورو سره دَ هغوي دَ طاقت او قوت په اعتبار سره معامله كولو طريقه معلوميرې. لكه چه په مذكوره حديث كښې مخې ته راغله چه دَ مضمرا اسونو منډه تر پنځو يا شپږو ميلو پورې او كړې شوه (ځكه چه په دغه اسونو باندې دَ منډې بڼه مشق كړې شوې وي) او دَ غير مضمرا اسونو منډه صرف يو ميل پورې او كړې شوه (ځكه چه دا اسونه دَ پيرې زياتې منډې عادت نه وي اونه دَ مشق) (٣).

### ١٠ - بَابُ: الْقِسْمَةِ، وَتَعْلِيْقِ الْقِنُوفِ الْمَسْجِدِ

دا باب په جمات كښې (دَ يوځين) دَ سيم او دَ كهجورو غونچه زورندولو دَ جواز په بيان كښې

دي.

دَ ترجمه الباب مقصد او دَ حضرت كنگوهي رضي الله عنه راځي: لامع الدراري كښې حضرت كنگوهي رضي الله عنه فرمائي چونكه په احاديث مبارك كښې په جمات كښې دَ عباداتو نه علاوه دَ نورو امورو ممانعت موجود دي. مثلاً دَ يو حديث مفهوم دي چه په دي جماتونو كښې دَ خلقو (دنيا سره متعلق) كارونونه څه كول جائز نه دي. دَ دي حديث ظاهر خودا تقاضا كوي چه دَ عبادت نه علاوه دي هيڅ يو كار هم په جمات كښې جائز نه وي. ليكن (دَ مذكوره حديث نه معلوميرې چه په سابقه حديث كښې دَ ذكر شوي) امورو نه مراد دَ دغه امورو نه علاوه دي دكوم چه هم په جمات كښې ضرورت وي.

حضرت شيخ الحديث صاحب نور الله مرقد ه لامع الدراري كښې په دي حديث باندې دَ حضرت كنگوهي رضي الله عنه په دي كلام باندې حاشيه كښې تحرير كوي چه (كوم حديث چه حضرت كنگوهي رضي الله عنه ذكر كړې دي) دَ دغه حاديث معني مختلف الفاظو سره په احاديثو كښې ذكر دي. مثلاً جمع الفوائد كښې دَ صحيح مسلم يو روايت دَ حضرت ابوهريره رضي الله عنه موجود دي چه كوم كس بل سرې په جمات كښې دَ خپل ورك شوي خيز اعلان كولو سره واوري نو هغه ته دي اوواځي چه الله تعالي دي تاته ستا ورك شوې خيز واپس نه كړي ځكه چه دا جماتونه دَ دي كارونو دَ پاره نه دي جوړ شوي.

په يوبل حديث كښې دي چه يو سرې په جمات كښې دَ خپل ورك شوي اوبن باره كښې اعلان

(١) عمدة القاري: ٢٣٦/٤، تحفة الأحوزي، كتاب الجهاد، باب: ماجاء في الرهان والسبق، رقم الحديث: ١٦٩٩.

(٢) ذخيرة العقبى، كتاب الحيل، غاية السبق للتي لم تضر، رقم الحديث: ٣٦١٠، ٣٠/٢٥.

(٣) التوضيح لابن الملقن: ٤٢٧/٥، عمدة القاري: ٢٣٦/٤، ذخيرة العقبى، كتاب الحيل، غاية السبق للتي لم تضر، رقم الحديث: ٣٦١٠، ٢٥/٣٠.

(٤) ذخيرة العقبى، كتاب الحيل، غاية السبق للتي لم تضر، رقم الحديث: ٣٦١٠، ٢٥/٣٠.

کولو نو حضور پاك هغه ته او فرمائیل چه (الله دې او کړې چه) ستا اوبن ملاؤ نه شی. دا جماتونه ددې (قسم اعلانونو) د پاره نه دی جوړ شوی. په یو بل حدیث کښې حضور پاك په جمات کښې د خرڅولو او اخستلو، د ورك شوو خیزونو د اعلان کولو او اشعار وغیره لوستلو نه منع کړې ده. په یو بل حدیث کښې دی چه د طائف دوو کسانو په جمات کښې په اوچت آواز سره خبرې کولې نو حضرت عمر رضی الله عنہ هغوی ته او فرمائیل که چرې تاسو ددې ښار وئې نو تاسو ته به مې دردناکه سزا درکړې وه. دې نه علاوه یو بل حدیث کښې دی چه په جمات کښې خدا کول د قبر تیاره ده. په یو بل روایت کښې دی چه بغیرد قرآن، د الله تعالی د ذکر او د خیر د سوال جواب نه هر قسم خبره او کار په جمات کښې دننه فضول دې. چنانچه ددې قسم روایاتو په رنړا کښې امام بخاری رضی الله عنہ په راتلونکو ابوابو کښې په تفصیل سره دهغه روایاتو ذکر کړې دې په کوم کښې چه دهغه امورو ذکر دې د کوم کول چه د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه نقل دی (۱).

د حضرت شیخ الحدیث صاحب نور الله مرقده راثې: حضرت شیخ الحدیث صاحب رضی الله عنہ فرمائی چه د حضرت امام بخاری رضی الله عنہ مقصد دادې چه په جمات کښې د یو خیز تقسیم جائز دې. دارنگ د کهجورې غونچې د زورندولو جواز هم ثابتول دی او د دویمې مسئلې په خاص توگه سره ضرورت ځکه پېښ شو چه حضرت امام بخاری رضی الله عنہ په دې سره د عوف بن مالک اشجعی رضی الله عنہ د روایت طرف ته اشاره کړې ده. په کوم کښې چه دی چه رسول الله صلی الله علیه و آله جمات ته تشریف راوړ وئې کتل چه یو سړی په جمات کښې حشف یعنی د ردی کهجورو غونچه زورنده کړې ده. د حضور پاك په لاس مبارک کښې همسا وه. حضور پاك هغه غونچه په همسا باندې وهلو سره او فرمائیل که چرته صدقه ورکونکې غوښتل نو ددې نه د بهتر صدقه ئې هم کولې شوه. او په یو بل روایت کښې دی چا سره چه دومره کهجورې (لس و سق) وی نو هغه دې زکوٰة هم ادا کړې او یوه غونچه دې راوړې د اصحاب صغه د پاره دی جمات کښې زورنده کړې. او د امام بخاری رضی الله عنہ قاعده داده چه د روایت طرف ته په ترجمه الباب کښې اشاره فرمائی. بله دا چه د حضرت امام احمد رضی الله عنہ په نیز د جمات په مینځ کښې میوه داره ونه کړل جائز نه دی ځکه چه خامخا به هر قسم خلق میوې شو کولو له راځی. نو د هغوی ددې قول تردید کول دی. امام بخاری رضی الله عنہ خو په ترجمه کښې هغه روایت ذکر کړې دې په کوم کښې چه د بحرین د مال د راتلو ذکر دې نو ددې نه خو قسمت ثابت شو لیکن د کهجورې غونچه زورندول ثابت نه شو. نو ددې به ئې دلالة النص یا اشاره النص په ذریعه ثابت کړو (۲).

(۱) لامع الدراری مع حواشیه: ۱/۱۶۰.

(۲) سراج القاری: ۲/۴۶۶. تقریر بخاری شریف کښې دی: قسمت هم د دغه استثناءاتو نه دې دکوم چه په جمات کښې کول جائز دی. او زورندول د کهجورې د غونچې د ابن بطلان رضی الله عنہ به نیز امام بخاری رضی الله عنہ ته غفلت شوې دې او ددې ئې څه دلیل نه دې ذکر کړې. بعضی حلقو د امام بخاری رضی الله عنہ د طرف نه دا جواب ورکړې دې چه د هغوی اراده د لیکلو وه خو وئې نه لیکلې شو. بیاض ئې پرې خودې دې.....

دهفتون کشمیری صاحب رحمۃ اللہ علیہ رانی: صاحب انوار الباری علامہ بجنوری رحمۃ اللہ علیہ په دې مقام باندې لیکلی دی چه حضرت شاه صاحب رحمۃ اللہ علیہ او فرمائیل: (۱) امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د دې خانی نه د هغه افعالو ذکر شروع کړو کوم چه د جنس مونخ او ذکر ونونه خارج دی او بیا هم په جمات کښې او کړې شو او په دې سره هغه د خپل وسیع مسلک تائید کول غواړی. چنانچه په دې حدیث کښې ئی د مال تقسیم ثابت کړو خو زمونږ فقهاء په جمات کښې دننه کلام طعام وغیره مکروه گرځوی او د مال تقسیم وغیره هم ځکه چه جماتونه د دې کارونو د پاره موزون نه دی. امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ تر لرې پورې داسې احادیث ذکر کوی حالانکه هغه ټول خاص واقعات وو دکوم نه چه فقهاء هم انکار نه کوی او هغوی دا امور صرف په توگه د عادت اختیارول مکروه گرځوی. که یو ځل دوه داسې اوشی نو دهغوی په نیز هم جائز دی. لهذا که چرې امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ دې جزوی واقعاتو نه د جمات احکاماتو کښې توسع پیدا کول غواړی نو په دې سره دهغه مقصد نه شی پوره کیدې ځکه چه کوم نور افعال چه احياناً ثابت شوی دی. ښکاره خبره ده چه جماتونه د دې د پاره نه دی جوړ شوی. بیا د نقل مونخونو د پاره هم مستحب دادی چه هغه دې په کورونو کښې او کړې شوی او په جماتونو کښې دې صرف فرائض ادا کړې شی. نو د نورو اعمالو او افعالو د پاره په مستقل توگه باندې د گنجائش ویستلو کوشش کولو څه موقع ده؟ قضاء احنافو په نیز په جمات کښې هم جائز ده ځکه چه هغه د عبادت په حکم کښې ده. د شافعیه په نیز ممنوع ده. په تدریس کښې هم اختلاف دی. احناف دا په جمات کښې بغير د اجرت جائز او اجرت سره ناجائز گرځوی. (ځکه چه دا د عبادت په حکم کښې پاتې نه شو).

⑦ حضرت رحمۃ اللہ علیہ نور فرمائی چه زما په دې امر کښې هم تردد دې چه د اموالو تقسیم د بحرین وغیره معاملات جمات کښې پېښ شوی وی ځکه چه علامه سمهودی رحمۃ اللہ علیہ ذکر کړی دی چه

..... کوم چه کاتبانو ملاؤ کړو. بعضی وائی چه د شرط موافق ورته څه روایت ملاؤ نه شو یا ترې هیر شو وغیره وغیره. مگر زما په نیز د اللفظ صحیح دې او حضرت امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د ابوداؤد شریف د یو روایت طرف ته کوم چه کتاب الزکاة کښې دې اشاره کړې ده. په هغه روایت کښې دی چه حضور پاک جمات ته تشریف راوړو وئی کتل چه یو سری حشف یعنی د زدی کهجورو یوه غونچه په جمات کښې زورنده کړې ده. د حضور پاک په لاس مبارک کښې همسا وه. حضور پاک هغه غونچه په هغې اووهله او وئی فرمائیل که چرې دې غونچې والا غوښتلې نو د دې نه ئی بهتر صدقه کولې شوه. په یو روایت کښې دی چه حضور پاک حکم او فرمائیلو چه د هریاغ نه دې یوه غونچه په جمات کښې د مسکینانو د پاره زورنده کړې شی. او د حضرت امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ قاعده داده چه د روایاتو طرف ته په ترجمه الباب سره اشاره کوی. اوزما رانی داده چه په قیاس سره ئی ثابته کړه. ځکه چه په روایت کښې د قسمت الدنانیر ذکر دې او دنانیر او کهجوري تقریباً د رنگ او مقدار په اعتبار سره برابر وی. دا قیاس هم صحیح دې ځکه چه د حضور پاک په زمانه کښې د تسبیح په وجود باندې د کهجوري د هلوگو والا روایاتو نه استدلال کیدې شی. نو دلته هم شرکت فی التقسیم وغیره نه استدلال کیدې شی او بعضی مشائخ فرمائی چه قسمت او تعلیق قنو چونکه د نفع عامه خیزونه دی په دې وجه ځنکه چه قسمت جائز دې تعلیق قنو به هم جائز وی. (تقریر بخاری شریف: ۱۵۵/۲).

(انوار الباری: ۱۸/۱۴)

د مسجد نبوی قبله اول د بیت المقدس طرف ته وه بیا چه کله تحویل قبله اوشو نو په بل مقابل طرف کښې شوه او هغه حصه مسقف شوه او اوله حصه صغه یا دیدله. د فقهې په کتابونو کښې دا هم دی چه د جمات یوه حصه په وخت د ضرورت ددې نه خارج کولې هم شی (۱). لهذا دا ټول توسعات کوم چه امام بخاری رحمته الله علیه ذکر کړې دی. په اوله حصه کښې به شوی وی کومه چه روستو د جمات په حکم کښې داخل پاتې نه شوه. راویانو هم توسع کولو سره دې ته هم جمات او وئیل او عرفاً ددې گنجائش هم وو. علامه ذهبی رحمته الله علیه هم لیکلې دی چه صغه د اجزاء مسجد نه وه بیا ددې نه خارج کړې شوی وه (۲). په دې تحقیق باندي د امام بخاری رحمته الله علیه مقصد نه پوره کيږي اوددې د پاره به دا اجمالی جواب هرځائی جاري کيږي.

⑤ ددې نه علاوه داهم وئیلې شی چه دا د بحرین مال (چه تقریباً یو لاکه درهم وو) په جمات کښې ددې د پاره هم جمع کړې شوی وو چه هغه وخت بیت المال نه وو اودا یو صحابی سره کيخودل هم د بد گمانئ سبب جوړیدې شو او پخپله حضور پاک هم د دنیا دا متاع په خپل کور کښې کيخودل نه خوښول.

(۱) د جمات یوه حصه بالکلیه د جمات نه خارجول، ویستل شرعاً جائز نه دی. کوم ځائی چه یو ځل شرعی جمات جوړ شو هغه ځائی د جمات کیدو نه د چا په ویستلو سره هم نه شی وتلی. البته بعضی وخت داسې ممکن دی چه عوام الناس ته د لارې د تنگیدو وغیره د وجې نه په جمات کښې د بار بار تیریدو ضرورت پېښيږي او د جمات هغه حصه دغه وخت دمونځ وغیره د ضرورت نه زیاتی هم وي یعنی د جمات باقی حصه د مونځ د پاره کافی هم وي نو په داسې صورت کښې عوام الناس ته د هغوی د ضرورت د وجې د جمات هغه متعلقه حصه د لارې په توگه د استعمالولو تر هغه وخته پورې اجازت ورکولې شی تر کومې پورې چه د متبادل لارې بند ویست اونه شی. لیکن په دغه اجازت سره د جمات هغه حصه د جمات کیدو نه نه شی وتلې بلکه د همیشه دپاره به هم جمات وی. اوگورنی: ردالمحتار، کتاب الوقف، مطلب: فی الوقف إذا خرب ولم یکن عمارته: ۳۷۸/۴، دارالفکر. وفی البحارالرائق، کتاب الوقف:

۲۷۶/۵، دارالکتاب الإسلامی.

(۲) د حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه د طرف نه چه د علامه سمهودی رحمته الله علیه کومه خبره ذکر کړې شوې ده هغه خبره د هغوی کتاب وفاء الوفاء، کښې ملاؤ نه شوه. معلومیږي دا چه علامه کشمیری رحمته الله علیه د هغوی دا خبره صرف د بحث په توگه ذکر کړې ده. څنگه چه فیض الباری کښې ددې قول د نقل کولو نه پس کذا ذکره السمهودی وئیلو سره د پوره خبرې حواله په هغوی باندي واچوله، نه یوازې دا بلکه د دغه عبارت د نقل کولو نه پس خپله نتیجه ذکر کوی. د کوم حاصل چه دا جوړیږي چه د نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم په جمات کښې د غنیمت مال تقسیمول د هغه وخت د هنگامی حالت د وجې نه شوی وو. ددې عبارت نه معلومیږي چه د حضرت کشمیری رحمته الله علیه په نیز هم صغه د مسجد نبوی حصه ده د هغې نه خارج نه ده. که چېرې شاه صاحب رحمته الله علیه د علامه سمهودی رحمته الله علیه خبره په توگه د جواب ذکر کړې وي او د حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه په نیز صغه شرعی مسجد نه کیدل راجح وي نو په آخره کښې به ئی داسې جواب نه ورکولو د کوم مدار چه صغه د جمات حصه منلو باندي مبنی دی. او فرض کړه که دا اومنلې شی چه د حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه رائي هم دا وه چه صغه د جمات نه خارج کړې شوې وه نو په ظاهر به ددې نه مراد دا وي چه جمات کیدل خو ئی باقی وو لیکن د ضرورت په وجه د صغه په حصه کښې ددې کارونو اجازت ورکړې شوې وو کوم چه په غام توگه په جماتونو کښې منع دی. او په دې اعتبار سره به دا وینا کول هم صحیح شی چه د دغه تقسیم په وخت صغه د عین جمات حصه نه وه. بل دا چه ددې گنجائش د فقهې په کتابونو کښې ملاویږي هم، څنگه چه پورته تیر شوی دی. والله اعلم بالصواب.

ددي ټولو شواهدو او قراننو په موجودگي کښې که چرې حضور پاک هغه ټول مال په مسجد نبوي کښې ډهيري کړو او فوري توگه باندې شي تقسيم هم کړو نو آيا دا خبره موزون او مناسب گرځولې شي چه دا قاعده او کليه جوړه کړې شي؟ نه بلکه دا په توگه د يوې واقعي خاصې جزئېې گنرل زيات بهتر دي او هر انصاف خوښونکې به هم دغه فيصله کوي.

فائده مهمه: حضرت شاه صاحب رحمته الله عليه او فرمائيل چه امام بخاري رحمته الله عليه د تراجم ابواب د وضع په باره کښې سباق غايات دي يعنې د هغوی دا قضيلت او مزيت بې مثال دي مگر په دي کښې چه يو طرف ته د امت محمديه د پاره غير معمولی منافع او فوائد دي نوبل طرف ته يو ډير لوڼی مضرت او نقصان هم دي ځکه چه يو حديث د يو خاص حادثه په موقع باندې راغلی وي او قرانن بنائې چه هغه وخت حضور پاک کوم حکم او د څه وجې نه ورکړې وو. مگر د امام بخاري رحمته الله عليه د ترجمه الباب او د توسع د وجې نه بل سرې په مغالطه کښې پريوځي او دغه حکم نبوي حکم مطرد او عام گنري (۱).

تعلیق او یو وضاحت: قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: الْقِنُوءُ الْعِدْقُ وَالْإِثْنَانِ قِنُوانٍ وَالْجَمَاعَةُ أَيْضًا قِنُوانٌ مِثْلَ صِنُوءٍ وَصِنُوانٍ: ابو عبد الله (امام بخاري) رحمته الله عليه فرمائي چه "قنوء عداق يعنى د کهبجوري غونچې ته وائي ددي تشنيه او جمع د قنوان په وزن باندې راځي په شان د صنواو صنوان.

دا تعلیق مصطفی ديب البغا والا نسخه کښې نشته دي کوم چه په کشف الباری کښې د متن په توگه لگولې شي. البته زمونږ په هندي نسخو او شروحاتو کښې ددي تعلیق ثبوت ملاويږي. علامه قسطلاني رحمته الله عليه ليکي چه دا تعلیق د ابي ذر، ابن عساگر او ابي الوقت په نسخو کښې ملاويږي ليکن ددي نه علاوه نورو نسخو کښې دا روايت نه ملاويږي.

د تعلیق مقصد او تشریح: ابو عبد الله نه مراد پخپله امام بخاري رحمته الله عليه دي. هغه په ترجمه الباب کښې موجود د يو لفظ قنولغوی تشریح کوي. د ټولو نه اول د قنوء قاف په کسري سره، معنی بنائې چه ددي معنی "العداق" د عين په کسري سره يعنى د کهبجوري غونچه ده او نور ئي او خودل چه ددي لفظ تشنيه او جمع د وارو هم په يو وزن دي يعنى قنوان. لهذا کله چه ددي استعمال د تشنيه د پاره مقصود وي نوهم دا لفظ به وي ليکن د نون په کسري سره او کله چه ددي استعمال د جمع د پاره مقصود وي نو ددي اعراب به د ضرورت مطابق وي. لکه چه صنواو ددي تشنيه او جمع هم په دي وزن باندې راځي او فرق د نون د کسري سره او د کسري نه بغير سره کولې شي (۲).

(۱) انوار الباری: ۱۹-۲۰/۴۱.

(۲) ارشاد الساری: ۷۸/۲.

حدیث باب [حدیث نمبر ۲۱۱]

n- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ (۱) عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ (۲) عَنْ أَنَسٍ (۳) - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ أَمْسَى النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَقَالَ «انْثُرُوهُ فِي الْمَسْجِدِ». وَكَانَ أَكْثَرَ مَالِ أَبِي بَهْرَسُوهَ اللَّهُ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - إِلَى الصَّلَاةِ، وَلَمْ يَلْتَفِتْ إِلَيْهِ، فَلَمَّا قَضَى الصَّلَاةَ جَاءَ فُجَلَسَ إِلَيْهِ، فَمَا كَانَ يَرِي أَحَدًا إِلَّا أَعْطَاهُ، إِذْ جَاءَهُ الْعَبَّاسُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أُعْطِنِي فَأَتَيْتُ فَأَدَيْتُ نَفْسِي وَقَادَيْتُ عَقِيلًا، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «خُدْ». فَخَفَانِي تَوْبَهُ، ثُمَّ ذَهَبَ يُقْلَهُ فَلَمْ يَسْتَطِعْ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَوْمَرْتُ بَعْضُهُمْ بِرَفْعِهِ إِلَيَّ. قَالَ «لَا». قَالَ فَأَرَفَعُهُ أَنْتَ عَلَيَّ. قَالَ «لَا». فَتَنَزَّمْتُهُ، ثُمَّ ذَهَبَ يُقْلَهُ، فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَوْمَرْتُ بَعْضُهُمْ بِرَفْعِهِ عَلَيَّ. قَالَ «لَا». قَالَ فَأَرَفَعُهُ أَنْتَ عَلَيَّ. قَالَ «لَا». فَتَنَزَّمْتُهُ، ثُمَّ أَحْتَمَلَهُ فَأَلْقَاهُ عَلَيَّ كَاهِلِي ثُمَّ انْطَلَقَ، فَمَا زَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَتَّبِعُهُ بَصْرَةً حَتَّى خَفِيَ عَلَيْنَا، عَجَبًا مِنْ جِرْصِهِ، فَمَا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَتَمَّ مِنْ بَابِ دِرْهَمٍ.

د حدیث ترجمہ: حضرت انس رضی اللہ عنہ روایت دی ہے نبی کریم ﷺ پہ خدمت کنسی د بحرین نہ مال راور لی شو نو حضور پاک او فرمائیل چه دا جمات کنسی واچوئی. دا مال د هغه تولو مالونونہ زیات وو کوم چه تر دغه وخته پوری د حضور پاک پہ خدمت کنسی رالیولی شو. بیا رسول اللہ ﷺ د مونخ د پارہ او تولو نو دغه مال طرف تہئی توجہ ہم اونہ کرہ. بیا نی چه کله مونخ ادا کرہ نو حضور پاک راغلو او مال سرہ کیناستو. بیا چه به حضور پاک چاتہ ہم کتل مال بهئی ورکولو. پہ دی کنسی حضور پاک له (د هغوی ترہ) حضرت عباس رضی اللہ عنہ تشریف راورہ هغوی او وئیل ای د اللہ رسول! ماتہ ہم راکرہ خکہ چه ما خپله او د عقیل (دواړو) فدیہ ہم ادا کرہ وه. نو حضور پاک ارشاد او فرمائیل (خومره چه غواړی) واخله نو حضرت عباس رضی اللہ عنہ په خپله کپرا کنسی مال (بنه شان سرہ) دک کرہ. بیانی دغه پنډ اوچت کرہ نو (د بوج زیاتیدو د وجہ) نی اوچت نہ کرہ شو. نو هغوی او وئیل ای د اللہ رسول! تاسو

(۱) حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی چه مونخ سرہ چه کومې نسخې دی په هغې کنسی ددی راوی ابراهیم سرہ دهنه د پلار نوم یعنی ابن طهمان هم ذکر دی او هم دغه صحیح دی. خوددی نسخې نہ علاوه کنسی دا لفظ ابراهیم د خپل پلار د نسبت نہ بغیر ذکر دی. (فتح الباری: ۶۶۸/۱).

(۲) ددی راوی بارہ کنسی هم حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ لیکلی دی چه زمونږ په نسخو کنسی دا لفظ عبدالعزیز بن صهیب دی خوددی نہ علاوه نسخو کنسی د پلار طرف تہ د نسبت نہ بغیر صرف عبدالعزیز دی. (فتح الباری: ۶۶۸/۱).

(۳) أخرجه البخاری أيضا فی الجهاد، باب: فداء المشرکین، رقم الحدیث: ۳۰۴۹. وباب: ما أقطع النبی صلی الله علیه وسلم من البحرین زما وعد من مال البحرین والجزية ولمن یقسم الفین والجزية، رقم الحدیث: ۳۱۵۶. وفی جامع الأصول، حرف الجیم، الكتاب الأول: فی الجهاد، الباب الثانی: فی فروع الجهاد الفصل الثالث: فی الغنائم والفین، الفرع الرابع: فی الفین، رقم الحدیث: ۷۱۱/۲، ۱۲۰۷.

چاته او وایی چه (زما امداد او کړی او ما سره) نی اوچت کړی. حضور پاک او فرمائیل نه، نوهغه او وئیل ښه ده بیا تاسو نی ماته اوچت کړئی. حضور پاک او فرمائیل نه، پخپله نی اوچت کړه. په دې باندې هغه د هغه پنډ نه څه مال کم کړو بیا نی (اوچت کړو لیکن د بوج د وجې اوچت نه کړې شو په دې باندې هغوی بیا، او وئیل ای د الله رسول تاسو چاته او وایی چه (زما امداد او کړی او ما سره دا) اوچت کړی. حضور پاک او فرمائیل نه، نوهغه او وئیل ښه بیائی تاسو ماته اوچت کړئی. حضور پاک او فرمائیل نه ته نی پخپله اوچت کړه. په دې باندې هغه د هغه پنډ نه څه نور مال کم کړو او بیائی په خپله اوگه باندې اوچت کړو او لارو حضور پاک د هغه په مال باندې حرص لیدو سره هغه (تر د تللو په وخت) یو شان کتلو تردې چه هغه زموږ د نظرونو نه غیب شو. بیا چه ترکومی پورې یو درهم هم باقی پاتې شو حضور پاک تر هغه وخته پورې هم هلته حصار وو.

تو اجم و حال: دمذکوره حدیث شریف په سند کښې ټول درې راویان دی:

① ابراهیم بن محمد: دا ابراهیم بن طهمان رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الفسل، باب: من اغتسل عریانا وحده فی الخلوۃ، ومن تسترفالستر، أفضل، رقم الحدیث: ۲۷۹ لاندې تیر شوی دی.

② عبدالعزیز بن صهیب: دا عبدالعزیز بن صهیب بنانی نصرانی رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیر شوی دی. (۱)  
③ انس: دامشهور او معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیره شوی ده. (۲)

د حدیث شوح: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: أَيْتَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَقَالَ: «أَنْتَرُوهُ فِي الْمَسْجِدِ» وَكَانَ أَكْثَرَ مَالِ أَيْتَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: د حضرت انس رضی الله عنه نه روایت دې چه د نبی کریم صلی الله علیه و آله په خدمت کښې د بحرین نه مال راوړلې شو نو حضور پاک او فرمائیل چه دا جمات کښې واچوئی. دا مال د هغه ټولو مالونو نه زیات وو چه تر دغه وخته پورې د حضور پاک په خدمت کښې راوړلې شوي وو. د بحرین نه څنګه او څومره مال راوړلې شو؟

قوله: «بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ» حافظ ابن حجر رضی الله عنه لیکلی دی چه ابن ابی شیبه رضی الله عنه د حمید بن هلال په طریق سره د یو روایت تخریج کړې دې. (۳) چه دا مال یو لاکه وو (۱) اودا مال خراج یا

(۱) کشف الباری، کتاب الفسل، باب: من اغتسل عریانا وحده فی الخلوۃ، ومن تسترفالستر، أفضل، رقم الحدیث: ۲۷۹

(۲) کشف الباری: ۱۲/۲.

(۳) کشف الباری: ۴/۲.

(۴) حدثنا أبو أسامة، عن سليمان بن المغيرة، عن حميد بن هلال، قال: بعث العلاء بن الحضرمي إلى .....

د جزیه مال و و کوم چه د بحرین والونه وصول کړې شوې وو. وئیلی شوی دی چه دا د ټولو نه رومبې خراج و و کوم چه د نبی کریم ﷺ په خدمت کښې راولیږلې شو. او رالیږونکې حضرت علاء بن الحضرمی ؓ وو.

امام بخاری ؒ کتاب الجزیه کښې د حضرت عمرو بن عوف ؓ روایت نقل کړې دې. (۲) چه نبی کریم ﷺ د بحرین خلقو سره صلح او کړه او په هغوی باندي ئی حضرت العلاء بن الحضرمی ؓ امیر جوړ کړو او د هغوی طرف ته ئی حضرت ابو عبیده بن الجراح ؓ اولیږلو چه د هغه خانی نه جزیه واخلي او رانی وړی. نو چه کله انصارو ته د هغوی د راتلو خبر اورسیدو نو هغوی د سحر مونیخ حضور پاک سره او کړو. کله چه نبی کریم ﷺ هغوی اولیدل

.....رسول الله صلى الله عليه وسلم بثمان مائة ألف من خراج البحرين، وكان أول خراج قدم به على رسول الله صلى الله عليه وسلم. فأمر به فنثر على حصير في المسجد، وأذن المؤذن فخرج إلى الصلاة فصلى. ثم جاء إلى المال فنقل عليه قائما فلم يعط ساكتا ولم يمنع سائلا، فجعل الرجل يجيئ فيقول: أعطني، فيقول: خذ قبضة، ثم يجيئ الرجل فيقول: أعطني، فيقول: خذ قبضتين، ويجيئ الرجل فيقول: أعطيني، فيقول: خذ ثلاث قبضات، فجاء العباس. فقال: يا رسول الله! أعطني من هذا المال، فإني أعطيت فداى وفداء عقيل يوم بدر، ولم يكن لعقيل مال، قال: فأخذ ييسط خميصة كانت عليه، وجعل يحثي من المال، فحشا فيها، ثم قام به فلم يطق حمله، فقال: يا رسول الله! احمل علي، فنظر إليه النبي صلى الله عليه وسلم فتبسم حتى بدا ضاحكه، وقال: أنقص من المال وقم بقدر ما تطيق، فلما ولي العباس قال: أما إحدى اللتين وعدنا الله فقد أنجز لنا إحداهما، ونحن نتنظر الأخرى، قوله تعالى: ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَن فِي آيَاتِكُم مِّنَ الْآيَاتِ إِن يَظُنُّ أَنَّ اللَّهَ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا﴾ (الأنفال: ٧٠) إلى آخر الآية، قد أنجزها الله لنا ونحن نتنظر الأخرى. (المصنف لابن أبي شبة، كتاب الأوائل، باب: أول ما فعل ومن فعله، رقم الحديث: ٣٦٩٥٥، ١٩/٥٣٣-٥٣٢).

(١) حافظ ابن حجر ؒ فتح الباری کښې په حواله د المصنف لابن ابی شبيه ليکلی دی چه د جزیه مقدار یو لاکه وو. (دراهم و و که دنانیر؟ د دې تصریح نشته دې)، خو چه په المصنف کښې کوم روایت دې په هغې کښې د اتو لاکه ذکر دې نه چه د یو لاکه او ابن سعد، یعقوب بن سفیان او امام حاکم رحمهم الله د روایت مطابق اتیا زره وو. شیخ عوامه ؒ په حاشیه د المصنف کښې دا تفصیل ذکر کړې دې. (قوله: "ثمان مائة ألف: كذا في النسخ، وفي فتح الباري: ٥١٧/١ أول الصفحة عن المصنف: "أنه كان مئة ألف، والذي عند ابن سعد، ويعقوب بن سفیان والحاکم: ثمانين ألف. [حاشية المصنف للشيخ عوامه، كتاب الأوائل، باب: أول ما فعل ومن فعله، رقم الحديث: ٣٦٩٥٥، ١٩/٥٣٣-٥٣٢]).

(٢) حدثنا أبو ليثان أخبرنا شعيب عن الزهري قال حدثني عروة بن الزبير عن المسور بن مخرمة أنه أخبره أن عمرو بن العوف الأنصاري وهو حليف لبني عامر بن لؤي، وكان شهد بدرا، أخبره، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث أبا عبيدة بن الجراح إلى البحرين يأتيه جزيتها، وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم هو صالح أهل البحرين أمر عليهم العلاء الحضرمي، فقدم أبو عبيدة بمال من البحرين، فسمعت الأنصار بقدم أبي عبيدة، فوافقت صلاة الصبح مع النبي صلى الله عليه وسلم، فلما صلى بهم انصرف، فترضوا له، فتبسم رسول الله صلى الله عليه وسلم حين رآهم، وقال: "أظنكم قد سمعتم أن أبا عبيدة قد جاء بشيئ، قالوا: أجل يا رسول الله، قال: "فأبشروا وأملوا ما يسركم، فوالله لا الفقر أخش عليكم، ولكن أخشى عليكم أن تبسط عليكم الدنيا، كما بسطت على من كان قبلكم، فتنافسوها كما تنافسوها، وتهلككم كما أهللكهم". (صحيح البخاري، كتاب الجزية، باب: الجزية واموادة مع أهل الذمة والحرب، رقم الحديث: ٢٩٨٨).



نو مسکي شو او ارشاد ئي او فرمائيلو چه زما خيال دي چه تاسو د ابو عبیده د بحرین نه د واپس راتلو خبر اوریدلې دي چه هغه څه راوړي راغلي دي..... الحديث.

قوله: «انثروة في المسجد» د دي معنی «صهوة» ده یعنی په جمات کښې ئي واچونې. (۱)  
په جمات کښې د مال د هيري کولو وجه: علامه شيبير احمد عثمانی رحمته الله عليه فرمائي چه دي وخته پوري باقاعده او مستقل د څه بيت المال بندوبست نه وو شوي او حضور پاك عليه السلام په خپل کور کښې مال او دولت کيخودل نه خوښول. بيا د بل چا په کور کښې کيخودو سره د جنگ جگړې او يو بل نه د وړاندې کيدو اندېښنه وه. په دي وجه (د مال) په جمات کښې کيخودلې شو. (۲)

قوله: «فخرج رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى الصلاة ولم يلتفت إليه، فلما قضى الصلاة جاء فجلس إليه، فما كان يري أحدا إلا أعطاه»

بيا رسول الله صلى الله عليه وسلم د مانځه د پاره او وتلو نو د هغه مال طرف ته ئي توجه هم اونه فرمائيل. بياني چه كله مونځ ادا كړو نو حضور پاك راغلو او مال سره كيناستو. بيا چه به نبي صلى الله عليه وسلم څوك هم ليدل نو هغه ته به ئي مال ورکولو.

قوله: «إذ جاءه العباس، فقال يا رسول الله: أعطني، فأبى فأدبت نفسي وفأدبت عقيباً، فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم: «خذ» فحشا في ثوبه، ثم ذهب يقله فلم يستطع، فقال: يا رسول الله، أؤمر بضعهم يرفعهم إلى، قال: «لا»»

په دي کښې حضور پاك له (د حضور پاك تره) حضرت عباس رضي الله عنه تشریف راوړو. هغوی او وئيل اي د الله رسوله ماته (هم) راکړه ځکه چه ما خپله او د عقيل (دواړو) فديه ادا کړې وه. نو حضور پاك ارشاد او فرمائيلو (څومره چه غواړې) واخله، نو حضرت عباس رضي الله عنه په خپله کپړا کښې مال (په ښه شان) سره ډک کړو. بياني دغه پنډ او چتولو نو (د بوج د زیاتوالي د وجې ئي) او چت نه کړې شو. نو هغه او وئيل اي د الله رسوله تاسو چاته او وایئ (چه زما امداد او کړي یوځاني به شی دا) راوچت کړو. حضور پاك او فرمائيل نه.

د حضرت عباس رضي الله عنه د سوال کولو وجه:

قوله: «أعطيني» د حضرت عباس رضي الله عنه دا سوال کول د غربت د وجې نه نه وو بلکه د دي وجه وړاندې راځي چه هغه فديه ادا کړې وه. (۳)

(۱) عمدة القاری: ۲۳۸/۴.

(۲) فضل الباری: ۱۲۶/۳.

(۳) حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله عليه فرمائي چه د دي مطلب بعضي حضراتو دا بیان کړې دي چه د حضور پاك تره حضرت عباس بن عبدالمطلب رضي الله عنه دا فرمائي چه زه غریب شوي يم مگر دا صحیح نه دي ځکه چه که چرې دامعنی وی نو په دي صورت کښې به دهغه روایت معنی صحیح نه شی په کوم کښې چه دا مضمون دي چه حضور پاك د دوو کالو زکاة د حضرت عباس رضي الله عنه نه پیشگی آخستې وو. بلکه مطلب دا دي چه زما خر چه زیاته شوي ده. (لامع الدراری: ۱/۸، الأبواب والتراجم: ۲۱۱/۲-۲۱۰).

د فدیې ورکولو مطلب:

قوله: «فَأَذَيْتُ عَقِيلًا» دا د ابوطالب خوئی وو یعنی د حضرت علی عليه السلام رور وو په غزوه بدر کښې حضرت عباس عليه السلام اودا قیدیان جوړ کړې شوي وو. نو حضرت عباس عليه السلام خپله اود دغه فدیې ادا کولو سره د قید نه خلاصې حاصل کړې وو. (۱)

قوله: «فَخَفَا فِي ثَوْبِهِ» کښې د حشاء ضمیر او د ثوبه ضمیر د حضرت عباس عليه السلام طرف ته راگرځي. (۲)

قوله: «قَالَ: فَارْفَعُهُ أَنْتَ عَلِيٌّ، قَالَ: «لَا» فَنَثَرْتُمُنْهُ، ثُمَّ ذَهَبَ يُقَلِّهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَوْمَرْتُمْ بَعْضَهُمْ بِرَفْعِهِ عَلِيٌّ، قَالَ: «لَا» فَنَثَرْتُمُنْهُ، ثُمَّ أَحْتَمَلُهُ، فَأَلْقَاهُ عَلِيٌّ كَأَجْلِهِ، ثُمَّ انْطَلَقَ، فَمَا زَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُتْبِعُهُ بَصَرَهُ حَتَّى خَفِيَ عَلَيْنَا - عَجَبًا مِنْ حِرْصِهِ:

نو هغوی او وئیل ښه ده تاسو بیا ماته دا راوچت کړئ. حضور پاک او فرمائیل نه ته ئی پخپله اوچت کړه. په دې باندې هغه د دغه پنډ نه څه مال کم کړو بیائی (اوچتولو خو د بوج د وجې نه ئی اوچت نه کړې شو په دې باندې هغه بیا) او وئیل ای د الله رسوله! تاسو چاته او وایئ چه (زما امداد او کړی او داماته) راوچت کړی. حضور پاک او فرمائیل نه. نو هغه او وئیل ښه ده بیا تاسو ماته دا راوچت کړئ حضور پاک او فرمائیل نه ته ئی پخپله اوچت کړه. په دې باندې هغه د دغه پنډ نه لږ نور مال کم کړو بیائی په خپلو اوگو باندې راوچت کړو او لاړو. حضور پاک د هغه د مال دا حرص لیدلو سره هغه (ته) مسلسل کتل تردې چه هغه زمونږ د نظرونو نه غیب شو.

قوله: «يُقَلِّهُ» دا د باب افعال نه د فعل مضارع صیغه ده. د دې معنی اوچتول دی. (۳)

نبي کریم عليه السلام د حضرت عباس عليه السلام امداد ولې اونه کړو؟ دلته دا سوال پیدا کيږي چه کله حضرت عباس عليه السلام نبي کریم عليه السلام ته درخواست او کړو چه چاته او وایئ چه دا پنډه راسره اوچت کړی نو حضور پاک چاته د داسې وئیلو نه انکارولې او کړو؟ بله دا چه حضرت عباس عليه السلام بیا نبي کریم عليه السلام ته درخواست او کړو چه ښه ده تاسو چاته نه وایئ نوبیا پخپله ئی

(۱) فتح الباری: ۶۶۹/۱ عمدة القاری: ۲۳۸/۴. حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله فرمائی چه حضرت عباس عليه السلام چه دا څه وئیلی وو چه ماته هم راکړه ځکه چه ما دخپل خان او عقیل بن ابی طالب فدیې ادا کړې وه او دوچند می ادا کړې وه. په اصل کښې جنگ بدر کښې دا دواړه حضرات د قریشو د کافرانو د طرف نه راغلي وو. کافرانو ته چه کله ماتې اوشوه نود هغوی ۷۰ کسان مسلمانانو قیدیان کړې وو. کوم چه روستو د فدیې په بدله کښې پریخودې شو. حضرت عباس عليه السلام مالدار سړې وو اود هغه وراره عقیل غریب او نادار وو. په دې وجه د دواړو فدیې حضرت عباس عليه السلام ادا کړې وه. اوس د دغه واقعي په موقع دواړه مسلمانان شوي وو اود حضرت د خپل لوڼ د وجې د غنیمت د مالونو نه خمس او فنی کښې د دغه خلقو هم حق وو. په دې وجه حضرت عباس عليه السلام سوال او کړو حضور پاک او فرمائیل واخله. هغه په کپرا کښې دومره مال اوتړلو چه اوچتول ئی ورته گران شو. (سراج القاری: ۵۰۵/۲).

(۲) فتح الباری: ۶۶۹/۱ عمدة القاری: ۲۳۸/۴.

(۳) قال ابن اثیر: «يقال: أقل الشيء يقله، واستقله يستقله، إذا رفعه وحمله. (النهاية في غريب الحديث والأثر لابن اثیر: ۴۸۷/۲).

را سره اوچت کره. نو نبی کریم ﷺ ددی نه هم انکار اوکړو ددی څه وجه وه؟  
ددې دا جواب ورکړې شوی دې چه ددی انکار وجه دا وه چه حضرت عباس رضی الله عنه په دې خبره  
باندي خبردار شی چه د مال کثرت څه خوښ کړې شوې څیز نه دې. یا د دغه انکار وجه  
دا کیدی شی چه په دې طریقې سره نصیحت کول مقصود وو چه د خپل ضرورت مطابق  
اخیستو باندي اکتفاء کوه. یا د دغه عمل په ذریعه د آخرت د معاملې طرف ته توجه ورکول  
مقصود وو چه صبا به څوک هم د چاپوچ نه اوچتوی (۱).

قوله: "گایله" مطلب "په کتفه" دې چه په خپله شا باندي ئی د اوگو په مینځ کښې  
واچولو (۲). "يَتَّبِعُهُ بَصْرَةٌ" د حضور پاک تر لرې پورې هغه ته کتل په مال باندي د هغه حرص  
کتلو د وجې وو.

قوله: "فَمَا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَمَّ مِنْهَا دِرْهَمٌ" بیا تر کومې پورې چه یو درهم هم  
باقی پاتې وو حضور پاک تر هغه وخته پورې هم هلته حصار وو.

قوله: "تَمَّ" په معنی د هک دې (۳) دا آخری جمله خال دې چه د حضور پاک هلته کښې قیام د  
آخری درهم ختمیدو پورې باقی وو (۴).

د حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی چه په دې باب کښې  
او ددی لاندې راتلونکې حدیث سره متعلق که څوک اعتراض او کړې چه ترجمه الباب خو په  
دوو خبرو باندي مشتمل دې. یو په جمات کښې څه څیز تقسیمول او دویم په جمات کښې  
یو څیز زورندول. خو حدیث باب صرف د اولنې خبرې سره متعلق دې او په حدیث کښې د  
دویمې خبرې سره متعلق هیڅ هم نشته دې. نو ددی جواب دا دې چه کله داسې هم کیږي چه  
امام بخاری رحمته الله علیه په ترجمه الباب کښې څه امر ذکر کوی لیکن د هغوی د شرائطو مطابق  
حدیث نه ملاویدو د وجې د حدیث ذکر نه کوی. چنانچه په یو حدیث کښې دا خبره موجود  
ده چه نبی کریم ﷺ د کهجورو د باغ خلقو ته حکم فرمائیلي وو چه غونچې په جمات کښې  
زورنډې کړئ دې د پاره چه چا سره څه څیز نه وی نوهغه به دا او خوری.

دویم جواب دا دې چه په جمات کښې د مال تقسیمولو په شان غونچې په جمات کښې  
زورندول هم دی. ځنګه چه په جمات کښې مال اچول او هغه تقسیمول د حدیث په رنرا کښې  
جائز او گرځولې شو دغه شان د غونچې زورندول او د هغې نه خورل هم صحیح شو (۵).  
د حدیث نه مستنبط شوی فواید او احکام: د مذکوره حدیث شریف نه ډیر فواید او احکام  
معلومیږي، مثلاً:

(۱) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۶۹/۱.

(۴) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۳۷/۴.

- ① ذنبی کریم ﷺ کیدل اود مال طرف ته خیال نه کول معلومیری. که هغه مال ډیروی او که لږ. (۱)
- ② دوخت د امام د پاره دا مناسب دی چه مال د مستحقینو په مینځ کښې تقسیمولو کښې تاخیر اونه کړی. (۲)
- ③ دوخت امام له په خپل اختیار باندې د مال تقسیمول هم معلومیری. (۳)
- ④ دا هم معلومیری چه کله امام ته د خلقو د حاجت علم وی نو مال ذخیره کول او ساتل نه دی پکار بلکه د خلقو په حاجتونو کښې خرچ کول پکار دی. (۴)
- ⑤ په جمات کښې د داسې څیزونو کیخودو جواز معلوم شو د کوم په استعمال کښې چه خلق مشترک وی. (۵)

### ۱۱ - بَابُ: مَنْ دَعَا لَطْعَامٍ فِي الْمَسْجِدِ وَمَنْ أَجَابَ فِيهِ

دباب د هغه سرې باره کښې دې چه په جمات کښې یو سرې د خوراک خورلو د پاره راغواړی اود هغه سرې باره کښې دې چه په جمات کښې دغه دعوت قبول کړی.

دترجمة الباب تشویح: په دې ترجمه الباب کښې فی المسجد لفظ به د "دما" سره متعلق وی. مطلب به دا شی چه څوک جمات ته لار شی او هلته موجود سرې ته د خوراک دعوت ورکړی. قوله: "من أجاب فيه"، د صحیح بخاری په اکثر و نسخو کښې د "من أجاب منه" الفاظ دی. دکشمیښی په روایت کښې د "من أجاب إليه" الفاظ دی. (۶)

د دواړو روایتونو مطابق څه لویه تبدیلی نه راځی. په اول صورت کښې چه "منه" وی نو "ه" ضمیر به د جمات طرف ته راگرځی او که چرې "إليه" وی نو ضمیر به د طعام او خوراک طرف ته راگرځی، بهر صورت معنی صحیح ده. (۷)

د ترجمه الباب مقصد: حضرت شاه ولی الله محدث دهلوی رحمته الله علیه فرمائی چه ددې باب مقصد په جمات کښې د مباح خبرو اترو جائز کیدل خودل دی. ځکه چه جماتونه د عبادتونو د پاره جوړولې شی او په حدیث کښې د دنیاوی خبرو اترو نه ممانعت هم موجود دی. لهذا په دې باب سره دغه وهم لرې کړې شوي دي. (۸)

(۱) فتح الباری: ۶۶۹/۱ عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۳۹/۴.

(۶) فتح الباری: ۶۷۰/۱ إرشاد الساری: ۷۹/۲.

(۷) عمدة القاری: ۲۴۰/۴، إرشاد الساری: ۸۰/۲.

(۸) شرح تراجم أبواب البخاری، ص: ۲۱.

حضرت شيخ الحديث صاحب رحمته فرمائی چونکہ دعوت وغیرہ د دینی امور و نہ دی او حدیث کنبی (ان هذه المساجد لا تصلى لشيء من هذا البول ولا القدر انما هي لذكر الله عز وجل والصلاة وقراءة القرآن)، وغیرہ راغلی دی. لهذا امام بخاری رحمته د دې جواز ثابتوی خکہ چه په روایت کنبی د دې ثبوت دی. (١)

علامه عینی رحمته فرمائی چه د امام بخاری رحمته د دې باب نه مقصد دې خبرې طرف ته اشاره کول دی چه دا کار و نه په جمات کنبی دننه مباح دی. د دې شمیر امور لغویہ ممنوعه فی المسجد کنبی نه راخی. (٢)

حدیث باب [حدیث نمبر ٤١٢]

٣١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ سَمِعَهُ أَنَسًا (٣) قَالَ وَجَدْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي الْمَسْجِدِ مَعَ نَأْسٍ فَقُمْتُ، فَقَالَ لِي «أرسلك أبو طلحة» قُلْتُ نَعَمْ. فَقَالَ «لِطَعَامٍ». قُلْتُ نَعَمْ. فَقَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ «قَوْمًا». فَأَنْطَلَقَ وَأَنْطَلَقْتُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ.

د هديت توجهه: د حضرت انس رضي الله عنه نه روایت دې چه هغوی او فرمائیل ما نبی کریم صلى الله عليه وسلم په جمات کنبی خه خلقو سره اولیدلو. زه او دریدم نو حضور پاک زما نه تپوس او کړو آیاتو ابو طلحه رالیرلې ئی؟ نو ما عرض او کړو آوجی، حضور پاک تپوس او کړو د خوراک دپاره ئی (غوښتې یو)؟ ما عرض او کړو آوجی. نو حضور پاک خپل نیزدې موجود خلقو ته او فرمائیل پاسئ (اوما سره لارشیئ) بیا حضور پاک روان شو نوزه د هغوی ټولو نه وړاندې روان ووم. تراجم وچال: دمذکوره حدیث مبارک سند کنبی ټول څلور رایوان دی:

① عبدالله بن يوسف: دا عبدالله بن يوسف تنیسی رحمته دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوحی په دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: لیهدم الشاهد الغائب لاندې تیر شوی دی. (٤)

② مالك بن انس: دا مشهور امام مالک بن انس رحمته دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری،

(١) تقریر بخاری شریف: ٣١٩/٢.

(٢) عمدة القاری: ٢٤٠/٤.

(٣) أخرجه البخاری أيضاً فی الأنبياء، باب: علامات النبوة فی الإسلام. رقم الحدیث: ٣٥٧٨. وفي الأطةمة، باب: من أكل حتى يشبع، رقم الحدیث: ٥٢٨١، وباب: من أدخل الضيفان عشرة عشرة، رقم الحدیث: ٥٤٥٠. وفي الأيمان والنذور، باب: إذا حلف أن لا يأتم فاكل تمرا بغيز وما يكون منه الأدم، رقم الحدیث: ٦٦٨٨ و فی مسلم فی صحیحه، فی الأشربة، باب: جواز استباعه غیره إلى دار من ینق برضاه، رقم الحدیث: ٢٠٤٠. والترمذی فی جامعہ، فی المناقب، باب: ١١، رقم الحدیث: ٣٦٣٤. وفي جامع الأصول، حرف النون، الكتاب الأول: فی النبوة، الباب الخامس: فی معجزاته ودلائل النبوة، الفصل الثالث: فی زیادة الطعام والشراب، رقم الحدیث: ٨٩١٠ ٣٥٦/١١.

(٤) کشف الباری: ٢٨٩/١، ١١٣/٤.

کتاب ہدایہ الوسی بہ دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب الایمان، باب: من الدین الغار من الفتن لاندی تیر شوې دی. (۱)

⑤ اسحاق بن عبداللہ رضی اللہ عنہ: دا اسحاق بن ابراہیم بن مخلد، ابن راہویہ رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: فضل من علم وعلم لاندی تیر شوی دی. (۲)

⑥ انس بن مالک رضی اللہ عنہ: دامشهور او معروف صحابئ رسول حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ دی. ددوی تفصیلی حالات کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندی تیر شوی دی. (۳)

د حدیث شرح: دمذکورہ حدیث شریف تشریح تقریباً واضحہ ده، څه خاص خبره د ذکر قابل په کنبی نشته دی. البته په دی حدیث کنبی ذکر شوې واقعہ په دی مقام باندی ډیره اجمال سره ده. امام بخاری رضی اللہ عنہ د خپل عادت موافق محض ترجمه الباب سره متعلق ټکرا نقل کړې ده. پوره تفصیل به ئی کتاب علامات النبوة کنبی راخی. (۴)

(۱) کشف الباری: ۲/۱۸۰/۲۹۰.

(۲) کشف الباری: ۳/۴۲۸.

(۳) کشف الباری: ۴/۲.

(۴) په دی واقعہ باندی مشتمل باب علامات النبوة کنبی موجود د حدیث خلاصہ دلته نقل کولې شی. یوخل ابوظلحه زید بن سهل انصاری رضی اللہ عنہ خپلې بی بی ام سلیم (چه حضرت انس رضی اللہ عنہ مور بی بی ده) ته اوونیل ماته نن د حضور پاک په آواز کنبی ضعف محسوس شو داسې معلومیرې چه هغوی اوگی دی، تاسره د خوراک څه شته؟ حضرت ام سلیم رضی اللہ عنہا څه وزې مړې روټی راویستلې او د خپلې لوبټې په یو پلؤ کنبی ئی راغونډې کړې او د حضرت انس رضی اللہ عنہ په ترڅ کنبی ئی وردننه کړې اوباقی لوبټه ئی په ښه شان سره د حضرت انس رضی اللہ عنہ د لاس نه راتاؤ کړه او د حضور پاک خدمت کنبی ئی اولیرلو. د حضرت انس رضی اللہ عنہ بیان دی چه کله زه لارم نو حضور پاک می ۷۰ یا ۸۰ کسانو سره ناست اولیدلو. دی حالت لیدو سره زه اودریدم نو حضور پاک تپوس اوکړو ته ابوظلحه ته رالیرلې ئی؟ ما اوونیل اوجی. تپوس ئی اوکړو د خوراک د دعوت دپاره؟ ما اوونیل اوجی. نو حضور پاک هغه ټولو خلقو ته اوونیل کوم چه د هغوی نه چاپیره ناست وو چه پاسئ روان شی هغه ټول روان شو نو زه د هغوی نه مخکنبی مخکنبی به تیزئی سره کور ته اورسیدم او حضرت ابوظلحه رضی اللہ عنہ ته مې ټوله خبره اوکړه. هغوی زما مور ام سلیم رضی اللہ عنہا ته اوونیل چه اوس به څه چل کیرې؟ حضور پاک خو پوره دلې سره تشریف راوړی. هغوی ته خوراک ورکولو دپاره خو مونږ سره د خوراک څه نشته دی. ام سلیم رضی اللہ عنہا جواب ورکړو الله او د هغه رسول زمونږ نه زیات پوهیرې. ابوظلحه رضی اللہ عنہ د حضور پاک د راوستلو دپاره د کور نه بهر اووتلو او په لار کنبی ئی ټوله خبره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته بیان کړه. حضور پاک او ابوظلحه رضی اللہ عنہ مخکنبی مخکنبی او باقی خلق ورپسې شاشاته کورته اورسیدل. حضور پاک او فرمائیل ام سلیم څه چه تاسره دی هغه راوړه. ام سلیم هم هغه روټی وړاندی کړې. رسول الله هغه روټی ماتې کړې او چوری ئی کړې. بیا ئی د ام سلیم رضی اللہ عنہا د تیلو کین په هغې باندی نچوری کړه او د هغې نه ئی ترکاری جوړه کړه. بیا حضور پاک په هغې باندی څه دعاگانې اوونیلې او ابوظلحه رضی اللہ عنہ ته ئی او فرمائیل چه لسو سلو کسانو له د دننه راتلو اجازت ورکوه. لس کسان به راغلل په مړه خیته به ئی خوراک اوکړو بیا به لارل. تردی چه هغه ټولو خوراک اوکړو. (صحیح البخاری، کتاب الانبیاء، باب: علامات النبوة فی الإسلام، رقم الحدیث: ۳۵۷۸).

د حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عینی رحمته اللہ علیہ فرمائی چه د حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت بالکل واضح دې. د ترجمه الباب دوه اجزاء دی. رومیې "من دعا الطعام فی المسجد" او دویم "من اجاب منه" د رومیې جز مناسبت به په دې صورت کښې وی چه کله د "فی المسجد" تعلق د دعا سره وی ځکه چه په دې صورت کښې به معنی وی چه کوم سرې جمات کښې راوبلې او که چرې "فی المسجد" تعلق د طعام سره شی نو بیا به د ترجمه الباب سره مناسبت قائم نه شی ځکه چه په دې صورت کښې به معنی وی چه کوم سرې په جمات کښې د خوراک کولو دعوت ورکړی یعنی خوراک په جمات کښې وی.

او د دویم جز مناسبت به داسې قائمېږي چه په حدیث شریف کښې موجود دی چه حضور پاک خپل ځان سره ناستو صحابه کرامو ته اشاره او کړه چه پاسی د خوراک د پاره روان شی. نو د حضور پاک دا کلام د دعوت قبلولو لره مستلزم دې. په دې تقریر سره دهغه خلقواشکال لرې شو څوک چه ددې خبرې قائل دی چه ددې حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت صرف د دویم جز سره جوړېږي نه چه اول جز سره.<sup>(۱)</sup>

د حدیث شریف نه استفاد امور او احکام: د مذکور حدیث شریف نه ډیر احکام او آداب مستنبط کېږي. په هغې کښې یو څو دلته ذکر کولې شی:

① ددې حدیث نه د خوراک د دعوت ورکولو د جواز علم اوشو اگر چه هغه خوراک د ولیمې نه وی.<sup>(۲)</sup>

② خوراک که لپ شان هم ولې نه وی ډیر خلق راغوبښتو کښې هیڅ حرج نشته دې.<sup>(۳)</sup>

③ دعوت قبلونکی ته چه معلومه وی چه زما د ځان سره نه راغوبښتي شوي خلقو بوتلو سره به راغوبښتونکی ته څه قسم خفگان نه وی نو خپل ځان سره نور څوک هم بوتلل جائز دی.<sup>(۴)</sup>

④ د یو کشر د خپل مشر نه مخکښې تک په غرض د لارخودنې جائز دی.<sup>(۵)</sup>

(۱) عمدة القاری: ۲۴۰/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۷۰/۱، عمدة القاری: ۲۴۰/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۷۰/۱، عمدة القاری: ۲۴۰/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۷۰/۱، عمدة القاری: ۲۴۰/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۴۰/۴.

## ۱۲ - بَابُ الْقَضَاءِ وَاللِّعَانِ فِي الْمُسْجِدَيْنِ الرَّجَالِ وَالنِّسَاءِ

دا باب په جومات کښې د سرو او ښخو په مینځ کښې

د قضاء او لعان کولو د جواز په بیان کښې دې

د ترجمه الباب تشریح، د قضاء لغوی او اصطلاحی تعریف: "القضاء" په لغت کښې د قضاء معنی فیصله کول، مضبوطول، د یو څیز د هغې آخري ته رسولو وغیره ده. (۱) د فقهاء کرامو په اصطلاح کښې د لازم کولو په توګه د یو شرعی حکم خبر ورکولو ته قضاء وائی. علامه شامی رحمته الله علیه لیکلی دی چه په خاص طریقہ باندې جګړه ختمول او د هغې فیصله کول قضاء (۲) ده.

په جومات کښې د قضاء حکم: د امام ابو حنیفه رحمته الله علیه، امام مالک رحمته الله علیه او د امام احمد رحمته الله علیه په نیز د وخت قاضی په جومات کښې کیناستو سره د خصوماتو فیصلې کولې شی. بلکه د هغه د پاره هم په جومات کښې کیناستل او فیصلې کول بهتر دی. دې د پاره چه صاحب حق او حاجت، په آسانئ سره جومات ته راشی او د قاضی په مخکې خپله مدعا بیان کړې شی. بل په جومات

(۱) النهاية فی غریب الحدیث والأثر: ۴۶۷/۲. وفيه أيضاً: وقال الزهري: القضاء في اللغة على وجوه، مرجعها إلى انقطاع الشئ وتماه، وكل ما أحكم عمله، أو أتم، أو ختم، أو أدى، أو أوجب، أو أعلم، أو أنفذ، أمضى. فقد قضى. وقد جاءت هذه الوجوه كلها في الحديث. (المصدر السابق).

(۲) قوله: (وشرعا فصل الخصومات إلخ) عزاء في البحر إلى المحيط، ولا بد أن يزداد فيه على وجه خاص، وإلا دخل فيه نحو الصلح بين الخصمين. (حاشية ابن عابدين، كتاب القضاء: ۲۰/۸-۱۹، دار عالم الكتب). ابواب فقه کښې چه د قضاء په موضوع باندې په کوم تفصیل، شرح او بسط سره مستقل کتابونه لیکلي شوي دي او په دې سلسله کښې نې یو یو جز واضح کړې دي. شاید چه چرته په بله موضوع باندې داسې توجه ورکړې شوي وي. په کوم کښې چه د قاضی ابوالحسن ماوردي رحمته الله علیه "ادب القاضي"، د ابوبکر خفاف حنفی "ادب القضاء" او په دې باندې د صدر الشهيد شرح، اودارنگ هم په دې نوم سره د ابن الدم حموی رحمته الله علیه کتاب، د علامه قرافي رحمته الله علیه کتاب "الحکام فی تمييز الفتاوى عن الأحکام"، د ابن فرحون تبصرة الحکام"، د ابن شحنة حنفی "لسان الحکام"، د قاضی علاء الدین طرابلسی "معین الأحکام"، او علامه ابوالقاسم سمنانی "روضة القضاء وطريق النجاة" ډیر اهم کتابونه دي. د قاضی عمادالدین اشورقانی حنفی "صنوان القضاء وعنوان الفتاء" (چه اوس اوس د حضرت مولانا قاضی مجاهد الاسلام قاسمی په تحقیق او تعلیق سره چېاپ شوي دي)، او د فقهې په عامو کتابونو کښې د کتاب القضاء لاندې چه کوم مباحث راغلي دي هغه ددې نه علاوه دي. د اردو ژبې لمن باوجود د خپل وسعت ددې موضوع نه محروم وه اگرچه چه بعضې مختصر رسائل، د قضاء تاریخ، او قضاء سره متعلق بعضې مخصوص مسائلو باندې موجود وي مګر یو داسې کتاب موجود نه وو چه وضاحت او د احکامو استیعاب سره د اسلام قانون معدلت پیش کړی. د مولانا مجاهد الاسلام قاسمی قاضی القضاة امارات شرعیه بهار واریسه کتاب "اطلاعی عدالت" (مطبوعه: ۱۹۸۸ع)، الحمد لله دا کمې پوره کړې ده. خو بیا هم د قضاء متعلق نور مباحث، دعوي شهادت، اقرار، صلح وغیره موضوعاتو باندې په اردو ژبه کښې د کار ضرورت دي. امید دي چه د مذکورہ کتاب د دویمې حصې په ذریعه باند به د دغه ضرورت پوره والې اوشی. وبالله التوفیق وهو المستعان (قاموس الفقه: ۵۲۳/۴-۵۲۲).



کښې کښاستو سره فیصله کولو کښې یوه فائده دا هم ده چه د جومات د تقدس په رنړا کښې به خلق د دروغو وینا نه کوی. (۱)

خو د امام شافعی رحمته الله علیه په نیز د قضاء انعقاد په جومات کښې مناسب نه دي ځکه چه په دې کښې د خصمینو خبرې اترې او شور غوبل سره د جومات د تقدس خرابیدل لازم راځي. ددې نه علاوه په جومات کښې د فیصلې کولو په غرض به مشرک هم داخلېږي حالانکه هغه نجس دي او د نجس جومات ته داخلیدل جائز نه دی. چنانچه ددې خبرې په رنړا کښې حضرت عمر بن عبدالعزیز رحمته الله علیه قاضی تمیم بن عبدالرحمن په جومات کښې د قضاء د انعقاد نه منع کړې وو. (۲)

د لعان لغوی او اصطلاحی تعریف: لعان د باب مفاعله مصدر دي، د لعنت نه مشتق دي. د لعنت معنی لریوالي او محرومتیا ده. په دې اعتبار سره د لعان لغوی معنی دا شوه چه ددوو یا زیاتو کسانو په خپل مینځ کښې په یو بل باندې لعنت کول. او په اصطلاح کښې د لعان تعریف داسې دي داسې څلور شهادتونه چه په قسم سره مؤکد وی. خاوند په خپل شهادت سره په خپل ځان باندې لعنت وئیلی وی او ښځې په خپل ځان باندې د الله تعالی د غضب دعا کړی دی، د سړی په حق کښې گواهیانې حد قذف دی او د ښځې په حق کښې حد د زنا. (۳)

کیږي داسې چه که چرې یو سړی په خپله ښځه باندې د زنا تهمت اولگوی یا د پیدا کیدونکی بچی د نسب انکار او کړی او ښځه د دغه تهمت نه انکار او کړی نو اول په سړی باندې لعان واجب دي او کله چه سړی لعان او کړی نو بیا په ښځه باندې هم لعان واجب دي. (۴)

(۱) بدائع الصنائع، کتاب القضاء، فصل: وأما آداب القضاء: ۱۳/۷. حاشیة ابن عابدین، کتاب القضاء: ۴۸/۸-۴۷، دارعالم الکتب، المدونة الكبرى، کتاب القضاء: ۱۴۴/۱۲. الذخيرة، کتاب القضاء، الباب الرابع فی آداب القضاء: ۵۸/۱۰. المنع، مع الشرح الكبير، مع الإنصاف، کتاب القضاء، باب: أدب القاضي، مسألة: ويستعين بالله ويتوكل عليه..... فصل: لا يكته القضاء في الجامع والمساجد.....: ۲۳۷/۲۸.

(۲) الحاوي في فقه الشافعي، کتاب القاضي، القول في حكم القضاء، القضاء في غير المسجد وكرهه القضاء فيه: ۳۰/۱۶. جواهر العقود، کتاب القضاء، أدب القاضي: ۳۵۷/۲.

(۳) هولفة: مصدر لاعن كقائل، من اللعن: وهو الطرد والإبعاد، سمي به لا بالغضب للعننه نفسه قبلها، والسبق من أسباب الترجيح. وشرعاً: (شهادات) أربعة كشهود الزنا (مؤكدات بالإيمان مقرونة بشهادة) باللعن وشهادتها بالغضب لأنهن يكثر اللعن، فكان الغضب أرفع لها (قائمة) شهاداته (مقام حد القذف في حقه و) شهاداتها (مقام حد الزنا في حقها) أي: إذا تلاعنا سفظ عنه حد القذف وعنها حد الزنا، لأن الاستشهاد بالله مهلك كالحمد بل أشد. (الدر المختار، کتاب الطلاق، باب: اللعان، ص: ۲۴۱).

(۴) د لعان پس منظر دادي: چه په اسلام کښې د انساني عزت او ناموس ډیر اهمیت دي. په دې وجه په شریعت کښې چه څومره د زنا سزا سخته کیږي شوي ده نو د بل یو جرم سزا دوامه سخته نه ده. دغه شان که په یو سړی باندې د بدني تهمت اولگولې شی نو دا د اسلام په نظر کښې یو لوئی جرم دي. اوددې سزا اتیا (۸۰) کورې پخپله قرآن مجید مقرر کړي ده. (سورة النور: ۵-۴). نوکه په یوه پاکدامنه ښځه یا سړی باندې د زنا تهمت اولگولې شی اود څلورو کسانو په گواهي سره دا ثابت نه کړي شی.....

د لعان طریقه: قاضی به د ټولو نه مخکېښې خاوند ته وائی چه څلور ځل داسې او وایه چه زه الله تعالی گواه جوړوم چه زه په فلانکې ښځه باندي د زنا دعوی کښې رښتونی یم او په پنځم ځل دې او وائی که چرې زه په دغه خپله دعوی کښې دروغژن یم نو په ما دې د الله تعالی لعنت وی.

دې نه پس به قاضی دغه شان په ښځه باندي څلور ځل داسې او وائی چه زه الله تعالی گواه جوړوم چه زما خاوند په ما باندي د زنا په الزام لگولو کښې دروغژن دې او په پنځم ځل به وائی چه که هغه په خپل الزام لگولو کښې رښتونی وی نو په ما دې د الله تعالی غضب وی. دا ټول تفصیل پخپله په قرآن پاک کښې موجود دې. او که چرې دواړه دغه شان لعان او کړې نو د دواړو په مینځ کښې به قاضی تقریق یعنی جدائی راولی. (۱)

قوله: "بین الرجال والنساء" علامه عینی رحمته الله فرمائی چه دا الفاظ زیاتی واقع شوی دی هم دغه وجه ده چه ددې الفاظو زیادت صرف د مستملی په روایت کښې دی د بیل چا په روایت کښې نشته. (۲)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله فرمائی چه شراح اعتراض کوی چه په دې ځانی کښې امام بخاری رحمته الله لغوه کلام کړې دې ځکه چه لعان خو هم دسړی او ښځې په مینځ کښې وی نه چه د سړی او سړی په مینځ کښې یا په ښځه او ښځه کښې. نو د "بین الرجال والنساء" څه مطلب دې؟ د حافظ ابن حجر رحمته الله سره د نورو حضراتو هم دغه رائي ده چه دا کلام لغوه دې او هم دغه وجه ده چه بین السطور "هذا حشو" لیکلې شوی دې او د مستملی نه علاوه بله یوه نسخه کښې هم دا نشته دې.

..... نو دغه الزام به دروغ گنرلې شی او هغه ته به اتیا (۸۰) کورې ورکولې شی. د قرآن دا حکم عام وو او په ظاهر ددې اطلاق په هغه سړو باندي هم کیدو څوک چه په خپله بی بی باندي داسې تهمت اولگوی. چنانچه حضرت هلال بن امیه رضی الله عنه خپله بی بی د شریک ابن سحماء سره متهم کړه. حضور پاک د عمومی قاعدې مطابق او فرمائیل چه گواه پیش کړه گنی بستا په شا باندي به حد جاری کیری. حضرت هلال رضی الله عنه عرض او کړو چه ښه ده مونږ کښې دې څوک سړې خپله بی بی په داسې حال کښې او گوری او بیا دې گواه لتوی؟ لیکن حضور پاک مسلسل د هغه نه د ثبوت اصرار کولو او فرمائیلې شی گنی حد به دریاندي جاری کیری. تردې چه پخپله په قرآن مجید کښې دا آیت د لعان نازل شو. (سورة النور: ۱۰-۶). بعضې روایاتو کښې د حضرت هلال بن امیه رضی الله عنه په ځانی د عویمر عجلائی ذکر دې.

چونکه د ښځې خاوند معامله د خصوصی نوعیت حامل ده او د ښځې گنده کیدل نیغ په نیغه د خاوند مفاد او د هغه عزت نفس مجروح کوي. بل د گواهانو نه مهیا کیدو د وجې که هغه چپ پاتې شی لیکن د دغه صورت حال نه خبریدو نه پس د یو شریف سړی او ښځې په مینځ کښې کورنې ژوند مضبوط او د خوشحالی تعلقات په ځانی پاتې کیدل ممکن نه وی. په دې وجه په دې معامله کښې دا خصوصی حکم ورکړې شو چه د خاوند او ښځې نه په دې مخصوصو الفاظو سره قسم واخستلی شی او به هغوی باندي دې د لعنت او غضب سره د خیر و الفاظ او وئیلی شی او بیا دې دا دواړه جدا کړې شی. ځکه چه داسې بی اعتمادی او بی اعتباری سره دارشته په ځانی ساتل به د دواړو دپاره د بی آرامی او اضطراب سبب وی.

(ردالمحتار مع الدر المختار، کتاب الطلاق، باب: اللعان: ۱۵۷/۵.)

(عمدة القاری: ۴/۲۴۱، فتح الباری: ۶۷۱/۱.)

قوله: "عندي: هذا صحيح" به دي توگه چه كوم د "بين" لفظ دي دا د لعان متعلق نه دي بلکه د قضاء متعلق دي او مطلب دا شوچه "باب: القضاء في المسجد بين الرجال والنساء" يعني به جمات كنبسي فيصله د سرو او بنخو په مينخ كنبسي، نو د دي نه د سرو او سرو يا د بنخو او بنخو په مينخ كنبسي به فيصله په طريق اولي ثابتيري ( )

حديث باب [حديث نمبر ٢١٣]

٢٢٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ (١) أَنَّ رَجُلًا قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرَأَيْتَ رَجُلًا وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلًا ابْتُلِغَهُ قَتْلًا عَنَّا فِي الْمَسْجِدِ وَأَنَا شَاهِدٌ.

د حديث ترجمه: د حضرت سهل بن سعد رضي الله عنه نه روايت دي چه يو سړي او وئيل يا رسول الله! تاسو او وايي چه يو سړي خپلي بنخې سره څوك سړي (بدگاري كولو سره) او ويني نو آيا هغه دي قتل كړي؟ بيا دغه دواړو (بنخې خاوند) په جمات كنبسي لعان او كړو په داسې حال كنبسي چه زه هلته موجود ووم.

تراجم رجال: د مذكوره حديث شريف په سند كنبسي ټول پنځه راويان دي:

① يحيى بن يعقوب: دا ابو زكريا يحيى بن موسى بلخي رضي الله عنه دي. د دوي احوال كشف الباري، كتاب الحيض، باب: ذلك المرأة إذا تطهرت من الحيض، كيف تغتسل، وتأخذ فرصة مسكة، فتتبع أثر الدم كنبسي تير شوي دي. ( )

② عبد الرزاق بن حازم: دا عبد الرزاق بن همام صنعاني رضي الله عنه دي. د دوي احوال كشف الباري، كتاب الإيمان باب: حسن إسلام المرء لاندې تير شوي دي. ( )

(١) هامش اللامع: ١٦٢/٨، الأبواب والتراجم: ٢١١/٢، سراج القاري: ٤٧١/٢.

(٢) أخرجه البخاري أيضاً في التفسير، سورة النور، باب: قوله عز وجل: ﴿وَالَّذِينَ يَزْمُونَ أَرْوَاحَهُمْ وَكُمِرُوا بِهِمْ هَذَا﴾ رقم الحديث: ٤٧٤٥. وباب: ﴿وَالْحَايِصَةُ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَيْهِنَّ إِنْ كَانَ مِنَ الْكُذِبِ بَيِّنَةٌ﴾ رقم الحديث: ٤٧٤٦. وفي الطلاق، باب: من جوز طلاق الثلاث، لقول الله تعالى: ﴿الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ فَإِن سَاءَتْ مَعْرُوفٌ أَوْ تَرْتِمٍ بِأَخَانٍ﴾ رقم الحديث: ٥٢٥٩. وباب اللعان ومن طلق بعد اللعان، رقم الحديث: ٥٣٠٩. وفي المحاربين، باب: من أظهر الفاحشة واللطخ والنهمة بغير بينة، رقم الحديث: ٦٨٥٤. وفي الأحكام، باب: من قضى ولا عن في المسجد، رقم الحديث: ٧١٦٥، ٧١٦٦. وفي الاعتصام، باب: ما يكره من التعمق والتنازع في العلم والفلو في الدين والبدع، رقم الحديث: ٧٣٠٤. ومسلم في صحيحه، في كتاب اللعان، رقم الحديث: ١٤٩٢، وأبو داود في سننه، في الطلاق، باب: في اللعان، رقم الحديث: ٢٤٥، ٢٢٤٦، ٢٢٤٧، ٢٢٤٨، ٢٢٤٩، ٢٢٥٠، ٢٢٥١، ٢٢٥٢. والنسائي في سننه، في الطلاق، باب: بدء اللعان، رقم الحديث: ٣٤٩٦. وفي جامع الأصول، حرف اللام، الكتاب الثالث: في اللعان ولحاق الولد، الفصل الأول: في اللعان وأحكامه، رقم الحديث: ٨٣٨١، ٧١٣/١٠.

(٣) كشف الباري، كتاب الحيض، باب: ذلك المرأة إذا تطهرت من الحيض، كيف تغتسل، وتأخذ فرصة مسكة، فتتبع أثر الدم، ص: ٣٧٤.

(٤) كشف الباري: ٤٢١/٢.

④ ابن جریر رضی اللہ عنہ: دا عبد الملك بن عبد العزيز بن جریج رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب الحيض باب: غسل الحائض رأس زوجها وترجيله لاندي تيرشوی دی. (۱)

⑤ ابن شهاب رضی اللہ عنہ: دا محمد بن مسلم ابن شهاب الزهري رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوحي، دريم حديث لاندي تيرشوی دی. (۲)

⑥ سهل بن سعد رضی اللہ عنہ: دا صحابی رسول حضرت سهل بن سعد بن مالك بن خالد خزرجی ساعدي رضی اللہ عنہ دی. ددوی حالات کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: غسل المرأة أباهما الدم عن وجهه لاندي تيرشوی دی. (۳)

د حديث شرح: قوله: "أن رجلاً دمحدثينو أو شارحينو په دي امر کنبی اختلاف دي چه دا رجل خوک وو؟ نو دي باره کنبی دري نومونه ذکرشوی دی. (۴) ① هلال بن امیه ② عاصم بن عدی ③ عويمر عجلانی. صحيح بخاری کنبی د عويمر عجلانی د سائل کيدو تصريح موجود ده. (۵)

قوله: "أرأيت رجلاً؟" رومبي همزه استفهاميه ده. مطلب دادی چه ای د الله رسول اماته او وایی که یو سرې چرته خپلې نسخې سره پردې سرې او وینی نو آیا هغه به قتلوی که نه؟ (۶)  
قوله: "فتلأعنا" د سائل په سوال او ددې جملې په مینخ کنبی ډیره زیاته خبره محذوف ده. کومه چه د نورو روایتونو سره رابنکاره کیږی. د کوم خلاصه داده چه سائل دا سوال او کړو

(۱) کشف الباری، کتاب الحيض باب: غسل الحائض رأس زوجها وترجيله، ص: ۲۰۴

(۲) کشف الباری: ۱/۳۲۶.

(۳) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: غسل المرأة أباهما الدم عن وجهه.

(۴) مصابيح الجامع شرح الجامع الصحيح للإمام البخاری: ۱۲۴/۲، عمدة القاری: ۲۴۲/۴. یوخلورم نوم حضرت سعد بن عباده رضی اللہ عنہ هم نقل دي. چه په حیثیت د سائل صحيح مسلم کنبی ذکر دي. ونی گورنی: حدیثی عبیدالله بن عمر القواریری، وأبوکامل فضیل بن حسین الجعدری، واللفظ لأبی کامل، قال: حدثنا أبو عوانة، عن عبد الملك بن عمير، عن ورا، كاتب المغيرة، عن المغيرة بن شعبه، قال: قال سعد بن عبادة: لورأيت رجلا مع امرأتی لضربته بالسيف غير مصفح عنه، فبلغ ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم. فقال: أتعجبون من غيرة سعد، فوالله لانا أغير منه، والله أغير مني، من أجل غيرة الله حرم الفواحش، ما ظهر منها، وما بطن، ولا شخص أغير من الله، ولا شخص أحب إليه العذر من الله، من أجل ذلك بعث الله المرسلين، مبشرين ومنذرين، ولا شخص أحب إليه المدحة من الله، من أجل ذلك وعد الله الجنة. (صحيح مسلم، كتاب اللعان، رقم الحديث: ۱۴۹۹).

(۵) صحيح البخاری، كتاب التفسير، سورة النور، باب: قوله عزوجل: ﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شَهَادَةٌ﴾ رقم الحديث: ۴۷۴۵، ويا ب: ﴿وَالْحَامِيَةُ أَنْ كَفَنَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ﴾ رقم الحديث: ۴۷۴۶، وكتاب الطلاق، باب: من جوز طلاق الثلاث: لقول الله تعالى: ﴿الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ سَوَاءً مَكَانًا يَعْرِفُونَ أَوْ تَعْرِفُونَ أَحْسَنُ﴾ رقم الحديث: ۵۲۵۹، ويا ب: اللعان ومن طلق بعد اللعان، رقم الحديث: ۵۳۰۹.

(۶) شرح الكرماني: ۸۲/۴، عمدة القاری: ۲۴۳/۴.

چه هغه لیدونکې سرې ایا خپله ښځه قتل کړې که څه او کړې؟ بیا الله تعالی د هغه په شان کښې د لعان دا حکم رانازل کړو. نو نبی کریم ﷺ ارشاد او فرمائیلو چه واخله ستا اوستا د ښځې باره کښې د الله تعالی د طرف نه فیصله راغلي ده. بیا په دواړو باندې په جمات کښې لعان او کړې شو. راوی وائی چه زه هم دغه وخت په جمات کښې موجود ووم. (۱)

د هدیث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت: په مذکوره حدیث شریف کښې ذکر شو چه حضور پاک د سرې او د ښځې د دواړو په مینځ جمات کښې لعان او کړو او په ترجمه الباب کښې هم دغه ذکر شوی دی. (۱)

### ۱۳- بَابُ: إِذَا دَخَلَ بَيْتًا يَصَلِّي حَيْثُ شَاءَ أَوْ حَيْثُ أَمْرًا وَلَا يَتَجَسَّسُ

د اباب په دې باره کښې دې چه کله د چا کورته لارښې نو چه په کوم ځای کښې غواړې مونځ دې او کړې، یا (د مالک مکان د طرف نه، چه هغه ته په کوم ځای کښې د مونځ کولو د پاره او وئیلې شی، هم هلته دې او کړې او تجسس دې نه کوی)

د ترجمه الباب مقصد: ترجمه الباب کښې د کلمه او په ذریعه دوه خبرې ذکر دی: ① د چا کورته تلونکې که هلته مونځ کول غواړې نو هغه ته اختیار دې چه بغیر تپوس نه چرته چه غواړې مونځ دې او کړې. او که غواړې نو د کور والا نه دې معلومه کړې چه د مونځ ادا کولو ځای کوم یو دې. بیا دې هلته مونځ ادا کړې. البته ډیر تجسس او اخوا دینخوا کتل وغیره دې نه کوی. ② دویم دا چه په ترجمه الباب کښې سوال کولې شی چه د چا کورته تلونکې که هلته مونځ ادا کول غواړې نو څه به کوی؟ هلته په خپله مرضی چه هر چرته وی مونځ دې ادا کړې یا د کور والا نه دې د مونځ د ځای معلومات کولو سره مونځ ادا کړې؟ نو د دې سوال جواب د حدیث باب نه ملا ویرې چه هغه دې د کور د خلقو نه تپوس او کړې هغوی چه چرته د مونځ کولو او وائی هم هلته دې مونځ ادا کړې. او په دې صورت کښې هم د تجسس نه ځان ساتل پکار دی. (۲)

(۱) غنډه القاری: ۲۴۳/۴.

(۲) ایضاح البخاری: ۲۰۸/۳.

حضرت مولانا محمد انور شاه کشمیری رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه د بخاری شریف شارحینو دواړه صورتونه د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ مقصد خودلې دې چه کوم غواړې اختیار دې کړې. مگر زه گنرم چه د ترجمې مقصد حسب امر صاحب الدار خودې مگر بیا دا خیال کولو سره چه د شارح رحمۃ اللہ علیہ حکم هم په دې باندې منحصر اونه گنرلې شی، دویم صورت ئی هم ذکر کړو. احقر عرض کوی چه کیدې شی هم د دې د پاره تجسس منع کړې شو ځکه چه چرته غواړې مونځ کولو کښې دا هم کیدې شی چه هغه ئی په داسې ځای کښې کول غواړې چرته چه د کور والا خوښه نه وی. یا د پردې او ستر خلاف وی یا په هغه ځای کښې داسې کورنې سامان وی کوم چه هغه ته خودل نه غواړې وغیره. او دا خبره ده که چرته د کور مالک عام اجازت ورکړې چه چرته غواړې مونځ دې او کړې بیا څه باک نشته. دا څو عام خبره شوه لیکن که یو سرې څوک ولی یا بزرگ راؤغواړې د خپل کور څه حصه بابرکته جوړولو د پاره یا د مونځ د پاره یو ځای مقرر کول غواړې نو بهتر هم دغه ده چه هغه بزرگ ځای معلوم کړې لکه چه حضور پاک معلوم کړو. والله اعلم. په دې حدیث سره د صالحینو په آثارو سره د برکت حاصلولو ثبوت معلوم شو او سلفی حضرات.....

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ لیکي چه دعاء شراحو را ئي داده چه د ترجمي دوه جزه دي. يو "يصلی حیث شاء" او دویم "حیث أمر" اوس اختلاف په "لایتجسس" کنبي پیدا کيږي چه د څه متعلق دي؟ د اول جزه د دویم سره. د شارحینو را ئي داده چه د دویم جزه سره متعلق دي او مطلب دادې چه چرته حکم ورکړې شي هم هلته دي مونځ او کړي. تجسس دي نه کوي او اخوا ديخوا دي نه گوري. اود حضرت شاه ولي الله محدث دهلوی رحمۃ اللہ علیہ را ئي داده چه د دواړو سره متعلق کيږي شي.

اوس دلته دا واؤر ئي چه دلته د روايت نه صرف "حیث أمر" کيږي شي ځکه چه حضور پاک تپوس کړې وو چه چرته مونځ او کړم؟ په دي باندې حضرت عتبَان رضي الله عنه او وئيل چه فلانکي ځائي کنبي، دا حیث أمر شو. اود حیث شاء په روايت کنبي چرته ذکر نشته. حضرت شاه ولي

..... کوم چه دا کارونه بي حیثیت گرځوي په هغې رد اوشو. جریمین شریفین کنبي دهغه تبرکاتو نښې تردې چه د نبي کریم د پیدا کیدو ځائي اود حضرت خدیجه رضي الله عنها کور ئي معطل او بي نښې کړې دي اودې ته د خالص توحید نوم ورکولې شي. یعنی د هغه يو څوک کسانو نه علاوه د ټولې دنیا د کورونو عام مسلمانان او علماؤ ټول د توحید په مقابله کنبي ناخالص دي. مگر ولي هم دغه حدیث د بخاری شریف د دي خبرې کامل ثبوت نه دي چه د حضور پاک چرته په يو ځائي باندې صرف نفل مونځ کولو سره به صحابه کرامو هغه ځائي څومره د برکت گنرلو. ایا دا څوک وئيلې شي چه هغه ځائي حضرت عتبَان بن مالک رضي الله عنه د بت پرستو په شان د عبادت ځائي جوړ کړې وو؟ بیا څه وجه ده چه په کوم کور مبارک کنبي د حضور پاک پیدائش شوې دي په کالونو حضور پاک په هغې کنبي عبادت کړې دي، شپې ورځې ئي تیرې کړې دي. اود حضرت خدیجه رضي الله عنها په کور کنبي به څو ځل د الله تعالی د طرف نه وحی نازل شوې وی او په هغې کنبي حضور پاک په سوونو نوافل بلکه فرائض هم ادا کړې وی. بیا دا چه د دیارلسو سوو کالو پورې د هر دور حجاج او زائرینو د دغه مبارکو مقاماتو زیات کولو اود حضرت عتبَان رضي الله عنه په شان هلته ئي د برکت د حاصلولو د پاره نفل مونځونه هم کول. څوارلسمه صدی راتلو سره دغه مقدس مقامات صرف يو د وهم خطر ه جوړولو په وجه چه خلق به هلته شرک کوي دهغې نښې ئي هم ختمې کړې یا ئي هغه بندې کړې ایا هلته هم د نورو جماعتونو اومدیني طیبې په شان د سپاهیانو څو کڼ کيږلو سره صرف دمزعوم شرک بندول نه شو کيږي. د نورو صحابه کرامو دیر واقعاتو نه استبراک ثابت دي نو ایا د هغوی نه زیات دا خلق د څه خالص توحید منونکي دي؟ زما دعا جز ئي درخواست د موجوده د نجلد علماؤ او امراؤ ته دي چه هغوی دي د تلافی مافات طرف ته دیر زر توجه او کړي. علامه ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ د زاد المعاد هم په شروع کنبي د حضرت اسماء بنت ابی بکر رضي الله عنها حدیث دمسلم شریف نه نقل کړې دي چه هغې جبه مبارکه راويستله او وئې فرمائیل چه دا د حضرت عائشه صدیقه رضي الله عنها سره تراخړه پورې وه د هغې د وفات نه پس ماله راغله. چونکه نبي کریم صلی الله علیه و آله به دا اچوله په دي وجه مونږ دا وينځو او بیمارانو له هغه اوبه ورکوو او هغوی ته شفا ملاوېږي. او حضرت ابو ایوب انصاری رضي الله عنه خاسره چه حضور پاک په مدینه منوره کنبي تر اوه میاشتو پورې میلمه اوسیدلو، د حضرت ابو ایوب رضي الله عنه او بی بی ئي دا معمول وو چه دواړه وخته به ئي حضور پاک له خوراک راؤړو او څه چه به حضور پاک ته پاتې شو هغه به ئي خوړلو. څوک نجدي مزاج داسې وئيلې شي چه داسې خو ټول کوي مگر اوس نور اوگورئې چه حضرت ابو ایوب رضي الله عنه به د برکت حاصلولو دپاره هم هلته گوتې لگولې چرته چه به ئي د حضور پاک د گوتو نښې لیدلې. (زرقانی، وفا الوفاء، حاکم، أصابه، افسوس دي چه زمونږ نجدی روڼه اودهغوی په شان خیال لرونکي داسې خبرې مهمل گنري. انوار الباری: ۴۸/۱۴).

اللہ ﷺ فرمائی کہ د امام بخاری ﷺ د اصولو نہ دادی چه د روایت دویم طریق طرف ته اشاره فرمائی نو دلته امام بخاری ﷺ یو بل طریق طرف ته اشاره او کره په کوم کبسي چه تخيير موجود دې. او دویم قول دادې چه دلته "هل" مقدر دې او مطلب دادې چه "إذا دخل بیتا هل یصلی حیث شاء" او د روایت نه د دې جواب معلوم شو "أی: یصلی حیث أمر" او بعضی حضرات فرمائی چه د امام بخاری ﷺ مقصد دادې چه مسئله محل د غور او فکر ده ځکه چه د روایت د لفظ نه امر ثابتیږي او راغونښتل دلیل دې د دې خبرې چه اختیار دې چرته چه غواړې مونځ دې او کړی. (۱)

د چاکورته د تلو ادب: ولایتجسس - د دې لفظ نه معلومیږي چه یو سرې د چاکور ته لارشی نو د هغه د پاره مناسب او بهتر هم دغه ده چه هغه د تجسس او تفتیش په نظر سره کور کبسي اخواد یخوانه گوري راگوري بلکه خپل کار سره دې کار لری او د هغه ځائی نه دې واپس راشی. (۲)

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۱۴]

۳۳۳ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شَهَابٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عَتَبَانَ بْنِ مَالِكٍ (۳) أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَتَاهُ فِي مَنْزِلِهِ فَقَالَ «أَبْنُ تُحَيْبٍ أَنْ أَصَلَى لَكَ مِنْ بَيْتِكَ». قَالَ فَأَثَرْتُ لَهُ إِلَى مَكَانٍ، فَكَثَّرَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَصَفَّقْنَا خَلْفَهُ، فَصَلَّى رُكْعَتَيْنِ.

د حدیث ترجمه: د حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه روایت دې چه رسول الله ﷺ د هغه کور ته تشریف راوړو او وئی فرمائیل ته په خپل کور کبسي چرته خوښوې چه زه هغه ځائی کبسي

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۵۶/۲.

(۲) فیض الباری: ۵۵/۲.

(۳) أخرجه البخاری أيضاً فی المساجد، باب: المساجد فی البيوت، رقم الحديث: ۴۲۵. وفي الجماعة، باب: الرخصة والمطر والعلّة أن یصلی فی رحله، رقم الحديث: ۶۶۷. وباب: إذا زار الإمام قومًا فأهمهم، رقم الحديث: ۶۸۶. وفي صفة الصلاة، باب: یسلم حين یسلم الإمام، رقم الحديث: ۸۳۸. وباب: من لم یرد السلام علی الإمام، واكتفى بتسليم الصلاة، رقم الحديث: ۸۴۰. وفي التطوع، باب: صلاة النوافل جماعة، رقم الحديث: ۱۱۸۶. وفي المغازی، باب: شهود الملائكة بدرًا، رقم الحديث: ۴۰۰۹، ۴۰۱۰. وفي الأطعمة، باب: الخزيرة، رقم الحديث: ۵۴۰۱. وفي الرقاق، باب: العمل الذي یتغنی به وجه الله، رقم الحديث: ۶۴۲۳. وفي استتابة المرتدین، باب: ماجاء فی المتأولین، رقم الحديث: ۶۹۳۸. ومسلم فی صحیحه، فی الإیمان، باب: الدلیل علی أن من مات علی التوحید، رقم الحديث: ۳۳. وفي المساجد، باب: الرخصة فی التخلف، رقم الحديث: ۲۶۳. والنسائی فی سننه، فی الإمامة، باب: إمامة الأعمی، رقم الحديث: ۷۸۹. وباب: الجماعة للنافلة، رقم الحديث: ۸۴۵. وفي السهو، باب: تسليم المأمون حين یسلم الإمام، رقم الحديث: ۱۳۲۸. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: فی الصلاة، القسم الأول: فی الفرائض وأحكامها، الباب الأول: فی الصلاة وأحكامها، الفصل السادس: فی شرائط الصلاة، الفرع الرابع: فی أمكنة الصلاة، النوع الرابع: فی أحاديث متفرقة، رقم الحديث: ۳۶۸۶، ۴۸۴/۵.

مونخ او کرم؟ د هغه وینا ده چه ما د یو خانی طرف ته اشاره او کړه نو نبی کریم ﷺ تکبیر او و نیلو او مونږ حضور پاک پسي شاته صف جوړ کړو نو حضور پاک مونږ ته دوه رکعت ه مونخ را کړو.

تو اجم رجال: د مذکور ه حدیث شریف ټول رجال پنځه دی:

① عبدالله بن مسلمه: دا عبد الله بن مسلمه بن قعنب حارثی بصری رضی الله عنه دی. د دوی احوال

کشف الباری، کتاب الإیمان، باب من الدین الفرار من الفتن لاندې تیر شوی دی. (۱)

② ابراهیم بن سعد: دا ابو اسحاق ابراهیم بن سعد بن ابراهیم قرشی مدنی رضی الله عنه دی. د

دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: تفاضل اهل الإیمان فی الأعمال او تفصیلی احوال

کتاب العلم، باب: ما ذکر موسی علیه السلام فی البحر الی الخضرا لاندې تیر شوی دی. (۲)

③ ابن شهاب: دا محمد بن مسلم بن عبید الله بن عبد الله بن شهاب الزهري رضی الله عنه دی. د

دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوحی، دریم حدیث لاندې تیر شوی دی. (۳)

④ محمود بن الربیع: دا محمود بن الربیع بن سراقه خزرجی انصاری رضی الله عنه دی. د دوی احوال

کشف الباری، کتاب، باب: متى یصح سماع الصغیر لاندې تیر شوی دی. (۴)

⑤ حضرت عتبان بن مالک: د دوی پوره نوم عتبان بن عمرو بن عجلان بن زید دی.

دوی انصاری دی. د دوی مور بی بی د قبیله مزینه نه وه. د دوی واده د لیلی بنت رتاب ابن

حنیف بن رتاب بن امیه سره شوي. د چانه چه ئی یو خوئی عبدالرحمن پیدا شو. قبا سره

نیز دې (یعنی مدینې نه دوه درې میله فاصله باندي) د دوی کور وو. د خپلې قبیلې سردار

اود دوی امام وو.

د دوی د جمات او کور په مینځ کښې یوه وادی وه. کله چه به باران کیدو نو په هغې کښې به

اوبه جمع کیدې. د نظر د کمزورئ د وجې نه په دغه اوبو کښې تیریدل او جمات ته تلل به

ئې ډیر سخت محسوسول. نو هغوی د حضور پاک نه اجازت او غوښتو چه ماته په جمع کښې

د شرکت په خانی هم په کور کښې د مونخ کولو اجازت را کړه. حضور پاک تپوس او کړو چه ته

د اذان آواز اورې عرض ئی او کړو چه اوجی، نو حضور پاک دوی ته اجازت ورنه کړو.

د عبدالواحد بن ابی عون رضی الله عنه نه روایت دې چه رسول الله ﷺ د هغوی او حضرت عمر بن

خطاب رضی الله عنه په مینځ کښې روړولی قائمه کړې وه. هغوی په غزوه بدر، غزوه احد او غزوه

خندق کښې شرکت کړې دې. باقی غزواتو کښې ئی د نابینا کیدو د وجې نه شرکت اونه

کړې شو.

(۱) کشف الباری: ۸۰/۲

(۲) کشف الباری: ۳۳۳/۳

(۳) کشف الباری: ۱/۳۲۶

(۴) کشف الباری: ۳۹۳/۳



د جمهورو په نیز د بدری صحابه گرامونه وو. لیکن ابن اسحاق رضی الله عنه د بدر په شریکاو کښې د دوی ذکر نه دې کړې. هم په دې زمانه کښې د دوی نظر لارو نو دوی نبی کریم صلی الله علیه و آله ته درخواست او کړو چه تاسو زما کورته تشریف راوړئ او زما په کور کښې چرته یو ځانی کښې مونځ ادا کړئ دې د پاره چه زه هغه ځانی د ځان د پاره د مونځ ځانی جوړ کړم. نو حضور پاک هم داسی او کړه.

د محمد بن عمر رضی الله عنه بیان دې چه تر تنه پورې خلق مدینه کښې د دوی په کور کښې د برکت د حاصلولو د پاره هغه ځانی کښې مونځ کوی. دوی د حضرت معاویه بن ابی سفیان رضی الله عنه د خلافت په دوران کښې تقریباً ۵۲م کښې وفات شوی دوی وخت کښې د دوی څه اولاد هم موجود نه وو. (١)

د هدیث شرح:

قوله: عَنْ عَتَبَانَ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَاهُ فِي مَنْزِلِهِ: د حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه نه روایت دې چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د هغوی کورته تشریف راوړو.

نبی کریم صلی الله علیه و آله پخپله راغلو؟ یا حضور پاک راغونښتې شوي وو؟ د دې روایت نه معلومیږي چه نبی کریم صلی الله علیه و آله پخپله تشریف راوړې وو. خو په حقیقت کښې په دې روایت کښې ډیر اختصار دې. په تفصیلی روایت کښې دا خبره ملاویری چه حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه د جمعې په ورځ د نبی کریم صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئی او کړو چه ای د الله رسوله! زه غواړم چه تاسو زما کورته تشریف راوړئ. نو حضور پاک د هفتې په ورځ د دوی کورته تشریف یووړ. او حضور پاک سره حضرت ابوبکر او حضرت عمر رضی الله عنهما هم وو. (٢) بعضې روایاتو کښې دې چه هغه پخپله هم نه دې راغلي بلکه هغه د حضور پاک په خدمت کښې یو سرې پیغام ورکولو سره لیرلې وو. ابن حبان رضی الله عنه په خپل صحیح کښې دا روایت نقل کړې دې. (٣)

(١) أسد الغابة: رقم الترجمة: ٢٥٣٥. معرفة الصحابة: رقم الترجمة: ٢٣٣٣، ص: ٢٢٢٥. الطبقات الكبرى لابن سعد: رقم الترجمة: ٥٠٩/٣، ٢٦٠.

(٢) عن محمود بن الربيع الأنصاري أخبرني عتبان بن مالك: أنه كان إمام قومه وقد شهد بدرًا، فقال للنبي صلى الله عليه وسلم أنه لما ساء بصرى شقت على إجازة الوادي إذا سال بينى وبين مسجد قومي، فقال للنبي صلى الله عليه وسلم يوم الجمعة: رأيتني يارسول الله! لو أتيتني، فصليت في مكان من بيتي، أتخذه مصلي؟ فقال له: سأفعل. فندالني صلى الله عليه وسلم يوم السبت ومعه أبوبكر وعمر رضي الله عنهما، فدخل، فما جلس حتى قال: أين تحب أن أصلي في بيتك؟ فأشرت إلى الناحية التي أردت، فصلى فيها ضحى، وحسنه على خزيمة يصنع له. (المعجم الكبير للطبراني، عتبان بن مالك، رقم الحديث: ١٤٧٦١، ٣١/١٨).

(٣) عن أبي هريرة رضي الله عنه أن رجلا من الأنصار عمى، فبعث إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم أن تعال، فاخطط في داري مسجداً أتخذه مصلي، فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم واجتمع إليه قومه، وبقي رجل منهم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "أين فلان؟"، فغزاه بعض القوم: إنه وإنه، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "ليس قد شهد بدرًا؟"، قالوا بلى يارسول الله! ولكنه كذا وكذا، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "....."

قوله: فَقَالَ: «أَبِنَ مُحَمَّدٍ أَنْ أَصِلَ لَكَ مِنْ بَيْتِكَ؟» او ونی فرمائیل چه ته په خپل کور کښې چرته خوبوې چه زه هغه ځانی کښې مونځ ادا کړم؟

د مستملی په روایت کښې صرف د "أَنْ يَصِلَ لَكَ" الفاظ دی. د "مِنْ بَيْتِكَ" الفاظ په کښې نشته

دی. او د کشمیهنی په روایت کښې د "مِنْ بَيْتِكَ" په ځانی د "بَيْتِكَ" الفاظ دی. (۱)

علامه عینی رحمته الله علیه دې ځانی کښې یو سوال او د هغې جواب نقل کړې دی چه مونځ خود الله تعالی د پاره ادا کړې بیا دلته د حضور پاک دا فرمائیل چه زه ستا د پاره مونځ او کړم دابه څنگه صحیح وی؟ نو د دې جواب دا ورکړې شوې دی چه نفس مونځ خود الله تعالی د پاره دې او ادا کول هغه ځانی کښې وو کوم چه د مانځه د پاره خاص کول وو. لکه چه حضور پاک دا او فرمائیل چه کوم ځانی ته د مونځ د ادا کولو د پاره مخصوص کول غواړې هغه اوبسایه چه زه په هغه ځانی کښې مونځ او کړم. (۲)

قوله: قَالَ: فَأَثَرْتُ لَهُ إِلَى مَكَانٍ، فَكَبَّرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَصَفَّقْنَا خَلْفَهُ، فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ. د هغه وینا ده چه ما د یو ځانی طرف ته اشاره او کړه نو نبی کریم صلی الله علیه و آله تکبیر او و نیلو، او مونځ د حضور پاک شاته صف جوړ کړو، نو حضور پاک مونځ ته دود رکعتونه مونځ را کړو.

په دې عبارت کښې د بعضې روایاتو مطابق د "صَفَّقْنَا" لفظ دې د "وصَفَّقْنَا" په ځانی او

بعضې نسخو کښې د "صَفَّقْنَا" په ځانی د "صَفَّقْنَا" لفظ دې. په اول صورت کښې به مطلب دا وی چه مونځ صف جوړ کړو او دویم صورت کښې به مطلب دا وی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د خپل خان شاته زموږ صف جوړ کړو. (۳)

د نوافلو د جمع حکم: د مذکوره حدیث شریف نه دا خبره مخې ته راځی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د نقل مونځ جمع او کړه. نو پوهیدل پکار دی چه دا د نبی کریم صلی الله علیه و آله د همیشه معمول نه وو او نه دیره لونی جمع وه، او نه د دغه جمع د پاره څه باقاعده دعوت ورکړې شوې وو. بلکه دلته خو حضرت عتبان رضی الله عنه صرف حضور پاک ته درخواست کړې وو چه حضور پاک تشریف راوړی او زما په کور کښې مونځ او کړی چه ماته په دغه ځانی کښې برکت حاصل شی او بیا زه هم هغه ځانی کښې مونځ کوم. هغه خور اتلوسره پخپله نبی کریم صلی الله علیه و آله خان سره سیدنا صدیق اکبر او فاروق اعظم رضی الله عنهما راوستل او په کور کښې شی مونځ ادا کړو نو دا ټول بغیر د څه دعوت نه او شو. دې نوعیت لره مخې ته ساتلوسره ائمه کرام په دې مسئله کښې مختلف شو. د احنافو مسلک: د احنافو په نیز که چرې د نوافلو د فرائضو په شان اهتمام او کړې شی او د اذان او د اقامت یا په بل څه طریقه خلق راوغوښتې شی نو جمع کول مکروه تحریمی دی.

..... لعل الله اطلع على أهل بدر، فقال: اعملوا ما شئتم فقد غفرت لكم. (صحيح ابن حبان، كتاب الجهاد، باب

الخروج وكيفية الجهاد، رقم الحديث: ٤٧٩٨، ١١/١٢٣).

( فتح الباری: ١/٦٧٢، عمدة القاری: ٤/٢٤٥.

( عمدة القاری: ٤/٢٤٥.

( عمدة القاری: ٤/٢٤٥.

که چرته کله کله اذان او اقامت یا د تداعی (رابللو) نه بغير د امام نه علاوه یو، دوه یا دري کسان د جمات په یوگوت کښې نفل مونځ په جمع سره او کړی نو څه حرج نشته. او که چرته د امام نه علاوه څلور کسان د هغه سره په جمع کښې شریک وی نو په دې کښې اختلاف دې. د صحیح قول مطابق دامکروه تحریمی دی. او په دې باره کښې د رمضان او غیر رمضان څه تفریق هم نشته دې. (۱) زمونږ د استاذانو نه د حضرت مولانا سید حسین احمد مدنی رحمته الله علیه ذاتی خیال او رائي په رمضان کښې د نوافلو په جمع سره د کولو د جواز وه لیکن دا د حضرت اقدس ذاتی رائي وه د جمهورو احنافو نه د دې په خلاف قول نقل دی. والله تعالی اعلم بالصواب. (۲)

(۱) أن التطوع بالجماعة إذا كان على سبيل التداعى يكره في الأصل للصدر الشهيد. أما إذا صلوا بجماعة بغير أذان وإقامة في ناحية المسجد لا يكره. وقال شمس الأئمة الحلواني: إن كان سوى الإمام ثلاثة لا يكره بالاتفاق. وفي الأربع اختلف المشايخ، والأصح أنه يكره ١٠٠. كذا في شرح المنية. وقال ابن عابدين في منحة الخالق تحت قوله: أما إذا صلوا بجماعة إلخ لا محل لهذه الجملة هنا، وإنما محلها فيما بعد عند ذكر حكم تكرارها. (البحر الرائق، كتاب الصلاة، باب: الإمامة: ١/٦٠٤، ٦٠٦ دار الكتب العلمية). أن الجماعة في التطوع ليست بسنة إلا في قيام رمضان، وفي الفرض واجبة أو سنة مؤكدة، ..... لأن الجماعة من شعائر الإسلام، وذلك مختص بالفرائض أو الواجبات دون التطوعات. (البدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل: فيما يفارق التطوع الفرض: ٣٠١/٢). وكذا في الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب الخامس في الإمامة، الفصل الأول في الجماعة: ١/٨٣.

(۲) حضرت مولانا مفتی محمد تقی عثمانی رحمته الله علیه په خپله یوه مقاله کښې د حضرت اقدس مولانا سید حسین احمد مدنی قدس سره په دې مسئله کښې دلائل د هغې جوابونه او د جمهور فقهاء احناف مسلک په ډیر تفصیل سره ډیر په مدلل انداز کښې لیکلي دي. کوم چه فقهي مقالات، دویم جلد او فتاوی عثمانی اول جلد کښې موجود دي. د دې طرف ته مراجعت به فائده مند وي. د مذکورہ مسئلې باره کښې د انوار الباری څلورم جلد کښې هم ډیر تفصیلی بحث موجود دي کوم چه د کتلو قابل دي. په دې کښې په دغه باره کښې د اکابر علماء دیوبند چه کوم معمول نقل کړې شوې دي د عام فائدي په خاطر صرف هغه ذکر کولې شي.

په دې سلسله کښې د اکابر علماء دیوبند نه د حضرت مولانا رشید احمد گنگوہی رحمته الله علیه چه په دغه ډله کښې د حدیث او فقهي دواړو مسلم امام وو ارشاد دي: د نوافلو جمع بغير د هغه موقعو نه کوم چه د حدیث نه ثابت دی که چرې تداعی سره وی نو په فقه کښې مکروه تحریمی دی او د تداعی نه مراد د څلورو مقتدیانو موجودیدل دی، لهذا صلوة کسوف، تراویح او استسقاء صحیح دی. باقی ټول مکروه دي. (کذا فی کتب الفقه، فتاوی رشیدیہ، ص: ١٢٨/١).

بل ځائی کښې ئی فرمائیلي دي: د نوافلو جمع که تهجدوی او که غیر تهجد، سوا د تراویح، کسوف او استسقاء نه که چرته څلور مقتدیان وی نود احنافو په نیز مکروه تحریمی ده. برابره خبره ده که پخپله راجمع شوی وی او که د جا په راغونښتو سره راغلي وی او د دريو په صورت کښې اختلاف دې. البته په دوو کښې کراهت نشته. (کذا فی کتاب الفقه، ص: ٦٦/٢).

د حضرت شیخ الهند مولانا محمود الحسن صاحب رحمته الله علیه په رمضان کښې د احياء لیالی او د قرآن مجید اوریدو ډیر شوق وو په دې وجه ئی اول دا معمول وو چه بغير د تداعی به ئی په تهجد کښې قرآن مجید اوریدو، خاص میلمنو به شرکت کولو چه د دوه یا د څلورو نه به زیات نه وو. د مکان د بهر دروازه به ئی بندوله. حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب دیوبندی، صدر مفتی دارالعلوم دیوبند دام ظلهم رحمته الله علیهم لیکلي دي: چه زما په نیز په زیر بحث کښې فتوی هم دغه ده چه د تراویح نه علاوه په .....

..... رمضان کنسی بل خه د نفل مونخ په جمع صحیح نه دي جمهور محدثین او فقهاء هم په دي باندي دي او هم په دي باندي د اکابر علماء دیوبند عمل دي سیدی و سندی حضرت شیخ الہند قدس سره د چا معمول چه په پوره رمضان کنسی د شپي د بيدارنی او په نفلونو کنسی د قران د اوریدو وو. کله چه خلقو په دغه جمع کنسی د شریکیدو خواهش نیکاره کړو نو د دي اجازت نی ورنه کړو. د کور دروازه نی بنده کړه. د حافظ کفایت اللہ صاحب په اقتداء، کنسی به نی قران مجید اوریدو او په کور کنسی به جمع کیده په کومه کنسی به چه ۴۰/۵۰ کسان شریکیدل. دا احقربخبله هم د حضرت رحمۃ اللہ علیہ د مالیتا د قید کیدو نه مخکنی دوه کاله هم په دغه جمع کنسی شریک شوي نه دي. کوم چه د تراویح جمع وه. د نفل او تهجد جمع حضرت رحمۃ اللہ علیہ کله هم نه ده برداشت کړي. د حضرت مدنی او چت شان او علمی مقام په خپل ځانی دي لیکن چه کله جمهور احنافو د محقق ابن ہمام رحمۃ اللہ علیہ تفردات د عمل قابل اونه گنرلو، او د حضرت شاه ولی اللہ رحمۃ اللہ علیہ او مولانا اسماعیل شہید رحمۃ اللہ علیہ تفردات نی معمول جوړنه کړل نو د روستو راتلونکو علماؤ معامله اھون ده. والله سبحانه وتعالی اعلم. بنده محمد شفیع عفا اللہ عنہ (دارالعلوم کراچی ۱/۴ شوال ۱۳۷۸ھ).

دغه پورتنی چھاپ شوي عبارت فتوی متعلقه جماعت تهجد و رمضان نه نقل کړي شوي دي. کوم چه اداره المعارف لسیله چوک کراچی نه چھاپ شوي دي. په دي کنسی د مفتی محمد سھول صاحب سابق صدر مفتی دارالعلوم دیوبند فتوی هم د کراھت متعلق د تهجد په جمع درج ده. په کوم کنسی چه تفصیلی دلا نلر پیش کړي شوي دي:

حکیم الامت حضرت علامہ تھانوی رحمۃ اللہ علیہ چه په حدیث او فقه کنسی د یو سمندر په شان عالم وو امداد الفتاوی جلد اول کنسی د نوافلو جمع علاوه د تراویح نه مکروه گرځولي ده. مگر دا چه صرف دوه مقتدیان وی او په دریو کنسی نی اختلاف لیکلي دي. بله دا چه دویم ځانی کنسی نی د شینہ رمضان په سلسله کنسی لیکلي دي که چرې دا د تراویح نه پس په نوافلو کنسی وی نو په وجه د ډیري جمع مکروه ده. مولانا خلیل احمد صاحب سھارن پوری مهاجر مدنی قدس سره حافظ وو او په تهجد کنسی به نی د قران مجید تلاوت کولو او دوه حافظانو مقتدیانو به اوریدو. د مولانا اسد اللہ صاحب مدظلہ بیان دي چه یوه شپه زه هم مقتدی جوړ شوم نو حضرت د مونخ نه پس زما غوی اونیولو او جدا نی کړم.

د حضرت شاه صاحب رحمۃ اللہ علیہ د علم او تبحر به څه وایی، په درس د بخاری شریف کنسی باب: طول السجود فی قیام اللیل باندي نی عجیبه تحقیق کړي دي چه دلته د ذکر قابل دي. وئی فرمائیل چه دلته په حدیث کنسی د حضور پاک د اوریدو سجدو اندازه خودلی شوي ده. لکه څومره وخت کنسی چه څوک ۵۰ آیاتونه اورانی په دي وجه حضور پاک خپل صحابه کرام ت د خپل ځان سره د تهجد په مونخ کنسی د اقتداء کولو نه منع کړی وو ځکه چه په دي کنسی د فرض مونخونو په شان د ضعیفانو او مریضانو رعایت نه شو کولې. بیانی او فرمائیل چه دي نه دا هم معلوم شو چه د تهجد مونخ ځان له بغیر د جمع کولو څیز دي او هم د دي طرف ته په قران مجید کنسی اشاره موجود ده. اللہ تعالی دي ته (ثَابِلَةُ لَكَ) فرمائیلو سره د پنځو فرض مونخونو نه جدا کړلو کوم نی چه: (اَلَيْهِ الصَّلَاةُ لِدُنُوکَ الشَّمْسِ اِلَى غَسَقِ الْاَیْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ) سره بیان کړي وو. د دي پنځو مونخونو د پاره نی د اقامت حکم او فرمائیلو د کوم منشاء چه دا ده چه په اوچت آواز سره په جساتونو کنسی په اذان او اقامت سره ادا کړي شی. بیانی د تهجد ذکر او فرمائیلو نو (وَمِنَ الْاَیْلِ قَتَّجْدُ بِه ثَابِلَةُ لَكَ) کنسی نی دا په (ثَابِلَةُ) سره تعبیر کړه ځکه چه په دي کنسی د جمع شرکت نشته دي. او په پنځو فرض مونخونو کنسی نور ټول هغوی سره شریک دي لکه څنگه چه به په مال غنیمت کنسی حصی ملاویدی او نفل (په خاص توگه عطیه کنسی) د ټولو څه حق نه وو. دغه شان د تهجد مونخ د حضور پاک د پاره نافله دي لهذا نور خلق به حضور پاک سره په مونخ کنسی داخل نه وی. نو دا د حضور پاک یو جدا حالت او د حضور پاک ځان له وظیفه ده. په حقیقت کنسی هم په دي امورو باندي نظر ساتلو سره زمونږ امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ دا فیصله او کړه چه د شپي په نوافلو کنسی تداعی مکروه ده او زما په نیز د تداعی نه مراد هم هغه معنی ده کومه چه په عام عرف کنسی گنرلي شی چه خلق د دي د پاره راوغوښتي شی. ....

د تداعی نه مراد: تداعی یو فقهی اصطلاح ده د کوم لغوی مطلب دا دې چه: بعضی کسان بعضی نورو ته د یو کار دعوت ورکړی او د هغې د پاره ئی راوغواړی. (١) او په اصطلاح کښې د دې اطلاق په هغه جمع باندې کيږي په کومه کښې چه د امام نه علاوه څلور کسان شریک وی یا د څلورو نه زیات. او که چرې د څلورو نه کم وی نو بیا تداعی نه ده. (٢)

واضحه دې وی چه دا خبره د فقهې په کتابونو کښې ذکر خو ده لیکن په کتاب او سنت کښې د دې په تحدید باندې څه اصل نه ملاویری. لهذا د عرف په اعتبار سره صحیح خبره دا معلومیږي چه کله د یو نفل مونځ د جمعی د پاره نورو ته دعوت ورکړې شی نو هغې ته به تداعی ونیلي شی او د دې په خلاف که د جمعی د پاره دعوت ورنه کړې شی نو بیا به دا تداعی نه وی. حضرت علامه کشمیری رحمته الله علیه فیض الباری کښې هم دې طرف ته خپل میلان ښکاره کړې دي. (٣)

د مالکیو مذهب: د مالکیو په نیز نفل په جمع سره ادا کولو کښې مختلف صورتونه ممکن دی. مثلاً که د نوافلو جمع په جمات کښې او کړې شی، یا په جمع کښې ډیر کسان شریک وی، یا جمع په داسې مکان کښې قائم کړې شی چه هلته د خلقو تگ راتگ عام وی نو په دې دريو اړو صورتونو کښې به د نوافل جمع مکروه وی. او که چرته په دغه جمع کښې کسان کم وی او داسې ځائی کښې ادا کړې شی چه هلته د خلقو تگ راتگ بغیرد منع کولو نه ممکن نه وی نو بیا داسې ځائی کښې د نوافلو جمع کولو کښې هیڅ حرج نشته. که غور او کړې شی نو د احنافو او مالکیو په مذهب کښې څه خاص فرق نشته دي. (٤)

د حنابلو مذهب: د حنابلو په نیز د نوافل جمع مباح ده. (٥)

..... او دا کومو مفتیانو صاحبانو چه دوه یا درې مقتدیان لیکلی دی هغه ئی په غرض د تحدید عمل لیکلی دی د دې د پاره نه چه دغه د صاحب مذهب نه نقل دی.

دغه شان حضرت شاه صاحب رحمته الله علیه د "باب صلاة النفل" په درس کښې او فرمائیل چه د احنافو په نیز د نفلو جمع مکروه ده بغیرد رمضان نه. بعضی خلقو دا او گنرل چه په رمضان کښې د هر نفل جمع جائز ده حالانکه د فهاز مراد د دې نه صرف د تراویح نوافل وو. نور هیڅ نه وو. بیانی او فرمائیل په دې ځان په ښه شان سره پوهه کړئې ځکه چه علم ډیر تحقیق، پوخ نظر، کوشش او تجربې نه پس حاصلیږي. (تفصیل د پاره او گورئې: انوار الباری: ٢٤٦/٤ - ٢٣٨)

( المغرب، المادة: د ع ر: ٢٨٩/٢.

( البحر الرائق، کتاب الصلاة، باب: الإمامة: ٦٠٤، ٦٠٦ دارالکتب العلمیة، وكذا فی الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب الخامس فی الإمامة، الفصل الأول فی الجماعة: ٨٣/١.

( ثم التداعی علی عرف اللغة، و لا تحدید فی أصل المذهب وإن عینه المشائخ. (فیض الباری، کتاب الصلاة، باب: إذا دخل بیتا یصلی حیث شاء، أو حیث أمر، ولا یتجسس: ٤٣/٢).

( حاشیة الدسوقی علی الشرح الكبير، کتاب الصلاة، فصل: فی بیان حکم صلاة الجماعة: ٣٢٠/١. شرح منع

الجلیل علی مختصر العلامة خلیل، کتاب الصلاة، فصل فی بیان حکم فعل الصلاة فی جماعة: ٢١١/١. مواهب

الجلیل، کتاب الصلاة، فصل فی صلاة الجماعة: ٣٩٥/٢.

( ولا بأس بالجماعة فیه، قال فی الفروع: ویجوز جماعة، وأطلقه بعضهم. قلت: منهم الشیخ فی المغنی، الکافی، والشارح، و شرح ابن رزین والرعايتين، والحاوی الصغیر. وقیل: ما لم ینخذ عادة وسنة، قطع به .....

د شافعیو مذهب: د شوافعو په نيزد نوافل جمع که هرڅومره لويه وي جائز ده. د هيڅ قسم څه کراهت نشته. ليکن جمع مستحب هم نه ده. مذکوره حديث شريف شوافع د خپل دليل په توگه باندې پيش کوي. خود احنافو په نيز په دې حديث شريف کښې بغير د تداعي د جمع د موندنې صورت جوړ شوي دي لهذا هم د دې مطابق به د دغه جمع حکم وي د کوم تفصيل چه پورته ذکر کړې شوي دي. (۱)

د سلف صالحينو په آثار سره د تبرک حکم: د دې حديث شريف نه يو مسئله د انبياء کرامو عليهم الصلوات والتسليمات په آثارو سره د برکت حاصلولو هم مخې ته راځي چه حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه حضور پاك ته درخواست او کړو چه تاسو زما کور ته تشریف راوړو سره دوه رکعته موندنې او کړنې دې د پاره چه زه بيا هم هغه ځانې کښې موندنې ادا کوم او په هغې سره زه برکت حاصل کړم. د جمهور اهل سنت والجماعة عقیده هم دغه ده چه په دغه آثارو سره برکت حاصلول جائز دي. په دې باره کښې ډير بهترين تفصيل د علامه شبير احمد عثمانی رحمته الله عليه په تقرير بخاري شريف کښې موجود دي. هغوی د سعودی بادشاه په وړاندې ډيري مدلل خبرې کړې وې د کوم په اوریدو سره چه هغه هم لاجواب شوي وو. (۲)

..... لمجد في شرحه، ومجمع البحرين. وقيل: يستحب، اختاره الأمدى. وقيل: يكره. (الإيضاح في معرفة الراجح من الخلاف على مذهب الإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ۱۸۶/۲). الكافي لموفق الدين، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ۳۵۴/۱. المغنى، كتاب الصلاة، صلاة التطوع، رقم السألة: ۲۳۹، ۵۶۷/۲. الثامن: قد سبق أن التوافل لا تشرع الجماعة فيها إلا في العيدين والكوفين والاستقاء، وكذا باقي التوافل كالسنن الراجعة مع الفرائض والضحى والتوافل المطلقة فلا تشرع فيها الجماعة، أي: لا تستحب، لكن لو صلاها جماعة جاز، ولا يقال: أنه مكروه، وقد نص الشافعي رحمه الله في مختصره البيهقي والربيع على أنه لا بأس بالجماعة في النافلة، ودليل جوازها جماعة أحاديث كثيرة..... إلخ. (المجموع شرح المذهب، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ۵۴۸/۳). الوسيط في المذهب، كتاب الصلاة، الباب السابع في صلاة التطوع: ۲۱۵/۲. حاشية قليوبي وعميرة على منهاج الطالبين، كتاب الصلاة، باب: صلاة النفل: ۲۱۰/۱.

(۱) د مذکوره موضوع د اهمیت په رنرا کښې د علامه عثمانی رحمته الله عليه د تقرير بخاري فضل الباري نه هغه مکمل بحث لفظ په لفظ نقل کولې شی:

د صالحينو په آثارو د تبرک مسئله: دا کوم چه حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه حضور پاك ته عرض او کړو چه 'وددت يا رسول الله، أنك تأتيني، فتصلي في بيتي، فاتخذه مصلى' داهم تبرک بالآثار وو حضور پاك په دې باندې انکار اونه کړو بلکه وعده ئې او کړه چه تافعل إن شاء الله' اوبيا هغه پوره هم کړه. نو دا حديث شريف يو ډير لوئى اصل دي د تبرک آثار الصالحين د (ثبوت) د پاره، لکه څنگه چه امام نووي رحمته الله عليه غوندي لوئى لوئى محققينو حضراتو تصريح کړې ده. بلکه د دې نه زيات د دې (حديث) نه طلب التبریک منهم (يعنى د بزرگانو نه د هغوی د يو څيز نه د برکت حاصلولو درخواست کول) هم ثابتيږي. ځکه چه حضرت عتبان رضي الله عنه طلب او کړو او حضور پاك صلوات الله عليه انکار اونه کړو بلکه د هغه درخواست قبولولو سره ئې هغه ته عزت ورکړو.

د حجاز د بادشاه، شاه ابن سعود په خصوصي جلسه کښې په مذکوره مسئله باندې اوږدې خبرې اتړې: زه (حضرت عثمانی رحمته الله عليه) په کال ۱۳۴۴ هـ کښې د جمعيت علماء هند د طرف نه د ملک الحجاز ابن سعود په دعوت باندې مؤتمر العالم الاسلامي کښې شريک شوي ووم. هلته د ټولې دنيا مشاهير بللي.....

..... شوی وو. نو یوه ورځ یوه خاص جلسه اوشوه په کومه کښې چه بادشاه هم شریک وو. هغه وخت په یو څو مسئلو باندې ما خبرې اترې اوکړې په کومو کښې چه یوه مسئله د کتاب په شروع کښې د هرقل د حدیث لاندې په عنوان د "شرك جلی او شرك خفی" اود سجود تعظیم متعلق تیر شوی دی. هم د دغه مسئلو نه یوه مسئله دا "تبرک بالاثار الصالحین" هم وه. په دغه خاص جلسه کښې مسلسل پوره گهڼته تقریر ما اوکړو په کوم سره چه بادشاه ډیر متاثر شو او ونی فرمائیل زه عالم نه یم په دې وجهه ستا خبره نه رد کولې شم او نه ئی قبلولې شم. تاسو زمونږ علماؤ سره په دې خبرې اترې اوکړئ. بیا چه د بحث نه پس څه فیصله وی د خپل ست طرف ته ئی اشاره کولو سره او وئیل چه د عبدالعزیز دا ست د هغې فیصلې لاندې دې. ما وئیل ډیره ښه ده. چنانچه بیا یوه ورځ شیخ الاسلام عبدالله بن بلیهد نجدی سره په خصوصی توگه خبرې اترې اوشوې.

دغه خلقو خود حضور پاک ډیر آثار قدیمه لکه د حضرت خدیجه رضی الله عنها کور اود حضور پاک د پیدائش ځای وغیره بالکل ختم کړی وو اود کومو د ختمولو نه چه عاجز پاتې وو لکه غار ثور، غار حرا وغیره هلته ئی د خلقو تک راتگ بند کړو او څو کڼ ئی پرې کینولې ځکه چه هغه خلق داسې تبرک بالاثار بدعت او ناجائز گنړی.

د تبرک بالاثار په ثبوت باندې د ټولو نه قوی او صریح دلیل: د دې مسئلې متعلق چه کوم دلائل هلته ما پیش کړی وو او په هغې کښې د ټولو نه زیات قوی او صریح هم دغه د عتبان بن مالک رضی الله عنه حدیث وو. خیال کوئې چه د عتبان بن مالک رضی الله عنه مصلی په کوم باندې چه حضور پاک په ټول عمر کښې یو ځل دوه رکعته مونځ کړې وو په دې وجهه که چرې دغه مصلی متبرک کیدې شی نو د خدیجه رضی الله عنها کور چرته چه حضور پاک په کلونو شپې ورځې د الله تعالی عبادت کړې وو او غار حرا په کوم کښې چه حضور پاک صلی الله علیه و آله په میاشتو خاص کیفیت سره د عبادت د پاره قیام فرمائیلې وو او چرته چه شپه ورځې حضور پاک صلی الله علیه و آله په عبادت کښې مشغول پاتې شوې وونو آیا دا ټول مقامات زمونږ د پاره د برکت ځایونه نه شی کیدې؟

دویم دلیل: دویم دلیل کوم چه ما پیش کړی وو هغه د صحیح بخاری: "باب المساجد بین المکه والمدینه" کښې د ابن عمر رضی الله عنهما یو اوږد حدیث دې په کوم کښې چه دا ذکر کړې شوی دی چه حضرت ابن عمر رضی الله عنهما دمکې اومدینې په مینځ لاره کښې چه د حضور پاک کوم مائر او موضع صلوة دی (په کوم کښې چه حضور پاک صلی الله علیه و آله مونځ کړې وو) هغه به ئی ښه په اهتمام او کوشش سره لټولو او هم هلته به ئی مونځ کولو. دې نه علاوه چه په کوم ځای کښې کوم یو کار هم حضور پاک کړې وو حضرت ابن عمر رضی الله عنهما به هم هغه کار هلته کولو. دا مقامات چرته چه حضور پاک اتفاقی توگه باندې یو ځل دوه مونځ کړې وو یا یو ځل نیم ئی تشریف اوړې وو نو په دې وجهه دغه مقامات د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما د پاره متبرک کیدې شی نونن د امت د پاره د خدیجه رضی الله عنها کور او غار ثور وغیره مقامات څنگه متبرک کیدې نه شی؟

دریم دلیل: بیا په آخره کښې ما او وئیل چه پریردئې دا خبرې د لیلۃ الاسراء یو اوږد تفصیلی حدیث دې په هغې کښې دا اجزاء هم ذکر دی چه: "مر بارض ذالت نخل، فقال له جبریل: انزل فصل، فنزل فصلی، فقال: صلیت بیثرب" (یعنی د حضور پاک صلی الله علیه و آله تیریدل په یوداسې ټکره د زمکې باندې اوشو چرته چه ډیرې زیاتې د کهجورو ونې وې جبرئیل علیه السلام او فرمائیل دلته راکوز شه او مونځ اوکړه، حضور پاک صلی الله علیه و آله مونځ ئی اوکړو نو جبرائیل علیه السلام او فرمائیل چه تاسو د یثرب یعنی د مدینې په زمکه باندې مونځ ادا کړو، بیا وړاندې تلو نه پس جبرائیل علیه السلام او فرمائیل انزل فصل، فنزل فصلی، فقال: صلیت بطور سیناء حیث کلم الله موسی (دلته هم راکوز شه او مونځ اوکړه، حضور پاک صلی الله علیه و آله راکوز شو مونځ ئی اوکړو نو جبرائیل علیه السلام او فرمائیل چه تاسو په طور سیناء کښې مونځ اوکړو چرته چه موسی علیه السلام ته الله د خبرو کولو په توگه عزت ورکړې وو).....

..... جیل طور په کوم چه الله تعالی حضرت موسی علیه السلام سره خبرې کړې وې که هغه جیل طور د نبی آخر الزمان صلی الله علیه و آله د پاره متبرک کیدې شي، تردې چه په هغه خاص سفر کښې چه کله نبی صلی الله علیه و آله ته دعوت ورکړې شوې وو او ملا اعلی او خاص د الله تعالی دربار ته نی تشریف اړولو په لاره کښې حضور پاک صلی الله علیه و آله کوزول او هلته پرې مونځ او کړې شو نو ولې هغه غار حرا په کوم کښې چه الله تعالی په سید الانبیاء علیه الصلاة والسلام باندې د ټولونه غوره کتاب (قرآن کریم) او خپل قدیم کلام نازلول شروع کړل نن هغه زمونږ گناهکارانو امتیانو د پاره متبرک کیدې نه شی چه مونږ یو وخت لار شو او هلته دوه رکعته مونځ خاص د الله تعالی د پاره او کړو؟

بیا وړاندې تلوسره حضرت جبرائیل علیه السلام او وئیل انزل، فنزل فصلی، قال: صلیت بیت اللحم حیث ولد عیسی دلته کوز شه حضور پاک راکوز شو او مونځ نی او کړو نو حضرت جبرائیل علیه السلام او فرمائیل تاسو په بیت لحم کښې مونځ او کړه دې چرته چه د حضرت عیسی علیه السلام پیدانش شوې وو. دا بیت لحم چه د حضرت عیسی علیه السلام د پیدا کیدو ځای دې که چرته دا د حضور پاک غونډې هستی د پاره متبرک کیدې شی نوڅه وجه ده چه د حضور پاک د پیدانش هغه مبارک مقام نن مونږ امتیانو د پاره متبرک کیدې نه شی؟ بیا وړاندې تلو سره حضرت جبرائیل علیه السلام او فرمائیل: انزل فصل، فنزل فصلی، قال: صلیت بدمین، مسکن شعیب علیه السلام که د شعیب علیه السلام مسکن اود موسی علیه السلام مورد (چرته چه نی الله تعالی سره خبرې شوی وې) د سید المرسلین په حق کښې دومره اندازه باندې متبرک گرځیدې شی نو پخپله د سید المرسلین مسکن او مکان د هغوی د امتیانو د پاره ولې نه شی متبرک کیدې؟ زما مراد د دغه مسکن نه د حضرت خدیجه رضی الله عنها کور دې په کوم کښې چه حضور پاک به کلونو باندې اوسیدلو اود الله تعالی د وحی سلسله شپه، ورځ جاری وه. مناسک کښې ملاعلی قاری رحمته الله علیه د طبرانی رحمته الله علیه نه نقل کړی دی چه هغه په دې باندې د اجماع دعوی کوی چه په مکه کښې د حرم شریف نه پس هیڅ یو مکان د حضرت خدیجه رضی الله عنها د کور نه غوره نه دې.

د مذکوره حدیث حواله اوددې درجه: کله چه ما دلائل بیانول نو شیخ الاسلام (عبدالله بن بلیهد) په یوه خبره باندې هم هیڅ اونه وئیل، صرف په دې اخیری دلیل حدیث اسراء باندې هغه تپوس او کړو چه دا روایت چرته دې؟ نو ما په حیرانتیا سره او وئیل چه تاسو خو فرمائیل چه الحمد لله ماته د حدیث په کتابونو وغیره کافی علم حاصل دې. په دې وجه ما حواله ورکول ضروری اونه گټرل. دا حدیث د حافظ ابن حجر رحمته الله علیه په فتح الباری کښې موجود دې. او حافظ رحمته الله علیه د دې نقل کولو نه پس خاموشی اختیار کړې ده. هیڅ کلام نی نه دې کړې دا دلیل دې ددې خبرې چه دا حدیث د حسن نه کم نه دې څکه چه حافظ رحمته الله علیه په مقدمه د فتح الباری کښې تصریح کړې ده چه په کوم روایت باندې زه خاموشی اختیار کړم نو په هغې هیڅ کلام مه کوئی هغه به زما په نیز د حسن ددرجې نه کم نه وی.

تبرک بانار الصالحین باندې د مخالفینو شبهات اود هغې جواب: ددې دلائل به مقابله کښې شیخ الاسلام هیڅ دلیل زانورلی شو صرف د سیر چه کوم یو روایت دې چه حضرت عمر رضی الله عنه شجرة الرضوان پرې کړې وه. رواها ابن سعد فی الطبقات من طریق نافع عن عمر، دانی وړاندې کړو. مگر اول خو په دې کښې یوه ډیره لویه خبره داده چه هغه ونه کومه چه حضرت عمر رضی الله عنه پرې کړې وه او کومه چه خلقو شجرة رضوان متعین کړې وه اود هغې نه نی تبرک حاصلولو د هغې په واقع کښې شجرة متبرک کیدل د کوم لاندې چه صحابه گرامو رضی الله عنهم نه بیعت رضوان اخستی شوې ووهم دغه خیز متعین توگه باندې ثابت نه دې. چنانچه په صحیح بخاری کښې یو صریح روایت دې د حضرت مسیب رضی الله عنه چه پخپله په دغه بیعت رضوان کښې شریک وو هغه وائی چه د بیعت رضوان نه یو کال پس مونږ هلته لارو نو هغه ونه مونږ ته یاده نه وه چه کومه یوه وه یعنی په تعیین سره مونږ ته پته اونه لگیده. نو خامخا یو غیر متعین موهوم خیز متبرک او معظم گرځول، دا څوک هم جائز نه گټری. مونږ چه د تبرک بالاثار قائل یو نوڅکه .....



او زمونږ په دې تقرير کښې هم په دې موضوع باندې مخکښې هم خبره شوې ده. (۱)  
 د هديت د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عيني رحمته الله عليه ذکر کړې دې چې د ترجمه الباب دوه  
 اجزاء دي. يو "يصل حيث شاء" او دويم "حيث امر" د دواړو اجزاو سره به د حديث شريف  
 مطابقت هله جوړېږي چې کله معطوف عليه "يصل حيث شاء" کښې د "يصل" نه مخکښې همزه  
 استفهام محذوف رااوويستلې شي گڼي مطابقت به صرف د دويم جز سره وي. (۲)  
 د حديث شريف نه مستفاد امور او احکام: دا حديث شريف دلته مختصر دې تفصيلي روايت به  
 وړاندې باب کښې راځي. نو د حديث شريف سره متعلق اهم امور او احکام به هم په وړاندې  
 باب کښې ذکر کولې شي دې د پاره چې تکرار لازم رانه شي.

..... قائل يو چې کله د يو خيز متبرک کيدل يعنې د يو نيك مثلاً د حضور پاك سره د څه قسم نسبت لرل  
 په متعين او متيقن توگه باندې ثابت شي. او که چرته چا هسې بغير د دليل او بغير د سند وغيره نه دعوي  
 او کړه چې د حضور پاك قميص مبارک دې يا نعل شريف دي نو مونږ هغه متبرک نه گڼو لکه څنگه چې دا  
 نن صبا اهل هوا يوه پيشه گر خولي ده، هيڅ کله نه.

(بهر حال) مونږ داسې وهايبان هم نه يو چې د يو خيز متبرک کيدل ثابتيدو نه پس هم د هغې تعظيم اونه  
 کړو او نه ئې په خپل سر او سترگو باندې کيږدو او داسې بدعتيان هم نه يو چې موهوم، بې ثبوت، بې  
 دليل او بې سند خيزونه متبرک او معظم او گټور. نو ممکن ده چې دغه شجره (اونه) حضرت عمر رضي الله عنه هم په  
 دې وجه پرې کړې وي چې کله يقين سره متعين نه ده چې داهم هغه شجره رضوان ده نو بيا ددې دومره  
 تعظيم او تبرک بې اصل دې. باقي پاتې شو د حضرت خديجه رضي الله عنها کور، غار حرا او غار ثور وغيره مائر  
 قديمه، دا ټول خو تواتر په شان قرآن د تواتر طبقه نه ثابت دي چې مفيد للقطع واليقين دې په اتفاق سره،  
 لکه چې د کتاب الايمان په شروع کښې د تواتر د اقسامو تحقيق کړې شوې. والله اعلم

دويم جواب دويم دا چې داروايت د سير دې بيا منقطع دې. (څنگه چې د حضرت عمر رضي الله عنه دا واقعه  
 بيانونکې حضرت نافع رضي الله عنه دي، او د حضرت نافع رضي الله عنه د حضرت عمر رضي الله عنه سره ملاقات نه دي شوي.

دويم جواب: بيا دا څه مرفوع خيز نه دې بلکه صرف د حضرت عمر رضي الله عنه رانې وه. دا خيز د هغه دلائلو په  
 مقابلې کښې هيڅ وزن نه لري کوم چې (پورته) ذکر کړې شو. په کوم کښې چې بعضې د صحيحينو متفق  
 عليه، بعضې د بخاري او بعضې د نورو کتابونو د حديث قابل احتجاج روايات دي.

خلورم جواب: بيا په دې کښې يو خيز بل دې چې حضرت عمر رضي الله عنه کوم څه کړې وو هغه ئې د وخت د  
 يو مصلحت د وجې نه کړې وو او هغه مصلحت هم دغه "سد ذرائع وحسم مادته" (يعنې دا انديښنه وه چې

چرته د دغه ونې نه تبرک حاصلولو کښې غلو اونه شي او تبرک د شريك حد ته اونه رسي. هم د دغه  
 انديښنې د وجې نه ئې هغه ونه پرې کړه. چې راتلونکي وخت کښې کله د شريك سبب جوړيدې شو) هغه څه  
 د شرعي مسئلې په وجه باندې نه وو (يعنې د هغې وجه دا نه وه چې تبرک په خپل اصل اعتبار سره شرعا  
 منع دې). که چېرې تاسو هم د مصلحت متعلق څه وئيل غواړئ نو غور او کړئ. دا تاسو چې دغه مائر سره  
 کوم سلوک کړې په دې کښې مصلحت شوي دې که د مصلحت خلاف شوي دې؟ ستاسو په دې کار کولو  
 سره دهر طرف په مسلمانانو کښې يو کشمکش پيدا شو چې او گورئ د ابن سعود حکومت څه او کړل. په  
 کوم سره چې د حج غوندي شعائر اسلام له راتلونکي خلق شک شبه کوي. نو دا څنگه مصلحت شو؟

د شيخ عبدالله بن بليهد اخير اعتراف: په دې باندې شيخ الاسلام هيڅ اونه وئيلي شو. په آخره کښې  
 ئې منلو سره صرف دومره او وئيل چې څه او کوم زمونږ قوم نه مني. (فضل الباري: ۱۳۶/۳-۱۲۹)

(کشف الباري، کتاب الصلاة، باب: الصلاة في الثوب الأحمر، ص: ۵۵۸-۵۵۱.)

(عمدة القاري: ۲۴۴/۴.)

## ۱۴- بَابُ: الْمَسَاجِدِ فِي الْبُيُوتِ

داباب په کورونو کښې د جماتونو جوړولو په جواز کښې دې

د ترجمه الباب وضاحت

په کورونو کښې د جماتونو جوړولو مطلب: په کورونو کښې دننه جماتونه داسې جوړولې شي چه د کور يوه گوټه يا يو گوټ د خپل عبادت د پاره مخصوص کړې شي. هلته پوزگې يا د لرگي تخت وغيره خور کړې شي. اود کور خلق هم دغه ځانې کښې نوافل وغيره ادا کوي. دا جمات به اصطلاحی جمات نه وي اونه به وقف وي. دلته د مونځونو د پاره اذان کول هم ضروري نه دي. چنانچه دا ځانې به د کور د مالک په وراثت کښې هم جاري وي. خو په دغه ځانې کښې به هغه ثواب نه ملاويږي کوم چه په اصطلاحی جمات کښې ملاويږي. دغه شان جماتونه په کورونو کښې جوړول مستنون او مستحب دي.

په سنن ابوداؤد کښې يو روايت دې: (۱) په کوم کښې چه په صراحت سره دا خبره ذکر ده چه رسول الله ﷺ مونږ ته حکم راکړو چه مونږ په خپلو کورونو کښې جماتونه جوړ کړو، يعنی د عبادت د پاره ځانې خاص کړو. شارحينو ددې دوه مطلبونه بيان کړي دي: (۲). چه په خپلو کورونو کښې جماتونه جوړ کړئ او دويم دا چه په خپله محله کښې جماتونه جوړ کړئ. خود ابوداؤد شريف دا حديث چونکه د امام بخاري رحمه الله د شرائطو مطابق نه وو په دې وجه ئي دا د ترجمه الباب لاندې رانور و. البته د خپلې مدعی د اثبات د پاره هغوی د حضرت عتبان رضي الله عنه دا حديث ذکر کړې دي.

په کورونو کښې د جمع کولو حکم: د څه عذر د وجې په کور کښې په جمع سره مونځ ادا کول صحيح دي. مثلاً کله په څه وجه باندي د جمات په جمع کښې حاضر نه شي نو کور کښې محرم بنځې وغيره يو ځانې کولو سره په جمع سره مونځ ادا کول صحيح دي. ليکن بغيرد عذر نه ددې عادت جوړول ښه نه دي. بلکه د داسې سړي باره کښې سخت وعيد هم دې چه رسول الله ﷺ ارشاد فرمائيلې دې زما زړه غواړي چه يو څو ځوانانوته حکم ورکړم چه هغوی د يريزيات خشاک را جمع کړي، بيا زه هغه خلقوله لار شم چه بغيرد عذر نه په کورونو کښې مونځونه کوي او د هغوی کورونه اوسوزوم. (۳)

حضرت شيخ الحديث صاحب رحمه الله په خپله رساله فضائل نماز کښې پوره يو فصل په دې

(۱) عن عائشة قالت: أمر رسول الله صلى الله عليه وسلم ببناء المساجد في الدور، وأن تنظف وتطيب. (سنن أبي داؤد، كتاب الصلاة، باب: اتخاذ المساجد في الدور، رقم الحديث: ۴۵۵). وأيضاً: حدثني خبيب بن سليمان عن أبيه سليمان بن سمره، عن أبيه سمره قال: إنه كتب إلي بنيه: أما بعدا فإن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يأمرنا بالمساجد أن نصنعها في دورنا، ونصلح صنعتها ونظهرها. (أيضاً، رقم الحديث: ۴۵۶).

(۲) بذل المجهود، كتاب الصلاة، باب: اتخاذ المساجد في الدور، رقم الحديث: ۴۵۵. ۲۹۲/۳.

(۳) عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لقد هممت أن أمر فتيتي، فيجمعوا إلي حزماً من حطب، ثم آتي قوماً يصلون في بيوتهم، ليست بهم علة، فأحرقها عليهم (صحيح مسلم، كتاب المساجد، باب: ما روي في التخلف عن الجماعة، رقم الحديث: ۱۴۸۱).

باره کنبې قائم کړې دې په کوم کنبې چه نې هغه احاديث را جمع کړې دي کومو کنبې چه د جمع په پريخودو باندي راغلي وعيدونو ذکر دې. هغه فصل خاص توگه باندي او پوره رساله بالعموم د کتلو لائق ده. فقهاؤ ليکلي دي چه په کور کنبې جمع کولو سره به د جمع ثواب ملاؤ خوشي ليکن په جمات کنبې دا دا کړې شوي د جمع ثواب به نه ملاويږي. د مونځ په موضوع باندي ليکلي شوي د ټولو نه تفصيلي کتاب منية المصلي کنبې ددې تفصيل کتلې شي. (۱)

د ترجمة الباب مقصد: علامه عيني رحمته الله عليه فرمايي چه دا باب او سابقه باب په حقيقت کنبې هم يو دي. په دې وجه امام بخاري رحمته الله عليه دواړو ابوابو کنبې هم يو حديث د حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه راوړې دې. او هم دغه حديث امام صاحب په بخاري شريف کنبې په خو مقاماتو کنبې ذکر کړې دې، چرته مختصر او چرته مفصل او ددې ټولو نه مقصود مختلف تراجم قائل دي. (۲)

امام بخاري رحمته الله عليه ترجمة الباب مطلق ساتلي دي حالانکه زمونږ د خيال مطابق په دې کنبې د معذورانو دپاره قيد لگول پکار وو. نو هر کله چه داسې نه ده نو مطلب به دا شي چه د امام بخاري رحمته الله عليه په نيز د معذور او غير معذور دواړو په کور کنبې جمات جوړول او هلته مونځ کول صحيح دي. يعنې چه د عذر قيد وي نو مطلب به دا مخې ته راتلو چه هغوی معذورانو ته په کور کنبې د مونځ کولو اجازت ورکول غواړي. خو چه کله هغوی د قيد نه بغير دا او فرمائيل چه په کور کنبې د جمات جوړولو بيان، نو مطلب دا شو چه بغير د عذر او بغير د قيد نه کور کنبې د جمات د جوړولو او د مونځ کولو بيان. په دليل کنبې هغوی د حضرت براء بن عازب رضي الله عنه تعليق هم بيان کړې دې. دليل داسې چه هغه د رسول الله صلى الله عليه وسلم يو جليل القدر صحابي دې. هغه ته څه عذر هم نه وو ددې باوجود هغه د جمات جمع پريخودو سره په کور کنبې مونځ او کړو نو که په دې کنبې څه نقصان يا ممانعت وي نو هغه به داسې وېي کول؟

که چرې دا ټول صحيح فرض کړې شي نو ددې جواب به دا ورکولې شي چه ددې خبرې قوی احتمال موجود دې چه هغوی به داسې هغه وخت کړي وي کوم وخت چه د هغوی نه په جمات کنبې جمع فوت شوي وي او هغوی به په کور کنبې د کور خلق را جمع کولو سره په جمع مونځ ادا کړې وي چه د جمع د مونځ ثواب حاصل شي. چنانچه ددې نه استدلال کولو سره په کور کنبې بغير د عذر نه هم جمات جوړولو سره مستقل توگه باندي په کور کنبې د مونځ کولو جواز نه شي راوتلې. او د حديث باب نه استدلال هم ممکن نه دې ځکه چه په دې کنبې د حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه رخصت د هغه د عذر د وجې نه وو لکه چه حديث باب کنبې

(۱) وان اقيمت في المسجد بجماعة وتخلف عنها رجل من افراد الناس وصلى في بيته فقد ترك الفضيلة. وان صلى في بيته بالجماعة لم ينالوا فضيلة الجماعة في المسجد وهكذا في المكتوبة. (منية المصلي. كتاب الصلاة، صلاة التراويح، ص: ۱۴۵، مكتبة طيبة، كوتنه).

(۲) عمدة القاري: ۲۴۵/۴.

تفصیل راخی

تعلیق: وَصَلَّى الْبَرَاءُ بْنَ عَازِبٍ: «فِي مَنْجِدٍ فِي دَارِهِ جَمَاعَةً»:

د تعلیق تخریج: حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ او علامہ عینی رحمته اللہ علیہ فرمائی چہ ابن ابی شیبہ رحمته اللہ علیہ پہ خپل مصنف کنبی ددی اثر ہم معنی یوہ قصہ ذکر کړې ده. (۱)د تعلیق رجال: د تعلیق راوی حضرت براء بن عازب رضی اللہ عنہ دی. د دوی ذکر کشف الباری کنبی تیر شوې دی. (۲)د تعلیق ترجمه او تشریح: حضرت براء بن عازب رضی اللہ عنہ د خپل کور په جمات (د مانخه د پاره مقرر کړې شوی ځای) کنبی په جمع سره مونخ ادا کړو.

جماعة دلته دا لفظ په نصب سره دې خود کشمیهنی روایت کنبی دې نه مخکنبی فی حرف جر دې. یعنی فی جماعة. (۳)

د تعلیق مقصد: د تعلیق مقصد واضح دې چہ ترجمه الباب ثابتول مقصود دی.

د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسب: ترجمه الباب هم دغه دې چہ په کور کنبی دې جماتونه جوړ کړې شی. یعنی په کورونو کنبی دې د عباداتو او مونخونو وغیره د پاره ځایونه متعین کړې شی. او په مذکوره تعلیق کنبی هم دا امر ذکر دی چہ حضرت براء بن عازب رضی اللہ عنہ په خپل کور کنبی د مونخ د پاره مقرر کړې شوی ځای کنبی مونخ ادا کړو.

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۱۵]

۳۲۵- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفْرَةَ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ قَالَ حَدَّثَنِي عَقِيلٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيُّ أَنَّ عَثْبَانَ بْنَ مَالِكٍ (۴) - وَهُوَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ الْأَنْصَارِ - أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَدْ أَنْكَرْتُ بَصْرِي، وَأَنَا أَصْلِي لِقَوْمِي، فَإِذَا كَانَتِ الْأَمْطَارُ رِيَالًا الْوَادِي الَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ، لَمْ أَسْتَطِعْ أَنْ أَتِيَ مَسْجِدَهُمْ فَأَصَلِيَ بِهِمْ، وَوَدِدْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْكَ تَأْتِينِي فَتُصَلِّيَ

(۱) فتح الباری: ۶۷۲/۱، عمدة القاری: ۲۴۶/۴. راقم وائی چہ سره د کوشش المصنف لابن ابی شیبہ کنبی د حضرت براء بن عازب رضی اللہ عنہ دغه مذکوره یا ددی دمعنی والا څه اثر ملاؤ نه شو. تردې چہ هم د حافظ صاحب رحمته اللہ علیہ تصنیف تغلیق التعلیق او کتلو نو هلته هم ددی تعلیق د تخریج په مقام باندې بیاض وو. یعنی نه حافظ رحمته اللہ علیہ بخیله ددی تخریج کړې دې او نه محشی حضراتو ددی تخریج کړې دې. ونی گورنی: تغلیق التعلیق: ۸۲/۲. البته په المصنف کنبی د حضرت ابوالمجلز معمول ذکر دې چہ هغوی په خپل کور کنبی جمات جوړ کړې وو په کوم کنبی چہ به اکثر وختونو کنبی خپل دکور خلق او غلامان راجمع کول او په جمع سره به ئی مونخ ادا کولو. ونی گورنی: حدیثنا زید بن حباب، عن مطهر بن جویریة قال: رأیت أبا مجلز، وله مسجد فی داره، فربما جمع أهله وعلمانه. (المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الصلاة، باب: فی الرجل یؤم النساء، رقم الحدیث: ۶۲۱۰.)

(۲) کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: الصلاة من الإیمان: ۳۷۵/۲.

(۳) فتح الباری: ۶۷۲/۱، عمدة القاری: ۲۴۶/۳.

(۴) مر تخریجه تحت الحدیث السابق الرقم: ۴۱۴.

فِي بَيْتِي، فَأَتَيْتُهُ مُصَلِّيًّا. قَالَ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «سَأَفْعَلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ». قَالَ عَتَبَانُ فَقَدَّارَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَأَبُو بَكْرٍ جِئْنَا ارْتَفَعَ النَّهَارُ، فَاسْتَأْذَنَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَأَذْنَتْ لَهُ، فَلَمْ يَجْلِسْ حَتَّى دَخَلَ الْبَيْتَ ثُمَّ قَالَ «أَبْنُ نُجَيْبٍ أَنْ أَصِلِي مِنْ بَيْتِكَ». قَالَ فَأَثَرْتُ لَهُ إِلَى نَاحِيَةِ مِنَ الْبَيْتِ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَكَبَّرَ، فَقُمْنَا فَصَفْنَا، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، قَالَ وَحَبَسْنَا عَلَى خَيْرِيَّةٍ صَنَعْنَا هَالَهُ. قَالَ فَتَابَ فِي الْبَيْتِ رَجَالَ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ ذُو وَعَدَدٍ فَاجْتَمَعُوا، فَقَالَ قَابِلٌ مِنْهُمْ أَبُو مَالِكِ بْنِ الدَّخِيِّنِ أَوْ ابْنُ الدَّخِيِّنِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ ذَلِكَ مُنَافِقٌ لَا يُحِبُّ اللَّهُ وَرَسُولَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «لَا تَقُلْ ذَلِكَ، أَلَا تَرَاهُ قَدْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. يُرِيدُ بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ». قَالَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ فَإِنَّا نَرِي وَجْهَهُ وَنَصِيحَتَهُ إِلَى الْمُنَافِقِينَ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ». قَالَ ابْنُ شَهَابٍ ثُمَّ سَأَلْتُ الْحَصِينَ بْنَ مُحَمَّدٍ الْأَنْصَارِيَّ - وَهُوَ أَحَدُنِي سَالِمٌ وَهُوَ مِنْ سَرَاتِيمِهِمْ - عَنْ حَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُحَمَّدِ بْنِ الرَّبِيعِ، فَصَدَّقَهُ بِذَلِكَ.

د هديت ترجمه: د ابن شهاب رضي الله عنه نه روايت دي چه ماته محمود بن ربيع انصاري خبر راگرو چه حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه چه دهغه انصاري صحابه كرامو نه دي كوم چه بدر كنبي شريك وو. د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت كنبي حاضر شو او عرض ئي او كړو اي د الله رسول! زما نظر كمزوري شوې دي او زه د خپل قوم خلقو ته جمع وركوم. كله چه باران وي نو په دغه وادئى كومه چه زما د كور او هغه خلقو په مينځ كنبي راځي، كنبي اوبه راځي د كوم په وجه چه زه د هغوى جومات ته نه شم رسيدې چه هغوى ته جمع وركوم. يا رسول الله! زما زړه غواړي چه تاسو زما كور ته تشریف راوړئ او زما په كور كنبي مونځ او كړئ نو زه به هغه ځانئ د ځان دپاره د خپل مونځ ځانئ جوړ كړم.

راوى وائى چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم ارشاد او فرمائيلو چه ان شاء الله د ير زړه به زه داسي او كړم. حضرت عتبان رضي الله عنه او فرمائيل چه په دويمه ورځ كله ورځ روښانه شوه نو رسول الله صلى الله عليه وسلم او حضرت ابوبكر رضي الله عنه تشریف راوړو (او كور كنبي د داخليدو) اجازت ئي او غوښتلو نو ما اجازت وركړو. رسول الله صلى الله عليه وسلم چه كله كور ته داخل شونو تشریف ئي كينځودو او وئى فرمائيل چه ته په خپل كور كنبي كوم ځانئ غواړي چه زه مونځ او كړم؟ حضرت عتبان رضي الله عنه وائى چه ما حضور پاك ته د كور د يو كور طرف ته اشاره او كړه نو حضور پاك اودريدو او (د مونځ شروع كولو دپاره ئي تكبير يعنى) الله اكبر او وئيلو مونځ هم اودريدو او رسول الله صلى الله عليه وسلم مونځ (خپل ځان پسې شاته يو) صف كنبي اودرولو. حضور پاك دوه ركعتو او كړل او سلام ئي او كړخولو.

حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه وائى چه ما حضور پاك د حليم (خوراك) دپاره ايسار كړو چه مونځ په (خاص توگه سره) د حضور پاك دپاره تيار كړي وو.

حضرت عتبان رضي الله عنه او وئيل چه بيا د محلي څوكسان زما كور ته راغله او جمع شو. بيا په

هغوی کنبی یو وینا کونکی او وئیل چه مالک بن دخیشن یا مالک بن دخیشن چوته دی؟ نو د هغوی نه چا او وئیل چه هغه خو منافق دی، الله او د هغه رسول ﷺ سره محبت نه لری نو رسول الله ﷺ او فرمائیل داسی مه وایئ آیا تاسو نه گورئی چه هغه صرف د الله د رضا د پاره لا اله الا الله وائی. نو هغه سری او وئیل چه الله او د هغه رسول ﷺ بنه پوهیری. مونو خود هغه توجه او همدردی د منافقانو سره گورو. رسول الله ﷺ او فرمائیل چه الله تعالی په هر هغه سری باندی دوزخ حرام کرې دی کوم چه د الله تعالی د راضی کولو په غرض لا اله الا الله وائی.

ابن شهاب رضی الله عنه وائی چه بیا ما حصین بن محمد انصاری نه چه د قبيله بنو سالم یو کس او د هغوی د سردارانو نه دی، محمود بن ربیع رضی الله عنه د دی حدیث باره کنبی تپوس او کړو نو هغوی د دی تصدیق او کړو.

تواجهم رجال: د مذکوره حدیث مبارک په سند کنبی ټول شپږ راویان دی:

① سعید بن عقیل رضی الله عنه: دا سعید بن کثیر بن عقیل رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب

العلم، باب: من یرد الله به خیرا یفقهه فی الدین لاندی تیر شوی دی. (۱)

② اللیث رضی الله عنه: دا لیث بن سعد بن عبد الرحمن رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب بده

الوسم دریم حدیث لاندی تیر شوی دی. (۲)

③ عقیل رضی الله عنه: دا عقیل بن خالد بن عکرمه رضی الله عنه دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری،

کتاب بده الوسم دریم حدیث لاندی او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: فضل العلم لاندی

تیر شوی دی. (۳)

④ ابن شهاب رضی الله عنه: دا محمد بن مسلم، بن عبید الله، بن عبد الله بن شهاب الزهري رضی الله عنه دی. د

دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوسم دریم حدیث لاندی تیر شوی دی. (۴)

⑤ محمود بن ربیع الانصاری رضی الله عنه: دا محمود بن ربیع بن ستاقه بن عمرو خزرجی رضی الله عنه دی. د

دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: متى یصح سماع الصغیر لاندی تیر شوی دی. (۵)

⑥ عتبان بن مالک رضی الله عنه: دا صحابی رسول حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه دی. د دوی احوال د

کشف الباری هم په دی جلد کنبی تیر شوی دی. (۶)

(۱) کشف الباری: ۲۷۴/۳.

(۲) کشف الباری: ۳۲۴/۱.

(۳) کشف الباری: ۳۲۵/۱، ۴۵۵/۳.

(۴) کشف الباری: ۱/۳۲۶.

(۵) کشف الباری: ۳۲۶/۱.

(۶) کشف الباری.

د حدیث شرح:

قوله: عن ابن شهاب، قال: أخبرني محمود بن الربيع الأنصاري، أن عتيان بن مالك وهو من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: يا رسول الله قد أنكرت بصري

د ابن شهاب رضي الله عنه نه روایت دی چه ماته محمود بن ربیع انصاری رضي الله عنه خبر را کرو چه حضرت عتبان بن مالک رضي الله عنه چه دهغه انصاری صحابه کرامو نه دی کوم چه بدر کنبی شریک شوی وو. د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت کنبی حاضر شو او عرض ئی او کرو چه ای د الله رسول ازما نظر کمزوری شوی دی.

قوله: عتيان، دا نوم د عین فتحی او کسری دواړو سره استعمالیږی. (۱)

قوله: أنه أن، دی نه معلومیږی چه حضرت عتبان بن مالک رضي الله عنه پخپله د حضور پاک په خدمت کنبی حاضر شو. حالانکه په صحیح مسلم کنبی د حضرت انس رضي الله عنه نه روایت نقل دی په کوم کنبی چه دی چه د حضور پاک په خدمت کنبی ئی خوک قاصد اولیرلو چه راوئی غواړی. (۲). ددی تعارض په حل کولو کنبی شارحینو حضراتو دوه احتمالات ذکر کړی دی:

① دلته پخپله د حاضریدو خبره مجازاً کړې شوې ده گنی هم قاصد ئی لیرلی وو.

② داسې دوه ځل شوی وو یو ځل پخپله حاضر شو او په دویم ځل ئی قاصد اولیرلو او قاصد لیرلو کنبی هم دوه احتمالات دی چه هغه ابتداء کورته د تشریف راوړلو مطالبه او کړه او دویم دا چه مطالبه خو حضرت عتبان رضي الله عنه پخپله کړې وه او قاصد صرف د یاداشت د پاره لاړو. (۳)

طبرانی رحمته الله عليه د ابی اویس رضي الله عنه په طریق سره یو روایت نقل کړې دی په کوم کنبی چه دی کله چه حضرت عتبان رضي الله عنه د نبی کریم صلى الله عليه وسلم کورته د راوستو خبره او کړه نو په هغه ورځ د جمعې مبارکې ورځ وه. او هم په دغه روایت کنبی دا خبره ده چه حضور پاک د هفتې په ورځ دهغه کورته تشریف یووړو. (۴)

(۱) فتح الباری: ۱/۶۷۳ او علامه ابن الملقن رحمته الله عليه د عین ضمه سره استعمالیدل خودلی دی. (التوضیح لابن الملقن: ۴۴۲/۵)

(۲) حدثنا شيبان بن فروخ، حدثنا سليمان يعني ابن المغيرة، قال: حدثنا ثابت، عن أنس بن مالك، قال: حدثني محمود بن الربيع، عن عتيان بن مالك، قال: قدمت المدينة، فلقيت عتيان، فقلت: حديث بلغني عنك، قال: أصابني في بصري بعض الشين، فبعثت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، ومن شاء الله من أصحابه، فدخل وهو يصلي في منزلي وأصحابه يتحدثون بينهم، ثم أسندوا عظم ذلك وكبره إلى مالك بن دحشم، قالوا: ودوا أنه دعا عليه فهلك، ودوا أنه أصابه شر، ففضى رسول الله صلى الله عليه وسلم الصلاة، وقال: أليس يشهد أن لا إله إلا الله، وأنى رسول الله؟ قالوا: إنه يقول ذلك، وما هو فلى قلبه، قال: لا يشهد أحد أن لا إله إلا الله، وأنى رسول الله، فدخل النار، أو تطعمه، قال أنس: فأعجبنى هذا الحديث، فقلت لابن: اكتبه فكتبه. (صحیح مسلم، کتاب الإیمان، باب: من لقی الله بالإیمان وهو غیر شاک فیه دخل الجنة وحرم النار، رقم الحدیث: ۵۴)

(۳) فتح الباری: ۱/۶۷۳ عمدة القاری: ۴/۷۴۲.

(۴) فتح الباری: ۱/۶۷۳

حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه نابينا وو كه كم نظر والا؟

قوله: "قد أنكرت بصري" ددي جملې معنی دا ده چه زما نظر کمزوري شوې دي اوس د مخکې په شان نه دي. (١). په دې روایت کې د "قد أنكرت بصري" الفاظ دي. په بل روایت کې "أنا رجل فرير البصر" الفاظ دي. (٢). هم د صحیح بخاری په روایت کې دي "أن عتبان بن مالك كان يؤمر قومه وهو أعمى". (٣)

د صحیح مسلم په یو روایت کې "إن بصري قد ساء" الفاظ دي. (٤) او په بل روایت کې "أصابني في بصري بعض الشيء" الفاظ دي. (٥) د طبرانی په یو روایت کې "وأن بصري قد ذهب" الفاظ دي. (٦) او په بل روایت کې "لساء بصري" الفاظ دي. (٧)

خلاصه دا چه د اختلاف روایت د وجې نه یو تعارض پیدا کېږي چه د یو روایت مطابق هغه نابينا وو او د نورو روایاتو مطابق د نظر کمزوري معلومېږي. نو په ټولو کې تطبیق کول

(١) صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب: الرخصة في المطر، رقم الحديث: ٦٣٦

(٢) صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب: الرخصة في المطر، رقم الحديث: ٦٦٧

(٣) صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب: الرخصة في المطر، رقم الحديث: ٦٣٦

(٤) وحدثننا إسحاق بن إبراهيم، أخبرنا الوليد بن مسلم، عن الأوزاعي، قال: حدثني الزهري، عن محمود بن الربيع، قال: إني أعقل مجة مجها رسول الله صلى الله عليه وسلم من دلو في دارنا، قال محمود: فحدثني عتبان بن مالك، قال: قلت: يا رسول الله! إن بصري قد ساء، وساق الحديث إلى قوله، فصلى بنا ركعتين، وحبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم على جشيئة صنعناها له، ولم يذكر ما بعده من زيادة يونس، ومعر. (صحیح مسلم، كتاب الصلاة، باب: الرخصة في التخلف عن الجماعة بعذر، رقم الحديث: ٢٥٦).

(٥) حدثنا شيبان بن فروخ، حدثنا سليمان يعني ابن المغيرة، قال: حدثنا ثابت، عن أنس بن مالك، قال: حدثني محمود بن الربيع، عن عتبان بن مالك، قال: قدمت المدينة، فلقيت عتبان، فقلت: حديث بلغني عنك، قال: أصابني في بصري بعض الشيء، فبعثت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم أنني أحب أن تأتيني فتصلي في منزلي..... (صحیح مسلم، كتاب الإيمان، باب: من لقي الله بالإيمان، رقم الحديث: ٣٣).

(٦) حدثنا علي بن عبدالعزيز، ثنا عارم أبو النعمان، ثنا حماد بن زيد، ثنا علي بن زيد، قال: كنا عند أنس بن مالك فقال لابنه أبي بكر حدثهم حديث عتبان بن مالك الأنصاري، فحدثنا أبو بكر، وأنس، شاهد فقال: خرجت مع أبي إلى الشام فلما أقبل من الشام مشى معنا محمود بن الربيع الأنصاري فشيبتنا حتى إذا أراد أن يفارقنا قال: ألا أحدثكم بهديث عتبان بن مالك؟ قلنا: بلى! قال: فإنه حدثني أنه ذهب بصره على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: يا رسول الله! فلو أتيت منزلي، فبوات لي فيه مسجدا، وصلت فيه، فأتخذه مسجدا، وإن بصري قد ذهب، وضعفت عن الخروج إلى المسجد..... (المعجم الكبير للطبراني، عتبان بن مالك الأنصاري، رقم الحديث: ١٤٧٥٤).

(٧) حدثنا العباس بن الفضل الأسفاطي، ثنا إسماعيل بن أبي أويس، حدثني أبي، أخبرني ابن شهاب، عن محمود بن الربيع الأنصاري، أخبرني عتبان بن مالك، أنه كان إمام قومه وقد شهد بدرا فقال للنبي صلى الله عليه وسلم: أنه لما ساء بصري شقت على إجازة الوادي إذا سال بيني وبين مسجد قومي..... (المعجم الكبير للطبراني، عتبان بن مالك الأنصاري، رقم الحديث: ١٤٧٦١).



داسې ممکن دی چه د اسی نه مراد حقیقی نابینا کیدل نه دی بلکه مراد دادې چه هغه نابینا کیدو ته نیزدې شوې وو لکه څنگه چه د بل روایت نه د نظر کمزوری ثابتیږي. بله دا چه د صحیح بخاری په کوم روایت کښې چه اعلى ذکر دې په هغې کښې دا احتمال هم کیدې شی چه کله د راوی پورې دا حدیث راؤرسیدو نو هغه وخت حضرت عتبان رضی الله عنه پوره نابینا شوې وو. یعنی په شروع کښې شی نظر کمزورې شوی وو بیا زیاتیدو زیاتیدو سره پوره نابینا شو. (۱)

قوله: وَأَنَا أَصْلَى لِقَوْمِي فَإِذَا كَانَتِ الْأَمْطَارُ سَالَ الْوَادِي الَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ، لَمْ أُسْتَطِعْ أَنْ آتِيَ مَسْجِدَهُمْ فَأَصَلَيْتُ بِهِمْ، وَوَدِدْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَنْكَ تَأْتِينِي فَتُصَلِّيَ فِي بَيْتِي، فَأَتَّخِذَهُ مُصَلًّى. اود خپل قوم خلقوته مونخ ورکوم. کله چه باران وی نو هغه وادی کومه چه زما د کور او ددغه خلقو په مینخ کښې ده، هغې کښې اوبه راځي د کوم په وجه چه زه د هغوی جمات ته نه شم رسیدې چه هغوی ته مونخ ورکوم. یار رسول الله ازما زړه غواړي چه تاسو زما کور ته تشریف راوړئ او زما په کور کښې مونخ او کړئ نو زه به هغه ځای د خپل ځان د پاره د مونخ ځای جوړ کوم.

قوله: سَالَ الْوَادِي، ددې مطلب دادې چه په وادئ کښې اوبه بهیږي، په دې جمله کښې د محل اطلاق په حال باندې کړې شوې دې. (۲)

د صحیح مسلم (۳) او طبراني (۴). روایت کښې ددې جملې په ځای: إِذَا كَانَتِ الْأَمْطَارُ سَالَ الْوَادِي الَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ، لَمْ أُسْتَطِعْ أَنْ آتِيَ مَسْجِدَهُمْ الْفَاضِلُ هُم رَاغِلِي دې چه کله بارانونه وی نو هغه وادی کومه چه زما او زما د قوم په مینخ کښې ده هغه د اوبو نه ډکېږي د کوم په وجه

(۱) فتح الباری: ۶۷۳/۱ عمدة القاری: ۷۴۲/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۴۷/۴.

(۳) حدثني حرملة بن يحيى التجيبي، أخبرنا ابن وهب، أخبرني يونس، عن ابن شهاب، أن محمود بن الربيع الأنصاري، حدثني أن عتبان بن مالك - وهو من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ممن شهد بدرا من الأنصار - أنه أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: يا رسول الله! إني قد أنكرت بصرى، وأنا أصلى لقومي. وإذا كانت الأمطار سال الوادي الذي بيني وبينهم ولم أستطع أن آتي مسجدهم فأصلى لهم. ووددت أنك يا رسول الله! تأتي فتصلي في مصلي، فأتخذ مصلي، قال: فقال: رسول الله صلى الله عليه وسلم: سأفعل إن شاء الله..... (صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: الرخصة في التخلف عن الجماعة بعذر، رقم الحديث: ۲۵۶).

(۴) حدثنا مطلب بن شبيب الأزدي، ثنا عبدالله بن صالح، حدثني الليث، عن عقيل - ح - وحدثنا عمرو بن أبي الطاهر بن السرح المصري، ثنا محمد بن عزيز الأيلي، ثنا سامة بن روح، عن عقيل، أخبرني محمد بن مسلم، أن محمود بن الربيع الأنصاري، أخبره أن عتبان بن مالك، وهو من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ممن شهد بدرا من الأنصار أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: يا رسول الله! إني قد أنكرت بصرى وإني أصلى بقومي، فإذا كانت الأمطار سال الوادي بيني وبينهم، فلم أستطع أن آتي مسجدهم فأصلى لهم..... (المعجم الكبير للطبراني، عتبان بن مالك، رقم الحديث: ۱۴۷۵۹)

چه زه د جمات پورې د راتلو قدرت نه لرم.

قوله: بینی وینهم، د اسماعیلی په روایت کښې دی: «بین مسکنی و بین مسجد قومی» (۱)

قوله: ووَدَدْتُ، د دال کسره او فتحه دواړه شان مستعمل دي. هم دغه شان د دې مصدر «وَدَدَ» او

«وَدَدْتُ» هم دواړه شان یعنی د واو فتحې او ضم سره مستعمل دي. (۲)

قوله: فتصلی:، او «فاتخذة» دواړه مجزوم او منصوب لوستل جائز دي. (۳)

قوله: قَالَ: فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَأَفْعَلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ» قَالَ عِتْبَانُ: فَقَدَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ جِيْنَ ارْتَفَعَا النَّهَارَ، فَاسْتَأْذَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَذِنَتْ لَهُ:

راوی وائی چه رسول الله ﷺ ارشاد او فرمائیلو ان شاء الله ډیر زره داسې او کریم. حضرت عتبان رضی الله عنه فرمائی چه په دویمه ورځ چه کله ورځ رنرا شوه نو رسول الله ﷺ او حضرت ابوبکر رضی الله عنه تشریف راوړو او (کور ته د داخلیدو) اجازت ئی او غوښتلو نو ما اجازت ورکړو. د ان شاء الله وئیلو مقصد:

قوله: سَأَفْعَلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ، په دې جمله کښې لفظ ان شاء الله نه مقصود تبریک نه دي بلکه تعلیق دي چه که د الله تعالی رضا ماسره شوه نو زه به راځم. دویم قول دادې چه لفظ ان شاء الله هم د برکت حاصلولو دپاره دي نه چه د تعلیق دپاره، دا معنی به په هغه صورت باندي محمول وی چه د الله تعالی د طرف نه حضور پاك ته خبر ورکړې شو چه زره به تاسو دا کار کوئ. (۴)

قوله: قَالَ عِتْبَانُ: فَعَدَا، د دې نه دمخکښې پورې عبارت د محمود رضی الله عنه راوی وو او د دې پس مکمل روایت هم د حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه په خله دي، په دې اعتبار سره د اوس نه دمخکښې پورې روایت به د هغوی په مراسیلو کښې شمیرلې شی ځکه چه ظاهر هم دغه دی چه هغوی به دا هم د حضرت عتبان رضی الله عنه نه اوریدلې وی مگر بیان ئی د حوالې نه بغیر او کړو. (۵)

نبی کریم صلی الله علیه و آله سره څومره صحابه گرامو تشریف راوړو؟

قوله: فَقَدَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ، په دې روایت کښې رسول الله ﷺ سره صرف حضرت ابوبکر رضی الله عنه تشریف راوړې وو. تردې چه د اوزاعی رضی الله عنه د روایت مطابق حضرت عتبان رضی الله عنه دا خبره بیانولو سره د دغه دواړو حضراتو دپاره د تشنې صیغه او هم د تشنې

(۱) فتح الباری: ۱/۶۷۳ عمدة القاری: ۴/۲۴۷.

(۲) فتح الباری: ۱/۶۷۳ عمدة القاری: ۴/۲۴۷.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۷۴ عمدة القاری: ۴/۲۴۷.

(۴) فتح الباری: ۱/۶۷۴ عمدة القاری: ۴/۲۴۷.

(۵) فتح الباری: ۱/۶۷۴.

ضمير استعمال كرو، يعني "فأستأذنا فأذنت لهما" (١) ليكن په نورو روایاتو کښې د حضرت عمر رضي الله عنه هم د تشریف راوړلو ذکر ملا وپېرې. (٢)

د طبرانی په روایت کښې "فی نفر من أصحابه" الفاظ دي. (٣) په یو بل روایت کښې "فأتان ومن شاء الله من أصحابه" الفاظ دي. (٤)

په دې مختلفو روایاتو کښې شارحینو داسې تطبیق کړې دي چه په شروع کښې د حضور پاک سره صرف هم حضرت ابوبکر رضي الله عنه ووبیا ورسره حضرت عمر رضي الله عنه او بعضې نور صحابه کرام هم یوځای شو. (٥)

قوله: فَلَمْ يَجْلِسْ حَتَّى دَخَلَ الْبَيْتَ، ثُمَّ قَالَ: «أَبِنَ نُجَيْبٍ أَنْ أَصَلِيَ مِنْ بَيْتِكَ» قَالَ: فَأَثَرْتُ لَهُ إِلَى تَاجِيَةِ مِنَ الْبَيْتِ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبَّرَ، فَقُنْنَا فَصَفْنَا فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ: رَسُولُ اللَّهِ ﷺ چه کله کورته ورداخل شو نو تشریف ئی کینخودو او معلومات ئی اوکړو چه

(١) فتح الباری: ١/٦٧٤ عمدة القاری: ٤/٢٤٧.

(٢) حدثنا مطلب بن شعيب الأزدي. ثنا عبدالله بن صالح، حدثني الليث، عن عقيل - ح - وحدثنا عمرو بن أبي الطاهر بن السرح المصري، ثنا محمد بن عزيز الأيلي، ثنا سلامة بن روح، عن عقيل، أخبرني محمد بن مسلم، أن محمود بن الربيع الأنصاري، أخبره أن عتبان بن مالك، وهو من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ممن شهد بدرا من الأنصار أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: يا رسول الله! إنى أنكرت بصرى وإنى أصلى بقومى، فإذا كانت الأمطار سال الروادى بينى وبينهم، فلم أستطع أن أتى مسجدهم فأصلى لهم، فوددت يا رسول الله! أن تصلى فى مصلى أتخذة مصلى، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: سأفعل إن شاء الله فقال عتبان: فغدا رسول الله صلى الله عليه وسلم وأبو بكر وعمر حيث ارتفع النهار.... (المعجم الكبير للطبرانى، عتبان بن مالك، رقم الحديث: ١٤٧٦٢)

(٣) حدثنا محمد بن العباس المزدب، ثنا محمد بن بكير الحضرمي، ثنا عامر بن يساف، عن سعيد بن أبي عروبة، عن قتادة، عن النضر بن أنس، عن أنس قال: لما أصيب عتبان بن مالك فى بصره، بعث إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، أحب أن تأتيني فتصلى فى بيتى، وتدعولنا بالبركة، فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فى نفر من أصحابه، فدخلوا عليه، فتحدثوا بينهم فذكروا مالك بن الدخشم، فقال بعضهم: يا رسول الله! ذاك كهف المنافقين وماواهم، فأكثروا فيه، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أوليس يصلى؟ قالوا: نعم يا رسول الله! صلاة لا خير فيها، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: نهيت عن قتل المصلين، مرتين. (المعجم الكبير للطبرانى، عتبان بن مالك الأنصاري، رقم الحديث: ١٤٧٥٣).

(٤) حدثنا شيبان بن فروخ، حدثنا سليمان يعني ابن المغيرة، قال: حدثنا ثابت، عن أنس بن مالك، قال: حدثني محمود بن الربيع، عن عتبان بن مالك، قال: قدمت المدينة، فلقيت عتبان، فقلت: حديث بلغنى عنك، قال: أصابنى فى بصرى بعض الشيبى، فبعثت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم أنى أحب أن تأتيني فتصلى فى منزلى، فأتخذة مصلى، قال: فأتى النبى صلى الله عليه وسلم، ومن شاء الله من أصحابه، فدخل وهو يصلى فى منزلى وأصحابه يتحدثون بينهم، ثم أسندوا عظم ذلك وكبره إلى مالك بن دخشم، قالوا: ودوا أنه دعا عليه فهلك، ودوا أنه أصابه شر، ففضى رسول الله صلى الله عليه وسلم الصلاة..... (صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب: من لقي الله بالإيمان، رقم الحديث: ٣٢).

(٥) فتح الباری: ١/٦٧٤ عمدة القاری: ٤/٢٤٧.

ته په خپل کور کښې کوم خانی غواړې چه زه مونځ او کړم؟ حضرت عتبان رضي الله عنه او فرمائیل چه ما حضور پاك ته د گور یو گوت طرف ته اشاره او کړه نور رسول الله صلى الله عليه وسلم اودریدو او مونځ شروع کولو دپاره ئی تکبیر یعنی الله اکبر ئی او وئیلو. مونځ هم اودریدو او حضور پاك مونځ (خپل شاته یو) صف کښې اودرولو. حضور پاك دوه رکعته مونځ او کړو او سلام ئی او گرځولو.

په دوو مختلفو مقاماتو کښې د نبی د مختلف عمل:

قوله: فَلَمْ يَجْلِسْ، د حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه کور ته تشریف راوړلو واقعہ کښې دی چه حضور پاك د هغه په کور کښې کینه ناست بلکه کور ته رسیدو سره ئی تپوس او کړو چه وایه د کور په کومه حصه کښې په ما باندې مونځ کول غواړې. او حضور پاك صلى الله عليه وسلم یو ځل داسې د حضرت ام سلیم رضي الله عنها په کور کښې هم مونځ ادا کړې وو نو هلته رسیدو سره ئی مونځ نه وو ادا کړې بلکه هلته ئی اول خوراک او کړوبیائی مونځ کړې وو.

نو په دواړو واقعاتو کښې د عمل د فرق وجه دا معلومیرې چه د حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه کور ته د تشریف راوړلو مقصد هلته صرف هم مونځ ادا کول وو. لهذا هلته په رسیدو سره ئی اصلی مقصد پوره کړو هغې نه پس ئی ورسره خوراک هم او کړو. او د حضرت ام سلیم رضي الله عنها د طرف نه خو دعوت هم د خوراک ملاؤ شوې وو لهذا د هغې کورته په رسیدو سره ئی اول خوراک او کړو او بیای دې سره سره د هغې په درخواست باندې: برکت د پاره مونځ هم ادا کړو. (۱)

حضرت عبدالله بن ام مکتوم رضي الله عنه ته خو په کور کښې د مونځ کولو اجازت نه وو ملاؤ شوې بیا ده ته څنگه ملاؤ شو؟ دلته یو سوال پیدا کیږی چه ابن ام مکتوم رضي الله عنه هم حضور پاك نه په کور کښې د مونځ ادا کولو اجازت غوښتې وو او حضرت عتبان رضي الله عنه هم اجازت او غوښتو لیکن حضور پاك ابن ام مکتوم رضي الله عنه ته اجازت ورنه کړو او ده ته ئی اجازت ورکړو، ددې فرق څه وجه ده؟

نوددې جواب دادې چه ابن ام مکتوم رضي الله عنه پیدائشی نابینا وو دداسې بنده حسیات ډیر تیز وی د هغه د پاره تلل راتلل مشکل نه وو، آسان وو، په دې وجه ئی هغه ته اجازت ورنه کړو په خلاف د ده چه دې پیدائشی نابینا نه وو اول ئی نظر کمزورې شو بیا دغه د نظر کمزوری زیاتیدله نود هغه د پاره زیات مشقت وو په دې وجه هغه ته اجازت ملاؤ شو.

دویم جواب دادې چه ابن ام مکتوم رضي الله عنه د مسجد نبوی نه د تخلف اجازت غوښتې وو او دوی د محلی د جمات نه د تخلف اجازت اخستې وو.

دریم جواب دا دی چه د ابن ام مکتوم رضي الله عنه تعلق د نبی کریم صلى الله عليه وسلم سره په نسبت د حضرت عتبان بن مالك رضي الله عنه زیات وو په دې وجه هغه ته اجازت ملاؤ نه شو.

څلورم جواب دادې چه د سورت عبس د نازلیدلو نه پس به حضور پاك د ابن ام مکتوم رضي الله عنه ډیر زیات خیال ساتلو هم ددې په وجه ئی هغه د خپل خان نه لرې کول مناسب نه گنرل.

پنجم جواب دادې چه ابن ام مکتوم رضی الله عنه ته ئی په عزیمت باندي د عمل کولو دعوت ورکړو او حضرت عتبان رضی الله عنه ته ئی په رخصت باندي د عمل کولو اجازت ورکړو.

قوله: حَتَّى دَخَلَ: دا د کشمیهنی روایت دې په نورو روایاتو کښې د حین دغل الفاظ هم ملاویری. په دې صورت کښې به معنی دا شی چه حضور پاک د هغه په کور کښې داخلیدو پورې چرته به ځائی کښې کینه ناستو بلکه نیغ ئی د هغه کور ته تشریف یووړو. (۱)

قوله: قَالَ وَحَسَنَاءُ عَلَى خَزِيرَةَ صَنَعْنَا هَالَهُ: حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه او وئیل چه ما حضور پاک د حلیم (خورلو) د پاره ایسار کړو چه مونږ په (خاص توگه) د حضور پاک د پاره تیار کړې وو.

قوله: وَحَسَنَاءُ: ددې معنی ده چه مونږ حضور پاک د واپس کیدو نه منع کړو. (۲)

خَزِيرَةَ: معنی: خزیره، د ځاء په فتحې او زاء کسرې سره د عربو د یو قسم خوراک نوم دې. د کوم د پخولوو طریقه دا وه چه د غوښې به وړې وړې تکرې جوړې کړې شی او بیا به ئی هغه په اوبو کښې پخولې چه کله به ښه پخې شوې نو د پاسه به ئی پرې اوږه دورول. (۳)

قوله: قَالَ: فَثَابَ فِي الْبَيْتِ، رَجَالَ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ ذُو وَعَدَدٍ، فَاجْتَمَعُوا، فَقَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ: أَيُّنَ مَالِكِ بْنِ الدُّخَيْنِ أَوْ أَيُّنَ الدُّخَيْنِ؟ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: ذَلِكَ مُنَافِقٌ لَا يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ:

حضرت عتبان رضی الله عنه او وئیل چه بیا د محلي یو څو کسان راغله راجمع شو بیا په هغوی کښې یو وینا کونکی او وئیل چه مالک بن دخیشن یا مالک بن دخشن چرته دې؟ نو په هغوی کښې چا او وئیل چه هغه خو منافق دې د الله او د هغه رسول صلی الله علیه و آله سره محبت نه لری.

قوله: فَثَابَ فِي الْبَيْتِ، رَجَالَ، په عام توگه دستور دا وی چه یو بزرگ چرته تشریف راوړی نو خلق د هغه د زیارت، مصافحې او ملاقات د پاره حاضریری. نو دلته هم داسې اوشو چه د حضرت عتبان رضی الله عنه په کور کښې خلق راجمع شو او ولې به نه راجمع کیدل؟ هلته خود صحابه کرامو محبوب ترین هستی رسول الله صلی الله علیه و آله تشریف راوړې وو.

قوله: فَثَابَ، معنی جمع کیدل او راتلل دی. (۴)

قوله: مِنْ أَهْلِ الدَّارِ، ددې نه مراد محله ده لکه څنگه چه په یو بل حدیث شریف کښې هم د "دار" نه محله مراد اخستې شوې ده. (۵)

قوله: فَقَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ، دا وینا کونکې څوک وو؟ دې باره کښې وضاحت نه ملاویری.

(۱) فتح الباری: ۱/۶۷۴ عمدة القاری: ۲۴۷/۴.

(۲) فتح الباری: ۱/۶۷۴ عمدة القاری: ۲۴۷/۴.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۷۵ عمدة القاری: ۲۴۷/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۴۹/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۴۹/۴.

صحیح لفظ الدُّخِشِنُ نه بلکه الدُّخِشِمُ دے:

نولہ: ابن الدُّخِشِنِ أَوَابِنُ الدُّخِشِنِ؟ ددی دوارو اسمونو پہ مینخ کنسی د کلمی او مطلب دادی چه راوی حدیث ته شک شوی دے چه دا اسم تصغیر سره الدُّخِشِنُ دے یا تصغیر نه بغیر الدُّخِشِنِ. نو پہ دے باره کنسی خان پوهه کرئی چه په دے اسماء کنسی دواره لغات صحیح نه دی خکه چه صحیح لفظ ابن الدُّخِشِمِ أَوَابِنُ الدُّخِشِمِ دے. یعنی د نوم په آخره کنسی میم دے نه چه نون. لکه چه د صحیح مسلم په روایت کنسی مالک بن دخشم ذکر دے. او امام طبرانی رحمته اللہ علیہ هم د احمد بن صالح رحمته اللہ علیہ نه نقل کری دی چه صحیح په میم سره دے. یعنی دخشم (۱) نولہ: فَقَالَ بَعْضُهُمْ، ددغه قائل باره کنسی دا خبره ملاویری چه دا د حدیث راوی حضرت عتبان رضی اللہ عنہ وو. علامه ابن عبدالبر رحمته اللہ علیہ په التمهید کنسی دا خبره ذکر کری ده چه هغه سرے چاچه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سره د منافقانو نه د یوسری د قتل گولو باره کنسی غور کنسی پته خبره او کره هغه عتبان وو. او هغه سرے د کوم طرف ته چه د نفاق اشاره او کری شوه هغه مالک بن دخشم وو. (۲)

حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی چه ابن عبدالبر رحمته اللہ علیہ ددی خبری د ذکر گولو نه پس د حضرت عتبان رضی اللہ عنہ مذکورہ حدیث شریف ذکر کوی. حالانکه د هغوی په دے دعوی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سره غور کنسی پته خبره کونکی سرے عتبان وو، باندی هیخ دلیل نشته دے. (۳)

ابن حجر رحمته اللہ علیہ نور فرمائی چه المغازی لابن اسحاق کنسی دا خبره ذکر ده چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم مالک (بن دخشم) او معن بن عدی رضی اللہ عنہما مسجد ضرار سوزولو د پاره لیرلی وو. حضور پاک دغه دواره حضرات د منافقانو جوړ کری شوی جمات ته اور لگولو د پاره لیرل ددی خبری دلیل دے چه دا دواره حضرات د نفاق د تهمت نه بری دی. یا چه د کوم نفاق د هغوی طرف ته تهمت لگولې شوی وو هغه نفاق د کفر والا نفاق نه وو نو بیا صحابه کرامو رضی اللہ عنہم هغوی داسی خکه گنرلې وو چه دوی منافقانو سره خه تعلقات لرل. د کوم په وجه چه هغوی هم د منافقانو په صف کنسی شامل او گنرلې شول. حالانکه په مدینه کنسی اوسیدونکی منافقان د قبیلہ اوس او خزرج نه وو نو هغوی سره د معاشرتی تعلقات خوئی وو. ددی نه علاوه د یوی بلې خبری احتمال هم دے چه هغه وخت د هر منافق سرے حالت د نفاق په ټولو باندی ښکاره نه وو لهذا عین ممکن ده چه د حضرت مالک بن دخشم چه د چا سره تعلقات وو هغه د دوی په نظر کنسی منافق نه وو او د نورو په نظر کنسی منافق وو. (۴)

(۱) فتح الباری: ۶۷۵/۱ عمدة القاری: ۲۴۹/۴.

(۲) وأما الرجل الذي سار رسول الله صلى الله عليه وسلم فهو عتبان بن مالك، الرجل المتهم بالاتفاق والذي جرى فيه هذا الكلام هو مالك بن الدخشم. (التمهيد لابن عبدالبر، تابع حرف الميم، تابع لمحمد بن شهاب الزهري، الحديث السابع والثلاثون: ۱۰/۱۴۹).

(۳) فتح الباری: ۶۷۵/۱ عمدة القاری: ۲۴۹/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۷۵/۱.

ابن حجر رحمته الله يروى بل جواب ليكلي دي چه ممكن ده د دغه تعلقاتو په حواله دهغه حاطب بن ابى بلتعه، طرف ته خه عذروى (١)

الغرض دا خبره يقينى ده چه حضرت مالك بن دخشم رضي الله عنه منافق نه وو گنى نبى كريم صلى الله عليه وسلم به دهغه براءت نه كولو.

قوله: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَقُلْ ذَلِكَ، الْآتِرَاءُ قَدْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، يُرِيدُ بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ" قَالَ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّا نَرَى وَجْهَهُ وَنَصِيحَتَهُ إِلَى الْمُنَافِقِينَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنِ اللَّهُ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِمَنِ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ:

نو رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل داسې مه وايئ آيا تاسو نه گورئى چه هغه صرف د الله تعالى د رضا د پاره لا اله الا الله وائى. نو دغه سړى او وئيل چه الله او دهغه رسول ډير ښه پوهيږي مونږ خود ده توجه او همدردى د منافقانو سره گوزو. رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل الله تعالى په هر هغه سړى باندي جهنم حرام كړې دي چه د الله تعالى د راضى كولو د پاره لا اله الا الله او وائى.

قوله: فَإِنَّا نَرَى وَجْهَهُ: په دي جمله كښې د "وجهه" نه مراد توجه ده. يعنى مونږ د هغه توجه د

(١) فتح الباري: ٦٧٥/١. حافظ ابن حجر رحمته الله په خپل دي قول كښې د حاطب بن ابى بلتعه چه د كوم عذر طرف ته اشاره كړې ده دهغي نه مراد هغه قصه ده په كوم كښې چه حاطب بن ابى بلتعه د غزوه احد په موقع دمكي د مشركانو طرف ته د جنگ خبر رسولو كوشش كړې وو. بيا چه كله حضرت عمر فاروق رضي الله عنه اجازت او غوښتو چه اي د الله رسوله ده ست دي والوزولى شي نو حضور پاك او فرمائيل چه نه دا د اصحاب بدر نه دي. د چا چه ټول گناهونه الله تعالى مغاف كړي دي. او هغه په خبر ور كولو كښې دا عذر بيان كړې وو چه اي د الله رسوله دا وجه هيڅ كله نه وه چه په الله او دهغه په رسول باندي زما ايمان باقى پاتې نه وو بلكه زما مقصد صرف دومره وو چه په قريشو په زما دا يو احسان او شى د كوم په وجه چه به هغوى هلته زما د بال بيع حفاظت كوي. نو نبى كريم صلى الله عليه وسلم د هغه د دي قول تصديق او كړو او هغه ئې برى كړو. پوره قصه د عام فائدي د خاطره دلته نقل كولى شي: عن على بن ابي طالب قال بعثنى رسول الله صلى الله عليه وسلم وأبا مرثد الغنوي والزبير بن العوام وكلنا فارس، قال: انطلقوا حتى تأتوا روضة خاخ، فإن بها امرأة من المشركين معها كتاب من حاطب بن ابى بلتعه إلى المشركين، فأدركنها تيسير على بغير لها حيث قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلنا: الكتاب؟ فقلت: ما معنا كتاب، فأفضناها، فالتسنا، فلم نر كتاباً، فقلنا: ما كذب رسول الله صلى الله عليه وسلم، لتخرجن الكتاب أو لنجردنك، فلما رأته الجداهوت إلى حجرتها وهي محتجزة بكساء، فأخرجته فانطلقنا بها إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال عمر: يا رسول الله! قد كان الله ورسوله والمؤمنين، فدعنى فلاضرب عنقه، فقال النبي صلى الله عليه وسلم ما حملك على ما صنعت؟ قال حاطب: والله ما بى أن لا أكون مؤمناً بالله ورسوله صلى الله عليه وسلم، أردت أن يكون لى عند القوم يد يدفع الله بها عن أهلى ومالى وليس أحد من أصحابك إلا له هناك من عشيرته من يدفع الله به عن أهله وماله، فقال النبي صلى الله عليه وسلم: صدق، ولا تقولوا له إلا خيراً، فقال عمر: أنه قد خان الله ورسوله والمؤمنين، فدعنى فلاضرب عنقه، فقال: أليس من أهل بدر، فقال: لعل الله اطلع إلى أهل بدر، فقال: اعملوا ما شئتم، فقد وجبت لكم الجنة أو فقد غفرت لكم، فدمعت عيناه، وقال: الله ورسوله أعلم. (صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب: فضل من شهد بدرًا، رقم الحديث: ٣٩٨٣).

منافقانو طرف ته گورو. (۱)

قوله: وَنَصِيحَتُهُ إِلَى الْمُنَافِقِينَ: علامه کرمانی رحمته الله لیکلی دی چه که چرته دلته خوک اشکال او کړی چه په دې جمله کښې د نصیحتته صله الی صحیح نه ده ځکه چه ددې صله لام استعمالیږی ال نه نو ددې جواب دادې چه نصح په دې مقام باندې د الی معنی ته متضمن دې. (۲)

حافظ ابن حجر رحمته الله د علامه کرمانی جواب نقل کولو نه پس لیکلی دی چه دا جمله الی المنافقین د وجهه سره متعلق کړې شی نوبیا هیخ اشکال نشته، ځکه چه د وجهه صله الی استعمالیږی او په دې صورت کښې که د نصیحتته صله محذوف او کنزلی شی نو خبره به صحیح شی. (۳)

په دې باندې علامه عینی رحمته الله په حافظ صاحب باندې هم رد کولو سره دا فرمائی چه دومره خبره کافی ده چه په دې جمله کښې الی المنافقین د وجهه سره متعلق کړې شی او په دې باندې نصیحتته عطف کړې شی ددې نه پس د نورې وینا کولو ضرورت نشته چه نصیحتته صله محذوف او کنزلی شی نو خبره به صحیح شی. ځکه چه معطوف خو د معطوف علیه په حکم کښې وی ددې وجهی نه د معطوف د پاره د جدا صلی محذوف راویستلو حاجت نشته دې. (۴)

شیخ الحدیث صاحب نورالله مرقده فرمائی که چرې دې حضراتو دهغه په نه راتلویاندي د غصې په وجه دا خبره او کړه نو په دې کښې هیخ خبره نشته، په غصه کښې داسې کیږی او که چرې غصه نه وه بلکه په واقع کښې ئی داسې کنزلی سره دا او وئیل نو هغوی ته به معلومه نه وه او حضور پاک ته به د وحی په ذریعه معلومه شوې وی. په دې وجه حضور پاک

لا تقل ذلك، ألا تراها قد قال: لا إله إلا الله، يريد بذلك وجه الله، او فرمائیل (۵)

قوله: قَالَ ابْنُ شَهَابٍ: ثُمَّ سَأَلْتُ الْحَصِينَ بْنَ مُحَمَّدٍ الْأَنْصَارِيَّ - وَهُوَ أَحَدُ بَنِي سَالِمٍ - وَهُوَ مِنْ سُرَاتِيمٍ، عَنْ حَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيِّ: «فَصَدَّقَهُ بِذَلِكَ».

ابن شهاب رحمته الله او وئیل چه بیا ما د حصین بن محمد انصاری نه چه د قبیله بنو سالم یو کس اود هغوی د سردارانو نه دې د محمود بن ربیع ددې حدیث باره کښې تپوس او کړو نو هغوی ددې تصدیق او کړو.

قوله: قَالَ ابْنُ شَهَابٍ، ددې نه د یو نوی تعلیق بیان نه دې بلکه دا قول په سابقه سند سره

(۱) فتح الباری: ۱/۶۷۶ عمدة القاری: ۴/۲۵۰.

(۲) شرح الکرمانی: ۸۵/۴.

(۳) فتح الباری: ۱/۶۷۶.

(۴) عمدة القاری: ۴/۲۵۰.

(۵) تقریر بخاری شریف: ۳/۱۵۸.



هغوی ارشاد کړې دې (۱) لیکن د علامه عینی رحمته الله علیه خیال دې طرف ته دې چه دا تعلیق دې خکه چه د قال ابن شهاب شروع د حرف عطف نه بغیر ده. (۲)

قوله: قَالَ ابْنُ شَهَابٍ: ثُمَّ سَأَلْتُ، شَيْخَ الْحَدِيثِ مَوْلَانَا مُحَمَّدَ زَكْرِيَّا كَانْدَهْلَوِي رحمته الله علیه فرمائی چه د سوال وجه داده چه د روایت نه په ظاهره اهمال عمل په پوهه کښې راځی او نور روایتونه عمل غواری نو هغوی سوال او کړو چه آیا دا صحیح محفوظ دې یا د نسیان طریان شوی دې. (۳)

قوله: مِنْ سَرَاتِيمِ، داجمع ده ددې واحد سرې دې، ددې معنی "من خيارهم" یعنی د قوم د سردارانو نه یو. (۴)

په روایت باب کښې د محمود بن الربیع رحمته الله علیه د حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه د سماع صراحت نشته دې. په دې وجه امام بخاری دویم سند راوړلو سره د محمود بن الربیع تصدیق او کړو. د صحیحین نه علاوه ددې حدیث په دویم طریق کښې د محمود بن الربیع د حضرت عتبان بن مالک رضی الله عنه د سماع تصریح شته. (۵)

د روایت د ترجمه الباب سره مطابقت: د مذکوره حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت او مطابقت پوره شان سره واضح دې چه ترجمه الباب او روایت دواړو کښې په خپل کور کښې په قائمیدونکې جمات کښې په جمع سره د مونخ ادا کولو ذکر دې. (۶)

د حدیث شریف نه مستنبط شوی فوائد او احکام: د مذکوره حدیث شریف نه ډیر زیات فوائد او احکام معلومیږی په کوم کښې چه څه دلته لاندې نقل کولې شی:

- ① د عذر د وجې د جمع نه پاتې کیدل او په کور کښې خپل مونخ کول جائز دی. (۷)
- ② په نیکانو خلقو په یو ځای کښې په مونخ کولو سره برکت حاصلول جائز دی. (۸)
- ③ د برکت د حاصلولو په غرض څوک خپل کور ته راوغوښتی شی نو هغه له هم پکار دی چه دده دعوت قبول کړی. (۹)
- ④ د مذکوره حدیث نه د وعدې پوره کولو او سرته د رسولو هم علم کیږی. (۱۰)

(۱) فتح الباری: ۶۷۶/۱.

(۲) عمدة القاری: ۲۵۰/۴.

(۳) تقریر بخاری شریف: ۱۵۸/۲.

(۴) فتح الباری: ۶۷۶/۱ عمدة القاری: ۲۵۰/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۵۱/۴.

(۶) عمدة القاری: ۲۴۶/۴.

(۷) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمدة القاری: ۲۵۱/۴.

(۸) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۴۴۲/۵ عمدة القاری: ۲۵۱/۴.

(۹) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۴۴۲/۵ عمدة القاری: ۲۵۲/۴.

(۱۰) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمدة القاری: ۲۵۲/۴.

- ⑤ کله چه کور ته څوک نیک بنده یا عالم و غیره راوغوښتی شی نوډ هغه د خوراک څښاک په څه خیزسره اکرام هم کول پکار دی (۱)
- ⑥ داهم معلومیری چه د حاکم په وړاندې د یو فاسق و غیره باره کښې خبر ورکول جائز دی. (۲)
- ⑦ دا هم معلومه شوه چه کله د جمعې وخت وی او د مونځ گذارو نه څوک چرته غیب وی نو امام له پکار دی چه د هغه باره کښې تپوس پوښتنه او کړی. (۳)
- ⑧ داهم معلومه شوه چه د یو کشر د پاره خپل مشر د څه مصلحت په غرض خپل خواله په راغوښتلو کښې څه بې ادبی یا حرج نشته دې. (۴)
- ⑨ د کور والو په رضا او اجازت سره د میلمه د کوربه په کور کښې په جمع مونځ کول جائز دی. (۵)
- ⑩ د چاکورته د داخلیدو اجازت اخستل پکار دی اگر چه راتلونکې سړې د هغوی په رابللو راغلي وی. (۶)
- ⑪ داهم معلومه شوه چه چرته یو بزرگ شخصیت راځی نوډ هغه د زیارت او ملاقات د پاره حاضریدل پکار دی. (۷)
- ⑫ په کور کښې دننه یو ځانی د مونځ د پاره مستقل کولو کښې هیڅ حرج نشته. په خلاف د جمات چه هلته د یو مونځ گذار یو ځانی مستقل کول مکروه دی. (۸)
- ⑬ د کوم سړی مرگ چه په توحید باندې وی هغه به همیشه په دوزخ کښې نه وی. (۹)
- ⑭ د نایینا سړی د امامت جواز هم معلومیری. (۱۰)
- ⑮ د جمات نسبت د قوم طرف ته د کولو جواز هم معلومیری. (۱۱)
- ⑯ د یو سړی په خپل ځان باندې د واقع کیدونکې مصیبت خبر ورکول په شکایت کښې داخل نه دی. (۱۲)

(۱) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۵۵/۵ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۵۵/۵ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۴) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۴۶/۵ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۵) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۵۳/۵ عمده القاری: ۲۵۱/۴.

(۶) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۴۶/۵ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۷) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۸) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ التوضیح لابن الملتن: ۵۱/۵ عمده القاری: ۲۵۱/۴.

(۹) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۱۰) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمده القاری: ۲۵۱/۴.

(۱۱) شرح الکرمانی: ۸۶/۴ عمده القاری: ۲۵۲/۴.

(۱۲) عمده القاری: ۲۵۱/۴.

⑥ په کور کښې جمات جوړول مباح دی لیکن دا جوړشوي جمات به شرعی جمات نه وي. لهذا ددې خرڅول به جائز وي. (۱)

### ۱۵- بَابُ: التَّيْمَنُ فِي دُخُولِ الْمَسْجِدِ وَغَيْرِهِ

د اباب په جمات کښې ښې خپې سره د داخلیدو او (جمات ته د داخلیدو نه علاوه)

د نورو کارونو د ښې طرف نه د شروع کولو باره کښې دي.

د ترجمه الباب تشریح: د ترجمه الباب تشریح کولو سره علامه کرمانی رحمته الله علیه لیکلی دی چه د

لفظ "غیره" عطف به په "دخول" باندې وي نه په "مسجد" باندې او دغه شان التیمن باندې به

هم عطف نه وي. (۱) حافظ ابن حجر رحمته الله علیه هم د علامه کرمانی رحمته الله علیه والا قول اختیار کړې دي. (۲)

علامه عینی رحمته الله علیه د دواړو حضراتو تحقیق ذکر کولو نه پس فرمائی چه ددې خبرې هیڅ وجه

نشته دي چه د لفظ "غیره" عطف په مسجد باندې اونه کړې شی بلکه ددې عطف خو په

مسجد باندې صحیح دي. نو اوس به مطلب دا شی چه که مسجد وي او که غیر مسجد یعنی

کور وغیره هر دواړو ځایونو کښې دخول هم په ښې خپې سره کول پکار دي. (۳)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه هم دغه خبره ارشاد فرمائی: قوله: وغیره، ددې عطف په

دخول باندې دي او په مسجد باندې هم ددې عطف کیدې شی. حافظ ابن حجر رحمته الله علیه فرمائی

چه په دخول باندې عطف کول زیات مفید دي. حضرت شیخ صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه زما په

نیز دویم احتمال (په مسجد باندې عطف کول) راجح دی او غرض دا چه د حضور پاک د ټولو

امورو عموم کښې مسجد ته تلل هم شامل دی. مطلب دا چه د مسجد نه علاوه په نورو

متبرک ځایونو کښې هم د ښې طرف خیال ساتل پکار دي. (۴)

د ترجمه الباب مقصد: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه ما په شروع کښې بیان

کړې وو چه امام بخاری رحمته الله علیه ۵۵ ابواب د مساجد ذکر کړې دي او په دغه ابوابو کښې هغوی

درې څیزونه ذکر کوي. یو هغه افعال کوم چه په جماتونو کښې کول جائز دي. دویم د مسجد

آداب او دریم هغه امور دکومو چه په جماتونو کښې کول د احترام خلاف دي. نو حضرت

امام بخاری رحمته الله علیه دلته دا ادب ذکر کړو چه جمات ته د داخلیدو ادب دا دي چه اول دي ښې خپه

داخله کړي او ددې وجه داده چه جمات متبرک ځای دي او ښې خپه مکرم ده. لهذا د متبرک

د پاره دي مکرم استعمال کړې شی او د جمات نه وتلو کښې ددې خلاف یعنی گسه خپه دي

اول اوباسی. (۵)

(۱) التوضیح لابن الملتن: ۴۴۲/۵.

(۲) شرح الکرماني: ۸۶/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۷۸/۲.

(۴) عمدة القاری: ۲۵۲/۴.

(۵) الأبواب والتراجم: ۲۱۲/۲.

(۶) تقریر بخاری شریف: ۱۵۸/۲ سراج القاری: ۷/۳.

تعلیق: وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ: «يَبْدَأُ بِرُجْلِهِ الْيُمْنَى فَإِذَا خَرَجَ بَدَأَ بِرُجْلِهِ الْيُسْرَى»

د تعلیق ترجمه: حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما به جمات کبسی د داخلیدو په وخت اول خپله بڼې خپه دننه کیخودله او کله چه به وتلو نو اول په نږی گسه خپه بهر راویستله.

د تعلیق تخریج: امام بخاری رحمته اللہ علیہ مرفوعاً هیخ یوروایت نه دې پیش کړې. البته د صحابی عمل نږی ددې عمل د پاره ذکر کړې دې. او حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما چه به په سنت باندي په خومره سختی سره عمل کونکې وو هغه دنمر په شان ښکاره ده. البته د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما ددې فعل تائید د المستدرک للحاکم د یوروایت نه کیږي. (۱) په کوم کبسی چه حضرت انس رضی اللہ عنہ دا فرمائی چه دا عمل سنت دې چه کله ته جمات ته داخلیرې نو د بڼې خپې داخلیدو سره شروع کوه او کله چه راوځي نو په کس قدم سره د وتلو شروع کوه.

اوس هم دا روایت ولې امام بخاری رحمته اللہ علیہ پیش نه کړو. نو ددې جواب دادې چه دا حدیث دهغوی د شرائطو مطابق نه وو. په دې وجه هغوی ددې په ځائی د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما اثر پیش کولو باندي اکتفاء کړې ده. (۲)

شارحینو په خپلو کتابونو کبسی دا خبره لیکلې ده چه د صحابی رسول "من السنة کذا" ونیل د نږی رضی اللہ عنہ نه مرفوعاً ثبوت باندي محمول وی. (۳)

د تعلیق مقصد: خپله مدعا ثابتولو د پاره چونکه امام بخاری رحمته اللہ علیہ سره د هغه د شرائطو مطابق څه مرفوع حدیث نه وو په دې وجه هغوی دا اثر د صحابی ذکر کولو سره د خپلې قائم کړې شوې ترجمې اثبات کړې دې.

د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: د تعلیق او د ترجمه الباب مطابقت د دواړو د مضمون نه بالکل ښکاره دی چه په دواړو کبسی جمات ته داخلیدل بڼې خپې سره کیدل ذکر دی. (۴)

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۱۶]

۴۱۶- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْأَشْعَثِ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ (۵) كَانَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُحِبُّ التَّيْمَنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ فِي ظُهُورِهِ وَتَرَجَّلَهُ وَتَلَعَلِهِ.

د حدیث ترجمه: حضرت عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی چه خومره به ممکن کیدې شوه دومره به رسول

(۱) حدثنا أبو حفص عمر بن جعفر المقيد البصري ثنا أبو خليفة القاضي ثنا أبو الوليد الطيالسي ثنا شداد أبو طلحة قال سمعت معاوية بن قرة يحدث عن انس بن مالك أنه كان يقول: من السنة إذا دخلت المسجد أن تبدأ برجلك اليمنى، وإذا خرجت أن تبدأ برجلك اليسرى. هذا حديث صحيح على شرط مسلم. (المستدرک علی الصحيحین، کتاب الصلاة، رقم الحدیث: ۷۹۱، ۲۱۸/۱).

(۲) فتح الباری: ۶۷۸/۱.

(۳) فتح الباری: ۶۷۸/۱ عمدة القاری: ۲۵۲/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۵۲/۴.

(۵) مرتخریجه تحت الحدیث، الرقم: ۱۸۶، کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التیمن فی الوضوء والفعل.

اللہ ﷺ په هر کار کښې د نسی طرف نه شروع خوښوله. مثلاً طهارت حاصلولو کښې، گمنزه کولو کښې او پیزار اچولو کښې.

تراجم رجال: د مذکوره حدیث شریف په سند کښې ټول شپږ رجال دي:

② سليمان بن حرب: دا سليمان بن حرب بن بجيل بصرى رضي الله عنه دي. د دوی تفصیلی ذکر کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من كره أن يعود في الكفر كما يكره أن يلقى في النار من الإیمان کښې تیر شوي دي. (۱)

③ شعبه بن صالح: دا شعبه بن الحجاج رضي الله عنه دي. د دوی تفصیلی ذکر کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من سلم المسلمون من لسانه ويده کښې تیر شوي دي. (۲)

④ الأشعث بن سليم: دا الأشعث بن سليم رضي الله عنه دي. د دوی تفصیلی ذکر کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التيمن في الوضوء والغسل د دویم حدیث لاندې تیر شوي دي. (۳)

⑤ أبيه: دا سليم بن الاسود المجاربي رضي الله عنه دي. د دوی تفصیلی ذکر کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التيمن في الوضوء والغسل د دویم حدیث لاندې تیر شوي دي. (۴)

⑥ مسروق: دا مسروق بن الاعدع بن مالك همداني كوفي رضي الله عنه دي. د دوی تفصیلی ذکر کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: علامة النفاق، الحدیث الثانی کښې تیر شوي دي. (۵)

⑦ عائشه: دا ام المؤمنین حضرت عائشه بنت ابی بکر صدیق رضي الله عنها ده. د دوی تفصیلی ذکر کشف الباری، کتاب بدء الوص د دویم حدیث لاندې تیر شوي دي. (۶)

د حدیث شرح:

قوله: عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: «كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ التَّيْمَنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي شَأْنِهِ كَلْبِهِ، فِي طَهْرِهِ وَتَرْجُلِهِ وَتَنْعَلِهِ».

حضرت عائشه رضي الله عنها فرمائی چه خومره به ممکن کیدی شوه رسول الله ﷺ په دومره خپل هر کار د نسی طرف نه شروع کول خوښول. (مثلاً، طهارت حاصلولو کښې، گمنزل کولو کښې او پیزار اچولو کښې.

د مذکوره حدیث شریف تفصیلی شرح کتاب الوضوء، باب: التيمن في الوضوء والغسل د دویم حدیث لاندې تیره شوي ده. هلته مراجعت او کړنې. دلته څه ضروري تشریح ذکر کولې شی.

(۱) کشف الباری: ۱۰۵/۲.

(۲) کشف الباری: ۶۷۸/۱.

(۳) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التيمن في الوضوء والغسل.

(۴) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التيمن في الوضوء والغسل.

(۵) کشف الباری: ۲۸۱/۲.

(۶) کشف الباری: ۲۹۱/۱.

قوله: **يُحِبُّ التَّيْمَانَ**، د حضرت عائشه صدیقه رضی اللہ عنہا چونکہ حضور پاک سره ډیر زیات محبت وو په دې وجه هغې ته د نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم د محبوب عادت معلومیدل قرین قیاس دی. اوس دا علم څنگه او شو؟ نو ددې جواب دادې چه دا علم پخپله د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم په خودلو سره کیدل هم ممکن دی او د هغوی قرائنو نه اندازې لگولو په ذریعه هم ممکن دی. والله اعلم بالصواب. (۱).

حضرت شیخ الحدیث رحمته اللہ علیہ فرمائی چه امام بخاری رحمته اللہ علیہ ددې روایت د عموم نه تیسمن فی دخول المسجد باندي استدلال کړې دې چه کله ئی په هر څیز کښې ښې طرف خوښولو نو جمات ته دښه دا خلیلد کوم چه یو متبرک عمل دې په دې کښې به ئی په درجه اولی دا خوښولو. (۲)  
قوله: **مَا اسْتَطَاعَ**، دکلمه ما باره کښې علامه عینی رحمته اللہ علیہ فرمائی چه دا موصوله هم کیدې شی او د تیسمن نه بدل هم کیدې شی او د ما دام په معنی هم کیدې شی. (۳)  
ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی چه دې لفظ سره دا احتمال راوځی چه مقصود دهغه څیزونو نه احتراز کول دی کوم چه کول په شرعی توگه په ښې لاس سره صحیح نه دی. مثلاً د جمات نه وتل، لیتیرین کښې دا خلیلد وغیره. دغه شان ناخوښه کارونه هم په ښې لاس سره نه شی کولې لکه استنجاء کول، د پوزې نه بلغم صفا کول وغیره. (۴)

قوله: **فِي شَأْنِهِ**، ددې جار مجرور تعلق به التیسمن سره وی داهم ممکن ده چه د المحبة سره متعلق وی او ددې هم احتمال دې چه دواړو سره متعلق وی، دتنازع په توگه. (۵)  
قوله: **طَهْرَةٌ**، دا لفظ د طاء په ضمی سره دی. ددې معنی طهارت حاصلول دی. یعنی اودس کول. او **تَرْجُلُهُ** معنی ویښتو کښې گمنزل کول دی. او **تَنْقِيلُهُ** معنی په خپو پیزار اچول دی. **طَهْوَرَةٌ** په ترکیبی اعتبار سره د **شَأْنِهِ** نه بدل دی. بدل البعض من الكل د قبیل نه. علامه عینی رحمته اللہ علیہ په دې ترکیبی احتمال باندي یو سوال او دهغې جواب هم نقل کړې دې. که چرې دا بدل البعض من الكل د قبیل نه او گرځولې شی نو په دې سره بعضی امورو کښې د ښې طرف اهتمام کول مستحب کیدل ثابت شی. حالانکه د **شَأْنِهِ** ددې تاکید **كَلِمَةٌ** تقاضا داده چه استحباب دې په ټولو امورو کښې وی نه چه په بعضی امورو کښې. نو ددې جواب دادې چه دا تخصیص بعد التعمینم دی. او په دې دريو کارونو کښې د ښې طرف نه شروع کول

(۱) فتح الباری: ۶۷۸/۱ علامه عینی رحمته اللہ علیہ دا خبره د سوال او جواب په انداز کښې ذکر کړې ده چه محبت خو امر باطنی دې. نو حضرت عائشه رضی اللہ عنہا په دغه امر باطنی څنگه خبر شوه؟ نو ددې ئی هم هغه جواب ذکر کړې دې کوم چه پورته ذکر شو. (عمدة القاری: ۲۵۳/۴)

(۲) الكنز المتوازی: ۱۱۲۵/۴ الأبواب والتراجم: ۲۱۲/۲ تقریر بخاری شریف: ۱۵۸/۲.

(۳) عمدة القاری: ۲۵۳/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۷۸/۱.

(۵) عمدة القاری: ۲۵۳/۴.

ددي شرف او ددي د اهميت د وجي نه دي. بل بدل دي بدل الكل من الكل او گر خولي شي نوبياهم صحيح دي. په دي توگه چه "ظهور" د ټولو عباداتو كنجي ده. "ترجل" يعنى دگمنزلو تعلق د سر سره دي او د "تنعل" تعلق د خپو سره دي او د انسان ټول احوال يا خودده د پورته حصي سره متعلق وي يا لاندي حصي سره يا د اطرافو سره، نو په دي كنجي نى د هر حالت سره متعلق هم دهغي په شان لفظ ذكر كړو. دي د پاره چه د ټولو احوالو احاطه اوشي. (۱)  
د حديث مبارك د ترجمة الباب سره ربط: ددي حديث د ترجمة الباب سره ربط ددي حديث شريف د عموم په وجه دي خكه چه في شانه كله كنجي نورو كارونو سره جمات ته داخليدل هم دي. (۲)

۱۶- بَابُ: هَلْ تُنْبِشُ قُبُورَ مُشْرِكِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَيَتَّخِذُ مَكَانَهَا مَسَاجِدَ لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ»

[ر: ۱۳۲۴]

وَمَا يُكْرَهُ مِنَ الصَّلَاةِ فِي الْقُبُورِ، وَرَأَى عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يُصَلِّي عِنْدَ قَبْرٍ، فَقَالَ: «الْقَبْرُ الْقَبْرُ، وَلَمْ يَأْمُرْ بِالْإِعَادَةِ»

دباب په دي پاره كنجي دي چه آيا د جاهليت د مشركانو قبرونه كنستل او دهغي په خاني جماتونه جوړول جائز دي؟ خكه چه نبى كريم ﷺ ارشاد فرمائيلي دي چه د الله تعالى لعنت دي وي په يهوديانو باندي، خكه چه هغوى د خپلو انبياؤ په قبرونو باندي جماتونه جوړ كړل او (دباب په دي پاره كنجي دي چه) په قبرستان كنجي مونځ كول صحيح نه دي. چنانچه يو ځل حضرت عمر رضی اللہ عنہ حضرت انس رضی اللہ عنہ (د لاعلمي د وجي) د قبر سره په مونځ كولو باندي اوليدلو نو قبر قبر ونيلو سره نى هغه خبردار كړو خود مونځ د واپس راگرخولو حكم نى ورته اونه كړو.

د ترجمة الباب تشريح: امام بخارى رحمه الله باب قائم كړي دي: هل تنبش قبور مشركي الجاهلية ويتخذ مكانها مساجد، آيا د جاهليت د مشركانو قبرونه به وران كړي شي او دهغي په خاني جماتونه جوړولي شي؟ "هل تنبش" نى فرمائيلي دي او هل د استفهام د پاره راځي دكوم معنى چه به داسې شي آيا داسې كيدلى شي؟ جواب به وي آوجى داسې كيدې شي. ليكن په عام توگه د شارحينو رائي داده چه دلته هل د قد په معنى دي. سوال جوړول او بيا دهغي جواب راويستل، ددي ضرورت نشته دي.

علامه قسطلانى رحمه الله فرمائي: (هل أُنِيَ عَلَى الْإِنْسَانِ جِنٌّ مِنَ الدَّاهِرِ) په دي آيت كنجي چه څنگه

(۱) عمدة القارى: ۲۵۲/۴.

(۲) عمدة القارى: ۲۵۲/۴.

هل په معنی د قد دې دغه شان دلته هم هل د قد په معنی دې. (۱) حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما امام زجاج، امام فرآ او امام مبرد رحمهم الله (هل ائی علی الانسان جین من الدهر) په دې است کبې هل د قد په معنی گرځولې دې. (۲) دلته هم دا د قد په معنی اخستی شی. اوس به ددې مطلب دادې چه وی مشرکانو به د جاهلیت قبرونه به وړانولې شی او هلته به جماتونه جوړولې شی.

لیکن حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چه د شارحینو رانې داده چه هل د قد په معنی دې او ددې وجه داده چه په روایت کبې د مسجد نبوی د جوړولو ذکر دې او په دې کبې تصریح ده چه د مشرکانو د قبرونو نبش کړې شوې وو نو بیا هل په خپل اصلی معنی اخستل غلط دی. په دې وجه دا د قد په معنی دې او زما په نیز قد په خپله اصل معنی دې لکه چه وړاندې به ئی بیان کړم. (۳)

قوله: لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ» (۴)

ترجمة الباب کبې یوه خبره ذکر کولونه پس امام بخاری رحمته لقول النبي صلى الله عليه وسلم: لعن الله اليهود، اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد فرمائی دی.

په دې سلسله کبې حافظ ابن حجر، علامه قسطلانی او دوی نه مخکبې علامه کرمانی رحمهم الله تقرير د استدلال دا کړې دې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د لعنت تخصیص کړې دې د انبیاء علیهم الصلاة والسلام په قبرونو باندې د جماتونه جوړونکو سره. ددې نه معلومه شوه چه که د انبیاء علیهم السلام قبرونه نه وی بلکه د نورو قبرونه وی مثلاً د کافرانو قبرونه دی نو د نبش نه پس هلته جمات جوړولو کبې به هیخ قباحت نه وی.

د انبیاء علیهم السلام په قبرونو باندې که چرې جمات جوړ کړې شی نو د دوو حالتونه به خالی نه وی یا خو به قبر باقی ساتلو سره جمات جوړولې شی نو افضاحی الشریک به لازم شی.

(۱) إرشاد الساری: ۸۶/۲

(۲) تنویر المقیاس من تفسیر ابن عباس، سورة الإنسان، رقم الآية: ۱، ۴۹۵/۱. معانی القرآن وإعراجه للزجاج، سورة الإنسان، رقم الآية: ۱، ۲۵۷/۵. معانی القرآن للفراء، سورة الإنسان، رقم الآية: ۱، ۲۱۳/۳ دار النصریه. و هل تخرج من جد المسألة فتصیر بمنزلة قد نحو: قوله عز وجل (هل ائی علی الانسان جین من الدهر لم یکن شیئاً مذکوراً) المقنضب للمبرد، هذا باب أم، وأر. ۲۸۹/۳. وزارة الأوقاف لجنة إحياء التراث الإسلامي.

(۳) تقرير بخاری شریف: ۱۵۸/۲

(۴) دا تعلیق امام بخاری رحمته په نورو مقاماتو کبې موصولاً نقل کړې دې، و ئی کور ئی:

حدثنا موسى بن إسماعيل، حدثنا أبو عوانة، عن هلال هو الوزان، عن عروة، عن عائشة رضي الله عنها قالت: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه الذي لم يقم منه: لعن الله اليهود والنصارى اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد، لو لا ذلك أبرز قبره غير أنه خشي - أو خشي - أن يتخذ مسجداً. (صحيح البخاري، كتاب الجنائز، باب: ما جاء في قبر النبي صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث: ۱۳۹۰) وأيضاً بهذا السند حدثنا الصلت بن محمد، حدثنا أبو عوانة، عن هلال الوزان، عن عروة بن الزبير، عن عائشة رضي الله عنها، قالت: ..... (صحيح البخاري، كتاب المغازي، باب: مرض النبي صلى الله عليه وسلم ووفاته، رقم الحديث: ۴۴۴۱).



او که چرې د انبياء کرامو عليهم الصلوة والسلام د قبرونو نبش او کړې شی نو هغه به وړانولې شی نو سپکاوي به لازم شی په خلاف د کافرانو او مشرکانو د قبرونو چه د هغې په نبش کښې د سپکاوي هيڅ سوال نشته. هغه د احترام مستحق نه دی. لهذا د کافرانو او مشرکانو د قبرونو په ځانې د نبش نه پس جمات جوړولو کښې هيڅ بدیت نشته دي. او صالحين چونکه د انبياؤ عليهم الصلاة والسلام سره ملحق دي لهذا د انبياؤ په قبرونو باندې هم او د صالحينو په قبرونو باندې هم جمات جوړونکي به د لعنت مستحق وي. (۱)

د لعنت په سبب کښې د علامه نووي رحمته الله عليه تشریح: علامه نووي رحمته الله عليه فرماني چه د علماء کرامو د بيان مطابق ددې ممانعت مقصد دادې چه چرته د قبر په تعظيم کښې مبالغه اونه کړې شی او خلق په خپله عقیده کښې خلل پيدا کولو سره په فتنه کښې پريښوئ. ځکه چه بيا هم دغه خيز کفر ته رسوي لکه څنگه چه په پخوانو امتونو کښې داسې شوي دي. (۲)

د لعنت په سبب کښې د ملاعلي قاري رحمته الله عليه تشریح: ملاعلي قاري رحمته الله عليه ليکلي دي چه د لعنت سبب خو يا دا وو چه يهوديانو به د انبياؤ په قبرونو باندې تعظيمي سجدي کولې کوم چه شرک جلي وو. يا دا وو چه هغوی به د الله تعالی مونځ د انبياء په قبرونو کښې دهغوی قبرونو طرف ته توجه کولو سره ادا کولو چه عبادت د الله او تعظيم د انبياؤ. دواړه په يو ځانې سرته اورسوي کوم چه شرک خفي وو ځکه چه په دواړو کښې حدود د اذن خداوندي نه متجاوز شوې وو. دا زمونږ ائمو کښې بعضي شارحينو ذکر کړي دي. (۳)

د لعنت په سبب کښې د حضرت گنگوهي رحمته الله عليه تشریح: ليکن حضرت گنگوهي رحمته الله عليه چه د استدلال کوم تقرير فرمائيلې دي هغه دادې چه حضور پاك لعنت فرمائيلې دي د تشبه بعبادة الأصنام د وجې نه. او تشبه به هله لا زميري چه کله به قرباني کيږي. لهذا چه د صالحينو او انبياؤ قبرونه وي او هغه برابر کړې شی يا دا چه د هغوی عظام راويستلي شی او په ادب او احترام سره چرته بل مقام کښې دفن کړي شی نو بيا هلته جمات جوړول هم جائز دي او ترکومي چه تعلق دي د مشرکانو د قبرونو نو په هغې کښې نبش متعين او مقرر دي. دهغوی هډوکي به راويستي شی او غورزولي به شی او په هغه ځانې به جمات جوړولې شی. (۴)

علامه طحطاوي رحمته الله عليه د مراقی الفلاح په حاشیه کښې دا ليکلي دي چه د ميزاب رحمت لاندې د حجر چه کوم ځانې دي هلته د حضرت اسماعيل عليه السلام قبر دي او د حجر اسود او مقام ابراهيم په مينځ کښې د ۷۰ انبياؤ عليهم الصلاة والسلام قبرونه دي. ليکن چونکه زمکه برابر کړې شوې ده او د قبر نشان باقی پاتې نه دي لهذا هلته جمات دي او په دي کښې څه

(۱) شرح الکرمانی: ۸۸/۴ فتح الباری: ۶۷۹/۱ ارشاد الساری: ۸۷/۲

(۲) شرح النووي علی صحيح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوة، باب: النهی عن بناء المسجد علی القبور واتخاذ الصور: ۱۲/۵.

(۳) مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة: ۳۸۹/۲.

(۴) لامع الدراری: ۱۶۵/۱.

خرج او مضائقه نشته دي. (۱)

د لعنت په سبب کښې د کشمیری رضی اللہ عنہ تشریح دي نه علاوه حضرت مولانا محمد انور شاه کشمیری صاحب د نکتي يوه خبره ذکر کړې ده چه ومايکره من الصلوة فی القبور کښې ما موصوله او که چرې من بيانیه دی نو د دې مطلب به داوی چه په قبرستان کښې مونځ مکروه دي. لیکن من که چرته تبعضیه واخستلې شی نو بیا به د دې مطلب دا وی چه امام بخاری د صلوة فی القبر کراهت بیانوي. که چرې بالکل مخامخ وی نو کراهت به ډیر سخت وی او که چرې قبر ښی طرف ته وی نو د مخامخ کیدو په مقابله کښې به کم کراهت وی او چه گس طرف ته وی نو د ښی طرف په مقابله کښې به نور هم کم کراهت وی. او که چرې شاته وی نو بیا به هډو کراهت نه وی. (۲)

د لعنت په سبب کښې د علامه شبیر احمد عثمانی رضی اللہ عنہ تشریح:

قوله: لعن الله اليهود، بعضی روایتونو کښې د نصاری هم ذکر راغلي دي. هلته اشکال راځي چه د نصاراؤ د نبی یعنی د عیسی علیه السلام خو قبر نشته دي بیا په هغوی باندي اتخاذوا قبور انبیائهم..... څنگه صادق علیه السلام لعنت او کړو؟ چا دا جواب ورکړو چه یهودو چه د کوم انبیاء سابقین مثلاً ابراهیم علیه السلام وغیره منل نصاری هم نیز دي نیز دي هغه ټول منل نو د هغوی د قبرونو سره به ئی داسې کول.

لیکن صحیح جواب دا دي چه د مسلم په روایت کښې یو لفظ زائد دي. قبور انبیائهم وصلحائهم نو اوس هیڅ اشکال باقی پاتې نه شو. آخر صالحین د هغوی په نیز هم وو هغوی سره به ئی دا معامله کوله. والله اعلم. (۳)

د لعنت په سبب کښې د حضرت شیخ الحدیث صاحب رضی اللہ عنہ تشریح: د دې نه استدلال داسې دي چه حضور پاک د انبیاء کرامو قبرونه جماتونه جوړونکو باندي لعنت فرمائيلې دي نو د مشرکانو به څه حال وی؟ لهذا که چرته هلته د جمات د جوړولو ضرورت وی نو د مشرکانو د قبرونو ښ به کولې شی. (۴)

د قبر مخامخ د مونځ کولو حکم:

د احنافو مذهب: د احنافو په نیز په قبرستان کښې که چرته د مونځ د پاره جدا څه ځانی جوړ کړې شوې وی یعنی متعین کړې شوې وی او هغه ځانی کښې څه قبر نه وی، نه څه پلیتی وی او نه د مونځ کونکی مخې ته څه قبر وی یعنی د مونځ گذار قبله د قبر طرف ته نه

(۱) حاشیه الطحطاوی علی مراقی الفلاح، ص: ۲۵۷-۲۵۶ وکذافی مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب المساجد

و مواضع الصلاة: ۲/۳۸۹.

(۲) فیض الباری: ۲/۳۸.

(۳) فضل الباری: ۳/۱۴۰-۱۳۹.

(۴) تقریر بخاری شریف: ۲/۱۵۸.

وی نوداسې ځائی کښې مونځ کول مکروه نه دی. او که قبر ښی، گس یا شاته وی یا چه قبر مخې ته وی او دې د سترې مخې ته مونځ او کړې نو بیا هم څه کراهت نشته دې. او بغير د څه حائل د قبر مخې ته مونځ کول صحيح نه دی. (١)

د مالکيو مذهب: د مالکيو په نيز په قبرستان کښې مونځ ادا کول جائز دی که هغه قبرستان آباد وی که آباد نه وی، بلکه وران شوې وی د هغې نه مړی راويستلې شوې وی که نه وی راويستلې شوې، که هغه قبرستان د يو مسلمان وی او که د مشرکانو، په هر صورت کښې مونځ کول جائز دی. (٢)

د حنابلو مذهب: د حنابلو په نيز په قبرستان کښې مونځ کول جائز نه دی که قبرستان زوړ وی او که نوې، د هغه ځائی نه مړی ويستلې شوې وی او که نه وی ويستلې شوې. د دوی نه نقل دی چه د قبرونو نه چاپيره چه کوم ځائی هم د قبرستان د نوم لاندې راځی هلته مونځ ادا کول جائز نه دی.

د حنابلو په نيز د قبرستان تعريف: البته د قبرستان په تعريف کښې د حنابلو نه نقل دی چرته چه د دريو نه زيات قبرونه وی هغې ته به قبرستان وئیلی شی لیکن که قبرونه د دريو نه کم وی نو هغې ته به د قبرستان نوم نه شی ورکولې. او هلته به مونځ ادا کول هم جائز وی. دغه شان که په کور کښې دننه مړی ځښ کړی شوې وی نو هلته هم مونځ ادا کول جائز دی اگر چه هلته د دريو نه زيات قبرونه وی ځکه چه دې ته هم د قبرستان نوم نه شی ورکولې. (٣)

د شوافعو مذهب: د شوافعو په نيز په دې مسئله کښې لږ تفصيل دی. د هغوی په نيز که د قبرستان نه مړی ويستلې شوې وی نو دغه ځائی کښې مونځ کول په اتفاق (عند الشوافع) صحيح نه دی. ځکه چه زمکې سره د مړو پيپ وغيره شامل شوې وی. دا حکم په هغه صورت کښې دې چه کله به دغه د قبرستان والا زمکه باندې څه کپرا خورولو نه بغير مونځ ادا کړې شی. او که چرته څه کپرا وغيره خورولو سره مونځ ادا کړې شی نو د کراهت سره به مونځ ادا شی. او که د قبرستان نه مړی نه وی ويستلې شوې نو د هغوی په نيز بغير د څه اختلافه به دغه زمکه باندې مونځ ادا کول صحيح دی. البته مکروه تنزيهي دی. د جواز وجه داده چه په

(١) ردالمحتار، کتاب الصلاة، مطلب فی تعريف الإعادة: ٤٢٥/٢ دارعالم الكتب. البحر الرائق، کتاب الجنائز، فصل: السلطان أحق بصلاته: ٣٤١/٢. فتاوی قاضي خان علی هامش الفتاوی الهندية، کتاب الصلاة: ٢٩/١. الموسوعة الفقهية الكويتية، حرف الميم، المقبرة، الصلاة فی المقبرة: ٣٤٦/٣٨. فضل الباری: ١٣٩/٣.

(٢) المدونة الكبرى، کتاب الصلاة، الصلاة فی المواضع التي تکره فيها الصلاة: ١٨٢/١. مناهج التحصيل ونتائج لطائف التأويل فی شرح المدونة وحل مشکلاتها، کتاب الصلاة، المسألة التاسعة فی المواضع الذي تجوز فيه الصلاة وما تکره فيه الصلوات: ٣٢٩-٣٣٠/١. الموسوعة الفقهية الكويتية، حرف الميم، المقبرة، الصلاة فی المقبرة: ٣٤٦/٣٨.

(٣) الکشاف القناع عن متن الاقناع، کتاب الصلاة، باب: اجتناب النجاسة ومواضع الصلاة، فصل: فی بیان المواضع التي نهى عن الصلاة فيها: ٢٩٨، ٢٨٩/١. الإنصاف فی معرفة الراجح من الخلاف للمرداوي، کتاب الصلاة، الأماكن التي لا تصح الصلاة فيها كالمقبرة ونحوها: ٤٩١-٤٨٩. نیل المآرب بشرح دليل الطالب، کتاب الصلاة، باب: شروط الصلاة، الموضع المنهى عنها: ١٢٨/١. الموسوعة الفقهية الكويتية، حرف الميم، الصلاة فی المقبرة: ٣٤٦/٣٨.

کومه زمکه باندې مونخ ادا کولې شی هغه پاکه ده اود کراحت وجه داده چه مونخ په قبرستان کښې ادا کيږي کوم چه د نجاست د دفن کولو ځاني دي او که چرې معامله مشکوک وي چه آيا ددې قبرستان نه مړې ويستلې شوي دي که نه. نو د اصح قول مطابق مونخ به سره د کراحت نه صحيح شي. ځکه چه په زمکه کښې اصل ددې پاکيدل دي د شک په وجه په دې د نجاست حکم نه شي لگولې کيدې. د اصح قول په مقابله کښې يو بل قول دادې چه مونخ نه صحيح کيږي ځکه چه د بنده په ذمه اصل د ده فرض باقی پاتې کيږي اود دې په ساقط کولو کښې که چرې شک وي نو شک سره به فرض ساقط نه شي. (۱)

قوله: وَمَا يُكْرَهُ مِنَ الصَّلَاةِ فِي الْقُبُورِ: ددې جملې باره کښې علامه کرمانی رحمته الله عليه دا فرمانيلى دي چه ددې عطف "هل ينش قبر مشركى الجاهلية" باندې دې اوداد ترجمې دويم جز دې په دې باندې دا اشکال او کرې شو چه "ما يكره من الصلوة فى القبور" جمله خبريه ده او "هل ينش قبر مشركى الجاهلية" جمله انشائية ده. استفهام په دې کښې راځي نو بيا به دا عطف څنگه صحيح شي؟ نو ددې جواب علامه کرمانی رحمته الله عليه دا ورکړې دې چه "هل" چونکه هلته د "قد" په معنى دې لهذا هغه هم جمله خبريه ده او "ما يكره من الصلوة فى القبور" هم جمله خبريه ده لهذا په عطف کښې هيڅ مضائقه نشته دي.

او نور شراح هم دا فرماني چه د "ما يكره من الصلوة فى القبور" عطف په "هل ينش قبر مشركى الجاهلية" باندې دي. اوداد ترجمې دويم جز دې ليکن ددې جز ثبوت د حديث شريف نه نه کيږي کوم چه امام بخارى رحمته الله عليه وړاندې بيان کړې دي. په دې وجه شراح فرماني چه امام بخارى رحمته الله عليه ددې جز ثابتولو د پاره د حضرت عمر بن خطاب رضي الله عنه اثر نقل کړې دي: قوله: وَرَأَى عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يُصَلِّي عِنْدَ قَبْرِ فَقَالَ: «الْقَبْرُ الْقَبْرُ» چه د قبر نه جدا شه ددې طرف ته مخ کولو سره مونخ مه کوه.

قوله: ولم يأمره بالأعاد: ليکن حضرت عمر رضي الله عنه حضرت انس رضي الله عنه ته د مونخ د راگرخولو حکم ورنه کړو. ددې نه معلومه شوه چه مونخ خو کيږي ليکن مکروه دې دا رائي د شراحو ده. (۲) د حضرت شيخ الحديث صاهب رحمته الله عليه رائي: ليکن د حضرت شيخ الحديث مولانا محمد زكريا رحمته الله عليه رائي ددې برعکس ده هغوى فرماني چه داد ترجمه الباب جز دې اود باب لاندې داخل

(۱) العاوى الكبير فى فقه مذهب الإمام الشافعى رحمته الله عليه للماوردى المعروف بشرح مختصر المزنى، كتاب الصلاة، باب: الصلاة بالنجاسة ومواضع الصلاة: ۲۶۱/۱-۲۶۰. فتح العزيز شرح الوجيز للرافعى رحمته الله عليه مطبوع تحت المجموع شرح المذهب، كتاب الصلاة، الباب الخامس فى شرائط الصلاة: ۳۶/۴. المجموع شرح المذهب، كتاب الصلاة، باب: مواقيت الصلاة، باب: طهارة البدن وما يصلى فيه وعليه: ۱۵۸/۳-۱۵۷. الموسوعة الفقهية الكويتية، حرف الميم، المقبرة الصلاة فى المقبرة: ۳۴۶/۳۸.

(۲) شرح الكرمانى: ۸۸/۴ فتح البارى: ۶۷۹/۱ إرشاد السارى: ۸۷/۲.

دې او په دې باندې د عطف نشان هم لگیدلې دې. اوس سوال دادې چه د کراهية صلوة فی البقابر امام بخاری رحمته الله څه روایت نه دې ذکر کړې. شراح ددې جواب دا ورکوي چه اثر انس بن مالك رضي الله عنه باندې اکتفاء او کړې شوه او د حضرت انس رضي الله عنه د اثر نه استدلال داسې دې چه حضرت عمر رضي الله عنه قبرونو سره په مונخ کولو باندې اوتو کلو او د واپس راگرخولو حکم نئ ورنه کړو نو معلومه شوه چه مکروه خودې لیکن مونخ به اوشی. که چرې مونخ نه صحیح کیدو نو د واپس راگرخولو حکم به نئ ورکولو.

اوس اشکال دادې چه امام بخاری رحمته الله ددې نه پس یو مستقل باب کراهية الصلوة فی البقابر تړی لهذا ترجمه مکرر شوه اودا خبره په اصولو کښې معلومه شوي ده چه که چرې د تراجم غرض یو وی او الفاظ نئ بدل شی نو دا به تکرار وی. او که چرې الفاظ یو وی لیکن اغراض نئ جدا جدا وی نو دا به تکرار نه وی. لیکن دلته د دواړو بابونو غرض هم یو دې.

شراح ددې جواب دا ورکوي چه دلته دا باب تبعاً دې اورتلونکې باب قصد ا دې. مگر زما په نیز په دې باندې اشکال دې چه د قصد اوتبع وئیلو ضرورت خو به هغه وخت پېښیږي چه کله چرته بل صورت نه وی اودلته ددې نه علاوه یو صورت بل هم شته هغه دا چه زما په نیز

هل په خپل اصل معنی دې او مطلب دادې چه آیا د جاهلیت د مشرکانو د قبرونو نبش او کړې شی او په هغې جماتونه جوړ کړې شی؟ ځکه چه حضور پاک د انبیاء و قبرونه جماتونه جوړونکو باندې لعنت وئیلې دې. نو د مشرکانو د قبرونو به څه حال وی؟ اودا ځکه چه صلوة

فی البقابر مکروه دی نوزما په نیز دمایکرة من الصلوة دترجمې جز نه بلکه دلام لاندې داخل دې او په قول باندې عطف دې اوداهم یو علت دې، زما د قول مطابق چه کله دا په ترجمه کښې داخل نه دې نو د روایت ضرورت پاتې نه شو. په دې وجه د اثر نه د ثابتولو هم ضرورت نشته او نه تکرار شو دکوم د لرې کولو چه کوشش او کړې شی؟

اوس دلته اشکال دادې چه هل په خپل اصل معنی څنگه صحیح کیدې شی؟ حالانکه د مسجد نبوی دتعمیر په وخت د مشرکانو د قبرونو نبش شوې دې. ددې جواب دادې چه امام

بخاری رحمته الله یو څو ابوابه پس باب: الصلوة فی مواضع الحسب والعذاب تړی. په هغې کښې دا دی چه حضرت علی رضي الله عنه په بابل کښې د موضع عذاب کیدو په سبب مونخ کول مکروه او گنرلو نو د حضرت علی رضي الله عنه کراهت د موضع عذاب کیدو په سبب وو. او چرته چه مشرکان خښ شوی وی هغه پخپله موضع عذاب دې. لهذا ددې طرف ته اشاره کولو دپاره نئ په ترجمه

کښې لفظ هل راوړلو. او که څوک دا اووائی چه د قبرونو د نبش نه پس هلته څه پاتې شو؟ نو ددې جواب دا دې چه په بابل کښې کله خسف واقع شوې وو، اوس هلته څه پاتې شوې وو؟ بالکل نه، لهذا لکه څنگه چه هلته باوجود د کراهت د موضع عذاب کیدو د وجې نه وو، نو داهم موضع عذاب شوې دې. (۱)

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۵۹/۲.

د حضرت عمر رضي الله عنه د اثر تخريج: حضرت ابن ابي شيبه رضي الله عنه او عبد الرزاق رضي الله عنه په خپل خپل مصنف كښې او امام بيهقي رضي الله عنه په السنن الكبري كښې په څه اندازه مختلف الفاظو سره د دې اثر تخريج كړې دي. د المصنف لابن ابي شيبه روايت دادې: «حدثنا حفص، عن حميد، عن أنس، قال أبصرني عمر قائماً أصله إلى قبر، فجعل يقول: يا أنس! القبر، فجعلت أرفع رأسي أنظر إلى القبر، فقالوا: إنما، يعني: القبر.» (١)

المصنف لابن عبد الرزاق كښې د موجود اثر الفاظ دادې: «(عبد الرزاق، عن معمر، عن ثابت البناني، عن أنس بن مالك قال: رأيت عمر بن الخطاب وأنا أصل عند قبر، فجعل يقول: القبر، قال: فحسبته يقول: القبر، قال: فجعلت أرفع رأسي إلى السماء، فأنظر، فقال: إنما أقول، القبر، لا تصل إليه، قال ثابت: فكان أنس بن مالك يأخذ بيدي إذا أراد أن يصلي فيتنحى عن القبر.)» (٢)

السنن الكبري كښې د موجود اثر الفاظ دادې: «(أخبرنا محمد بن موسى بن الفضل حدثنا أبو العباس، محمد بن يعقوب حدثنا محمد بن هشام حدثنا مروان بن معاوية حدثنا حميد عن أنس قال: تمت يوماً أصلي وبين يدي قبراً لأشعريه، فناداني عمر: القبر القبر، فظننت أنه يعني: القبر، فقال لي بعض من يليني: إنما يعني: القبر، فتنحيت عنه.)» (٣)

د صالحينو د مزاراتو سره نيزدي د جماتونو حكم نن صبا هر طرف ته دا په كتلو كښې راځي چه كوم يو ځائي كښې هم چه د الله والا قبر وي نو هغې سره نيزدي يوجمات هم وي نو داسې كولو كښې هيڅ حرج نشته دي، صحيح دي. چنانچه علامه عيني رضي الله عنه په دې باره كښې تحرير فرمائي چه كه چرته د يو نيك صالح انسان قبر سره داسې جمات جوړ كړي نسي چه قبر د جمات نه بالكل جدا وي. مزار سره نيزدي د جمات جوړولو مقصود صرف د بركت حاصلول وي، په مونځ كښې د صاحب قبر تعظيم يا د غغه طرف ته توجه نه وي نو په دې كښې بديت نشته دي دا به په مذكوره وعيد كښې داخل نه وي (٤)

(١) المصنف لابن ابي شيبه، كتاب الصلاة، الصلاة بين القبور، رقم الحديث: ٣٧٥٣٢، ١٤٠/١٤.

(٢) المصنف لابن عبد الرزاق، كتاب الصلاة، باب الصلاة على القبور، رقم الحديث: ١٥٨١، ٤٠٤/١.

(٣) السنن الكبري للبيهقي، كتاب الصلاة، باب النهي عن الصلاة إلى القبور، رقم الحديث: ٤٤٥٠. تعليق، كتاب الصلاة، باب: هل تنبش قبور شركي الجاهلية ويتخذ مكانها مساجد لقول النبي صلى الله عليه وسلم: لعن الله اليهود، اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد، وما يكره من الصلاة في القبور. ورأى عمر أنس بن مالك يصلي عند القبر، فقال: القبر القبر، ولم يأمره بالإعادة: ٢٢٨-٢٢٩/٢. مسند الفاروق لابن الكثير، كتاب الصلاة باب في مواطن السجود، رقم الحديث: ٧٨، ١٨٧/١. المطالب العالبي بزوائد المسانيد الثمانية، كتاب الصلاة، باب: ما يصلى إليه وما لا يصلى إليه، رقم الحديث: ٣٣٩، ٤١٧/٣. سلسلة الآثار الصحيحة أو الصحيح المسند من أقوال الصحابة والتابعين، كتاب الصلاة، الصلاة عند القبر: ٢٧٧/٢.

(٤) فأما من اتخذ مسجداً في جوار صالح وقصد التبرك بالقرب منه لا للتعظيم له، ولا للتوجه إليه، فلا يدخل في الوعيد المذكور. عمدة القاري: ٢٥٨/٤.

حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چه دیو صالح سری قبر سره (دغه پورته تفصیل سره) جمات جوړول په وعید کښې شامل نه دي. (۱)

ملا علی قاری رحمته الله فرمائی چه پاتې شپه دا خبره چه که چرې د صالحینونه د چا مزار سره نيزدي جمات جوړ کړې شی یا په مقبره کښې مونځ او کړې او د هغه د روح نه د تقویت حاصلولو یا د هغه د عبادتونو د اثراتو نه د فائدي او چتولو اراده وی، په مونځ کښې د هغه تعظیم یا د هغه طرف ته توجه نه وی نو دغه جمات جوړولو کښې هیڅ حرج نشته دي. (۲)

خلاصه دا چه د صالحینو مزاراتو سره نيزدي د شرائطو خیال ساتلو سره جمات جوړول جائز دی.

حدیث باب [حدیث نمبر ۲۱۷]

۳۲۷ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ وَأُمَّ سَلَمَةَ (۱) ذَكَرَتَا كَيْبَسَةَ رَأَيْتُمَا بِالْحَبَشَةِ فِيهَا تَصَاوِيرٌ، فَذَكَرَتَا لِلنَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ: «إِنَّ أَوْلَيْكَ إِذَا كَانَ فِيهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ فَمَاتَ بَنَوْنَا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا، وَصَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّورَ، فَأَوْلَيْكَ شِرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ».

د هديت ترجمه: حضرت عائشه رضي الله عنها فرمائی چه حضرت ام حبيبه او حضرت ام سلمه رضي الله عنهما د نبی کریم صلى الله عليه وسلم په وړاندي د یوې گرجې ذکر او کړو چه هغوی په حبشه کښې ليدلې وه. په کومه کښې چه تصويرونه لگيدلې وو. نو نبی کریم صلى الله عليه وسلم او فرمائیل چه د هغه خلقو دا دستور وو چه کله به د هغوی څوک نیک سړې وفات شو نو هغوی به د هغه په قبر باندې د عبادت ځانی جوړولو او په هغې کښې به ئی د هغوی بتان کيخودل. (بیانی او فرمائیل چه) د قیامت په ورځ به داسې کونکی خلق د الله تعالی په نيزه مخلوق کښې بدترین خلق وی.

تراجم رجال: دمذکوره حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه راویان دی:

(۱) فتح الباری: ۶۸۰/۱ د سلفی حضراتو په فتح الباری باندې اعتراض او دهغې رد: د فتح الباری دارالسلام نسخې (د کوم چه حواله ورکړې شوې ده) حاشیه کښې په دې مقام باندې د محشی طرف نه دا حاشیه هذا غلط واضح. والصواب تحريم ذلك، ودخوله تحت الأحاديث الناهية عن اتخاذ القبور مساجد، فانتبه واحذر، والله الموفق: موجود دی کوم چه صحیح نه دي. ځکه چه د ماقبل تفصیل نه دا خبره واضحه ده چه دمانعت تعلق د منکراتو سره دي ددې نه بغير سره نه دي. او د حافظ ابن حجر رحمته الله او علامه عینی رحمته الله ذکر کړې شوې تفصیل د منکراتو نه د بیج کیدو سره د جماتونه جوړولو سره مقید دي. فلاشکال.

(۲) اما من اتخذ مسجدا في جوار صالح أو صلى في مقبرة وقصد الا ستظهار بروحه أو وصول أثر ما من أثر عبادته اليه لا للتعظيم له والتوجه نحوه، فلا حرج. (مرقاة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة: ۳۸۹/۲).

(۳) أخرجه البخاري أيضا في الصلاة في البيعة، رقم الحديث: ۴۳۴، وفي الجنائز، باب: بناء المسجد على القبر، رقم الحديث: ۱۳۴۱، وفي فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، باب: هجرة الحبشه، رقم الحديث: ۳۸۷۸، ومسلم في صحيحه، في المساجد، باب: النهي عن بناء المسجد على القبور، رقم الحديث: ۵۲۸، والنسائي في سننه، في المساجد، باب: النهي عن اتخاذ القبور مساجد، رقم الحديث: ۷۰۵، وفي جامع الأصول، حرف الزاء، الكتاب الثالث: في الزينة، الباب السابع: في الصور والنقوش والسنور، الأحاديث الواردة في ذم المصورين، رقم الحديث:

- ① محمد بن المنشی رحمته الله: دا حضرت محمد بن المنشی بن عبید عنزی بصری رحمته الله دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: خلاوة الایمان لاندی تیر شوی دی. (۱)
- ② یحییٰ رحمته الله: دا یحییٰ بن سعید بن فروخ القطان تمیمی رحمته الله دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان ان یحب لایحبه ما یحب لنفسه لاندی تیر شوی دی. (۲)
- ③ هشام رحمته الله: دا هشام بن عروه بن زبیر بن العوام قرشی اسدی مدنی رحمته الله دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، په دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب الایمان، باب: أحب الالین الی الله ادر لاندی تیر شوی دی. (۳)
- ④ ابی رحمته الله: دا عروه بن زبیر بن العوام قرشی اسدی مدنی رحمته الله دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، په دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب الایمان، باب: أحب الالین الی الله ادر لاندی تیر شوی دی. (۴)
- ⑤ عائشه رضی الله عنہا: دا ام المؤمنین حضرت عائشه بنت ابی بکر صدیق رضی الله عنہما ده. د دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی، دویم حدیث لاندی تیر شوی دی. (۵)
- د حدیث شرح:

قوله: عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ، وَأُمَّ حَنْظَلَةَ ذَكَرْنَا كُنَيْسَةَ رَأَيْتَهَا بِالْحَبَشَةِ فِيهَا تَصَاوِيرُ  
حضرت عائشه رضی الله عنہا فرمائی چه حضرت ام حبیبه او حضرت ام سلمه رضی الله عنہما دنسی کریم رضی الله عنہ په وړاندی د یوې گرجی ذکر او کړو چه هغوی په حبشه کنبی لیدلې وه په کومه کنبی چه تصویرونه لکیدلی وو.

قوله: كُنَيْسَةٌ: د عیسیایانو عبادت خانې ته کنیسه وائی. (۶) د دغه کنیسه نوم ماریه خودلی شی. (۷)

قوله: ذَكَرْنَا: د تشبیه ددی صیغې ضمیر حضرت ام حبیبه او حضرت ام سلمه رضی الله عنہما طرف ته راگرخی. دمستملی او حموی په نسخو کنبی دا لفظ "ذکرنا" دمذکر صیغه ده چه د اصل خلاف دی. ظاهر دا معلومیری چه دا به د نسخې لیکونکو نه غلطی نه وی شوی. (۸)

(۱) کشف الباری: ۲۵/۲.

(۲) کشف الباری: ۲/۲.

(۳) کشف الباری: ۲۹۱/۱، ۴۳۲/۲.

(۴) کشف الباری: ۴۳۶/۲.

(۵) کشف الباری: ۱/۲۹۱.

(۶) شرح الکرمانی: ۸۸/۴.

(۷) فتح الباری: ۶۸۰/۱، عمدة القاری: ۲۵۷/۴.

(۸) عمدة القاری: ۲۵۷/۴.



قوله: رأيتنا: والفظ د جمع صيغې سره استعمال شوي دي حالانکه کتونکې دوه وي، نو د دې په جواب کېنې وئیلی شی چه د جمع نسبت صرف د دغه دوو طرف ته نه بلکه د دغه دواړو سره نور کوم کسان هم چه شريک وو هغه ټول په دې روایت کېنې شامل کړې شوي دي. دویمه خبره دا اقل د جمع دوه وي لهذا په دې اعتبار سره هم د اشکال څه خبره نشته دي. دریمه خبره دا چه بعضې نسخو کېنې مثلاً د کشمیهني او اصیلی په نسخه کېنې "دأتا" لفظ هم ملا ویري. فلا اشکال (۱)

قوله: فَذَكَرْنَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنَّ أَوْلِيكَ إِذَا كَانَ فِيهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ قَمَاتٌ، بَنُو عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا، وَصَوْرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّورَ، فَأَوْلِيكَ يَرَارُ الْخَلْقَ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ»  
نوبی کریم ﷺ او فرمائیل چه د هغه خلقو دا رواج وو چه کله به د هغوی څوک نیک سړي وفات کیدو نو هغوی به د هغه په قبر باندې عبادت خانه جوړوله او په هغې کېنې به ئي د هغه سړي بتان کیخودل. (بیانی او فرمائیل چه) د قیامت په ورځ به داسې کونکي د الله تعالی په نیز په مخلوق کېنې بدترین خلق وي.

قوله: فَأَوْلِيكَ: په یو بل روایت کېنې د ناء په ځای واؤ یعنی اولئک دي (۲)

قوله: قَمَاتٌ: د دې عطف به په کان باندې وي. او وړاندې د بنوا جمله به د إذا د پاره جواب شی (۳)

د بت پرستی شروع څنګه شوي ده؟

قوله: وَصَوَّرُوا فِيهِ: قاضی عیاض مالکی رحمته الله علیه لیکلي دي چه دا د بت پرستی شروع وه یعنی بت پرستی په دې طریقته درجه په درجه شروع شوه. (۴)

علامه قرطبي رحمته الله علیه لیکلي دي چه د هغوی طریقته دا وه چه کله به نیکان خلق وفات کیدل نو د هغوی تصویران به ئي جوړول او هغه به ئي زوړندول او د هغوی مقصد به دا وو چه دغه تصویرانو ته په کتلو د هغوی زړونه تسلی او سکون حاصل کړي او د هغوی نیکا اعمال یاد کړي او بیا هم د هغوی په شان په عبادت کېنې - می او کوشش او کړي او د هغوی قبرونو سره به څواکې دوی مونځونه کول لیکن قبرونه به ئي خپلې مخې ته نه ساتل. دغه رومېنی چه فوت شو او د هغوی نه پس روستو جانشین د هغوی په ځای راغله نو هغوی د دغه رومینو او متقدمینو مقصد خو فوت کړو او شیطان د هغوی په زړونو کېنې دا وسوسه واچوله چه ستاسو بزرگانو خو به د قبرونو عبادت کولو لهذا تاسو هم د دوی عبادت کوئ. نو روستو راتلونکو د قبرونو عبادت شروع کړو.

(۱) شرح الکرمانی: ۸۸/۴ فتح الباری: ۶۸۰/۱ عمدة القاری: ۲۵۷/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۵۷/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۸۰/۱.

(۴) اكمال المعلم بفوائد مسلم، کتاب: فی المساجد باب النهی عن بناء المساجد علی القبور، رقم الحدیث: ۵۲۸، ۴۵۰/۲.

په دې باندې حضور پاك دا نكړ او فرمائيلو چه د حضور پاك امت دا طريقه اختيارولو سره په شرك كښې اخته نه شي او هم ددې د پاره حضور پاك دا ارشاد او فرمائيلو چه زمانه پس زما قبر سره دا معامله اونه كړې شي. (۱)

د شرار لغوی تحقیق:

قوله: فَأُولَئِكَ شَرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: شرار د شين په كسرې سره جمع ده د شر او د بعضو په نيزد شرير جمع ده. (۲)

د شرار الخلق مصداق كوم خلق دی؟: علامه كرماني رحمته الله عليه په دې ځانې يو اشكال كړې دې چه

حضور پاك خو "فَأُولَئِكَ شَرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ" فرمائيلی دی، ددې نه خو په ظاهره دا معلوميزی چه د قبر طرف ته مونځ كول حرام دی او علماء دې ته صرف مكروه وائی؟ بيانی هم پخپله ددې جواب ور كړو چه په اصل كښې د كراهت نه كراهت تحريمی مراد دې لهذا د شرار الخلق په اطلاق كښې هيڅ اشكال نشته. ددې اطلاق تقاضا دا وه چه قبر مخې ته وی نو مونځ حراميدل پكار دی او علماء كرامو چه دې ته مكروه تحريمی او وئيل نو دا په حكم كښې هم د حرام دی.

علامه كرماني رحمته الله عليه دويمه خبره دا فرمائی چه كه چرې د كراهت نه كراهت تنزيهې مراد واخستې شي نو بيا به ددې مطلب داوی چه حضور پاك د تصوير په مذمت كښې "فَأُولَئِكَ شَرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ" فرمائيلی دی. په دې باندې علامه رحمته الله عليه اشكال كړې دې چه كه چرې د تصوير په مذمت كښې ئی "فَأُولَئِكَ شَرَارُ الْخَلْقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ" فرمائيلی دی نو تصوير خو صرف معصيت دې او شرار الخلق كيدو نه دا لازميږي چه هغوی دې كافر او گرځولې شي. نو د گناه په كولو سره د كافر اطلاق څنگه او كړې شو؟

ددې جواب بيا هغه ور كړې دې چه په اصل كښې دوی ته شرار الخلق څكه او وئيلې شو چه هغوی په د تصوير عبادت كولو او كافران هم وو په دې وجه په دې اطلاق كښې څه اشكال نشته. (۳)

يوه بله خبره ئی داهم كړې ده چه د شرار الخلق اطلاق به په كفر باندې هله اوشی چه كله شرار الخلق على الاطلاق مراد وی. هسي د شر لفظ د خير په مقابله كښې هم راځی او شرار د خيار په مقابله كښې استعمالیږي. لكه څنگه چه په حديث شريف كښې د رسول الله صلوات الله عليه

(۱) المفهم لما أشكل من تلخيص كتاب مسلم. كتاب الصلاة، باب: تحويل القبلة من الشام إلى الكعبة، والنهي عن بناء المساجد على القبور وعن التصاوير فيها، رقم الحديث: ۵۴/۵، ۱۲۵.

(۲) عمدة القاری: ۲۵۷/۴.

(۳) شرح الكرماني: ۸۹/۴.

ارشاد دې: «ان شر الناس عند الله منزلة من تركه الناس اتقاء شراً»<sup>(۱)</sup> دلته د شر الناس مطلب کافر نه دې. دغه شان په بل حدیث کښې حضور پاک فرمائی: «ألا أخبرکم بشراً الناس؟ رجل یسأل بالله ولا یعطى به»<sup>(۲)</sup> چه د الله تعالی واسطه ورکولو سره د هغه نه سوال او کړې شى او د دغه واسطې باوجود هم هغه ورکړه او نه کړې هغه شر الناس دې. دغه شان په حدیث کښې راځی حضور پاک فرمائی: «ان شر الناس ذوالوجهین الذی یأکل هؤلاء بوجه وهؤلاء بوجه»<sup>(۳)</sup> دا هم د کفر د وجې نه نه دی وئیلی شوی. غرض دا چه د شرار اطلاق د اختیار په مقابله کښې هم کیږی لهذا دا هم وئیلی شى چه دلته نبی ﷺ د تصویر د وجې هغوی ته شمار الخلق وئیلی دی دانی فی مقابلة الأخیار وئیلی دی.

د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت: علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی چه د دې حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت د ترجمې جز لعن الله الیهود په وجه دې. په دې اعتبار سره چه په دې قول کښې دا خبره ده چه نبی ﷺ په یهودو باندي ځکه لعنت او وئیلو چه هغوی د انبیاء قبرونه د سجدو ځایونه جوړ کړی وو. او په دې حدیث کښې د نصاراؤ په داسې طریقې سره مذمت او کړې شو چه د لعنت نه هم زیات دې. په وجه د دې خبرې چه په هغوی کښې دا دستور پیدا شوې وو چه کله به د هغوی څوک نیک سړې وفات شو نو د هغه په قبر باندي به ئی جمات جوړولو او په هغې کښې به ئی د هغه سړی تصویرونه زورپندول.<sup>(۴)</sup> علامه شبیر احمد عثمانی رحمته الله علیه فرمائی دلته شارحین حیران دی چه په دعوی او دلیل کښې

<sup>(۱)</sup> حدثنا عمرو بن عيسى، حدثنا محمد بن سواء، حدثنا روح بن القاسم، عن محمد بن المنكدر، عن عروة، عن عائشة: أن رجلاً استأذن على النبي صلى الله عليه وسلم، فلما رآه قال: بنس أخوال العشرة، وبنس ابن العشرة، فلما جلس تطلق النبي صلى الله عليه وسلم في وجهه وانبسط إليه، فلما انطلق الرجل قالت له عائشة: يا رسول الله! حين رأيت الرجل قلت له كذا وكذا، ثم تطلقت في وجهه وانبسطت إليه؟ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: يا عائشة! متى عهدتني فحاشا، إن شر الناس عند الله منزله يوم القيامة من تركه الناس اتقاء شراً. (صحيح البخاري، كتاب الأدب، باب لم يكن النبي صلى الله عليه وسلم فاحشاً ولا متفحشاً، رقم الحديث: ۶۰۳۲).

<sup>(۲)</sup> حدثنا قتيبة، قال: حدثنا ابن لهيعة، عن بكير بن عبدالله بن الأشج، عن عطاء بن يسار، عن ابن عباس، أن النبي صلى الله عليه وسلم قال: ألا أخبركم بخير الناس؟ رجل مسك بعنان فرسه في سبيل الله. ألا أخبركم بالذي يتلوه؟ رجل معتزل في غنيمه له يؤذي حق الله فيها. ألا أخبركم بشر الناس؟ رجل يسأل بالله ولا يعطى به. هذا حديث حسن غريب من هذا الوجه، ويروى هذا الحديث من غير وجه، عن ابن عباس، عن النبي صلى الله عليه وسلم. (جامع الترمذي، فضائل جهاد، أي الناس خير، رقم الحديث: ۱۶۵۲).

<sup>(۳)</sup> حدثنا قتيبة، حدثنا الليث، عن يزيد بن أبي حبيب، عن عراك، عن أبي هريرة، أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: إن شر الناس ذوالوجهين، الذي يأتي هؤلاء بوجه، وهؤلاء بوجه. (صحيح البخاري، كتاب الأحكام، باب: ما يكره من ثناء السلاطان وإذا خرج قال غير ذلك، رقم الحديث: ۷۱۷۹).

<sup>(۴)</sup> عمدة القاري: ۲۵۶/۴.

خه مناسبت دې؟ په دعوی کښې بهنې ترجمه الباب کښې د مشرکانو د قبرونو (ذکر) دې او دلیل یعنی حدیث د انبیاء کرامو د قبرونو متعلق دې. او په دعوی کښې د قبرونو د نبش (ذکر) دې او په دلیل کښې د قبرونو د جماتونو جوړولو نفی ده. (الغرض دعوی داده چه د مشرکانو قبرونه کنستلو سره په هغه خانی جماتونه جوړول جائز دی او په دې باندي دلیل دادې چه حضور پاک د انبیاء و قبرونو جماتونه جوړولو نه منع فرمائیلي ده. نو په دې دواړو کښې څنگه مناسبت راغې؟). (فرمائی) زما په نیز دلته مناسبت داسې دې چه (دلته) دوه مسئلې دي:

① یوه مسئله خو (په قبر باندي د جمات جوړولو سره متعلق ده. او ددې دوه صورتونه دي (اول صورت) دا چه د قبرونو په موجودگي کښې په هغې جمات جوړول، د چاهم چه قبر وی د انبیاء و اولیاء یا د یو کافر او فاسق بل صورت دا چه قبر نبش کړې شی (یعنی هغه وړانولو سره برابر کړې شی) بیا دغه خانی کښې جمات جوړ کړې شی. ددې متعلق فقهاؤ لیکلي دي چه د قبرونو په موجودگي هلته جمات جوړول صحیح نه دی د چاهم چه قبر وی که هغه د نبی وی او که د یو کافرو وی. او دمانعت علت د قبرونو موجودگی ده. اوس که قبرونه وړان کړې شی او برابر کړې شی چه نښه ئی باقی پاتې نه شی (او بیا هلته جمات جوړ کړې شی) نو ددې حکم امام بخاری رحمته الله علیه خودل غواړی.

② دویمه مسئله داده چه د کومو قبرونو نبش جائز دې؟ ددې متعلق مسئله داده چه د انبیاء و صالحینو بلکه بغیر د ډیر سخت ضرورت نه د عام مؤمنانو د قبرونو نبش هم جائز نه دې. د مشرکانو او کافرانو د قبرونو نبش جائز دې. (أولیک کالاً لغامرئیل هم أضل).

نو اوس امام بخاری رحمته الله علیه د اولنی مسئلې دویم صورت (قبر وړانول او بیا جمات جوړولو) متعلق حکم بیانول غواړی چه د قبرونو وړانولو نه پس هلته جمات جوړول جائز دی. لقول النبی..... (وجه د استدلال دا ده چه) گورثی حضور پاک لعنت په هغه صورت کښې کړې دې کله چه قبرونه موجود وی او په هغې باندي جمات جوړ کړې شی (چنانچه) د یهود و فعل په کوم چه آقا عليه السلام لعنت کړې دې هم داسې وو چه د انبیاء و قبرونه ئی باقی ساتلو سره تعظیماً جماتونه جوړول. (نو کله چه لعنت، قبرونه باقی ساتلو سره په هغې باندي د جماتونو جوړولو په صورت کښې دې نو معلومه شوه چه قبرونه وړانولو سره په هغه خانی جمات جوړول جائز دی). نو دعوی سره د دلیل مناسبت پیدا شو.

باقی پاتې شوه دویمه مسئله چه د کومو قبرونو نبش جائز دې؟ د انبیاء و قبرونو نبش جائز دې که نه؟ ددې سره متعلق دلته هیڅ بحث نشته. چونکه د مشرکانو د قبرونو نبش جائز وو په دې وجه ئی په ترجمه کښې دا بالتخصیص ذکر کړو. اصل مقصود خو دا مسئله بیانول دی چه د قبرونو نبش کولو سره هلته جمات جوړول جائز دی که نه؟ نو دائی ثابت کړل چه د نبش نه پس جائز دی. (۱)

د حدیث شریف نه مستنبط شوی فوائد او احکام: ① معلومه شوه چه که یو سړې د عجائباتو نه د خه خیز مشاهده او کړې نو د نورو خلقو په مخکښې د هغې د بیانولو گنجائش شته. (١)  
 ② د کوم سړې په وړاندې چه څوک څه خبره بیانوی او هغه سړې د دغه خبرې حکم پیژندونکې وی نو په هغه باندې د هغه خبرې حکم بیانول او په محرمانو کښې د اخته کیدو مذمت کول واجب دی. (٢)

③ دا هم معلومه شوه چه په احکامو کښې اعتبار د شریعت دې نه چه د عقل (٣)  
 ④ د دې حدیث نه په قبرستان کښې د مونیخ ادا کولو د کراهت علم هم اوشو. برابر ده چه قبر سره متصل وی، د قبر د پاسه وی او که د قبر مخې ته او دریدو سره وی. (٤)  
 ⑤ د دې حدیث نه د تصویر حرمت خصوصاً د نیکانو صالحانو کسانو د تصویر حرمت معلوم شو. (٥)

حدیث باب (دویم حدیث) [حدیث نمبر ٢٤١٨]

٢٢٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ (٦) قَالَ قَدِمَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الْمَدِينَةَ فَنَزَلَ أَعْلَى الْمَدِينَةِ، فِي حَيٍّ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو عَمْرٍو بْنِ عَوْفٍ. فَأَقَامَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِيهِمْ أَرْبَعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، ثُمَّ أُرْسِلَ إِلَى بَنِي النَّجَّارِ فَجَاءُوا مُتَقَلِّدِي السُّيُوفِ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى رَاحِلَتَيْهِ، وَأَبُو كُرَيْبٍ رَدْفُهُ، وَمَلَائِكَةُ بَنِي النَّجَّارِ حَوْلَهُ، حَتَّى أَلْقَى بِفِنَاءِ أَبِي أُبَيٍّ، وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يُصَلِّيَ حَيْثُ أَدْرَكَتُهُ الصَّلَاةُ، وَيُصَلِّيَ فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ، وَأَنَّهُ أَمَرَ بِبِنَاءِ الْمَسْجِدِ، فَأُرْسِلَ إِلَى مَلَائِكَةِ بَنِي النَّجَّارِ فَقَالَ «يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِحَابِطِكُمْ هَذَا». قَالُوا وَاللَّهِ، لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ. فَقَالَ أَنَسٌ فَكَانَ فِيهِ مَا أَقُولُ لَكُمْ، قُبُورُ الْمُشْرِكِينَ، وَفِيهِ خَرْبٌ، وَفِيهِ نَخْلٌ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ فَنُبِشَتْ، ثُمَّ بِالْخَرْبِ فَنُوسِتْ، وَبِالنَّخْلِ فَقَطِيعَ، فَصَفَّوْا النَّخْلَ قِبْلَةَ الْمَسْجِدِ، وَجَعَلُوا عِضَادَتَيْهِ الْحِجَارَةَ، وَجَعَلُوا يَنْقُلُونَ الصَّخْرَ، وَهُمْ يَرْتَجِزُونَ، وَالنَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مَعَهُمْ وَهُوَ يَقُولُ «اللَّهُمَّ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ فَاعْفِرْ لِلْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ»

د حدیث ترجمه: د حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دې چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم مدینې منورې ته تشریف راوړو نو حضور پاک چه د مدینې برنی علاقې په کومه محله کښې قیام او کړو هغه د بنو عمرو بن عوف وه. دلته نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم څوارلس شپې قیام او کړو. بیا حضور پاک بنو نجار ته پیغام اولیرلو او راوتی غوښتل نو هغه خلقو تورې زورند وې او په خدمت

(١) فتح الباری: ٦٨٠/١ عمدة القاری: ٢٥٧/٤.

(٢) فتح الباری: ٦٨٠/١ عمدة القاری: ٢٥٧/٤.

(٣) فتح الباری: ٦٨٠/١ عمدة القاری: ٢٥٧/٤.

(٤) فتح الباری: ٦٨٠/١.

(٥) عمدة القاری: ٢٥٧/٤.

(٦) مرتخریجه فی البخاری. کتاب الوضوء. باب: أبوال الإبل والدواب والغنم ومرابضها. رقم الحدیث: ٢٣٤.

کبسي حاضر شو (د راوی حدیث بیان دي)، لکه چه هغه نظاره زما مخي ته ده چه زه نبي کریم ﷺ په خپله سورلي باندې ناست وينم. حضرت ابوبکر رضي الله عنه حضور پاك پسي شاته په سورلي ناست دي او د بنونجار يو جماعت د حضور پاك نه چاپيره دي. په دي حال کبسي نبي ﷺ حضرت ابوايوب رضي الله عنه د کور مخي ته خپل سامان راکوز کړو. حضور پاك به دا خبره خوښوله چه حضور پاك ته به چرته هم د مونځ وخت راتلو هم هلته به ئي مونځ کولو. (تر دي چه) حضور پاك د چيلو په باره کبسي هم مونځ ادا کړې دي. حضور پاك په هغه ځاني کبسي د جمات جوړولو حکم او کړو. حضور پاك بنونجار راؤغوښتل او وني فرمائيل اي بنونجار! تاسو د دي خپلي زمکي قيمت واخلي. هغوی عرض او کړو نه، په الله قسم چه نه، مونږ به تاسو نه د دي قيمت نه اخلو، مونږ به د دي بدلله صرف د الله تعالی نه اخلو.

حضرت انس رضي الله عنه او فرمائيل لکه څنگه چه زه تاسو ته وایم چه دلته د مشرکانو قبرونه وو. په دي زمکه کبسي يو شار ځاني وو او د کهجورو ونې وې. نو نبي کریم ﷺ د مشرکانو د قبرونو د ورانولو حکم ورکړو او د هغه شار ځاني د برابرولو حکم ئي ورکړو او ونې پرې کړې شوې. خلقو دغه ونې د جمات د قبلي طرف ته خورې کړې او د کانږو په ذريعه ئي هغه مضبوطې کړې. صحابه کرامو رضي الله عنهم به کانږي او چتولو سره رجزيه اشعار ونيل او نبي کریم ﷺ هم هغوی سره وو او داني فرمائيل اي الله! د آخرت د نبيگري نه علاوه بل هيڅ نبيگريه (د توجه قابل) نه ده نو د انصارو او مهاجرينو مغفرت او کړې.

تراجم رجال: د مذکوره حدیث شريف په سند کبسي ټول څلور راويان دي:

① مسدد بن مسدد: دا مسدد بن مسهد الاسدي البصري رضي الله عنه دي. د دوی مختصر احوال کشف

الباري کتاب الايمان باب: من الايمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه، او تفصيلی احوال کتاب العلم باب: من غص بالعلم قوما دون قوم كراهية أن لا يفهموا لاندې تير شوي دي. (١)

② عبد الوارث بن سعيد: دا عبد الوارث بن سعيد التميمي رضي الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباري،

کتاب العلم، باب: ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يتغولهم بالموعظة والعلم كي لا ينفروا لاندې تير شوي دي. (٢)

③ ابي التماح بن يزيد: دا ابو التماح بن حميد الضبعي رضي الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباري،

کتاب العلم، باب: ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يتغولهم بالموعظة والعلم كي لا ينفروا لاندې تير شوي دي. (٣)

④ انس بن مالك: دامشهور صحابي رسول حضرت انس بن مالك رضي الله عنه دي. د دوی تذکره کشف

الباري، کتاب الايمان، باب: من الايمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه لاندې تيره شوي ده. (٤)

(١) کشف الباري: ٤/٥٨٨.

(٢) کشف الباري: ٣/٢٥٨.

(٣) کشف الباري: ٣/٢٦١.

(٤) کشف الباري: ٢/٤.

د حدیث شرح:

قوله: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ فَتَنَزَلَ أَعْلَى الْمَدِينَةِ فِي حَيٍّ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو عَمْرٍو بْنِ عَوْفٍ:

د حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دی چه نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم مدینې منورې ته تشریف راوړو نو حضور پاک د مدینې د برنی علاقې په کومه محله کښې چه قیام کړې وو هغه د بنو عمرو بن عوف وه.

د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم مدینې ته راتګ کله شوي وو؟

قوله: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ: امام حاکم رضی اللہ عنہ ذکر کړې دی چه اخبار تواتر ته رسیدلی دی په دې خبره باندې چه کله نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم قباء ته تشریف راوړو نو د ربیع الاول اتم تاریخ وو او د اتوار ورځ وه.

ابن سعد رضی اللہ عنہ په الطبقات الکبری کښې دا خبره ذکر کړې ده چه نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم د غار نه راووتلو د ربیع الاول څلورم تاریخ او د اتوار شپه وه. او یو قول داهم دی چه د ربیع الاول دولسم تاریخ وو. (۱)

قوله: أَعْلَى الْمَدِينَةِ: په یو روایت کښې صرف د المدينة لفظ دی. د "اعلی" نه بغير. (۲)

خود سنن ابی داؤد په روایت کښې د "اعلی" په ځای د "علو" لفظ دی داهم د "اعلی" په معنی دی. (۳)

قوله: فَأَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِمْ أَرْبَعَةَ عَشَرَ لَيْلَةً: دلته نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم خوارلس شپې قیام او کړو. بغضې نورو نسخو (د مستملی او حموی په نسخو) کښې څلیرش شپې د قیام کولو ذکر دی. حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ د خوارلسو شپو د قیام والا خبره راجح ګرځولې ده. (۴) علامه شبیر احمد عثمانی رضی اللہ عنہ هم د خوارلسو شپو قیام اختیار کړې دی. (۵)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رضی اللہ عنہ څلیرش شپو ته ترجیح ورکړې هغه تقریر هم د کتلو لائق دی. (۶)

(۱) للطبقات الکبری لابن سعد، ذکر خروج رسول الله صلى الله عليه وسلم وأبي بكر إلى المدينة للهجرة: ۱۷۹/۱.

(۲) عمدة القاری: ۲۵۹/۴.

(۳) حدثنا مسدد، حدثنا عبدالوارث، عن أبي التياح، عن أنس بن مالك، قال: قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة، فنزل في علوا لمدينة في حي يقال: لهم بنو عمرو بن عوف، فأقام فيهم أربع عشرة ليلة، ثم أرسل إلى بني النجار، فجاءوا متقلدين سيفهم..... (سنن ابی داؤد، کتاب الصلاة، باب: فی بناء المساجد، رقم الحدیث: ۴۵۳)

(۴) فتح الباری: ۶۸۰/۱.

(۵) فضل الباری: ۱۴۲/۳.

(۶) قوله: أربعا وعشرين ليلة، داد حضور پاک د هجرت واقعه ده. په دې کښې مختلف روایات دی چه حضور پاک په قباء کښې څومره ورځې قیام کړې دي؟ په دې روایت کښې ۲۴ ورځې معلومیری او پخپله د بخاری شریف په یو روایت کښې ۱۴ ورځو د قیام ذکر دي. ښکاره خبره ده چه په دې کښې به یو خلاف واقعه وی. نو د دې نه معلومه شوه چه د بخاری شریف د روایاتو د صحیح کیدو نه دا نه لازمیږي.....

بهر حال که قیام ۲۲ ورخې وی او که ۱۲ ورخې ددی نه دا ثابتیری چه جمعه فی القری جائز نه ده. خکه چه په دې خبره باندې اتفاق دې چه حضور پاک مدینې منورې طرف ته د راتلونو پس جمعه په قبا کښې نه ده ادا کړې. بلکه چه بنو سالم کښې حضور پاک مدینې منورې ته اورسیدو نو بیا ئی جمعه ادا کړه. په دې باندې د فریقینو اتفاق دې او دا خبره هم متعین ده چه جمعه د هجرت نه مخکښې واجب شوې وه. حضور پاک چونکه مکه مکرمه کښې اورسیدو سره جمعه ادا کولو باندې قادر نه وو په دې وجه هلته خو حضور پاک جمعه ادا نه کړه لیکن چه کله حضور پاک مدینې ته راغلو نو هلته په راتلو باندې ئی جمعه ادا کړې ده. د جمعې فرضیت مکه کښې شوی وو: حافظ جلال الدین السیوطی رحمته الله علیه په اتقان کښې (۱) ابن حجر مکی رحمته الله علیه په شرح المنهاج کښې (۲) او امام شوکانی رحمته الله علیه نیل الاوطار کښې (۳) دا خبره منلې ده چه په حضور پاک باندې جمعه د مکې مکرمې په قیام کښې فرض شوې وه لیکن د عدم قدرت د وجې نه حضور پاک هلته (مکه کښې) نه وه ادا کړې او د هجرت نه پس چه کله حضور پاک تشریف راوړو نو په قبا کښې د خوارلسو ورخود قیام باوجود هلته حضور پاک د جمعې موندنه وو کړې. بلکه مدینې منورې ته په راتلو ئی کړې دې.

..... چه ټول روایات دې هم د واقعه مطابق هم وی. نو احناف هم ددې قاعدې مطابق وانې. چه بخاری کښې د رفع یدین تذکره راتللو سره دا لازم نه دی چه هغه دې د واقعه مطابق هم وی. یعنی د حضور پاک آخری فعل دې هم وی. اوس دلته دواړه روایات مشکل دی. خکه چه ټول محدثین او مؤرخین په دې خبره باندې متفق دی چه حضور پاک د پیر په ورخ قبا ته اورسیدو او هم د پیر په ورخ د مکې نه تلې وو. نو پیر له روان شو او هم پیر له قبا ته اورسیدو او مدینې ته ئی په ورخ د جمعه تشریف یووړو. او د ټولو نه اول جمعه ئی بنو سالم کښې ورکړه نو په دې دواړو باندې اتفاق دې چه د پیر په ورخ قبا ته اورسیدو او د جمعې په ورخ ئی د قبا نه مدینې ته تشریف یووړو. اوس دوه قسمه روایات دی یو د ۲۴ او بل د ۱۴ ورخو او د دواړو نه یوهم ددې اقوالو په رنرا کښې صحیح کیږي نه. خکه چه که ۱۴ واخستې شی نو پیر له حضور پاک قبا ته تشریف راوړو او د پیر نه بل پیر پورې اته او دریم پیر پورې ۱۵ ورخې جوړیږي لهذا خوارلسمه ورخ یکشنبې باندې راځي حالانکه په دې باندې اتفاق دې چه د جمعې په ورخ مدینې ته لاړو. او د ۲۴ والا روایت هم نه جوړیږي خکه چه د پیر نه بل پیر پورې اته، او دریم پیر پورې پنځلس او څلورم پیر له ۲۲ ورخې جوړیږي او نهې له ۲۳ او چارشنبې له ۲۴ ورخې جوړیږي. نو بیا هم د جمعې په ورخ ۲۴ ورخې نه جوړیږي. اوس دا دواړه خو صحیح نه شو لهذا زما رانې داده چه د ۲۴ روایت صحیح دی او ددې صورت دادې چه راوی یوم الدخول او یوم الخروج نه دې شمیرلې نو پیر خو یوم الدخول فی قبا وو او جمعه یوم الخروج منه وه اوس چه دواړه اوباسی نو ۲۴ صحیح کیږي. او د قول متفق سره تعارض هم نه راځي. په دې وجه به اوس شمیر د نهې د ورخ نه کیږي خکه چه پیر خو تری او وتلو. نو د نهې نه د نهې پورې اته، او د دریمې نهې پورې پنځلس او د څلورمې نهې پورې ۲۲ او چارشنبه ۲۳ او جمعرات ۲۴ جوړیږي.

او جمعه چه یوم الخروج ده هغه هم خارج ده لهذا اوس بالکل صحیح شوه. اوس په دې سره زما یو تائید او شو هغه دا چه حضور پاک په قبا کښې د دريو جمعو پورې قیام کړې او یوه جمعه ئی هم د کلی کیدو د وجې نه نه ده ادا کړې گنی بله څه خبره وه. (تقریر بخاری شریف: ۱۶۰/۲)

(۱) الاتقان فی علوم القرآن، النوع الثانی عشر ما تاخر حکمه عن نزوله وما تاخر نزوله عن حکمه: ۱۳۴/۱.

(۲) تحفة المحتاج فی شرح المنهاج لابن حجر الهیثمی، کتاب الصلاة، باب: صلاة الجمعة: ۴۰۵/۲.

(۳) نیل الاوطار للشوکانی، کتاب الجمعة، باب: انعقاد الجمعة بأربعین [واقعتها فی القری: ۲۷۴/۳].



قوله: ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى بَنِي النَّجَّارِ، لِحَاجَتِهِ وَأَمْتَقَلِيدِي السُّيُوفِ: بیا حضور پاک بنونجار ته پیغام لیبرلو سره راؤغونبتل نو هغه خلقو توری زورندې کرې وې او په خدمت کښې حاضر شو. بنونجار د حضور پاک ماماخیل وو. (۱)  
توری زورندولو سره د راتلو شه مقصد وو؟

قوله: مُتَقَلِيدِي السُّيُوفِ، دا په اصل کښې متقلدين السیوف وو د اضاقت د وجې نه نون پریوتلو. دا مرکب د "جاووا" د ضمیر نه حال جوړیږي. (۲) علامه برماوی رحمته الله علیه فرماني چې دهغوی داسې راتلو کښې حکمت دا وو چې په دې سره ئي یهودیان ویرول مقصود وو دې د پاره چې هغوی اوگوری چې د مدینې انصار د حضور پاک د امداد او نصرت د پاره څنگه تیاری کرې دې. (۳)  
حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرماني چې دا د هغه زمانې دستور وو چې کله به د چا د استقبال د پاره تلل نو توره وغیره به ئي خان سره اوړل لکه څنگه چې نن صبا د شیروانی اچولو رواج دې. (۴)

قوله: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رَاحِلَتِهِ، وَأَبُوبَكْرٍ دَفُفَهُ وَمَلَأْنِي النَّجَّارِ حَوْلَهُ حَتَّى أَلْقَى يَفْنَاءَ أَبِي أُيُوبَ:

(د راوی حدیث بیان دې چې) لکه هغه نظاره زما مخې ته وی چې زه نبی اکرم صلی الله علیه و آله په خپله سورلئ باندې سور وینم، حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه حضور پاک پسي شاته په سورلئ ناست دې. او د بنونجار یو جماعت د حضور پاک نه چاپیره دې. هم په دې حال کښې نبی مکرم صلی الله علیه و آله د حضرت ابویوب رضی الله عنه د کور مخې ته خپل سامان را کوز کړو.

قوله: رَاحِلَتِهِ: د اوبن سورلئ ته راحلته وائی. برابره ده که اوبن نروى او که ماده لیکن هغه وخت حضور پاک په اوبنه باندې سور وو د کومې نوم چې قصواء وو. (۵)

قوله: أَبُوبَكْرٍ دَفُفَهُ: ردیف هغه سرې ته وائی چې اصل سور پسي شاته هم په هغه سورلئ ناست وی. (۶)

د حضرت ابوبکر رضی الله عنه د نبی کریم صلی الله علیه و آله د ردیف جوړیدو وجه: د روایت مطابق حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه سره خو خپله اوبنه هم وه بیا د حضور پاک ردیف ولې جوړ شو؟  
نو په دې باره کښې شراحو لیکلی دی چې ممکنه ده د څه مرض وغیره د وجې نه هغوی خپله اوبنه قبیلۀ عمرو بن عوف کښې یا چرته بل ځائی پریخودې وه. یا هغه اوبنه ئي واپس کور ته لیږلې وه. دې د پاره چې کور والائی استعمال کړی. یا یوه بله وجه ده چې ډیره بهتر

(۱) التوضیح لابن الملتن: ۴۶۷/۵ عمدة القاری: ۲۵۹/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۵۹/۴.

(۳) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۷۶/۳.

(۴) تقریر بخاری شریف: ۱۶۰/۲.

(۵) النهایة فی غریب الحدیث والأثر، باب: الرأ مع العاء: ۶۴۵/۱ عمدة القاری: ۲۵۹/۴.

(۶) معجم الصحاح، ردف، ص: ۴۰۱، ردفه، المرتد، ای یرکب خلف الراكب. (اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۸۶/۳).

معلوم میری چه د هغوی اوبنه هم ورسره وه لیکن هغه په دې سور نه شودی د پاره چه د نبی اکرم ﷺ د ردیف جوړیدو شرف حاصل کړی. او په دې کنبی دې خبرې طرف ته هم اشاره کیدی شی چه د حضور پاک نه پس هم هغوی د حضور پاک خلیفه جوړیدل وو. (١)

قوله: وَمَلَأْنِي التَّجَارِ حَوْلَهُ: الملاء نه مراد د قبیلې معزز او سرداران خلق دی. دې نه علاوه د ملاء نه مراد جماعت هم وی. (٢)

قوله: أَلْقَى: دې ځای کنبی د دې فعل مفعول محذوف دې کوم چه رحله دې، یعنی خپله کجاوه ئی واچوله. (٣)

قوله: بِفَنَاءٍ: دې نه مراد دکور مخې ته خالی ځای دې. (٤)

اوبنه د الله تعالی د طرف نه مامور وه: په انصارو کنبی هر سړی د دې نیک بختی تمنا لرله چه حضور پاک د هغه سره قیام او کړی. حضور پاک اوبنه پریخوده او وئی فرمائیل لایها مأمورة هغه اوبنه د حضرت ابویوب انصاری ﷺ د کور مخې ته په خالی ځای کنبی کیناسته. بعضې روایاتو کنبی دا هم راخی چه په اول ځل کیناسته بیا پاسیده دوه څلور قدمه تلو سره دوباره هم هلته کیناسته.

د دې واقعي سره متعلق د سیر یو عجیبه روایت: علامه نيسابوری ﷺ خپل کتاب شرف سطلی علی الله علیه وسلم کنبی یوه واقعه نقل کړې ده دکوم مفهوم چه څه داسې دې. یو صحابی وو جبار بن صخر ﷺ د هغه کور د حضرت ابویوب انصاری ﷺ د کور نه لېشان وړاندې وو هغه غوښتل چه (اوبنه) لېشان وړاندې خوئیدو سره زما د کور مخې ته اودریږی هغه په پټه باندې اوبنه باندې څکونډی اولگوله. حضرت ابویوب انصاری ﷺ چه دا اوکتل نو غصه کنبی راغلو وئی وئیل والله که چرته نن اخوت اسلامی یعنی اسلامی رور ولی نه وې نو ما به ستا ستا الوزولې وو. ته زما نه دا سعادت په زور اخلې او خپل کور ته ئی بوتلل غواړې کوم چه الله تعالی په خپل فضل سره ماته را کړې دې. (٥)

(١) التوضیح لابن الملتن: ٤٦٨/٥ عمدة القاری: ٢٥٩/٤.

(٢) النهاية فی غریب الحدیث والأثر، باب: المیم مع اللام: ٦٧٢/٢ عمدة القاری: ٢٥٩/٤.

(٣) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ١٨٦/٣ عمدة القاری: ٢٥٩/٤.

(٤) النهاية فی غریب الحدیث والأثر، باب: الفاء مع النون: ٢/٣٩٧ عمدة القاری: ٤/٢٥٩.

(٥) قال لما دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة قام إليه المنذر بن عمرو وأبو دجاجة وجامعة من أشرفهم يقولون: هلم يا رسول الله إلى العز والثروة، وجعل رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: بارك الله عليكم، خلوا سبيلها فإنها مأمورة، حتى جاء إلى باب أبي أيوب فبركت ناقته هناك، فجاء جبار بن صخر فنخسها بالرحل، فقال أبو أيوب: أعن منزلي تنحبها، فما؟ والذي بعثه بالحق لولا الإسلام لضربتك بالسيف. (مناهل الشفا ومناهل الصفا بتحقيق كتاب شرف المصطفى صلى الله عليه وسلم للنيسابوري، باب: ذكر مقدم النبي صلى الله عليه وسلم قباء وبناء المسجد: ٣٦٥/٢). د دې کتاب محقق الشيخ أبو القاسم عبد الكريم بن هوازن القشيري دا واقعه نقل کولو نه پس ليکلی دی چه په دې قصه کنبی نگارت دې وئی گورئى. وفى السياق نكارة، لأن جبار بن صخر هذا كان ممن أسر يوم بدر فيما ذكره أصحاب المغازي والسير، ومحمد بن الحسن ممن يضعف فى الحديث، وانظر التعليق التالى (حواله بالا).

د حضرت ابویوب انصاری رضی اللہ عنہ د کور تاریخ: علامہ زرقانی رحمۃ اللہ علیہ نقل کری دی چه د یمن د بادشاہانو لقب تتبع دی او دا مشہورہ خبرہ ده. د حضور پاک د ہجرت کولو نہ اتہ سوا کالہ وړاندې د یمن یو بادشاہ جنگ کول تردې چه مدینې پورې راؤرسیدو. کله چه هغه مدینې ته راؤرسیدو نو یو یهودی عالم هغه ته او وئیل چه ته دلته جنگ مه کوه. دا د خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم د ہجرت ځانی دی. حضور پاک به دلته راځی او قیام به کوی. لهذا د ادب تقاضا داده چه دلته جنگ اونه کرې شی. دغه د یمن بادشاہ چه د یهودی عالم خبره واوریدو نو هلته ئی جنگ بند کړو اونه یوازې دا چه جنگ ئی بند کړو بلکه هغه هلته یو مکان جوړ کړو او ونی وئیل په دا د نبی آخر زمان د پاره دی او څه نور مکانات ئی هم جوړ کړل چه د یهودیانو احبارو ته ئی ورکړل. او ددی نه پس هغه د حضور پاک په نوم باندې یو خط اولیکلو په هغې کبسي ئی دا اولیکل چه دامکان کوم چه ماد نبی آخر زمان د پاره جوړ کرې دی. کله چه هغوی تشریف راوړی نو هغوی ته دی پیش کرې شی. په دغه خط کبسي هغه د اہم اولیکل چه زه په هغه باندې ایمان راوړم او دا وعده کوم که چرې ماتہ د هغه زمانہ ملاؤ شوه نو زه بہ د هغه خادم جوړ شم. هغه په دغه خط کبسي یو شعر هم اولیکلو:

شهدت على أحمد أنه رسول من الله باري النسم

فلو مدعبري إلى عمرة لكنت وزيراله وابن عم

یعنی که چرې ما هغه زمانہ اوموندله نو زه بہ د هغه خادم، وزیر او د تره څوئی جوړ شم.

چنانچه علامہ زرقانی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی هغه خط او کور منتقل کیدو سره حضرت ابویوب انصاری رضی اللہ عنہ ته اورسیدو. چنانچه کله چه حضور پاک تشریف راوړو نو حضرت ابویوب رضی اللہ عنہ هغه خط حضور پاک ته پیش کړو او د حضور پاک اوبنه کومه چه د مدینې منورې د رسیدو نه پس د حضرت ابویوب رضی اللہ عنہ د کور مخې ته رامنع شوه دا په حقیقت کبسي د الله تعالی د وحی اثر وو لکه څنگه چه د حدیبیہ په مقام باندې کله حضور پاک مکہ مکرمه کبسي داخلیدل غوښتل نو اوبنه کیناسته او د تلو نه ئی انکار کرې وو، هغه هم د وحی اثر وو. کله چه حضور پاک او فرمائیل که چرې کافرانو اومشرکانو زما سره څه داسې معاهده او کره په کوم کبسي چه هغوی د شعائر الله احترام کونکی وی نو زه به هغه منظور او قبوله کرم. او حضور پاک مکي مکرمې ته د تلو او ښار کبسي د داخلیدو اراده روستو کره نو هغه اوبنه فوری اودریده او حضور پاک د حدیبیہ مقام ته تلو سره هلته ایسار شوې وو. دغه شان دلته هم د حضرت ابویوب انصاری رضی اللہ عنہ د کور مخې ته راغله او کیناسته. یو ځل کیناسته اودی نه پس پاسیده اخوا دپخوا تلور اتلو سره بیا واپس هم هلته راغله او کیناسته دا د الله تعالی حکم سره اوشو. (۱)

دی نه پس علامہ زرقانی لیکي چه حضور پاک د حضرت ابویوب انصاری رضی اللہ عنہ په کور کبسي ایسار شو نو دا هم د حضور پاک کور وو چه هم د حضور پاک د پاره جوړ کرې شوې وو

(۱) شرح العلامة الزرقانی علی المواهب اللدنیة للقسطلانی، باب: هجرة المصطفى وأصحابه إلى المدينة، خاتمة: فی وقائع متفرقة حصلت فی الهجرة: ۱۶۳/۲.

حضور پاك د بل چا په كور كښې قيام نه دې كړې. (١)

پاتې شوه دا خبره چه اوښي ته وحى، نو دا څه داسې خبره نه ده ( وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ ) د قرآن مجيد آيت دې چه الله تعالى د شاتو مچنى ته وحى كړې ده.

قوله: وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يُصَلِّيَ حَيْثُ أَدْرَكَتُهُ الصَّلَاةُ، وَيُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ: حضور پاك دا خبره خوښوله چه چرته هم په هغوى د مونځ وخت راغلي هم هلته مونځ ادا كړى. (تر دې چه) حضور پاك د چيلو په باره كښې هم مونځ ادا كړې دې.

قوله: وَيُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ: د ويصل عطف په يجب باندي دې نه چه په يصل باندي. (٢)

قوله: مَرَابِضُ: د چيلو د ايساريدو ځائى ته مَرِيض وائى او د دې جمع مَرَابِض استعمال يږي. (٣)  
د چيلو په باره كښې د مونځ د مباح كيدو په بيان كښې مستقل يو باب وړاندي را روان دې.  
قوله: وَأَنَّهُ أَمَرَ بِنَاءِ الْمَسْجِدِ، فَأَرْسَلَ إِلَى مَلَائِكَةٍ مِنَ النَّجَّارِ فَقَالَ: «يَا بَنِي النَّجَّارِ تَأْمِنُونِي بِحَاطِطِكُمْ هَذَا»، قَالُوا: لَا وَاللَّهِ لَا نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى اللَّهِ:

چنانچه حضور پاك په هغه ځائى كښې د يو جمات جوړولو حكم وركړو. چنانچه حضور پاك بنونجار راوغوښتل او ورته ئي او فرمائيل اي بنونجار! تاسو د دې خپل ځائى قيمت واخلي، هغوى عرض او كړو نه، په الله قسم چه نه، مونږ به تاسو نه د دې قيمت نه اخلو مونږ خو به د دې اجر صرف د الله تعالى نه اخلو.

قوله: وَأَنَّهُ أَمَرَ بِنَاءِ الْمَسْجِدِ: يو روايت كښې دا كلام د اَن نه شروع كيږي په دې وجه چه دا مستقل كلام دې چه حضور پاك د جمات جوړولو حكم وركړو. (٤) او په يوبل روايت كښې أَمَرَ د معروف په ځائى أَمَرَ مجهول صيغه ده. (٥) په دې صورت كښې به د أَنه، هو ضمير، ضمير شان وي.

قوله: تَأْمِنُونِي بِحَاطِطِكُمْ: علامه كرمانى رحمته الله عليه د دې جملې ترجمه تبيعونيه بالشن سره كړې ده چه تاسو ما باندي د زمكې دا تکره د قيمت په بدله خرڅه كړئ. (٦) بعضې حضراتو د دې مطلب

(١) (فعلى هذا) المذكور من أن تبعاً بنى للمصطفى - صلى الله عليه وسلم - داراً (إنما نزل في منزل نفسه لا في منزل غيره.. كذا حكاه في تحقيق النصرة) في تاريخ دار الهجرة لقاضيها الشيخ زين الدين بن الحسين المرغني من مراغة الصعيد من فضلاء طلبة الجمال الإستوى. (شرح العلامة الزرقاني على المواهب اللدنية للقطلاني، باب: هجرة المصطفى وأصحابه إلى المدينة، خاتمة: في وفالع متفرقة حصلت في الهجرة: ١٦٤/٢).

(٢) اللامع الصبيح بشرح الجامع الصحيح: ١٨٦/٣.

(٣) معجم الصحاح، رب ض، ص: ٣٨٦، النهاية في غريب الحديث والأثر، باب: ربض: ٦٢٦/١.

(٤) عمدة القارى: ٢٦١/٤.

(٥) مصابيح الجامع بشرح الجامع الصحيح البخارى: ١٣٥/٢، عمدة القارى: ٢٦١/٤.

(٦) شرح الكرمانى: ٩٠/٤.

«اذکر وال شنه» ذکر کړې دې. دکوم مطلب چه دادې چه تاسو ماته ددې قیمت اوبنایې. (۱)  
 علامه ابن الملتن رحمته الله قدر واثنه لأشتریه منکم وپایعون فیہ سره ددې ترجمه کړې ده، چه تاسو  
 ددې قیمت مقرر کړئې چه زه تاسو نه دازمکه واخلم او تاسو په دغه قیمت دا زمکه په ما  
 خرڅه کړئې. (۲)

ددې ټولو معانیو نه پس علامه عینی رحمته الله فرمائی چه ددې ټولو مطلبونو نه یو هم ددې  
 مادې اصیغې «ثامنون» د تفسیر جوړیدو صلاحیت نه لری اگر چه دا ټولې معانی په مقصود  
 باندې دلالت کوی. لیکن ددې صحیح تفسیر هغه دې کوم چه ما په شرح ابوداؤد کښې کړې  
 دې چه کله یو سرې د بل نه څه څیز اخستلو د پاره بیع وغیره کوی نو هغه وخت د ثامنون  
 لفظ استعمالولی شی. نو دلته به هم دا مراد وی چه ماته ددې زمکې د ټکرې قیمت اوبنایه  
 چه زه تانه د زمکې دا ټکره واخلم. (۳)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله فرمائی چه دا د دوو یتیمانو زمکه وه حضور پاک هغوی  
 ته او فرمائیل چه تاسو ددې زمکې قیمت اوبنایې. هغوی او وئیل چه مونږ خودا بغیر د قیمت  
 نه درکوو مگر حضور پاک دا منظوره نه کړه او هم په قیمت ئې ترې زمکه واخستله. ځکه چه  
 دغه د یتیمانو مال وو. دلته روایت مختصر دې په ابواب هجرت کښې به پوره شی. (۴)

قوله: **يَخَاطِبُكُمْ**: د حائط نه مراد باغ دې صرف دیوال نه دې. ددې دلیل وړاندې راتلونکې قول  
 «وفیه دخل» دې. (۵)

قوله: **لَا وَاللَّهِ**: دا اجمال دې وړاندې قول «لا تطلب شنه إلا الله» ددې اجمال نه پس تفصیل دې.  
 او د اجمال تفصیل اوقع فی النفس وی لکه **(فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُخَرِّجُوا فِيمَا شَجَرْتَنَاهُمْ)**.

قوله: **إِلَى اللَّهِ**: کښې کلمه «إلى» د من په معنی ده. د لغت علماؤ لیکلی دی چه «إلى» د انتها  
 غایت بیانولو د پاره راخی. (۶) لهذا «لا تطلب شنه إلا الله» کښې بنونجارو حضور پاک ته عرض  
 او کړو چه مونږ انتها غایت د الله تعالی نه طلب د اجر دې. د الله تعالی د رضا طلب دې  
 مونږ ته قیمت نه دې پکار. اودا بالکل داسې ده لکه چه حضرت عیسی عليه السلام فرمائیلې وو:  
**(مَنْ أَعَارَىٰ إِلَى اللَّهِ قَالَ الْخَوَارِثُونَ نَحْنُ أَعَارَى اللَّهِ)** (آل عمران: ۵۴)

(۱) علامه عینی رحمته الله دلته بعضی حضرات وئیلو سره ذکر کړې دې خود دې قائل حافظ ابن حجر رحمته الله دې.  
 وئې گورئې: فتح الباری: ۶۸۱/۱ او حافظ صاحب رحمته الله هم دا جمله د علامه د مامینی رحمته الله نه د هغوی طرف  
 ته د نسبت کولو نه بغیر نقل کړې ده. او گورئې: مصابیح الجامع شرح الجامع الصحیح البخاری: ۱۳۵/۲.

(۲) التوضیح لابن الملتن: ۴۷۱/۵.

(۳) عمدة القاری: ۲۶۱/۴.

(۴) تقریر بخاری شریف: ۱۶۰/۲.

(۵) التوضیح لابن الملتن: ۴۷۱/۵ عمدة القاری: ۲۶۱/۴.

(۶) معجم الصحاح، المادة: ال، ص: ۴۹.

دلته حضرت عیسیٰ علیه السلام مبتدا خپل ذات جوړ کړو او منتهی نسی د الله تعالی ذات جوړ کړې وو. حواریینو جواب ورکړو: **(تَحْنُ أَكْصَارُ اللَّهِ)** (۱) مبتدا هغوی غائب کړه او صرف د منتهی

هغوی رعایت او کړو. هلته هم "إل" د منتهاء غایت د بیانولو د پاره دې علامه کرمانی رحمته الله علیه چه ددې جملې کومه معنی بیان کړې ده د هغې حاصل دادې چه مونږ د هغه زمکې قیمت نه اخلو کومه چه به د الله تعالی په لار کښې استعمالیږي. بیا سوال دا پیدا کیږي چه هغوی د دغه زمکې بدل اخستل نه غوښتل نو د لفظ ثمن استعمال نسی په کوم بنیاد او کړو؟ جواب دادې چه دا لفظ د مشاکلت په توگه استعمال کړې شو. مطلب دا چه کله نسی کریم صلی الله علیه و آله دا فرمائیلی وو چه ددې د قیمت په بدله کښې په ما خرڅه کړئ نو په جواب کښې هم هغوی هغه لفظ استعمالولو سره او وئیل چه مونږ به ددې قیمت هم د الله تعالی نه وصول کوو. بیا علامه کرمانی رحمته الله علیه یو اشکال اود هغې جواب نقل کړې دې چه که څوک دا اعتراض او کړې چه د "الطلب" د مصدر صله خو "من" استعمالیږي دکوم تقاضا چه داده چه دا وئیلې شوې وې "لا من الله" نه چه "لا ال الله".

نو ددې جواب دادې چه په دې جمله کښې به په معنوی توگه دا مقدر منلې شی: "لا نطلب من احد لکنه مصرف ال الله". (۲)

علامه قرطبي رحمته الله علیه فرماني چه ددې نه معلومیږي چه سرې چرته د اوسیدو اهتمام او کړې، کوم ځانی چه خپل وطن جوړ کړی نو هلته دې جمعه او د جمع د قائمولو او د شعائر اسلام د اظهار په خاطر جمات قائم کړي. (په دې کښې دا ضروری دی چه د مخکښې نه هلته جمات نه وی بیا وی خو، لیکن د آبادئی په اعتبار سره ناکافی وی). (۳)

قوله: **فَقَالَ أَنَسُ: فَكَانَ فِيهِ مَا أَقُولُ لَكُمْ قُبُورَ الْمُشْرِكِينَ، وَفِيهِ خَرِبٌ وَفِيهِ نَخْلٌ**: حضرت انس رضی الله عنه او فرمائیل لکه څنگه چه زه تاسو ته وایم چه دلته د مشرکانو قبرونه وو. په دې ځانی کښې یو ښار ځانی وو اود کهجورو ونې وې.

قوله: **فَكَانَ فِيهِ: د ضمیر مرجع "العائط" ده په کوم کښې چه مکان جوړ شوې وو. (۴)**

قوله: **قُبُورَ الْمُشْرِكِينَ**: دې نه وړاندې راوی او وئیل: "ما أقول لكم" چه په دې ځانی کښې هغه وو کوم چه زه تاسو ته بیانوم. ددې نه پس به دا جمله د بدل په توگه یابه د بیان په توگه وی. (۵)

(۱) ایضاً.

(۲) شرح الکرمانی: ۹۰/۴.

(۳) المفهم لما أشکل من تلخیص کتاب مسلم، کتاب الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبی صلی الله علیه وسلم: ۱۲۱/۲.

(۴) فتح الباری: ۶۸۱/۱.

(۵) عمدة القاری: ۲۶۲/۴.

قوله: خَرِبٌ: دا د جمع صیغه ده دکوم واحد چه "خربة" دي. لکه د کلمه جمع کلم ده. (۱)  
قوله: فَأَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ، فَنَبِثَتْ، ثُمَّ بِالْخَرِبِ فَمَوَّيَّتْ، وَبِالنَّخْلِ فَصَفَّوْا  
النَّخْلَ قِبْلَةَ الْمَسْجِدِ وَجَعَلُوا أَعْضَادَ تَيْبِهِ الْحِجَارَةَ:

نویسې کریم ﷺ د مشرکانو د قبرونو د وړانولو حکم ورکړو او د شار خانی د برابرولو حکم  
نی ورکړو. او ونې نی پرې کړې. خلقو دغه ونې د جمات د قبلي طرف ته خورې کړې او د  
کانرو په ذریعه نی د هغې دوه ستنې جوړې کړې.

قوله: فَأَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ، فَنَبِثَتْ: نبی کریم ﷺ د مشرکانو د قبرونو  
د وړانولو حکم ورکړو نو هغه وړان کړې شو.

په وخت د ضرورت د مشرکانو قبرونو وړانولو جواز: قبرونه وړانول، هغه وخت چه کله د  
مشرکانو، کافرانو وی، مری خاورې شوې وی، د غصب په خانی کبسي خبني کړې شوې وی،  
جائز دی. د قبر احترام ددی خبرونه علاوه صورت کبسي دي. خلاصه دا چه داسې کول د  
ضرورت په وخت جائز دی. لیکن د مسلمانانو قبرونو سره په داسې معامله نه شی کولې. (۲)

قوله: ثُمَّ بِالْخَرِبِ فَمَوَّيَّتْ: د بالخرب عطف په بقبور المشرکین باندې دي. مطلب دا چه په زمکه  
کبسي جوړې شوو کندو وغیره باره کبسي نی حکم او فرمائیلو چه دا دي برابر کړې شی یعنی  
دکې دي کړې شی دي دپاره چه زمکه هواره شی ښکته پورته یا بې ترتیبه پاتې نه شی.

قوله: وَبِالنَّخْلِ: دي نه مراد هم دغه دي چه د کهجورو اونو د پرې کولو حکم نی ورکړو. (۳)  
علامه قرطبي رحمته الله علیه لیکلی دی چه ددی نه معلومېږي چه میوه دارې ونې هم د ضرورت  
او حاجت په وخت پرې کولې شی. (۴)

قوله: فَصَفَّوْا النَّخْلَ قِبْلَةَ الْمَسْجِدِ: علامه سمهودي رحمته الله علیه ددی قول په تشریح کبسي دا فرمائیلی دی  
چه دغه ونې د قبلي طرف ته د دیوال نه جدا د ستنو په توگه اودرولې شوې. (۵)  
علامه سهیلی رحمته الله علیه د ابن اسحاق په واسطه د یونس بن بکیر رحمته الله علیه روایت نقل کړې دي چه د  
جمات د قبلي والا طرف په خبستو باندې پوخ کړې شو بلکه وئیلی شوی دي چه هغه دیوال  
په کانرو سره داسې پوخ کړې شو چه یو کانري په بل کانري کبسي داخل وو. (۶)

(۱) الخرب: يجوز أن يكون بكسر الخاء، وفتح الراء، جمع خربة، كناية، ونعم، أو يجوز أن تكون، جمع خربة -  
بكسر الخاء، وسكون الراء على التخفيف - كناية ونعم، ويجوز أن يكون: الخرب، بفتح الخاء، وبكسر الراء،  
كناية، ونعم، وكلمة، وكلم، وقد روي بالحاء المهملة، والثاء المثناة، يريد به: الموضع المحرث، للزراعة. (النهاية  
في غريب الحديث والأثر: خ ر ب: ۱/۴۷۷).

(۲) المفهم لما أشكل من تلخيص كتاب مسلم، كتاب الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبي صلى الله عليه وسلم: ۲/۱۲۲.  
(عمدة القاري: ۲۶۲/۴).

(۳) المفهم لما أشكل من تلخيص كتاب مسلم، كتاب الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبي صلى الله عليه وسلم:  
۲/۱۲۲.

(۴) خلاصة الوفاء بأخبار دار المصطفى صلى الله عليه وسلم، عمارة النبي صلى الله عليه وسلم مسجد المدينة: ۲/۸.  
(الروض الأنف: ۲۴۸/۲).

د کلمة المسجد نه مراد د قبلي طرف دي، نه چه د نن صبا دور کښي موجوده قبله. (۱)  
 قوله: وَجَعَلُوا عِضَادَتَيْهِ الْجِجَارَةَ: عضاد واحد دي او عضادتيه تشبيه ده ددي معنی ده د لاري اړخ، د  
 تالاب غاړې، کله چه هغه په کانرو سره مضبوط کړې شي، د چوکاټ دواړه درشلې  
 مضبوطول، دي خاني کښي مراد دوه ستنې او درول دي، کومې چه د کانرو وي. (۲)  
 د حضرت عمار بن ياسر رضي الله عنه د شهادت خبر: په دي موقع چه د مسجد نبوي آبادي كيده نبي  
 اکرم صلى الله عليه وسلم او ټولو صحابه کرامو رضي الله عنهم په دي آبادي کښي حصه واخستله نو هغه وخت حضرت  
 عمار بن ياسر رضي الله عنه د جمات د آبادي د پاره دوه دوه خښتې او چټولې او راوړلې شي. يوه  
 خښته د خپل طرف نه او دويمه د نبي کریم صلى الله عليه وسلم د طرف نه. هغه وخت نبي کریم صلى الله عليه وسلم هغه ته  
 ارشاد او فرمائيلو چه د ټولو د پاره يو اجر دي اوستا د پاره دوه اجرونه دي. (او اي عمار!) په  
 دي دنيا کښي به ستا آخري خوراک د پيو گوټ وي او تابه يو باغي ډله شهيد کړي. (۳)  
 قوله: وَجَعَلُوا يَنْقُلُونَ الصَّخْرَ وَهُمْ يَرْجُزُونَ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُمْ: صحابه کرامو رضي الله عنهم به  
 کانري او چټولو سره رجزيه شعرونه ونييل او نبي کریم صلى الله عليه وسلم هم د هغوی سره وو.  
 د نبي کریم صلى الله عليه وسلم او د صحابو (شعرونه ونييل:  
 قوله: يَرْجُزُونَ: رجز نبي ونييلو. (۴)

(۱) التوضيح لشرح الجامع الصحيح لابن الملتن: ۴۷۵/۵.

(۲) المعجم الوسيط، ص: ۶۰۶.

(۳) الجامع للإمام معمر بن راشد ومعه المصنف لابن عبدالرزاق، باب أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث: ۲۰۴۲۶، ۲۴۰/۱۱، ۲۳۹-۲۴۰.

(۴) علامه احمد رضا خان بجنوري رحمته الله عليه ليکي چه حضرت شاه صاحب رحمته الله عليه فرمائيلي دي چه داخفش  
 (امام نحو) رائي ده چه رجز د بحور اشعار نه نه دي نو علماء د نحو ئي هم ددي نه مني. مگر زما په نيز د  
 اخفش رائي مضبوطه او ژوره ده رجز د اردو فقري بندي وکټ بندي په شان دي او شعر او رجز مقابل گنرلې  
 شي. چنانچه د تباع يمن سره به راجز هم وو او شاعران هم، اود ټولو شاعرانو نه پس به راجز اوريدلې  
 کيدو، لهذا رجز د شعر نه علاوه دي. بيا چه کوم خلق رجز په شعر کښي داخل گنري هغوی هم په دي  
 کښي قصد او اراده ضروري گنري او وائي چه د حضور پاك نه خو انشاء د شعر چرته ثابت نه دي يعنى  
 حضور پاك پخپله شاعري نه ده کړې، نه ئي چرته څه شعر ونيلي دي ځکه چه د حضور پاك د لوثي شان  
 سره مناسب او موزون نه وو. البته د نورو شعرونه او رجز ئي ونيلي دي او په اشعارو کښي به ئي هم ښه  
 په قصد سره وزن ماتولو. په کوم باندې چه به حضرت ابوبکر رضي الله عنه فرمائيل هم چه حضرت داسي نه دي او  
 حضور پاك به په جواب کښي فرمائيل چه زه شاعر نه يم. د حضور پاك نه دا شعر ونييل ثابت دي د کوم په  
 اسناد کښي چه ائمه نحو دي:

تفادل بهاتهورى يکن قلما      يقال لشين كانالاتحق

په اصل شعر کښي تحقفا په الف سره وو کوم چه حضور پاك مات کړو. العرف الشذی او فیض الباري  
 کښي بتحقيقهاپ شوي دي کوم چه غلط دي ځکه چه سنن بیهقي ص: ۴۲ ج ۷ کښي دي چه حضرت  
 عائشه رضي الله عنها او فرمائيل چه حضور پاك کله هم پوره شعر نه دي ونيلي مگر يو او بيائي هم دغه پورتنې  
 شعر ذکر کړو. دي نه پس امام بیهقي رحمته الله عليه او فرمائيل چه د رجز ونيلو ثبوت د حضور پاك نه .....  
 \_\_\_\_\_



په دې خبره کېښي د ماهرينو اختلاف دې چه رجز د شعر د قسمونو نه دې که نه؟ د اکثر و عروضيينو او د اهل ادب و اتفاق دې چه رجز شعر نه دې ځکه چه نبی اکرم ﷺ هم دا ونيلي دي. که چرې دا شعر وې نو نبی ﷺ ته به د شعر علم کيدل لازم شی حالانکه په قرآن حکيم کېښي دي: ﴿وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ﴾ (۱) الله تعالی فرمائيلى دى چه مونږ نبی ﷺ ته شعر نه دې خودلې. ليکن دا قول صحيح نه دې ځکه چه يو نيم شعر ونيلو سره يا کله کله شعر ونيلو سره څوک شاعر نه جوړيږي او نه داسې سړي ته د شاعر نوم ورکولې کيږي. او نه هغه شعرونه د دغه سړي طرف ته منسوب کولې شي (۱)

صحيح قول هم دغه دې چه رجز هم د شعريو قسم دې، ځکه چه شعر هغه موزون کلام ته وائي په کوم کېښي چه د قافيه رعايت او کرې شي او رجز هم دغه شان دې. (۲)  
علامه قرطبي رحمه الله فرمائي چه په دې کېښي داسې هيڅ دليل نشته دې چه نبی کریم ﷺ به اشعار ونييل بلکه ظاهره خبره خودا ده چه صحابه کرامو ﷺ به رجز ونيلو او نبی کریم ﷺ به هلته موجود وو ځکه چه واؤ حالیه دې او جمله "النبي صلى الله عليه وسلم معهم" د حال په ځاني دې. او دويم احتمال داهم دې چه ددې جملې "النبي صلى الله عليه وسلم معهم" عطف د "يرتجزون" په ضمير باندې دې. په دې صورت کېښي اشعار ويونکو کېښي صحابه ﷺ او نبی ﷺ ټول وو. (۳)

د سماع په مباح کيدو باندې استدلال: علامه قرطبي رحمه الله فرمائي چه صوفيا کرامو د نبی ﷺ او صحابه کرامو ﷺ ددې شعرونو ونيلو نه د سماع په مباح کيدو باندې دليل نيولي دي. ليکن په موجوده دور کېښي په دې کېښي غلو شوې ده، د جواز د حد نه شی تجاوز کړې شوې دي، د موسيقي آلات جائز گرځولي شوي دي حالانکه دغه حرام دي، گداگانې جائز گنرلې شي، دا خود ليونو، اهل باطل او فاسقانو خلقو کارونه دي. کوم چه هغوی په دين کېښي داخل کړي دي حالانکه دا د دين نه نه دي. الله تعالی دې په خپل فضل او احسان سره مونږ ددې نه محفوظ اوساتي، آمين. (۴)

..... ضرور شوې دي او بياني په سندونو سره ونيلي شوي د ډيرو رجزونو ذکر ئي او کړو: بيا دا اختلاف دې چه د قرآن مجيد نه شعر کېښي اقتباس جائز دې که نه؟ مثلاً

ايها الناس اتقوا ربكم

زلزلة السامة شين عظيم

ومن يتق الله يجعل له

ويرزقه من حيث لا يحتسب

دلته ئي يو يولفظ کمولو سره شعر جوړ کړې دې داسې د شافعيؤ په نيز جائز دى مگر مونږ به نيز جائز نه دي او دې نه خوزما هسې ويره ده که چرې بغير د کمولو اوشى نو خير دې. انوار الباري: ۱۴/ ۴۰-۳۹.

( يسن: ۶۹ )

( عمدة القارى: ۲۶۳/۴ )

( المفهم لما أشكل من تلخيص كتاب مسلم، كتاب الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبي صلى الله عليه وسلم: ۱۲۳/۲ )

( المفهم لما أشكل من تلخيص كتاب مسلم، كتاب الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبي صلى الله عليه وسلم: ۱۲۴/۲ )

( المفهم لما أشكل من تلخيص كتاب مسلم، كتاب الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبي صلى الله عليه وسلم: ۱۲۴/۲ )

قوله: وَهُوَ يَقُولُ:

«اللَّهُمَّ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ فَأَغْفِرْ لِلْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ»

اودائی فرمائیل ای اللہ، د آخرت د بئیگرې نه علاوه بله هیخ بئیگره (د توجہ قابل) نه ده، نو د انصارو او مهاجرینو مغفرت او کره.

قوله: وَهُوَ يَقُولُ: دا جمله حال ده د النبي نه. (١)

قوله: اللَّهُمَّ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ: هم د صحيح بخاری یو روایت اود صحيح مسلم یو روایت کښې - اللَّهُمَّ إِنَّهُ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ - دې په دې کښې د معنی په اعتبار سره څه خاص فرق نشته دې.

چه ای اللہ اصل خیر خو هم د آخرت خیر دې. (٢) دې نه علاوه په یو بل روایت کښې د اللَّهُمَّ إِنَّ الْخَيْرَ خَيْرُ الْآخِرَةِ - الفاظ هم نقل دی. (٣)

(١) عمدة القاری: ٢٦٤/٤.

(١) حدثنا مسدد، حدثنا عبدالوارث، ح وحدثنا إسحاق بن منصور، أخبرنا عبدالصمد، قال: سمعت أبي يحدث، حدثنا أبو التياح يزيد بن حميد الضبعي، قال: حدثني أنس بن مالك رضى الله عنه، قال: لما قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة، نزل في علو المدينة، في حى يقال لهم بنوعمر بن عوف، قال: فأقام فيهم أربع عشرة ليلة، ثم أرسل إلى ملا بني النجار، قال: فجاءوا متقلدي سيوفهم، قال: وكأني أنظر إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم راحلته وأبوبكر ردفه، وملا بني النجار حوله، حتى ألقى ببناء أبي أيوب، قال: فكان يصلى حيث أدركته الصلاة، ويصلى في مراض الغنم، قال: ثم إنه أمر ببناء المسجد، فأرسل إلى ملا بني النجار فجاءوا، فقال: يا بني النجار! ثامنوني حانظكم هذا فقالوا: لا والله، لا نطلب ثمنه إلا إلى الله، قال: فكان فيه ما أقول لكم. كانت فيه قبور المشركين، وكانت فيه خرب، وكان فيه نخل، فأمر رسول الله صلى الله عليه وسلم بقبور المشركين فنبشت، وبالخرب فسويت، وبالنخل فقطع، قال: فصفوا النخل قبله المسجد، قال: وجعلوا عضادتيه حجارة، قال: جعلوا ينقلون ذاك الصخر وهم يرتجزون، ورسول الله صلى الله عليه وسلم معهم، يقولون: اللهم إنه لا خير إلا خير الآخرة، فانصر الأنصار والمهاجرة. (صحيح البخارى، كتاب مناقب الأنصار، باب: مقدم النبي صلى الله عليه وسلم وأصحابه المدينة، رقم الحديث: ٣٩٣٢). حدثنا يحيى بن يحيى، وشيبان بن فروخ، كلاهما عن عبدالوارث، قال يحيى: أخبرنا عبدالوارث بن سعيد، عن أبي التياح الضبعي، حدثنا أنس بن مالك، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قدم المدينة، فنزل في علو المدينة، في حى يقال لهم بنوعمر بن عوف، أقام فيهم أربع عشرة ليلة، ثم إنه أرسل إلى ملا بني النجار، فجاءوا متقلدين بسيوفهم، قال: فكأني أنظر إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم راحلته، وأبوبكر ردفه، وملا بني النجار حوله، حتى ألقى ببناء أبي أيوب، قال: فكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلى حيث أدركته الصلاة، ويصلى في مراض الغنم، ثم إنه أمر بالمسجد، قال فأرسل إلى ملا بني النجار فجاءوا، فقال: يا بني النجار، ثامنوني بحانظكم هذا قالوا: لا، والله لا نطلب ثمنه إلا إلى الله، قال أنس: فكان فيه ما أقول: كان فيه نخل وقبور المشركين وخرب، فأمر رسول الله صلى الله عليه وسلم بالنخل فقطع، وبقبور المشركين فنبشت، وبالخرب فسويت، قال: فصفوا النخل قبله، وجعلوا عضادتيه حجارة وقال: فكانوا يرتجزون، ورسول الله صلى الله عليه وسلم معهم، وهم يقولون: اللهم إنه لا خير إلا خير الآخرة، فانصر الأنصار والمهاجرة. (صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب: ابتناء مسجد النبي صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث: ٥٢٤).

(٢) حدثنا عمرو بن علي، حدثنا خالد بن الحارث، حدثنا حميد، عن أنس رضى الله عنه: .....

قوله: فَأَغْفِرُ لِلْأَنْصَارِ: په دې روایت کېسې "للأنصار" دې خود مستملی او حموی په روایت کېسې د لام حرف جر نه بغیر "الأنصار" دې. (۱) اود سنن ابی داؤد په روایت کېسې د "فأغفر" په خائی "فانصر" دې یعنی "فانصر الأنصار" (۲)

د انصارو د تسمیه وجه: انصار جمع د نصیره لکه شریف جمع د أشرف ده. دې دلې ته انصار په دې وجه وائی چه هغوی د نبی کریم ﷺ امداد او نصرت کړې دې اود حضور پاک نبي د هغوی د دښمنانو نه حفاظت کړې دې. دا جماعت په خپل دي صفت کېسې داسې ممتاز شو چه د هغوی نوم انصار شو. اوداسې معروف او مشهور شو لکه چه د یوې قبیلې نوم انصار دې. (۳)

د مهاجرینو د تسمیه وجه:

قوله: وَالْمُهَاجِرَةُ: دې نه مراد هغه جماعت دې چا چه د نبی کریم ﷺ په محبت کېسې اود آخرت د کامیابی په طلب کېسې مکه مکرمه پریخودوسره د مدینې منورې طرف ته هجرت او کړو. د هجرت اصل یو خیز پریخودل او ترک کول دی. بیا دا لفظ یوه زمکه پریخودو سره د بلې زمکې طرف ته د تلو د پاره استعمال شو اود رومیې معنی استعمال متروک شو. (۴)

علامه کرمانی رحمته الله فرمائی چه کله دا شعر د شعر په انداز کېسې وئیلې شی نو لفظ "آخره" او

..... خرج النبي صلى الله عليه وسلم، في غداة باردة، والمهاجرون والأنصار يحفرون الخندق، فقال:  
اللهم إن الخير خير الآخرة فأغفر للأنصار والمهاجرة

فأجابوا:

نحى الذين بايعوا محمداً على الجهاد ما بقينا أبداً  
(صحيح البخارى، كتاب الأحكام، باب: كيف يبايع الإمام الناس، رقم الحديث: ۷۲۰۱).

(۱) فتح الباری: ۶۸۱/۱ عمدة القاری: ۲۶۴/۴.

(۲) حدثنا مسدد، حدثنا عبدالوارث، عن أبي التياح، عن أنس بن مالك، قال: قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة فنزل في علو المدينة في حى يقال: لهم بنوعمر بن عوف فأقام فيهم أربع عشرة ليلة، ثم أرسل إلى بنى النجار ف جاءوا متقلدين سيوفهم، فقال أنس: فكأنى أنظر إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم على راحته، وأبو بكر ردفه، وملأبنى النجار حوله حتى ألقى بفناء أبي أيوب، وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلى، حيث أدركته الصلاة، ويصلى فى مرابض الغنم، وإنه أمر ببناء المسجد، فأرسل إلى بنى النجار فقال: يا بنى النجار، ثامنوني بحائطكم هذا فقالوا: والله لا نطلب ثمنه إلا إلى الله عزوجل قال أنس: وكان فيه ما أقول لكم، كانت فيه قبور المشركين، وكانت فيه خرب، وكان فيه نخل، فأمر رسول الله صلى الله عليه وسلم بقبور المشركين، فنبتت وبالخرب فسويت وبالنخل فقطع، فصفروا النخل قبله المسجد، وجعلوا عضادته حجارة، وجعلوا ينقلون الصخر، وهم يرتجزون والنبي صلى الله عليه وسلم معهم، وهو يقول: اللهم لا خير إلا خير الآخرة فانصر الأنصار والمهاجرة.

(سنن أبى داؤد، كتاب الصلاة، باب: فى بناء المسجد، رقم الحديث: ۴۵۳).

(۳) المحكم والمعيط الأعظم لابن سیده، المده: ن ص ر: ۲۹۹/۸. لسان العرب، فصل النون: ۲۱۰/۵.

(۴) عمدة القاری: ۲۶۴/۴.

- البهاجرة باندي به وقف کولو سره لوستلې شی لیکن نقل دادی چه نبی کریم ﷺ دا شعر د شعر د وزن نه ویستو سره تاء متحرکه سره لوستلې وو (۱)
- د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مناسبت: د مذکورہ حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت بالکل ښکاره دې ځکه چه په ترجمه کښې هم او په حدیث شریف کښې هم د مشرکانو د قبرونو د وړانولو ذکر دې (۲)
- د حدیث مبارک نه مستفاد امور او احکام: د دې حدیث شریف نه ډیر احکام او آداب مستنبط کیږی په هغې کښې څه دلته لیکلې کیږی:
- ① هم په یوه سورلۍ باندي سور پسې شاته د بل بنده د کینولو جواز معلومیږی (۳)
  - ② د چیلو د ترلو ځانی کښې د مونځ د ادا کولو د جواز علم اوشو (۴)
  - ③ د هبه یا بیع د وجې نه چه څوک د قبرستان مالک جوړ شوې وی په هغه قبرستان کښې د تصرفات کولو د جواز علم اوشو (۵)
  - ④ دا هم معلوم شو چه د مشرکانو قبرونه وړانول جائز دی ځکه چه هغه د احترام قابل نه دی (۶)
  - ⑤ دا هم معلومه شوه چه کله په قبر کښې د مری هلو کی ختمیدو سره خاورې شی نو په هغه زمکه باندي مونځ کول صحیح دی (۷)
  - ⑥ دا هم معلومه شوه چه تازه میوه دارې ونې په وخت د ضرورت پرې کول او استعمالول هم صحیح دی (۸)
  - ⑦ د ذهنونو د تازه ساتلو د پاره د شعرونو ویلو د جواز هم معلوم شو (۹)
  - ⑧ د علامه قرطبی رحمته الله علیه قول مخکښې تیر شوې دې هغوی فرمائی: د دې نه معلومیږی چه سرې چرته د اوسیدو اهتمام او کړی او هغه خپل وطن جوړ کړی نو هلته دې جمعه او جمع قانمولو او د شعائر اسلام د اظهار په خاطر جمات قائم کړی. په دې کښې دا ضروری دی چه د مخکښې نه هلته جمات موجود نه وی یا وی خو صحیح لیکن د آبادنی په اعتبار سره ناکافی وی (۱۰)

(۱) شرح الکرمانی: ۹۰/۴.

(۲) عمده القاری: ۲۵۸/۴.

(۳) عمده القاری: ۲۶۴/۴.

(۴) عمده القاری: ۲۶۴/۴.

(۵) فتح الباری: ۶۸۱/۱ عمده القاری: ۲۶۴/۴.

(۶) اعلام الحدیث فی شرح صحیح البخاری للخطابی: ۳۹۱/۱. فتح الباری: ۶۸۱/۱. عمده القاری: ۲۶۴/۴.

(۷) التوضیح لابن الملتن: ۷۴۷/۵. عمده القاری: ۲۶۵/۴.

(۸) التوضیح لابن الملتن: ۷۴۷/۵. عمده القاری: ۲۶۵/۴.

(۹) عمده القاری: ۲۶۵/۴.

(۱۰) المفهم لما أشکل من تخلفیص کتاب مسلم، کتاب الصلاة باب: ابتداء مسجد النبی صلی الله علیه وسلم: ۱۲۱/۲.

## ۱۷- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ

داباب دی د چیلو د ترلو په خانی کنبی دمونخ کولو باره کنبی

نوله: مراهض: ماده ده رب ض، د کوم معنی چه د یو خانی کنبی ایساریدل. دا جمع د مریض ده د میم په فتحی او باء په کسری سره. رَهْضٌ، یَرِیضُ د باب فرب یضرب نه اسم مکان دی. د کوم معنی چه د چیلو د اوسیدو خانی دی کوم ته چه باره او کنده او هم وائی. (۱) بعضی حضراتو دا لفظ مریض په کسری دمیم ونیلی دی. لیکن دا علامه عینی رحمته غلط گرخولی دی. (۲) د ترجمه الباب مقصد: حضرت شیخ الحدیث مولانا محمد زکریا کاندهلوی رحمته فرمائی چه نورو خناورو مثلاً غوا، میخه، اس او اوبن وغیره په مقابل په چیلو کنبی مسکنت یعنی عاجزی وی. په دی وجه به حضور پاک د نورو خناورو مقابله کنبی د چیلو په باره کنبی مونخ کول خوښول. (۳)

دارنگ هغوی او فرمائیل چه د امام بخاری رحمته مقصود ددی ترجمی نه دا دی چه د مسجد نبوی د جوړیدو نه مخکنبی د حضور پاک په مراهض غنم یعنی د چیلو خانی کنبی مونخ کول خه اتفاقی امر نه وو بلکه قصد او. (۴)

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۱۹]

۴۱۹- حَدَّثَنَا سَلْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ (۵) قَالَ كَانَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ، ثُمَّ سَمِعْتُهُ بَعْدُ يَقُولُ كَانَ يُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ قَبْلَ أَنْ يُبْنَى الْمَسْجِدُ.

د حدیث ترجمه: حضرت ابوالتیاح رحمته د حضرت انس رضی الله عنه نه نقل کوی چه هغوی او فرمائیل چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم به د چیلو په باره کنبی مونخ ادا کولو. بیا ددی نه پس ما هغوی داسی وینا کولو سره واوړیدل چه حضور پاک به د مسجد نبوی جوړیدو نه مخکنبی د چیلو په باره کنبی مونخ کولو.

تو اجم رجال: د مذ کوره حدیث شریف په سند کنبی ټول څلور راویان دی:

① سلمان بن حرب رحمته: دا ابوایوب سلیمان بن حرب بن بجیل ازدی و اشحی بصری رحمته دی. ددوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من کرم ان یعود فی الکفر کما یکره ان یدللی النار من الایمان کنبی تیرشوی دی. (۶)

(۱) المحکم والمعیط الأعظم، المادة: رب ض: ۱۹۴/۸. الصحاح للجوهری، المادة: رب ض: ۱۰۷۶/۳.

(۲) عمدة القاری: ۲۶۵/۴.

(۳) الأبواب والتراجم: ۲۱۴/۲. الكنز المتواری: ۱۳۳/۴.

(۴) سراج القاری: ۱۴/۲.

(۵) مرتغزبجه تحت رقم الحدیث: ۲۳۲. کتاب الرضوء، باب: ابوال الإبل والدواب والغنم ومراهضا.

(۶) کشف الباری: ۱۰۵/۲.

① شعبه رضی اللہ عنہ: دا شعبه بن الحجاج بن النورد واسطی بصری رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف

الباری، کتاب الایمان، باب: من سلم المسلمون من لسانه ویده کنبی تیر شوی دی. (۱)

② ابی التیاح رضی اللہ عنہ: دا ابوالتیاح یزید بن حمید الضبعی رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری،

کتاب العلم، باب: ما کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یتخولهم بالمهظة والعلم کی لاینفروا لانڈی تیر شوی دی. (۲)

③ انس رضی اللہ عنہ: دامشهور صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف

الباری، کتاب الایمان، باب: من الایمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لانڈی تیر شوی دی. (۳)

د حدیث شرح: د مذکورہ حدیث شرح پہ تفصیل سرہ کتاب الوضوء باب: أبوال الإبل والدواب والغنم

ومرايضها کنبی تیره شوی ده. (۴)

ددی حدیث خلاصہ دادہ چہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د اللہ تعالیٰ د حکم د وجہ امت محمدیہ علی

صاحبها الصلوة والتسلیم د پارہ د آسانئ او سہولت والا معاملہ کولو سرہ تول مخ د زمکی د

مونخ او طہارت خانی جور کړی دی. د کوم تقاضا چہ دادہ چہ پہ چا بانڈی کوم خانی کنبی

ہم د مونخ وخت راشی هغه دی د خانی د پاکوالی لحاظ ساتلو سرہ هلته مونخ ادا کړی. دا

ددی امت امتیازی صفت دی. ددی پہ عمومیت کنبی د چیلو پہ بارہ کنبی ادا شوی مونخ ہم

شامل دی.

دویمہ خبرہ دادہ چہ د روایت مطابق د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دا عمل د مسجد نبوی د جوړیدو نه

مخکنبی وو او د مسجد نبوی د آبادیدو نه پس د حضور پاک معمول پہ جمات کنبی د مونخ

ادا کولو وو یعنی د چیلو پہ بارہ کنبی مونخ مطلوب او محمود نه دی بلکه د ضرورت پہ

وخت داسی خانی کنبی مونخ ادا کول جائز دی.

قولہ: ثم سمعته بعد: ددی قول قائل خوک دی؟ پہ دی بارہ کنبی علامہ برماوی رحمۃ اللہ علیہ دا خبرہ

اختیار کړی ده چہ ددی قائل ابوالتیاح دی چا چہ د حضرت انس رضی اللہ عنہ نه دا خبرہ اوریدلې

ده. (۵) او حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ دا خبرہ اختیار کړی ده چہ ددی قائل حضرت شعبه رضی اللہ عنہ دی کوم

چہ دا حدیث د حضرت ابوالتیاح رضی اللہ عنہ نه روایت کوی. (۶) او د علامہ عینی رحمۃ اللہ علیہ پہ نیز په دی

کنبی دواړه احتمالات دی. (۷)

(۱) کشف الباری: ۶۷۸/۱.

(۲) کشف الباری: ۲۶۱/۳.

(۳) کشف الباری: ۴/۲.

(۴) کشف الباری کتاب الوضوء باب: أبوال الإبل والدواب والغنم ومرايضها، رقم الحدیث: ۲۳۴.

(۵) اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح: ۱۸۹/۳.

(۶) فتح الباری: ۶۸۲/۱.

(۷) عمدة القاری: ۲۶۶/۴.

ددې اضافې مفهوم دادې چه ترکومې پورې مسجد نبوی نه وو جوړ شوي تر هغه وخته پورې به نبی کریم ﷺ د ضرورت په وخت چه کله چرته بل خائې نه ملاویدو نود چیلو په باره کنبې به ئې هم مونخ ادا کولو. خو چه کله مسجد نبوی جوړ شو نوییا دهغې نه پس حضور پاک داسې خائې کنبې مونخ نه دې ادا کړې. اگر چه په داسې خائې کنبې د ناپاکئ وغیره نه د سلامتیا په صورت کنبې د مونخ ادا کولو جواز برقرار دې. (۱)

د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت: د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مناسبت بالکل واضح دې چه په دواړو کنبې د چیلو باره کنبې د مونخ د ادا کولو ذکر دې. (۲)

## ۱۸- بَابُ: الصَّلَاةِ فِي مَوَاضِعِ الْإِبِلِ

داباب د اوسانو د اوسیدو خائې کنبې د مونخ د ادا کولو په باره کنبې دې.

قوله: مواضع الإبل: په دې ترجمه الباب کنبې امام بخاری ﷺ مواضع الإبل لفظ استعمال کړې دې حالانکه په احادیثو کنبې دا لفظ نه دې استعمال شوي. بلکه د حضرت براء او جابر بن سبره ﷺ په حدیث کنبې د "مبارک الإبل" الفاظ دی. (۳) د حضرت ابوهریرد ﷺ په روایت کنبې د "أعطان الإبل" الفاظ دی. (۴) او د حضرت أسید بن حضیر ﷺ په روایت کنبې د "مناخ الإبل" الفاظ دی. (۵) او د حضرت عبدالله بن عمرو ﷺ په روایت کنبې د "مرابد الإبل" الفاظ

(۱) عربو به چیلئ او اوسان ساتل هم دغه د هغوي معیشت وو. چرته چه به هغوي د شپې په وخت راوستل او ترل به ئې. په هغې کنبې به ئې یو طرف ته د خپلئ ناستې یا ستې خائې هم جوړولو د کوم د صفاین خیال به چه ئې ساتلو. چونکه جماتونونه لا تر دغه وخته پورې آباد شوی نه وو اود مونخ کولو د باره په اسلام کنبې خه د خاص خائې قید نه وو. په دې وجه حضور پاک هم او صحابه کرامو هم د چیلو په دغه بارو کنبې مونخ ادا کړې دې. بیا د دې خائې خه تخصیص نه وو چرته چه به هم د مونخ وخت کیدلو هغوي به فوری ادا کولو. کله چه جمات جوړ شو نو اوس په عامو حالاتو کنبې مونخ هم په جمات کنبې کول بهتر او گر خولې شو. (انوار الباری: ۴۰/۱۴).

(۲) عمدة القاری: ۲۶۵/۴.

(۳) عن البراء بن عازب، قال: سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الوضوء من لحوم الإبل، فقال: توضعوا منها، وسئل عن لحوم الغنم، فقال: لا توضعوا منها، وسئل عن الصلاة في مبارك الإبل، فقال: لا تصلوا في مبارك الإبل، فإنها من الشياطين، وسئل عن الصلاة في مرائب الغنم، فقال: صلوا فيها فإنها بركة. (سنن أبي داود، كتاب الطهارة، باب: في الوضوء من لحوم الإبل، رقم الحديث: ۱۸۷). عن جابر بن سمرة أن رجلا سأل رسول الله صلى الله عليه وسلم أتوضأ من لحوم الغنم؟ قال: إن شئت فتوضأ، وإن شئت فلا توضأ. قال أتوضأ من لحوم الإبل؟ قال: نعم فتوضأ من لحوم الإبل، قال: أصلى في مرائب الغنم؟ قال: نعم. قال: أصلى في مبارك الإبل؟ قال: لا. (صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب الوضوء من لحوم الإبل، رقم الحديث: ۹۷).

(۴) عن أبي هريرة رضى الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: صلوا في مرائب الغنم، ولا تصلوا في أعطان الإبل. (سنن الترمذی، كتاب الصلاة، باب ماجاء في الصلاة في مرائب الغنم وأعطان الإبل، رقم الحديث: ۲۴۸).

(۵) فتح الباری: ۶۸۲/۱.

نقل دی (۱). لیکن حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی کہ امام بخاری رحمته اللہ علیہ دا ٲول الفاظ ترک کولو سره دے مواضع الإبل لفظ استعمال کرې دې ځکه چې دا لفظ سابقه ٲولو معانیو ته شامل دې (۲). ددې ٲولو الفاظو معنی دلر شان فرق سره تقریباً هم یوه ده.

قوله: "مبارک" ددې معنی ده په زنگونونو باندې دکیناستو. کوم وخت چې اوبس په زنگونونو باندې په زمکه کینی نو د هغه د ناستې ځائی ته مَبْرُک او ددې جمع ته مَبَارِک وائی (۳).

قوله: "معاطن" جمع ده د "معین"، ددې معنی ده د تالاب نه گیر چاپیره د اوبس د کیناستو ځائی. داسې په عام توگه هغه وخت کیری کله چې اوبس یا چیلن و غیره اوبه ځکلو سره بنه خړوب شی. دې نه پس هغوی د تالاب نه گیر چاپیره کینولې شی دې د پاره چې څه وخت پس هغه بیا اوبه اوځکی. ځکه چې هغه د ٲولې هفتې د پاره په خپله خپته کبې اوبه ذخیره او جمع کوی، نو دې ځائی ته معاطن وائی (۴).

قوله: "مرابد" جمع ده د "مرید"، ددې معنی هم د اوبس کینولو او ترلو د ځائی ده (۵).

قوله: "مناخ" ددې معنی هم دغه ده (۶).

د ترجمه الباب مقصد: د امام بخاری رحمته اللہ علیہ مقصود ددې باب نه دا وېشانو دکیناستو ځایونو کبې د مونخ د ادا کولو صحیح کیدل بیانول دی او د امام احمد بن حنبل رحمته اللہ علیہ رد کول دی. د هغوی په نیز د اوبسانو ترلو ځایونو کبې مونخ کول جائز نه دی (۷).

(۱) عن عبدالله بن عمرو: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يصلى في مرابد الغنم. ولا يصلى في مرابد الإبل والبقر. (مسند أحمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، رقم الحديث: ۶۶۵۸، ۱۱/۲۳۹)

(۲) فتح الباری: ۶۸۲/۱.

(۳) الصحاح تاج اللغة، برک: ۱۵۷۴/۴. المعجم الوسيط: باب الباء: ۵۲/۱.

(۴) النهاية في غريب الحديث والأثر، عطن: ۲۵۸/۳. لسان العرب، فصل العين المهملة: ۲۸۶/۱۳.

(۵) الصحاح تاج اللغة: ۴۷۱/۲. المعجم الوسيط: باب الباء: ۵۲/۱. لسان العرب، فصل الراء: ۱۷۰/۳. المعجم

الوسيط: باب الراء: ۳۲۲/۱.

(۶) المغرب في ترتيب المغرب، العين مع الطاء: ۳۱۹/۱.

(۷) علامه بجنوری رحمته اللہ علیہ لیکي چې په دې باب او حدیث سره امام بخاری رحمته اللہ علیہ داخودل غواری چې د اوبسانو په طبيله کبې د مونخ کولو معانعت چې په کومو احادیثو کبې موجود دې هغه په نورو وجوهاتو سره دې چې بعضې اوبیان شریر وی ورائیری نو مونخ په تسلی سره کول مشکل وی وغیره. گنی که اموخته کرې شوی وی او د سورلن وی چې اکثر دیر زیات شریف مزاج وی نو که د هغوی په نزدیکت کبې فی نفسه څه خرابي په مونخ کبې راتلې شوه نو حضور پاک به پخپله ولې مونخ کولو؟ لیکن امام احمد رحمته اللہ علیہ دلته د فقهی نظر نه د کار نه اخستو په وجه د حدیث د ظاهري د معانعت د وجی د اوبسانو په طبيله کبې مونخ کول صحیح گرځولی دی او هم ددې رد امام بخاری رحمته اللہ علیہ کرې دې. حافظ صاحب رحمته اللہ علیہ دلته لیکلي دی چې د معانعت والا احادیث به د امام بخاری رحمته اللہ علیہ په شرط باندې نه وو په دې وجه نی هغه ذکر نه کړل مگرزه وایم چې امام بخاری رحمته اللہ علیہ د نورو مسلکونو والا د احادیثو د روایت کولو التزام کله کوی چې مذکوره تاویل او کرې شی. والله اعلم. (انوار الباری: ۴۱/۱۴).



د علامه سندھی رحمۃ اللہ علیہ راتھی: د علامہ سندھی رحمۃ اللہ علیہ راتھی دادہ چہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ مواضع اہل او معاطن اہل کنبہ فرق بیانوی چہ معاطن بل شی دے او مواضع بل شی. معاطن ہفہ خانی تہ وائی چرتہ چہ اوہن د ابو خکلو وخت کنبہ او دریری. او نہی مذکور خاص دہ د معاطن اہل سرہ. لہذا د اوہن د ناستی پاستی نور خایونہ بہ پہ دے بانڈی قیاس کولے نہ شی. چنانچہ پہ دغہ خایونو کنبہ بہ مونخ جائز وی. (۱)

د حضرت گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ راتھی: حضرت مولانا رشید احمد گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چہ ددی باب پہ قائمولو سرہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ دا خودل غواری چہ ہفہ ممانعت کوم چہ د اوہنانو پہ بارہ کنبہ د مونخ کولو متعلق دے ہفہ پہ خپل عموم بانڈی نہ دے او نہ ہفہ ممانعت د یو داسی علت پہ وجہ دے کوم چہ د اوہن پہ ذات کنبہ موجود وی. بلکہ ددی ممانعت وجہ دادہ چہ داسی خایونو کنبہ مونخ ادا کولو سرہ یکسوئی او توجہ باقی نہ پاتی کیری. پہ زہہ کنبہ د اوہن د طرف نہ د نقصان، شرارت او د نجاست و سوسے راؤچتیری لہذا کہ ددغہ امورو نہ تحفظ ممکن وی او د زہہ تسلی حاصلہ وی نو بیا پہ داسی خایونو کنبہ د مونخ د صحیح کیدو نہ ہیخ منع کونکے خیز نشتہ دے. خنگہ چہ د کجاوی د لرگی وغیرہ طرف تہ مخ کولو سرہ مونخ ادا کول صحیح دی لکہ خنگہ چہ د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما د اثر نہ ددی طرف تہ اشارہ ملاویری لہذا د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د ابن عمر رضی اللہ عنہما د اثر نہ استدلال کولو سرہ د اوہنانو پہ بارہ کنبہ د مونخ د کولو جواز اختیارول صحیح دی. (۲)

د علامہ گاندھلوی رحمۃ اللہ علیہ راتھی: علامہ محمد ادریس صاحب گاندھلوی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی لکہ چہ امام بخاری ددی ترجمے پہ ذریعہ د ہفہ اجادیشو طرف تہ اشارہ کول چہ د اوہنانو پہ بارہ کنبہ د مونخ ادا کولو نہ د منع بارہ کنبہ راغلی دی او ہفہ د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ پہ شرط بانڈی نہ پورہ کیری. یعنی ددی باب د قائمولو پہ ذریعہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د اوہنانو پہ بارہ کنبہ د مونخ جواز بنائی. (۳)

د اوہنانو بارہ کنبہ د مونخ کولو حکم: ائمہ ثلاثہ (امام مالک رحمۃ اللہ علیہ، امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ او امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ) پہ نیرد اوہنانو د ترلو پہ خانی کنبہ کوم وخت چہ ہلتہ اوہنان ترلے وی ہلتہ مونخ ادا کول مکروہ دی. او د کراہت وجہ دادہ چہ اوہن شریر خنور دے د ہفہ د شرارت او د ہفہ د تیختی او چقنری کولو د ویری د وجہ پہ مانخہ کنبہ د خلل اندینسنہ دہ او دا وجہ ہم کیدی شی چہ د اوہنانو پہ بارہ کنبہ نجاست زیات وی پہ خلاف د چیلو پہ بارہ کنبہ او کہ چری داسی خایونو کنبہ خانی پاک صفا وی یا خہ پاکہ کپرا خورولو سرہ مونخ او کری شی نو بیا کراہت ہم نشتہ دے. (۴)

(۱) حاشیہ السنہی، کتاب الصلاة، باب: الصلاة فی مواضع الإہل: ۱۲۶/۱، الطاف سنز.

(۲) اللامع الدراری: ۱۶۶/۱.

(۳) تحفۃ القاری: ۴۸۸/۲.

(۴) بدائع الصنائع، کتاب الصلاة، فصل شرائط أركان الصلاة: ۱۱۵/۱، حاشیہ ابن عابدین.....

د امام احمد بن حنبل رحمته الله په نیز داسې ځایونو کې چې مونځ نه کېږي. د هغوی دلیل د سنن ابی داؤد هغه حدیث دی په کوم کې چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د اوبیانو باره کې چې د مونځ ادا کولو باره کې چې فرمائیلې دی چې د دې باره کې چې مونځ کوئې ځکه چې د دوی خلقت د شیطانانو نه دی. (۱) البته د هغوی په نیز د اوبیانو د تګ راتګ په ځایونو کې چې، عارضی د ساتلو ځانی (لکه په لاره باندې د څه وخت د پاره حصاریدل او کیناستل یا د ګیا خوړلو د پاره ناست وی وغیره وغیره) کې چې مونځ ادا کول جائز دی. (۲)

د هماغه د دلیل جواب: علامه سهارنپوری رحمته الله فرمائی د حدیث جملې "فإنها من الشياطين" کې چې د "ه" ضمیر مرجع ماقبل جمله کې چې لفظ "مبارک" جوړېږي یا بیا لفظ "ابل"، دواړه احتمال موجود دی. که چېرې اول احتمال مراد وی نو په دغه صورت کې چې به "الشياطين" نه مخکې مضاف الیه محذوف وی یعنی "مأوى الشياطين" د اوبیانو بارې د شیطانانو ځایونه دی. او که چېرې دویم احتمال مراد وی یعنی ضمیر راجع وی د "ابل" طرف ته نو په دې سره به لازم راځي چې اوبی د شیطانانو د نسل نه دي. دا احتمال مخې ته کولو سره د بعضو وینا ده چې دا جمله په خپل حقیقت باندې محمول ده. د کوم مطلب چې به داسې چې اوبیان هم د شیطانانو د اوبو نه راپیدا کېږي شوي دي. او بعضی دا وئیلې دی چې دلته حقیقی معنی مراد نه ده بلکه مجازی معنی مراد ده. یعنی اوبیانو له د شیطانانو سره په شیطانت کې تشبیه ورکړې شوي ده لکه څنگه چې شیطانان شریر وی هم دغه شان اوبیان هم شریر وی. او د بعضی علماؤ داهم وینا ده چې شیطانان هم دوه قسمه دي یو هغه چې د جناتو د نسل نه دي او مشهور او معروف دی او دویم هر سرکش او شریر باندې هم د شیطان اطلاق کېږي. لهذا د اوبیانو باره کې چې "فإنها من الشياطين" وئیلو کې چې هم دغه دویم قسم مراد دي.

بیا ممانعت "لا تتصلوا في مبارك الإبل" علت د جمهورو په نیز دا نه دي چې هغه د شیطان د نسل نه دی گنی په دې صورت کې چې خو به هغوی ته نیز دې کیدو او د هغوی طرف ته مخ کولو

..... کتاب الصلاة: ۳۸۰/۱. حاشية الطحطاوي على مراقي الفلاح: ۳۵۷/۱. شرح التلقين للمازري المالكي. كتاب الصلاة، فصل: الأماكن التي تكره فيها الصلاة: ۸۲۰/۱ المدونة، كتاب الصلاة، الصلاة في المواضع التي تكره فيها الصلاة: ۱۸۳/۱. مواهب الجليل في شرح مختصر الخليل، كتاب الصلاة، فائدة: تكره الصلاة في أربعة عشر موضعا: ۴۱۹/۱. البيان في مذهب الإمام الشافعي، كتاب الصلاة، مسألة: الصلاة في أعطان الإبل: ۱۱۱/۲. التهذيب في فقه الإمام الشافعي، كتاب الصلاة: ۲۰۵/۲. النجم الوهاج في شرح المنهاج، كتاب الصلاة، فصل: ۲۴۳/۲.

( عن البراء بن عازب، قال: سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الوضوء من لحوم الإبل، فقال توضؤوا منها، وسئل عن لحوم الغنم، فقال: لا توضؤوا منها، وسئل عن الصلاة في مبارك الإبل، فقال: لا تتصلوا في مبارك الإبل، فإنها من الشياطين، وسئل عن الصلاة في مرابض الغنم، فقال: صلوا فيها فإنها بركة. (سنن أبي داؤد، كتاب الطهارة، باب: في الوضوء في لحوم الإبل، رقم الحديث: ۱۸۷).

(<sup>۱</sup> المعنى لابن قدامة، كتاب الصلاة، مسألة: الصلاة في المقبرة: ۵۳/۲.

سره يا په هغې باندې سوريډو سره هم مونځ جائز نه وي خو ددې ټولو جواز نقل دې بلکه د ممانعت په علت کښې څو احتمال دي. مثلاً:

بعضې ونيلې دي چه د اوبسانو والو دا عادت وي چه هغوی د اوبن پناه کي ناستو سره متيازې او ډکې متيازې او استنجا کوي، په دې وجه منع کړې شو. بعضې وائي د اوبسانو مالک اوبسان پاک صفا او ستهرانه ساتي. بعضې وائي اوبن ډير شرير وي، دانگي او تويونه وهي د کوم په وجه چه په مونځ کښې نقصان او ضرر رسيدو خطر ه وي. بعضې ونيلې دي چه د اوبسانو نه ډير کرکړن بوائي راځي د کوم په وجه چه منع کړې شو. او د امام شافعي رحمته الله عليه يو قول دې چه د کراهت وجه د شيطان نيزديوالي دې ځکه چه په حديث کښې اوبن ته من جنس الشياطين ونيلې شوي دي. (١)

د غواگانو باره کښې د مونځ ادا کولو حکم: حافظ ابن حجر رحمته الله عليه او علامه عيني رحمته الله عليه ليکلي دي چه د غواگانو باره کښې د مونځ ادا کول د چيلو بارې والا حکم سره يوځاني کړنې نه چه د اوبسانو باره کښې د مونځ حکم سره. يعنی د غواگانو په باره کښې مونځ ادا کول بغير د کراهت جائز دي.

بيا علامه صاحب رحمته الله عليه د اهم ذکر کړی دی چه که چرته څوک او وائي چه مسند احمد کښې يو حديث موجود دې په کوم کښې چه د غواگانو باره کښې د مونځ حکم د اوبسانو باره کښې د مونځ کولو د حکم سره يوځاني کړې شوي دې نو ددې جواب دادې چه هغه حديث ضعيف دې په هغې باندې عمل نه شي کيدلې. (٢)

حديث باب [حديث نمبر ٤٢٠]

٣٣٠- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا سَلِيمَانُ بْنُ حَيَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ قَالَ (٢) رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ يُصَلِّي إِلَى بَعِيرِهِ وَقَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَفْعَلُهُ.

د حديث ترجمه: حضرت نافع رحمته الله عليه فرماني چه ما حضرت عبداللہ بن عمر رحمته الله عليه د خپل اوبن طرف ته مخ کولو سره په مونځ ادا کولو ليدلې دي. او حضرت ابن عمر رحمته الله عليه او فرمائيل چه ما

(١) بذل المجہود، کتاب الطہارة، باب: فی الوضوء من لحوم الإبل، رقم الحديث: ١٨٧، ٩٨/٢. الكنز المنزاري: ١٣٤/٤-١٣٣. أوجز المسالك، کتاب الطہارة، باب: سترۃ المصلی فی السفر، رقم الحديث: ٣٥٨، ٢٨٩/٣-٢٨٨. شرح الکرمانی: ٩٢/٤.

(٢) فتح الباری: ٦٨٣/١، عمدة القاری: ٣٦٩/٤.

(٣) أخرجه البخاری أيضا فی سترۃ المصلی، باب: الصلاة إلى الراحلة والبعير والشجر والرحل، رقم الحديث: ٥٠٧. ومسلم فی صحيحه، فی الصلاة، باب: سترۃ المصلی، رقم الحديث: ٥٠٢. وأبو داؤد فی سننه، فی الصلاة، باب: الصلاة إلى الراحلة، رقم الحديث: ٦٩٢. والترمذی فی جامعه، فی الصلاة، فی باب: ماجاء فی الصلاة إلى الراحلة، رقم الحديث: ٢٥٢. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: فی الصلاة، القسم الأول: فی الفرائض وأحكامها، الباب الأول: فی الصلاة وأحكامها، الفصل السادس: فی شرائط الصلاة، الفرع السابع: فی قبلة المصلی، النوع الثاني: فی سترۃ المصلی، رقم الحديث: ٣٧٤٤، ٥٢١/٥.

نبی کریم ﷺ داسی په مورخ کولو لیدلې دې.  
تواجهم رجال: د مذکوره حدیث په سند کښې ټول پنځه رجال دي:

① صدقه بن الفضل رضی الله عنه: دا ابو الفضل صدقه بن الفضل مروزی رضی الله عنه دې. د دوی تفصیلی

احوال کشف الباری، کتاب العلم، باب: العلم والعظة بالذليل لاندې تیر شوی دی. (۱)

② سلمان بن حیان رضی الله عنه: د دوی نوم حافظ سلیمان بن حیان الازدی الکوفی دې. او کنیت

ثی ابو خالد الاحمر دې. د دوی د پیدائش ځای جرجان او د پیدائش کال ۱۱۴ هجری دې.

د دوی په استاذانو کښې عبید الله بن عمر، حمید الطویل، داؤد بن ابی هند، ابن عون، یحیی

بن سعید انصاری، ابن عجلان، هشام بن عروه، ابن جریج، هشام بن حسان، یزید بن کيسان.

عاصم للاحول، حاتم بن ابی صغیره رحمهم الله شامل دي. او د دوی په شاگردانو کښې

صدقه بن الفضل، آدم بن ابی ایاس، اسد بن موسی، ابو کریب، ابو سعید الاشج، یوسف بن

موس القطان، عمرو الناقد، محمد بن عبد الله بن نمیر او حمید بن الربیع رحمهم الله شامل دي.

ابن معین رضی الله عنه او ابن المدینی رضی الله عنه د دوی باره کښې وائی: ثقة. عثمان الدارمی د ابن معین

رضی الله عنه نه نقل کوی: لیس به بأس. امام نسائی رضی الله عنه هم دغه شان فرمائی. عباس الدوری د ابن

معین رضی الله عنه نه نقل کوی: صدوق و لیس بحجة. ابو هشام الرفاعی رضی الله عنه وائی: الثقة الامین. ابو حاتم

رضی الله عنه وائی: صدوق. خطیب رضی الله عنه وائی د حدیث په معامله کښې په دوی باندي هیڅ طعن نشته

دې. د ابن عدی رضی الله عنه وینا ده: له احادیث صالحه. ابن حبان رضی الله عنه د دوی ذکر په ثقاتو کښې

کړې دې. د عجلي رضی الله عنه وینا ده: ثقة ثبت صاحب سنة. دې اصلاً شامي وو لیکن په کوفه کښې

لوئی شوي دي. د دوی وفات ۱۸۹ هجری کښې شوي دي. (۲)

③ عبید الله رضی الله عنه: دا عبید الله بن عمر بن حفص بن عبد الله بن عمر بن خطاب رضی الله عنه دې. د دوی

احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التبرؤ فی البيوت لاندې تیر شوی دی. (۳)

④ نافع رضی الله عنه: دا مولى د عبید الله بن عمر القرشي رضی الله عنه دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب

العلم، باب: ذکر العلم والفتیای المسجد لاندې تیر شوی دی. (۴)

⑤ ابن عمر رضی الله عنه: دا حضرت عبد الله بن عمر رضی الله عنه دې. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب

الإیمان، باب: الإیمان وقول النبی صلی الله علیه وسلم: ہنی الإسلام علی خمس لاندې تیر شوی دی. (۵)

(۱) کشف الباری: ۳۸۸/۴.

(۲) تاریخ الإسلام ووفیات المشاہیر، والأعلام للذهبی: ۸۵۹/۴ تهذیب التهذیب: ۱۸۱/۴. إكمال تهذیب الکمال:

۵۰/۶. سیر اعلام النبلاء: ۱۹/۹. لسان المیزان: ۳۱۷/۹. الطبقات الکبری لابن سعد: ۳۹۱/۶.

(۳) کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: التبرؤ فی البيوت، ص: ۳۶۰.

(۴) کشف الباری: ۶۵۱/۴.

(۵) کشف الباری: ۶۳۷/۱.

د حدیث شرح:

قوله: رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يفعله: كنبسي دَ "يفعله" مطلب "يصلى والبعد في طرف قبلته" دي. دا علامه عيني ﷺ بيان كړې دي. په دې تشریح كنبسي ددې خبرې بيان دي چه صرف د قبلي طرف ته ئی مخ نه وو بلکه هغه اوبن هم د قبلي طرف ته وو، ځكه ځه به مونځ صحيح شی گنی نه دي صحيح. (۱)

دا خبره وړاندې هم تیره شوې ده چه د علامه سندهي ﷺ راښي داده چه امام بخاري ﷺ "مواضع الإبل" او "معاطن الإبل" كنبسي فرق بيانوي چه معاطن بل شی دي او مواضع بل شی دي. معاطن هغه ځائی ته وئیلی شی چرته چه اوبن د اوبو ځكلو وخت كنبسي اودرېږي. او نهی مذکور خاص ده د معاطن اهل سره. لهذا د اوبن د ناستې پاستې ځائی به په نورو ځایونو باندي نه شی قیاس كولي. چنانچه په هغه ځایونو كنبسي به مونځ جائز وی. (۲) په نورو روایتونو كنبسي ددې خبرې تصریح ده چه نبی اکرم ﷺ د خپل اوبن طرف ته مخ كولو سره مونځ ادا كړې دي. (۳)

حضرت گنگوهي ﷺ فرمائی چه د اوبنانو په ځائی كنبسي مونځ كول جائز دی. خو چه د اوبن د اودرېدو نه او د تكليف رسولو نه په امن كنبسي وی. دلته په حدیث كنبسي د بعیر نه مراد سورلی ده ځكه چه د بعیر نسبت، اضافت د نبی ﷺ طرف ته دي او دا خبره بالكل واضح ده چه د هغې د پاسه به سامان نه اورلې كیدو گنی هغې ته حامله وائی. او نه به د هغې نه كار روزگار اخستې شو گنی هغې ته راحله وئیلی شی او نه به په هغې باندي پتی اوبه كولي شو گنی هغې ته به سانیه وئیلی شو.

دلته اوبن ستره جوړولو سره د مونځ كولو وجه دا وه چه د هغه د شرارت او فتنې نه حفاظت وو. ځكه چه بعضې سورلو كنبسي دیرداسې صفات وی كوم چه په نورو كنبسي نه وی. لهذا په دي باندي به هغه صورت هم قیاس كولي شی چرته چه د ځناور د تكليف نه انسان محفوظ او په امن كنبسي وی ځكه چه د نهی د علت په نه موجودیدلو یا په نه موجودیدلو باندي د حكم مدار وی. بل د ځناور طرف ته مخ كولو سره د مونځ كولو سبب داهم دي چه ځناور يو د ساه والا شی دي ليكن په دي كنبسي د بت پرستی مشابهنه نشته دي ځكه چه د اهل باطلو نه چاهم د اوبنانو عبادت نه دي كړي. (۴)

(۱) شرح الكرماني: ۹۲/۴، عمد القاری: ۲۸۱/۴.

(۲) حاشية السندهي، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في مواضع الإبل: ۱/۱۲۶ الطاف سنز.

(۳) عن ابن عمر رضي الله عنهما أن النبي صلى الله عليه وسلم صلى إلى بعيره، أو راحلته، وكان يصلى على راحلته حيث توجهت به (جامع الترمذی، كتاب الصلاة، باب: ماجاء في الصلاة إلى راحلة، رقم الحديث: ۳۵۲).

(۴) الكوكب الدرر، كتاب الصلاة، باب: ماجاء في الصلاة إلى الراحلة، رقم الحديث: ۳۵۲، ۱/۳۳۸.

د هديت شريف د ترجمه الباب سره مناسبت: په ظاهري توگه خو په ترجمه الباب او حديث کښې مناسبت نشته دې ځکه چه په ترجمه الباب کښې نې "مواضع الإهل" کښې د مونخ جواز خودلې دې او حديث باب کښې "صلوة إلى البعير" ذکر دي. ليکن مناسبت او مطابقت به په دې اعتبار سره وي چه د امام بخاري په تراجمو او مطالبو کښې توسع ډيره زياته وي نو دلته هم "صلوة إلى البعير" په "مواضع الإهل" شامل کړې شوې دي.

علامه ادریس کاندهلوی رحمته الله فرماني مطابقت دادې چه (د اوبسانو باره کښې چه دا کوم وئيلې شوی دی چه دا د شيطانانو نه دی، که چرې د اوبسانو د شيطانانو کيدل د مونخ د صحت نه مانع وي نو بيا د مونخ گذار په مخکې د اوبن موجوديدل، يا په اوبن باندې سوريدلو سره مونخ ادا کول هم نه وو صحيح کيدل پکار. حالانکه نبی کریم صلی الله علیه و آله په اوبن باندې د سورلې په حالت کښې نفل مونخ ادا کړې دي.)<sup>(۱)</sup>

د هديت مبارک نه مستنبط فوائد او احکام: د حديث شريف نه يوڅو خبرې واضح کيږي کومې چه دلته ذکر کولې شي:

- ① د مذکوره حديث نه دا خبره ثابتيږي چه کله ځناور قبلې طرف ته ناست وي نو د دغه ځناور طرف ته منځ کولو سره مونخ کول صحيح دي.<sup>(۲)</sup>
- ② داهم معلومه شوه چه اوبن سره نيزدې مونخ ادا کول جائز دي په خلاف د هغې د معاطنو چه په هغې کښې مونخ ادا کول مکروه دي.<sup>(۳)</sup>
- ③ اود اوبن کجاوه وغيره ستره جوړولو سره هم مونخ ادا کيدې شي.<sup>(۴)</sup>

(۱) تحفة القاری: ۴۸۹/۲.

(۲) التوضیح لابن الملتن: ۴۸۳/۵ عمدة القاری: ۲۷۱/۴.

(۳) التوضیح لابن الملتن: ۴۸۳/۵ عمدة القاری: ۲۷۱/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۷۱/۴.

## ۱۹- بَابُ: مَنْ صَلَّى وَقَدَّامَهُ تَنُورٌ أَوْ نَارٌ، أَوْ شَيْءٌ مِمَّا يُعْبَدُ، فَأَرَادَ بِهِ اللَّهُ

دایاب د هغه سړی باره کښې دې چا چه مونځ په داسې حال کښې او کړو چه  
د هغه مخې ته تنور، اور یا څه داسې څیز وی د کوم چه عبادت گیدی شی،  
لیکن د دغه مونځ په ذریعه هغه د الله تعالی د رضامندی اراده او کړه.

د ترجمه الباب تشریح:

قوله: وَقَدَّامَهُ تَنُورٌ: دا جمله اسمیه خبریه ده چه حال به واقع کیږی. او "قدامه" خبر مقدم دې او

"تنور" مبتداء، مؤخر ده. د لفظ قدّام معنی ده مخې ته. یعنی د خلف ضد. (۱)

قوله: تَنُورٌ: معنی دا هغه کنده ده په کوم کښې چه اور بلیږی او ددې نه مراد هغه مخصوص  
او معروف کنده هم ده په کومه کښې چه روټی پخولې شی. او کله په کښې ترکاری هم پخولې  
شی. کله دا کنده د خاورې نه جوړولې شی او کله د اوسپنې نه جوړولې شی. (۲)

قوله: أَوْ نَارٌ: ددې عطف په تنور باندې دې. په دې باندې دا سوال کولی شی چه که صرف هم  
دا لفظ ذکر کړې شوې دې نوهم کافی وو. د تنور د ذکر کولو ضرورت نه وو. ددې جواب

دا دې چه دا د عطف العام علی الخاص د قبیل نه دې دې لره د مستقل ذکر کولو فائده دا ده چه په  
مجوسیانو کښې ویر د اور عبادت کونکی هغه دی چه صرف هم د هغه اور عبادت کوی کوم  
چه ښکاری. حالانکه کله کله تنور د خپل ژوروالی د وجې نه یا د اورد کمیدو د وجې نه  
خپل اور نه ښکاره کوی. بلکه د هغې اور هم د تنور په هغه کنده کښې پټ پروت وی. په دې  
وجه د تنور اورد اور دواړو ذکر جدا او کړې شو. (۳)

قوله: أَوْ شَيْءٍ مِمَّا يُعْبَدُ: ددې جملې عطف هم په ماقبل باندې دې او ددې تقدیری عبارت به

داسې وی "من صلّى وقدامه شیء مما یعبده کالوثان والأصنام والتماثیل والصور ونحو ذلك مما یعبده أهل  
الفلل والكفر". مطلب دا چه کوم سړی په داسې حال کښې مونځ او کړی چه د هغه مخې ته څه  
داسې څیز وی د کوم چه عبادت کیږی لکه بت او تصویر وغیره او هر هغه څیز د کوم عبادت  
چه کافران کوی. د ترجمه الباب دا حصه د ماقبل دواړو الفاظو نه هم زیاته عام ده. (۴)

قوله: فَأَرَادَ بِهِ اللَّهُ: د ترجمه الباب ددې حصې نه مقصود دا دې چه د مونځ گزار مخې ته داسې  
څیزونو کښې چه څه هم مخې ته وی لیکن د هغه مقصود ا څیزونه نه وی بلکه د الله تعالی  
رضامندی نی مقصود وی نو په دې وجه داسې ادا شوې مونځ به مکروه نه وی. (۵)

(۱) المحکم والمحیط الأعظم: ۳۲۲/۱ مخنارا لصحاح: ۲۴۹/۱.

(۲) النهاية فی غریب الحدیث والأثر: ۱۹۹/۱. المخصن لابن سیده: ۱۶۹/۳.

(۳) عمدة القاری: ۲۷۳/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۷۳/۲-۲۷۲.

(۵) عمدة القاری: ۲۷۳/۴.

ذ ترجمه الباب مقصد: رومی خبره خود اده چه د امام بخاری رحمته په نیز مسئله داده چه که  
 خوک خالص د الله تعالی د رضا د پاره مونخ ادا کولو د پاره ولاړ وی او د هغه مخې ته تنور،  
 اور یا خه بل داسې خیز راشی د کوم چه عبادت کولې شی لکه ونه، نمر، سپوږمئ، غوا  
 وغیره نو د دې په وجه د هغه مونخ گذار په مونخ کبې هیخ خرابی یا کراهت نه پیدا کیږی  
 بلکه د هغه مونخ صحیح دې.

په دې باندې یو سوال پیدا کیږی چه امام بخاری رحمته خو په ترجمه الباب کبې د کراهت یا  
 عدم کراهت خه ذکر نه دې کړې بلکه حکم ئی مجهول یا مبهم ساتلې دې نو بیا د کراهت  
 جهت د متعین کولو خه وجه ده؟ نو د دې جواب دادې چه امام بخاری رحمته دا باب قائمولو  
 سره چه کوم دوه احادیث ذکر کړی دی یو تعلیقاً او دویم موصولاً، نو د دې نه په عدم کراهت  
 باندې دلالت کیږی. اگر چه د ډیرو زیاتو وجو هاتو نه د دې احادیثو نه په عدم کراهت باندې  
 استدلال تام نه دې. (۱) «وضاحت وړاندې راخی، خود دې مقابل د ډیرو زیاتو تابعینز (۲)  
 حنابلہ (۳) او د احنافو (۴) په نیز په داسې صورت کبې مونخ ادا کول مکروه تنزیهی دې.  
 چنانچه د خپلې خبرې د ثابتولو او د کراهت قائلینو باندې درد کولو د پاره امام بخاری رحمته  
 دا باب قائم کړې دې او د دلیل په توگه باندې ئی دوه احادیث پیش کړی دی یو تعلیقاً او بل  
 موصولاً.

تعلیق: وَقَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي أَنَّهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (عُرِضَتْ عَلَيَّ النَّارُ وَأَنَا أَلْتَمِسُ) [ر: ۱۹۳]  
 د تعلیق ترجمه: حضرت زهري رحمته فرمائی چه ماته حضرت انس رضي الله عنه او فرمائیل چه ماته نبی  
 کریم ﷺ فرمائیلی دی: زما مخې ته اور راوړلې شو په داسې حال کبې چه ما مونخ ادا  
 کولو.

(۱) فتح الباری لابن رجب: ۲۲۸/۳ عمدة القاری: ۲۸۱/۴.  
 (۲) علامه ابن رجب حنبلی رحمته، حافظ ابن حجر رحمته او علامه عینی رحمته وغیره خپلو کتابونو کبې د  
 حضرت ابن سیرین رحمته باره کبې دا نقل کړې دی چه هغوی به د تنور طرف ته مخ کولوسره مونخ ادا کول  
 مکروه گنرل او تنور ته به ئی بیت النار وئیلو. د ابن سیرین رحمته او حضرت سفیان رحمته نه هم کراهت نقل  
 دې او گورئ: فتح الباری لابن رجب: ۲۲۹/۳ فتح الباری لابن حجر: ۶۸۴/۱ عمدة القاری: ۲۷۳/۴.

(۳) کشف القناع عن متن الإفتاح، کتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، فصل: ما یکره وما یباح وما یستحب فی الصلاة:  
 ۳۷۰/۱. المغنی لابن قدامة، کتاب الصلاة، باب: الأمامة وصلاة الجامعة، فصل الصلاة مستقبلاً وجه الإنسان: ۱۷۸/۲.  
 المبدع فی شرح المقنع، کتاب الصلاة، باب: مکروهات الصلاة: ۴۲۸/۱.

(۴) دررالحکام شرح غرر الأحکام، کتاب الصلاة، مکروهات الصلاة: ۱۰۹/۱. حاشیة الطحطاوی علی مراقی الفلاح  
 شرح نورالإیضاح، کتاب الصلاة، فصل فی مکروهات: ۱۳۲/۱. المحيط البرهانی، کتاب الاستحسان والکراهة.  
 الفصل الرابع فی الصلاة، والتسبیح، وقراءة القرآن والذکر، والدعاء، ورفع الصوت عند قراءة القرآن والذکر  
 والدعاء: ۳۰۸/۵.



دَ تَعْلِيقِ تَخْرِيجِ: امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ دا تعلق موصولاً کتاب الصلاة کنسی (۱) باب: وقت الظهر عند الزوال کنسی بیان کرې دې مکمل تخريج به په متعلقه مقام باندې راشی. ان شاء الله العزيز. تعلق او ترجمه الباب کنسی مطابقت: په دې تعلق او ترجمه الباب کنسی مناسبت په دې اعتبار سره دې چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د مونخ دوران کنسی خپلې مخې ته د اور مشاهده او کره او په ترجمه الباب کنسی هم دغه دی چه د مونخ گذار مخې ته اور وی او هغه مونخ ادا کوی. لیکن په دې مطابقت او په غرض د استدلال دا تعلق د ترجمه الباب لاندي راوړلو کنسی اشکالات دی، چه په تفصیل سره وړاندې راخی (۲)

دَ تَعْلِيقِ نَه طَرِيقِ دَ اسْتِدْلَالِ: امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه گورنی نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د مونخ په حال کنسی وو په دې حالت کنسی د حضور پاک مخې ته د دوزخ اور پیش کرې شو یعنی اور د حضور پاک مخکې ته وو او حضور پاک مسلسل په مونخ کنسی وو. که د کراهت قول اختیار کرې شی نولا محاله به دا لازم شی چه د حضور پاک مونخ په دې صورت کنسی د کراهت سره ادا شو نو دا صحیح نه ده. لهذا چه کله داسې صورت پېښ شی نو مونخ بغير د کراهت نه صحیح دې.

دَ اِحْتِافِو مَسْلُکِ اَوْ دَ اِمَامِ بَخَارِی رحمۃ اللہ علیہ دَ اسْتِدْلَالِ جَوَاب: دَ اِحْتِافِو مَسْلُکِ په دې باره کنسی دادي چه که د مونخ گذار مخې ته اور یا تنور وغيره وی یعنی داسې خیزوی د کوم چه عبادت کیرې نو د مجوسیانو سره د مشابهت د وجې به د هغه په مونخ کنسی هم کراهت راخی لیکن د دغه مونخ گذار د عبادت د ارادې د نه کیدو د وجې به هغه کراهت تنزیهی وی تحریمی به نه وی. پاتې شوه خبره د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د استدلال، نو هغه د تام نه کیدو د وجې مونخ هغه نه منو. د دې استدلال ناقص یا د تام نه کیدو اول وجه دا ده چه د دوزخ اور کوم چه حضور پاک ته د مونخ په حالت کنسی خودلې شوې وو هغه د حضور پاک د اختیار نه بغير وو یعنی داسې نه وو چه اور د مخکنی نه بکیدو او حضور پاک د هغې مخې ته او دریدو سره مونخ ادا کول شروع کړل. بلکه داسې او شو چه حضور پاک صلی اللہ علیہ وسلم مونخ شروع کړو او په دې حالت کنسی د حضور پاک مخې ته د حضور پاک د ارادې، خوښې او اختیار نه بغير جنت او دوزخ مخې ته راوړلې شو. حالانکه زمونږ کلام او بحث خود هغه صورت باره کنسی دې چه یو خانی کنسی اور بلیږی او یو سرې د هغې مخې ته او دریرې او مونخ ادا کول شروع کړی.

(۱) حدیثنا أبو الیمان، قال: أخبرنا شعيب، عن الزهري، قال: أخبرني أنس بن مالك، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم خرج حين زاغت الشمس، فصلى الظهر، فقام على المنبر، فذكر الساعة، فذكر أن فيها أموراً عظيماً، ثم قال: من أحب أن يسأل عن شيء فليسأل، فلا تسألوني عن شيء إلا أخبركم، مادمت في مقامى هذا فأكثر الناس في البكاء، وأكثر أن يقول: سلوني، فقام عبدالله بن حذافة السهمي، فقال: من أي؟ قال: أبوك حذافة، ثم أكثر أن يقول: سلوني، فبرك عمر على ركبتيه، فقال: رضينا بالله ربا، وبالإسلام ديناً، وبمحمد نبياً، فسكت، ثم قال: عرضت على الجنة والنار أنفاً في عرض هذا الحائط، فلم أر كالجير والشر. (صحيح البخاري، كتاب الصلاة، باب: وقت الظهر عند الزوال، رقم الحديث: ۵۴۰)

(۲) عمدة القاري: ۲۷۳/۴

لهذا دا حدیث یا واقعہ دلیل جو پرول صحیح نہ دی. (۱)

دویمہ وجہ دادہ ہے کہ دوزخ خود لہ پہ تو گہہ د کشف شوی وو. دلیل دادی ہے حضور پاک سرہ شریک پہ جمات کنسی صحابہ کرام رضی اللہ عنہم تہہ دا کشف نہ دی شوی یعنی د دوزخ دغہ اور ہنکارہ نہ شو حالانکہ زمونہ بحث خو پہ عالم حسی کنسی د مونخ گذار مخی تہہ د اور کیدو پہ صورت کنسی دی، لہذا پہ دی وجہ ہم استدلال تام نہ دی. (۲)

دویمہ وجہ دادہ ہے کہ زمونہ بحث ددی دنیا د اور بارہ کنسی دی او ہغہ اور کوم ہے حضور پاک تہہ د مونخ دوران کنسی خود لہ شوی وو ہغہ د آخرت اور وو. (۳)

ابن رجب حنبلی رحمۃ اللہ علیہ ددی خبری د دلیل پہ تو گہہ یو قول نقل کرے دی ہے کہ حضرت جبرائیل علیہ السلام د حضور پاک قلب اطہر خیر لہ وو او د جنت پہ اویو سرہ شی ہغہ تہہ غسل ور کرے وو نو دا تول عمل د سرو زرو پہ رکیبی کنسی او کرے شو کومہ ہے حضرت جبرائیل علیہ السلام خیل خان سرہ راورے وو. نو د ہغہ سرو زرو د رکیبی استعمال باندی د حرمت حکم اونہ لگیدو حکمہ ہے ہغہ لوہی ددی دنیا نہ وو بلکہ د جنت نہ راورے شو لوہی وو او د حرمت تغلق پہ دنیا کنسی د سرو زرو د لوہی پہ استعمال لو سرہ دی. چنانچہ پہ دی باب کنسی ذکر کرے شو تعلیق کنسی خود لہ شوی اخروی اور باندی بہ ہم د دنیاوی اور حکم نہ شی لگولی. نو ہے کہ دا دوارہ قسمہ اور جدا شو نو دیو اور نہ د بل اور حکم نہ شی مستنبط کیدلی. (۴)

خلورمہ وجہ دادہ ہے کہ زمونہ بحث پہ ہغہ اور کنسی دی کوم ہے کہ د مونخ گذار مخی تہہ وی. حالانکہ ہغہ اور کوم ہے حضور پاک تہہ خود لہ شوی وو ہغہ ضروری نہ ہے کہ مخی تہہ وی بلکہ ممکن ہے کہ ہغہ ہسی یا گس طرف تہہ وو. (۵)

علامہ محمد ادریس کاندھلوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتی ہے کہ دی احتمالات تہہ کتو سرہ صفا محسوس سیری ہے امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ جزئی مسائل بیانول غواری او د ہغہ د حکم بیانولو د پارہ د احادیثونہ د حکم مستنبط کولو کوشش کنسی دی. خو ہے کہ ہغہ د شرائطو مطابق واضح حدیث نہ مومی نو بیا پہ دیرو تاوولو او رانکلو سرہ داسی د لری استدلالات کوی. (۶)

علامہ کاندھلوی رحمۃ اللہ علیہ یو توجیہ بلہ پیش کرے ہے کہ چری دا پہ خیال کنسی اوساتلی شی نوویلی کیدی شی ہے کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کلام د نورو فقہاؤ مقابل او مخالف نہ دی. ہغہ دا ہے کہ د مونخ گذار مخی تہہ داسی اور وی ہے کہ نورو مونخ کونکو مخی تہہ نہ وی یعنی د ہغوی د نظر نہ غیب وی او ہغہ پہ داسی حیثیت سرہ وی ہے کہ ہغہ اور د مونخ گذار مخی

(۱) فتح الباری لابن رجب: ۲۲۹/۳ عمدۃ القاری: ۲۷۲/۴ تحفۃ القاری: ۴۹۰/۲.

(۲) عمدۃ القاری: ۲۷۲/۴ تحفۃ القاری: ۴۹۰/۲.

(۳) عمدۃ القاری: ۲۷۲/۴ تحفۃ القاری: ۴۹۰/۲.

(۴) فتح الباری لابن رجب: ۲۲۹/۳.

(۵) عمدۃ القاری: ۲۷۲/۴.

(۶) تحفۃ القاری: ۴۹۰/۲.

ته په کیدو سره د مجوسیانو سره مشابهت لازم نه راځي نو په داسې حالت کښې په مونځ ادا کولو کښې هیڅ کراهت نشته دي. (۱)

د امام بخاری رحمته الله علیه په مسلک باندې یو اعتراض: حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه د امام بخاری رحمته الله علیه په اختیار کړې شوي مسئله باندې د معترضینو د طرف نه کیدونکې یو اعتراض نقل کړې دي د هغې جواب ورکولو سره فرمائي چې د امام بخاری رحمته الله علیه راښي داده چې کله د مونځ گذار مخې ته اور وی نو د هغې طرف ته مخ کولو سره مونځ کول مکروه نه دی. په دې باندې دا اشکال راځي چې امام بخاری رحمته الله علیه په وړاندې صفحه ۶۲ باندې بَاب: الصلاة فی ثوب مصلب او تصاویر تر لوسره تصویر یا صلیب والا کپرا کښې مونځ کول مکروه گرځولی دی او د هغې د مکروه کیدو علت ددی نه سوا هیڅ نه دی چې په دې کښې تشبیه بعبادت الغیر لا زمیری کوم چې شرعاً منع دی او دا علت دلته موندلې شی په دې وجه دلته هم مونځ مکروه کیدل پکار دی؟

ددې په جواب کښې علامه کرمانی رحمته الله علیه فرمائي چې د تماثیل حکم د نورو ټولو معبودانو د حکم نه جدا دي. ځکه چې تصویر خو په خپله یو منکر شی دي چې که دهغې عبادت او کړې شی او که اونه کړې شی. په خلاف د اور وغیره چې هغه پخپله قبیح نه دي البته ددې عبادت حرام دي. بل مذهب دادې چې تصویرونه په مونځ کښې په مکمل توګه مصروف کیدو نه غافل کونکي دي په دې وجه د تصویر والا کپرا کښې مونځ مکروه دي. (۲)

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۲۱]

۳۳۱- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ (۱) قَالَ انْخَسَفَتِ الشَّمْسُ، فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - ثُمَّ قَالَ «أَرَيْتُمُ النَّارَ، فَلَمْ أَرْ مِنْظَرًا كَالْيَوْمِ قَطُّ أَفْظَمَ».

د حدیث ترجمه: حضرت عبد الله بن عباس رضي الله عنه او فرمائیل چې نمر تندر او نیولو نور رسول الله صلی الله علیه و آله مونځ ادا کړو. بیاني او فرمائیل ماته جهنم او خودلې شو. ما د نن په شان ویرونکې منظر کله نه دي لیدلې.

تواجم وچال: د دې حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه راویان دي:

① عبد الله بن مسلمة رحمته الله علیه: دا ابو عبد الرحمن عبد الله بن مسلمة بن قعنب حارثی بصری رحمته الله علیه

دي. ددوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الدین الفرار من الفتن لاندې تیر شوی دی. (۲)

(۱) تحفة القاری: ۴۹۰/۲.

(۲) الأبواب والراجیم: ۲/۲۱۵ الكنز المتواری: ۴/۱۳۶ سراج القاری: ۳/۹۳.

(۳) مرتخریجه فی کشف الباری تحت کتاب الإیمان، باب: کفران العشر و کفر بعد کفر، رقم الحدیث: ۲۹، ۲/۲۰۶.

(۴) کشف الباری: ۸۰/۲.

④ مالك بن انس: دا ابو عبد الله امام مالك بن انس بن مالك رضي الله عنه دي. ددوی احوال كشف الباری،

كتاب الإيمان، باب: من الدين الفرار من الفتن لاندې تیر شوی دی. (۱)

⑤ زيد بن اسلم: دا ابواسامه زيد بن اسلم قرشي عدوی مدنی رضي الله عنه دي. ددوی احوال

كشف الباری، كتاب الإيمان، باب: كفران العشير وكفر بعد كفر، رقم الحديث ۲۹، لاندې تیر شوی

دی. (۲)

⑥ عطاء بن يسار: دا ابو محمد عطاء بن يسار هلالی مدنی رضي الله عنه دي. ددوی احوال كشف

الباری، كتاب الإيمان، باب: كفران العشير وكفر بعد كفر، رقم الحديث ۲۹، لاندې تیر شوی دی (۳)

⑦ عبد الله بن عباس: دا مشهور صحابی رسول حضرت عبد الله بن عباس رضي الله عنه دي.

ددوی احوال كشف الباری، كتاب بده الوحي د خلورم حديث لاندې تیر شوی دی. (۴)

د حديث شرح:

قوله: الخفت: دا د انكسفت په معني دي. (۵)

د صلاة كسوف او خسوف مصداق: د نمر ياد سپوږمۍ پوره رنړا يا خه رنړا ختميدو او د

سپوږمۍ او نمر توريډو ته كسف وائي. كسفت الشمس او خسفت الشمس دواړه شان

استعماليري. اودغه شان كسف القمر او كسف القمر دواړه شان استعماليري.

يو قول دادې چه كسوف د نمر د پاره او خسوف د سپوږمۍ د پاره استعماليري. او هم دغه

لغت ډير مشهور دي. او يو قول داهم دي چه د تندر نيولو د شروع وختونو ته كسوف او آخري

وختونو ته خسوف وائي ليكن زيات واضحه تعبير او تعريف او قول هم هغه دي كوم چه

پورته ذكر شو.

خلاصه داده چه هغه مونځ كوم چه د نمر يا سپوږمۍ نه د يو په مكمله توگه يا بعضې حصې

توريډو په وخت په مخصوص طريقه باندي ادا كړې شي هغې ته صلاة كسوف وائي. (۶)

قوله: "فصلى" ددې فعل مفعول محذوف دي كوم چه الكسوف دي. يعنى حضور پاك

د كسوف مونځ ادا كړو. (۷)

(۱) كشف الباری: ۸۰/۲.

(۲) كشف الباری: ۲۰۳/۲.

(۳) كشف الباری: ۲۰۴/۲.

(۴) كشف الباری: ۴۳۵/۱.

(۵) شرح الكرماني: ۹۳/۴.

(۶) تاج العروس، ك م ف: ۳۰۹/۲۴. لسان العرب، فصل الكاف: ۲۹۹/۹.

(۷) شرح الكرماني: ۹۳/۴ عمدة القاري: ۲۷۳/۴. صلاة كسوف او صلاة خسوف د جمهور .....

قوله: "أريت" : "داد ماضی مجهول صیغه ده. مرادی معنی داده چه ما د مונخ ادا کولو وخت کنبی اور اولیدلو." (۱)

قوله: "وکالیوم" : "دا لفظ به د مصدر محذوف صفت جوړشی. یعنی "رؤية مثل رؤية اليوم" د نن د لیدو په شان لیدل ما چرته نه دی لیدلی. "کالیوم" کنبی کاف د تشبیه د پاره دې د مثل په معنی." (۲)

قوله: "أظلم" : "دا لفظ د ډیر زیات قباحث معنی بیانوی." (۳)

قوله: "قسط" : "دا د زمانه ماضی منفی د استغراق معنی پیدا کوی. مراد دادې چه د کله نه زه پیدا شوی یم نو د هغه وخت نه ما چرته داسې قبیح منظر نه دې لیدلې." (۴)

د ترجمة الباب سره مطابقت: د ترجمة الباب مناسب د حدیث شریف "أريت النار" د جملې په وجه په داسې توگه چه که چرې د مונخ گذار مخې ته اور موجودیدل ناخوښه او مقصد صلوة وې نو الله تعالی به دا د خپل حبیب ﷺ مخې ته نه پیش کولو." (۵)

د حدیث مبارک نه مستفاد امور: د مذکوره حدیث شریف نه چه کوم فوائد او احکام مستنبط کیری په هغې کنبې څه دلته نقل کولې شی:

① د کسوف د مونخ د مستحب کیدو علم اوشو." (۶)

② د اهل سنت والجماعت په نیز جنت او جهنم پیدا کړې شوی دی په خلاف د معتزلو." (۷)

③ د نبی کریم ﷺ په معجزاتو کنبې یوه معجزه دلته ذکر شوه چه الله تعالی د حضور پاک د سترگو د وړاندې نه پردې اخوا کړې اود دوزخ اور ننی د حضور پاک سترگو ته مخامخ کړو. حضور پاک دغه اور په خپلو سترگو باندې هم داسې اولیدلو لکه څنگه چه د معراج نه په واپستی باندې ننی مسجد اقصی لیدلې وو. د ابن الملتن بیان دې چه دلته یو احتمال داهم دې چه د حضور پاک دا رؤیت، رؤیت علمی وی د کوم خبر چه د وحی په ذریعه

..... ائمه کرامو په نیز سنت مؤکده دې. ددې مونخونو وخت د تندر نیولو د وخت نه شروع کیری اود تندر نیولو د ختمیدو پورې باقی وی. ځکه چه د نبی کریم ﷺ ارشاد دې: "إذا رأيتوها فادعوا الله وصلوا حتى ينجلي یعنی کله چه تاسو دا اووینئ نو د الله تعالی نه دعا غواړئ. او مونخ کوئی تردې چه هغه تندر نیول ختم شی. حضور پاک د تندر ختمیدل د مونخ انتها، او خودله بل دا چه ددې مشروعیت د الله تعالی نه ددې خواهش د څرگندونې د پاره دې چه هغه د رنرا نعمت دوباره رانصیب کړی او کله چه دا مقصود حاصل شو نو د مونخ مقصود حاصل شو. (الموسوعة الكويتية الفقهية: ۲۸۰/۲۷)

(۱) شرح الکرمانی: ۹۳/۴ عمدة القاری: ۲۷۴/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۹۳/۴ عمدة القاری: ۲۷۴/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۹۳/۴ عمدة القاری: ۲۷۴/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۷۴-۲۷۵/۴.

(۵) عمدة القاری: ۲۷۳/۴ الأبواب والتراجم: ۲۱۵/۲ سراج القاری: ۱۹/۳.

(۶) شرح الکرمانی: ۹۳/۴ عمدة القاری: ۲۷۵/۴.

(۷) شرح الکرمانی: ۹۳/۴ التوضیح لابن الملتن: ۴۸۸/۵ عمدة القاری: ۲۷۵/۴.

حضور پاک ته او کرپ شو (۱)

⑤ د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د ترجمۃ الباب مطابق چہ کلہ د مونخ گذار مخی ته اور وی لیکن د دغه مونخ گذار مقصود د دغه اور عبادت کول نه وی بلکه د اللہ تعالیٰ رضامندی نی مخی ته وی نو په داسی مونخ کنبی ہیخ کراہت نشته دی (۲)

د جماتونو د قبلې والا دیوال کنبی هیتر یا کیس یا لیمپ وغیره د لکولو حکم موجوده وخت کنبی بعضی داسی علاقې چرته چہ ډیره زیاته یخنی وی هلته په جماتونو کنبی چہ کومی هیترې د قبلې طرف ته لگولې شی دې ډپاره چہ مونخ گذار حضرات ددې په تاؤ سره د یخنی نه بیج شی او د جمات ماحول په دې سره گرم وی یا د رنرا په خاطر د کیس لیمپ، موم بتی یا ډیوه وغیره د قبلې دیوال کنبی لگولې شی نو د ضرورت په وجه ددې شرعاً گنجائش شته. خو بیا هم په ظاهری توگه د مجوسیانو د مشابہت نه د بیج کیدو په خاطر انتظامیه له پکار دی چہ داسی هیترې یا نور د اور والا خیزونه دې مخامخ د قبلې والا دیوال کنبی نه لگوی. بلکه بنی طرف ته او گس طرف ته او د مونخ گذارو شاه طرف ته دې لگوی. یا که هم د قبلې طرف ته لگول وی نو د مونخ گذارو د سرونو نه پورته دې په دیوال کنبی لگوی (۳)

## ۲۰- بَابُ: كَرَاهِيَةِ الصَّلَاةِ فِي الْمَقَابِرِ

دا باب دې په قبرستان کنبی د مونخ کولو د مکروه کیدو په بیان کنبی

قوله: كَرَاهِيَةٌ: بعضی نسخو کنبی "کراهة الصلاة" دې نه چہ "کراهية الصلاة"، په معنوی اعتبار سره هیخ حرج نشته، ځکه چہ کراهة او کراهية دواړه مصادر دی (۴)

قبرستان کنبی د مونخ حکم: قبرستان کنبی د مونخ د جواز یا عدم جواز په باره کنبی د ائمه

(۱) التوضیح لابن الملتن: ۴۸۸/۵ عمدة القاری: ۲۷۵/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۷۵/۴.

(۳) (و) لا [یکره] إلى (مصحف أو سيف مطلقاً أو شمع أو سراج) أو نار توفد. لأن الجوس إنما تعبد الجمر. لا النار الموقدة، فنية. (الدر المختار، کتاب الصلاة، باب: ما یفسد الصلاة وما یکره فیها: ۱/۸۹ دارالکتب العلمیة). ومن توجه فی صلاته إلى تنور فيه نار توفد أو کانون فيه نار یکره، ولو توجه إلى قندیل أو إلى سراج لم یکره. کذا فی محیط السرخسی وهو الأصح. کذا فی خزانه الفتاوی. (الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب السابع: فیما یفسد الصلاة وما یکره فیها وما لا یکره، الفصل الثانی: فیما یکره فی الصلاة وما لا یکره: ۱/۱۰۸). (نجم الفتاوی، کتاب الصلاة، سجد میں لاریوں کے سامنے بیڑ لگائے لاکم: ۵۶۵/۳) (خیر الفتاوی، احکام المساجد، سجد میں گیس کے بیڑ لگائے یا نہیں، یا انالی تده سے ابر لگائے ہائیں: ۵۵۰/۶) بعضی علاقې ډیرې زیاتې یخنی وی په هغې کنبی د یخنی نه د بیج کیدو ډپاره مختلف خیزونه استعمالیږی. په هغې کنبی یو د کیس هیتر هم دې چہ په مکان، دوکان او جماتونو کنبی لگولې شی. ددې کیس د هیتر په پلیتونو باندې د سروتکو شکل جوړ شوی وی کلہ چہ دا هیتر لگی نو هغه د سروتکو په شان برقیږی. داسی هیترې مخی ته کیخودو سیره مونخ چاټز خودې مگر د آتش پرستو د مشابہت نه د بیج کیدو ډپاره دا د جمات په اطرافو کنبی یا د سجدي د خانی نه اوچت لگول پکار دی. (المسائل المهمة فیما ابتلیت العامة، کتاب الصلاة، لار کے مکروهات و عبادات: ۱۱۳/۵).

(۴) عمدة القاری: ۲۷۵/۴.

اربعه د مذهبو تفصيل درې ابوابه وړاندې باب "هل تنبش قبور مشركى الجاهلية ويتخذ مكانها مساجد" كښې تير شوي دي.

د ترجمه الباب مقصد: ددې ترجمه الباب نه مقصود مطلقاً د قبرونو په مينځ كښې د مونځ مكره كيدو بيان دي. او ماقبل كښې چه كوم باب: "هل تنبش قبور مشركى الجاهلية ويتخذ مكانها مساجد" تير شو په هغې كښې خاص د قبر مخې ته او دريدو سره د مونځ ادا كولو د كراهت بيان وو په داسې توگه چه د مونځ گذار مخې ته قبر وي. نو دا خبرې مخې ته كيځودو سره د تكرار قائلينو باندې رد كيږي. (١)

حديث باب [حديث نمبر ٢٢٢]

٢٢٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ (٢) عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «اجْعَلُوا فِي بُيُوتِكُمْ مِنْ صَلَاتِكُمْ، وَلَا تَتَّخِذُوا هَا قُبُورًا».

د حديث ترجمه: حضرت عبدالله بن عمر رضي الله عنهما فرمائي چه نبی كريم صلى الله عليه وسلم ارشاد او فرمائيلو په خپلو كورونو كښې هم مونځ كوئى دا قبرستان مه جوړوئى. تراجم رجال: د مذكوره حديث شريف په سند كښې ټول پنځه راويان دي:

① مسدد رضي الله عنه: دا مسدد بن مسرهد الاسدي البصري رضي الله عنه دي. د دوى مختصر حالات كشف

(١) تحفة القارى للكاندهلوى: ٤٩٠/٢. حضرت مولانا فخر الدين احمد صاحب نور الله مرقدہ فرمائي چه يوڅو صفحي وړاندې "هل تنبش قبور مشركى الجاهلية" او دې سره "مايكروه من الصلاة في القبور" تير شوي دي. او هلته تفصيل بيان شوى دي چه په قبرستان كښې د مونځ كولو په مسئله كښې د فقهاؤ كراموڅه اختلاف دي. دلته امام بخارى رضي الله عنه مستقلاً ددې مسئلې وضاحت كول غواړي چه په قبرستان كښې مونځ كول مكره دي. ددې وضاحت وجه داده چه د زمكې په هره حصه باندې مونځ كول جائز دي. د حضور پاك ارشاد دي "جعلت لى الارض مسجداً وطهوراً" او مقابره هم د زمكې يوه حصه ده. امام بخارى رضي الله عنه بيانول غواړي چه د اصل په اعتبار سره د زمكې هره يوه حصه د مونځ قابله وه ليكن د عوارضو د وجې نه په خاص خاص حصو كښې د مونځ كولو نه منع كړې شوي ده. دا عوارض كله په زمكه كښې وي او كله په ماحول كښې وي هم ددې عوارضو په بنياد قبرستان كښې مونځ كول مكره دي. ځكه چه په قبرستان كښې د مونځ كولو عمل د بت پرستو يا قبر پرستو سره تشبه پيدا كوي. په دې وجه فقهاء اربعه په دې باندې متفق دي چه قبرستان كښې مونځ كول مكره دي. (ايضاح البخاري: ١٨٠/٣).

(٢) أخرجه البخارى ايضاً فى التطوع، باب: التطوع فى البيت، رقم الحديث: ١١٨٧. ومسلم فى صحيحه، فى صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب صلاة النافلة، رقم الحديث: ٧٧٢. وأبو داؤد فى سننه، كتاب الصلاة، باب: فى فضل التطوع فى البيت، رقم الحديث: ١٤٤٨. والترمذى فى جامعه، كتاب الصلاة، باب: ماجاء فى فضل صلاة التطوع فى البيت، رقم الحديث: ٤٥١. والنسائى فى سننه، كتاب فى صلاة الليل، باب: الحث على الصلاة فى البيوت والفضل فى ذلك، رقم الحديث: ١٥٩٨. وابن ماجه فى سننه، كتاب الصلاة، باب: ماجاء فى التطوع فى البيت، رقم الحديث: ١٣٧٧. وفى جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: فى الصلاة القسم الأول: فى الفرائض وأحكامها، الباب الأول: فى الصلاة وأحكامها، الفضل السادس: فى شرائط الصلاة، الفرع الرابع: فى أمكنة الصلاة، النوع الرابع: فى أحاديث متفرقة، رقم الحديث: ٤٨٣/٥، ٣٦٨٣.

- الباري، كتاب الإيمان، باب: من الإيمان أب يحب لأخيه ما يحب لنفسه، لاندي او تفصيلي حالات كتاب العلم، باب: من خص بالعلم قوما دون قوم كراهية أن لا يفهموا لاندي تير شوي دي. (١)
- ② يحيى بن سعيد بن فروخ القطان تميمي رحمته الله دي. ددوي احوال كشف الباري، كتاب الإيمان، باب: من الإيمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه لاندي تير شوي دي. (٢)
- ③ عبيد الله رحمته الله: دا عبيد الله بن عمر بن حفص بن عبد الله بن عمر بن خطاب رحمته الله دي. ددوي احوال كشف الباري، كتاب الوضوء، باب: التبرز في البيوت ص: ٣٦٠ لاندي تير شوي دي. (٣)
- ④ نافع رحمته الله: دا مولى د عبد الله بن عمر القرشي رحمته الله دي. ددوي احوال كشف الباري، كتاب العلم، باب: ذكر العلم والفتيا في المسجد لاندي تير شوي دي. (٤)
- ⑤ ابن عمر رحمته الله: دا حضرت عبد الله بن عمر رحمته الله دي. ددوي تفصيلي احوال كشف الباري، كتاب الإيمان، باب: الإيمان وقول النبي صلى الله عليه وسلم: بني الإسلام على خمس لاندي تير شوي دي. (٥):  
د حديث شوح:

قوله: "اجعلوا في بيوتكم من صلاتكم" يعني تاسو نوافل په خپلو كورونو كنيې ادا كوئې په كورونو كنيې دنوافل كولو باره كنيې د علامه قرطبي رحمته الله موقف: په دې عبارت كنيې "من صلاتكم" كنيې چه كوم "من" دي، ددې باره كنيې علامه قرطبي رحمته الله فرمائي (٦) چه دا د تبعيض دپاره دي او په دې صورت كنيې به د "صلاتكم" نه مراد نوافل مونخونه وي او په دې باندې دليل د صحيح مسلم هغه روايت دي په كوم كنيې چه راغلي دي: «إذا قضى أحدكم الصلاة في مسجده، فليجعل لبيته نصيبا من صلاته» (٧) چه كله خوك په تاسو كنيې په جمات كنيې فرض مونخ ادا كړې نو د خپل مونخ څه حصه يعني نوافل دي په كور كنيې ادا كوي د قاضي عياض رحمته الله موقف: او قاضي عياض رحمته الله فرمائي چه ددې مونخ نه مراد فرض مونخ دي نفل نه، مراد دا دي چه تاسو كله كله فرض مونخ په كور كنيې هم ادا كوئې دي دپاره چه

١) كشف الباري: ٢/٢. ٥٨٨/٤.

٢) كشف الباري: ٢/٢.

٣) كشف الباري. كتاب الوضوء، باب: التبرز في البيوت، ص: ٣٦٠.

٤) كشف الباري: ٤/٤٥١.

٥) كشف الباري: ١/٦٣٧.

٦) المفهم لما اشكل من تلخيص كتاب مسلم، كتاب الصلاة، ومن باب: فضل النوافل، رقم الحديث: ٤١١/٢ ٤٥٣.

٧) وحدثنا أبو بكر بن أبي شيبة، وأبو كريب، قالوا: حدثنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن أبي سفيان، عن جابر، قال:

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: إذا قضى أحدكم الصلاة في مسجده، فليجعل لبيته نصيبا من صلاته، فإن الله

جاعل في بيته من صلاته خيرا. (صحيح مسلم، كتاب الصلاة، ومن باب: فضل النوافل، رقم الحديث: ٤٥٣).



هغه کسان کوم چه جمات ته نه شی راتلې لکه بنځې، غلام، مریض وغیره، هغوی ته په کور کښې په جمع سره مونځ ورکوئی. (۱)

د جمهورو موقوف: د جمهورو په نیز دا حکم د نوافلو په باره کښې دې نه چه د فرائضو باره کښې، ځکه چه د نوافل خو پټ او ځان له د ادا کولو حکم ورکړې شوې دې. د کوم چه بهترین طریقہ هم دغه ده چه فرائض په جمات کښې د ادا کولو نه پس نوافل کورته په راتلو سره ادا کوئی. او یو بل دلیل هم دې په کوم کښې چه فرمائیلې شوی دی چه د فرض مونځ نه علاوه غوره مونځ هغه دې کوم چه په کور کښې ادا کړې شی. (۲)

علامه نووی رحمته الله علیه فرمائی چه زیاته صحیح خبره داده چه ددې مونځ نه دې مراد هم نفل مونځ وی نه چه فرائض ځکه چه ددې باب ټول احادیث هم ددې امر تقاضا کوی. لهدا په دې حدیث کښې ذکر شوې د مونځ امر په فرائضو باندې محمول کول صحیح نه دی. (۳) لیکن حافظ ابن حجر رحمته الله علیه په خپله شرحه فتح الباری کښې د قاضی صاحب رحمته الله علیه کلام نقل کولو نه پس فرمائی چه مذکورہ حدیث خوددې خبرې احتمال لری لیکن رومی احتمال راجح دې. (۴)

ددې پوره تفصیل نه پس واوړئی چه زمونږ په نیز د علامه نووی رحمته الله علیه خبره راجح ده او کومه خبره چه حافظ صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه د حدیث نه هغه احتمال هم راوځی کوم چه قاضی صاحب رحمته الله علیه بیان کړې دې دغه ډیره لرې خبره ده. د سوچ خبره ده چه کله د نبی اکرم صلی الله علیه و آله وسلم حدیث موجود دې چه د فرض مونځ نه علاوه د سړی افضل مونځ هغه دې کوم چه په کور کښې ادا کړې شی، نو بیا دا احتمال څنگه ممکن دې؟ (۵)

په گورونو کښې د نوافل کولو فائده: په احادیثو کښې ترغیب ورکړې شوې دې چه د نوافلو ادا کول دې په کورونو کښې او کړې شی ځکه چه دا پټ مونځ دې، کوم چه د ریاکارئی نه لرې وی. ددې په وجه په کورونو کښې برکت راځی، ددې عمل په وجه په کورونو کښې رحمت رانازلیرې. د رحمت فرښتې کورته راځی او شیطانان د کورونو نه تختی. (۶)

قوله: "ولاتخذوها قبورا": دا کورونه قبرستان مه جوړوئی، ددې جملې نه امام بخاری رحمته الله علیه دا مسئله اخذ کړې ده چه قبرونه د عبادت ځایونه نه دی، لهدا په داسې ځایونو کښې مونځ ادا کول مکروه دی.

۴. ونه قبرستان نه جوړولو سره متعلق د حضرت شیخ الحدیث رحمته الله علیه راټی: حضرت شیخ

(۱) اكمال المعلم بفوائد مسلم، كتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة النافلة في بيته، رقم الحديث: ۷۷۷، ۱۴۴/۳.

(۲) عمدة القاری: ۲۷۶/۴.

(۳) شرح النووي على مسلم، كتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة النافلة في بيته، رقم الحديث: ۷۷۷، ۶۷/۶.

(۴) فتح الباری: ۶۸۵/۱.

(۵) فتح الملهم، كتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة النافلة في بيته، رقم الحديث: ۷۷۷، ۱۴۳/۵، وكذا في ذخيرة

العقبی، كتاب الصلاة، باب: الحث على الصلاة في البيوت، رقم الحديث: ۱۵۹۸، ۲۶۰/۱۷.

(۶) شرح النووي على مسلم، كتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة النافلة في بيته، رقم الحديث: ۷۷۷، ۶۷/۶.

ذخيرة العقبی، كتاب الصلاة، باب: الحث على الصلاة في البيوت، رقم الحديث: ۱۵۹۸، ۲۶۰/۱۷.

الحديث بُخَارِي فرمائی چه د حدیث پاک د دې جملې په معنی کښې مختلف اقوال دي: یو مطلب خودادې چه په کورونو کښې مونځونه کوئی، په کورونو کښې مونځ نه کول د کورنه قبرستان جوړول دی ځکه چه په مقبره کښې مونځ نه شی کولې. لهذا کورونه د قبرستان په شان مه جوړوئی. ددې مطلب نه د امام بخاری رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تائید کیری اود امام بخاری رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مقصد هم دغه دې او هم ددې نه ترجمه ثابتیری.

دویم مطلب دادې چه په کورونو کښې مونځونه کوئی او په کورونو کښې قبرونه مه جوړوئی ځکه چه بیا به دغه مقبره جوړه شی او په مقبره کښې مونځ جائز نه دې. دریم مطلب دادې چه په قبرستان کښې کور مه جوړوئی ځکه چه کله کله مقبروته تلو سره عبرت حاصلیری. که چرې انسان هم هلته کور جوړ کړی نو بیا به د عبرت حاصلولو موقع پاتې نه شی بلکه عادت به شی.

څلورم مطلب دادې چه که چرته څوک راشی نو خوراک چائی اوبو وغیره سره د هغه میلستیا او کړئی څه خوراک څښاک پرې او کړئی کورونه د مقبرو په شان مه جوړوئی. (۱)

دې جملې ته په کتو سره د یو جماعت راښی داده چه په کورونو کښې مونځ ادا کول مستحب دی ځکه چه مری خو مونځ نه کوی، لکه چه نبی اکرم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ارشاد او فرمائیلو چه تاسو د هغه مرو په شان مه کیرئئ چه په کورونو کښې په مونځ ادا کولو باندي قادر نه دی.

بعضې فقهاؤ ددې نه دا مستنبط کړی دی چه قبرستان د عبادت کولو ځائی نه دې، چنانچه په قبرستان کښې مونځ ادا کول مکروه دی. ددې خبرې دلیل دادې چه نبی کریم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ارشاد فرمائیلې دې: په پوره زمکه کښې مونځ ادا کیدې شی سوا د قبرستان او حمام نه دې دوو ځایونو کښې مونځ ادا کول جائز نه دی. (۲)

د علامه خطابی رَضِيَ اللهُ عَنْهُ راښی: علامه خطابی رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فرمائی چه یوه معنی داهم ده چه تاسو خپل کورونه صرف د اوده کیدو دپاره مه استعمالوئی چه کله خو په کور کښې د مونځ ادا کولو نوبت هم رانه شی. چونکه خوب د مرگ خور ده او مری خو مونځ نه کوی. (۳)

د علامه تورپشتی رَضِيَ اللهُ عَنْهُ راښی: علامه تورپشتی رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فرمائی چه یو احتمال داهم دې چه هغه سرې کوم چه ذکر کوی او څوک چه ذکر نه کوی، د دوی مثال د ژوندی اود مری په شان دې. او ژوندی خلق په کورونو کښې اوسیری او مړه خلق په قبرونو کښې اوسیری. نو هغه سرې څوک چه په کور کښې مونځ نه کوی هغه خپل کور ځان له د قبر قائمقام جوړوی لکه چه هغه پخپله د مړ سرې په شان وی.

(۱) الكنز المتواری: ۱۴۱/۴ سراج القاری: ۲۱/۳.

(۲) عن أبي سعيد قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: الأرض كلها مسجد إلا الحمام والمقبرة. (سنن أبي داؤد، کتاب الصلاة، فی المواضع التي لا تجوز فيها الصلاة، رقم الحديث: ۴۹۲).

(۳) أعلام الحديث فی شرح صحيح البخاری: ۳۹۳/۱. فتح الملم، کتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة النافلة فی بيته، رقم الحديث: ۷۷۷، ۱۴۳/۵.

دویم احتمال دادې چه قبرستان هغه ځای دې چرته چه مونځ نه شی ادا کیدی ځکه چه هغه د هغه خلقو یعنی د (مړو) د اوسیدو ځای دې چه په احکاماتو باندې د عمل کولو مکلف نه دی. د عمل دروازه د هغوی د طرف نه بنده شوې ده. لیکن په کورونو کښې تاسو مونځونه کوئی ځکه چه تاسو ژوندی یثی مکلف یی د عمل کولو طاقت په تاسو کښې موجود دې.

دریم احتمال دادې چه بیشکه تاسو په قبرستان کښې د مونځ کولو نه منع کړې شوې یی. نو تاسو په خپلو کورونو کښې مونځونه کول مه پریردئ. که چرې تاسو داسې او کړل نو په داسې صورت کښې به تاسو په خپلو کورونو لره د قبرستان سره تشبیه ورکونکې جوړشئ. (۱)

د ملاعلی قاری رحمته الله علیه وائی: ملاعلی قاری رحمته الله علیه یوه معنی دا ذکر کړې ده چه تاسو په قبرستان کښې خپل د استوگنې ځای مه جوړوئی دې د پاره چه تاسو نه د زړه نرمی، د نصیحت حاصلول او د رحمت حاصلول زائل نه شی (دا په دې وجه چه کله بنده په یو ځای کښې اوسیدل شروع کړې نو هغه د هغه ځای عادت شی، نو چه کوم سړې په قبرستان کښې د اوسیدو عادت شی نو قبرستان ته تلو کښې کوم مقصود دې هغه به فوت شی) بلکه تاسو قبرستان ته د قبرونو د زیارت د پاره ځئ او بیا خپلو کورونو ته واپس راځئ.

او نور اقوال ذکر کولو نه پس ئی یو بل قول ذکر کړې دې چه د ارباب لطائف نه د بعضو قول دادې چه ددې معنی داده چه تاسو خپل کورونو ته راتلونکی میلمنو د پاره د کورنه د قبرستان په شان مه جوړوئی چه په هغوی نه خوراک کوئی او نه پرې اوبه ځکوئی او نه د هغوی نور څه اکرام او کړئ. (چونکه په قبرستان کښې داسې څه کار نه کیږی په دې وجه کورونه ئی د میلمنو د پاره داسې جوړولو نه منع او کړه). (۲)

د علامه خطابی رحمته الله علیه یو اشکال او د هغې جواب: علامه خطابی رحمته الله علیه د یو قول تردید کړې دې چه چا دا تاویل بیان کړې دې چه د حدیث شریف په دې جمله کښې په کورونو کښې مړی څښولو نه منع کړې شوې ده. نو د هغوی دا تاویل صحیح نه دې. ځکه چه حضور پاک هم په هغه کوټه کښې دفن کړې شو په کومه کښې چه حضور پاک اوسیدلو. (۳)

علامه کرمانی رحمته الله علیه ددې دا جواب ورکړې دې چه مذکوره تاویل صحیح دې ځکه چه دا خبره عین ممکن ده چه په کورونو کښې د څښولو جائز کیدل د نبی کریم صلی الله علیه و آله سره خاص وی لکه چه په احادیثو کښې ذکر دی چه د انبیاء کرامو وفات کوم ځای کښې اوشی هغوی هم په هغه ځای کښې څښولې شی. (۴)

(۱) المیسرفی شرح مصابیح السنة للتوربشتی، کتاب الصلاة، باب: المساجد ومواضع الصلاة، رقم الحدیث: ۴۷۹، ۲۰۵/۱.

(۲) مرقاة المفاتیح، کتاب الصلاة، باب: الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم، رقم الحدیث: ۹۲۶، ۷۴۴/۲.

(۳) اعلام الحدیث فی شرح صحیح البخاری: ۳۹۳/۱.

(۴) قال الكرمانی: أقول: هوشین، ودفن الرسول صلى الله عليه وسلم فيه لعله من خصائصه سيما، وقد روى: الأنبياء يدفنون حيث يموتون. (شرح الكرمانی: ۹۴/۴) وقال ابن حجر العسقلانی رحمته الله علیه: قلت: هذا الحديث .....

د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت: د ترجمه الباب "كراهية الصلاة في المقابر" مطابقت د حديث شريف د دي جملې "ولا تتخذوها قبورا" سره دي. په دي معنى كښې چه كورونو نه قبرستان مه جوړوئې په دي كښې تشبيه په عدم صلاة كښې ده. مطلب دا چه څنگه په قبرستان كښې مونځ نه ادا كيږي نو تاسو خپل كورونه هم داسې مه جوړوئې چه په كورونو كښې هډو مونځ نه كوئې، هم دا د امام بخاري رحمه الله مقصد دي او هم په دي سره ترجمه الباب ثابتيږي. (١)

د علامه كوراني رحمه الله راسي: علامه كوراني رحمه الله د حديث شريف جمله "ولا تتخذوها قبورا" ذكر كولو نه پس فرمائي چه دا هغه مقام دي چه ترجمه الباب ثابتوي. وړاندي فرمائي چه په دي باندي اشكال راځي چه دا جمله خو په ترجمه الباب باندي دلالت نه كوي ځكه چه د حديث مبارك معنى داده چه تاسو نوافل په خپلو كورونو كښې ادا كوئې. نو د دي جواب دادي چه په دي جمله كښې د دوو معنو احتمال دي. يو خو هم دغه چه اعتراض كونكي ذكر كړې ده او دويمه معنى داده چه په قبرستان كښې مونځ ادا كول جائز نه دي. په دي معنى باندي ترجمه الباب او حديث شريف كښې مناسبت او مطابقت ښكاره دي. (٢)

..... رواه بن ماجه مع حديث ابن عباس عن أبي بكر مرفوعاً: ما قبض نبي إلا دفن حيث يقبض وفي إسناده حسين بن عبدالله الهاشمي، وهو ضعيف. وله طريق أخرى مرسله ذكرها البيهقي في الدلائل. وروى الترمذي في الشمائل، والنسائي في الكبرى، من طريق سالم بن عبيد الأشجعي الصحابي، عن أبي بكر الصديق، أنه قيل له: فأين يدفنون رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ قال: في المكان الذي قبض الله فيه روحه، فإنه لم يقبض روحه إلا في مكان طيب. إسناده صحيح، لكنه موقوف، والذي قبله أصرح في المقصود. وإذا حمل دفنه في بيته على الاختصاص لم يبعد نهى غيره عن ذلك، بل هو متجه، لأن استمرار الدفن في البيوت ربما صبرها مقابر. فتصير الصلاة فيها مكروهة، ولفظ حديث أبي هريرة عند مسلم أصرح من حديث الباب، وهو قوله: "لا تجعلوا بيوتكم مقابر"، فإن ظاهره يقتضي النهي عن الدفن في البيوت مطلقاً، والله أعلم. (فتح الباري: ١/٦٨٦-٦٨٥).

(١) استفاد از تقرير بخاري شريف: ١٦٢/٢. قال العلامة الدماميني في شرحه: "حملة البخاري على منع الصلاة في المقابر، وتعقب بأن القصد الحث على الصلاة في البيت، فإن الموتى لا يصلون في قبورهم، وكأنه قال: لا تكونوا كالموتى، وليس فيه تعرض لجواز الصلاة في المقابر، ولا منعها" (مصابيح الجامع اللدمايني: ١٣٨/٢).

(٢) الكونثر الجارى: ١٢٢/٢-١٢١.

## ۲۱- بَاب: الصَّلَاةِ فِي مَوَاضِعِ الْخُسْفِ وَالْعَذَابِ

دا باب دی خسف په زمکه کښې د خښیدلو، او د عذاب په ځایونو کښې د مونځ ادا کولو مکروه کیدو باره کښې

د ترجمه الباب تشریح:

قوله: "خسف": د یو مکان د هغې د دروازو سره په زمکه کښې خښیدلو ته خسف وائی. (۱) هم دې سره متعلق د قرآن پاک آیت: (فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ) سورت قصص کښې دی، بیا مونږ ورڅښ کړل هغوی او د هغوی کورونه. (۲)

قوله: "والعذاب": د دې ذکر د الخسف نه پس د ذکر العام بعد الخاص د قبیل نه دې ځکه چه خسف هم عذاب دې، لیکن د مخصوص نوعیت عذاب، چه په زمکه کښې ورڅښول، او د دې نه پس عام قسم عذاب ذکر دې. مراد دادې چه کوم ځائی کښې عذاب نازل شوې وی که هغه خصوصی وی چه په زمکه کښې ورڅښ کړې شوې وی، یا څه بل قسم عذاب نازل وی، هلته مونځ ادا کول ناخوښه، دی مکروه دی. (۳)

د خسف نه مراد کومه واقعه ده؟ حافظ ابن حجر رحمته الله علیه فرمائی چه خسف نه مراد هغه واقعه ده کومه چه الله تعالی آیت مبارک: (فَأَنَّى اللَّهُ بُنِيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَحَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ) کښې بیان کړې ده. (۴)

د دې په تشریح کښې علامه بغوی رحمته الله علیه معالم التنزیل کښې د حضرت ابن عباس رضی الله عنهما نه نقل کړی دی چه نمرود بن کنعان په بابل ښار کښې یو محل جوړ کړې وو. د کوم اوچتوالي چه پنځه زره لاسه او پلنوالي ئی درې زره لاسه وو. د دې مقصد دا وو چه آسمان ته اوڅیژی او د هغه ځائی حالات معلوم کړی او د آسمان والوسره جنګ او کړی. الله تعالی یوه هوا راوړلیرله کومې چه دغه محل راغوزار کړو او د هغې چت په نمرود باندې او د هغه په متبعینو باندې راپریوتلو په کوم سره چه هغوی هلاک شو. (۵)

(۱) مختار الصحاح، خ س ف: ۹۰/۱. المصباح المنیر فی غریب الشرح الکبیر، خ س ف: ۱۶۹/۱. القاموس المحیط، فصل الخاء: ۸۰۴/۱. لسان العرب، فصل الخاء المعجمة: ۶۷/۹.

(۲) القاصص: ۸۱.

(۳) عمدة القاری: ۲۷۹/۲. حضرت شیخ الحدیث رحمته الله علیه فرمائی چه په دې ترجمه کښې امام بخاری رحمته الله علیه د تعمیم بعد التخصیص په توګه عذاب ذکر کړې، ځکه چه خسف هم د عذاب نه دې. لکه چه امام بخاری رحمته الله علیه په دې ترجمه سره اشاره او کړه چه دا حکم صرف د خسف سره خاص نه دې، بلکه هر عذاب په دې کښې داخل دې ځنګه چه د حضور پاک قول: لا تدخلوا علی هؤلاء المعذبین په دې باندې دلالت کوی. لکه چه امام بخاری رحمته الله علیه په دې لفظ سره عموم ثابت کړې دې. (الکنز المتواری: ۱۴۱/۴. سراج القاری: ۳۰/۳).

(۴) فتح الباری: ۶۸۶/۱.

(۵) معالم التنزیل للبغوی، سورة النحل، الآية: ۲۶، ۱۶/۵.

صاحب روح المعانی یوقول داهم لیکلې دې چه پخپله نمرود هغه وخت هلاک شوې نه وو بلکه د محل د بربادنی نه پس ژوندې پاتې شو او الله تعالی هغه د یوماشی په ذریعه هلاک کړو، کوم چه د هغه دماغو ته رسیدلی وو. (۱)

د ترجمه الباب مقصد: په دې ترجمه الباب سره امام بخاری رحمته دا خودل غواړی چه د عذاب په ځایونو کښې مونځ ادا کول مکروه دی. د احادیثو نه دا خبره معلومه شوې ده چه د زحمت او د عذاب والا ځائی د رحمت والا ځائی مه جوړوئ. لهذا د خسف او عذاب په ځائی کښې مونځ مه کوئ. بل د عذاب والا د ځایونو نه د تختیدو حکم دی. لهذا په داسې ځایونو کښې مونځونه ادا کولو سره دا د قرار ځائی مه جوړوئ. ددې نه علاوه د حدیث مفهوم دې چه په داسې ځایونو کښې په ژړا سره تیریدل پکار دی. حالانکه په مونځ کښې هر چا ته ژړا نه ورځی. یو اشکال او د هغې جواب: حضرت شیخ الحدیث رحمته فرمائی چه په دې باندې اشکال دادې چه مونځ د رحمت سبب دې نو د خسف په ځائی کښې خو نور هم زیات مونځونه کول پکار دی. دې د پاره چه د عذاب اثر کم شی. ددې جواب دادې چه مونځ اگر چه رحمت دې لیکن دعا هم ده او مواضع خسف کښې که چرته زیات اخلاص نه وی نو د دعا درد کیدو اندیښنه ده. دا یاد ساتئ چه امام بخاری رحمته د جواز صلاة فی مواضع الخسف قائل دی. (۲)

تعليق: وَيَذُكَّرُ أَنْ عَلَيَّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَرَاهَةَ الصَّلَاةِ بِخُفِّ بَابِلَ.

د تعليق تخریج: ددې تخریج اصل (۳) هغه اثر دې کوم چه المصنف لابن ابی شیبه کښې موجود دې. (۴) چه حجر بن عنبس الحضرمی فرمائی چه مونځ د حضرت علی رضی الله عنه سره د نهروان طرف ته لاړو. تردې چه مونځ د بابل ښار ته اورسیدو نو د مازیگر وخت داخل شو. مونځ حضرت علی رضی الله عنه ته عرض او کړو چه مونځ ادا کړو؟ هغه چپ پاتې شو مونځ بیا (لږ ساعت پس) او وئیل چه مونځ ادا کړو؟ نو هغه بیا خاموش پاتې شو (خه جواب ئی ورته کړو) بیا چه کله مونځ د بابل ښار نه اووتلو نو بیا هغوی رضی الله عنه د مازیگر مونځ ادا کړو. بیانی او فرمائیل چه زه داسې ځائی کښې مونځ نه ادا کوم چرته چه یو قوم ته په زمکه کښې خښولو سره عذاب ورکړې شوې وی. حضرت علی رضی الله عنه دا خبره درې ځل ارشاد او فرمائیله.

(۱) تفسیر روح المعانی، سورة النخل، الآية، ۲۶، ۷/۳۶۷-۳۶۶.

(۲) تقریر بخاری شریف: ۱۶۲/۲.

(۳) تغلیق التعلیق: ۲۳۱/۲.

(۴) عن حجر بن عنبس الحضرمی، قال: خرجنا مع علی إلى النهروان، حتى إذا كنا ببابل حضرت صلاة العصر، قلنا: الصلاة، فسكت، ثم قلنا: الصلاة، فسكت، فلما خرج منها صلى، ثم قال: "ما كنت أصلي بأرض خسف بها ثلاث مرات". (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، باب: في الموضع الذي خسف به، رقم الحديث: ۷۵۵۶، ۱۵۱/۲). حدثنا وكيع عن سفيان عن عبدالله بن أبي المحل عن علي أنه كره الصلاة في الخسف. (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، باب: في الموضع الذي خسف به، رقم الحديث: ۷۵۵۷، ۱۵۱/۲) وحدثنا ابن عيينة عن عبدالله بن شريك عن أبي المحل أن علياً مر بجانب من بابل فلم يصل بها (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، باب: في الموضع الذي خسف به، رقم الحديث: ۷۵۵۸، ۱۵۲/۲).

هم دغه شان هم د حضرت علی عليه السلام یو اثر سنن ابی داؤد کنسې دې. (۱)  
د تعلیق ترجمه: ذکر کړې شوی دی چه حضرت علی عليه السلام به په بابل ښار کنسې د خسف عذاب  
د نازلیدو د وجې نه مونځ ادا کول ناخوبه گنرل.

د تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت: یوه خبره خوداده چه دا تعلیق د ترجمه الباب جز دې  
او که چرې جدا هم دې نو بیا هم ترجمه الباب او په دې تعلیق کنسې مشترک امر هم دغه دې  
چه په داسې ځایونو کنسې مونځ ادا کول مکروه دی. (۱)

بابل ښار: بابل د یو عظیم الشان ښار نوم دې. چه پخوانی زمانه کنسې د فرات دریا په  
دواړو طرفونو کنسې واقع وو. او د فرات دریا په دغه ښارونو په مینځ کنسې تیریدلو. نن  
هم د دغه ښار کندرې د فرات دریا په دواړو طرفونو ته موجود دي. د یوې اوږدې مودې پورې  
دا ښار د عراق د حکومت دارالخلافة وه. او د بخت نصر د زمانې پورې د لونی شان  
اوشوکت والا ښار وو. ۵۲۸ قبل مسیح نه پس په دې ښار باندې داسې تباهی راغله چه د  
همیشه دپاره د دغه ښار خاتمه اوشوه. بابل ښار کنسې چه په هغه دور کنسې د جادو او سحر  
کومه غلبه وه د هغې مثال چرته نه وو. دا لفظ د مشهور نحوی د اخفش د بیان مطابق غیر  
منصرف دې. په عربی کنسې د هر مؤنث شی نوم کله چه هغه علم وی او د دریو حروفونو  
زیات وی غیر منصرف وی. (۲)

د بابل د تسمیه وجه: په اسرائیلیاتو کنسې دی چه کله دنمرود بن کنعان جوړ کړې. شری محل  
د الله تعالی په حکم سره په زمکه کنسې ورځنې شو نو د ویرې او دهشت د وجې نه د خلقو

(۱) حدثنا سليمان بن داؤد، أنا ابن وهيب، حدثني ابن لهيعة، وحبيبي بن أزهر، عن عمار بن سعد المرادي، عن أبي صالح الغفاري، أن علياً مر بابل وهو يسير، فجاءه المؤذن يؤذنه بصلاة العصر، فلما برز منها أمر المؤذن، فأقام الصلاة، فلما فرغ، قال: إن حبي عليه الصلاة والسلام نهاني أن أصلي في المقبرة، ونهاني أن أصلي في أرض بابل، فإنها ملعونة. (سنن أبي داؤد، كتاب الصلاة، باب: في مواضع التي لا تجوز فيها الصلاة، رقم الحديث: ۴۹۰). د دې حديث آخری جمله کنسې حضرت علی عليه السلام او فرمائیل چه زما محبوب نبی عليه السلام زه بابل ښار کنسې د مونځ ادا کولو نه منع کړې يم ځکه چه د هغه زمکه داسې ده چرته چه د الله تعالی لعنت نازل شوې دي علامه خطابی رحمته الله عليه د دې حديث په شرح کنسې ليکي چه د دې حديث په سند کنسې کلام دی زما په علم کنسې يو عالم هم د بابل په زمکه باندې مونځ کولو ته حرام نه دی وئيلي. علاوه د دې نه چه جُعِلَتْ لِي الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهْرًا زما د پاره ټوله زمکه د سجدي قابله او پاکه کړې شوې ده، کوم چه د دې نه زیات صحیح دی، د دې معارض دی. (زه فرض کړه چه) دا حديث ثبوت ته اورسی نو د دې معنی به داسې چه حضور پاک د بابل زمکه وطن جوړول او هلته د اقامت اختیارولو نه منع کړې ده ځکه چه کله هلته اقامت اختیار کړې شی نو لا محاله هلته به مونځ هم کولې کيږي. بیا چه په دې باره کنسې کومه نهی راغلی ده هغه هم مخصوص ده. د نهانی په الفاظو باندې غور او کړنې (د کوم معنی چه ده زه منع کړې شوم، غالباً د هغه محنت او مشقت نه ویرول مقصود وو کوم چه حضرت علی عليه السلام په کوفه کنسې او چتولو. د کوفې شمیر هم د بابل په زمکه کنسې دي. د حضرت علی عليه السلام نه مخکنې خلفاء راشدينو عليهم السلام نه څوک هم د مدينې نه نه دې منتقل شوې. (معالم السنن للخطابی، كتاب الصلاة، باب: المواضع التي لا تجوز فيها الصلاة: ۱۴۸/۱).

(۲) عمدة القاری: ۲۷۹/۴.

(۳) معجم البلدان: ۱۸/۲، ط: مصر. لغاب القرآن للنعمانی: ۱۱/۲.

زبي گونگې شوې. په يو بل کښې گډوډ شو. هغوی قسم قسم خبرې کول شروع کړې نو په ٧٣ ژبو کښې تقسيم شو. دا په عربي ژبه کښې تَهَلَّكْتُ السُّنَّ النَّاسِ مِنَ الْفِرْعِ سِرَه تعبير کړې شو. هم ددې نه د بابل ښار نوم مشهور شو. دې نه مخکښې د اهل بابل ژبه سرياني وه. (١)

حديث باب [حديث نمبر ٢٢٢]

٢٢٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا (١) - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «لَا تَدْخُلُوا عَلَيَّ هَؤُلَاءِ الْمُعْتَدِينَ إِلَّا أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ، فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا بَاكِينَ فَلَا تَدْخُلُوا عَلَيْهِمْ، لَا يَصِيبُكُمْ مَا أَصَابَهُمْ».

د حديث ترجمه: حضرت عبد الله بن عمر رضي الله عنهما فرماني چه نبی کریم صلي الله عليه وسلم ارشاد فرمائيلى دې چه د هغه خلقو علاقتو ته مه خي چاته چه عذاب ورکړې شوې دې، مگر په ژړا سره. که چرې تاسو اونه ژرلې شئ نو د هغوی علاقتو ته مه خي، داسې نه وي چه په تاسو باندې هم هغه عذاب راشي کوم چه هغوی په گيره کښې اخستى وو.

تو اجم رجال: د مذکوره حديث شريف په سند کښې ټول خلور راويان دي:

① اسماعيل بن عبد الله رضي الله عنه: دا ابو عبد الله اسماعيل بن ابى اويس عبد الله بن اويس بن مالك اصبحى مدنى رضي الله عنه دې. د دوى احوال كشف الباري، كتاب الايمان، باب: تفاضل اهل الايمان في الاعمال لاندې تير شوى دى. (٢)

② مالك رضي الله عنه: دا ابو عبد الله امام مالك بن انس بن مالك رضي الله عنه دې د دوى احوال كتاب الايمان، باب: من الدين الفرار من الفتن لاندې تير شوى دى. (٣)

③ عبد الله بن دينار رضي الله عنه: دا ابو عبد الرحمن عبد الله بن دينار ورشى عدوى مدنى رضي الله عنه دې. د دوى مختصر حالات كشف الباري، كتاب الايمان، باب: امور الايمان او تفصيلي حالات كتاب العلم، باب: قول المحدث: حدثنا واخبرنا وانانا لاندې تير شوى دى. (٤)

(١) روح المعاني، النحل: ٢٦، ٣٦٧/٧-٣٦٦، معالم التنزيل للبقوي، النحل، الآية: ٢٦، ١٦/٥.

(٢) أخرجه البخاري أيضا في الأنبياء، باب: قول الله تعالى: (وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ) رقم الحديث: ٣٣٨٠، وفي المغازي، باب: نزول النبي صلى الله عليه وسلم الحجر، رقم الحديث: ٤٤٢٠-٤٤١٩، وفي تفسير سورة الحجر، باب: (وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ) رقم الحديث: ٤٧٠٢، وفي صحيحه، في الزهد والرقائق، باب: لا تدخلوا مساكن الذين ظلموا أنفسهم إلا أن تكونوا باكين، رقم الحديث: ٢٩٨٠، وفي جامع الأصول، حرف الذال، الكتاب الثالث: في ذم الدنيا، وذم أماكن من الأرض، الفصل الثاني، في ذم أماكن من الأرض، رقم الحديث: ٢٦١١، ١٢/٤.

(٣) كشف الباري: ١١٣/٢.

(٤) كشف الباري: ٨٠/٢.

(٥) كشف الباري: ١٢٥/٣، ٥٥٨/١.



⑤ عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما: دا حضرت عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما دے دوی احوال کشف الباری، کتاب

الإیمان، باب الإیمان وقول النبی صلی اللہ علیہ وسلم: ہنی الإسلام علی خمس کنبی تیر شوی دی (۱)

ذہدیت شرح:  
قوله: عن عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما أن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال: لا تدخلوا  
علی هؤلاء المعذبین:

حضرت عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہما فرمائی کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد او فرمائیلو کہ دہغہ خلقو  
علاقو تہ مہ ورخی چاتہ کہ عذاب ورکری شوی دی.

قوله: لا تدخلوا: دا نہی د حضور پاک د طرف نہ ہغہ وخت شوی وہ کوم وخت کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم  
د تبوک طرف تہ تللو. ہغہ وخت پہ حجر مقام کنبی د قوم ثمود تباہ شوی مکاناتو باندي  
تیریدل او شو نو ہغہ وخت حضور پاک دا حکم او فرمائیلو. (۲)

ہجو کوم یو مقام دی؟ ہغہ مکان د کوم احاطہ کہ د کانرو نہ جوہہ کری شوی ہغہ تہ حجر  
وائی. چونکہ د ثمودیانو آبادی د کانرو پہ تراشلو سرہ جوہہ کری شوی وی حکہ ورتہ  
حجر وئیل شوی. ارشاد دی: ﴿كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ﴾ د حجر والو رسولان دروغزن  
او گنرل. پہ ۹ کنبی حضور پاک تبوک تہ د تللو پہ وخت پہ دغہ بنار تیر شوی وو. د عثمانیہ  
دولت پہ زمانہ کنبی دا د حجاز ریلوی سٹیشن وو او د کانرو راتاولو مقصود حفاظت او  
منع کول وی او عقل ہم د انسان حفاظت کوی او دی منع کوی پہ دی وجہ دی تہ ہم حجر  
وئیلی شوی. ارشاد دی: ﴿هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِذِي حِجْرٍ﴾ آیا پہ دی کنبی د عقل والو د پارہ قسم  
دی. (۳)

د حجر نور تفصیل کہ چرتہ شوک کتل غواری نو "اردو وائرہ معارف اسلامیہ" کوم کہ د اردو لغت د  
تولو نہ لوئی کتاب دی، کنبی دی او گوری. (۴)

(۱) کشف الباری: ۱/۶۳۷.

(۲) فتح الباری: ۶۸۷/۱.

(۳) لغات القرآن للنعمانی، الحجر: ۲/۲۷۳.

(۴) الحجر: د جنوبی عرب یو بنار دی کوم کہ د "تیمنا" جنوب کنبی د وادی القری نہ د یوی ورخی پہ  
مسافت باندي واقع وو. دا د پخوانی زمانہ ہم ہغہ تجارتی بنار وو کوم کہ بطليموس او پلینی د  
(Eggs) پہ نوم سرہ ذکر کری دی دا بنار اوس موجود نہ دی موجودہ زمانہ کنبی ددی اطلاق بد وی پہ  
ہغہ سپات زمکہ باندي کوی کوم کہ د مبرک الناقہ او بیر الفتم پہ مینخ کنبی د خومیلو پوری خوردہ شوی  
دہ. ددی پہ آبادہ زمکہ کنبی دیر کوہیان دی چرتہ کہ بدوی پہ دیر زیات تعداد کنبی خیلو مالونو سرہ  
راخی او خیمہ زن کیری. د الحجر نہ دوه سرکونہ د مکہ طرف تہ خی. یو د نجد سرک پہ کوم کہ نن صبا  
حاجیان تیریری او بل شاہراہ مرو. پہ کوم باندي کہ بہ پہ پخوانی زمانہ کنبی زائرین مکہ مکرمہ تہ  
تلل. د الحجر پہ مغرب کنبی یو غر دی کہ د شکی کانرو پہ پنخو منفرد چٹانونو باندي مشتمل دی کوم  
تہ کہ اثالٹ وائی او پہ دی باندي دیر بنکلی یادگارونہ تراشلی جوہہ کری شوی دی. (پہ دی کنبی  
قصر البنت، بیت الشیخ، بیت احریمات، محل المجلس او دیوان شامل دی، کہ د مرغو.....)

قوله: هؤلاء المعذبين: هغه خلق چاته چه عذاب ورکړې شوي دي د هغوی علاقتو ته مه ورځئ. د صحیح بخاری په نورو روایاتو کېسې دی چه کله حضور پاک مقام حجر سره تیریدو نوارشاد ئی او فرمائیلو: "لاتدخلوا مساكن الذين ظلموا انفسهم" چه کومو خلقو په خپلو خانوونو باندې (د الله تعالی نافرمانه جوړیدو سره) ظلم او کړو د هغوی کورونو ته مه ورځئ. (۱)

قوله: إلا ان تكونوا باکين، فإن لم تكونوا باکين، فلا تدخلوا عليهم: مگر په ژړا سره، که چرې تاسو اونه ژړلې شی نو د هغوی علاقتو ته مه ورځئ.

..... او ځناورو ډیر زیات تراشلي شوي شکلونه او په ډیرو تختو سره ناسته کړې شوي دي. چارلس ډاؤټی، د یورپ د ټولو نه اولني اوسیدونکې وو چاچه په کال ۱۸۷۶ء او ۱۸۷۷ء کېسې د الحجر سیل کړې وو. اود دغه کانرو او په هغې باندې تراشلي شوي عمارتونو ئی په غور سره مشاهده اوکړه. هغه یه اولگوله چه دا عمارتونه (په استثنا، د دیوان مقبرې (یعنی خاندانې د خپلو ځایونه) دي. په کوم کېسې چه طاخونه اود جسماني اجسامو باقیات موجود دي. مکي ته تلونکي زاترین یو ورځ د پاره د اثلث په غرونو باندې قیام کوي او مونځ ادا کوي. پخواني زمانه کېسې څه بي دین او متکبر خلق چه په ثمود باندې یادیدل اباد وو. د چا متعلق چه په قران پاک کېسې وئیلې شوي دي چه هغوی به غرونه پرې کول او هلته به ئی کورونه جوړول. دغه خلق په نیغه لار باندې د راوستلو دپاره هم د دوی د قوم نه الله تعالی صالح عليه السلام پیغمبر جوړولو سره دوی له راؤلیرلو (او اوبنه ئی د نشاني په توگه پیش کړه که چرې دي ته نقصان اورسولې شو نو عذاب به نازلیري، لیکن کله چه هغه خلقو خپله بیت پرستی جاری اوساتله او هغه اوبنه ئی مړه کړه. حالانکه حضرت صالح عليه السلام به هغوی د دي اوبني ته د ضرر نه رسولو وینا کوله نو الله تعالی په هغوی باندې یوه زلزله نازل کړه په کوم سره چه هغوی نیست او نابود شو. د الحجر د شکلنو کانروته سره د هغه یادگارونو چه په هغې کېسې دننه تراشلو سره جوړکړې شوي دي د حضرت صالح عليه السلام په نوم باندې مدائن صالح یعنی د صالح ښار هم وئیلې شی.

د عربو د روایت مطابق حضرت ابراهیم د خپل پروردگار به حکم سره حضرت هاجره او د هغې څوئی حضرت اسماعیل په الحجر کېسې پرېخودوسره تلې وو. دا هم وئیلې شی چه حضرت اسماعیل عليه السلام د خپلې مور په اړخ کېسې دفن دي. په سیرت نبوی کېسې هم د الحجر ذکر راځي. کله چه ۹ هجری ۶۳۱ء کېسې رسول الله صلی الله علیه و آله د تيموك طرف ته تشریف اورلو نو په الحجر د حضور پاک تیریدل اوشو. صحابه کرامو غوښتل چه دلته آرام اوکړي او د دي ځائی د کوهیانو نه اوبه اوڅکي او ځانونه تازه کړي لیکن رسول الله صلی الله علیه و آله هغوی ته د دي اجازت ورنه کړو چه هغوی دي داسې ځائی کېسې دمه اوکړي چرته چه د الله تعالی قهر نازل شوې وو.

د حال په زمانه کېسې د سعودی امیر دلته یو ښار آبادول غوښتل لیکن په یو داسې مقام باندې چه د الله تعالی د طرف نه پرې لعنت او عذاب راغلي وو د نوی سره نه یو ښار آبادولو باندې د دین د علماؤ د سختو اعتراضاتو د وجې دغه منصوبه پوره نه شوه.

د ډاؤټی نه پس ملک الساتیا (Alsatia) یو سیلانی "C, Huber" دوباره د الحجر سیل اوکړو. یو ځل ۱۸۷۹ء کېسې او په دویم ځل (Euting) سره ۱۸۸۴ء کېسې (اردو دائرة معارف اسلامیه، الحجر، ۷/۴۵۷-۴۵۵) دانشگاه پنجاب لاهور).

(۱) حدثنا عبدالله بن محمد الجعفی، حدثنا عبدالرزاق، أخبرنا معمر، عن الزهري، عن سالم، عن ابن عمر رضی الله عنهما، قال: لما مر النبي صلى الله عليه وسلم بالحجر قال: لا تدخلوا مساكن الذين ظلموا انفسهم، أن يصيبكم ما أصابهم، إلا ان تكونوا باکين، ثم قنع رأسه وأسرع السير حتى أجاز الوادي. (صحیح البخاری، المغازی، باب: نزول النبي صلى الله عليه وسلم الحجر، رقم الحديث: ۴۴۲۰-۴۴۱۹).

قوله: إلا أن تكونوا باکین: ددی جملی په ذریعه په هغه خایونو کښې په ژړا سره او د عبرت حاصلولو سره د داخلیدو اجازت ورکړې شو چه که چرې داسې داخل شئ نو مباح دی. اودا جمله په دې خبره باندې هم دلالت کوی چه په دغه ځانی کښې ادا شوې مونځ فاسدیږي نه. (۱)

قوله: باکین: دا ژړل په هغوی باندې د شفقت د وجې نه وی، یا د دې ویرې نه چه چرته د الله تعالی عذاب په مونځ باندې هم نازل نه شی. (۲)

حضرت مولانا شبیر احمد صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه: بکاء نه مراد بکاء قلب دې. خو که ورسره بکاء عین هم وی نو نوره هم بهتر ده. (۳)

قوله: لا یصیبکم ما اصابهم: داسې نه وی چه په تاسو باندې هم هغه عذاب راشی، کوم چه هغوی راگیر کړی وو.

علامه خطابی رحمته الله علیه چه فرمائی ددې حدیث معنی داده چه هغه سړی چه د یو داسې قوم په علاقه کښې داخل شی په کوم چه د الله تعالی عذاب نازل شوې وی او په هغه باندې هلته د داخلیدو په وخت د عبرت، ویرې او د ژړا آثار ښکاره نه شی نو هغه ډیر سخت زړه والا دې. اود خشوع په اعتبار سره ډیر د کمی والا دې. د ویرې او دهشت اثر نه قبلوی، نو په داسې حالت کښې ویره ده چه داسې سړې هم هغه عذاب راگیر کړی کوم چه په هغه کلی والو باندې راغلي وو. (۴)

قوله: لا یصیبکم ما اصابهم، باندې یوشبه او د هغې جواب: حضرت مولانا شبیر احمد رحمته الله علیه فرمائی چه که چرې شبه او کړې شی چه په امت محمدیه باندې د داسې قسم عذاب د نه راتلو وعده کړې شوې ده. نو اوس خود دغه طرف نه امن او تسلی ده نو بیا حضور پاک صلی الله علیه و آله دا څنگه فرمائیلی دی چه "لا یصیبکم ما اصابهم"؟

نو یاد لرئ چه اولاً خودغه وعده وغیره هم هغه چاته هر وخت مستحضر وی د چا په زړه باندې چه د الله تعالی د ویرې تسلط نه وی گنی د ویرې د غلبې په وخت دا ټولې وعدې یادې نه وی (او ښکاره خبره ده چه د نبی پاک صلی الله علیه و آله په زړه باندې هر وخت مکمل غلبه وه). دې نه علاوه وعده ددې خبرې ده چه عام عذاب داسې راشی چه ټول امت هلاک شی داسې به نه کیږي. باقی په یو خاص خطه یا جماعت باندې راتلې شی. چنانچه هم پخپله په حدیث کښې دی چه په دې امت کښې به خسف هم وی او مسخ هم. (۵)

(۱) عمدة القاری: ۲۸۲/۴.

(۲) إرشاد الساری: ۴۳۴/۱.

(۳) فضل الباری: ۱۴۷/۳.

(۴) أعلام الحدیث للخطابی: ۳۹۴/۱.

(۵) فضل الباری: ۱۴۸/۳-۱۴۷.

د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت: د حديث شريف د ترجمه الباب سره مناسبت داسې دې چه حضور پاك هغه عذاب نازلیدو والا خانی کنبې راكوز نه شو، د كوم چه لازمی خاصه ده چه كله نئ هلته حصاریدل مناسب اونه گنرل نو هلته مونخ كول خو ډیره لرې خبره ده: یعنی عدم نزول مستلزم دې عدم صلاة ته، او عدم صلاة په وجه د کراهت دې. او دا باب هم د کراهت د بیانولو دپاره قائم کړې شوي دي. (۱)

د حديث شريف نه مستنبط شوي احکام او ادا: د دې حديث شريف نه چه كوم احکام مستنبط کيږي د هغې نه بعضي دلته نقل کولي شي:

① په کومو علاکو کنبې چه د الله تعالی عذاب نازل شوي وي هغه ځایونه خپل وطن نه دي جوړول پکار. (۲)

② داسې علاقونه ډیر په تیزئ سره بغیرد ایساریدو تیریدل پکار دي. (۳)

③ که چرته تلل وي نو د عبرت حاصلولو سره په ژړا سره، او د زړه په ویرې سره تلل پکار دي. (۴)

④ په دې حديث شريف کنبې انسان له د مراقبې طرف ته رغبت ورکړې شوي دي. (۵)

## ۲۲- بَابُ: الصَّلَاةُ فِي الْبَيْعَةِ

دا باب دې په گرجا گهر کنبې د مونخ کولو باره کنبې

د ترجمه الباب تشریح: قوله: الْبَيْعَةُ، د عيسايانو د عبادت ځایي ته گرجا گهر وائی. او دې ته په عربي کنبې "الْبَيْعَةُ" وائی د باء په کسرې سره. (۱)

"بيعه" او "کنیسه" کنبې فرق: "الْبَيْعَةُ" د نصاری عبادت ځانې ته وائی او د دې جمع "البيع" راځي. او "کنیسه" د يهودو عبادت ځانې ته وائی او د دې جمع "الكنائس" ده. بله دا چه اهل لغت د عيسايانو او يهوديانو د وارو عبادت ځانو د پاره د "البيعه" لفظ هم استعمالوي. (۲)

په دې تشریح سره د دې اشکال هم جواب او شو چه په ترجمه الباب کنبې خو "الْبَيْعَةُ" ذکر دې او په حديث کنبې د "کنیسه" ذکر دې ځکه چه د البيعه والکنیسه استعمال د يهودو او

(۱) عمدة القاری: ۲۸۱/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۸۷/۱ عمدة القاری: ۲۸۳/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۸۷/۱ عمدة القاری: ۲۸۳/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۸۷/۱ عمدة القاری: ۲۸۳/۴.

(۵) التوضیح لابن الملتن: ۵۰۲/۵ فتح الباری: ۶۸۷/۱.

(۶) مختار الصحاح، ب ی، ع: ۴۳/۱. القاموس الفقهي، حرف الباء: ۴۶/۱.

(۷) طلبه الطلبة فی الاصطلاحات الفقهية، کتاب اللقطة: ۹۳/۱. المخصص لابن سیده، الأصنام: ۶۷/۴. تاج

العروس، ب ی، ع: ۳۶۹/۲۰.

نصاری دواړو عبادت خانو باندې کیږي. د توجمة الباب مقصد: امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ مذکورہ باب قائمولو سره دا خودل غواړي چه که د نصاری په معبد کښې تصویرونه وغیره وی نو هلته مونځ ادا کول مکروه دی او که چرته هلته داسې څه نه وی نو څه حرج نشته دي. (۱)

د حضرت کنګوهی رحمۃ اللہ علیہ راڼي: حضرت مولانا رشید احمد کنګوهی رحمۃ اللہ علیہ فرمائي چه کیدې شی چه د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ مراد ددې باب نه دا وی چه کیه په دغه (معبد نصاری) کښې معصیت لکه شرک باللہ، تصویرونه او قبرونه وغیره نه وی نو بغیرد کراهته په دې کښې مونځ کول جائز دی او که په دې کښې د مذکورہ څیزونو څه وی نو مونځ به مکروه وی. اشار او روایات کوم چه په دې باب کښې راغلی دی د هغې سره ددې معنی مطابقت واضح دي، ځکه چه د دغه تصویرونو وجود او د تصویرونو ساتل د هغوی د پاره د لعنت سبب جوړ شو. بیا به دغه څیز د هغه خلقو د پاره هم د لعنت سبب جوړیږي چه هلته هغوی سره په عبادت کښې شریک وی. اگر چه لعنت به ددې څیزونو په جوړونکو او ساتونکو باندې زیات سخت وی په مقابلہ د هغه مسلمانانو څوک چه هلته مونځ وغیره کوي. (۲)

سابقه یو باب سره تعارض او د هغې حل: اشکال دادې چه دې باب او وړاندې تیرشوی باب کښې تعارض دي. داسې ځان پوهه کړئ چه وړاندې تیرشوی یو باب "من صلی وقدامه نار او تنور" کښې بیان شو چه که د مونځ گذار مخې ته اور وغیره وی لیکن د دغه مونځ گذار د دغه مونځ نه مقصود صرف د اللہ تعالیٰ رضا وی نو په داسې صورت کښې مونځ ادا کولو کښې څه حرج نشته دي. خو په دې باب کښې د غیر مسلمو عبادت خانه کښې صرف د تصویر د وجې نه مونځ ادا کول د مکروه کیدو بیان دي؟

ددې تعارض دا جواب ورکړې شوي دي چه دغه وړاندې تیر شوی باب کښې د مونځ مکروه کیدو وجه دا وه چه هلته د مونځ گذار مخې ته د اور وغیره کیدو تعلق د هغه په اختیار سره نه وو یعنی د مونځ گذار د اختیار نه بغیر د اور وغیره د مخې ته کیدو په صورت کښې د هغه مونځ گذار په مونځ کښې څه کراهت رانغلو ځکه چه د هغه نیت د اللہ تعالیٰ د پاره د مونځ کولو وو. او په دې باب کښې د قصد او ارادې دخل دي لکه چه حضرت عمر رضی اللہ عنہ او فرمائیل مونځ به ستاسو عبادت خانو ته نه داخلیږو، لهذا اوس هیڅ تعارض باقی پاتې نه شو. (۳)

رومېی تعلیق: وَقَالَ: عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِنَّا لَأَنْدُخُلُ كُنَائِسَكُمْ، مِنْ أَجْلِ التَّمَاثِيلِ الَّتِي فِيهَا الصُّورُ.

د تعلیق ترجمه: او حضرت عمر رضی اللہ عنہ او فرمائیل چه مونځ به ستاسو گرجا گهرو کښې هغه د

(۱) عمدة القاری: ۲۸۳/۴.

(۲) لامع الدراری: ۱۷۱/۱-۱۷۰. الأبواب والتراجم: ۲۱۶/۲.

(۳) فتح الباری: ۶۸۸/۱ عمدة القاری: ۲۸۳/۴.

تماثیلو یعنی تصویرونو د وجې نه نه داخلېږو کوم چه هلته وی. د تعلیق تخویج: دا تعلیق موصولاً المصنف لبعذرزاق کنبې نقل کړې شوي دي چه کله حضرت عمر رضی الله عنه د ملک شام ته راغلو نو یو نصرانی سړي د هغه د پاره خوراک تیار کړو او هغوی ته ئی دعوت ورکولو سره او وئیل ای عمر ازه غواړم چه تاسو ماسره تشریف راوړئ او تاسو سره د خپلو ملگرو ماله راشئ او ماته عزت را کړئ. هغه سړي د نصاری لونی پادری وو. حضرت عمر رضی الله عنه جواب ورکړو چه مونږ ستاسو گرجو ته د دغه تصویرونو د وجې هم نه داخلېږو کوم چه هلته موجود دی. (۱) د عیسیایانو د دغه لونی پادری نوم قسطنطین وو. کوم چه حضرت مسلم بن عبدالله الجهنی رضی الله عنه کیخوډي وو. (۲) د تعلیق تشریح:

قوله: کنائکم: په دي حدیث شریف کنبې "کنائکم" په خطاب سره دي خود اصیلی په روایت کنبې "کنائهم" د غائب په ضمیر سره دي. (۳)

حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائیل چه مونږ ستاسو په کنیساؤ کنبې نه داخلېږو. د کنیسه معنی پورته واضحه کړې شوي ده چه د یهودو د عبادت خانو د پاره استعمالېږي. او د نصاری په عبادت خانو باندې هم ددي اطلاق کیږي.

قوله: التي فيها: دا جمله د التماثل صفت جوړېږي. او الصور به مکسور وئیلې شی کوم چه به د التماثل د پاره بدل شی. او یا به عطف بیان. پورته د تعلیق چه کومه ترجمه کړې شوي ده دغه ترکیب په خیال کنبې ساتلو سره کړې شوي ده. (۴) خوددې جملې په ترکیب کنبې نور احتمالات هم موجود دي. (۵)

د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: ددې اثر د ترجمه الباب سره مطابقت په دي اعتبار سره دي چه د حضرت عمر رضی الله عنه د نصاری په کنیسه کنبې نه داخلیدل د هغه تصویرونو د وجې وو کوم چه په هغې کنبې موجود وو. که چرې هلته تصویرونه نه وي نو د هغه په دغه کنیسه د

(۱) عبدالرزاق عن معمر عن ايوب عن نافع عن اسلم ان عمر حين قدم الشام، صنع له رجل من النصارى طعاماً، وقال لعمر: إني أحب أن تجبني، وتكرمني أنت وأصحابك، وهو رجل من عظماء النصارى، فقال عمر: إنا لا ندخل كنائكم من أجل الصور التي فيها يعني: التماثل. (المصنف لعبدالرزاق، كتاب الصلاة، باب: الصلاة في البيعة، رقم الحديث: ١٦١١، ٤١٢/١-٤١١).

(۲) فتح الباری: ٦٨٨/١.

(۳) فتح الباری: ٦٨٨/١ عمدة القاری: ٢٨٤/٤.

(۴) فتح الباری: ٦٨٨/١، عمدة القاری: ٢٨٤/٤.

(۵) هغه دا دی چه التي فيها الصور" جمله اسمیه ده. داسې چه "الصور" به مبتداء مؤخروي او "فيها" خبر مقدم دي. دها ضمير مرجع به "الكنائس" وی. دا پوره جمله به د موصول دپاره صله شی. او موصول به د خپلې صلې سره د "الكنائس" دپاره صفت شی نه چه د التماثل دپاره، ځکه چه په دي سره په معنی کنبې فساد راځي. (فتح الباری: ٦٨٨/١ عمدة القاری: ٢٨٤/٤).

داخليدو نه هيخ خيز مانع نه وو. چنانچه په دې صورت كښې به هغه هلته مونخ هم ادا كولې خكه چه خه مانع نه وو. او په دې صورت كښې به هلته د هغه په مونخ ادا كولو كښې خه كراهت هم نه وو. (١)

ددې خبرې تائيد د هغه اثر نه كيږي كوم چه ابن ابى شيبه رضي الله عنه په المصنف كښې ذكر كړې دي چه كله اهل نجران مسلمانان شو نو هغوى حضرت عمر رضي الله عنه ته خط اوليكلو چه مونږ دلته د گرجا گهر نه زيات صفا اوبنكلي زمكه نه بيا مو مو (نو آيا مونږ دلته مونخ ادا كړو؟) حضرت عمر رضي الله عنه هغوى ته اوليكل چه هلته (صفائي كولو سره) اوبه چنر كاؤ كړئ او مونخ ادا كړئ. (٢)

دويم تعليق: وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يُصَلِّي فِي الْبَيْعَةِ، إِلَّا بَيْعَةَ فَيْهَاتَمَائِيلَ. د تعليق ترجمه: حضرت ابن عباس رضي الله عنه به په گرجا گهر كښې مونخ ادا كولو سوا د هغه گرجې چرته چه به صورتونه يعنى تصويران وو.

د تعليق تخريج: حافظ ابن حجر رضي الله عنه تعليق التعليق كښې ليكلى دى چه ابو القاسم البغوي رضي الله عنه دا اثر موصولاً نقل كړې دي. وئى گورئى: «عبيد الله العيشى ثنا العيشى ثنا عبد الواحد بن زياد ثنا خصيف عن مقسم مول ابن عباس قال كان ابن عباس إذا دخل الكنائس التي فيها الصور والتماثيل لم يصل فيها وخرم»، دارنگ دا تعليق امام بغوي رضي الله عنه په الجعديات كښې هم موصولاً نقل كړې دي. او په هغې كښې دا اضافه هم ده: «فإن كان فيها تماثيل خرّم فصل في المطر». وئى گورئى: «ثنا على بن الجعد ثنا شريك عن خصيف عن مقسم عن ابن عباس أنه كان يصل في البيع ما لم يكن فيها تماثيل، فإن كان فيها تماثيل خرّم فصل في المطر». (٣)

د تعليق د ترجمه الباب سره مطابقت: د تعليق د ترجمه الباب سره مطابقت بالكل واضح دي چه په داسې ځاى نو كښې د مونخ د كراهت اثبات كيږي.

حديث باب رومي حديث [حديث نمبر ٢٢٢]

٢٢٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ (٤) ذَكَرَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَيْسَةَ وَأُمَّهَا بِأَرْضِ الْحَبَشَةِ يُقَالُ لَهَا مَارِيَةُ، فَذَكَرَتْ لَهُ مَا رَأَتْ فِيهَا مِنَ الصُّورِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أُولَئِكَ قَوْمٌ إِذَا مَاتَ فِيهِمُ الْعَبْدُ الصَّالِحُ - أَوِ الرَّجُلُ الصَّالِحُ - بَنَوْا عَلَيَّ قَبْرَهُ مُسْجِدًا، وَصَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّورَ، أُولَئِكَ شِرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ.

(١) عمدة القارى: ٢٨٤/٤.

(٢) حدثنا أبو بكر قال: حدثنا سهل بن يوسف، عن حميد، عن أبي بكر، قال: «كُتِبَ إِلَى عَمْرِ بْنِ نَجْرَانَ: لَمْ يَجِدُوا مَكَانًا أَنْظَفَ وَلَا أَجْوَدَ مِنْ بَيْعَةٍ، فَكُتِبَ: أَنْصَحُوا بِمَاءٍ وَسِدْرٍ وَصَلُّوا فِيهَا.» (المصنف لابن أبي شيبه، كتاب الصلاة، الصلاة فى الكنائس والبيع، رقم الحديث: ٤٨٦١، ٤٢٣/١).

(٣) تعليق التعليق، كتاب الصلاة، باب: الصلاة فى البيعة: ٢٢٣/٢ فتح البارى: ١/٦٨٨ عمدة القارى: ٢٨٤/٤.

(٤) مرتجيجه تحت باب: هل تنبش قبور مشركى الجاهلية ويتخذ مكانها مساجد، رقم الحديث: ٤١٧.

د هديت ترجمه: د حضرت عائشه رضي الله عنها نه روايت دي چه حضرت ام سلمه رضي الله عنها رسول الله صلى الله عليه وسلم ته د يوې گرجې ذکر او کړو کومه چه هغې په حبشه کښې ليدلې وه. کومې ته چه به ماريه ونيلې کيدل. بيا هغوی (حضرت ام سلمه رضي الله عنها) رسول الله صلى الله عليه وسلم ته د هغه تصويرانو ذکر او کړو چه په هغه گرجه کښې ئې ليدلې وو. نور رسول الله صلى الله عليه وسلم ارشاد او فرمائيلو چه په هغه خلقو کښې چه به يو نيك بنده (ياني داسې او فرمائيل چه) يو بنده به مړ شو نو دغه خلقو به د هغه په قبر باندې جمات جوړولو او په هغې کښې به ئې دغه تصويرونه جوړول. دا خلق د الله تعالی په نيز بدترين خلق دی.

تراجم رجال د دې حديث شريف په سند کښې ټول پنځه راويان دي:

① محمد بن عمار: دا ابو عبد الله محمد بن سلام بن الفرغ البيکندی رضي الله عنه دي. په دې سند کښې د دې خبرې تصريح نشته دي چه دا راوی چه د ټولونه وړاندې دي محمد رضي الله عنه دا کوم يو دي؟ چنانچه حافظ ابن حجر رضي الله عنه د ابن سکين رضي الله عنه په نسبت سره دا نقل کړې دی چه دا محمد بن سلام دي.

(۱) د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: قول النبي صلى الله عليه وسلم: "أنا أعلمكم بالله"،

وأن المعرفة فعل القلب لاندې تیر شوی دی. (۲)

② عبد بن عمرو: دا عبدة بن سليمان بن حاجب بن زراره کلابی کوفی رضي الله عنه دي. بعضې خلقو

وئیلی دی چه د دوی نوم عبد الرحمن دي او عبده د دوی لقب دي. د دوی احوال کشف الباری،

کتاب الإیمان، باب: قول النبي صلى الله عليه وسلم: "أنا أعلمكم بالله"، وأن المعرفة فعل القلب لاندې

تیر شوی دی. (۳)

③ هشام بن عروه: دا هشام بن عروه بن زبير بن العوام قرشي اسدي مدنی رضي الله عنه دي. د

دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوصی په دویم حديث او تفصیلی احوال کتاب

الإیمان، باب: أحب الدين إلى الله أدومه لاندې تیر شوی دی. (۴)

④ ابيه: دا عروه بن زبير بن عوام قرشي اسدي مدنی رضي الله عنه دي. د دوی مختصر احوال

کشف الباری، کتاب بده الوصی، دویم حديث لاندې او تفصیلی احوال کتاب الإیمان باب: أحب

الدين إلى الله أدومه لاندې تیر شوی دی. (۵)

⑤ حضرت عائشه: دا ام المؤمنین حضرت عائشه بنت ابی بکر صدیق رضي الله عنها و رضي الله عنها ده. د

دوی احوال کشف الباری، کتاب بده الوصی، دویم حديث لاندې تیر شوی دی. (۶)

(۱) فتح الباری: ۶۸۸/۱

(۲) کشف الباری: ۹۳/۲

(۳) کشف الباری: ۹۴/۲

(۴) کشف الباری: ۲۹۱/۱، ۴۳۲/۲

(۵) کشف الباری: ۱/۲۹۱، ۴۳۶/۲

(۶) کشف الباری: ۱/۲۹۱



د حديث شرح: دمذکوره حديث مکمل تشريح وړاندي پنځه ابوابه مخکښې باب: هل تنبش  
 قبور مشرکي الجاهلية ويتخذ مکانها مساجد، رقم الحديث: ۲۲۰ تيره شوي ده.  
 د حديث شريف د ترجمه الباب سره مطابقت: دمذکوره حديث شريف د ترجمه الباب سره  
 مطابقت د حديث ددي جملې: "هنواعلى قبرة مسجد او صوروا فيه تلك الصور" په وجه دي ځکه چه  
 ترجمه الباب دي "الصلاة في البيعة" اودا خبره تيره شوي ده چه په گرجه کښې د مونځ کراهت په  
 هغه صورت کښې دي کله چه په هغې کښې تصويرونه وي. (۱)

حديث باب (دويم حديث):

د نسخو فرق: د کشف الباری د متن د پاره چه کومه نسخه بنياد جوړه کړې شوي ده هغه د  
 الدكتور المصطفى ديب البغا نسخه ده. په دي نسخه کښې ددي حديث شريف نه مخکښې  
 د "باب" عنوان نشته دي. خود صحيح بخاري په نورو نسخو کښې او زمونږ په هندي  
 نسخو کښې هم په دي مقام باندې يعنى ددي حديث نه وړاندي لفظ باب موجود دي. اگر چه  
 ددي باب هيڅ عنوان نه دي قائم کړې شوي ليکن دا باب بغير د ترجمې موجود دي.  
 ددي باب في الجملة د ماقبل باب سره تعلق د قائم مقام فصل دي. د دواړو ابوابو د اشتراك  
 وجه دا ده چه د انبياء کرامو عليهم السلام قبرونه جماتونه جوړولو نه منع کړې شوي ده. لکه  
 چه امام بخاري رحمه الله په دي باب سره دا بيانول غواړي چه "صلاة في البيعة" مطلقا مذموم دي که  
 په هغې کښې تصوير وي او که نه وي. (۲)

حضرت شيخ الحديث صاحب رحمه الله فرمائي چه دويم غرض دادې چه د باب سابق نه ئي صلاة في  
 معابد النصارى ثابت کړې وو او دي باب سره صلاة في معابد اليهود ثابتوي او هم دغه زمائې  
 ده. په باب سابق کښې د تصويرونو ذکر دي او په دي باب کښې د تصويرونو ذکر نشته دي.  
 بل دا چه په مخکښې باب کښې د نصارى د عبادت خانې ذکر وو په کومه کښې چه  
 تصويرونه وي او دلته د يهوديانو د عبادت خانې ذکر دي په کوم کښې چه تصويرونه نه وي.  
 لکه چه امام بخاري رحمه الله په دي باب سره د عموم طرف ته اشاره کړې ده. په دي معنى چه د  
 يهودو او نصارى د عبادت په ځايونو کښې که تصويرونه وي او که نه وي په هر صورت په  
 دي کښې مونځ مکروه دي. د باب سابق نه د امام مالك رحمه الله د مذهب تائيد کيږي او ددي باب  
 نه د جمهورو د مسلک تائيد کيږي. (۳)

(۱) عمدة القاری: ۲۸۴/۴.

(۲) فتح الباری: ۶۸۹/۱ عمدة القاری: ۲۸۵-۲۸۴.

(۳) الأبواب والتراجم: ۲۱۷/۲. سراج القاری: ۲۵/۲. علامه فخرالدین احمد صاحب رحمه الله فرمائي: زمونږ خیال  
 دادې چه امام بخاري رحمه الله په سابقه باب کښې دا بیان کړې دي چه د يهوديانو او نصارى په عبادت خانو  
 کښې د مونځ کولو د کراهت وجه داده چه هلته مجسمې او تصويرونه لگيدلې وي. گنې د اصل په اعتبار  
 سره هر ځانې کښې مونځ جائز دي. "جعلت لی الارض مسجدا" په دي وجه د اصل په اعتبار سره .....

[حديث باب: حديث نمبر ٢٢٥]

٣٣٥ و ٣٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَائِشَةَ وَعَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ (١) قَالَا لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - طَفِقَ يَطْرَحُ حَمِيصَةً لَهُ عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ بِهَا كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ، فَقَالَ وَهُوَ كَذَلِكَ «لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ». «يُعَذِّرُ مَا صَنَعُوا».

د حديث ترجمه: حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا اور حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما او فرمائیلو: چہ کلمہ د نبی کریم ﷺ آخری وخت راغلو نو حضور پاک بہ بار بار خپل خادر مبارک پہ خپل مخ مبارک باندي اچولو. بيا چہ بہ نسی کلمہ ددی د وجی گرمی محسوسولہ نو دا بہ نسی د خپل مخ مبارک نہ اخوا کولو. حضور پاک ہم ددی اضطراب پہ حالت کنبی وو چہ ارشاد نسی او فرمائیلو: پہ یهودو او نصاری ددی د اللہ تعالی لعنت وی هغوی د خپلو انبیاء کرامو قبرونہ جماتونہ جوړ کړل (راوی وائی چہ) حضور پاک د هغوی ددی عمل نہ ویرو ل کول تراجم رجال: د مذکورہ حدیث شریف پہ سند کنبی ټول شیرو راویان دی:

..... خو مونخ صحیح کیدل پکار دی. لیکن د تصویرونو په بنیاد باندي په دغه عبادت خانو کنبی د مونخ نه منع کړې شوی ده. اوس ایام بخاری رضی اللہ عنہم ترقی کولو سره د خودل غوازی چہ د منکر اتو د موجود گنی د وجی د مونخ منع والی صرف د یهودیانو او د نصاری د عبادت خایونو سره خاص نه دی بلکه که د مسلمانانو په جمات کنبی هم څه داسی صورت پیدا کړې شی مثلاً دا چہ په جماتونو کنبی قبرونہ په بنکاره توگه اوساتلی شی نو چونکه په جمات کنبی د قبر ساتل یو د لعنت قابل فعل دی په دې وجه که چرته داسی صورت پیدا شی نو په دغه جماتونو کنبی به مونخ کول هم د کراهت نه خالی نه وی لکه چہ امام بخاری رضی اللہ عنہم په دې باب کنبی دا بیان کړل چہ په جماتونو کنبی قبرونہ ساتل هم داسی دی لکه د یهودیانو او نصاری په عبادت خانو کنبی چہ تصویرونہ وی ځکه چہ د جمات باره کنبی صفا ارشاد فرمائیلی شوی دی: (وَأَنَّ السُّجُودَ لِلَّهِ فَلَا تُدْعُوهُمْ لِيُدْعَا اللَّهُ أَحْدَاهُمْ) (سورت الجن: ١٨) (او دا جماتونہ د اللہ تعالی د ذکر د باره دی نو اللہ تعالی سره بل څوک مه رابلئ). په دې وجه په جماتونو کنبی د جاخاص یا د عام قبر دباقی ساتلو جواز نشته دی. البته که د قبرونو څه راتاؤ کړې شی او هغه د جمات نه جدا کړې شی نو گنجائش شته دی.

بهر حال امام بخاری رضی اللہ عنہم باب بغير د ترجمې قائمولو سره واضحه کړه چہ په جماتونو کنبی قبرونہ باقی اوساتلی شو نو په دې کنبی هم مونخ مکروه دی. دغه شان دلته ترجمه جدیده داسی منعقد کیدې شی، باب: کراهية الصلاة في المساجد التي فيها قبور. (ايضاح البخاري: ١٨٥-١٨٦/٣).

(١) أخرجه البخاري أيضا في الجنائز. باب: ما يكره من اتخاذ المساجد على القبور. رقم الحديث: ١٣٣٠. وفي أحاديث الأنبياء. باب: ما ذكر عن بني إسرائيل. رقم الحديث: ٣٤٥٤-٣٤٥٣ وفي المغازي. باب: مرض النبي صلى الله عليه وسلم ووفاته. رقم الحديث: ٤٤٤١، ٤٤٤٢، ٤٤٤٣. وفي اللباس. باب: الأكسية والخمائنض. رقم الحديث: ٥٨١٥، ٥٨١٦. ومسلم في صحيحه. في المساجد. باب: النهي عن بناء المساجد على القبور واتخاذ الصور فيها. رقم الحديث: ٥٢١. والنسائي في سننه. في المساجد. باب: النهي عن اتخاذ القبور مساجد. رقم الحديث: ٧٠٣. وفي جامع الأصول. حرف الصاد. الكتاب الأول: في الصلاة. القسم الأول: في الفرائض وأحكامها. الباب الأول: في وجوبها أداء وقضاء. الفصل السادس: في شرائط الصلاة. الفرع الرابع: في أمكنة الصلاة. النوع الثاني: الأمكنة المكروهة. رقم الحديث: ٣٦٧٠، ٤٧٣/٥.

① ابو الیمان رضی اللہ عنہ: دا ابو الیمان حکم بن نافع بهرانی حمصی رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف

الباری: کتاب بده الوسی، الحدیث السادس لاندی تیر شوی دی. (۱)

② شعیب رضی اللہ عنہ: دا ابو بشر شعیب بن ابی حمزه القرشی الاموی رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف

الباری: کتاب بده الوسی، الحدیث السادس لاندی تیر شوی دی. (۲)

③ زهري رضی اللہ عنہ: دا محمد بن مسلم، بن شهاب الزهري رضی اللہ عنہ دی. د دوی احوال کشف الباری،

کتاب بده الوسی د دریم حدیث لاندی تیر شوی دی. (۳)

④ عبید اللہ بن عبد اللہ بن عتبہ رضی اللہ عنہ: دا عبید اللہ بن عبد اللہ بن عتبہ بن مسعود رضی اللہ عنہ دی. د

دوی احوال کشف الباری: کتاب بده الوسی، الحدیث الخامس او تفصیلی احوال کتاب العلم،

باب: متی یصح سہام الصغیر لاندی تیر شوی دی. (۴)

⑤ عائشہ رضی اللہ عنہا: دا ام المؤمنین زوجہ رسول، بنت ابی بکر صدیق حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا ده. د

دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی د دویم حدیث لاندی تیر شوی دی. (۵)

⑥ عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہما: دا حضرت عبد اللہ بن عباس بن عبد المطلب رضی اللہ عنہما دی. د دوی

مختصر احوال کشف الباری، کتاب بده الوسی خلورم حدیث لاندی او تفصیلی حالات کتاب

الایمان، باب: کفران العشیر، وکفر دون کفر لاندی تیر شوی دی. (۶)

د حدیث شرح:

قوله: أن عائشة وعبد الله بن عباس قالوا: لما نزل برسول الله صلى الله عليه وسلم، طفق يطرَح

خميصة له على وجهه:

یعنی حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا او ابن عباس رضی اللہ عنہما او فرمائیل کله چه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم آخری وخت

راغلو نو حضور پاک به بار بار خپل خادر په خپل مخ مبارک باندی اچولو.

قوله: لما نزل: د ابی ذر د روایت مطابق داد معروف صیغه ده او فاعل ئی محذوف دی کوم

چه "الموت" دی. او د ابی ذر د نسخی نه علاوه نسخو کنبی دا د مجهول صیغه ده. نائب فاعل

به په دی صورت کنبی هم الموت محذوف وی. (۷)

① کشف الباری: ۹۷۴/۱.

② کشف الباری: ۴۸۰/۱.

③ کشف الباری: ۱/۳۲۶.

④ کشف الباری: ۳۷۹/۳، ۴۶۶/۱.

⑤ کشف الباری: ۲۹۱/۱.

⑥ کشف الباری: ۴۳۵/۱، ۲۰۵/۲.

⑦ التوضیح لابن الملتن: ۵۰۷/۵. فتح الباری: ۶۸۹/۱ عمدة القاری: ۲۸۵/۴.

قوله: طَفِقَ: دا دَ جَعَلَ په معنی دې. (۱)

قوله: الخبيصة: داسې څادر په کوم باندې چه نقش ونگار شوې وي هغې ته الخبيصة وائي. (۲)  
قوله: غتم بها كشفها عن وجهه، فقال: وهو كذلك: بيا چه به ئي ددې د وچې گرمي محسوسوله  
نودا به ئي د خپل مخ مبارك نه اخوا كولو. حضور پاك هم ددې اضطراب په حالت كښي وو  
چه ارشاد ئي او فرمائيلو.

قوله: اغتم: مراد دادې چه كله به ئي گرمي او ويره محسوسوله. (۳)

قوله: وهو كذلك: مراد دادې چه د ويرې او اضطراب هم په هغه حالت كښي وو. لكه څنگه چه  
د ويرې په حالت كښي يو سړي كله د خپل ځان نه كمبل او څادر وغيره اخوا كوي او كله ئي  
اغوندي. هم دغه كيفيت د رسول الله ﷺ وو.

احتمال دادې چه د نبي پاك ﷺ دا كيفيت شروع كيدو په وخت حضرت ام سلمه رضيا او ام  
حبيبه رضيا د حبشې په زمكه باندې د ليدونكې گرجې ذكر كړې وو او لكه چه نبي پاك ﷺ ته  
معلومه شوې وه چه د هغوي دا مرض به مرض الموت ثابتيږي اودا هم ويره پيدا شوه لكه  
څنگه چه په تيره زمانه كښي د نورو انبياؤ قبرونو سره شوي دي داسې د هغوي قبر سره هم  
اونه كړې شي. په دې وجه حضور پاك د يهودو او نصاري ددې قبيح فعل د وچې لعنت  
كولو سره ددې فعل قباح او شناعت طرف ته اشاره او كړه. (۴)

قوله: عنة الله على اليهود والنصارى، اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد: يعنى يهوديانو او نصاري باندې  
دې د الله تعالى لعنت وي، هغوي د خپلو انبياؤ قبرونو جماتونه جوړ كړل.

قوله: اتخذوا: دا جمله جمله مستانفه ده چه د ماقبل جملې سبب نه جوړيږي. يعنى د لعنت د  
ناز ليدلو سبب. لكه چه دلته مكالمه او شوه چه په يهودو او نصاري باندې دې د الله لعنت  
ولي نازل شي؟ نو حضور پاك جواب وركړو چه هغوي د خپلو انبياؤ قبرونو جماتونه  
جوړ كړل. (۵)

قوله: اتخذوا: نه مراد عام دې چه هغوي په شروع كښي قبرونه د سجدو ځايونه جوړ كړل. يا د  
يهودو اتباع كولو سره ئي قبرونه د سجدو ځائي جوړ كړي وي، دواړه مراد دي. چنانچه ددې  
بدكار شروع يهوديانو كړې وه او نصاري د هغوي تابعداري او كړه. او په دې كښي هيڅ شك  
نشته چه نصاري به داسې د ديرو انبياؤ تعظيم كولو د چا تعظيم چه به يهوديانو كولو. (۶)  
قوله: يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا: (راوى وائي چه) حضور پاك د هغوي د هغه عمل نه ويرول كول.

(۱) التوضيح لابن الملتن: ۵۰۷/۵. فتح الباري: ۶۸۹/۱. عمدة القارى: ۲۸۵/۴.

(۲) التوضيح لابن الملتن: ۵۰۷/۵. فتح الباري: ۶۸۹/۱. عمدة القارى: ۲۸۵/۴.

(۳) عمدة القارى: ۲۸۶/۴.

(۴) فتح الباري: ۶۸۹/۱. عمدة القارى: ۲۸۶/۴.

(۵) فتح الباري: ۶۸۹/۱. عمدة القارى: ۲۸۶/۴.

(۶) فتح الباري: ۶۸۹/۱.

قوله: يُعَذِّرُ مَا صَنَعُوا: دا هه دماقبل کلام نه جدایو مستقل کلام دې. کوم چه د حدیث د راوی نه صادر شوي دې. او دا هم لکه د یوسوال جواب دې چه کله په هغه نازک وخت کبسي چه مرض الموت وو حضور پاک د یهودو او د نصاری د کار مذمت او کړو او په هغوی نی لعنت او کړو نو په دې کبسي چه حکمت وو؟ یا ددې چه وجه وه؟ نو راوی د حدیث جواب ورکړو چه د نبی کریم ﷺ ددې قول وجه دا رد چه حضور پاک خپل امت خبرداره کولو چه تاسو د هغوی په نقش قدم باندې تلو سره داسې مه کوئی. (۱)

یواشکال اود هغې جواب: په دې مقام باندې یو اشکال پیدا کیږي چه حضور پاک ارشاد او فرمائیلو چه په یهودو او نصاری دې د الله تعالی لعنت وی چه هغوی د خپلو انبیاء قبرونه د سجدې ځائی جوړ کړو. حالانکه دا خبره خو د یهودو باره کبسي صحیح کیږي شی چه د هغوی ډیر زیات انبیاء دنیا ته راغله لیکن د نصاری خود عیسی ﷺ نه پس بل څوک نبی نه دی، ایا تردې چه رسول الله ﷺ مبارک مبعوث شو. نو بیا هغوی هم د یهودیانو سره د هغوی په قبیح فعل کبسي شریک گرځول او د هغوی باره کبسي داوینا څنگه صحیح کیږي چه هغوی هم د خپلو انبیاء قبرونه د سجدو ځایونه جوړ کړي وو؟ ددې څو جوابونه ورکړي شوی دی مثلاً:

① انبیاء د جمع صیغه مجموعه د یهودو او نصاری په مقابله کبسي ده د کوم نتیجه چه به دا راوځي چه ټول انبیاء به د یهودو مقابل راشی او د نصاری مقابل به صرف هم یو نبی لېذا اشکال به ختم شی. (۲)

② نبی پاک ﷺ چه کوم د انبیاء ذکر کړې دې ددې نه مراد صرف انبیاء نه دی بلکه انبیاء اود هغوی کبار متبعین کوم چه صالحین وو دواړه مراد دی. (۳) ددې قول تائید د صحیح مسلم د هغه حدیث نه هم کیږي په کوم کبسي چه نبی کریم ﷺ فرمائیلی دی چه هغوی د خپلو انبیاء او خپلو صالحانو خلقو قبرونه د سجدو ځایونه جوړ کړي وو. البته نبی پاک ﷺ صرف د انبیاء ذکر او کړو. (۴)

③ أصالة دا کار خو به هم یهودیانو کولو او هم هغوی د دغه مشرکانه بد عمل اصلی موجد دی. لیکن نصاری د هغوی دا کار بد اونه گنرلو او هغوی هم د یهودیانو سره ملاؤ شو او د هغوی اتباع نی کوله په دې وجه په لعنت کبسي د یهودو سره سره نصاری هم شریک کړي

① فتح الباری: ۶۸۹/۱. عمدة القاری: ۲۸۶/۴.

② فتح الباری: ۶۸۹/۱.

③ فتح الباری: ۶۸۹/۱.

④ عن عبدالله بن الحارث النجرانی، قال: حدثنی جندب، قال: سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقول ان یموت بخصس، وهو یقول: انی ابرا إلى الله ان یكون لی منکم خلیل، فإن الله تعالی قد اتخذنی خلیلاً، كما اتخذ ابراهیم خلیلاً، ولو كنت متخذاً من امتی خلیلاً لاتخذت ابا بکر خلیلاً، الا وإن من كان قبلکم كانوا یتخذون قبور انبیائهم وصالحیهم مساجد، الا فلا تتخذوا القبور مساجد، انی انھا کم عن ذلك. (صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب: النهی عن بناء المساجد علی القبور واتخاذ الصور فیها والنهی عن اتخاذ القبور مساجد، رقم الحدیث: ۵۳۲).

شو (۱)

⊙ داخبره هم پوره نه ده منلی شوی چه د نبی کریم ﷺ او حضرت عیسیٰ علیهما السلام په مینخ کنبی بل خوک نبی نه دی راغلی لکه چه سورت یاسین کنبی دی: (وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿۱۴﴾ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ الْمُرْسَلِينَ كَذَّبُواهُمْ فَعَزَّزْنَا بِبَالٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ ﴿۱۳﴾) [یس: ۱۴ - ۱۳] او د هغوی په وړاندې د اهل قریه مثال بیان کړی چه کله هلته رسولان اورسیدو، کله چه مونږ د هغوی طرف ته دوه اولیبرل نو هغوی دوی دروغ او کنړل بیا مونږ دریم لیږلو سره هغه ته تقویت ورکړو.

په دې آیت کنبی د رسولانونه مراد د اهل انطاکیه د هدایت او لارخودنې د پاره د حضرت عیسیٰ علیهما السلام د طرف نه لیږلې شوی قاصدان مراد اخستی شوی دی. دکومو دنومونه چه د حضرت کعب ﷺ طرف ته د روایت منسوب کیدو سره بعضې مفسرینو صادق، مصدوق او شلوم یا سمون نیکلې دی. په دې د وجه په دې اعتبار سره په نصاری کنبی هم د انبیاء وجود تسلیم کیدی شی. په دې صورت کنبی دلغنت مصداق د یهودو سره سره نیغ په نیغه نصاری هم جوړیږی. (۱) لیکن په دې تقریر باندې اشکال هم پیدا کیږی چه دا خود الله تعالی رسولان نه وو بلکه د حضرت عیسیٰ علیهما السلام رسولان وو یعنی د هغوی د طرف نه دعوت پیغام ورکولو سره لیږلې شوی وو. (۲)

ایا بنسټه نس کیدی شی؟ دې نه علاوه حافظ ابن حجر رحمته الله علیه حضرت مریم علیها السلام هم په دې مقام باندې جواب ورکړل سره نبیه شمیر کړې ده: (۳) خود جمهورو مسلک په دې باره کنبی هم دا دې چه هغه نبیه نه وه. بلکه ولیه وه، خکه چه نبوت د سرو سره مخصوص دې په بنخو کنبی د نبوت سلسله نشته دې. (۴)

د حدیث د شریف ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مطابقت هم واضح دې د هیخ قسم اشتباه نشته دې. هغه داسې چه کله یهود او نصاری د خپلو انبیاء کرامو قبرونه جماتونه جوړ کړل نو هغوی به هلته عبادت کولو، مونږ به شی کولو، او د دغه جماتونو نومونه هغوی گرجې کیخودلې کوم ته چه "الپییم" او "الکنائس" وائی. او بل طرف ته

(۱) فتح الباری: ۶۸۹/۱.

(۲) (إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ الْمُرْسَلِينَ) قال وهب: اسمها يوحنا وبولس. (لَكَذَّبُواهُمْ فَعَزَّزْنَا) یعنی فقوینا. (بِإِلْيَاسَ) برسول ثالث وهو شمعون، وقرأ أبو بكر عن عاصم: (لَعَزَّزْنَا) بالتخفيف ومرر بمعنى الأول كفولك: وشددنا، وشددنا، بالتخفيف والتثقیل، وقيل: أي: فغلبننا، من قولهم: من عزب: وقال كعب الرسولان: صادق ومصدق، والثالث شلوم، وإنما أضاف الله الإرسال إليه لأن عيسى عليه السلام إنما بعثهم بأمره تعالى، (فَقَالُوا) جميعا لأهل أنطاكية. (إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ) (تفسير البغوي، سورة يس، الآية: ۱۴، ۱۲/۷). (الكشف والبيان المعروف بتفسير الثعلبي، سورة يس، الآية: ۱۴، ۱۲۵/۸). (البحر المحيط، سورة يس، الآية: ۱۴، ۵۳/۹).

(۳) عمدة القاری: ۲۸۷/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۸۹/۱.

(۵) عمدة القاری: ۲۸۷/۴.

باب هم - الصلاة في البيم - قائم كرى شوى دى. (١)  
 حديث باب (دریم حدیث) [حدیث نمبر ٢٢٢٦]

٣٣٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَبِي شَهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيْبِ عَنِ أَبِي هُرَيْرَةَ (٢) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ « قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُودَ أَخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ ».

- د حدیث ترجمه: حضرت ابوهریره رضی اللہ عنہ نے روایت دی ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم او فرماتیل چہ اللہ تعالیٰ دی یہودیوں ہلاک کری ہغوی د انبیاء کرامو قبرونہ جماتونہ جو رکول تراجم رجال: دمذکورہ حدیث شریف سند کنبی تول پنخہ راویان دی:
- ① عبد اللہ بن مسلمہ رضی اللہ عنہ: دا عبد اللہ بن مسلمہ بن قعنب حارثی بصری رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من الدین الغرار من الفتن لاندی تیر شوی دی. (٣)
  - ② مالک رضی اللہ عنہ: دا امام مالک بن انس رضی اللہ عنہ دی. ددوی تذکرہ کشف الباری، کتاب ہدم الوحی ددویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب الایمان، باب: من الدین الغرار من الفتن لاندی تیر شوی دی. (٤)
  - ③ ابن شہاب رضی اللہ عنہ: دا محمد بن مسلم، بن عبید اللہ، بن عبد اللہ بن شہاب الزہری رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوحی، دریم حدیث لاندی تیر شوی دی. (٥)
  - ④ سعید بن المسیب رضی اللہ عنہ: دا مشہور تابعی سعید بن المسیب بن حزن بن ابی وہب قرشی مخزومی رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: من قال ان الایمان هو العمل لاندی تیر شوی دی. (٦)
  - ⑤ ابوہریرہ رضی اللہ عنہ: دا مشہور صحابی رسول حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ دی. ددوی احوال کشف الباری، کتاب الایمان، باب: امور الایمان لاندی تیر شوی دی. (٧)

(١) عمدة القاری: ٢٨٥/٤.

(٢) أخرجه أبو داود في سننه، في الجنائز، باب: في البناء على القبر، رقم الحديث: ٣٢٢٧. ومسلم في صحيحه، في المساجد، باب: النهي عن بناء المساجد على القبور، رقم الحديث: ٥٣٠. والنسائي في سننه، في الجنائز، باب: اتخاذ القبور مساجد، رقم الحديث: ٢٠٤٧. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: في الصلاة، القسم الأول: في الفرائض وأحكامها، الباب الأول: في وجوبها أداء وقضاء، الفصل السادس: في شرائط الصلاة، الفرع الرابع: في أمكنة الصلاة، النوع الثاني: الأمكنة المكروهة، رقم الحديث: ٣٦٧٠، ٤٧٢/٥.

(٣) كشف الباری: ٨٠/٢.

(٤) كشف الباری: ٢٩٠/١٨٠/٢.

(٥) كشف الباری: ١/٣٢٦.

(٦) كشف الباری: ٨٠/٢.

(٧) كشف الباری: ٢/١٥٩.

د حدیث شرح:

قوله: قاتل الله: په دې جمله کې قاتل د باب مفاعله نه د فعل ماضی صیغه ده. لیکن په معنی د ثلاثی مجرد دې. یعنی د قَتَلَ په معنی دې او داسې کیږي. او معنی دا ده چه الله تعالی دې په هغوی باندې لعنت او کړي، هغوی دې هلاک کړي. د قاتل نه مراد په دې مقام کې لعنت دې یعنی د رحمت نه لرې کیدل. (۱) (باقی تشریح خو وړاندې تیره شوې ده)

### ۲۳- بَابُ: قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ (جُعِلَتْ لِيَ الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهْرًا)

دا باب دې د نبی اکرم ﷺ د قول: زما د پاره ټوله زمکه

جمات او پاکونکې جوړه کړې شوې، باره کېږي دې.

د ترجمه الباب مقصد: په مخکینو ابوابو کې چې په کومو ځایونو کې د مونځ د ادا کولو د کراهت بیان او شو د هغې د جواز د پاره په توګه د دلیل دا باب قائم کړې شوې دې. چه کله حضور پاک "جعلت لی الارض مسجدا و طهورا" فرمائیلی دی نو د دې عموم لاندې ټول ځایونه راغلی دی چه په هر ځای کې مونځ جائز دې البته د بعضې عوارضو د وجې کوم چه وړاندې بیان کړی شوی، کراهت راځي.

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چه په تیر شوو ابوابو کې چې کومه د کراهت خبره تیره شوې ده هغه د تحریم د پاره نه وه بلکه په خلاف اولی باندې محمول ده ځکه چه دې امت ته په مخ د زمکه په هره یوه حصه باندې د مونځ کولو اجازت ورکړې شوې دې. او د دې باب مقصد دا دې چه که چرې یو سړې په مذکوره ځایونو کې مونځ کوی نو د هغه مونځ به مکروه وی لیکن مونځ به ئی کیږي. دلیل د "جعلت لی الارض مسجدا و طهورا" عموم دې. (۲)

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۲۷]

۳۳۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانَ قَالَ حَدَّثَنَا هُثَيْمٌ قَالَ حَدَّثَنَا سَيَّارٌ - هُوَ أَبُو الْحَكَمِ - قَالَ حَدَّثَنَا زَيْدُ الْفَقِيرِ قَالَ حَدَّثَنَا جَابِرُ (۳) بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أَعْطَيْتُ نَمْسًا لِمَنْ يُعْطِيهِمْ أَحَدٌ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ قَبْلِي، نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مِيزَةً شَهْرًا، وَجُعِلَتْ لِيَ الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهْرًا، وَأَيُّمَارُ جُلٍّ مِنْ أُمَّتِي أَدْرَكْتُهُ الصَّلَاةَ فَلْيَصِلْ، وَأَجَلْتُ لِي الْغَنَائِمَ، وَكَانَ النَّبِيُّ يُبْعَثُ إِلَى قَوْمِهِ خَاصَّةً، وَيُبْعَثُ إِلَى النَّاسِ كَافَّةً، وَأَعْطَيْتُ الشَّفَاعَةَ.»

د حدیث ترجمه: حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه بیان کړې دې چه رسول الله ﷺ ارشاد فرمائیلی دې چه ماته پنځه څیزونه داسې را کړې شوی دی چه مانه مخکې یو نبی ته هم نه دی ورکړې شوی. ① د یوې میاشتې په مسافت باندې زما رعب اچولو سره زما امداد او کړې

(۱) عمدة القاری: ۲۸۶/۴.

(۲) الأبواب والتراجم: ۲۱۷/۲ سراج القاری: ۲۷/۳.

(۳) مرتخریجه تحت کتاب التیمم، الباب الأول، رقم الحدیث: ۳۲۸ رقم الصفحة: ۸۳.



شو. ⑤ زما د پاره ټوله زمکه جمات او پاکونکې جوړه کړې شوه. زما د امت چه څوک د مونځ وخت رالاندې کړی نو هغه له پکار دی چه هم هلته مونځ او کړی. ⑥ او زما د پاره د غنیمت مال حلال کړې شو. ⑦ (سابقه) انبیاء به په خاص توگه باندي د خپل قوم طرف ته رالیرلې شو او زه د ټولو خلقو طرف ته مبعوث کړې شوی یم. ⑧ او ماته د شفاعت حق را کړې شوي دي.

تو اجم رجال: د مذکوره حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه راویان دي.

① محمد بن سنان رضی الله عنه: دا محمد بن سنان عوقلی باهلی بصری رضی الله عنه دي د دوی احوال کشف الباری، کتاب العلم الحدیث الأول لاندې تیر شوی دی. (۱)

② هشیم رضی الله عنه: دا ابو معاویه هشیم بن بشیر بن قاسم واسطی رضی الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب التیمم، الباب الأول، رقم الحدیث: ۳۲۸ لاندې تیر شوی دی. (۲)

③ سیار رضی الله عنه: دا ابو الحکم سیار بن ابی سیار واسطی رضی الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب التیمم، الباب الأول، رقم الحدیث: ۳۲۸ لاندې تیر شوی دی. (۳)

④ یزید الفقیر رضی الله عنه: دا ابو عثمان یزید بن صهیب کوفی الفقیر رضی الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب التیمم، الباب الأول، رقم الحدیث: ۳۲۸ لاندې تیر شوی دی. (۴)

⑤ جابر بن عبدالله رضی الله عنه: دا مشهور صحابین رسول حضرت جابر بن عبدالله رضی الله عنه دي. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الرضوء، باب: من لم ير الرضوء إلا من المخرجین، من القبل والدبر لاندې تیر شوی دی. (۵)

د حدیث شرح: د مذکوره حدیث شریف مکمل او تفصیلی شرح، د خصائص نبی رضی الله عنه په تعداد کښې اختلاف او د هغې په مینځ کښې تطبیق کتاب التیمم کښې تیر شوي دي. هغه خاص د کتلو سره تعلق لري هغه دي او کتلې شی. (۶)

د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مطابقت هم بالکل واضح دي چه په دواړو کښې "جعلت ل الارض مسجدا و طهورا" د اشتراك وجه ده.

(۱) کشف الباری: ۵۴/۳-۵۳.

(۲) کشف الباری، کتاب التیمم، رقم الصفحة: ۸۳.

(۳) کشف الباری، کتاب التیمم، رقم الصفحة: ۸۸.

(۴) کشف الباری، کتاب التیمم، رقم الصفحة: ۸۹.

(۵) کشف الباری، کتاب الرضوء، باب: من لم ير الرضوء إلا من المخرجین، من القبل والدبر.

(۶) کشف الباری، کتاب التیمم، الباب الأول، رقم الحدیث: ۳۲۸، رقم الصفحة: ۸۸-۱۲۷.

## ۲۴- بَابُ: نَوْمِ الْمَرْأَةِ فِي الْمَسْجِدِ

دا باب دې د بنځې په جمات کښې د اوده کیدو باره کښې د ترجمه الباب مقصد: شیخ الحدیث مولانا محمد زکریا صاحب کاندهلوی رحمته الله علیه فرمائی چې امام بخاری رحمته الله علیه دوه ابوابه ترلی دی. یو نوم المرأة فی المسجد او دویم نوم الرجال فی المسجد. په ظاهره د امام بخاری رحمته الله علیه غرض د دواړو بابونو نه جواز بیانول دی ځکه چې کوم روایات ذکر کړې شوی دی هغه په جواز باندې دلالت کوی. مگر نوم المرأة ښی په نوم الرجال باندې د اهتمام د وجې مقدم کړو ځکه چې بنځه محل فتنه ده. په دې وجه ممکن دی چې د عدم جواز ویره وی نو امام بخاری رحمته الله علیه دا مقدم کولو سره جواز واضح کړو او هم په دغه محل فتنه کښې د اخته کیدو د وجې د مالکیو مذهب دادې چې مطلقاً د بنځې په جمات کښې اوده کیدل جائز نه دی. ان کانت عجوذة. او د ائمه ثلاثو په نیز جائز دی مگر خلاف اولی دی ځکه چې د فتنې محل دې او په نوم رجال کښې د امام مالک رحمته الله علیه په نیز تفصیل دې فرمائی: که چرته د اوده کیدو ځانی د نائم نه وی نو په جمات کښې اوده کیدې شی او که بل ځانی وی نو اوده کیدل جائز نه دی. او د ائمه ثلاثو په نیز جائز دی مگر اولی دادی چې که چرته بل ځانی وی نو بهر دې اوده شی. (۱)

په یوه خبره باندې په ښه شان سره پوهیدل پکار دی چې د امام بخاری رحمته الله علیه چه کوم مقصد دې د هغې نه جواز خو ثابتیږي لیکن ددې دا مطلب هیڅ کله نه دې چې د امام صاحب رحمته الله علیه د طرف نه دا ترغیب ورکولی شی چې دا کار کوئی، بلکه مطلب دادې چې دا امور د رخصت په درجه کښې دی که چرې داسې حالت جوړشی نو د فتنې نه د امن په صورت کښې د داسې کولو گنجائش شته.

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۲۸]

۳۴۱- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ (۲) أَنَّ وَلِيدَةَ كَانَتْ سُودَاءَ عِنِّي مِنَ الْعَرَبِ، فَأَعْتَقَهَا، فَكَانَتْ مَعْنِي قَالَتْ فَمَرَّ جَنَابٌ صَبِيَّةٌ هُمُ عَلِيٌّ وَأَخٌ أَحْمَرٌ مِنْ سُورٍ قَالَتْ فَوَضَعْتُهُ أَوْ قَمَّ مِنْهَا، فَمَرَّتْ بِهِ حُدَانَةٌ وَهُوَ مَلْقَى، فَحَسَبْتُهُ لِحْمًا فَحَطَّطْتُهُ قَالَتْ فَالْتَمَسُوهُ فَلَمْ يَجِدُوهُ قَالَتْ فَأَتَاهُمُونِي بِهِ قَالَتْ فَطَفِقُوا يُقْتَلُونَ حَتَّى نَشِئُوا قَبْلَهَا قَالَتْ

(۱) تقریر بخاری شریف: ۱۶۳/۲. فرمائی په اعتبار د قیاس د بنځې په جمات کښې اوده کیدل ناجائز کیدل پکار وو ځکه چې په دې سره یو خوبې پردگی کیږي بل دا هم ممکن دی چې حیض وغیره راشي به کوم سره چې د جمات د ناپا که کیدلو اندیښنه ده. دریم دا چې د فتنې سبب دې نو د امام بخاری رحمته الله علیه مقصد ددې فتنو نه د امن په صورت کښې جواز ثابتول دی چې نفس نوم مرأة فی المسجد کښې هیڅ حرج نشته دې. (الأبواب والتراجم: ۲۱۷/۲، سراج القاری: ۲۸/۲).

(۲) أخرجه البخاری أيضا فی صحیحہ، فی فضائل أصحاب النبی صلی الله علیه وسلم، باب: أيام الجاهلیة، رقم الحدیث: ۳۷۳۵. وفی جامع الأصول، کتاب اللواحق، الفصل الرابع، فی احادیث متفرقة من کل نوع لا یضمها معنی، ولا یحصرها فن، وهی عشرة أنواع، نوع عاشر: متفرق، رقم الحدیث: ۹۴۷۶، ۷۷۶/۱۱.

وَاللَّهِ إِنِّي لَعَائِمَةٌ مَعْرُومٌ، إِذْ مَرَّتِ الْحَدَابَةَ فَأَلْقَتْهُ قَالَتْ فَوْقَهُ بَيْنَهُمْ قَالَتْ فَقُلْتُ هَذَا الَّذِي ائْتَمُّونِي بِهِ - زَعَمْتُمْ - وَأَنَا مِنْهُ بَرِيئَةٌ، وَهُوَ ذَا هُوَ قَالَتْ فَجَاءَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَاسْأَلْتِ. قَالَتْ عَائِشَةُ فَكَانَ هُنَا خِبَاءٌ فِي السُّجْدِ أَوْ جِغْرٍ قَالَتْ فَكَانَتْ تَأْتِينِي فَتَحَدِّثُ عِنْدِي قَالَتْ فَلَا تَجْلِسُ عِنْدِي فَجَلَسَا إِلَّا قَالَتْ وَيَوْمَ الْوِشَاحِ مِنْ أَعَاجِيبِ رَبِّنَا إِلَّا أَنَّهُ مِنْ بَلَدَةِ الْكُفْرِ أَنْجَانِي قَالَتْ عَائِشَةُ فَقُلْتُ لَهَا مَا شَأْنُكَ لَا تَقْعُدِينَ مَعِيَ مَقْعِدًا إِلَّا قُلْتِ هَذَا قَالَتْ فَحَدَّثْتَنِي بِهَذَا الْحَدِيثِ.

د حدیث ترجمه: حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہے د عربو د یوی قبیلے سره یوه حبشی وینخه وه. هغوی دا آزاده کرې وه مگر دا به هم د هغوی سره اوسیدله. هغه وائی چه یو خل د هغوی جینئ بهر اووتله: د هغې په بدن باندي دتسمو سور هاروو. دغه جینئ هغه پخپله اوویستلو یا هغه ددی نه پریوتلو. هلته یو تپوس تیریدو او دغه غورزیدلې هارئی د غوښې تکره او گنرله په هغې راپریوتلو او یوپره. هغه خلقو هغه اولتولو مگر بیان ه موندلې شو. (دغه) وینخې او وئیل چه د قبیلې والو په ما باندي (د غلام) الزام اولگولو. بیانی زما تلاشی واخستله تردې چه زما د شرمگاه ئی هم تلاشی واخستله. زه هم هغه خلقو سره ووم چه هم هغه تپوس هلته تیر شو نو هغه هغه هار هلته او غورزولو. (دغه) وینخې او وئیل هغه هار زمونږ مخې ته راپریوتلو. (هغه) وینخې او وئیل چه ما هغه خلقو ته او وئیل چه دا هغه هار دې دگوم چه تاسو په ما باندي د غلام الزام لگولې وو حالانکه زه ددی نه بری ووم. هغه هار دادې (ستاسو مخې ته) پروت دې.

حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی چه (ددې واقعي نه پس) هغه وینخه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم له راغله او اسلام ئی قبول کړو نو هم په جمات کښې د هغې د پاره یوه خیمه یا جونگره جوړه کړې شوه. حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی چه هغه وینخه به ما له راتلله او ما سره به ئی خبرې کولې. خو چه هغه به کله هم راتلله نو په خبرو کښې به ئی دا شعر ضرور وئیلو (د کوم ترجمه چه داده) هار (د ورکیدو) ورخ زما د رب د عجائباتو نه ده، واورئئ هم ددی (هار دې واقعي) مال د کفرستان نه خلاصې را کړې دې. حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی چه ما هغې ته او وئیل چه آخر څه خبره ده چه ته کله هم ماسره کښې نودا خبره خامخا کوي؟ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا او فرمائیل چه بیا هغې ماته دا واقعه واوروله.

تو اجم رجال: د مذکوره حدیث شریف په سند کښې ټول پنځه راویان دی:

① عبدالله بن اسماعیل رضی اللہ عنہ: داعبید بن اسماعیل قرشی عبادی کوفی رضی اللہ عنہ دې. ددوی

احوال کشف الباری، کتاب الحیض باب: نقص البراة شعرها عند غسل المبيض لاندې تیر شوی دی. (۱)

② ابو اسامه رضی اللہ عنہ: دا ابو اسامه حماد بن اسامه رضی اللہ عنہ دې. ددوی احوال کشف الباری، کتاب العلم

، باب: فضل من علم وعلم، لاندې تیر شوی دی. (۲)

(۱) کشف الباری، کتاب الحیض، ص: ۳۹۸.

(۲) کشف الباری: ۴۱۴/۳.

- ④ هشام بن عروة رضی اللہ عنہ: دا هشام بن عروه بن زبیر بن عوام قرشی اسدی مدنی رضی اللہ عنہ دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوسی د دویم حدیث او تفصیلی احوال کتاب الإیمان، باب: أحب الی اللہ اذومه لاندي تیر شوی دی. (۱)
- ⑤ ابی ہریرہ رضی اللہ عنہ: دا عروه بن زبیر بن عوام قرشی اسدی مدنی رضی اللہ عنہ دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوسی، دویم حدیث لاندي او تفصیلی احوال کتاب الإیمان باب: أحب الی اللہ اذومه لاندي تیر شوی دی. (۲)
- ⑥ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا: دا ام المؤمنین حضرت عائشہ بنت ابی بکر صدیق رضی اللہ عنہما و رضی اللہ عنہما ده. د دوی احوال کشف الباری، کتاب ہدم الوسی، دویم حدیث لاندي تیر شوی دی. (۳)
- د حدیث شرح:
- قوله: عن عائشة: أن ولیدة كانت سوداء لحن من العرب: حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی چه د عربیو یو قبیلہ سره حبشی وینخه وه.
- قوله: ولیدة: معنی وینخه ده. د ولیده اصل استعمال د ماشومی دپاره کیدلو، بیا ددی استعمال د وینخې دپاره شروع شو. عام خبره ده چه که وینخه د کم عمر وی او که د یر عمر وی، ددی جمع الولائد ده. (۴)
- قوله: كانت سوداء: مراد دادې چه هغه غټه ښخه وه چه غنم رنگې وه. په کتابونو کښې د دغه وینخې د نوم، د هغې د قبیلې نوم اونه د هغه ماشومی نوم د چا هار چه وړک شوې وو هېڅ ذکر نشته. (۵)
- قوله: فكانت معبر، قالت: فخرجت صبية لهم، عليها وشاح أحمر من سُيُور: هغوی هغه آزاده کرې وه مگر هغه هم د هغوی سره اوسیدله. هغه وائی چه یو ځل دا ماشومه هغوی نه بهر اووتله د هغې په بدن باندي د تسمو سور هار وو.
- قوله: قالت: فخرجت: په دې عبارت کښې د قالت فاعل حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا ده او د فخرجت فاعل هغه الوليدة ده. (۶)

(۱) کشف الباری: ۲۹۱/۱، ۴۳۲/۲.

(۲) کشف الباری: ۱/۲۹۱، ۴۳۶/۲.

(۳) کشف الباری: ۱/۲۹۱.

(۴) النهایه فی غریب الحدیث والأثر: ۲۳۵/۵، المكتبة الإسلامية، ریاض. مختار الصحاح، و ل د: ۲۴۵/۱. تاج

العروس، و ل د: ۳۳۳/۹.

(۵) فتح الباری: ۶۸۱/۱ عمدة القاری: ۲۸۸/۴.

(۶) فتح الباری: ۶۹۱/۱.

قوله: صبية لهم: په دې جمله کښې هم ضمير ذ الحى طرف ته راگرځي. مراد دادې چه هغه جينى هم ددې قبيلې والونه د يو کس وه. (۱)

قوله: وشاخ: (په کسرې د واو او په ضمې د واو) د خرمنې هغه پتې يا هغه بلب کوم چه بنځه د تشې نه تيرولو سره په اوگه باندي اچوي او په هغې باندي غمى او ملغلرې ټکوالي شوې وي. دا لفظ د واو په همزې سره بدلول اشاح لوستل هم جائز دى. (۲)

قوله: سيور: هغه تسمه يا تار په کوم باندي چه خرمن گندلې شى. هغې ته سيورواشې ددې جمع سيور استعماليري. (۳)

علامه عيني رحمته الله يو اشکال او د هغې جواب ذکر کړې دې چه ددې لفظ "سيور" نه معلوميري چه هغه پتې د خرمنې وه په کوم چه ملغلرې ټکوالي شوې وې. نو بيا هغه تپوس په دې باندي د غوښې گمان څنگه او کړو چه هغه ئى اوچت کړو او ويويرو؟ نو ددې جواب دادې چه صفا خبره ده چه کله ئى په سره خرمن باندي پرقيدونکى ملغلرې اوليدلې نو گمان ئى اوکړو چه چاقه تازه غوښه ده لهذا اوچت ئى کړو. (۴)

قوله: قالت: فوضعت، أو وقم منيا، فبرت به حديأة وهو ملقى، فحبت له فخطفته: دغې جينى دا پخپله کوز کړو يا هغه ددې نه پريوتلو، هلته يو تپوس تيريدو، او دغه پريوتلې هار ئى د غوښې ټکره گنرلو سره په هغې حمله اوکړه او ويويرو.

قوله: أو وقم، دا د راوى د شک بيان دې. په دواړو کارونو کښې يو واقع شوې دې. (۵)

قوله: حديأة: دا د حداة تصغير دې کوم چه د عنة په وزن باندي دې چه په اصل کښې حديئة وو د ياء ساکنه نه پس همزه ده. په دې وجه ئى همزه په ياء سره بدله کړه د ياء په ياء کښې ادغام اوکړې شو. بيا د ياء د فتحې اشباع کولو سره الف جوړکړې شو نو حديأة شو. دا معروف مرغى ده کوم چه د تپوس په نوم سره پيژندلې شى. (۶)

(۱) عمدة القارى: ۲۸۸/۴.

(۲) المحکم المحيط الأعظم لابن سیده، و ش ح: ۴۶۹/۳. النهاية فى غريب الحديث والأثر، و ش ح: ۱۸۷/۵. المصباح المنير فى غريب الشرح الكبير، و ش ح: ۶۶۰/۲. شرح الکرمانى: ۹۸/۴. داسې هار کوم چه بنځې د گردنې په شکل کښې د اوگې او تشې په مينځ کښې تړي. (سراج القارى: ۳۰/۳).

(۳) مختار الصحاح، س ي ر: ۱۵۹/۱. المصابيح المنير فى غريب الشرح الكبير، س ي ر: ۲۹۹/۱. تاج العروس، سير: ۱۱۷/۱۲. شرح الکرمانى: ۹۸/۴.

(۴) عمدة القارى: ۲۸۹/۴.

(۵) فتح البارى: ۶۹۱/۱. عمدة القارى: ۲۸۹/۴.

(۶) المخصص لابن سیده، الأدوات التى تعتمل فى القطع: ۱۶۳/۳. النهاية فى غريب الحديث والأثر، حد: ۳۴۹/۱.

فتح البارى: ۶۹۱/۱. عمدة القارى: ۲۸۹/۴.

قوله: وهو ملقن: دا جمله حالییه ده یعنی هغه هار پریوتلې پروت وو. (۱)

قوله: فخطفته: دا صیغه د سیم یسیم نه هم مستعمل ده او د ضرب یضرب نه هم، لیکن مشهور د سیم یسیم نه مستعمل ده. (۲)

قوله: قالت: فالتسوة فلم يجدوه، قالت: فاتهموني به، قالت: فطيقوا يفتشون، حتى فئتوا قبلها: هغه خلقو دغه اولتولو خو بیانی نه موندلو (دې) وینځې او وئیل چه د قبیلې والو په ما باندي (دغلا) الزام اولگولو (دغه) وینځې او وئیل چه بیانی زما تلاشی واخستله تردې چه زما د شرمگاه نی هم تلاشی واخستله.

قوله: فالتسوة: معنی داده چه د قبیلې والو دغه هار اولتولو او د هغې باره کبې نی د یو بل نه تپوسونه او کړل. (۳)

قوله: يفتشون: بعضې روایاتو کبې دا صیغه د یانې متکلم سره ده. یعنی یفتشون، د کوم چه اصل هم یفتشوننی دې. یو نون تخفیفاً حذف کړې شوې دې. (۴)

قوله: حتى فئتوا قبلها: ظاهره دا ده چه دا جمله د حضرت عائشه صدیقه رضی الله عنها ده کبې که دغه کلام هم د دې وینځې وې نو قبلی به وې نه چه قبلها، او که چرې داهم د وینځې کلام وی لکه چه بعضو لیکلی هم دی نوبیابه وئیلی شی چه دلته وینځې خبرې کولو کبې د خطاب نه د غیوبت طرف ته التفات کړې دې. (۵)

قوله: قالت: والله اني لقائمة معبر، إذمرت الحدیثة فالتفتة، قالت: فوقم بينهم، قالت: قلت: هذا الذي اتهموني به، زعمتم وأنا منه بريئة، وهو ذاهو،

زه هم هغه خلقو سره ووم چه هغه تپوس هلته تیریدو نو هغه هغه هار هلته راغوزار کړو، (دې) وینځې او وئیل چه هغه هار زمونږ مخې ته راپریوتلو، (دې) وینځې او وئیل چه ما هغه خلقو ته او وئیل چه دا دې هغه هار د کوم دغلا چه تاسو په ما باندي الزام لگولو حالانکه زه د هغې نه بری ووم. هغه هار دا دې (ستاسو په وړاندي) پروت دې.

قوله: زعمتم: د دې فعل مفعول محذوف دې. یعنی "زعمتم أن أخذته". (۶)

قوله: وأنا منه بريئة: دا جمله هم حالییه ده. د "منه" د "ه" ضمیر مرجع "الزعم" جوړیږي په کوم چه "زعمتم" دلالت کوی. یا د دې ضمیر مرجع "وشام" جوړیږي یعنی زه د دې هار د اخستلو نه یا د

(۱) عمدة القاری: ۲۸۹/۴.

(۲) التوضیح لابن الملقن: ۵۱۱/۵ عمدة القاری: ۲۸۹/۴.

(۳) عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۴) شرح الکرمانی: ۹۹/۴، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۵) شرح الکرمانی: ۹۹/۴، فتح الباری: ۶۹۱/۱، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۶) شرح الکرمانی: ۴/۹۹، عمدة القاری: ۴/۲۹۰.

پتولو نه بری یم. (۱)

قوله: وهوذا هو: په دې جمله کښې چه کوم دویم "هو" دې هغه به د "ذا" خبر شی او "ذا" مبتداء به د خپل خبر سره د اول "هو" دپاره خبر شی. یا به "هو" خبر ثانی شی د رومبې هو دپاره. ددې دپاره نور هم احتمالات ممکن دی. د ابونعیم په روایت کښې دا جمله "هاهوذا" ده. او د ابن حزم په روایت کښې دا جمله "وهوذا کباترون" ده. (۲)

قوله: قالت: فجاءت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فأسلمت، قالت عائشة: فكان لها خيلاء في المسجد أو حفش،

حضرت عائشه رضي الله عنها او فرمائیل چه (ددې واقعي نه پس) هغه وینځه حضور پاک له راغله او اسلام شی قبول کړو. نو هم په جمات کښې د هغې دپاره یوه خیمه یا وره شان جونگره جوړه کړې شوه.

قوله: الخيلاء: د ورثی یا وینستو یا دې نه علاوه نه جوړې شوې خیمې ته وائی. چه په دوو یا دريو ستنو باندې لگولې شی. (۳)

قوله: حفش: بکسره مهمله وسکون الفاء وبعدها شین معجبة داسې وړوکې کور د کوم چت چه د زمکې سره نيزدې وی یا د بدوانو وړې خیمې ته وائی. (۴)

قوله: فكانت تأتيني فتحدث عندي، قالت: فلا تجلس عندي مجلساً، إلا قالت: حضرت عائشه رضي الله عنها او فرمائیل چه هغه وینځه به ماله راتلله او ما سره به شی خبرې کولې، خو چه هغه به کله هم راتلله نو په خبرو کښې به هغې دا شعر خامخا وئیلو.

قوله: فكانت: ددې فاعل هغه وینځه ده او د کشمیهنی په روایت کښې ددې په ځای "فكان" دې. (۵)

قوله: فتحدث: دا د مضارع ضيغه ده د یو تاء په حذف سره، یعنی په اصل کښې "فتتحدث" وو. (۶)

ويوم الوشاح من أهاجيب ربتنا

ألا إنه من بلد الكفر أديان

(د کوم ترجمه چه دا ده چه) د هار د (ورکيدو) ورځ زما د رب د عجائباتو نه ده. واورثی د هغه (هار واقعي) ماته د کفرستان نه خلاصې را کړې دې.

(۱) عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۹۹/۴ فتح الباری: ۶۹۱/۱ عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۹۹/۴ فتح الباری: ۶۹۱/۱ عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۹۱/۱ عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۵) فتح الباری: ۶۹۱/۱.

(۶) شرح الکرمانی: ۹۹/۴ فتح الباری: ۶۹۱/۱ عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

قوله: أعاجيب: دَدِي واحدٌ "أعجوبة" دِي. بعضي نسخو كنبسي "تعاجيب" دِي. دكوم چه دَدِي لفظ نه واحد نه راخی. (۱)

قوله: قالت عائشة: فقلت لها: ما شأنك، لا تقعدين معي مقعدًا إلا قلت هذا؟ قالت: فحدثني بهذا الحديث: حضرت عائشه رضي الله عنها فرمائی چه ما هغی ته او وئیل چه آخر خبره خده چه كله هم ته ماسره كیني نودا خبره خامخا كوي؟ حضرت عائشه رضي الله عنها او فرمائیل چه بیا هغی ماته دا واقعه واؤروله.

قوله: قلت هذا: یعنی دا شعر ته وائی. (۲)

قوله: بهذا الحديث: مراد دادِي چه دا قصه. (۳)

دَ حَدِيثِ شَرِيفِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سَرِه مَطَابَقَت: دَ مَذْكُورِه حَدِيثِ شَرِيفِ دَ تَرْجَمَةِ الْبَابِ سَرِه مَطَابَقَت پِه دِي جَمَلِي "وَكَانَ لَهَا خِيَامٌ فِي السَّجْدِ" كَنبَسِي دِي خُكِه چِه خِيَمِه دَ شَيْبِي تِيرُولُو اَوْ دَ خُوبِ كُولُو دَ پَارِه لِكُولِي شِي. (۴)

دَ حَدِيثِ شَرِيفِ نِه مَسْتَفَادِ فَوَائِدِ اَوْ اِحْكَامِ: دَ مَذْكُورِه حَدِيثِ شَرِيفِ نِه دِيرِ اِحْكَامَاتِ مَسْتَنْبِطِ كِيرِي. پِه هَغِي كَنبَسِي بَعْضِي دَلْتِه ذَكَرْ كُولِي شِي:

① پِه مَسْلَمَانَانُو كَنبَسِي چِه دَ چَا خِه خَانِي نِه وِي دَ هَغِه دَ پَارِه پِه جَمَاتِ كَنبَسِي شَيْبِه تِيرُولُو اَوْ خَبْرِي اَتْرِي كُولِ جَائِزِ دِي. دا حَكْمِ دَ سَرِي دَ پَارِه هَمِ دِي اَوْ دَ بِنَخِي دَ پَارِه هَمِ دِي، شَرْطِ پِه كَنبَسِي دَا دِي چِه دَ فَتْنِي نِه مَحْفُوظِ وِي. (۵)

② دَ پُورْتِه ذَكَرْ شُوي مَقْصِدِ دَ حَاصِلُولُو دَ پَارِه پِه جَمَاتِ كَنبَسِي دَ سُورِي اَنْتِظَامِ كُولِ مَثَلًا خِيَمِه وَغَيْرِه لِكُولِ جَائِزِ دِي. (۶)

③ يُو بِنَارِ وَغَيْرِه دَ مَصِيبَتُونُو اَوْ مَشْكَلاتُو دَ وَجْهِ پَرِيخُودَلِ اَوْ دَ يُو دَاسِي بِنَارِ طَرَفِ تِه سَفَرِ كُولِ جَائِزِ دِي چَرْتِه چِه دَ هَغِه دَ پَارِه خَيْرِ اَوْ بِنِيْغَرِه مَتَوَقَّعِ وِي. (۷)

④ دَارِ الْكُفْرِ پَرِيخُودُو سَرِه دَارِ الْاِسْلَامِ طَرَفِ تِه هَجْرَتِ كُولِ هَمِ مَعْلُومِ شُو. (۸)

⑤ دَ مَظْلُومِ سَرِه اَمْدَادِ كُولِ هَمِ مَعْلُومِ مِيرِي كِه هَغِه مَظْلُومِ كَافِرِ وَلِي نِه وِي. پِه حَدِيثِ كَنبَسِي

(۱) التوضيح لابن الملتن: ۵۱۱/۵ فتح الباری: ۶۹۱/۱ عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۹۹/۴ عمدة القاری: ۲۹۱/۴.

(۳) شرح الکرمانی: ۹۹/۴ عمدة القاری: ۲۹۱/۴.

(۴) عمدة القاری: ۲۸۸/۴.

(۵) شرح ابن بطلال: ۹۰/۲، شرح الکرمانی: ۹۹/۴، التوضيح لابن الملتن: ۵۱۱/۵، فتح الباری: ۶۹۱/۱، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۶) شرح الکرمانی: ۹۹/۴، فتح الباری: ۶۹۱/۱، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۷) شرح ابن بطلال: ۹۰/۲، شرح الکرمانی: ۹۹/۴، التوضيح لابن الملتن: ۵۱۱/۵، فتح الباری: ۶۹۱/۱، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۸) فتح الباری: ۶۹۱/۱، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۹) فتح الباری: ۶۹۱/۱، عمدة القاری: ۲۹۰/۴.



د ذکر شوی قصی سیاق او سباق نه معلومیری چه هغه وینخه کافره وه. حضور پاک له دراتلو نه پس هغه مسلماننه شوی وه. (۱)

## ۲۵- بَابُ: نَوْمِ الرِّجَالِ فِي الْمَسْجِدِ

دا باب په جمات کښې د سرو د اوده کیدو باره کښې دي

د دې باب لاندې امام بخاری رحمته الله علیه د خپلې مدعا د ثابتولو دپاره دوه تعلیقاتونه او درې احادیث ذکر کړي دي.

د ترجمه الباب مقصد: د دې ترجمه الباب نه د امام بخاری رحمته الله علیه مقصود هم هغه دي کوم چه د باب سابق نه وو، چه په جمات کښې اوده کیدل جائز دي. البته د سړي او ښځې په جمات کښې د اوده کیدو جواز بیانولو دپاره د جدا جدا باب قائمولو وجه داده چه د ښځې په جمات کښې په اوده کیدو باندې اشکال زیات وو په نسبت د سړو. نو د دې جواز ئی مستقلاً په یو باب کښې بیان کړو. د سابقه باب لاندې ذکر کړې شوی حدیث کښې چونکه د یوې وینځې د اوده کیدو ذکر وو په دې وجه په سابقه باب کښې د واحد صیغه نوم المرأة ذکر کړې وو او دلته چونکه په خوروايتونو کښې د سرو د اوده کیدو ذکر ملاویری په دې وجه په دې ترجمه کښې د جمع صیغه نوم الرجال ذکر کړې شوه. دې نه علاوه د صحیح بخاری بعضی نسخو کښې د "نوم الرجل" ترجمه هم موجود ده. (۲)

امام بخاری رحمته الله علیه د دې وجه نه هم دا باب قائم کړې دي چه بعضی روایتونو کښې په جمات کښې د اوده کیدو ممانعت هم نقل دي. (۳) په دې وجه امام صاحب رحمته الله علیه د دغه روایاتو په مقابل کښې خپل رجحان د جواز والا روایات پیش کولو په ذریعه ښکاره کوی چه په جمات کښې اوده کیدل جائز دي.

(۱) فتح الباری: ۶۹۱/۱ عمدة القاری: ۲۹۰/۴.

(۲) عمدة القاری: ۲۹۱/۴.

(۳) عن عطاء قال قال رجل لابن عباس اني نمت في المسجد الحرام فاحتلمت، فقال: اما ان تتخذة ميثا او مقبلا لا، واما ان تنام تستريح او تنتظر حاجة فلا بأس. (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الصلاة، باب في النوم في المسجد، رقم الحديث: ۴۹۱۵، ۴۲۷/۱). عن عطاء و طاؤس ومجاهد أنهم كرهوا النوم في المسجد. (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الصلاة، باب في النوم في المسجد، رقم الحديث: ۴۹۱۶، ۴۲۷/۱). حدثنا وكيع عن أيمن بن نابل قال: رأني سعيد بن جبیر وأنا نائم في الحجر، فأيقظني وقال: مثلك ينام هاهنا. (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الصلاة، باب في النوم في المسجد، رقم الحديث: ۴۹۱۹، ۴۲۷/۱). عن عمرو الشيباني قال: رأيت ابن مسعود نفس في المسجد ليلا، فلا يدع سوادا في المسجد إلا أخرجته إلا رجلا يصلي. (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الصلاة، باب في النوم في المسجد، رقم الحديث: ۴۹۲۰، ۴۲۷/۱). عبدالرزاق عن يحيى بن العلاء عن حرام بن عثمان عن ابني جابر عن جابر بن عبدالله قال: أتانا رسول الله صلى الله عليه وسلم ونحن مضطجعون في مسجد، ففرضت بنا بقبيب كان في يده، وقال: قوموا! لا ترقدوا في المسجد. (المصنف لعبدالرزاق، كتاب الطهارة، باب: الوضوء في المسجد، رقم الحديث: ۱۶۵۵، ۴۲۲/۱).

رومی تعلیق: وَقَالَ أَبُو قَلَابَةَ، عَنْ أَنَسٍ: قَدِمَ رَهْطٌ مِنْ عُكْلٍ، عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَكَانُوا فِي الصُّفَةِ.  
[ر: ۱۶۲۱۹]

دَ تعلیق ترجمه: حضرت ابو قلابه د حضرت انس رضی اللہ عنہ نه نقل کولوسره بیان اوکرو چه د قبيله عکل خه خلق د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کنبی حاضر شو او په صغه کنبی ایسلا شو.

دَ تعلیق تخريج: دا تعلیق د قصة العزيميو جز دي. د کوم واقعده چه کتاب الطهارة کنبی نيره شوې ده. او هم دا تعلیق موصولاً امام بخاری رحمته اللہ علیہ کتاب الحدود، باب: لم یسق المرتدون المحاربون

حتى ماتوا، رقم الحديث: ۳۳۳۳ کنبی ذکر کړې دي. (۱)

دَ تعلیق رجال: د دې تعلیق په سند کنبی دوه راویان دي:

① ابو قلابه رضی اللہ عنہ: دا مشهور تابعی حضرت عبداللہ بن زید جرمی رضی اللہ عنہ دي. د دوی احوال کشف

الباری، کتاب الإیمان، باب: حلاوة الإیمان لاندې تیر شوی دي. (۲)

② انس رضی اللہ عنہ: دا مشهور او معروف صحابی رسول حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ دي. د دوی

احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: من الإیمان أن یحب لأخیه ما یحب لنفسه لاندې تیر شوی دي. (۳)

دَ تعلیق دَ ترجمة الباب سره مطابقت: د مذکورہ تعلیق دَ ترجمة الباب سره مطابقت داسې دي چه دغه راتلونکې قبيله په صغه کنبی ایساره کړې شوه نوچه کله د هغوی قیام هلته اوشو نو بشکاره خبره ده چه د هغوی اوده کیدل به هم هلته وو. اودا خبره متفق علیه ده چه صغه د جمات حصه وه. چه د تنبو (سائبان) لاندې جوړه کړې شوې وه. هم دغه خبره په ترجمة الباب کنبی ده چه په جمات کنبی د سرو اوده کیدل جائز دي.

دویم تعلیق: وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ: كَانَ أَصْحَابُ الصُّفَةِ الْفُقَرَاءُ. [ر: ۵۷۷]

دَ تعلیق ترجمه: حضرت عبدالرحمن بن ابی بکر رضی اللہ عنہ وانی چه صغه کنبی اوسیدونکی صحابه فقیران وو.

دَ تعلیق تخريج: مذکورہ تعلیق امام بخاری رحمته اللہ علیہ وړاندې کتاب موائیت الصلاة کنبی او کتاب ا

(۱) حدثنا موسى بن إسماعيل، عن وهيب، عن أيوب، عن أبي قلابه، عن أنس رضي الله عنه، قال: قدم رهط من عكْل على النبي صلى الله عليه وسلم، كانوا في الصفة، فاجتروا المدينة، فقالوا: يا رسول الله أئبينا رسلاً، فقال: ما أجلكم إلا أن تلحقوا بإهل رسول الله، فأتوها، فشرّبوا من ألبانها وأبوالها، حتى صحوا وسينوا وقتلوا الراعي واستاقوا الزود، فأتى النبي صلى الله عليه وسلم الصريخ، فبعث الطلب في آثارهم، فما ترجل النهار حتى أتى بهم، فأمر بمسامير فأحيت، فكحلّهم، وقطع أيديهم وأرجلهم وما حسّتهم، ثم ألقوا في العرة. يستقون فما سقوا حتى ماتوا، قال أبو قلابه: سرقوا وقتلوا وحاربوا الله ورسوله. (صحيح البخاري، كتاب الحدود، باب: لم يسق المرتدون المحاربون حتى ماتوا، رقم الحديث: ۶۸۰۴).

(۱) كشف الباری: ۲۶/۲.

(۲) كشف الباری: ۴/۲.

لسناقب، باب المعاملات کنبی موصولاً نقل کرې دې. (۱)  
د تعلیق رجال: د دې تعلیق په سند کنبی صرف یو راوی دې.

عبدالرحمن بن ابی بکر رضی اللہ عنہ: دا حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ خوئی حضرت عبدالرحمن رضی اللہ عنہ دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الحيض، باب: امتشاط المرأة عند غسلها من المحيض، لاندې تیر شوی دې. (۲)

صفه او اصحاب صفه: حضرت مولانا محمد ادریس کاندهلوی رحمۃ اللہ علیہ د صفه باره کنبی فرمائی چې د تحویل قبلې نه پس کله چې د مسجد نبوی مخ بیت الله شریف طرف ته شو نو د قبله اول طرف دیوال اودې سره متصل چې کوم خانی وو هغه د هغه فقیرانو او غریبانو د اوسیدو د پاره پریخودې شو د چاچه څه کور یا خانی نه وو. دغه خانی د صفه په نوم باندې مشهور وو.

صفه په اصل کنبی تنبو او د سوری والا خانی ته وائی. هغه کمزوری مسلمانان او شکر کونکی فقیران چې په خپل فقر باندې نه یوازې دا چې صبر کونکی وو بلکه د امیرانو او غنیانو نه زیات شاکر او خوشحال وو. کله چې به د احادیث قدسیه او کلمات نبویه د اوریدو په غرض د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دربار ته حاضریدل نو هم دلته به پراته وو. خلقو به دغه حضرات د اصحاب صفه په نوم سره یادول. لکه چې دا د هغه بشیر او نذیر او فقیر نبی خانقاه وه چا چې په زرگونو رجاء او رغبت فقرته د دنیا په بادشاهي باندې ترجیح ورکړه.

او اصحاب صفه د اریاب توکل او اصحاب تبتل یوه ډله وه چې شپه ورځ به د نفس د صفایي اود کتاب او حکمت تعلیم حاصلولو د پاره د حضور پاک په خدمت کنبی حاضر وو. نه د هغوی تجارت سره څه مطلب وو اونه ئی زمیندار ئی وغیره سره څه کار وو. دې حضراتو

(۱) عن عبدالرحمن بن ابی بکران اصحاب الصفه كانوا اناً فقراء، وأن النبي صلى الله عليه وسلم قال: من كان عنده طعام اثنین فليذهب بثالث، وإن اربع فخامس أو سادس، وأن ابابكر جاء بثلاثة، فانطلق النبي صلى الله عليه وسلم بعشرة؛ قال: فهو أنا وأبي وأمي، فلا أدري قال: وامراتي، وخادم، وبيننا وبين بيت أبي بكر. وإن ابابكر تعشى عند النبي صلى الله عليه وسلم، ثم لبث حيث صليت العشاء، ثم رجع فلبث حتى تعشى النبي صلى الله عليه وسلم، فجاها بعدما مضى من الليل ما شاء الله.

قالت له امرأته: وما حبسك عن أضيافك؟ أو قالت ضيفك، قال: أو ما عشيتيهم؟ قالت: أبوا حتى تجي، قد عرضوا فأبوا، قال: فذهبت أنا فاخترت، فقال: يا غنثراً فجدع وسب، وقال: كلوا لا هنيئاً، فقال: والله لا أطقمه أبداً، وآيم الله، ما كنا نأخذ من لقمة إلا ربا من أسفلها أكثر منها، قال: يعني حتى شبعوا، وصارت أكثر مما كانت قبل ذلك، فنظر إليها أبو بكر فإذا هي كما هي أو أكثر منها، فقال لامرأته: يا اخت بني فراس ما هذا؟ قالت: لا وقرة عيني، لهن الآن أكثر منها قبل ذلك بثلاث مرات، فأكل منها أبو بكر وقال: إنما كان ذلك من الشيطان، يعني بيمينه، ثم أكل منها لقمة، ثم حملها إلى النبي صلى الله عليه وسلم فأصبحت عنده، وكان بيننا وبين قوم عقد، فمضى الأجل، ففرقنا اثنا عشر رجلاً مع كل رجل منهم أناس الله أعلم كم مع كل رجل، فأكلوا منها أجمعون. أو كما قال.

(صحيح البخاري، كتاب: مواقيت الصلاة، باب السمر مع الضيف والأهل، رقم الحديث: ۶۰۲).

(۲) كشف الباری، كتاب الحيض، باب: امتشاط المرأة عند غسلها من المحيض.

خپلې سترگې د حضور پاک د دیدار چه د نور نه دک وو د پاره او غورونه د حضور پاک د کلمات قدسیه د اوریدو د پاره او بدنونه د حضور پاک د صحبت او ملگرتیا د پاره وقف کړې وو.

وان حدثوا عنها فكل مسامع وكل إذا حدثتهم السن تتلو

حضرت کاندهلوی رحمته الله نور هم ډیر ښه تفصیل بیان کړې دې کوم چه کتلو سره تعلق لری. (۱)

(۱) سیرت مصطفیٰ للکاندهلوی: ۱/ ۴۵۲-۴۴۴. د جامعہ علوم اسلامیہ علامہ بنوری ټاؤن، کراچی نه جاری ماہنامہ "بینات" کښې د دغه صفه او اصحاب صفه سره متعلق یو ښکلې تحریر د نظر نه تیر شوی وو دهغې څه حصه د عام فائدي په غرض دلته نقل کولی شی: مدینه طیبه کښې د مسجد نبوی علی صاحبها الصلوٰة والسلام شمال مشرقی طرف ته یو د تنبو په شکل سوری کښې یو خوبزرگانو تعلیم او تربیت حاصلولو. دغه بزرگانو خپل ژوند د علم د حاصلولو د پاره وقف کړې وو. په دوی کښې یو څو حضرات داسې وو چه کله کله به ئې د ورځې په څه حصه کښې د څنگل نه لرگي راوړل او خرڅول به ئې او په هغې باندې به ئې وخت تیرولو. د هغوی د احوالو او تعداد باره کښې قدما و محدثینو مستقل کتابونه لیکلې دی. په کوم کښې چه امام حدیث ابونعیم اصبهانی او امام حدیث ابو عبدالله حاکم او ابن الاعرابی او سلمی وغیره رحمهم الله نومونه د ذکر قابل دی. د دوی تعداد په مختلفو اوقاتو کښې ټول یوځای کولو سره څلور سوو ته رسیږي. هسې خود رسول الله صلی الله علیه و آله ټول ژوند مبارک هم تعلیمی وو او په امت محمدیه کښې صحابه کرام رضی الله عنهم د ټولو نه رومبې متعلمین او شاگردان وو. لیکن هم د دغه علم د حصول سره د اکثر حضراتو د تجارت او د زراعت وغیره مشاغل هم وو. د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه غوندې د اہم شخصیت یو زمانه داسې تیره شوې ده چه دمدينې نه بهر عوالمی مدینه کښې د هغوی قیام وو اود مسافت د لږوالي نه علاوه د معاشی مشغولیت د وجې روزانه د حضور پاک دربار کښې د حاضرئې نه معذور وو. لیکن هغوی خپل یو انصاری گاونډی (غالباً د هغه نوم اوس بن خولی دی) سره دا انتظام کړې وو او نيمرئې مقرز کړې وو چه یوه ورځ دې هغه د نبی صلی الله علیه و آله په دربار کښې حاضرې کوی او کومه وحی د نبوت (د قرآن کریم آیت) چه نوې نازل شوې وی یا څه اہم حدیث حضور پاک بیان کړې هغه د شپې عمر فاروق رضی الله عنه ته اوروی. او یوه ورځ به حضرت عمر فاروق رضی الله عنه دا خدمت پوره کوی د کوم تفصیل چه صحیح بخاری کښې موجود دی.

الغرض هغه صحابه کرام رضی الله عنهم کومو چه روزانه حاضرې نه شوه لگولې هغوی به هم د علم د حاصلولو د پاره پوره اهتمام او انتظام کولو لیکن څه حضرات داسې هم وو د چا چه شپه ورځ ژوند هم د دغه علم د حاصلولو د پاره وقف وو. د بال بیچ نه ازاد، نه د تجارت سره غرض او نه د زراعت سره، مطلب چه نه ئې د خپل معاش څه فکر وو اونه د بال بیچ. دا هم هغه د اصحاب صفه بزرگان دی د چا شمیر چه به په یو یو وخت کښې اویا اویا پورې هم رسیدلو. هم د دغه بزرگانو نه اویا شهیدان د بیرمعونه دی کوم چه د کافرانو یو څو قبیلو بنی لحيان، ورغل او ذکوان وغیره د دین د تعلیم او د اسلام د تبلیغ په غرض سره د رسول الله صلی الله علیه و آله نه په توگه د معلم او مبلغ غوښتو د پاره راغلی وو او حضور پاک دغه قاریان د دې دیني خدمت د پاره لیرلې وو. دغه بدگمانه قبائلو هغوی بوتلل او شهیدان کړې ئې وو. د کوم د وجې چه رسول الله صلی الله علیه و آله ته ډیر زیات خفگان رسیدلې وو او د سجر په مونځ کښې حضور پاک دعاء فنوت نازل وئیل شروع کړې وو. هم د دغه بزرگانو نه د دې شهادت د واقعي نه پس اویا داسې صحابه کرام رضی الله عنهم هم وو د چا متعلق چه د حضرت ابوهریره رضی الله عنه دا بیان صحیح بخاری کښې د عبرت او بصیرت قابل دی: ((رایت سبعین من اصحاب الصفه، ما منهم رجل علیه رداء، إما ازار وإما کساء، قد ربطوا فی أعناقهم، فمنها ما يبلغ نصف الساقین، ومنها ما يبلغ الكعبین، فيجمعه بيده كراهية أن تعرى عورته)). (صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب: نوم الرجال فی المسجد).

ترجمه: ما او یا داسی اصحاب صفة لیدلی دی په کوم کښې چه چا سره (خان د پاسه د اغوستلو دپاره) خادر نه وو، یا هغوی سره صرف لنگ و و یا (د بدن پتولو دپاره) یوه کمبله کومه چه په هغوی د سټ نه (لاندې) تړلې وه. خنې کمبله خو به د گیتو پورې رسیدله او ختی به د پنډو پورې رسیدله (د رکوع سجدي په وخت) به ئی دا په لاس سره نیوله چه د (بدن) پټه حصه ښکاره نه شی.

هم ددغه بزرگانو نه پخپله حضرت ابوهریره رضی الله عنه هم و و په چا به چه بعضی وخت د اولگې نه د بې هوشی دورې راتلې او په مسجد نبوی کښې د منبر نبوی او د رسول الله صلی الله علیه و آله د کور په مینځ کښې روضه کښې به بې هوشه پروت و و او د عامو حضراتو به دا گمان کیدو چه په ده باندې دمرگی دوره راغلي ده حالانکه د سختی اولرې او د فاقو د زیاتوالی نه به په هغه دا قسم حالات راتلل. پخپله هم د هغوی د خلی نه په صحیح بخاری کښې دا ټول تفصیل ذکر دي. آخر ددی دومره سختو او د طالبین ددی انداز چه کوم حیرانونکې نتیجې کیدل پکار و و هغه د امت مخې ته راغلي او پخپله هم د هغوی په ژبه صحیح بخاری کښې روایت دي: «صحب رسول الله صلی الله علیه وسلم ثلاث سنين فلم اکن فی سنی احرص علی ان اعی الحدیث منی».

ترجمه: زه درې کاله (هروخت) رسول الله صلی الله علیه و آله سره پاتې شوم ما په خپل عمر کښې د خپل خان نه زیات د احادیثو یادونکې حرص (دیرشوقی) بل څوک نه دي لیدلی.

په دومره مختصر زمانه کښې چه کوم روایتونه د احادیثو د کتابونو مدونینو ته د هغوی نه رسیدلی دی د هغې شمیر په زرگونو دي، نه ده معلومه چه نور به څومره روایتونه وی چه دمدونین کتب حدیث پورې به د هغوی د معیار مطابق نه وی رسیدلی کوم چه یقینا د دغه پاک صحبت او په دي علم کښې د فناه کیدو د جذبی برکات دی. چنانچه پوره اته سوا صحابو او تابعینو ته د هغوی نه د شاگردنی شرف حاصل شو او ددین دیره لویه حصه ځانله هم ددوی د روایتونو نه امت ته اورسیدله. هم دغه وجه ده چه د یورپ مستشرقین او د حدیث منکرین مستغربین او د دوی نه علاوه د اسلام د دښمنانو ټول زور په حضرت ابوهریره رضی الله عنه باندې طعن تشنیع او عیبونه لگولو باندې خرچ کیری. د وینا مطلب دادې چه آخر هغه څه اسباب و و د کوم د وجې چه دغه اصحاب صفة دا فقر او افلاس برداشت کړې شو؟ او هغوی ئی د معاش د فکر طرف ته ولې متوجه نه کړې شو؟ ولې هغوی د زراعت و صنعت او حرفت طرف ته رغبت ور نه کړې شو؟ او ولې د هغوی د خیتې دمرولو او د هغوی د وخت تیرولو دپاره د زکوة او صدقات انتظام کولې شو؟ او کله چه به د دیرې مجبورنی حالت راتلو او د اولگې د پاسه به اولگه لگیدله نو رسول الله صلی الله علیه و آله به یو یو صحابی ته د صفة والونه یویو کس د خوراک ورکولو دپاره خپلو کورونو ته د بوتلو ارشاد فرمائیلو او پخپله به ئی هم لس لس کسان خان سره بوتلل. ځکه چه د أزواج مطهرات تعداد ۹ و و اولس حضور پاک و و. په دي لحاظ سره لکه چه طعام الواحد یکفی الاثنین په اصول باندې چه کوم حدیث مرفوع ذکر دي پخپله د پیغمبر صلی الله علیه و آله په کورونو کښې په هغې عمل و و. نو دا خو احادیث نبویه علی صاحبها الصلوة والسلام شواهد او بینات دی. اوس لړ شان د قرآن کریم ارشاد هم واؤنی: (الَّذِينَ أَحْسَنُوا لِي سُبُلَ اللَّهِ لَا يَسْتَلُونَ النَّاسَ الْحَائِلَ) (البقره).

ترجمه: هغه حاجت مند (ستاسو د امداد او تعاون مستحق دي) چه د الله په لار کښې (خوارنی او محنت نه) منع کړې شوی دی. هغه (د رزق حاصلولو دپاره) په مخ د زمکه کښې (چرته) تلې نه شی. ناخبره سرې خود هغوی (سوال کولو نه) د بچ کیدو د وجې په هغوی باندې د مالدارو گمان کوی (لیکن) تاسود هغوی فقر او افلاس د هغوی د مخ د چهرې نه پیژندلې شی هغوی د خلقو نه سوال نه کوی (چه ورپسې اولگې او اصرار او کړی).

د مفسرینو اتفاق دي چه دا آیت مبارک هم ددغه بزرگانو متعلق نازل شوې دي د چا د ژوند مقصد چه صرف تعلیم او جهاد و و. په یخو دماغو او زړه سره د غور کولو مقام دي چه الله تعالی او د هغه رسول صلی الله علیه و آله نه یوازی دا صورت حال قائم او ساتلو بلکه د هغوی تعریف او صفت ئی په وحی متلو.....

د تعلیق د ترجمه الباب سره مطابقت: د حضرت عبدالرحمن بن ابی بکر رضی الله عنه د قول مطابق په صفة کنبی اوسیدونکی صحابه فقیران وو یعنی هغوی سره خپل هیڅ د اوسیدو ځانی وغیره نه وو چه هلته هغوی شپه تیره کړی چنانچه هغوی به هم هلته (صفه) د شپې اوده کیدل. اوهم دغه په ترجمه کنبی ذکر دی.

حدیث باب (رومی حدیث) [حدیث نمبر ۴۲۹]

۳۳۰- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ (۱) أَنَّهُ كَانَ يَنَامُ وَهُوَ شَابٌّ أَغْزَبُ لِأَهْلِ لَهُ فِي مَنْجِدِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - .

د حدیث ترجمه: د حضرت نافع رضی الله عنه بیان دی چه حضرت عبدالله بن عمر رضی الله عنهما ماته او وئیل چه هغه به په مسجد نبوی کنبی اوده کیدلو په داسې حال کنبی چه هغه ځوان وو، ځلمی وو کور وغیره ئی نه وو.

تراجم رجال: د مذکور حدیث مبارک په سند کنبی ټول پنځه راویان دی:

- ① مسدد رضی الله عنه: دا مسدد بن مسرهد الاسدی البصری رضی الله عنه دی. د دوی مختصر احوال کشف الباری کتاب الإیمان باب: من الإیمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه او تفصیلی احوال کتاب العلم، باب: من خص بالعلم قوما دون قومه كراهية أن لا يفهموا كنبی تیر شوی دی. (۲)
- ② يحيى رضی الله عنه: دا يحيى بن سعيد بن فروخ القطان تميمی رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری کتاب الإیمان باب: من الإیمان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه لاندې تیر شوی دی. (۳)

..... کنبی هم بیان کړو. آیا دا واضح او صفا دلیل ددې خبرې نه دي چه په امت کنبی څه کسان داسې کیدل پکار دی د چا پاک ژوند چه په مکمله توگه د دین د علم د پاره وقف شوي وی. ددې مقدس شغل نه علاوه د هغوی بل څه شغل نه وی. اوس پاتې شو دا سوال چه هغوی به خوراک څښاک د کوم ځانی نه کوي او د معاش ضرورتونه به څنگه پوره کوي؟ نود قرآن حکیم په تعلیماتو او د رسول الله صلی الله علیه و آله په تعامل کنبی ددې واضح جواب صرف هم دغه ملاویری چه د دوی د ضرورت پوره والی او تپوس پښتنه په امت محمدیه باندې فرض ده چه هغوی به په خپل صدقات، خیرات او زکوٰة سره د هغوی خدمت کوي. په دې وجه په علم دین کنبی مهارت او خصوصیت فرض کفایه دي فرض عین نه دي اودا د هر سړی د وس کار نه دي. (ماخو از ماهنامه بیئات، ذوالحجه ۱۴۲۸ هـ بمطابق جنوری ۲۰۰۸ ع.)

(۱) أخرجه البخاری أيضا فی التهجد، باب: فضل قيام الليل، رقم الحديث: ۱۱۲۱، وباب: من تعارض من الليل فصولی، رقم الحديث: ۱۱۵۶، وفي فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، باب: مناقب عبدالله بن عمر، رقم الحديث: ۳۷۳۸، ۳۷۴۰، وفي التعبير، باب: الاستبرق ودخول الجنة فی المنام، رقم الحديث: ۷۰۱۵، وباب: الأمن وذهاب الروح فی المنام، رقم الحديث: ۷۰۲۸، وباب: الأخذ على اليمين فی النوم، رقم الحديث: ۷۰۳۰، ومسلم فی صحيحه فی فضائل الصحابة، باب: من فضائل عبدالله بن عمر رضی الله عنهما، رقم الحديث: ۲۴۷۹، والترمذی فی جامعه، فی الصلاة، باب: ماجاء فی النوم فی المسجد، رقم الحديث: ۳۲۱، والنسائی فی سننه، فی المساجد، باب: النوم فی المسجد، رقم الحديث: ۷۲۳، وفي جامع الأصول، حرف الميم، الكتاب الأول: فی المواعظ والرقائق، الكتاب السادس: فی المساجد وما يتعلق به أولا وآخرا، رقم الحديث: ۸۷۵۵، ۲۰۶/۱۱.

(۲) كشف الباری: ۲/۲، ۵۸۸/۴.

(۳) كشف الباری: ۲/۲.

④ عبید اللہ رضی اللہ عنہ: دا عبید اللہ بن عمر بن حفص بن عبد اللہ بن عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ دی دوی

احوال كشف الباری كتاب الوضوء باب: التبذلي البيوت لاندې تير شوی دی. (١)

⑤ نافع رضی اللہ عنہ: دا مولی د عبد اللہ بن عمر القرشی رضی اللہ عنہ دی دوی احوال كشف الباری، كتاب

العلم، باب: ذكر العلم والفتيا في المسجد لاندې تير شوی دی. (٢)

⑥ ابن عمر رضی اللہ عنہما: دا حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ عنہما دی دوی احوال كشف الباری، كتاب الإيمان،

باب: الإيمان وقول النبي صلى الله عليه وسلم: بني الإسلام على خمس كنبې تير شوی دی. (٣)

د حديث شريف شرح:

قوله: وهو شاب: دا جمله اسميه ده كومه چه د "ينام" فعل د ضمير نه حال واقع كيږي. شاب

هغه سړی ته وائي د چا عمر چه د دير شو نه خلويښتو كالو پورې وي، ددې جمع "شبان"

استعمال كيږي. مؤنث شابه او ددې جمع شواب استعمال كيږي. (٤)

د انساني عمر مختلف ارتقائي ادوار: زمونږ د اردو ژبې سينه ډيره تنگه ده ليكن د عربي ژبې

سينه ډيره كولاؤ ده. د انساني ژوندون چه څومره مراحل دي د هغې ټولو ډپاره په عربي ژبه

كښې جدا جدا نومونه متعين دي. مثلاً تركومي پورې چه بچې د مور په خيټه كښې وي

هغې ته "جنين" وائي، كله چه پيدا شي هغې ته "وليد" وائي، كله چه د اووه ورځو شي هغې

ته "صديغ" وائي، بيا چه تركومي پورې پيښي ځكي هغې ته "فطيم" وائي، بيا چه كله كلك

خوراك كول شروع كړي نو هغې ته "جحوش" وائي. بيا دغه شان مخكښې تلو سره هغه

"مترعرع"، "ناشع"، "يافع"، "مراهق"، "حردر او غلام" سره ياد كيږي. بيا دې "فتي" او "شارع" شي. بيا

"مجتمع" شي. بيا "شاب" او دې نه پس په آخر كښې ورته "كهل" وئيلي كيږي.

ائمة اللغات ددې ټولو نومونو تفصيلات خپلو كتابونو كښې جمع كړي دي. (٥)

(١) كشف الباری كتاب الاصواء باب: التبرز في البيوت، ص: ٣٤٠.

(٢) كشف الباری: ٥٦١/٤.

(٣) كشف الباری: ١/٦٣٧.

(٤) المحكم والمحيط الأعظم، الشين والباء: ٢٣٦/٧. مختار الصحاح، شبب: ١٦٠/١، المصباح المنير في غريب

الشرح الكبير، ش ب ب: ٣٠٢/١.

(٥) الفصل الأول: في ترتيب سن الغلام عن أبي عمرو عن أبي العباس عن ابن الأعرابي، يقال للصبي: إذا ولد

"رضيع وطفل" ثم: "فطيم" ثم: "دارج" ثم: "حفر" ثم: "يافع" ثم: "شدخ" ثم: "مطبخ" ثم: "كوكب".

الفصل الثاني: "أشفي فنه في ترتيب أحواله وتنقل السن به إلى أن يتناهي شبابه".

عن الأئمة المذكورين "ما دام في الرحم فهو جنين. فإذا ولد فهو وليد. وما دام لم يستتم سبعة أيام فهو صديغ.

لأنه لا يشتد صدغه إلى تمام السبعة. ثم ما دام يرضع فهو "رضيع". ثم إذا قطع عنه اللبن فهو "فطيم". ثم إذا غلظ

وذهبت عنه ترارة الرضاع فهو "جحوش".....

قوله: أعزب: دا صفت دې د شاب، د آبی ذر په روایت کښې د عزب لفظ دې، بغير د الف د او رجل عزب داسې سړی ته وئیلی شی چه خلصې وی، د چا چه بنخه نه وی. نصره ینصره نه د دې استعمال کیرې. عازب اسم فاعل او د دې جمع عواذب استعمالیرې. کوم سړې چه د نکاح ترک کونکې وی د هغه د پاره په عربی ژبه کښې د تعزب الرجل جمله استعمالیرې. او د چا د (ترک نکاح) زمانه چه ډیره اوږده شی تردې چه د هغه په نکاح کښې رغبت ختم شی هغه ته "العزابة" وائی. (۱)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته فرمائی چه ناواده کړې خوان سړی ته د احتلام اندیښنه زیاته وی. د دې باوجود به حضرت عبد الله بن عمر رضی الله عنهما په جمات کښې اوده کیدو او ظاهره خبرد ده چه حضور پاک ته به د دې خبر هم وو. بیا هم حضور پاک هغه منع نه کړو نو په دې سره په جمات کښې د اوده کیدو جواز معلومیرې او هم دغه د ترجمه الباب مقصد دې. (۱)

د العلماء العزابة تعارف: علماء او فقهاء داسې ډیر تیر شوی دی چاچه د خپل علمی او فقهی مصروفیاتو د وجې واده نه دې کړې. د داسې علماؤ تفصیلات شیخ عبد الفتاح ابو غده رحمته په خپل کتاب کښې جمع کړی دی. د کوم نوم چه العلماء العزابة دې هغه هم د

..... عن الأصمعي، وأتشدُّ لِهَذَا (من الوافر):

قَتَلْنَا مَخْلَدًا وَابْنِي حِرَاقَ      وَآخَرَ بَحْرًا قَوْقَ الْقَطِيمِ

قال الأزهري: كأنه مأخوذ من "الجحش" الذي هو ولد الحمار، ثم هو إذا ذب ونما فهو "دارج". فإذا بلغ طوله حنة أشبار فهو "خماسي". فإذا سقطت روضعه فهو "مشغور". عن أبي زيد، فإذا نبتت أسنانه بعد السقوط فهو "مفرج بالثاء والياء".

عن أبي عمرو، فإذا كاد يجاوز العشر السنين أو جاوزها فهو "مترعرع وناشئ". فإذا كاد يبلغ الحلم أو بلغه فهو "يانع ومراهق". فإذا احتلم واجتمعت قوته فهو حَزْرَرٌ وَحَزْرُورٌ، واسمه نى جميع هذه الأحوال التي ذكرنا "غلام". فإذا خضر شاربه وأخذ عذاره يبييل قيل: بَقَلَ وجهه. فإذا سار ذاقته فهو "نتى" وشارخ. فإذا اجتمعت لعينه وبلغ غاية شبابه فهو "مُجْتَمِع". ثم مادام بين الثلاثين والأربعين فهو "شاب". ثم هو "كهل" إلى أن يستوفى السنين. (فقه اللغة للشعالبي، الباب الرابع عشر في أسنان الناس والدواب وتقل الأحوال بهما وذكر ما يتصل بهما وينضاف إليهما: ۶۷/۱). په اردو ژبه کښې د "صبي" ترجمه بچی سره کولې شی. په عربی ژبه کښې د عمر مختلف مرحلو د پاره جدا جدا الفاظ وئیلی کیرې. ماشوم چه ترکومي پورې د مور په خيته کښې وی غفې ته "جنين" وائی. د پیدا کیدو نه تر بلوغ پورې "صبي" د بلوغ نه پس ۱۹ کالو پورې "غلام"، دې نه پس ۲۴ کالو پورې "شباب" بیا د ۵۱ کالو پورې "کهل" او دې نه پس آخری عمر پورې "شيخ". فقهاء گرامو په دې تعبیر کښې څه قدرې فرق کړې دي چه د پیدائش نه تر بلوغ پورې صبي او غلام، د بالغ کیدو نه پس ۲۰ کالو پورې فتی او شاب، ۵۰ کالو پورې کهل او د ۵۰ کالونه خوا باندي د شيخ اطلاق کیرې. (قاموس الفقه، صبي: ۲۱۲/۴).

(۱) التحکم والمحبط الأعظم، ع زب: ۵۳۰/۱. غريب الحديث للجوزي، باب العين مع الزاء: ۹۱/۲. النهاية في

غريب الحديث والأثر، ع زب: ۲۲۸/۳. فتح الباری: ۶۹۳/۱.

(۱) سراج القاری: ۳۲/۳.



کتلو خیز دی. (۱)

قوله: لا اهل له: په دې جمله کښې د "له" ضمير مرجع د حضرت ابن عمر رضي الله عنهما ذات دي. دلته يو سوال پيدا کيږي چه عرب يا عازب هم هغه سړي ته وئيلي شي د کوم چه بچي نه وي، د چا چه ښځه نه وي. بيا چه کله د شاب صفت اعرب استعمال شوې وو نو بيا د لا اهل له د ذکر کولو څه وجه ده؟ په ظاهره خوددې څه فائده نشته دي.

نوددې جواب دادې چه دا جمله د تاکيد په توگه ذکر کړې شوې ده. يا د تعميم په توگه ذکر کړې شوې ده. ځکه چه د اهل لفظ د زوج په نسبت عام دي. يعنى د لا اهل له مطلب دادې چه د چا ښځه نه وي اودغه شان د کومې ښځې چه خاوند نه وي دهغې د پاره هم لا اهل لها استعمال کړي. (۲)

قوله: في مسجد: دا جار مجرور به ما قبل کښې د ينام سره متعلق وي. (۳)

د حديث مبارك د ترجمه الباب سره مطابقت: د مذکوره حديث شريف د ترجمه الباب سره مطابقت بالکل ښکاره دي.

د حديث شريف نه مستفاد امور او ادا: د مذکوره حديث شريف نه معلوم کيږي چه د مسافر نه علاوه د نور کسانو هم د ضرورت په وخت په جمات کښې اوده کيدل جائز دي. پاتې شوه دا حتلام انديښنه نوددې د وجې هم د اوده کيدو ممانعت نشته دي. البته ددې نه احتياطي تدابير اختيارول هم لازم دي.

په جمات کښې د اوده کيدو باريه کښې د ائمه کرامو مذهب: جمات کښې د يو کس د اوده کيدو باريه کښې د فقهاؤ کرامو مختلف اقوال دي. کوم چه دلته نقل کولې شي:

د احنافو مسلک: جمات کښې اوده کيدل د احنافو په نيز مکروه دي. البته مسافر او معتكف د پاره څه حرج نشته دي. (۴)

د مالکيو مسلک: د صحراء په جمات کښې د يوميلمه قيام کول جائز دي. هم دغه حکم د وړوکی کلی د جمات حکم دي. د ښار په لوتی جمات کښې ميلمه ايسارول جائز نه دي. او داسې سړي د چا چه کور وغيره نه وي بال بچ ئی نه وي يا وي ليکن د شپې د څه د وجې هغې ته رسيدل ممکن نه وي نو د داسې کسانو د پاره شپه په جمات کښې تيروول جائز دي. دارنگ د قيلولې د پاره د ورځې په جمات کښې سملاستل د هر چا د پاره صحيح دي. دي نه علاوه

(۱) العلماء العزاب الذين آثرو العلم على الزواج، د شيخ عبدالفتاح ابو غده رحمته الله دا کتاب د حلب مکتب المطبوعات الاسلاميه نه چهاپ شوې دي. ۱۵۶ صفحاتو باندي مشتمل دي.  
(۲) فتح الباری: ۶۹۳/۱ عمده القاری: ۲۹۲/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۹۳/۱ عمده القاری: ۲۹۲/۴ - ۲۹۳.

(۴) البسوط للسرخسی، ما يحدث في المسجد: ۲۵/۲۷. البحر الرائق، کتاب الصوم، باب الاعتكاف، اعتكاف المرأة: ۳۲۷/۲. فتح القدير، کتاب الصيام، باب الاعتكاف: ۳۹۸/۲.

دَمَعْتَكْفِ دِپَارِه خُو پِه جَمَات كَنْبِي خَوْرَاك خُنْسَاك كَوْل پِه وَجِه دَ ضَرُورَت مَطْلَقَا جَائِز دِي. (١)  
 دَشَوَافِعُو اَوْ حَنَابِلُو مُسَلِك: شَوَافِعُو (٢) اَوْ حَنَابِلُه (٣) پِه نِيَز جَمَات كَنْبِي اَوْدِه كِيْدَل مَطْلَقَا جَائِز دِي.  
 دَ تَبْلِيغِي جَمَاعَتِ وَالْوِ پِه جَمَات كَنْبِي اَوْدِه كِيْدَل: پِه مَوْجُوْدِه دُور كَنْبِي دَ دِيْن دَ مَحْنَتِ اَوْ  
 تَبْلِيغِ دَ پَارِه دَ مَسْلَمَانَانُو جَمَاعَتُونِه اَوْخِي. دَدُوِي قِيَام پِه جَمَاتُونُو كَنْبِي وَي نُو بَغِيْر دَ خَه شَك  
 اَوْ شَبْهِي نِه دَدُوِي قِيَام اَوْ طَعَام پِه جَمَات كَنْبِي كَوْل دِي كَنْبِي هِيْخْ شَك نَشْتِه چِه صَحِيْح  
 دِي. يُو خُو پِه دِي وَجِه چِه هَعُوِي اَكْثَر مَسَافِرُو وَي دُوِيْم پِه دِي وَجِه هَم چِه هَعُوِي پِه  
 جَمَاتُونُو كَنْبِي دَ اَعْتِكَافِ پِه نِيْت سَرِه اَوْ سِيْرِي. دَرِيْمِه خَبِرِه دَا چِه وَتُونُكِي جَمَاعَتُونُو تِه پِه  
 دِيْر اَهْتِمَام سَرِه پِه هِدَايَاتُو كَنْبِي پِه جَمَاتُونُو كَنْبِي دَ قِيَامِ اَدَابِ خُوْدَلِي كِيْرِي دَ كَوْم پِه وَجِه  
 چِه پِه جَمَاتُونُو كَنْبِي اِيْسَارِيْدَل اَوْ كَار كَوْل بِالْكَلِّ صَحِيْح دِي.

اَوْ نَنْ صَبَا خُو يُوِه بَلَه نَبِه فُضَا قَائِمِيْرِي چِه پِه جَمَاتُونُو كَنْبِي دَ جَمَاعَتِ وَالْوِ دَ اَنْتِظَامِ اَوْ طَعَامِ  
 وَغِيْرِه دَ پَارِه جَدَا كَمْرِه جُوْرُوْلِي شِي. دَا نُوْر هَم نَبِه دَسْتُوْر دِي دَا عَام كَوْل پِكَار دِي اَوْ دَ  
 دَاسِي خَانِي پِه مَوْجُوْدُكِي كَنْبِي هَم دَغِه اَسْتِعْمَالُوْلِ پِكَار دِي. بَغِيْر دَ ضَرُورَتِ نِه پِه جَمَاتِ  
 كَنْبِي دَ خَوْرَاك خُنْسَاك نِه اِحْتِيَاطِ كَوْل پِكَار دِي. اَوْ كِه دَاسِي خَه كُوْتِه يَا دَ جَمَاتِ نِه بَهْرِ خَانِي  
 نِه وَي نُو بِيَا دَ جَمَاتِ دَ اَدَابُو خِيَالِ سَاتَلُو سَرِه دَ اَعْتِكَافِ پِه نِيْت سَرِه دَ خَوْرَاك خُنْسَاك اَوْ دَ  
 اَوْدِه كِيْدُو اَجَازَتِ دِي. (٤)

دَ دِيْنِي مَدَارِسُو دَ طَالِبَانُو پِه جَمَاتِ كَنْبِي اَوْدِه كِيْدَل: زَمُوْنُوْر پِه دِيْنِي مَدَارِسُو كَنْبِي هَم پِه دِيْرُو  
 خَايُونُو كَنْبِي كَتَلِي شِي چِه بَعْضِي وَخْتِ دَ طَالِبَانُو دَ اَوْ سِيْدُو بِنْدُو بَسْتِ پِه جَمَاتِ كَنْبِي كِرِي  
 شُوِي وَي. نُوْدَدِي حَكْمِ هَم دَغِه دِي چِه كِه چِرِي دَ هَعُوِي دَ پَارِه دَ جَمَاتِ نِه بَهْرِ دَ قِيَامِ بَلِ خَه

(١) التاج والإكليل لمختصر خليل. كتاب إحياء الموات. باب: المنافع المشتركة في البقاع كالشوارع والمساجد: ١٦٤/٧ شرح الكبير للشيخ الدردير وحاشية الدررقي. باب: موات الأرض وإحياءها: ٧٠/٤.

(٢) الأم للشافعي. جماع التيمم للمقيم والمسافر. باب: ما يوصل بالرجل والمرأة: ٧١/١. المجموع شرح المذهب. باب: الإحداث التي تنقض الوضوء. فصل: في المساجد وأحكامها: ١٧٤/٢. إعلام المساجد بأحكام المساجد. الباب الرابع فيما يتعلق بساتر المساجد: ٣٠٦/١. حاشية الورقة السابقة.

(٣) المسائل الفقهية من كتاب الروايتين والوجهين. كتاب الصلاة. مسائل في السهو والسجود له. اتخاذ المسجد ميّتا ومقيلا: ١٤٨/١.

(٤) قال العلامة الحصكفي رحمه الله تعالى: وأكل ونوم المعتكف وغريب إلخ. وقال العلامة ابن عابدين رحمه الله تعالى: (قوله: وأكل ونوم) وإذا أراد ذلك ينبغي أن ينوي الاعتكاف. فيدخل ويذكر الله تعالى بقدر مانوي، ويصلي، ثم يفعل ما شاء. فتاوى هندية. (الدرالمختار مع ردالمحتار. كتاب الصلاة. مطلب: في الغرس في المسجد: ٦٦١/١ سعيد). ويكره النوم والأكل فيه. أي: المسجد لغير المعتكف، وإذا أراد أن يفعل ذلك، ينبغي أن ينوي الاعتكاف، فيدخل فيه ويذكر الله تعالى بقدر مانوي. ولا بأس للغريب ولصاحب الدار أن ينام في المسجد في الصحيح في المذهب، والأحسن أن يتورع، فلا ينام. ١هـ (الفتاوى الهندية. كتاب الصلاة. الباب الخامس في آداب المسجد: ٣٢١/٥ رشيدية). والنوم فيه لغير المعتكف مكروه، وقيل: لا بأس للغريب أن ينام فيه، والأولى أن ينوي الاعتكاف، ليخرج من الخلاف. (الحلبي الكبير، كتاب الصلاة، فصل: في أحكام المسجد، ص: ١٢٦ سهيل أكيدمي لاهور)

خانی نه وی نو د اعتکاف په نیت د جمات د آدابو خیال ساتلوسره او سیدې شی ( )

۱) د احسن الفتاوی فتوی: سوال د علم د طالبانو په جمات کښې اوده کیدل جائز دی که نه؟ بینوا توجروا. الجواب باسم ملهم العوالب د جمات جوړیدل د ذکر او عبادت دپاره دی. ددې قسم کارونود پاره نه دی. په دې وجه په عام حالاتو کښې خود چا دپاره هم په جمات کښې اوده کیدل جائز نه دی که هغه طالب وی او که نور څوک. او که د مجبورنی د وجې نه د طالبانو په جمات کښې اوده کیدل وی نو په دې شرطونو سره ددې گنجائش شته:

① د جمات نه علاوه بل څه عارضی یا مستقل د قیام خانی موجودنه وی، اونه متولی او نه منتظم ددې انتظام کولې شی.

② د جمات د آدابو پوره خیال دی ساتی چه شور غوغا، خنداگانې او توقې مسخړې او فضول خبرو نه پرهیز او کړی. د صفاین پوره اهتمام اوساتی اود اعتکاف نیت دې او کړی.

③ مونځ گزاروته چه د هغوی نه هیڅ قسم تکلیف اونه رسی، اذان کیدو سره دې پاسی اود مونځونونه پس هم چه کله خلق سنت نوافل یا ذکر او تلاوت وغیره کښې مشغول وی نود هغوی په عبادتونو کښې دې خلل نه اچوی.

④ طالبان د ربرې والا یا کم نه کم د جمات د آداب نه واقف او شعور والا وی، کم عمر او بی شعوره ماشومان جمات کښې اوده کول جائز نه دی. الغرض د ممکن حده پورې دې ددې نه د بیج کیدو کوشش او کړی شی اود مجبورنی خبره خو جدا ده. والله اعلم. ۲۴ / ربیع آخر سنه ۸۷ هـ.

(احسن الفتاوی، باب الساجد، سوال: سجد میں سر: ۱۳۳۷-۱۳۳۸ هـ) سوال مثل بالا: سوال: د یومقیم سری د پاره په جمات کښې کټ اچولو سره یا بغیرد کټ نه سلاستل جائز دی که نه؟ بله دا چه نن صبا رواج دې چه تبلیغی جماعت حضرات هم په جمات کښې تسلی، هم په جمات کښې خوری څکی او نور معمولات پوره کړی. آیا شرعا ددې گنجائش شته؟ بینوا توجروا. الجواب باسم ملهم العوالب: د معتکف او مسافر دپاره په جمات کښې د خوراک څښاک او د اوده کیدو گنجائش شته. لهذا د تبلیغی جمات دغه دستور جائز دې څکه چه تبلیغی حضرات هم عموما مسافرو وی. سره ددې دا بهتره ده چه د اعتکاف نیت دې او کړی اوددې دې هم خیال اوساتی چه که جمات سره نيزدې څه حجره وغیره وی په کومه کښې چه ټول ملگري راتلی شی نو جمات کښې دې نه اوده کیرې او خوراک دې هم بهر کوی، په جمات کښې کټ اچول د چا د پاره هم جائز نه دی.

قال العلامة الحصکفی رحمه الله تعالى: وأکل ونوم المعتکف وغریب إلخ. وقال العلامة ابن عابدین رحمه الله تعالى: (نوله: وأکل ونوم) وإذا أراد ذلك ینبغی أن ینوی الاعتکاف، فیدخل ویذکر الله تعالی بقدر مانوی، ویصلی، ثم یفعل ما شاء، فتاوی هندیه. (ردالمحتار، ۶۱۹/۱) والله تعالی اعلم. ۲۷ / ربیع الاول سنه ۸۹ هـ.

(احسن الفتاوی، باب الساجد، سوال: سجد میں سر: ۱۳۳۸-۱۳۳۹ هـ) د فتاوی مفتی محمود فتوی: سوال: څه فرمائی علماء دین په دې مسئله کښې چه په جمات کښې اوده کیدل جائز دی که نه؟ که چرې جائز وی نو په کومو کومو صورتونو کښې اوده کیدې شی. مثلاً مسافریا غیر مسافریا صحیح سالم یا معتکف وغیره؟

وفی الدرالمختار: وأکل ونوم المعتکف وغریب إلخ. وفی ردالمحتار: (قوله: وأکل ونوم) وإذا أراد ذلك ینبغی أن ینوی الاعتکاف، فیدخل ویذکر الله تعالی بقدر مانوی، ویصلی، ثم یفعل ما شاء. (ص: ۴۸۹/۱) دی نه معلومه شوه چه بغیرد معتکف او مسافر نه د نورو د پاره په جمات کښې اوده کیدل مکروه دی. لیکن که چاته سخت ضرورت وی نود ا حیله دې او کړی چه په جمات کښې دې د لږ ساعت د پاره د اعتکاف نیت او کړی او بیا دې جمات کښې داخل شی اولر وخت دې په عبادت او ذکر کښې تیر کړی بیا دې هلته اوده سی او سحر دې پاسی مونځ دې او کړی اود جمات نه دې بهر راوځی. فقط والله تعالی اعلم. بنده محمد اسحاق غفرله، نائب مفتی مدرسه قاسم العلوم ملتان. ۲۳ رجب ۱۴۰۰ هـ.

حدیث باب: (دویم حدیث) [حدیث نمبر ۴۳۰]

۲۱- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ (۱) جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- بَيْتَ فَاطِمَةَ، فَلَمْ يَجِدْ عَلَيْهَا فِي الْبَيْتِ

..... (الترغی مثنی محمود، کتاب المسجد، سہ میں سورہ ۳۶۱، ۳۶۲، جمعہ بلخیز، ۱۱۷۷)

د فتاوی محمودیہ نہ منتخب فتاوی سوال: یہ جہات کبھی اودہ کیدل دعوامو یا خواصو پہ کتب بانڈی یا بغیرد کتب، بودا وی کہ خوان وی صحیح دی کہ نہ؟ سرہ ڈ کتابونوڈ حوالی تشریح اولیکئی؟  
الجواب حامداومعلیا: د معتکف او داسی مسافر چہ د هغه خانی وغیرہ نہ وی صحیح دی کہ پہ کتب کبھی وی او کہ بغیرد کتب نہ وی، کہ خوان وی او کہ بودا، نورو له احتیاط کول پکار دی خکہ چہ پہ جہات کبھی اودہ کیدل مکروه دی.

وبكره النوم والأكل فيه، أي: المسجد لغير المعتكف، وإذا أراد أن يفعل ذلك، ينبغي أن ينوي الاعتكاف، فيدخل فيه ويذكر الله تعالى بقدر مانوي. ولا بأس للغريب ولصاحب الدار أن ينام في المسجد في الصحيح يذهب، والأحسن أن يتورع، فلا ينام، ۱- عالمگیری: ۳۲۱/۵.

د بعضی صحابو نہ بعضی وخت پہ جہات کبھی اودہ کیدل ثابت دی. لکہ چہ بخاری شریف کبھی د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما متعلق نقل دی: «إِنَّهُ كَانَ يَنَامُ وَهُوَ شَابٌ أَغْرَبَ لَا أَهْلَ لَهُ فِي مَسْجِدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» زمونہ علماؤ دا پہ ضرورت بانڈی محمول کوی دی کذاتی فیض الباری. فقط والله اعلم.

دارنگہ: الجواب حامداومعلیا: مستقل د جہات نہ کور جوړول او هلته کبھی او کیدل نہ دی پکار دا مکروه اود جہات د احترام خلاف دی. لیکن کہ پہ چا بانڈی د خوب غلبه وی اود هغه جمع پاتی کیچی او پہ جہات کبھی د اودہ کیدو سرہ د جمع د مونخ پابندی نصیب کیچی یا د تہجدو توفیق ملاویدی. یا د جہات حفاظت مقصود وی یا بل خہ دینی ضرورت وی چہ بغیرد جہات د اودہ کیدو نہ نہ حاصلیدی نوڈ هغه د پارہ اجازت ہم دی. بعضی صحابه بہ ہم د دینی ضرورت دپارہ پہ جہات کبھی اودہ کیدل. فقط والله سبحانه اعلم.

دارنگہ: الجواب حامداومعلیا: کله چہ بل خانی موجود وی نو بیا پہ جہات کبھی اودہ کیدل او هغه ہم روزمره اودہ کیدل مکروه دی. ددی نہ بیچ کیدل پکار دی فقط والله اعلم.

دارنگہ: الجواب حامداومعلیا: جہات د مونخ خانی دی د اودہ کیدو او د آرام کولو خانی نہ دی کوم مسافر چہ پردیسی وی یا خوک اعتکاف کونکی وی د هغه دپارہ گنجائش شته. تبلیغی جماعتونہ عموما پردیسی وی یا پہ جہات کبھی د شپ پاتی کیدو سرہ پہ تسییح او نوافل کبھی اکثر مشغول وی. خہ وخت پوری آرام ہم کوی. دغد شان کہ هغوی سرہ مقامی خلق ہم شپہ روزمره کوی نو پہ نیت د اعتکاف دی کوی. فقط والله اعلم.

دارنگہ: الجواب حامداومعلیا: (جہات کبھی کتب خوړول او اودہ کیدل) د جہات د احترام خلاف دی اود نورو خلقو دپارہ دتوحش موجب دی. نن صبا پہ جہات کبھی کتب اچول د جہات بې ادبی کنولې شی پہ داسی مسائلو کبھی د عرف لحاظ کول پکار دی فقط والله اعلم؟

دارنگہ: الجواب حامداومعلیا: نفلی اعتکاف بغیرد رمضان نہ ہم کیدی شی اود داسی معتکف ہم پہ جہات کبھی قیام کول صحیح دی. فقط والله اعلم. (فتاوی محمودیہ، کتاب الوقف، باب: آداب المسجد، سہ سہ ۲۱-۲۲ نمبر ۱۷۱۰-۱۷۱۱، ۲۳۱-۲۳۸/۵، ۱۱۷۷، الدرر، کراچی).

(أخرجه البخاری أيضا، في فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، باب: مناقب علي بن أبي طالب، رقم الحديث: ۳۷۰۳، وفي الأدب، باب: النكئی بآبی تراب، رقم الحديث: ۶۲۰۴، وفي الاستئذان، باب: القائلة في المسجد، رقم الحديث: ۶۲۸۰، وأخرجه مسلم في صحيحه، في فضائل الصحابة، باب: من فضائل.....)

فَقَالَ «أَبْنُ ابْنِ عَمْرٍ». قَالَتْ كَأَنَّ بَيْنِي وَبَيْنَهُ شَيْءٌ، فَعَاظَنِي فَخَرَجَ فَلَمْ يَقُلْ عِنْدِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- لِلْإِنْسَانِ «انظُرْ أَيْنَ هُوَ». فَجَاءَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، هُوَ فِي الْمَسْجِدِ رَاقِدٌ، فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- وَهُوَ مُضْطَجِعٌ، قَدْ سَقَطَ رِذَاؤُهُ عَنِ شِقِّهِ، وَأَصَابَهُ تَرَابٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَمْسَحُهُ عَنْهُ وَيَقُولُ «قُمْ يَا تَرَابُ، قُمْ يَا تَرَابُ».

د هديت ترجمه: حضرت سهل بن سعد رضي الله عنه بيان او كروچه يو خل رسول الله صلى الله عليه وسلم د حضرت فاطمه رضي الله عنها كورته تشریف راوړو نو په كور كېني نى حضرت على رضي الله عنه اونه ليدلو نو تپوس نى او كړو ستا د تره خوښى چرته دې؟ حضرت فاطمه رضي الله عنها جواب ور كړو چه زما اود هغه په مينځ كېني څه خبرې اترې ترخې شوى دى نو هغه ماته غصه شو او د كور نه بهر لاړو او زما سره هغه قيلوله هم اونه كړه.

رسول الله صلى الله عليه وسلم يو سړى ته او ونيل او كوره چه هغه چرته دې؟ (څه ساعت پس) هغه سړى راغلو خبر نى ور كړو يا رسول الله صلى الله عليه وسلم! هغه خو په جمات كېني اوده دې. نو حضور ياك (جمات ته) تشریف راوړو نو هغه (حضرت على رضي الله عنه) ملاست وو. څا د د هغه د اړخ نه اخوا شوې وو او په بدن باندي نى خاورې لگيدلې وې. رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغه د بدن نه خاوره صفا كوله او فرمائيل به نى پاسه ابوتراب پاسه ابوتراب.

تو اجم رجال: د مذكوره حديث شريف په سند كېني ټول څلور راويان دى:

① قتيبة بن سعيد رضي الله عنه: دا ابورجاء قتيبه بن سعيد بن جميل ثقفى رضي الله عنه دې. د دوى احوال كشف

البارى، كتاب الايمان، باب: افشاء السلام من الاسلام لاندې تير شوى دى. ( )

② عبدالعزیز بن ابى حازم رضي الله عنه: دا ابوتمام عبدالعزیز بن ابى حازم سلمه بن دينار المدنى

دې. د لبنى اشجع آزاد كړې شوې غلام دې. دې چه د كومو استاذانو نه د حديث روايت كوى په هغوى كېني د ده پلار، زيد بن اسلم، علاء بن عبدالرحمن، سهيل بن ابى صالح، يزيد بن عبدالله بن الهاد، هشام بن عروه، موسى بن عقبه وغيره رحمهم الله شامل دى. اود دوى نه روايت كونكو كېني حميدى، ابومصعب، علي بن حجر، عمرو الناقد، يعقوب الدورقى، يحيى بن اكرم وغيره رحمهم الله شامل دى.

علامه ذهبى رضي الله عنه د دوى باره كېني ليكي: كان اماما كبريا الشأن فلاس رضي الله عنه وائى چه ما ابن

مهدى د دوى نه به يو هم حديث روايت كولو سره هم نه دې ليدلې ابن ابى خيثمه رضي الله عنه وائى

چه ما ابن معين رضي الله عنه اوريدلى چه ابن ابى حازم رضي الله عنه د خپل پلار نه روايت كولو كېني لقه نه

دې. علامه ذهبى رضي الله عنه په دې باندي رد كولو سره وائى چه نه دې خود خپل پلار اود هغه نه

..... على بن ابى طالب رضى الله عنه، رقم الحديث: ۲۴۰۹. وفى جامع الأصول. حرف الهمزة. الكتاب الثامن: فى

الاسماء والكنى، الفصل الثانى: فىمن سماه النبى صلى الله عليه وسلم ابتداء. رقم الحديث: ۱۵۴، ۳۶۳/۱.

(۱) كشف البارى: ۱۸۹/۲.

علاوه د نورو نه په روایت کولو کېنې حجت دې. ابن معین رحمته الله د دوی باره کېنې وائی: صدوق. د ابو حاتم رحمته الله وینا ده چه دې د دراوردي نه زیات فقیه دې. امام ابن حنبل رحمته الله د دوی باره کېنې فرمائی چه دې د حدیث په طلب کېنې زیات مشهور او معروف نه وو. البته دا خبره ده چه د امام مالک رحمته الله نه پس مدینه منوره کېنې د دوی نه څوک لوئی فقیه نه وو. د دوی پیدائش ۱۰۷ هجری کېنې شوې وو. او وفات ئی په ۱۱۴ هجری کېنې د جمعی په ورځ په مسجد نبوی کېنې د سجدي په حالت کېنې شوې دې. (۱)

(۲) ابو حازم رحمته الله: دا ابو حازم سلمه بن دینار الأعرج الزاهد المدني رحمته الله دې. د دوی احوال

کشف الباری، کتاب الوضوء باب: غسل المرأة أباهما الدم عن وجهه لاندې تیر شوی دی. (۲)

(۳) سهل بن سعد رحمته الله: دا ابو العباس ابن سعد الساعدي الأنصاري الخزرجي رحمته الله دې. د دوی

احوال کشف الباری، کتاب الوضوء باب: غسل المرأة أباهما الدم عن وجهه لاندې تیر شوی دی. (۲)

د حدیث شرح:

قوله: عن سهل بن سعد، قال: جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم بيت فاطمة، فلم يجد عليا في البيت، فقال: أين ابن عمك؟

حضرت سهل بن سعد رحمته الله بیان او کړو چه یو ځل رسول الله صلی الله علیه و آله د حضرت فاطمه رضی الله عنها کور ته تشریف راوړو نو په کور کېنې ئی حضرت علی رضی الله عنه اونه موندلو. نو تپوس ئی او کړو ستا د تره څوئی چرته دې؟

قوله: أين ابن عمك؟: د دې جملې نه د نبی کریم صلی الله علیه و آله مراد د حضرت علی رضی الله عنه باره کېنې معلومات کول وو. حضرت علی رضی الله عنه په حقیقت کېنې د نبی اکرم صلی الله علیه و آله د تره څوئی وو. لیکن چه کله حضور پاک د فاطمه رضی الله عنها کور ته تشریف راوړې وو نو حضور پاک محسوس کړې وه چه د لور او څوم په مینځ کېنې څه خبره شوی ده. څه د برداشت نه بهر معامله شوې ده. نو حضور پاک د ماحول د نرمولو دا پته اونه لگوله چه ای فاطمه ستا خاوند، ستا سختن چرته دې؟ یا د هغه نوم اخستو سره ئی پته اونه لگوله چه ای فاطمه علی چرته دې؟ بلکه حضور پاک دغه خپلوی او رشته داری وریادولو سره سوال او کړو کوم چه د هغه دواړو په مینځ کېنې په نسلی اعتبار سره موجود وه چه ای فاطمه ستا هغه د تره څوئی چرته لارو؟ (۱)

(۱) الطبقات الكبرى لابن سعد: ۴/۲۴۴. الأعلام للزركالي: ۴/۱۸، میزان الاعتدال: ۲/۲۶۶ تاریخ اسلام للذهبي:

۴/۹۱۳، سير أعلام النبلاء، ۸/۳۶۳، تهذيب الهديب: ۶/۳۳۴.

(۲) كشف الباری، كتاب الوضوء باب: غسل المرأة أباهما الدم عن وجهه

(۳) كشف الباری، كتاب الوضوء باب: غسل المرأة أباهما الدم عن وجهه

(۴) فتح الباری: ۱/۶۹۳ عمدة القاری: ۴/۲۹۴-۲۹۳. حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله فرمائی چه مجازاً حضور پاک ابن عمک او وئیل یا دا چه د دې مضاف محذوف دې. په اصل کېنې ابن ابن عم اییک څکه چه حضرت علی رضی الله عنه خو په اصل کېنې د نبی کریم صلی الله علیه و آله د تره اېو طالب څوئی دې. د حضرت فاطمه رضی الله عنها د تره څوئی نه دې چونکه حضور پاک ته د هغوی په مینځ کېنې د خفگان اندازه شوې وه په دې.....

قوله: کان بینی و بینہ شیء فغاضبني فخرج: حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا جواب ورکړو چه زما او د هغه په مینځ کښې څه خبره اتره شوې ده. نو هغه ماته غصه شو او بهر تلې دې. د ناخوښۍ خبره د دواړو طرفونه شوې وه:

قوله: فغاضبني: دا د باب مفاعله نه دې د کوم خاصه چه د اشتراك معني بيانول دي. چنانچه مطلب به دا شی چه حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا او فرمائیل ای بابا جان ازما او د هغه په مینځ کښې په څه خبره باندي تکرار راځی هغه ماته غصه شو او زه هغه ته غصه شوم نو د خبرو تر څوالي د وجې هغه زمانه خفه شوې او د کوره تلې دې. (۱)

د حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا صفا خبره: سبحان الله د نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم د زړه تکرره د حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا خومره رښتیا وئیل، صفا خبره او د انصاف بیان مخې ته راغلو حالانکه په عام توگه په داسې موقعو باندي د ښځو دا مزاج مخې ته راځی چه خپله خطا ورته مخې ته نه راځی او مقابل یعنی د خپل خاوند ټول قصور بیانوی چه هغه دا کړی، هغه دا کړی وغیره وغیره. لیکن حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا د دغه خفگان راتلو باوجود صرف دا اونه فرمائیل چه هغه ماته غصه شوې دې، خفه شوې دې اوزه ئی او رتلم او لایا خفه هم لارو بلکه صفائی عرض او کړو چه ای بابا جان! هغه هم غصه شو او زه هم غصه شوم. سبحان الله.

لویښی خو کم نکیږی: اودا څه داسې خبره هم نه ده چه په کورنۍ کښې د ښځې او خاوند په مینځ کښې څه نا څه تر څه خبره یا وړه جگړه وغیره نه وی، انسانان دی فطرت او مزاج مختلف وی او بیا د بهر د حالاتو هم په دغه معاملاتو کښې لوی عمل دخل وی. نو دا خبرې راتلل څه دومره لویه خبره نه وی. ځکه چه یو ځائی کښې کله لویښی پراته وی نو هغه په خپل مینځ کښې کرنګیږی هم او شور هم پیدا کیږی.

لیکن د کتلو او غور کولو خبره داده چه په داسې حالاتو کښې هم د انصاف معامله د لاس نه خطا نه شی اود دغه خفگان په سر باندي سور نه کړی شی بلکه د غصې یخیدو نه پس صلح هم کول پکار دی. اود مشرانو هم ذمه واری جوړیږی چه په طرفینو کښې د محبت او شفقت، حکمت او بصیرت سره صلحه او کړی. لکه چه دلته د نبی اکرم نمونه زمونږ مخې ته راغله.

قوله: فلم یقل عندي: او زما کور کښې هغه قیلوله هم اونه کړه.

قوله: فلم یقل: دا د باب ضرب یضرب (قال یقول) نه د نفی جحد پلم صیغه ده د کوم معنی چه قیلوله کول دی یعنی د غرمې وخت کښې اوده کیدل. (۲) خود اصیلی او ابن عساکر د روایت مطابق د اصیغه دیاء په ضمی اوقاف په کسری سره ده. (۳)

.....وجه حضور پاک داستعطاف په اراده د تعبیر اختیار کړو او د هغه دواړو نسبی نیز دیوالی ئی ذکر کړو. (سراج القاری: ۳/۳۴). حضرت علامه شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه په دې تعبیر کښې اشاره ده چه (ستاسو دواړو په مینځ کښې) د ښځې او خاوند نه علاوه بله رشته هم ده لهذا په مینه او محبت سره او سیدل پکار دی. (فضل الباری: ۳/۱۵۳).

(۱) عمدة القاری: ۲۹۴/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ فتح الباری: ۶۹۳/۱ عمدة القاری: ۲۹۴/۴ إرشاد الساری: ۴۳۷/۱.

(۳) إرشاد الساری: ۴۳۷/۱.

د قیلوله حکم: د غرمې خوراک کولو نه پس لږ شان آرام کولو ته قیلوله وائی. ددې دپاره د خوب راتلل ضروری نه دی، صرف استراحت (آرام) باندې هم د قیلولي اطلاق کیږي. (١)  
لیکن که د چا اراده د اوده کیدو هم وی نو د اوده کیدو په وخت دعا وغیره وئیلوسره په اودس کبسي اوده کیدل پکار دی. یعنی د شپې د وخت چه کوم سنت دی هغه د شپې اوده کیدو سره خاص نه دی بلکه د دغه سنتو تعلق صرف د اوده کیدو سره دي که د ورځې اوده کیدل وی او که د شپې، چنانچه د ورځې د اوده کیدو په وخت هم ددې اهتمام کول پکار دی. قیلوله کول سنت عمل دي په دی سره د شپې په عبادت کبسي امداد ملاویږي. (٢) په یو حدیث شریف کبسي دی چه قیلوله کوئی ځکه چه شیطان قیلوله نه کوی. (٣)  
قوله: فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لإنسان: "انظر أين هو، فجاء فقال: يا رسول الله! هو في المسجد راقد:

رسول الله ﷺ یو سړی ته او فرمائیل او گوره چه هغه چرته دي؟ (لږ ساعت پس) هغه سړي راغلو خبرتی ورکړو یار رسول الله هغه په جمات کبسي اوده دي.  
قوله: لإنسان: د طبرانی په روایت کبسي دی: "فأمر إنسانا معه". (٤)  
حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چه د دغه انسان نه مراد به هم سهل بن سعد رضي الله عنه وی ځکه چه په

(١) قال الأزهرى: القيلولة والمقيل عند العرب الاستراحة نصف النهار، وإن لم يكن مع ذلك يوم، بدليل قوله: «وَأَخْسَنُ مَقِيلًا» [الفرقان: ٢٤] والجنة لا نوم فيها. (مرقاة المفاتيح، كتاب الجمعة، باب: الخطبة والصلاة، رقم الحديث: ١٤٠٢، ١٤٠٣/٢).

(٢) عن ابن عباس رضى الله عنهما عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: "استعينوا بطعام السحر على صيام النهار والقيلولة على قيام الليل". (سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب: ما جاء فى السحور، رقم الحديث: ١٦٩٣). عمل السلف والخلف على أن القيلولة مطلوبة لإعانتها على قيام الليل، قال حجة الإسلام: وإنما تطلب القيلولة لمن يقوم الليل ويسهر فى الخير، فإن فيها معونة على التهجد كما أن فى السحور معونة على صيام النهار، فالقيلولة من غير قيام الليل كالسحور من غير صيام النهار. (فيض القدير، حرف القاف، رقم الحديث: ٦١٦٨، ٥٣١/٤).

(٣) عن أنس بن مالك رضى الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم: قيلوا، فإن الشيطان لا يقبل. (المعجم الأوسط، من اسمه أحمد، رقم الحديث: ٢٨، ١٣/١) عن مجاهد قال: بلغ عمر أن عاملاً له لم يقبل، فكتب إليه عمر رضى الله عنه: قل، فإنى حدثت أن الشيطان لا يقبل. قال مجاهد: إن الشياطين لا يقبلون. (المصنف لابن أبى شيبة كتاب الأدب، باب: ما يذكر فى القائله نصف النهار، رقم الحديث: ٢٦٦٧٦، ٣٣٩/٥).

(٤) حدثنا الحسين بن إسحاق التستري، ثنا يحيى الحماني، ثنا سليمان بن بلال، عن أبى حازم، عن سهل بن سعد قال: سمعته يقول: إن كانت لأحب أسماء على رضى الله عنه إليه: أبو تراب، وإن كان ليفرح أن يدعو به، وما سماه أباتراب إلا رسول الله صلى الله عليه وسلم، غاضب يوماً فاطمة رضى الله عنها، فخرج فاضطجع إلى الجدار، فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم يطلبه، فلم يجده فى البيت، فقال لفاطمة: أين ابن عمك؟ قالت: خرج أنفا مغضبا، فأمر رسول الله صلى الله عليه وسلم إنسانا معه يطلبه، فقال: مضطجع فى الجدار، وقد زال رداؤه عن ظهره، وامتلأ ترابا، فجعل رسول الله صلى الله عليه وسلم يمسح التراب عن ظهره، ويقول: اجلس يا أباتراب. (المعجم الكبير للطبرانى، سليمان بن بلال عن أبى حازم، رقم الحديث: ٥٨٠٨، ٦/١٤٩).



روایت کنبی تردغه وخته د بل سری د موجودگئی ذکر نشته دې. (۱)  
 قوله: هوفی المسجد راقد: په دې روایت کنبی په جمات کنبی د اوده کیدو ذکر دې. خو اوس د  
 المعجم الكبير للطبرانی په روایت کنبی تیر شو چه هغه د دیوال په سوری کنبی ملاست  
 وو. (۲) په دواړو کنبی تطبیق ممکن دې چه د جمات د دیوال په سوری کنبی اوده وو.  
 قوله: سول الله صلى الله عليه وسلم وهو مضطجع، قد سقط رداؤه عن شقه، وأصابه تراب:  
 نو رسول الله ﷺ جمات ته تشریف راوړو نو هغه (حضرت علی رضی الله عنه) پروت وو، خادر د هغه د  
 اړخ نه اخوا شوې وو او په بدن باندې نې خاورې لگیدلې وې.  
 قوله: وهو مضطجع: دا جمله اسمیه ده چه حال به واقع کیری. د جاء د فاعل رسول الله نه، یعنی  
 کله چه رسول الله ﷺ جمات ته اورسیدو نو حضرت علی رضی الله عنه نې په خپله دوه باندې اوده  
 اولیدلو. تقدیری عبارت به داسې شی: "فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى المسجد، ورآه وهو  
 مضطجع". (۳)

قوله: قد سقط رداؤه: دا جمله هم حالیه ده. (۴)

قوله: عن شقه: نه مراد عن جانبه دې. (۵)

قوله: فجعل رسول الله صلى الله عليه وسلم محه عنه ويقول: "قم أباتراب، قم أباتراب:

رسول الله ﷺ د هغه د بدن نه خاوره صفا کوله او فرمائیل نې پاسه ابوتراب، پاسه ابوتراب.

قوله: أباتراب: دې نه مخکنی حرف نداء، م حذف دې اصل کنبی وو قم، یا أباتراب. (۶)

د حضرت علی رضی الله عنه کنیت د ابوتراب د تسمیه وجه: دا رومبې موقعه وه چه نبی کریم صلی الله علیه و آله  
 حضرت علی رضی الله عنه ابوتراب وئیلوسره مخاطب کړو، دا د شفقت په وجه وو. دې نه مراد د  
 خاورو پلار نه دې بلکه ای د خاورې والا مراد دې. ځکه چه هغه وخت د حضرت علی رضی الله عنه په  
 اړخ باندې د کچه زمکې خاوره لگیدلې وه.

د حضرت علی رضی الله عنه دا کنیت ډیر خوښ وو ځکه چه دا د هغه محبوب نبی صلی الله علیه و آله د هغه د پاره  
 خوښ کړې وو. حضرت سهل بن سعد رضی الله عنه دا بیان کړې دې لکه چه څنگه د طبرانی په روایت

کنبی دی: «عن سهل بن سعد قال: سمعته يقول: إن كادت لأحب أسماء على رضى الله عنه إليه: أباتراب، وإن

كان لي فرح أن يدعوه بها». (۷)

(۱) فتح الباری: ۶۹۳/۱

(۲) (المعجم الكبير للطبرانی. سليمان بن بلال عن أبي حازم. رقم الحديث: ۵۸۰۸، ۶/۱۴۹).

(۳) عمدة القاری: ۴/۲۹۴.

(۴) ایضا.

(۵) عمدة القاری: ۴/۲۹۴.

(۶) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ عمدة القاری: ۴/۲۹۴.

(۷) (المعجم الكبير للطبرانی. سليمان بن بلال عن أبي حازم. رقم الحديث: ۵۸۰۸، ۶/۱۴۹).

د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث شریف د ترجمه الباب سره مطابقت د

حدیث په دې جملې "وهو راقدل المسجد کنبی دی" (۱) حافظ ابن حجر رحمته الله علیه فرمائی چې د دې باب پرمه یې حدیث د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما په جملات کنبی اوده کیدو والا روایت د داسې سړي په جملات کنبی په اوده کیدو باندې دلالت کوي د چا په بال بچ نه وي، هغه ناواده کړې وي. او دا حدیث په کوم کنبی چې د حضرت علی رضی الله عنه په جملات کنبی د اوده کیدو ذکر دې په دې کنبی تعمیم دې ځکه چې دې خو واده کړې وو او د بال بچ والا وو. نو د دواړو قسم کسانو په جملات کنبی اوده کیدل ثابت شو. هسې په دواړو احادیثو کنبی لږ فرق کول هم ممکن دی. هغه داسې چې د حضرت عبدالله بن عمر رضی الله عنهما سملاستل باقاعدې اوده کیدل وو او د حضرت علی رضی الله عنه سملاستل خو اوده کیدل نه وو بلکه صرف قیلوله وه چې د پاره د هغې خوب لازم نه دې. که وی نو هم او که نه وی نو هم دواړو صورتونو ته به قیلوله وئیلې شی. (۲)

د حدیث مبارک نه مستفاد امور و اداب: د مذکوره حدیث شریف نه چې کوم امور او آداب وغیره مستنبط کيږي د هغې نه څه دلته نقل کولې شی:

- ① په جملات کنبی د قیلولې په غرض سره د سملاستلو جواز هم معلوم شو. (۳)
- ② کوم سړي چې په غصه کنبی وي هغه سره داسې خبرې اترې کول په کوم سره چې هغه نور په غصه کنبی نه راځي بلکه په هغه خبرو اترو سره انس حاصل کړي دا جائز دی. (۴)
- ③ د اولاد نه علاوه د څه بل نوم طرف ته نسبت کولو سره کنیت کیخودل هم جائز دی. (۵)
- ④ یو سړي په داسې کنیت سره رابلل په کوم سره چې هغه خفه کيږي نه؛ صحیح دی. (۶)
- ⑤ پلار د خپلې لور کور ته د هغې د خاوند د اجازت نه بغیر هم تلې شی. په دې شرط چې څوم به نې په دې تگ راتگ باندې راضی وي. (۷)
- ⑥ د سخر د خپل څوم خاطر مدارات کول او د هغه د زړه د ساتلو د پاره داسې خبره کول په کوم سره چې د هغه غصه یخه شی، بهتر دی. (۸)
- ⑦ غیر مسافر او غیر فقیر د پاره هم په جملات کنبی د اوده کیدلو جواز معلومیږي. (۹)
- ⑧ د خپلولي الفاظ په خبرو اترو کنبی ذکر کولو سره د چا مانوس کولو هم علم اوشو. (۱۰)

(۱) عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۲) فتح الباری: ۲۹۴/۱-۲۹۳.

(۳) التوضیح لابن الملقن: ۵۱۷/۵ فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۴) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۵) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ التوضیح لابن الملقن: ۵۱۷/۵ فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۶) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ التوضیح لابن الملقن: ۵۱۷/۵ فتح الباری: ۶۹۴/۱.

(۷) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۸) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ التوضیح لابن الملقن: ۵۱۷/۵ فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۹) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ التوضیح لابن الملقن: ۵۱۷/۵ عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۱۰) عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

① دَدِي حَدِيثُ شَرِيفٍ نَهَدَ حَضْرَتَ عَلِيٍّ رضي الله عنه فَضِيلَتِ او مَنْقِبَتِ هَمَّ بِهٖ شَانِ سِرِّهٖ بِنِكَارِهِ كِبَرِيٍّ (۱)

② دَ كَوْمِ سِرِّي سَتْرَ چِه پِه لِبَاسِ كِنْبِي پَتِ وِي، هَغْدِ لِبَاسِ اَغْوَسْتُونَكِي دِي اِگْرَ چِه دَ سَتْرَ نِه عِلَاوَه دَبْعَضِي اَنْدَامِ نِه كِبَرِي اَخْوَا شُوِي هَمَّ وِي (۲)

حدیث باب (دریم حدیث) [حدیث نمبر ۴۲۱]

۳۳۲- حَدَّثَنَا يُوْسُفُ بْنُ عِيْسَى قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فَضَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ (۳) رَأَيْتُ سَبْعِينَ مِنْ أَصْحَابِ الصُّفَّةِ، مَا مِنْهُمْ رَجُلٌ عَلَيْهِ رِدَاءٌ، إِذَا رَأَوْا مَا كَسَاءٌ، قَدَّرُوا فِي أَعْنَاقِهِمْ، فَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ نِصْفَ السَّاقَيْنِ، وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ الْكَعْبَيْنِ، فَيَجْمَعُهُ يَدَيْهِ، كَرَاهِيَةً أَنْ تُرَى عَوْرَتُهُ.

د حدیث ترجمه: حضرت ابوهریره رضي الله عنه او فرمائیل چه ما د اصحاب صفة نه او یا کسان په داسې حال کنبې لیدلی دی چه هغوی کنبې چا سره (د پاسه اچولو دپاره) خادر نه وو. یا هغوی سره صرف لنگ وو یا (د بدن پتولو دپاره) یوه کمبله، کومه چه به هغوی د ستې نه (لاندې) تړلې وه، اودا به په هغوی کنبې د چا د گیتو پورې رسیدله اود چا د پندو پورې رسیدله (د رکوع اوسجدې په وخت کنبې) به ئی هغه په لاس نیوله چه چرته د هغوی شرمگاه بیکاره نه شی.

تو اجم رجال: د دې حدیث په سند کنبې ټول پنځه راویان دی:

① یوسف بن عیسی رضي الله عنه: دا یوسف بن عیسی رضي الله عنه دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الغسل، باب: ترضای الجنابة ثم غسل سائر جسده ولم يعد غسل مواضع الوضوء مرة أخرى لاندې تیر شوی دی (۴)

② ابن فضیل رضي الله عنه: دا ابو عبد الرحمن محمد بن فضیل بن غزوان کوفی رضي الله عنه دې. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الإیمان، باب: صوم رمضان احتسابها من الإیمان لاندې تیر شوی دی (۵)

③ ابیه (فضیل بن غزوان) رضي الله عنه: دا ابو محمد فضیل بن غزوان بن جریر الضبی الکوفی رضي الله عنه دې. دا د ابو الفضل الکوفی پلار دی. دې چه د کومو مشائخو او استاذانو نه د حدیث روایت کوی په هغوی کنبې ابو حازم الأشجعی، ابوزرعه البجلی، عکرمه، سالم بن عبد الله بن عمر، زبید الیامی، طلحه بن عبید الله بن کریز، عاصم بن بهدله، عبد الله بن واقد بن

(۱) التوضیح لابن الملتن: ۵۱۹/۵، عمدة القاری: ۲۹۳/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۱۰۱/۴ التوضیح لابن الملتن: ۵۱۹/۵.

(۳) هذا الحدیث من أفراد البخاری، وفي جامع الأصول، حرف الزای، الكتاب الثاني: في الزهد والفقر، الفصل

الثاني: فيما كان النبي صلى الله عليه وسلم وأصحابه عليه من الفقر، رقم الحدیث: ۲۸۱۳، ۷۰۱/۴.

(۴) کشف الباری، کتاب الغسل، باب: ترضای الجنابة ثم غسل سائر جسده ولم يعد غسل مواضع الوضوء مرة أخرى.

(۵) کشف الباری: ۳۱۸/۲.

عبد الله بن عم، عبد الرحمن بن ابي نعم البجلي وغيرهم رحمهم الله شامل دي. او د دوی نه روایت کونکو کنبی د هغوی خوئی محمد بن فضیل، جریر بن عبد الحمید، عبد الله بن مبارک، اسحاق الازرق، ابن نمیر، یحیی بن سعید القطان، حفص بن غیاث، ابواسامه حماد بن اسامه، سعید بن محمد الوراق، سفیان ثوری، سیف بن عمر التمیمی، عبد الله بن داؤد الخریسی، عبد الرحمن بن محمد المحاربی، عیسی بن یونس، مروان بن معاویه الفراری وغيرهم رحمهم الله شامل دي.

امام احمد بن حنبل رحمته الله وغيره د دوی توثیق کړې دي. یحیی بن معین رحمته الله د دوی باره کنبی وائی: ثقة. ابن حبان رحمته الله د دوی ذکر کتاب الثقات کنبی کړې دي. د دوی وفات ۱۴۰ هجری نه ۱۵۰ هجری په مینځ کنبی یو کال کنبی شوې دي. (۱)

(۳) ابو حازم رحمته الله: دا ابو حازم سلمان الاشجعی الکوفی عزة الاشجعیه رحمته الله دي. واضحه دي وی چه په دي سند کنبی کوم حازم دي د دي نه مراد ابو حازم سلمان الاشجعی رحمته الله دي. نه چه ابو حازم سلمة بن دینار رحمته الله. د دي تصریح علامه ابن حجر رحمته الله او علامه عینی رحمته الله وغيره کړې ده. (۲)

فاتده: د ابو حازم کنیت والا یو بل راوی سلمة بن دینار الاعرج رحمته الله دي. په دي دواړو راویانو کنبی اشتباه راخی ځکه چه په کنیتونو کنبی اشتراک دي. دواړه تابعیان دي. دواړه صحابه کرامو نه روایت کوی او دواړه ثقه هم دي. البته په دواړو کنبی دا فرق دي چه د ابو حازم سلمان الاشجعی انتقال د اولي صدنی په اختتام باندي یعنی د حضرت عمر بن عبد العزيز رحمته الله په دور خلافت کنبی شوې دي او د ابو حازم سلمة بن دینار انتقال ۱۲۵ هـ کنبی شوې دي. دویم فرق دادی چه د ابو حازم سلمان الاشجعی روایتونه په صحیحین کنبی صرف د حضرت ابوهریره رحمته الله نه دي او ابو حازم سلمة بن دینار سوا د حضرت سهل بن سعد رحمته الله د بل یو صحابی نه روایت نه دي اخستی. والله اعلم. (۳)

د دغه دواړو حضراتو د پیژندگلو یو طریقہ داهم ده چه په کوم سند کنبی د ابو حازم رحمته الله شیخ، حضرت ابوهریره رحمته الله وی نو د هغه ابو حازم نه مراد سلمان الاشجعی رحمته الله دي. او که چرې د هغه شیخ، حضرت سهل بن سعد رحمته الله وی نو د هغه ابو حازم نه مراد سلمه بن دینار اعرج کوفی رحمته الله دي. (۴) تفصیل کشف الباری، کتاب العلم، باب: هل يجعل للنساء يوم على حد في العلم د لاندې او گورنی. (۵)

(۱) تهذيب الكمال: ۳۰۱/۲۳. سير أعلام النبلاء: ۲۰۳/۶. التاريخ الكبير لإمام البخاري: ۱۲۲/۷. الجرح والتعديل:

۷۴/۷. تهذيب التهذيب: ۲۹۷/۷. تاريخ الإسلام: ۹۵۱/۳. الثقات لابن حبان: ۳۱۶/۷.

(۲) فتح الباری: ۶۹۴/۱. عمدة القاری: ۲۹۴/۴.

(۳) عمدة القاری: ۱۳۵/۲.

(۴) إرشاد الساری: ۴۳۸/۱.

(۵) كشف الباری: ۱۰۱/۴.

⑤ ابی ہریرہ رضی اللہ عنہ: دامشہور صحابی رسول حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ دی۔ د دوی احوال کشف

الباری، کتاب الإیمان، باب: أمور الإیمان لاندی تیرشوی دی۔ (۱)

د حدیث شرح: عن ابی ہریرہ، قال: لقد رأیت سبعین من أصحاب الصفة:

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ او فرمائیل چه ما د اصحاب صفة نه او یا کسان لیدلی دی۔

قوله: لقد رأیت: د صحیح بخاری په نور و نسخو کنبی د "لقد" نه بغير صرف د "رأیت" لفظ دی۔ (۲)

قوله: سبعین من أصحاب الصفة: دا او یا اصحاب رسول ﷺ د هغه او یا و صحابه کرامونه

علاوه دی کوم چه په د هوکې سره د بیر معونه په مقام باندي شهیدان کړې شوي وو۔ خکه

چه هغوی خود ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ د اسلام قبلولو نه مخکنبی شهیدان کړې شوي وو۔ (۳)

د اصحاب صفة تعداد: د اصحاب صفة د تعداد باره کنبی اختلاف دی۔ ددی وجه داده چه

داخلق به د علم زده کولو د پاره راتلل او په صفة کنبی به ئی قیام فرمائیلو بیا به تلل۔ ددی

په وجه به د هغوی تعداد زیاتیدو او کمیدو۔ کله کله خو به د هغوی تعداد دوو سوو پورې

رسیدلو او په عام توگه به او یا و پورې د هغوی تعداد وو۔

د مدارسو او خانقاہونو اصل: هم دغه صفة د مدرسې والو او خانقاہ والو اصل دی۔ د مدارسو

اصل خو په دې وجه دی چه خلق به د علم د زد کړې د پاره راتلل۔ او د خانقاہ اصل په دې وجه

دی چه د دغه حضرات صحابه کرامو رضی اللہ عنہم اصل مقصد د حضور پاک نه روحانی فیض

حاصلول وو۔ او دا اشکال دلته نه راخی چه بعضی علماؤ مدارس بدعت حسنه شمیر کړې

دی۔ خکه چه د مدارسو خاص هیئت، د مدرسینو کیدل یا د ملازمینو کیدل، د وختونو

پابندی وغیره دا هر خه هلته نه وو نولکه چه هیئت خاصه حادث دی۔ او اصل تعلیم او

متعلمین خود حضور پاک د زمانې نه دی۔ هم دغه شان د خانقاہ حال دی چه دا هیئت خاصه

نه وو۔ (۴)

قوله: ما منهم رجل عليه رداء: چه په هغوی کنبی چا سره هم (د پاسه د اچولو) خادر نه وو۔

قوله: رداء: د راء په کسرې سره هغه خادر په کوم سره چه د بدن پورتنی حصه پتولې شی۔ (۵)

(۱) کشف الباری: ۶۵۹/۱.

(۲) إرشاد الساری: ۴۳۸/۱.

(۳) عمدة القاری: ۲۹۴/۴. إرشاد الساری: ۴۳۸/۱.

(۴) الكنز التواری: ۱۵۶/۴. سراج القاری: ۳۵/۳.

(۵) فتح الباری: ۶۹۴/۱. عمدة القاری: ۲۹۴/۴. إرشاد الساری: ۴۳۸/۱. علامه سید فخرالدین احمد صاحب

رضی اللہ عنہ فرمائی چه یوه ترجمه خود داده چه د بدن د پورتنی حصی د ستر د پاره هیخ خه مستقل کپرا نه وه بلکه

یوه کمبله به وه۔ کومه چه به هغوی په ست کنبی غوبه ورکولو سره ترله او د ټول بدن د ستر د پاره به ئی

استعمالوله۔ او یوه ترجمه شیخ الاسلام دهلوی رحمۃ اللہ علیہ کړې ده: "نموده ایشان مردے که بر دے چادرے باشد بالائے کمر:"

(شیخ الاسلام، ۴۱۱/۱)، په هغوی کنبی یو سړې هم داسې نه وو چه هغه سره د لنگ سره د پاس اچولو د

پاره خادر وی۔ دا ترجمه زیاته صفا ده چه چا سره هم د بدن د دوارو حصو د پاره جدا جدا لباس نه وو۔

(ایضاح البخاری: ۱۹۴/۳).

قوله: إما ازارا وما کساء، قدر بطوافی أعناقهم: یا د هغوی سره لنگ و و یا «د بدن د پتولو د پاره» یوه کمبله، کومه چه هغوی د سته نه (لاندې پورې) تړلې وه.  
قوله: إما ازار: مطلب دادې چه صرف ازار یعنی لنگ به وو د پورته حصې د پاره خادر وغیره نه وو. (۱)

قوله: إما کساء: مطلب دا چه صرف خادر یا کمبل وغیره به وه لنگ او ازار به نه وو. (۲)  
قوله: قدر بطوا: ددې فعل مفعول ضمیر محذوف دې کوم چه «الکساء» طرف ته راگرځی. دا فعل جمع څکه راوړلې شو چه «الرجل» جنس دې چه د واحد او جمع دواړو د پاره استعمالیږی. لهذا د جمع په اعتبار سره ئی او وئیل: قدر بطوا الاکسیة. (۳)  
قوله: فمنها ما یبلغ نصف الساقین، ومنها ما یبلغ الکعبین، فجمعه بیده، کراهیه أن تری عورتیه: اودا به په هغوی کنبې د چا د گیتو پورې رسیدلو اود چا به د پنډو پورې رسیدلو (د رکوع سجدي په وخت به ئی) هغه په لاس باندې نیولو چه چرته د هغوی شرمگاه ښکاره نه شی.  
قوله: فمنها: کنبې د هاء ضمیر مرجع «الاکسیة» دې جمع په دې اعتبار سره چه «الکساء» پخپله اسم جنس دې د کوم اطلاق چه په واحد او جمع هرو دوو باندې کیږی. (۴)  
قوله: فجمعه: ای: الواحد منهم، یعنی په دغه فقیرانو صحابه کرامو کنبې د چا چه به دغه پورته ذکر شوي حالت وو، هغه به په خپلو لاسونو دغه خادر راغونډولو. (۵)  
قوله: بیده: په دې مقام باندې د اصیلی په نسخه کنبې څه اضافه ده او هغه دا ده: «حال کونهم فی الصلاة» یعنی د هغوی په داسې شان سره په خپلو لاسونو خپل خادر راغونډول به په دې وجه وو چه چرته د خادر کولاویدو سره عورت راښکاره نه شی. (۶)  
د حدیث مبارک د ترجمه الباب سره مطابقت: د مذکوره حدیث شریف د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ددې لفظ «اصحاب صفة» په وجه دې. هغه داسې چه کله د دغه صحابه کرامو رضی الله عنهم استوگنه او وخت تیروول هم په دغه صفة کنبې وو چه د شرعی جمات حصه وه نو یقینا د هغوی شپه تیروول به هم هلته وو او هم دغه خبره د ترجمه الباب ده.  
خلاصه دا چه په دې باب کنبې ذکر شوی دواړه تعلیقاتو او دريوارو احادیثو نه دا ثابتیږی چه د سرو په جمات کنبې اوده کیدل جائز دی. لیکن په دې باندې خان په ښه شان سره پوهه

(۱) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۵/۴ إرشاد الساری: ۴۲۸/۱.

(۲) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۴/۴ إرشاد الساری: ۴۲۸/۱.

(۳) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۴/۴ إرشاد الساری: ۴۲۸/۱.

(۴) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۴/۴ إرشاد الساری: ۴۲۸/۱.

(۵) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۴/۴ إرشاد الساری: ۴۲۸/۱.

(۶) فتح الباری: ۶۹۴/۱ عمدة القاری: ۲۹۴/۴ إرشاد الساری: ۴۲۸/۱.

کول پکار دی چه په دې باب سره د امام بخاری رحمته الله علیه مقصود ترغیب و رکول نه دی چه په جمات کښې اوده کیرنی بلکه مقصود ئی دادې چه د اوده کیدو دا اجازت صرف د ضرورت په وخت دې خکه چه د جماتونو اصلی مقصد عبادت دې.

## ۲۶- بَابُ: الصَّلَاةِ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ

دا باب د سفر نه په واپسې باندې د مونځ کولو په بیان کښې دې.  
د ترجمه الباب مقصد: د دې ترجمه الباب نه مقصود د دې امر بیان دې چه کله انسان د سفر نه واپس راشی نو مستحب دادی چه کورته د تلو نه مخکښې جمات ته لارشی او دوه رکعتہ نفل د شکرانې په توگه باندې ادا کړی او د دې نه پس کورته لارشی. هم د دې استحباب بیانولو په غرض باندې دا باب قائم کړې شوې دې. په دې موقع باندې ادا کیدونکی مونځ د تحية القدم من السفر په نوم سره پیژندلی شی.

علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی چه دا ابواب کوم چه شروع دی دا اکثر هم د جمات سره متعلق دی. لهذا د ابوابو په خپل مینځ کښې مناسبت هم یو دې یعنی جمات سره د تعلق. لهذا د دې مناسباتو په لتون کښې دې پسې دلگیدلو ډیر ضرورت نشته دې. (۱)

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله علیه فرمائی چه دې ته تحية القدم من السفر وائی. دا د اتمو په نیز هغه وخت دی چه کله انسان د سفر نه واپس راشی نو اول دې جمات ته لارشی دوه رکعتہ تحية السفر دې او کړی دې د پاره چه شروع د مبارک مقام نه اوشی او برکت حاصل شی او په دې وجه هم چه خلق په عام توگه په جماتونو کښې راجمع کیرې نو هغوی سره ملاقات هم کیرې. (۲)

تعلیق: وَقَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ، بَدَأَ بِالسُّجْدِ فَصَلَّى فِيهِ. (ار: ۱۲۱۵۶)

د تعلیق ترجمه: حضرت کعب بن مالک رضی الله عنه او فرمائیل چه نبی کریم صلی الله علیه و آله به کله د سفر نه واپس تشریف راوړو نو د تړلو نه مخکښې به ئی جمات ته تشریف اوړلو او هلته به ئی دوه رکعتہ، مونځ ادا کولو.

(۱) ای: هذا باب في بيان الصلاة إذا قدم الرجل من سفر، وغالب الأبواب في هذا الموضع فيما يتعلق بالمساجد فلا يحتاج إلى زيادة طلب وجوه المناسبات، فيها. (عمدة القاري: ۲۹۵/۴).

(۲) د تقریر بخاری شریف: ۱۶۵/۲-۱۶۴. تقریر بخاری شریف په حاشیه کښې د تقریر مولوی احسان په حواله سره دا تفصیل موجود دې: د آداب سفر نه دادی چه کله واپس راشی نو اول دې جمات ته لارشی تحية المسجد دې او کړی او خه وخت دې هلته کښې چه دوستانو وغیره سره ملاویدو کښې خه تکلیف نه وی. صرف مونځ کول خود هر یو د پاره مندوب دی او د مانځه نه پس کیناستل صرف د هغه چا د پاره دی د چا چه دوستان وغیره زیات وی. د دې باب په حدیث کښې د قدم من السفر ذکر نشته دې. لیکن د امام بخاری رحمته الله علیه په اصولو کښې استدلال بالعموم هم دې. او هم دا حدیث به وړاندې شی په کوم کښې چه د سفر ذکر دې. (حاشیه تقریر بخاری شریف: ۱۶۵/۲).

دَ تَعْلِيْقِ تَخْرِيجِ: دَا تَعْلِيْقِ دَ سِنْدِ سِرِهِ پَخِيلَه اِمَامِ بَخَارِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ پَه صَحِيْحِ الْبَخَارِي كُنْبِي هَم دَ غَزْوَه تَبُوْكِ پَه بِيَانِ كُنْبِي ذِكْرِ كَرِي دِي. پَه كَوْمِ كُنْبِي چَه دَ حَضْرَتِ كَعْبِ بِنِ مَالِكِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَوْ دَ هَغَه دَوُو نُوْرُو مَلِكُرُو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ پَه غَزْوَه تَبُوْكِ كُنْبِي دَ نَه شَرِيكِيْدُو قِصَه بِيَانِ كَرِي شُوِي دَه. هَم پَه دِي كُنْبِي چَه چِرْتَه حَضْرَتِ كَعْبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَ خِيْلِي تَوْبِي تَفْصِيْلِي قِصَه نَقْلِ كَرِه هَم هَلْتَه هَغُوِي دَا ذِكْرِ كَرِي دِي چَه دَ حَضُوْرِيَاكِ دَا مَعْمُوْلُو وُو چَه كَلَه بَه نِي دَ يُو سَفْرِنَه وَاپَسِ تَشْرِيْفِ رَاوْرَلُو نُو دَ تُوْلُو نَه مَخْكَنْبِي بَه نِي جِمَاتِ تَه تَشْرِيْفِ اُوْرَلُو اُو هَلْتَه بَه نِي دَوَه رَكَعْتَه مَوْنُخِ اَدَا كَرُو خَه وَخْتَه پُوْرِي بَه اَيْسَارِ شُو. تَلُوْنَكُو رَا تَلُوْنَكُو سِرَه بَه نِي مَلَاَقَاتِ كُوْلُو اُو دَدِي نَه پَسِ بَه نِي خِيْلِ كُوْرْتَه تَشْرِيْفِ اُوْرَلُو. (١)

دَ تَعْلِيْقِ رَاوِي: پَه دِي تَعْلِيْقِ كُنْبِي هَم يُو رَاوِي دِي:

حَضْرَتِ كَعْبِ بِنِ مَالِكِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: دَا صَحَابِي رَسُوْلِ دِي. دَ دُوِي پُوْرَه نُوْمِ عَمْرُو بِنِ الْقِيْنِ بِنِ كَعْبِ بِنِ سُوَادِ بِنِ غَنَمِ بِنِ كَعْبِ اِبْنِ سَلْمَهِ الْاَنْصَارِي الْخَزْرَجِي الْعَقْبِي الْاِحْدِي دِي. دَ دُوِي نَه رَوَايْتِ كُوْنَكُو كُنْبِي دَ دُوِي خِيْلِ خَامِنِ، عِبْدِ اللّٰهِ، عِبْدِ الرَّحْمَنِ، عِبْدِ اللّٰهِ، مُحَمَّدِ، بَنُو كَعْبِ، جَابِرِ، اِبْنِ عَبَّاسِ، اَبُو اَمَامَه، عَمْرُ بِنِ الْحَكَمِ، عَمْرُ بِنِ كَثِيْرِ بِنِ اَفْلَحِ، اُو دَ دُوِي نَمَسِي عِبْدِ الرَّحْمَنِ بِنِ عِبْدِ اللّٰهِ، وَغَيْرِهِمْ رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ شَامِلِي.

عِبْدِ اللّٰهِ بِنِ اَحْمَدِ بِنِ حَنْبَلِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَرْمَاتِي چَه پَه زَمَانَه دَ سِيْتِ كُنْبِي دَ دُوِي كُنْيَتِ اِبُو الْبَشِيْرِ وُو. دَ اِسْلَامِ نَه پَسِ نَبِي كَرِيْمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَ دُوِي كُنْيَتِ اِبُو عِبْدِ اللّٰهِ كِي خُو ذُو. دِي نَه عِلَاوَه دَ دُوِي دَ كُنْيَتِ بَارَه كُنْبِي يُو قَوْلِ دَ اِبُو عِبْدِ الرَّحْمَنِ هَم دِي.

دَ اِبْنِ اَبِي حَاتِمِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِيَانِ دِي چَه دِي دَ اَهْلِ صَفْهَه نَه وُو دَ بِيْرِ مَشْهُوْرِ شَاعِرُو وُو دَ اِبْنِ سِيْرِيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِيَانِ دِي چَه دَ نَبِي كَرِيْمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَرِي لُوْنِي مَشْهُوْرِ شَاعِرَانِ وُو: حَسَانِ بِنِ ثَابِتِ، عِبْدِ اللّٰهِ بِنِ رُوَاحِه اُو كَعْبِ بِنِ مَالِكِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ. دَ دُوِي دَ پِلَارِ دَ دُوِي نَه عِلَاوَه نُو اَوْلَادِ نَه وُو. دِي دَ هَغَه اَوِيَاؤُ كَسَانُوْنَه وُو چَه پَه بِيْعْتِ عَقْبَه كُنْبِي شَرِيكِ شُو، پَه غَزْوَه بَدْرِ كُنْبِي دُوِي نَه وُو شَرِيكِ شُوِي. دَ هَغِي نَه پَسِ غَزْوَه اِحْدِ اُو نُوْرُو غَزْوَاتُو كُنْبِي شَرِيكِ شُو. پَه غَزَه اِحْدِ كُنْبِي چَه كَلَه دَ نَبِي كَرِيْمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَ شَهَادَاتِ دَ دَرُوغُو خَبْرَه خُوْرَه شُوَه نُو حَضْرَتِ كَعْبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَرْمَاتِي چَه هَغَه وَخْتِ دَ تُوْلُو نَه رُوْمِي سَرِي زَه وُو مَ چَا چَه رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَ وُنْدِي اُو پِيژَنْدَلُو نُو مَا پَه اُوچْتِ آوَازِ سِرَه مُؤْمِنَانُوْتَه دَ نَبِي پَاكِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَ وُنْدِي اُو صَحِيْحِ سَلَامَتِ كِيْدُو زِيْرِي وُرَكُرُو. هَم پَه دِي غَزْوَه كُنْبِي هَغُوِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تَه دَ اَوِيَاؤُ نَه زِيَاْتِ زَخْمُوْنَه لَكِيْدَلِي وُو. بِيَا پَه غَزْوَه تَبُوْكِ كُنْبِي هَم نَه وُو شَرِيكِ شُوِي. بِيَا دَ اُوْرِدِي مُوْدِي (٥٠ هُوْرُخُو) نَه پَسِ اِنَّه تَعَالِي دَ هَغُوِي تُوْبَه قَبُوْلَه كَرِه. دَ كَوْمِي تَفْصِيْلِي قِصَه چَه پَخِيْلَه بِيَانُوِي كَوْمَه چَه اِمَامِ بَخَارِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ پَه خِيْلِ صَحِيْحِ كُنْبِي نَقْلِ

(١) هذا التعليق ذكره البخاري في صحيحه في غزوة تبوك، وهو حديث طويل، برويه عن يحيى بن بكير عن الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عبد الرحمن بن عبد ابن كعب بن مالك: أن عبدالله ابن كعب بن مالك، وكان قائد كعب من بنيه حين عمى، قال: سمعت كعب بن مالك يحدثني تخلف عن غزوة تبوك..... الحديث بطوله، يأتي إن شاء الله تعالى، وفيه: "وأصبح رسول الله قداما، وكان إذا قدم من سفر بدا بالمسجد فرجع فيه ركعتين ثم جلس للناس". الحديث. (عمدة القاري: ٢٩٥/٤).



د صحیح بخاری د دغې اوږد ایمان تازه کونکې حدیث ترجمه په فوائد کثیره باندې د مشتمل کیدو د وچې نه دلته مکمل ذکر کولې شی.

عبدالرحمن بن عبدالله د خپل پلار عبداللہ بن کعب نه چه خپل پلار به نی د نابینا کیدو د وچې مخ نیولو او کړولو به نی روایت کوي چه ما د کعب بن مالک رضی اللہ عنہ نه واوړیدل چه هغوی او وئیل چه زه حضور پاک سره به ټولو جنگونو کښې حاضر ووم. مگر په تبوک او بدر کښې شاته پاتې شوم. مگر په بدر کښې شاته پاتې کیدونکو باندې د الله تعالی عتاب اونه شو. په جنگ بدر کښې د حضور پاک غرض دا وو چه د قریشو د قافلې تعاقب او کړې شی. د بنمنان الله تعالی ناخاپی رامخامخ کړل او جنگ اوشو. زه په لیله العقبه کښې د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شوم. حضور پاک د ټولو نه په اسلام باندې د قائمیدو وعده واخستله او ماته خولیله العقبه د جنگ بدر په مقابله کښې عزیز ده. اگر چه جنگ بدر ته په خلقو کښې زیات شهرت او فضیلت حاصل دی.

او په جنگ تبوک کښې د نه شریکیدو وجه داده چه د دې نه مخکښې چرته هم ما سره دوه سورتی نه وې جمع شوي. مگر په دغه غزوه کښې زه د دوو سورتو مالک جوړ شوم. دې نه علاوه د حضور پاک دا دستور وو چه کله به نی د جنگ خیال کولو نو صفا صفا پته او نښه او خاڼی به نی نه خودلو بلکه څه په گول مول الفاظو کښې به نی ښکاره کول دي دپاره چه نور خلق نی بل مقام او گټری. غرض دا چه کله د جنگ وخت راغلو نو گرمی ډیره سخته وه. لاره ډیره اوږده او بی اوبو او بی گیا وه. د دینمن تعداد زیات وو. لهذا حضور پاک مسلمانان په پوره توگه باندې خبر کړل چه مونږ تبوک ته خو دي دپاره چه تیاری او کړې. هغه وخت حضور پاک سره په گټر شمیر کښې مسلمانان موجود وو مگر څه داسې کتاب وغیره نه وو چه په هغې کښې د ټولو نومونه لیکلې شوي وی. کعب رضی اللہ عنہ وائی چه یو مسلمان داسې نه وو چه په دې جنگ کښې نی شریکیدل نه غوښتل مگر دي سره به نی دا خیال هم کولو چه د چا غیر حاضری حضور پاک ته تر هغه وخته پورې نه شی معلومیدې تر کومې پورې چه وحی رانه شی.

غرض دا چه حضور پاک د جنگ تیاری شروع کړو اودا هغه وخت وو چه میوه پخیدله او به سوری کښې کیناستل ښه لگیدل. ټولو تیاری کولو مگر ما به هر سحر دا سوچ کولو چه زه به تیاری او کړم څه تادی ده؟ زه خو هروخت تیاری کولې شم. دغه شان ورځې تیریدلې. یو سحر حضور پاک روان شو. ما وئیل چه دوی پرېږده چه څی زه به یو ورځ، دوو کښې تیاری او کړم او په لار کښې به دوی سره شامل شم. غرض دا چه بل سحر ما تیاری کول غوښتل مگر اومې نه کړې شو او زه هم داسې پاتې شوم. په دریمه ورځ هم دغه شان اوشو او بیا زما هم دغه حال شو. اوس ټول خلق ډیر لرې وتلی وو. ما خو خل اراده او کړه چه حضور پاک سره ملاؤ شم مگر په تقدیر کښې مې نه وه. افسوس چه دامې کړې وې.

چنانچه د حضور پاک د تلو نه پس چه به زه په مدینه کښې گرځیدم نوماته به یا منافقان ښکاریدل او یا به هغه خلق ښکاریدل څوک چه کمزورې او ضعیفان او بیماران وو. ماته به ډیر افسوس کیدلو. حضور پاک په لاره زه چرته هم یاد نه کړم. البته چه تبوک ته اوزر سیدو او ټولو خلقو کښې کیناستو نو حضور پاک او فرمائیل کعب بن مالک چرته دي؟ د بنی سلمه یو سړی عبداللہ بن انیس رضی اللہ عنہ او وئیل چه یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه خو په خپل حسن او جمال باندې ناز کولو د وچې پاتې شوي دي. نومعاذ رضی اللہ عنہ او وئیل تا ښه خبره اونه کړه. په الله قسم ای د الله رسول! مونږ خو هغه ښه سړی گټرو. حضور پاک چه دا واوړیده نو خاموش شو. د کعب بن مالک رضی اللہ عنہ بیان دي چه کله ماته دا معلومه شوه چه حضور پاک راروان دي نومې سوچ کولو چه څه داسې حیلې او بهانه په لاس راشی چه د حضور پاک د غصې نه ما بیچ کړې شی. بیا ما د خپل کور هوښیارانو خلقو سره مشوره او کړه چه تاسو هم په دې سلسله کښې څه سوچ او کړنی. خو چه کله دا خبره معلومه شوه چه حضور پاک مدینې ته بالکل رانیزدې شوي دي نور ما د زړه نه د دې حیلې دا خیال لرې شو او ما یقین او کړو چه دروغ مې د نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم د غصې نه بیچ کولې نه شی.

سحر حضور پاک مدینې ته تشریف راوړو اود حضور پاک طریقہ داوه چه د سفرته به کله.....

..... واپس شو نو اول به جمات ته تلو او دوه رکعته مونځ به ئی کولو. اوس چه کوم خلق شاته پاتې شوی وو هغوی راتلل شروع شو او خپل خپل عذرونه ئی بیانول او قسمونه ئی خوړل. دا خلق اتیا کسان وو یاددی نه څه زیات. حضور پاک د هغوی نه د دوی عذرونه قبول کړل او د هغوی نه ئی دوباره بیعت واخستو او د هغوی دپاره ئی د مغفرت دعا او کره او د هغوی د زرونو خیالات ئی الله تعالی ته حواله کړل. کعب رضی الله عنه وائی چه زه هم راغلم السلام علیکم می او وئیل. حضور پاک به داسې مسکا سره په کوم کبې چه غصه هم شامله وه جواب را کړو وئې فرمائیل راشه. زه مخې ته لاړم کیناستم. حضور پاک زمانه تپوس او کړو کعب ته ولې شاته پاتې شوی؟ حالانکه تا خود سورلی هم انتظام کړې وو. ما عرض او کړو ستاسو فرمائیل صحیح دی. زه که چرې د بل چا مخې ته ووم نوممکن وه چه هغه ته می څه بهانه وغیره کولو سره دروغ وئیلی وې ځکه چه زه ښه وئیلی هم شم مگر الله گواه دې چه زه پوهیږم که ما دروغ وئیلو سره تاسو راضی کړئې نو صبا به الله تعالی تاسو زمانه ناراضه کړې به دې وجه به زه هم رښتیا وایم که تاسو په ما باندې غصه ولې اونه کړئې. راتلونکې وخت کبې خو به د الله تعالی نه مغفرت او د بخشش امید پاتې وی. په الله قسم زه قصور وار یم حالانکه په مال او دولت کبې څوک هم زما برابر نه دی مگر ماسره ددې هر څه موجودیدو باوجود زه شریک نه شوم.

حضور پاک دې اوریدو سره او فرمائیل کعب صحیح خبره بیان کړه. ښه ده زه او د الله تعالی د حکم په خپل حق کبې انتظار کوه. غرض زه پاسیدم او لاړم نو د بڼی سلمه خلق هم ماسره شو او وئې وئیل چه مونځ خو تراوسه پورې ستا هیڅ گناه نه ده لیدلې. تابه هم د نورو خلقو په شان د حضور پاک په مخکبې څه بهانه پیش کړې وه. نو د حضور پاک دعا او مغفرت به ستا د پاره کافی شوی وې. هغوی یو شان ماته هم دغه وئیل تردې چه زما په خیال کبې راغله چه واپس حضور پاک له لاړشم او اولنې خبره غلطه ثابتولو دپاره څه بهانه پیش کړم. بیا ما د هغوی نه تپوس او کړو چه ایا نور هم څوک شته؟ چا چه زما په شان د خپلې گناه اعتراف کړې دې. هغوی وئیل چه او دوه کسان نور هم دې چاچه اقرار او کړو او حضور پاک هغوی ته هم دغه او فرمائیل څه ئی چه تاته فرمائیلی دی. ما د هغوی د نومونو تپوس او کړو نو وئې وئیل یو مراره بن ربیع عمروی رضی الله عنه او دویم هلال بن امیه واقفی رضی الله عنه دې. دا دواړه نیکان وو او په جنگ بدر کبې شریک شوی وو. د هغوی سره ملاویدل په ما ښه لگیدل. غرض دا چه د دغه دوو کسانو نومونه اوریدو سره زما تسلی او شوه او زه لاړم.

رسول الله صلی الله علیه و آله ټول خلق منع کړی وو چه دغه دريو کسانو سره به څوک خبرې نه کوی. مگر نور شاته پاتې کیدونکو او د دروغو بهانې پیش کونکو دپاره دا حکم نه وو. آخر خلقو زمونځه جدا او سیدل شروع کړه او مونځ داسې شو چه مونځ هډو څوک پیژنی نه. لکه چه زمکه او آسمان بدل شوې وې. غرض ۵۰ شپې په دې کبې دغه شان تیرې شوې. زما دواړه ملگری خو په کور کبې کیناستل مگر زه د همت والا ووم راوتلم به. د جمع په مونځ کبې به شریکیدم، بازار وغیره ته به تلم مگر چا به راسره خبره نه کوله. زه به نبی کریم صلی الله علیه و آله له هم راغلم هغوی به په خپله مصله باندې تشریف فرما وو. ما به سلام کولو او ماته به داسې شبه کیدله چه د حضور پاک شونډې مبارکې خوزیږې کیدې شی د سلام جواب را کوی. بیا به ما د حضور پاک سره نيزدې مونځ کول شروع کړه مگر د سترگې پټولو سره به می حضور پاک ته هم کتل چه حضور پاک څه کوی. کله به چه زه په مانځه ووم نو حضور پاک به ماته کتل او کله چه به زما نظر هغوی سره ملاویدو نو حضور پاک به مخ واړولو. په دې حال کبې موده تیره شوه او زه د خلقو د خاموشی نه تنگ شوم. بیا د خپل تره خوئی حضرت ابو قتاده رضی الله عنه له باغ ته راغلم او سلام می او کړو. د هغه ماسره ډیره مینه وه مگر په الله قسم هغه زما د سلام جواب رانه کړو. ما هغه ته او وئیل ای ابوقتاده ته ما د الله اود هغه د رسول طرفدار گنډې او که نه؟ مگر هغه جواب رانه کړو. بیا ما قسم خوړلو سره هم دغه خبره او کړه مگر جواب ملاؤ نه شو. ما په دریم خل هم دغه او کړه نو ابوقتاده رضی الله عنه صرف دومره جواب را کړو الله اود هغه رسول ته ښه معلومه ده. بیا زه تینگ نه شوم او اوبسکې می روانې شوې او واپس لاړم. زه یوه ورځ بازار کبې روان ووم چه یو نصرانی زمیندار چه د شام د ملک اوسیدونکې وو. د غلې خرڅولو دپاره راغلی وو هغه زما پته د چانه معلوموله نو خلقو زما طرف ته اشاره او کړه چه .....

..... دغه کعب بن مالک رضی اللہ عنہ دی. هغه ماله راغلو او د غسان د نصرانی بادشاه یو خطنی ماته راکړو. په کوم کبني چه ليکلی وو چه ماته معلومه شوي ده چه ستاسو رسول په تا باندي ډيرزياتي کوي حالانکه الله تعالی ته ذليل کړي نه يئ. ته ډير د کار سرې ئی، ته ماله راشه، مونږ به تا ډير په آرام سره اوساتو. ما وئيل دا بل از مینست دی او بیامي هغه خط د اور په تنور کبني واچولو.

اوس لا ۴۰ ورځي تیرې شوې وې او لس ورځې پاتې وې چه د رسول الله ﷺ قاصد حزيمة بن ثابت رضی اللہ عنہ راغلو ماته ئی او وئيل چه رسول الله ﷺ فرماني چه ته د خپلي بي بي نه لرې اوسيره. ما وئيل څه مطلب دي؟ طلاق ورکړم يا څه بل څه او کرم؟ حزيمة رضی اللہ عنہ وئيل بس جدا اوسيره او کوروالی وغيره مه کوه. هم دغه شان حکم زما نورو دوو ملگرو ته هم شوې وو. غرض دا چه ما خپلي بي بي ته او وئيل ته خپلو خپلوانو کړه لاره شه ترکومي چه الله تعالی زما فيصله اونه کړي.

کعب رضی اللہ عنہ وائی چه بيا د هلال بن اميه رضی اللہ عنہ بي بي د حضور پاك په خدمت کبني حاضره شوه وئی وئيل اي د الله رسول هلال بن اميه رضی اللہ عنہ زما خاوند ډير بوډا دي که زه د هغه کار خدمت کوم نو څه گناه خو نشته دي؟ حضور پاك وئيل هيڅ هم نشته مگر هغه صحبت نه شی کولې. هغې عرض او کړو حضور په هغه کبني خوڅه داسې خواهش هم نشته دي. اود کله نه چه دا خبره شوې ده ژاړې او د هغه وخت نه د هغه هم دا حال دي.

کعب رضی اللہ عنہ وائی چه ماته زما رسته دارو. او وئيل چه ته هم حضور پاك له لار شه د خپلي بي بي باره کبني هم داسې اجازت حاصل کړه دي د پاره چه هغه ستا خدمت کوي. لکه څنگه چه د هلال رضی اللہ عنہ بي بي ته اجازت ملاؤ شو. ما وئيل په الله قسم زه چرې هم داسې نه شم کولې. معلومه نه ده چه حضور پاك به څه فرماني.

زه جوان سرې يم د هلال رضی اللہ عنہ په شان ضعيف نه يم. غرض دا چه دي نه پس هغه لس شپې هم تیرې شوې او زه د پنځوستمې شپې د سحر د مونځ نه پس خپل کور سره ناست ووم او داسې بنکاريدله چه ژوند مي سخت شوې دي او زمکه زما د پاره باوجود د وسعت تنگه شوې ده چه په دي کبني د سلم غرنه يو اواز

کونکي په چغه سره او وئيل چه اي کعب بن مالک رضی اللہ عنہ تاته زيرې در کولې شی. د دي اواز په اوريدو سره زه د خوشحالی نه په سجده را پر يو تلم او يقين مي او کړو چه اوس دا مشکل آسان شو. ځکه چه حضور پاك د سحر د مونځ نه پس خلقو ته او فرمائيل چه الله تعالی ستاسو قصور معاف کړي دي. اوس خو خلق ماله

او زما هغه ملگرو له د زيری او مبارکبادنی د پاره راتلل. او يو سرې زبير بن عوام رضی اللہ عنہ خپل اس زغلولو سره ماله راغلو او يو بل سرې د بنی سلمه په سلع غر باندي او ختلو اود هغه اواز زر زما غوږونو ته اورسيدلو. دغه وخت زه دومره خوشحال شوم چه خپلي دوه کپري مي او ويستلې او هغه ته مي ورکړې.

ما سره ددغي نه علاوه نورې څه کپري نه وې. ما د ابوقتاده رضی اللہ عنہ نه دوه کپري واخستې او وامي غوستلې. بيا د حضور پاك په خدمت کبني حاضر شوم. په لاره کبني د خلقو يوه گنډه وه چه ما ته ئی مبارکی راکوله او وئيلي ئی چه د الله تعالی دغه انعام تاته مبارک شه. کعب رضی اللہ عنہ وائی چه زه جمات ته

لازم حضور پاك هلته تشریف فرما وو او نور خلق هم ناست وو. طلحه بن عبدالله رضی اللہ عنہ زما په ليدو رامنډې کړې ماسره ئی لاس ملاؤ کړو، بياني مبارکی راکړه. په مهاجرينو کبني د اکار صرف طلحه رضی اللہ عنہ او کړو. الله گواه دي چه زه به د هغه دا احسان کله هم هير نه کرم. کعب رضی اللہ عنہ وائی چه بيا ما حضور پاك ته

سلام او کړو اود حضور پاك مخ مبارک د خوشحالی نه پر قيدو نو حضور پاك او فرمائيل اي کعب دا نن ورځ دي تاته مبارک شی کومه چه د ټولو نه بڼه ده ستاد پيدا کيدو نه تر نن پوري. ما عرض او کړو چه حضور دا معافی د الله تعالی د طرف نه شوې ده که ستاسو د طرف نه؟ وئی فرمائيل د الله تعالی د طرف

نه معاف کړې شوې. او حضور پاك چه به کله خوشحاله وو نو مخ مبارک به ئی د سپوږمۍ په شان پر قيدو. او مونږ به د حضور پاك خوشحالی پيژندله.

بيا ما د حضور پاك مخي ته کيناستو سره عرض او کړو اي د الله تعالی رسوله زه د خپل خلاصی او معافی په شکريه کبني خپل ټول مال د الله اود هغه د رسول ﷺ د پاره خيرات نه کرم؟ حضور پاك او فرمائيل لې شان او کړه او څه د خپل خان د پاره هم اوساته ځکه چه دا ستا د پاره فائده مند دي. ما عرض او کړو تيك ده زه خپله د خيبر حصه پاتې کوم. ما بيا عرض او کړو اي د الله رسوله ما د رښتيا وئيلو په

وجه خلاصي بيا موندو. اوس به زه ټول ژوند کبني هم رښتيا وایم. په الله قسم زه نه شم وئيلي.....

د ابن اسحاق رضی اللہ عنہ بیان دی چه کله د مدینہ منورہ طرف ته هجرت اوشو نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د حضرت طلحه بن عبید اللہ رضی اللہ عنہ او د هغه په مینخ کنبی مواخات قائم کړې وو. خود حضرت غروه رضی اللہ عنہ بیان دی چه د حضرت زبیر رضی اللہ عنہ او حضرت کعب رضی اللہ عنہ په مینخ کنبی مواخات قائم کړې شوی وو. د ابن سیرین رضی اللہ عنہ بیان دی چه حضرت کعب رضی اللہ عنہ دوه داسې شعرونه او وئیل چه د قبیلہ دوس د اسلام راوړلو سبب جوړ شو، هغه شعرونه دادی

قضیانا من تهامة کل وتر وغیبرتم اغمدنا السیرفا

غیرها، ولرنطقت لقات قواطعهن: دوسا اذ لقیفا

یعنی مونږ د تهامه او خیبر نه هر طاق کار کولو سره تورې په تیکو کنبی کړې که چرې د هغې ژبې وې نو مونږ ته به ئی ویشلی وی، چه دوس او ثقیف والو لږه به ددې تورو نه زیاتی پرې کونکې وې

کله چه قبیلہ دوس ته دا خبره معلومه شوه نو هغوی او وئیل چه د خپل بچاؤ سامان تیار کړنی داسې نه وی چه کوم آنت په ثقیف باندي راغلي دي هسي نه چه په تاسو باندي راشی کله چه حضرت خلی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ شهید کړې شو هغه وخت دوی وفات شوه د معاویه رضی اللہ عنہ په خلافت کنبی نایینا شوې وو. بخاری رضی اللہ عنہ ددوی د وفات مختصر ذکر کړې دی چه هغوی د حضرت عثمان رضی اللہ عنہ مرثیه کړې ده. مونږ ته د حضرت علی او معاویه رضی اللہ عنہ د جنگ باره کنبی د هغوی هیخ خبره معلومه نه شوه. د بغوی رضی اللہ عنہ قول دی چه ماته دا خبره معلومه شوې ده چه هغه د حضرت معاویه رضی اللہ عنہ په خلافت کنبی په شام کنبی وفات شوې دي (١)

..... چه د رنستیا وئیلو په وجه الله تعالی په چا باندي داسې مهربانی فرمائیلې وی لکه څنگه ئی چه په ما کړې ده. د هغه وخت نه کله نه چه ما رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته رنستیا خبره کړې ده بیا د هغه وخت نه تردې وخته پورې ما دروغ نه دی وئیلی. او زه دا امید کوم چه الله تعالی به ما د دروغو نه بچ کوی او الله تعالی به خپل رسول صلی اللہ علیہ وسلم باندي دا آیت نازل کړو. (لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْمُهَاجِرَاتِ) [التوبة: ١١٧] یعنی الله تعالی نبی، مهاجرین او انصار معاف کړل په الله قسم د اسلام قبلولو نه پس ما ددې نه لونی څه انعام، احسان نه دی لیدلې چه الله تعالی د حضور پاک په مخکښی ماته د رنستیا وئیلو توفیق را کړو او زدی د هلاک نه بچ کړم کس د نورو خلقو په شان په زه هه تباہ او هلاک شوی ووم چا چه حضور پاک ته دروغ او وئیل. د دروغو قسم ئی او خورلو نو بیا دا آیت نازل شو (سَيُخَلِّفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ آذَانَ الْقُرْبَىٰ) [التوبة: ١٩٥] یعنی دا خلق دروغ ژن دی

کعب رضی اللہ عنہ وائی مونږ دريواره د دغه منافقانونه جدا يو کومو چه نه ده معلومه چه څومره بهانې جوړې کړې او د دروغو قسمونه ئی او خورل او حضور پاک د هغوی خبره قبوله کړه او د هغوی نه ئی بیعت واخستلو او د مغفرت دعائی ورته او کړه خو زموږ معامله ئی پرېخوده تردې چه الله تعالی دا آیت نازل کړو: (وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا) [التوبة: ١١٨] یعنی دغه درې ئی معاف کړل کوم چه شاته پاتې شوی وو. ددې نه هغه خلق مراد نه دی چه په قصد سره پاتې شوي وو بلکه مطلب دادې چه مونږ د هغوی نه شاته پاتې شو چا چه قسمونه او خورل، عذر ئی بیان کړو، او رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغوی عذر قبول کړو. (صحيح البخاری، کتاب المغازی، غزوة تبوک، باب: حديث كعب بن مالك، وقول الله تعالى عزوجل: (وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا) رقم الحديث: ٤٤١٨)

(الإصابة: ٤٥٦/٥ دارالكتب العلمية، معرفة الصحابة لأبي نعيم: ٢٣٦٦/٥. أسد الغابة: .....



د تعلیق مقصد: د مذکورہ تعلیق مقصد دادې چه د نبی اکرم ﷺ د عمل په ذریعہ خپله مدعا یعنی ترجمه الباب ثابت شی. چنانچه کعب بن مالک رضی اللہ عنہ ددې خبرې ذکر او کړو چه نبی کریم ﷺ به د سفر نه واپس راتللو نوجمات ته به ئی تشریف اورلو او هلته به ئی دوه رکعتہ مونخ کولو. ددې تعلیق نه پس چه امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کوم حدیث راوړی دی په هغې کسبې د نبی کریم ﷺ د قول نه د دغه دوو رکعتو د سفر ثبوت دې. یعنی تعلیق سره خودا وهم کیدې شو چه دا د نبی کریم ﷺ فعل دې په دې وجه به داد حضور پاک خصوصیت وی لیکن په حدیث کسبې د قولی حکم کیدو د وجې دا احتمال ختم شو. ( )

حدیث باب [حدیث نمبر ۴۳۲]

۳۳۳- حَدَّثَنَا خَلَادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا مِعْرَقٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دِنَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ - قَالَ مِعْرَقٌ أَرَأَيْتَ قَالَ ضَمَى - فَقَالَ «صَلِّ رَكَعَتَيْنِ». «وَكَانَ لِي عَلَيْهِ دَيْنٌ فَقَضَانِي وَزَادَنِي.

د هدیث ترجمه: حضرت جابر رضی اللہ عنہ او فرمائیل چه زه د نبی کریم ﷺ په خدمت کسبې حاضر شوم. حضور پاک په جمات کسبې ناست وو. مسعر او وئیل چه زما خیال دې چه محارب

..... ۴۶۰/۴ - ۴۶۱. الاستیعاب فی معرفة الأصحاب: ۱۳۲۳/۳. مختصر تاریخ دمشق لابن عاکر: ۱۷۶/۵۰.

سیر اعلام النبلاء: ۵۲۳/۲. التاريخ الكبير: ۲۱۹/۷. الجرح والتعديل: ۱۶۰/۷. تهذيب التهذيب: ۴۴۰/۸.

( فتح الباری: ۶۹۵/۱ )

( أخرجه البخاری فی صحیحہ فی کتاب العمرة، باب: لا یطرق أهله إذا بلغ المدينة، رقم الحدیث: ۱۸۰۱. وفی البيوع، باب شراء الدواب والحمير، رقم الحدیث: ۲۰۹۷. وفی الوکالة، باب إذا وكل رجل رجلاً أن يعطى شيئاً ولم يبين كم يعطى فأعطى على ما يتعارفه الناس، رقم الحدیث: ۲۳۰۹. وفی الاستقراض، باب: من اشترى بالدين وليس عنده ثمنه، رقم الحدیث: ۲۳۸۵. وباب: حسن القضاء، رقم الحدیث: ۲۳۹۴. وباب: الشفاعة فی وضع الدين، رقم الحدیث: ۲۴۰۶. وفی المظالم، باب: من عقل بعيه على البلاط أو باب المسجد، رقم الحدیث: ۲۴۷۰. وفی الهبة، باب: الهبة المقبوضة وغير المقبوضة والمقسومة وغير المقسومة، رقم الحدیث: ۲۶۰۴-۲۶۰۳. وفی الشروط، باب: إذا اشترط البائع ظهر الدابة إلى مكان، رقم الحدیث: ۲۷۱۸. وفی الجهاد، باب: من ضرب دابة غيره في الغزوة، رقم الحدیث: ۲۸۶۱. وباب: استئذان الرجل الإمام، رقم الحدیث: ۲۹۶۷. وباب: الصلاة إذا قدم من سفر، رقم الحدیث: ۳۹۸۷. وباب: الطعام عند القدوم، رقم الحدیث: ۳۰۸۹، ۳۰۹۰. وفی السغازی باب: ﴿ إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنَكُمْ أَنْ تَفْلُكَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ﴾ رقم الحدیث: ۴۰۵۲. وفی النکاح، باب: تزويج الثيبات، رقم الحدیث: ۵۰۸۰-۵۰۷۹. وباب لا یطرق أهل ليلها إذا أطال الغيبة مخافة أن يخونهما ويلتصم عشراهم، رقم الحدیث: ۵۲۴۳. ۵۲۴۴. وباب: طلب الولد، رقم الحدیث: ۵۲۴۵-۵۲۴۶. وباب: تستحد المغيبة وتمشط الشعثة، رقم الحدیث: ۵۲۴۷. وفی النفقات، باب: عون المرأة زوجها فی ولده، رقم الحدیث: ۵۳۶۷. وفی الدعوات، باب: الدعاء للمتزوج، رقم الحدیث: ۶۳۸۷. و مسلم فی صحیحہ، فی صلاة المسافرين، باب: استحباب تحية المسجد برکعتين ركراة الجلوس قبل صلاتهما، وأنها مشروعة فی جميع الأوقات، رقم الحدیث: ۷۱۵. وفی جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: فی الصلاة، القسم الثاني: فی النوافل المقرونة بالأوقات، الفصل الرابع: فی صلوات متفرقة، تحية المسجد، رقم الحدیث: ۴۳۵۴، ۲۴۹/۶.

اوونیل چه د چاشت په وخت نو حضور پاک (حضرت جابر رضی الله عنه ته) او فرمائیل چه دوه رکعته مونخ او کړه. (حضرت جابر رضی الله عنه او فرمائیل چه) زما خه قرضه نبی کریم صلی الله علیه و آله پورې وه نو حضور پاک ماته هغه قرضه ادا کړه (او د هغه مقدار نه) ئی نور زیات هم راکړه. تو اجم رجال: د مذکورہ حدیث په سند کنبی خلور راویان دی:

① خلاد بن یحیی رضی الله عنه: دا ابو محمد خلاد بن یحیی ابن صفوان الکوفی السلمی رضی الله عنه دی. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الغسل، باب: من بدأ بشق رأسه الأيمن فی الغسل کنبی تیر شوی دی. (۱)

② معر رضی الله عنه: دا ابو مسلمه مسعر بن کدام بن ظهیر بن عبیده بن الحارث الهمدانی العامری الکوفی رضی الله عنه دی. د دوی تفصیلی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء باب: الوضوء بالماء کنبی تیر شوی دی. (۲)

③ مُحارب بن دثار رضی الله عنه: د دوی پوره نوم مُحارب بن دثار بن گردوس بن قرواش السدوسی الکوفی رضی الله عنه دی. دې د یو لوئی جماعت نه د حدیث روایت کوی. په دغه جماعت کنبی جابر بن عبد الله، ابن عمر، عبد الله بن یزید الخطمی، اسود بن یزید رضی الله عنه شامل دی. او د دوی نه روایت کونکو کنبی مسعر، زبید الیامی، شعبه، ثوری، قیس بن ربیع رحمهم الله اویو لوئی جماعت شامل دی.

دې د کوفی یو لوئی نوموړی قاضی وو. سفیان ثوری رضی الله عنه فرمائی چه ما د مُحارب بن دثار نه افضل خوک نه دې لیدلې. احمد بن حنبل رضی الله عنه او یحیی بن معین رضی الله عنه د دوی توثیق کړی دی. ابن عیینه رضی الله عنه وائی چه ما مُحارب بن دثار په جمات کنبی کیناستو سره فیصله کونکې لیدلې دی.

عبد الله بن ادريس رضی الله عنه د خپل پلار نه روایت کوی چه هغه حکم رضی الله عنه او حماد بن سلیمان رضی الله عنه د مُحارب بن دثار رضی الله عنه د فیصلو والا مجلس کنبی ناست لیدلی دی. یو د هغه نه نبی طرف ته او بل گس طرف ته ناست وو. د مُحارب بن دثار رضی الله عنه وفات ۱۱۶ هجری کنبی شوی دی. (۳)

④ جابر بن عبد الله رضی الله عنه: دا مشهور صحابئ رسول حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه دی. د دوی احوال کشف الباری، کتاب الوضوء، باب: من لم یرالوضوء إلا من المغربین، من القبل والظهر کنبی تیر شوی دی. (۴)

① کشف الباری، کتاب الغسل، باب: من بدأ بشق رأسه الأيمن فی الغسل

② کشف الباری، کتاب الوضوء باب: الوضوء بالماء.

③ سیر اعلام النبلاء: ۲۱۷/۵. التاريخ الكبير للبغاري: ۲۸/۷. الجرح والتعديل: ۴۱۶/۸. تاريخ الإسلام: ۲۹۷/۴. میزان الاعتدال: ۴۴۱/۳. تهذيب التهذيب: ۴۹/۱۰. تاريخ دمشق لابن عساکر: ۵۴/۵۷. إكمال تهذيب الكمال:

۸۷/۱۱ الطبقات الكبرى لابن سعد: ۳۰۷/۶.

④ کشف الباری کتاب الوضوء، باب: من لم یرالوضوء إلا من المغربین، من القبل والظهر.

د حدیث شرح:

قوله: قال معرارة قال: ضعی: دا کلام مدرج دې یعنی داد راوی حدیث خپل کلام دې د حدیث حصه نه ده. آراهه د همزې په ضمی سره د اظن په معنی دې او د ه ضمیر مرجع محارب بن دثار رضی الله عنه دې. (۱) مطلب به داشی چه محارب رضی الله عنه د حضرت جابر رضی الله عنه نه روایت کولو سره دا خبره او کره چه زه کله د نبی کریم صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شوم نو هغه د چاشت وخت وو. (۲)

قوله: وكان لي عليه دين: دا اکثر و نساخو په روایت کښې هم دغه الفاظ دي. البته د حموی په روایت کښې "وكان له" لفظ دې. په دې صورت کښې د ه ضمیر مرجع جابر بن عبد الله رضی الله عنه دې. یعنی "وكان لجابر على النبي صلى الله عليه وسلم دين". دا دین د حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه د اوبن قیمت وو کوم چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د هغه نه اخستی وو. اوداهم وئیلی شوی دی چه د حموی په دې روایت کښې د متکلم ضمیر نه د غائب ضمیر طرف ته التفات شوې دې. یعنی دا اکثر و په روایت کښې "وكان لي" په ضمیر متکلم سره وو او د حموی په روایت کښې د ضمیر متکلم نه ضمیر غائب طرف ته التفات او شو یعنی "وكان له". (۳) علامه نووی رحمته الله علیه فرمائی چه دا دوه رکعت د سفر نه واپس راتلونکی دپاره دی کوم چه د تحية المسجد نه جدا دی. (۴)

د حدیث د ترجمة الباب سره مناسبت: په دې حدیث شریف کښې د سفر نه د واپسې ذکر نشته دې حالانکه په ترجمة الباب کښې دا قید دې چه د سفر نه په واپسې باندي دې دوه رکعت مونه او کرې شی. لیکن هم په صحیح بخاری کښې تفصیلی روایت موجود دي په کوم کښې چه د دې خبرې تصریح هم شته چه نبی کریم صلی الله علیه و آله حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه ته دا حکم د هغه د سفر نه په واپس راتلو باندي ورکړې وو. (۵)

(۱) فتح الباری: ۶۹۵/۱ عمدة القاری: ۲۹۶/۴.

(۲) شرح الکرمانی: ۱۰۳/۴.

(۳) فتح الباری: ۶۹۵/۱ عمدة القاری: ۲۹۶/۴.

(۴) شرح النوری علی صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة الضحی وأن أقلها رکعتان، رقم الحدیث:

۲۲۷/۵، ۷۱۷.

(۵) حدثنا محمد بن بشار، حدثنا عبدالوهاب، حدثنا عبيدالله، عن وهب بن كيسان، عن جابر بن عبدالله رضي الله عنهما، قال: كنت مع النبي صلى الله عليه وسلم في غزاة، فقاطبأبي جملی وأعبأ، فأتى على النبي صلى الله عليه وسلم، فقال: جابر؟ فقلت: نعم، قال: ما شأنك؟ قلت: أبطأ على جملی وأعبأ، فتلخفت، فنزل يخجنه بيخجنه، ثم ال: إرکب، فركبت، فلقد رأيتُه أكفُه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم، قال: تزوجت، قلت: نعم، قال: بكرأ أم نبيأ؟ قلت: بل نبيأ، قال: أفلا جارية، تُلَاعِبُهَا وتلَاعِبُكَ، قلت: إن لي أخوات، فأحببت أن أتزوج امرأةً تجتمعهن، وتَمْسُطُهُنَّ، وتَقْرَمُ عليهن، قال: أما إنك قادم، فإذا قدمت، فالكيس الكيس، ثم قال: أتبيع جملك؟ .....

علامه کرمانی رحمته اللہ علیہ فرمائی ہے کہ چرتہ خوک دا سوال اوکری چه په دي حديث او ترجمه الباب کنبی خه مناسبت دي؟ (په دي توگه چه په ترجمه کنبی خود سفر نه په راتلو سره په جمات کنبی د مونخ کولو بيان دي او په دي روايت کنبی خود سفر نه د راتلو ذکر نشته دي). نو د دي جواب به دا ورکوم چه دا حديث د هغه اوږد حديث يوه تکړه ده کوم چه د صحيح بخاری په کتاب البيوع او نورو ديرو ابوابو کنبی موجود دي. او په هغه اوږد روايت کنبی دا خبره موجود ده چه زه په يوه غزوه کنبی نبی کریم ﷺ سره ووم. هم په دغه سفر کنبی حضور پاک مانه د يوې اوقيه چاندنی بدله کنبی زما او بن واخستو. بيا رسول الله ﷺ د غزوي نه واپس راغلو او زه د سحر په وخت (د چاشت په وخت کنبی) واپس راوړسيدلم نو نبی کریم ﷺ مې د جمات په دروازه کنبی اوليدلو. نبی کریم ﷺ تپوس اوکړو چه هم دي وخت راوړسيدي؟ نو ما جواب ورکړو آوجی. بيا نبی کریم ﷺ حضرت بلال رضي الله عنه ته او فرمائيل چه يوه اوقيه د چاندنی وزن اوکړه نو هغه وزن اوکړو. نو د (نبی کریم ﷺ) په وينا باندي، ئی په وزن کنبی ټيټه يعنی درنه او تلله (يعنی زما د قيمت نه ئی زيات ماله راکړو). (۱)

د حديث مبارک نه مستفاد امور او ادا: د دي حديث نه ډير فوائد مستنبط کيږي، چونک دا تکړه ده د يو اوږد حديث، په دي وجه د ټولو فوائدو بيان خو به هم په متعلقه ځانې راځي. فوري به هم د هغه حصې د فوائدو بيان وي کوم چه د ترجمه الباب لاندې ذکرده. مثلاً

① د سفر نه راتلونکی سړی دپاره مستحب دی چه هغه واپس راشی نو اول دي دوه رکعته مونخ اوکړی بيا دي کور ته ځي.

② هم د سحر وخت کنبی د سفر نه د واپس کيدو کوشش پکار دي.

③ کوم سړی چه مشروي او د هغه په واپس راتللو باندي د خلقو خواهش وي چه هغه سره ملاقات اوکړی، زيارت او مصافحه وغيره اوکړی نو داسې سړی له پکار دي چه واپس راشی خلقو سره دي نيزدي په څه ځانې، بهتر داده چه په جمات کنبی ايسار شی دي دپاره چه خلق د هغه سره ملاقات اوکړی بيا دي هغه خپل کور ته ځي لکه چه په مذکوره معامله کنبی نبی کریم ﷺ اوکړل.

④ چه د قرض د ادا کولو بندوبست وي نو په دي کنبی تاخير نه دی کول پکار فوري ادا کول پکار دی.

⑤ افضل دادی چه کله د چا د قرض ادا کړې شی نو څه دي زياتی ورکړې شی چه د هغه د

..... قلت: نعم، فاشتره مني بأوقية، ثم قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم قبلي، وقدمتُ بالفداء، فجئنا إلى المسجد، فوجدته على باب المسجد، قال: الآن قدمت؟ قلت: نعم، قال: فدع جملك، فادخل، فصل ركعتين، فدخلتُ فصليتُ، فأمر بلالا أن يزن له أوقية، فوزن لي بلال، فأرجع لي في الميزان، فانطلقتُ حتى وكبتُ، فقال: ادع لي جابراً، قلت: الآن يرد على الجمل، ولم يكن شئني أبغض إلى منه، قال: خذ جملك ولك ثمنه. (صحيح البخاري، كتاب البيوع، باب: شراء الدواب والحمر، رقم الحديث: ۲۰۹۷).

(شرح الكرمانی: ۱۰۳/۴ فتح الباری: ۶۹۵/۱۲ عمدة القاری: ۲۹۵/۴)



احسان بدله شی. لیکن دا په هغه صورت کښې دی چه د مخکښې نه شرط نه وی ځکه چه که هغه زیاتوالې مشروط شو نو دا به سود شی. (۱)

## ۲۷- بَابُ: إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكَعَتَيْنِ

د ابا ب دې چه کله تاسو کښې یو سرې جمات ته داخل شی نو هغه له پکار دی چه د کیناستو نه وړاندې دوه رکعتې (تحية المسجد) او کړې د دې ترجمه الباب باره کښې مختلفې نسخې دی. بعضو کښې هم داسې دی څنگه چه پورته ذکر شو او بعضو کښې دی: "إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكَعَتَيْنِ" او بعضو کښې دی: "إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ" کښې فاء کلمه د "إِذَا" شرطیه په جواب کښې ده. (۲)

د ترجمه الباب مقصد: په دې ترجمه الباب سره امام بخاری رحمته الله علیه د تحية المسجد استحباب بیانوی. چنانچه د دې دپاره هغوی هم د حدیث الفاظ ترجمه الباب جوړولو سره پیش کړې دی. د دې ترجمې د الفاظو یا د حدیث د الفاظو نه پنځه مسئلې ثابتېږي. دوه مسئلې د "إِذَا دَخَلَ" نه، یوه مسئله د "فَلْيَرْكَعْ" نه او دوه مسئلې د رکعتین نه. دا ټولې مسئلې نمبر وار لاندې ذکرې کولې شی:

په مکروه وختونو کښې د تحية المسجد حکم: د ټولو نه اولنی مسئله کومه چه د "إِذَا دَخَلَ" نه ثابتېږي هغه داده چه "إِذَا" ظرفیه دې د کوم تقاضا چه مخې ته کولو سره ظاهري مطلب دا راوځي چه کوم وخت هم په جمات کښې داخل شی نو تحية المسجد دې ادا کړي. که هغه مکروه او ممنوع وخت وی او که مباح وخت وی. چنانچه په دې مسئله کښې د ائمه کرامو اختلاف شوي. جمهور فقهاء مثلاً: امام ابو حنیفه رحمته الله علیه (۳) امام مالک رحمته الله علیه (۴) او امام

(۱) شرح النووي علی صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب: استحباب صلاة الضحی وأن أقلها رکعتان، رقم الخدیث: ۷۱۷، ۲۲۷/۵، شرح الکرمانی: ۱۰۳/۴.

(۲) مذکوره باب چونکه د کشف الباری د مذکوره جلد آخری باب دی. په دې وجه به دې مقام باندې د دې امر تجدید ضروری معلومېږي چه د کشف الباری د پاره منتخب کړې شوي د "الدکتور مصطفی ديب البغا" والا نسخې مطابق د دې باب نمبر ۲۷ دې خو په نورو نسخو کښې کوم چه فتح الباری یا عمدة القاری کښې استعمال کړې شوي دی د هغې مطابق د دې باب نمبر ۶۰ دی. عمدة القاری: ۴/۲۹۶، إرشاد الساری: ۲/۱۰۳.

(۳) المبسوط للسرخسی، کتاب الصلاة، باب: مواظبت الصلاة، ۱۵۳/۱، بدائع الصنائع، کتاب الصلاة، فصل: بیان ما یکره من التطوع: ۲۹۶/۱، شرح مختصر الطحاری للجصاص، کتاب الصلاة، باب المواظبت: ۵۴۲/۱.

(۴) الکافی فی فقه أهل المدينة، کتاب الصلاة، باب: الأوقات التي تکره فيها عندنا النوافل: ۱۹۶/۱، التاج والإکلیل لمختصر خليل، کتاب الصلاة، باب: فی صلاة التطوع: ۳۷۴/۲، الفواکه الدوانی علی رساله ابن ابي زيد، کتاب الصلاة، باب: أقل الشفع: ۲۰۲/۱، د دخول نه مراد کیناستو دپاره طهارت سره داخلیدل، چه مکروه وخت نه وی نو د کیناستو نه مخکښې مستحب دی واجب نه دی، که چرې کیناستو نو بیا هم.....

أحمد بن حنبل رضي الله عنه (١) دَدِي خَبِرِي قَائِل دِي چِه كِه دَ جَمَات دَ دَاخِلِيدُو پِه وَخْت دَ مَكْرُوهِ وَخْتُونُونِه يُو وَخْت نِه وِي نُو تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ اِدَا كُولِ مُسْتَحَبِ دِي اَوَكِه چِرِي مَكْرُوهِ وَخْت وِي نُو هَغِه وَخْت تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ اِدَا كُولِ مَمْنُوعِ دِي.

امام شافعي رضي الله عنه كَلِمَه دَ "إِذَا" عَمُومِ مَخِي تِه كِيخُودُو سِرِه دَدِي خَبِرِي قَائِل دِي چِه دَ جَمَات دَ دَاخِلِيدُو كُومِ يُو وَخْت هَمِ وِي تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ اِدَا كُولِ جَائِزِ دِي. (٢)

امام أحمد بن حنبل رضي الله عنه پِه مَكْرُوهِ وَخْتُونُونِ كِنْسِي دَ تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ پِه عَدَمِ جَوَازِ كِنْسِي دَ جَمْهُورِو سِرِه دِي لِيكِنِ دَ جَمْعِي دَ خَطْبِي پِه وَخْت جَمَاتِ تِه دَ دَاخِلِيدُو پِه صُورَتِ كِنْسِي دَ تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ پِه جَوَازِ كِنْسِي دَ اِمَامِ شَافِعِي رضي الله عنه سِرِه دِي، اَوَدَ جَمْهُورِو پِه نِيَزِ هَغِه وَخْت هَمِ تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ جَائِزِ نِه دِي. (٣)

دویمه مسئله: تحية المسجد صرف په داخلیدونکی باندې دي، او که تیریدونکی باندې هم؟

إِذَا دَخَلَ نِه دَوِيْمَه مَسْئَلَه دَا پِيْدَا كِيْرِي چِه پِه كُومِ قَسْمِ دَاخِلِيدُو سِرِه دَ تَحِيَةِ الْمَسْجِدِ حَكْمِ مَتَوَجِه كِيْرِي؟ خُكِه چِه دَاخِلِيدَلِ خُو پِه عَامِ تِرُكِه دَ عِبَادَتِ دَ پَارِه وِي اَوَدَدِي نِه عِلَاوَه كَلِه صِرْفِ دَ مَرُوزِ دَ پَارِه وِي اَوَكَلِه دَ كِيْنَا سَتُو دَ پَارِه. نُو پِه دِي بَارِه كِنْسِي دَ جَمْهُورِ فُقَهَاؤِ، اِمَامِ اِبُو حَنِيفَةَ رضي الله عنه (٤)

..... دا فوت نه دي. (تنبيه): علم من كلام المصنف أن المار أر الداخل على غير وضوء أو في وقت نهى لا تحب التحية في حقه صلاة، وإنما يستحب له أن يقول أربع مرات: سبحان الله والحمد لله ولا إله إلا الله والله أكبر. قال سيدي أحمد زروق: ينبغي أن يقولها في أوقات النهي، قال الحطاب: وهو حسن لمكان الخلاف، لأن التحية بمعنى الصلاة وإن سقطت لا يسقط بدلها. (الشرح الكبير للشيخ الدردير وحاشية الدسوقي، كتاب الصلاة، في بيان حكم صلاة النافلة: ٣١٣/١).

(١) المغني لابن قدامة، كتاب الصلاة، فصل: الإنصات من حين يأخذ الإمام في الخطبة: ٢٣٧/٢. المحرر في الفقه على مذهب الإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، باب: صلاة الجمعة: ١٥٢/١. الشرح الكبير على متن المنقح، كتاب الصلاة، مسألة: ومتى سجد بعد السلام جلس فتشهد: ٧٣٩/١. الحاوي الكبير، كتاب الصلاة، فصل: ٤٢٩/٢.

(٢) التنبيه في الفقه الشافعي، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ٣٥/١. الوسيط في المذهب، كتاب الصلاة، الطرف الثالث في السنن والآداب: ٢٨٣/٢. البيان في مذهب الإمام الشافعي، كتاب الصلاة، مسألة: تحية المسجد: ٢٨٦/٢. المجموع شرح المذهب، كتاب الصلاة، باب: صفة الصلاة: ٢٥٥/٣. المجموع: مسائل مهمة تتعلق بصلاة الليل: ٥١/٤. أسنى المطالب في شرح روض الطالب: ٤٨٦/١.

(٣) المغني لابن قدامة، كتاب الصلاة، فصل: الإنصات من حين يأخذ الإمام في الخطبة: ٢٣٧/٢. المحرر في الفقه على مذهب الإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، باب: صلاة الجمعة: ١٥٢/١. الشرح الكبير على متن المنقح، كتاب الصلاة، مسألة: ومتى سجد بعد السلام جلس فتشهد: ٧٣٩/١. الإقناع في فقه الإمام أحمد بن حنبل، فصل: يسن أن يقتسل للجمعة: ١٩٨/١.

(٤) المبسوط للسرخسي، كتاب الصلاة، باب: مواقيت الصلاة: ١٥٣/١. بدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل: بيان ما يكره من التطوع: ٢٩٦/١. شرح مختصر الطحاوي للجصاص، كتاب الصلاة، باب المواقيت: ٥٤٢/١.

امام شافعي رحمته الله (١) او د امام احمد بن حنبل رحمته الله (٢) په نيزجمات ته داخليدل چه كوم مقصد دپاره هم وي نو تحية المسجد به مستحب به وي.

او د امام مالك رحمته الله په نيزكوم سرې چه جمات ته د عبادت وغيره دپاره داخل شي دهغه دپاره تحية المسجد مستحب دي او هغه سرې چه جمات كښې صرف تيريدل غواړي، جمات كښې د كيناستو يا په عبادت وغيره كښې دمشغوليدو اراده شي نه وي نو دهغه دپاره دا مستحب نه دي. (٣)

دريمه مسئله: تحية المسجد واجب دي كه مستحب؟ دريمه مسئله د "فليركع" نه پيدا كيږي چه دا دوه ركعته مونخ واجب دي او كه مستحب؟ په دي باره كښې ظاهريه د وجوب قائل دي. (٤)

(١) الحاروي الكبير، كتاب الصلاة، فصل: ٤٢٩/٢. التنبية في الفقه الشافعي، كتاب الصلاة، باب: صلاة لتطوع: ٣٥/١. الوسيط في المذهب، كتاب الصلاة، الطرف الثالث في السنن والآداب: ٢٨٣/٢.  
(٢) الإقناع في فقه الإمام أحمد بن حنبل، فصل: يسن أن يقتل للجمعة: ١٩٨/١. الشرح الكبير على متن المنع، كتاب الصلاة، مسألة: وكفى سجد بعد السلام جلس فتشهد: ٧٣٩/١. المغني لابن قدامة، كتاب الصلاة، فصل: الإنصات من حين يأخذ الإمام في الخطبة: ٢٣٧/٢.

(٣) حاشية الصاروي على الشرح الصغير، كتاب الصلاة، النوافل السندوية والרגائب: ٤٠٥/١. الكافي في فقه أهل المدينة، كتاب الصلاة، باب: الأوقات التي تكره فيها عندنا النوافل: ١٩٦/١. التاج والإكليل لمختصر خليل، كتاب الصلاة، باب: في صلاة التطوع: ٣٧٤/٢. الفواكه الدواني على رسالة ابن أبي زيد، كتاب الصلاة، باب: أقل الشفع: ٢٠٢/١.  
(٤) اتفق جماعة أهل الفتوى على أن تأويل هذا الحديث مسمول على الندب، والإرشاد مع استحبابهم الركوع لكل من دخل المسجد، وهو طاهر، في وقت تجوز فيه النافلة. قال مالك: ذلك حسن وليس بواجب. وأوجب ذلك أهل الظاهر فرضاً على كل داخل في وقت تجوز فيه الصلاة، وقال بعضهم: ذلك واجب في كل وقت، لأن فعل الخير لا يمنع منه إلا بدليل لا معارض له.

قال الطحاوي: وحجة الجماعة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم أمر سَلِيكًا حين جاء يوم الجمعة وهو يخطب أن يركع ركعتين، وأمر مرةً أخرى رجلاً رآه يتخطى رقاب الناس بالجلوس ولم يأمره بالركوع، حدثنا بحر بن نصر، حدثنا عبدالله بن وهب، عن معاوية بن صالح، عن أبي الزاهرية، عن عبدالله بن بسر قال: جاء رجل يتخطى رقاب الناس في يوم الجمعة، فقال له رسول الله: "اجلس فقد أذيت وأنت"، فهذا يخالف حدث سليك، واستعمال الأحاديث هو على ما تأولها عليه جماعة الفقهاء.

قال الطحاوي: وأما قول من قال من أهل الظاهر أن عليه أن يركع في كل وقت دخل المسجد فهو خطأ، لنتيجه عليه السلام عن الصلاة عند طلوع الشمس وعند غروبها وغير ذلك من الأوقات المنهي عنها، فمن دخل المسجد في هذه الأوقات، فليس بداخل في أمره بالركوع عند دخوله في المسجد، وإنما يدخل في أمره بذلك كل من لو كان في المسجد قبل ذلك، فأراد الصلاة، كان له ذلك، فأما من لو كان في المسجد قبل ذلك لم يكن له أن يصلي، فليس بداخل في ذلك.

وقد روي عن جماعة من السلف أنهم كانوا يعمرون في المسجد ولا يركعون، فروى ابن أبي شيبة عن عبدالعزیز الدرأوردی، عن زید بن أسلم قال: كان كبار أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يخرجون .....

أو جمهور فقهاء كرام د استحاب قائل دي ( )

ثلورمه مسئله: دَنفَل مونغ دَ كم نه كم حور كعاته؟ دَ رَ كعتين دَ لفظ نه دا مسئله شبتيري چه دَ نوافلو دَ كم نه كم دوه ركعتونه دي دَ دوو ركعتونه كم نفل نه وي چنانچه دَ ائمنونه احناف (٢) اود مالكيه (٣) په نيز او دَ حنابلو په يو روايت كښي دَ يو ركعت مونغ نه وي خود شوافع (٤) او حنابله په نيز په يو روايت كښي (كوم چه علامه مرداوي صالحى رحمته الله عليه راجع

..... ولا يصلون. قال زيد: وقد رأيت ابن عمر يفعله، وذكر ذلك مالك عن زيد بن ثابت، وسالم بن عبداه، وكان القاسم بن محمد يدخل المسجد، فيجلس فيه ولا يصلى وفعله الشعبي، وقال جابر بن زيد: إذا دخلت مسجداً فصل فيه، فإن لم تصل فيه، فاذا كراهه فكأنك قد صليت. (شرح ابن بطال: ١١٦/٢).

(١) المبسوط للرخسى، كتاب الصلاة، باب: مراقبت الصلاة: ١٥٣/١. بدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل: بيان ما يكره من التطوع: ٢٩٦/١. شرح مختصر الطحاوى للجصاص، كتاب الصلاة، باب المواقيت: ٥٤٢/١. الحاوى الكبير، كتاب الصلاة، فصل: ٤٢٩/٢. التنبيه فى الفقه الشافعى، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ٣٥/١. الوسيط فى المذهب، كتاب الصلاة، الطرف الثالث فى السنن والآداب: ٢٨٣/٢. الإقناع فى فقه الإمام أحمد بن حنبل، فصل: ين أن يقتل للجمعة: ١٩٨/١. الشرح الكبير على متن المتنع، كتاب الصلاة، مسألة: ومتى سجد بعد السلام جلس فتشهد: ٧٣٩/١. المغنى لابن قدامة، كتاب الصلاة، فصل: الإنصات من حين يأخذ الإمام فى الخطبة: ٢٣٧/٢. الكافى فى فقه أهل المدينة، كتاب الصلاة، باب: الأوقات التى تكره فيها عندنا النوافل: ١٩٦/١. التاج والإكلیل لدختر خليل، كتاب الصلاة، باب: فى صلاة التطوع: ٣٧٤/٢. التراكمه للدوانى على رسالة ابن أبى زيد، كتاب الصلاة، باب: أقل الشفع: ٢٠٢/١.

(٢) ومحمل حديث ابن عمر عند دم الحصر فى الأشناع، يعنى: لا يجوز القعود على الأكثر أو الأقل من ركعتين، وعليه حملة صاحب الهداية إذ قال: ومعنى ما رواه شفا لا وترا. (أوجز السالك، كتاب الصلاة، كتاب صلاة الليل، رقم الحديث: ٢٥٣، ٥٧٠/٢). قال صاحب البدائع: التنفل بالركعة الواحدة غير مشروع. (بدائع الصنائع، كتاب الصلاة، فصل: فى التطوع، فصل: فى بيان مقدار ما يلزم منه بالشروع فى صلاة التطوع: ٢٩٣/١). الهداية، كتاب الصلاة، باب: فى النوافل: ٦٧/١. ولو قال: عبده حر إن صلى اليوم صلاة، فصل ركعة قطعها، لا يتحنث فى يمينه، لأن النفى باليمين فعل الصلاة، وأن يكون المفعول صلاة، فمطلق الاسم ينصرف إلى الكامل، والركعة الواحدة ليست بصلاة كاملة، لأنها لا تفيد حكم الصلاة لأنها بتيرة، فإن النبى صلى الله عليه وسلم نهى عن البتراء والبتراء ركعة واحدة. (المحيط البرهاني، كتاب الصلاة، الفصل الثانى عشر: فى الحلف على الأفعال: ٢٧٣/٤)

(٣) واستندل به أيضاً على عدم نقصان من ركعتين فى النافلة ما عدا الوتر، وقد اختلف العلماء فيه (اتفق أبوحنيفة وأبو يوسف ومحمد على أفضلية الرباعية نهاراً كما فى شرح المهذب: ٧٥/٥. والمغنى: ٧٦٥/١. واتفق الشافعى وأحمد وأبو يوسف والثورى والليث على أفضلية الثنائية ليلاً. والشافعى وأحمد منهم على أفضليتها نهاراً أيضاً، وشذ مالك فى القول بعدم جواز الرباعية ليلاً استدلالاً بإفادة التركيب القصر، كما حكاه ابن دقيق العيد فى العمدة): فذهبت طائفة إلى المنع وهو مذهب أبى حنيفة ومالك. (التعليق الممجد على مؤظاً محمد، كتاب الصلاة، باب: صلاة الليل: ٥٠٧/١). وقال ابن رشد فى بداية المجتهد، والجمهور على أنه لا يتنفل بواحدة، وأحسب أن فيه خلافاً شاذاً. (بداية المجتهد ونهاية المقتصد، كتاب الصلاة، الباب الثالث: فى النوافل: ٢١٧/١). نيل الأوطار، كتاب الصلاة، باب الوتر بر كعة وبثلاث: ٤١/٣.

(٤) النجم الوهاج فى شرح المنهاج، كتاب الصلاة، باب: ٣١٣/٢. الإقناع فى حل النافذ أبى شجاع، .....

مَرَّ خَوْلِي دِي، نَفَلَ مَوْنِخْ يُو رَكَعَتِ هَم كِيرِي. (١) لِيكُنْ دَ تَحِيَّةِ الْمَسْجِدِ مَوْنِخْ دَدِي حَضْرَاتُو بِه نِي زِهَم دَ دُوؤ رَكَعَتُو نَه كَم نَه دِي. (٢)

بِنَحْمِه مَسْئَلُه: دَ تَحِيَّةِ الْمَسْجِدِ وَنَحْت: دَ تَرْجَمَةُ الْبَابِ آخَرِي لَفْظِ تَقَبَّلْ أَنْ يَجْلِسَ - يَعْنِي جَمَات تَه دَاخِلِي دُونَكِي دِي دَ كِينَا سْتُو نَه وَرَانْدِي وَرَانْدِي دُوِه رَكَعَتِه تَحِيَّةِ الْمَسْجِدِ أَوْ كَرِي. أَوْسِ سَوَال

..... كتاب الصلاة، فصل: القول فيمن تجب عليه الصلاة: ١١٩/١. فتح المعين بشرح قرّة العين بمهمات الدين، كتاب الصلاة، فصل: في صلاة النفل: ١٦٩/١.

(١) قوله (وهل يصح التطوع بركعة؟ على روايتين) وأطلقهما في المذهب، والبلغة، وابن تميم، والنظم، ومسيوك الذهب، والمستوعب، والحاوي الصغير، والزركشي، إحداهما: يصح، وهو المذهب صححهما في التصحيح، وابن منجا في شرحه، قال في الخلاصة: يصح أن يتطوع بركعة على الأصح، قال في التلخيص: ويصح التطوع بركعة في أصح الروايتين ونصره في مجمع البحرين، والمجد في شرحه وقدمه في الفروع، والمحرو، والهداية، والرعابيتين، والحاوي الكبير، الفائق وغيرهم، وجزم به في الإفادات، ونهاية ابن رزين، ونظمها وصححه أبو الخطاب في رءوس المسائل، الرواية الثانية: لا يصح جزم به في الوجيز، وهي ظاهر كلام الخرفي، ونصرها المنصف في المنفى والشرح، وقال فيه ابن تميم، والشارح: أقل الصلاة ركعتان، على ظاهر المذهب.

فأئدة: قال المجد في شرحه، وابن تميم، والزركشي، وابن حمدان في رعايته وصاحب الحاوي، ومجمع البحرين، وغيرهم: حكم التنفل بالثلاث والخمس حكم التنفل بركعة فيه الروايتان، ولا نعلم مخالفاً قال في الفروع: ويصح التطوع بفرد ركعة. (الإنصاف في معرفة الراجح من الخلاف للمرداوي، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ١٩٢/٢). فصل: قال بعض أصحابنا: ولا يزداد في الليل على اثنين، ولا في النهار على أربع. ولا يصح التطوع بركعة ولا بثلاث. وهذا ظاهر كلام الخرفي، وقال القاضى: لو صلى ستاً في ليل أو نهار، كره وصح. وقال أبو الخطاب: في صحة التطوع بركعة روايتان، إحداهما، يجوز، لما روى سعيد، قال: حدثنا جرير، عن قابوس، عن أبيه، قال: دخل عمر المسجد فصلى ركعة، ثم خرج، فتبعه رجل، فقال: يا أمير المؤمنين! إنما ضليت ركعة، قال: هو تطوع، فمن شاء زاد، ومن شاء نقص. ولنا، أن هذا خلاف قول رسول الله صلى الله عليه وسلم: "صلاة الليل مثنى مثنى". ولأنه لم يرد الشرع بمثله، والأحكام إنما تتلقى من الشارع، إما من نصح، أو معنى نصح، وليس هاهنا شيء من ذلك. (المغنى لابن قدامة، كتاب الصلاة: فصل: التطوعات فسمان: ٩٢/٢).

(وهل يصح التطوع بركعة) أى: بفرد، (على روايتين) كذا في (الهداية) إحداهما: تصح، قدمها في المحرو و الفروع ونصرها أبو الخطاب، وابن الجوزي، وهو قول عمر، رواه سعيد: حدثنا جرير عن قابوس عن أبيه عنه، ولأن الوتر مشروع، وهو ركعة، والثانية: لا، جزم بها في الوجيز وهي ظاهر الخرفي، وقواها في المغنى، لأنه خلاف قوله عليه السلام: صلاة الليل مثنى مثنى، ولأنه لا يجزئ في الفرض، فكذا في النفل كالسجدة، ولم يرد أنه فعل في غير الوتر. (المبدع في شرح المقنع، كتاب الصلاة، التطوع بركعة: ٣٠/٢). نيل المآرب بشرح دليل الطالب، كتاب الصلاة، قيام الليل: ١٦٣/١. الروض المربع شرح زاد المستقنع، كتاب الصلاة، فصل: في صلاة الليل: ١١٨/١.

(١) الإقناع في حل ألفاظ أبي شجاع، كتاب الصلاة، في من تجب عليه الصلاة: ١١٧/١. التنبيه في الفقه الشافعي، كتاب الصلاة، باب: صلاة التطوع: ٣٥/١. الوسيط في المذهب، كتاب الصلاة، الطرف الثالث في السنن والآداب: ٢٨٣/٢. الإقناع في فقه الإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، فصل: يسن أن تغتسل للجمعة: ١٩٨/١. كشاف القناع عن متن الإقناع، كتاب الصلاة، فصل: يسن أن يغتسل للجمعة: ٤٦/٢. نيل المآرب بشرح دليل الطالب، كتاب الصلاة، سنة الوضوء وتطوعات أخرى: ١٦٤/١.

دادې چه که چرې يو سرې جمات ته داخلیدو سره تحية المسجد ادا نه کړل بلکه کيناستو، بيا پاسيدو او تحية المسجد ئی اوکړه. نو د ده تحية المسجد به فوت گنرلې شی که ادا به گنرلې شی؟ چنانچه په دې باره کښې هم د ائمو اختلاف دې، کوم چه دلته ذکر کولې شی: د احنافو (١) او مالکيه (٢) په نيزه که چرې يو سرې جمات کښې داخلیدو سره کيناستو او خه وخت پس اودريدو او تحية المسجد ئی ادا کړل نو هيڅ حرج نشته، تحية المسجد به ئی صحيح شی. لیکن افضل هم دغه دې چه د کيناستو نه مخکښې تحية المسجد ادا کړی.

د شوافع په نيزه که چرې په هيره سره لږ ساعت کيناستو بيا ياديدو سره ئی تحية المسجد ادا کړل نو هيڅ حرج نشته. او که چرې هير شو ترې او ډير وخته پورې کيناستو يا په قصد سره کيناستو لږ ساعت يا ډير ساعت، نو په هرو دواړو صورتونو کښې به تحية المسجد فوت

(١) وفي حاشيته السمي بحاشية الطحطاوي، قوله: سن تحية المسجد، أي: تحية رب المسجد لأن التحية إنما تكون لصاحب المكان لا للمكان، ويستثنى المسجد الحرام، فإن تحيته الطواف، وصرح المنلا على: بأن من دخل المسجد الحرام لا يشتعل بتحية. لأن تحية هذا المسجد الشريف هو الطواف، لمن عليه طواف، أو أراد، بخلاف من لم يرد أو أراد أن يجلس. فلا يجلس حتى يصلي ركعتين تحية المسجد ١ هـ. قوله: بركعتين. وإن شاء بأربع والثنتان أفضل، قهتاني، قوله: "في غير وقت مكروه، في القهتاني: إذا دخل المسجد بعد الفجر أو العصر لا يأتي بالتحية، بل يسبح، ويهلل، ويصلي على النبي صلى الله عليه وسلم، فإنه حينئذ يؤدي حق المسجد، كما إذا دخل للمكتوبة فإنه غير مأمور بها كما في التمرناشي ١ هـ. وفي الدر عن الضياء عن القوت: من لم يتمكن منها لحدث أو غيره، يقول: كلمات التسبيح الأربع أربعا ١ هـ. وهي: سبحان الله والحمد لله ولا إله إلا الله والله أكبر. قوله: قبل الجلوس، هذا بيان للأولى، كما يأتي، وهذا قول العامة وهو الصحيح. وقيل: يجلس أولا ثم يصلي. قوله: "وإن كان الأفضل فعلها قبله، هذا يدل على أنهم حملوا النهي في حديث: "فلا يجلس حتى يركع ركعتين على التنزيه. (حاشية الطحطاوي على مراقى الفلاح، كتاب الصلاة فصل في تحية المسجد: ٣٩٥/١ - ٣٩٤). (حاشية ابن عابدين، كتاب الصلاة، باب: الوتر والنوافل: ١٨/٢ دار الفكر، بيروت). (البحر الرائق، كتاب الصلاة، أعظم المساجد حرمة: ٣٨/٢، دار الكتاب الإسلامي). (مراقى الفلاح شرح نور الإيضاح، كتاب الصلاة، فصل: في تحية المسجد: ١٤٨/١).

(٢) ويكره جلوسه قبل التحية حيث طلبت ولا تسقط به، وذكر سبدي أحمد زروق عن الغزالي وغيره أن من قال: سبحان الله والحمد لله ولا إله إلا الله والله أكبر، أربع مرات، قامت مقام التحية. (شرح مختصر خليل للخرشي، كتاب الصلاة، فصل: في بيان صلاة النافلة وحكمها: ٥/٢).

فالحاصل أن تحية المسجد لها ثلاثة شروط: أن يدخل على طهارة، وأن يكون مراده الجلوس في المسجد، وأن يكون الوقت وقت جواز، والشروط الثاني يفهم من قوله فلا يجلس، والأصل في ذلك قوله صلى الله عليه وسلم: إذا دخل أحدكم المسجد فلا يجلس حتى يصلي ركعتين. رواه مسلم. وفي رواية: إذا دخل أحدكم المسجد فليركع ركعتين قبل أن يجلس، والنهي على الأولى للكراهة، والأمر في الثانية على جهة التذنب، وورد: أعطوا المساجد حقها، قالوا: وما حقها يارسول الله قال: صلاة ركعتين قبل الجلوس، وكونهما قبل الجلوس على جهة التذنب، فلوجلوس لا يفوتان ولو طال زمان الجلوس. (الفواكه الدواني على رسالة ابن أبي زيد، كتاب الصلاة، باب: أقل الشفع: ٢٠٢/١). (حاشية الصاوي على الشرح الصغير، كتاب الصلاة، النوافل المندوبة والרגائب: ٤٠٥/١).



شى. (١) د حنابلو په نيز كه لېر شان ساعت كيناستو په هيرد سره يا په قصد سره نو تحية المسجد نه فوت كيږي. او كه زيات وخت كيناستو په هيره سره يا په قصد سره نو تحية المسجد به فوت شى. (٢)

حديث باب [حديث نمبر ٤٣٣] (٣)

٣٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرْقِيِّ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ السَّلَمِيِّ (٤) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ « إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمْ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكُعْ رُكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ ».

(١) لوجلس في المسجد قبل التحية وطال الفصل، فانت ولا يشرع قضاؤها بالانفاق، كما سبق بيانه فان لم يطل الفصل، فالذي قاله الأصحاب: إنها تفوت بالجلوس، فلا يفعلها بعده، وذكر الأصحاب هذه المسألة في كتاب الحج في مسألة الإحرام لدخول الحرم وقاسوا عليها أن من دخله بغير إحرام لا يقضيه بل فاته بمجرد الدخول كما تفوت التحية بالجلوس، وذكر الإمام أبو الفضل ابن عبدان من أصحابنا في كتابه المصنف في العبادات: أنه لونس التحية وجلس ثم ذكرها بعد ساعة صلاحها، وهذا غريب، وقد ثبت عن جابر رضي الله عنه قال: جاء سليكم الفظفاني يوم الجمعة ورسول الله صلى الله عليه وسلم قاعدا على المنبر فقعد سليكم قبل أن يصلي، فقال له النبي صلى الله عليه وسلم: أركعت ركعتين؟ قال: لا، قال: قم اركعها. رواه مسلم بهذا اللفظ. ورواه البخاري أيضا بمعناه، فالذي يقتضيه هذا الحديث أنه إذا ترك التحية جهلا بها أو سهوا يشرع له نعلها ما لم يطل الفصل، وهذا هو المختار، وعليه يحمل قول ابن عبدان، ويحمل كلام الأصحاب على ما إذا طال الفصل لئلا يصادم الحديث الصحيح، وهذا الذي اختاره متعين لما فيه من موافقة الحديث والجمع بين كلام الأصحاب وابن عبدان والحديث. والله أعلم. (المجموع شرح المهذب، كتاب الصلاة، مسألة مهمة تتعلق بصلاة الليل: ٥١/٤). (أسنى المطالب في شرح روض الطالب، كتاب الصلاة، الباب السابع: في صلاة التطوع: ٢٠٥/١). (الفرر البهية في شرح البيهجة الوردية، كتاب الصلاة، فصل: في بيان صلاة الليل: ٣٩٥/١).

(٢) مذكورة القول الراجح مع الدليل، كتاب الصلاة، إذا تكرر خروج الإنسان من المسجد، هل تشرع كلما خروج ورجع أم لا؟ ٩١/٣. (الفروع وتصحيح الفروع، كتاب الصلاة: من دخل المسجد في الخطبة لم يمنع من التحية: ١٨١/٣). (الإقناع في فقه الإمام أحمد بن حنبل، كتاب الصلاة، فصل: يسن أن يغتسل للجمعة: ١٩٨/١).

(٣) مذكورة حديث چونكه د كشف الباري د مذكوره جلد آخري حديث دي په دي وجه به دي مقام باندي د دي امر تجديد ضروري معلوميري چه د كشف الباري د پاره منتخب كړي شوي د الدكتور مصطفى ديب البغاء والا د نسخي مطابق د دي حديث نمبر ٤٣٣ دي خو په نورو نسخو كښي كوم چه فتح الباري يا عمدة القاري كښي استعمال كړي شوي دي دهغي مطابق د دي حديث نمبر ٢٢٢ دي.

(٤) أخرجه البخاري في صحيحه أيضا: في التهجد، باب: ماجاء في التطوع مني مني، رقم الحديث: ١١٦٣. ومسلم في صحيحه: في صلاة المسافرين، باب: استحباب تحية المسجد بركعتين وكراهة الجلوس قبل صلاتهما، وأنها مشروعة في جميع الأوقات، رقم الحديث: ٧١٤. وأبو داود في سننه، في الصلاة، باب: ماجاء في الصلاة عند دخول المسجد، رقم الحديث: ٤٦٧-٤٦٨. والترمذي في جامعه: في الصلاة، باب: ماجاء إذا دخل أحدكم المسجد فليركع ركعتين، رقم الحديث: ٣١٦. والنسائي في سننه: في المساجد، باب: الأمر بالصلاة قبل الجلوس في المسجد، رقم الحديث: ٧٣١. وفي جامع الأصول، حرف الصاد، الكتاب الأول: في الصلاة، القسم الثاني: من كتاب الصلاة: في التوافل، الفصل الرابع: في صلوات متفرقة، تحية المسجد، رقم الحديث: ٢٤٥٣، ٢٤٨/٦.

دَ حَدِيثِ تَرْجَمَهُ: دَ حَضْرَتِ ابِوَقْتَادَةَ سَلَمَى رضي الله عنه نَه رَوَايَتِ دِي چِه رَسُولِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم اَرشَادِ اَوْ فَرَمَاتِيْلُو چِه كَلَه پَه تَاسُو كَنْبِي يُو سِرِّي جَمَات تَه دَاخِل شِي نُو هَفَه لَه پَكَار دِي چِه دَ كِي نَاسْتُو نَه مَخْكَبِي دُوهُ رَكَعْتَه مَوْنُخ (تَحِيَّةُ الْمَسْجِدِ) اَوْ كَرِي.

تَوَاجِه رَجَال: دَ مَذْكَورَه رَوَايَتِ پَه سَنَدِ كَنْبِي پَنَخَه رَجَالِ دِي:

① عبد الله بن يوسف: دَا عِبْدَ اللّٰهِ بِنِ يُوْسُفِ التَّنِيْسِي دِمَشْقِي رضي الله عنه دِي. دَ دَوِي مَخْتَصِرِ اَحْوَالِ كَشْفِ الْبَارِي، كِتَابِ هِدْمِ الْوَحْيِ دَوِيْمِ حَدِيثِ اَوْ تَفْصِيْلِي اَحْوَالِ كَشْفِ الْبَارِي، كِتَابِ الْعِلْمِ، بَاب: لِيَدْعُ الْعِلْمَ الشَّاهِدَ الْغَائِبَ لِانْدِي تِيرِ شَوِي دِي. (١)

② مالك بن أنس: دَا مَالِكُ بِنِ اَنْسِ بِنِ مَالِكِ بِنِ اَبِي عَامِرِ الْمَدْنِي رضي الله عنه دِي. دَ دَوِي تَذْكَرَه كَشْفِ الْبَارِي، كِتَابِ هِدْمِ الْوَحْيِ دَ دَوِيْمِ حَدِيثِ اَوْ تَفْصِيْلِي اَحْوَالِ كِتَابِ الْاِيْمَانِ، بَاب: مَنِ الدِّينِ الْفَرَارِ مِنَ الْفِتَنِ لَانْدِي تِيرِ شَوِي دِي. (٢)

③ عامر بن عبد الله بن الزبير: دَا اَبُو الْحَارِثِ عَامِرُ بِنِ عِبْدِ اللّٰهِ بِنِ زَبِيْرِ بِنِ الْعَوَامِ قَرَشِي اَسَدِي رضي الله عنه دِي. دَ دَوِي تَفْصِيْلِي اَحْوَالِ كِتَابِ الْعِلْمِ، بَاب: اِثْمٌ مِّنْ كَذْبِ عَلِيِّ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَ دَوِيْمِ حَدِيثِ لَانْدِي تِيرِ شَوِي دِي. (٣)

④ عمرو بن سليم الزرقم: دَ دَوِي پوره نوم عمرو بن سليم بن خلد بن مخلد بن عامر ابن زريق الزرقم انصاري مدني رضي الله عنه دِي. دَوِي چِه دَ كَوْمُو مَشَايخُو نَه دَ حَدِيثِ رَوَايَتِ كَوِي پَه هَفَوِي كَنْبِي ابِوَقْتَادَه، اَبُو سَعِيْدِ خَدْرِي، اَبُو رَهِيْرَه، عِبْدَ اللّٰهِ بِنِ زَبِيْرِ، عِبْدَ اللّٰهِ بِنِ عَمْرِو بِنِ خَطَّابِ، سَعِيْدِ بِنِ مَسِيْبِ، عَاصِمِ بِنِ عَمْرِو الْمَدِيْنِي، عِبْدَ الرَّحْمَنِ بِنِ اَبِي سَعِيْدِ خَدْرِي، اَبُو حَمِيْدِ سَاعِدِي رضي الله عنه وَغِيْرَه شَامِلِ دِي.

اَوْ دَ دَوِي نَه رَوَايَتِ كَوْنُكُو كَنْبِي عَامِرِ بِنِ عِبْدِ اللّٰهِ بِنِ زَبِيْرِ، بَكِيْرِ بِنِ عِبْدِ اللّٰهِ بِنِ الْاَشْجِ، زَيْدِ بِنِ اَبِي عَتَابِ، سَعِيْدِ بِنِ اَبِي سَعِيْدِ الْمَقْبَرِي، عِبْدَ اللّٰهِ بِنِ اَبِي بَكْرِ بِنِ مُحَمَّدِ بِنِ عَمْرِو بِنِ حَزْمِ، عِبْدَ اللّٰهِ بِنِ اَبِي سَلْمَةَ الْمَاجْشُوْنِ، عِبْدَ اللّٰهِ بِنِ عَامِرِ الْاَسَلَمِي، عَمِيْدِ اللّٰهِ بِنِ عَالْمَكِيْرَه بِنِ مَعِيْقِيْبِ، عَثْمَانَ بِنِ اَبِي سَلِيْمَانَ، اَبُو بَكْرِ بِنِ مُحَمَّدِ بِنِ عَمْرِو بِنِ حَزْمِ، اَبُو بَكْرِ بِنِ الْمُنْكَدَرِ اَوْ پَخِيْلَه دَ هَفَوِي خُوْنِي سَعِيْدِ بِنِ عَمْرِو بِنِ سَلِيْمِ الزَّرْقِي وَغِيْرَه رَحْمَهُمُ اللّٰهُ شَامِلِ دِي.

مُحَمَّدِ بِنِ سَعْدِ رَحْمَهُ اللّٰهُ دَ هَفَوِي بَارَه كَنْبِي فَرَمَاتِي: كَانَتْ لِقَّةً، قَلِيْلَ الْحَدِيثِ. اِمَامِ نَسَائِي رضي الله عنه دَ

(١) كشف الباری: ۲۸۹/۱، ۱۱۳/۴.

(٢) كشف الباری: ۲۹۰/۱۸۰/۲.

(٣) كشف الباری: ۱۶۲/۴.



هغوى باره كنبې فرمانى: ثقة. امام عجلى عليه السلام د هغوى باره كنبې فرمانى: مدن تا بهى ثقة. ابن حبان رحمته الله د هغوى ذكر كتاب الثقات كنبې كړې دې. علامه ذهبى رحمته الله د دوى باره كنبې فرمانى: ما علمت فيه شيئا يشينه. ابن حجر رحمته الله فرمانى: ثقة من كبار التابعين. (١)

⑤ ابن قتادة السلمى رحمته الله: دا صحابى رسول حضرت ابو قتاده انصارى سلمى رحمته الله دې. د دوى

تفصيلى احوال كشف البارى، كتاب الوضوء، باب: النهى عن الاستنجاء باليمين لاندې تير شوى دى. (٢)

د حديث شوح: د مذكوره حديث شريف ټول الفاظ چونكه هم د ترجمة الباب حصه وه، په دې وجه متعلقه مباحث د ترجمة الباب د تشريح لاندې بيان كړې شوى دى. علاوه د دې نه چه "اذا دخل احدكم المسجد" په دې حكم كنبې دا خبره شامل ده چه هغه دې په اودس كنبې هم وى گنى اول دې اودس او كړى بيا دې تحية المسجد ادا كړى. (٣)

قوله: فليركع: معنى "فليصل" ده. جزء وثيلوسره كل مراد اخستې شوې دې. (٤)

قوله: ركعتين: دې نه مراد تحية المسجد دې او د دې تشبي په لفظ سره دا لازم نه راخى چه د دوو ركعتونه زيات كول جائز نه دى. البته د دوو ركعتونه كم كولوباره كنبې د فقهاؤ اختلاف دې او معتبر خبره داده چه تحية المسجد د دوو ركعتونه كم ادا كول جائز نه دى. (٥)  
د حديث مبارك د ترجمة الباب سره مناسبت: د مذكوره حديث شريف د ترجمة الباب سره مناسبت بالكل واضح دې د هيخ قسم اخفاء نشته دې.

(١) تهذيب الكمال: ٥٥/٢٢. التاريخ الكبير للبغارى: ٦ / الترجمة: ٢٥٥٩. ثقات العجلي، ص: ٤٢. الثقات لابن حبان: ١٦٧/٥. الكاشف: ٢ / الورقة: ١٠٠. تاريخ الإسلام: ٤٠/٤. ميزان الاعتدال: ٣ / الترجمة: ٦٣٨٠. تهذيب التهذيب: ٤٥-٤٤ / ٨ / تقريب التهذيب: ٧١/٢.

(٢) كشف البارى، كتاب الوضوء، باب: النهى عن الاستنجاء باليمين، ص: ٤١١.

(٣) ارشاد السارى: ١٠٣/٢.

(٤) تحفة البارى: ٤٨٩/٢.

(٥) التوضيح لابن الملغن: ٤٨٣/٥ عمدة القارى: ٢٧١/٤.